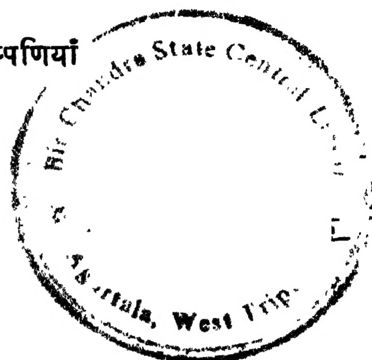
भोजपुरी लोरिकी

(लोरिक और चंदा की लोक-गाथा)

मूल पाठ, भावार्थ तथा टिप्पणियां



डॉ० श्याम मनोहर पाण्डेय

ओरियन्टल विश्वविद्यालय, नेपुल्स, इटली

साहित्य भवन प्रा० लि०

जीरोरोड, इलाहाबाद २११००३

BHOJPURI ORAL EPIC LORIKI

By

DR SHYAM MANOHAR PANDEY
Istituto Universitario Orientale,
Naples, ITALY

मूल्य : 325.00

साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, 93, जीरो रोड, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित
तथा स्टार प्रिण्टर्स, 287, दरियाबाद, इलाहाबाद द्वारा मुद्रित।

पूज्य पिता,

स्वर्गीय शिव नारायण शास्त्री

की पुण्य स्मृति में

विषय-सूची

□ □

प्राक्कथन

'भोजपुरी लोरिकी' लोक महाकाव्यों की परम्परा में प्रकाशित मेरी पुस्तकों की शृंखला में यह चौथी कड़ी है। इसमें संवरू का विवाह प्रस्तुत किया गया है। इसके गायक बलिया जिले के शिवनाथ चौधरी (सीनाथ चौधरी) थे। उनका गाया हुआ यह पाठ मेरे संग्रह के पाठों में सबसे बड़ा है। इस पाठ की कुल रिकार्डिङ्ग लगभग 48 घण्टे की है। इसमें संवरू का विवाह अपने आप में पूर्ण है। तथ्य यह है कि कोई गायक एक बार में पूर्ण कथा नहीं गाता। श्रोताओं के आग्रह पर एक या दो प्रसंग चुनता है और जितना उसके पास समय होता है उसी के अन्तर्गत वह समाप्त कर लेता है।

जीवन में पहली बार सीनाथ चौधरी ने लोरिकी प्रारम्भ से अन्त तक मेरे लिए गायी। अन्य गायकों ने ऐसा ही किया। 'संवरू का विवाह' के बाद 'लोरिक का विवाह', 'चनवा का उद्धार', 'हरदी की लड़ाई', 'पीपरी का युद्ध' ये प्रसंग गायक गाता है। 'भोजपुरी लोरिकी' की दूसरी जिल्द मे ये प्रसंग प्रकाशित होंगे। आशा है प्रस्तुत पाठ का भी सुधी पाठक लोरिकी या चनैनी के अन्य पाठों की भाँति स्वागत करेंगे।

मैं गुरुवर स्व० माता प्रसाद गुप्त, स्व० परशुराम चतुर्वेदी, आचार्य बलदेव उपाध्याय, फ्रांस की सुप्रसिद्ध इंडॉलिजिस्ट शार्लोत वॉदविल, प्रोफेसर नामवर सिंह, नर्मदेश्वर चतुर्वेदी आदि को विनम्र भाव से स्मरण करता हूँ, जिन्होंने इस सम्पूर्ण योजना में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता दी है।

मेरी पत्नी कृष्ण बाला पांडेय, एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत) ने भी पुस्तक की नामानुक्रमणिका बनायी है। उनके सहयोग के बिना इस विशद योजना को कार्यान्वित करना सम्भव नही होता। श्री अमीन अंसारी ने पुस्तक के छापने में जो रुचि दिखाई उसके लिए उनको धन्यवाद देना चाहता हूँ। मेरे सम्बन्धी उमेश जी, विजया तथा बच्चों ने हर प्रकार से सहायता दी है, उनको मेरा आशीर्वाद।

साहित्य भवन प्रा० लि० के निदेशकों भाई बद्रीविशाल टंडन, गिरीश टंडन, शिवसहाय कपूर ने प्रस्तुत पाठ के प्रकाशन में जो तत्परता दिखाई और हर प्रकार की सुविधा दी है, उसके लिए हृदय से आभारी हूँ। अन्त में स्टाफ के अन्य लोगों को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होंने सदैव इस योजना में दिलचस्पी ली।

—श्याम मनोहर पांडेय

भूमिका

भोजपुरी लोरिकी मेरे संग्रह के पाठों में सबसे बड़ा पाठ है। प्रस्तुत पाठ के गायक शिवनाथ चौधरी (सीनाथ चौधरी) ने 'संवरू का विवाह' बड़े विस्तार से गाया है। इसमें लोक-महाकाव्य की अनेक विशेषताएँ सुरक्षित हैं। अलौकिक तत्वों की भी इसमें बहुलता है। यहाँ संक्षेप में 'संवरू का विवाह' की कथा दी जा रही है।

कथा का सारांश

गायक सर्वप्रथम दुर्गा की वंदना करता है और यह भी चिन्ता प्रकट करता है कि बहुत दिनों से उसका गायन छूट गया है। साथ ही वह दुर्गा से सहायता की माँग करता है। श्रोताओं के बीच उसे गाने में ज़रा संकोच भी है। गायक इस महाकाव्य को 'गाना', 'गीति', 'पंवारा' आदि नामों से संबोधित करता है और अपने 'गाना' की तुलना वह महाभारत से करता है। सच बात तो यह है कि शिवनाथ चौधरी के सामने रामायण और महाभारत का आदर्श सदैव रहता है। इसीलिए उन्होंने अपने गाने में ऐसे अनेक परिवर्तन किये है और ऐसे अनेक प्रसंग जोड़े हैं जो अन्य गायकों के गायन में नहीं पाये जाते। कहानी सुहवल की है, वहाँ का राजा बामरि है, उसके छै पुत्र हैं। सभी दैवी है, अवतारी पुरुष हैं। भीमली, झिंगुरी, दसवंता, भगवंता, आदि विशेष रूप से इस पाठ में चित्रित किये गये हैं जो भारी शूरमा हैं। उनमें अपार शक्ति है। उनकी एक बहिन है सतिया। सतिया का अवतार भी दैवी है और वह विवाह नहीं करना चाहती।

राजा बामरि को अपने पुत्रों पर गर्व है। सतिया का निश्चय है कि वह विवाह नहीं करेगी, उसने इसके लिए ब्रह्मा से वर प्राप्त किया। पर ब्रह्मा ने परोक्ष में विवाह का संयोग लिख दिया था। अन्ततोगत्वा उसकी शादी वीर संवरू से होती है पर इसके पूर्व बामरि के सारे पुत्र लोरिक के साथ युद्ध में मारे जाते हैं।

सतिया का पिता बामरि एक विशेष प्रकार का राजा है। उसने निश्चय कर लिया है कि मेरे राज्य की कन्याएँ विवाह नहीं करेंगी। उसके इस निर्णय से राज्य की सभी कन्याएँ दुखी हैं और वे प्रार्थनारत हैं कि बामरि का संहार हो जाय। इसके बिना उनका विवाह संभव नहीं है। अन्त में यही होता है। अत्याचारी राजा बामरि तो नहीं पर उसके सभी पुत्र युद्ध में मारे जाते हैं। सतिया के विवाह न करने का प्रण टूटता है। संवरू जो उसके पति बनते हैं उनका भी विवाह न करने का

मन था, पर दुर्गा के हस्तक्षेप से वह भी विवाह करने के लिए उद्यत हो जाते हैं। पूरी कथा वैवाहिक जीवन को मान्यता प्रदान करती है। बामरि, सतिया, संवरू सभी विवाह के विरुद्ध हैं पर अन्त में सबको अपने निश्चय को बदलना पड़ता है और विवाह और वैवाहिक बंधन को महत्त्व देना पड़ता है। यद्यपि महाकाव्य के इस भाग में गार्हस्थ्य जीवन का विवरण और विस्तार कम ही है, यह कहीं नहीं चित्रित किया गया है कि संवरू और सतिया गार्हस्थ्य जीवन में क्या सुख-दुख भोगते हैं।

कथा में शिव, विष्णु, दुर्गा, शेषनाग सभी हिन्दू धर्म के महान देवता अपनी भूमिका निभाते हैं। कथा एक सामान्य जाति की साधारण ऐहिक कथा नहीं रह जाती। 'संवरू का विवाह' के प्रस्तुत पाठ में संवरू नायक हैं। उन्हीं का विशेष चरित्र यहाँ विकसित हुआ है। वह एक ब्राह्मणी कुमारी के पुत्र हैं और सूर्य देवता की दृष्टि लगने से उनकी माँ गर्भ धारण कर लेती है। लोक-लज्जा से बचने के लिए वह संवरू के जन्मते ही एक पात्र में बन्द कर उन्हें फेंक देती है। बंध्या ग्वालिन खोइलनि उन्हें प्राप्त कर अपने को धन्य समझती है। ब्राह्मणी को सूर्य की दृष्टि लगने से संवरू के साथ ही साथ एक दूसरा पुत्र शिववचन भी पैदा हुए है। वह एक दुसाध की स्त्री के यहाँ पलते है। पर उनका कोई विशेष महत्त्व पूरी कथा में नहीं है। यद्यपि संवरू और शिववचन ब्राह्मणी के पुत्र है और सूर्य के अंश है पर दोनों को कहानी में एक ही जैसा महत्त्व नहीं मिलता। संवरू अद्भुत वीर हैं, उनके पास अद्वितीय बाण है, वह योद्धा है। शिववचन का उल्लेख यदाकदा ही होता है।

प्रस्तुत पाठ में संवरू शिव की भक्ति करते है और शिव के वरदान से ही ग्वालिन खोइलनि के गर्भ से लोरिक का जन्म होता है। लोरिक की वीरता की कथा का गायन करना ही गायकों का मुख्य लक्ष्य है। अतः संवरू के विवाह में भी लोरिक की वीरता ही प्रधान है। जहाँ संवरू अपनी वीरता प्रकट करना चाहते है वहाँ दुर्गा और लोरिक के हस्तक्षेप से वे रुक जाते है। यह ठीक भी है। एक बार वर या दूल्हा बन जाने पर स्वाभाविक रूप से उनका हाथ बँध जाता है। लोरिक की भाँति वह मुक्त नहीं रह पाते। पर गायक सदैव संकेत करता चलता है कि संवरू दैवी हैं, उनमें अपूर्व शक्ति है, लोरिक के साथ उनका सहोदर जैसा ही प्रेम है यद्यपि खोइलनि के वह पालित पुत्र हैं। लोरिक खोइलनि के उदर से जन्मे हुए पुत्र है। सवरू बोहा नामक स्थान में रहते हैं। गायों की सेवा करते है और भजन भाव में लीन रहते हैं। बोहा के शिव मन्दिर और अखाड़े से वे अनवद्य रूप से जुड़े हुए हैं। पर गायक विष्णु और ब्रह्मा को अपने काव्य में शिव से अधिक महत्त्व देता है। ब्रह्मा की बहिन दुर्गा का उपासक लोरिक है। एक वृहद् अनुष्ठान का आयोजन कर

लोरिक दुर्गा का हृदय जीत लेता है और लोरिक को वह सहायता का आश्वासन देती हैं। हर कठिन परिस्थिति में वह लोरिक के साथ होती हैं।

'संवरू का विवाह' के कथानक का विकास इस प्रकार होता है—

लोरिक पर चनवा नामक एक कन्या, जो राजा सहदेव की पुत्री है, आसक्त है। सहदेव कुसुमापुर के राजा हैं, पास में ही गउरा है जहाँ लोरिक खोइलनि के गर्भ से उत्पन्न हुआ है। सहदेव किसी कारण नहीं चाहते कि उनके राज्य में होली का उत्सव मनाया जाय। लोरिक, उसका धोबी मित्र और अखाड़े का गुरु अजयी तथा अन्य मित्र सहदेव को चुनौती स्वीकार करते हैं और गउरा से कुसुमापुर में होली खेलने निकल पड़ते हैं। ग्रामीण परम्परा को तोड़कर चनवा लोरिक पर रंग फेंक देती है। यह मर्यादा के विरुद्ध है। लोरिक भी अपनी पिचकारी से चनवा पर रंग फेंकता है और मर्यादा तोड़ता है। यह घटना संकेत कर देती है कि लोरिक और चनवा में किसी प्रकार का प्रेम सम्बन्ध है जरूर। बाद में यह घटना और महत्त्वपूर्ण बन जाती है जब अपने विवाह के बाद लोरिक एक दिन विवाहिता पत्नी मंजरी को छोड़कर चनवा के साथ हल्दी भाग खड़ा होता है।

इस सम्पूर्ण घटना का अंकुर इस होली के प्रसंग में प्रच्छन्न है। संवरू के विवाह की भूमिका भी होली खेलने के ही प्रसंग में बनती है। चनवा पर लोरिक रंग फेंकता है तब वह लोरिक पर ताने कसती है कि तुम मेरे ऊपर रंग फेंकते हो, मुझे कष्ट देते हो, तुम नहीं जानते स्त्री क्या होती है? तुम धोबी के मित्र हो इसलिए तुम लोगों का विवाह नही होता। तुम लोगों की माँ जब तक जीवित है तब तक वह तुम लोगों का साथ दे रही है, तुम्हारी आवश्यकताओं पर ध्यान रखती है। जब वह नही रहेगी तुम्हारे घर का चिराग बुझ जायगा। तुम्हारा वंश डूब जायगा। चनवा की कटु-बातें लोरिक को सालने लगती है। वह तय करता है कि भइया संवरू की शादी करवा कर ही दम लूंगा। वह घर आता है विषाद में डूबा हुआ। उसकी नींद हराम हो जाती है, खाना-पीना छूट जाता है। माँ खोइलनि इससे चिंतित हो उठी है। वह धोबी अजयी के घर जाती हैं जो लोरिक के साथ फगुवा खेलने गया था। पता चलता है कि लोरिक को चनवा ने कटु बातें कहीं हैं और लोरिक अपने भ्राता संवरू के विवाह के लिए कटिबद्ध है। धोबी सुहवल में जाकर एक बार बुरी तरह पिट चुका था अतः अगुवाई के लिए सुहवल जाने में कतराता था। संवरू के लिए योग्य कन्या सुहवलि के राजा बामरि की बेटी सतिया सर्वथा उपयुक्त थी। अजयी की पत्नी बिजवा की तत्परता से संवरू और सतिया के विवाह की भूमिका बनती है। लोरिक को पता चलता है इस विवाह में संकटों का सामना करना पड़ेगा पर वह विचलित नहीं होता है।

बारात सजधज कर मुहवल चली। अजयी धोबी, बांठा चमार, देवसिया दुसाध तथा अनेक निम्न जातियों के युवक बाराती बने। सभी एक से एक बीर थे। अजयी ने सबको कुश्ती लड़वायी थी। लोरिक का ही नहीं वह बांठा चमार तथा अन्य अनेक युवकों का गुरु था। बामरि के बेटों की वीरता मे वह परिचित था। भीमली और झिंगुरी ने 'गंगनी' की प्रतियोगिता मे मुहवल में अजयी की हड्डी-पसली तोड़ डाली थी। मुहवल का धोबी मखुवा और उसकी पत्नी की सेवा से वह स्वस्थ हुआ था। मखुवा की दो बेटियों विजवा और सरामरि को वह ब्याह कर लाया था। बामरि का प्रण था कि उसके देश की कन्याओं से कोई आकर विवाह नही कर सकता पर धोबी मखुवा की पत्नी की चतुराई और मंत्री तथा दीवान के समझाये जाने पर बामरि ने किसी प्रकार गुप्त रूप से विवाह की अनुमति दे दी थी।

सतिया साधारण कन्या नहीं थी। वह धरती से ब्रह्मा के पास तक जा सकती थी। बामरि और उनकी पत्नी के तप से गंगातट पर किये गये तपस्या और हवन मे, समाधि यज्ञ से, शेषनाग के वरदान से तथा गंगा मैया के आशीर्वाद से सतिया उत्पन्न हुई थी। संवरू जिस प्रकार सूर्य की दृष्टि लगने से ब्राह्मणी के गर्भ से अलौकिक रूप से उत्पन्न हुए थे उसी प्रकार सतिया का जन्म भी अलौकिक रूप से हुआ है। केवल शिवनाथ चौधरी के प्रस्तुत पाठ मे ये विस्तार दिये गये हैं। सतिया में सत का बल था जिससे वह अनेक प्रकार के अद्भुत कार्य सम्पन्न कर लेती थी।

बारात मुहवल के पास पहुँची ही थी कि सतिया के प्रताप से एक मायावी गेंडे ने सारी बारात को उदरस्थ कर लिया। गेंडे ने अजयी, संवरू किसी को नहीं छोड़ा। बीर लोरिक बच गया। दुर्गा उसकी सहायता के लिए उपस्थित हो गयीं और सारी बारात गेंडे के मुँह से बाहर निकल आयी। तब सतिया दुखी होकर ब्रह्मा के पास पहुँचती है तो ब्रह्मा बताते है कि जब तुमने इन्द्रासन छोड़ा तभी मैंने तुम्हारे भाग्य मे विवाह टांक दिया था। उसे दुख हुआ। वापस आयी। सीनाथ (शिवनाथ) चौधरी के इस पाठ से यह भी लगता है कि सतिया और दुर्गा मे भी प्रतिद्वन्द्विता है।

मुहवल में बामरि के पुत्र बीर भीमली ने अपनी शान गाड़ दी थी कि जो शान को उखाड़ फेंकेगा वही सतिया का विवाह सम्पन्न करायेगा। लोरिक ने दुर्गा की सहायता से वह शान भी उखाड़ फेंकी। सतिया ने फिर अपने सत का सुमिरन किया। नागिन हरदोइया को पुकारा कि सम्पूर्ण बारात को डंस लो। हरदोइया के लाख मना करने पर भी सतिया नही मानी। बहुत भीतरी संघर्ष के बाद हरदोइया ने सारी बारात के साथ सतिया के भावी पति मल सांवर (संवरू) को भी डंस लिया। लोरिक को छोड़कर सारी बारात हरदोइया के डंस लेने से ढेर हो गयी। बाद में सतिया को पश्चात्ताप हुआ। दुर्गा ने लोरिक की सहायता की। सतिया के

आग्रह पर सारी बारात का विष हरदोइया ने खींच लिया। फिर सारी बारात जीवित हो उठी। बामरि अपने प्रण से नहीं डिगे। उनके सारे पुत्र भीमली, झिगुरी, दसवंत, भगवंता, सिरजवा आदि सभी लोरिक के हाथों मारे गये। अंत में बामरि सब कुछ नष्ट हो जाने के बाद सतिया के विवाह के लिए तैयार होकर कुसलहा नामक अपने अंतिम पुत्र को लेकर सतिया के साथ गउरा आये। सुहवल के विध्वंस के बाद वहाँ विवाह सम्पन्न कराना उन्हें अच्छा नहीं लगा। कन्या को वर पक्ष के यहाँ ले जाकर उन्होंने 'डोलकढ़ुई' शादी की। यहाँ पण्डित वेद पढ़ते हुए दिखाये गये हैं। यह इस प्रकार के विवाह में आम तौर पर संभव नहीं होता।

गायक शिवनाथ चौधरी

मूल कथा में गायक ने भाँति-भाँति के प्रसंग जोड़कर अपने 'गाने' को बहुत ही दिलचस्प बना दिया है। लोरिक और उसकी माँ खोइलनि द्वारा दुर्गा की पूजा, लोरिक का दुर्गा के साथ पिड़नापुर मे राक्षसों और दानवों के यहाँ जाकर सती का तागपाट लाना, दुर्गा और सतिया का ब्रह्मा के यहाँ आना-जाना, देवताओं की चिन्ताएँ, उनकी सभाएँ आदि, ग्रामीण अलंकारों का विशद् चित्रण, शिव विष्णु आदि के मतभेद और उनका मिलन, आदि के अतिरिक्त संवरू और लोरिक के अलौकिक जन्म के विस्तार इस पाठ की निजी विशेषताएँ है। इनके कारण ही शिवनाथ चौधरी का यह पाठ अन्य पाठों की अपेक्षा अधिक विशद् और आकर्षक बन जाता है।

गायक शिवनाथ चौधरी अपने को सदैव सीनाथ कहते थे। भोजपुरी में शिवनाथ का रूप 'सीनाथ' ही है। वह कब पैदा हुए ठीक-ठीक बताना संभव नहीं है। 1965 में जब मैंने उनके पाठ 'लोरिकी' या 'लोरिकायन' की रिकार्डिङ्ग की तो उन्होंने अपनी उम्र 70 साल की बतायी थी, अतः लगता है वह 1895 के आस-पास पैदा हुए थे। ठीक-ठीक साल या तारीख बताना इसलिए संभव नही है कि उस समय जन्म और मृत्यु की तिथि अंकित करने वाली संस्थाएँ नहीं थीं, जिन परिवारों में कुण्डली बनाने की परम्परा है वहाँ जन्म की तिथि सरलता से जानी जा सकती है पर ऐसे आभिजात्य वर्ग के परिवार कम ही है। ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी सम्भवतः जन्म और मृत्यु की ठीक-ठीक तिथि पता लगाना संभव नहीं है।

सीनाथ भरौली गाँव में पैदा हुए थे जो उत्तर प्रदेश के बलिया जिले मे गंगातट पर उजियार के पास है। आमतौर पर गायक अपना स्थान उजियार भरौली बताता था। कई गाँव बलिया जिले में भरौली नाम के है। उजियार भरौली कहने से यह पता चल जाता है कि उजियार के पास भरौली में सीनाथ उत्पन्न हुए थे।

लगभग 60 साल की उम्र तक सीनाथ बैलगाड़ी के गाड़ीवान थे। गाड़ीवानी का काम समाप्त होने के बाद उन्होंने खेतीबारी शुरू की थी। जीवन में

उन्होंने केवल दो बार ट्रेन से यात्रा की थी। एक बार अपने गाँव के पास के स्टेशन बक्सर (बिहार में है) से वह जमानिया गये थे, जो पास ही में गाजीपुर जिले में है। दूसरी बार उन्होंने मेरे साथ आगरा तक की यात्रा की थी। उन दिनों मैं लोक-महाकाव्यों के संग्रह में लगा हुआ था। अपने गुरु माता प्रसाद गुप्त जो के० एम० इंस्टीच्यूट के निदेशक थे, के आग्रह पर मैंने आगरा में ही अपना मुख्य केन्द्र बनाया था तथा लोक-साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० सत्येन्द्र जी की कोठी में 54 सूर्य नगर में रहता था। सुना है अब किसी जूते वाले ने उस कोठी को हड़प लिया है।

सीनाथ चौधरी अकेले ट्रेन से यात्रा करने में घबराते थे, अतः मैंने निहालपुर (रतसंड) के अपने सम्बन्धी केशव तिवारी को अपने साथ ले लिया था। केशव तिवारी के सहयोग से ही मुझे सीवनाथ चौधरी का पाठ संगृहीत करने का अवसर मिला। सीवनाथ चौधरी के भाई की ससुराल रतसंड के पास पंड़वार में थी अतः वह वहाँ जाया करते थे। मेरे सम्बन्धी श्री केशव तिवारी से उनकी भेंट वहीं हुई थी। दोनों अच्छे-खासे मित्र बन गये थे।

सीनाथ चौधरी अहीरों में डंढ़होर कुरी के अहीर थे। बलिया मे ग्वाल और पास के बिहार में कृष्नौत गोत के अहीर काफी संख्या में हैं। सभी अहीर लोरिकी को प्रश्रय देते थे। आधुनिकता के प्रभाव और अहीर जाति में सम्पन्नता और उत्तरोत्तर शिक्षा का विकास हो जाने से लोरिकी आदि पर उनकी आस्था नहीं है। रुचि बदल जाने से अब लोक-महाकाव्यों को प्रश्रय नहीं मिल पाता। अतः लोक महाकाव्य अब मृतप्राय है।

गायक के मुख्य गुरु का नाम ठाकुर दयाल था, जो भरौली के ही अहीर थे। सीनाथ के पिता गायक नहीं थे। बचपन में गायक अपने ननिहाल में आकर रहा करते थे जो बलिया जिले के द्वाबा में था। वहाँ भी लोरिकी और लोरिकायन गायक सुना करता था। पूर्वी उत्तर प्रदेश के अहीरों में लोरिकी, बिरहा आदि का प्रचार हमेशा रहा है।

सीनाथ चौधरी के कोई पुत्र नहीं था। सभी कन्याएँ थी। मेरे लिए 1965 में जब उन्होंने लोरिकी गायी तो सारी कन्याओं का विवाह हो चुका था। उनके छोटे भाई गाँव में ही रहकर खेतीबारी करते थे। उनके पुत्र है।

सीवनाथ चौधरी का अहीर परिवार अपने क्षेत्र में काफी सम्मानित था। सीवनाथ चौधरी के लोरिकी गाने से उनके समाज में उनकी प्रतिष्ठा काफी बढ़ गयी थी। आस-पास के अहीर उनसे अपनी और जातीय समस्याओं के बारे मे राय लेने आते थे। मृत्यु के दो वर्ष पूर्व मेरी सीवनाथ चौधरी से भेंट हुई तो वे इस बात से बहुत चिन्तित थे कि उनके गाँव के पास ईसाई मिशनरी पैसा दे देकर चमारों को

ईसाई बना रहे हैं और आस-पास के बड़े लोग विरोध तक नहीं करते। अहीरों की पंचायत में सीनाथ चौधरी का बड़ा सम्मान था। जातीय समस्याओं को सुलझाने में वह बड़ी सहायता करते थे। आस-पास की कुछ बड़ी जातियों से अहीरों का संघर्ष रहता था। सीनाथ इस संघर्ष में अपनी जाति वालों की बड़ी सहायता करते थे।

सीनाथ चौधरी के परिवार में अन्य हिन्दुओं की भांति, दीवाली, दशहरा, कृष्ण जन्माष्टमी आदि मनायी जाती थी। इस दृष्टि से वे अन्य हिन्दुओं से पृथक नहीं थे। पर उनके परिवार में काशीनाथ बाबा की पूजा होती थी जो उस क्षेत्र के अहीरों के अपने देवता हैं। अहीरों का मुख्य पेशा पशुपालन तथा दूध-दही का व्यापार है। काशीनाथ बाबा से वे पशुधन की रक्षा की प्रार्थना करते है। सीनाथ चौधरी ने मुझे बताया कि काशीनाथ बाबा ब्राह्मण थे। किसी संघर्ष में अहीरों ने उनकी हत्या कर दी। बाद में वे ब्रह्म बन गये और अहीरों के पूज्य देवता बन गये।

सीवनाथ चौधरी ने बचपन में ही लोरिकी सीखना शुरू कर दिया था। मैंने जब 1965 में उनकी लोरिकी की रिकार्डिङ्ग की और उनसे पूछा कि लोरिकी वह कितनों दिनों से गा रहे है तो उन्होंने बताया कि अब तो लगभग चालिस साल हो गये। उनकी उम्र लगभग 70 की थी अतः लगता है लगभग 30 साल की उम्र मे उन्होंने लोरिकी का गायन स्वतन्त्र रूप से शुरू कर दिया था। वैसे गायकी की स्कूली शिक्षा उनको बिलकुल नहीं हुई थी। वह हस्ताक्षर करना भी नहीं जानते थे।

गायक के दो प्रमुख शिष्य है—एक है पड़वार के रामदेव तथा दूसरे मीढ़ा गाँव के एक उनके भांजे है जो लोरिकी गाते हैं। रामदेव की लोरिकी का कुछ अंश मैंने टेपबद्ध कर लिया है। मींढ़ा के गायक से मेरी भेंट नहीं हो सकी है। गायक की शिकायत थी कि किसी ने मेरी लोरिकी ठीक से नहीं सीखी। अहीरों की बारात में सम्मान पाने के लिए कुछ अंश इन लोगों ने स्मरण कर लिये है। सीनाथ कहते थे इन लोगों को लोरिकी के प्रति पूर्ण समर्पण नहीं है और न वैसी लगन है जैसी हमारी पीढ़ी में थी। इन नये गायकों मे लोभ भी बहुत है। बारात जाते हैं तो जल्दी ही 'उजरकी' (दूध) की माँग करते हैं और गाने के लिए फीस तय करते हैं। हम लोग नाम और जाति के मान के लिए गाते थे।

लगभग दस दिनों तक मैंने बलिया जिले के रतसंड में 500 व्यक्तियों के बीच 'संवरू का विवाह' के प्रसंग की रिकार्डिङ्ग की। शेष भागों की रिकार्डिङ्ग मैंने आगरे में की थी। गायक ने अपने मुँह से कुछ भी नहीं मांगा। उन्होंने केवल कहा "बाबा, मथुरा-वृन्दावन का तीर्थ करा दीजिए तो मेरा जीवन सफल हो जायगा। मैंने उनको मथुरा, वृन्दावन, दिल्ली की यात्रा करायी। मैं और मेरे सम्बन्धी केशव तिवारी भी साथ थे। मैंने गायक का उचित सम्मान किया। वह मुझसे पैसे नहीं लेना

चाहते थे, पर मैंने उनको अच्छी विदायी दी। वह प्रसन्न होकर अपने गांव लौटे और तीर्थ यात्रा के बाद किये जाने वाले बिरादरी का प्रीतिभोज आयोजित किया, जिसमें काफी लोग शामिल हुए। उनका मेरे प्रति अंतिम दिनों तक स्नेह बना रहा। खेद है कि उनके जीवन काल में 'लोरिकी' का यह पाठ मैं प्रकाशित नहीं कर सका। आशा है उनकी सम्पूर्ण लोरिकी कुछ ही वर्षों में प्रकाशित हो जायगी। 'संवरू का विवाह' प्रथम भाग है। आशा है इससे उनकी आत्मा को शांति मिलेगी।

अन्य गायकों की भाँति सीनाथ भी गांजा पीते थे। गांजा पीये बिना कई-कई घण्टों तक एक प्रसंग को पूरी शक्ति से गाना उनके लिए संभव नहीं था।

गायक लिख-पढ़ नहीं सकता था। आधुनिक दृष्टि से वह निरक्षर और अनपढ़ था, पर गायक रामायण और महाभारत तथा अनेक पौराणिक गाथाओं से परिचित था। वह 'बिरहा' भी गाता था पर लोरिकी का वह विशेष रूप से गायक था। पूरे जिले में ही नहीं आस-पास के जिलों के अहीरों में भी उसका नाम था।

गायक मौलिक आशु कवि भी था। तुरन्त पद रचना कर डालना उसकी सहज विशेषता थी। उदाहरण के लिए मेरे टेपरिकार्डर के बारे में गायक शीघ्र ही एक पद इस प्रकार जोड़ देता है —

आजु इहे लेह लेइना छापवा ए भइया उतरिहे
सबकर गान के वोजनि देइबी ना टनेवा ऽ य
आज गही देखइ जा खेलवा मोर अल्हवा बेल्हा
आ पंचे गाइ के गाना अब दिहली रे गनाइ
ननी अब सुनि लेबऽ गवइया पंचे अन्नवा बेल्हा
आ खोइलनि रनियाँ दिनभर जतन करतु थातिय के अपना बाऽऽइ।

[पृष्ठ 37]

"भाइयों, आज यह मशीन में छापा उतारेंगे। आज मैं सबके गानों का वजन करवा दूँगा। आज आप लोग सचसच खेल देखिये। मैने गाना गाकर सुना दिया है। गाने वालो, खोइलनि रानी दिन भर अपनी थाती को यत्नपूर्वक संभाल रही है।"

इस प्रकार को तुरन्त पद रचना कर देने की विशेषता बनारस के पांचू भगत के पाठ में देखी जा सकती है।

[देखिए लोरिकी की भूमिका पृ० 16]

कई गायक बीच-बीच में अपने जीवन के बारे में आत्मकथन करते हैं। सीनाथ तथा इलाहाबाद के गायक रामअवतार में यह बात विशेष रूप से पायी जाती है।

सीनाथ चौधरी का एक आत्मकथन इस प्रकार है, "मेरा गाना छूट गया है। हमारा शरीर खोखला हो चुका है। हे देवी, आप अच्छे समय की ही साथी हैं। समय बिगड़ने पर आपने मेरा साथ छोड़ दिया है। हे देवी, मैं तुम्हारा गाना गा रहा हूँ, तुमने मृत्युलोक में मेरा संग पकड़ा। भवानी, मेरा भाग्य खुल जाय, दुर्गा आप झटपट आइए। गीत के समय हे सरस्वती, आप मेरी जीभ पर विराजिए।" [पृष्ठ 86]

इस तरह के आत्मकथन गायक बार-बार करता है। एक अन्य प्रसंग इस प्रकार है :

आजु पंचे जब सुनिली बयान—
बाकी आजु अजब हउवे ना आ गीतिया साचो मुहबलि के।
ए पंचे सर बिन बिगड़त बाईनि ना गानावारे दहे हमार।
एहि खातिर आपन बेटाइ पालल बाड़े दुनिया में।
थाकला में आइ जइहन ना कामवाइ रे हमार।
रतिया बटुरी रोइ रोइ ना दुखवा के बानी न कहत।
ओहि आजु तनिकोइ ना सुनतनि हो आराएदाति।

[पृष्ठ 223-224]

[पंचों, अब बयान सुनिये। मुहबलि का यह गाना अजब है। पंचों, स्वर के बिना मेरा यह गाना बिगड़ रहा है। ऐसे समय के लिए दुनियाँ में बेटों को पाला जाता है कि शरीर थक जाने पर वे काम आयेंगे। इस भरी रात में मैं रोकर अपना दुख कह रहा हूँ किन्तु मेरी प्रार्थना कोई सुन नहीं रहा है।]

गायक की मृत्यु 1982 ई० में हुई। मृत्यु के समय उनकी उम्र 85 वर्ष से कम नहीं रही होगी।

कथा संगठन तथा कथा तन्तुओं की अन्य पाठों से तुलना

'संवरू का विवाह' इस पाठ में गायक ने बहुत विस्तार से गाया है। कुछ गायक पहले 'लोरिक का विवाह' गाते हैं फिर 'संवरू का विवाह' गाते हैं। सीनाथ चौधरी का कहना था कि बड़े भाई के रहते छोटे भाई का विवाह कैसे होगा ? अतः मैं पहले संवरू का विवाह गा रहा हूँ। इलाहाबाद तथा मिर्जापुर के गायक पहले 'लोरिक का विवाह' गाते हैं, बाद में 'संवरू का विवाह' गाते है। उनके अनुसार मुख्य कथा लोरिक की है, लोरिक की बीरता ही इस पंवारा में प्रधान है। अतः वे लोरिक का विवाह ही पहले गाते है।

संवरू के विवाह के कथा-तन्तु

(1) सुमिरन

गाथा प्रारम्भ करने के पूर्व सीनाथ चौधरी, राम ठाकुर, डीह बाबा, जगदम्बा,

भवानी दुर्गा आदि का स्मरण करते हैं और उनसे गाने में सहायता करने की प्रार्थना करते हैं।

मेरे बनारस के पाठ में भी राम का स्मरण पांचू भगत विशद् रूप से करते हैं और उनके साथ सीता जी का। बाद में भगवती और सरस्वती की प्रार्थना करते हैं। पांचू भगत का सुमिरन सीनाथ चौधरी की अपेक्षा संक्षिप्त है। पाँचू भगत डीह और ठाकुर का उल्लेख नहीं करते। वे अर्जुन, सहदेव, भीम आदि का स्मरण अवश्य करते हैं।

इलाहाबाद के राम अवतार यादव रामलखन की जोड़ी और सीता का उल्लेख करते हैं, फिर दुर्गा और उनकी सात बहिनों का उल्लेख करते हैं। प्रार्थना करते समय गायक यह भी उल्लेख कर देता है कि चनैनी में बारह किले हैं पर मैं तेरहवाँ किला भी जानता हूँ।

मिर्जापुर के ददई केवट राम, डीह ठाकुर के साथ मरही और श्मशान का भी स्मरण करते है। गोरइया और बघौता की प्रार्थना करते हैं फिर दुर्गा का स्मरण करते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि किसी दो गायक के सुमिरन के प्रसंग में पूर्ण समानता नहीं है। सभी गायक अपने-अपने ढंग मे प्रार्थना करते है फिर कथा के मुख्य प्रसंग कर आते हैं।

(2) मांवर और लोरिक की उत्पत्ति

सीनाथ चौधरी सुमिरन के बाद बामरि और उनके छै पुत्रों का उल्लेख करते हैं जो दैव के लाल थे, पहलवान थे। उनका मुरहन मे अखाड़ा है। यहाँ भीमलिया, सिरजवा, झिंगुरी, दसवंता, आदि कुश्ती लड़ते थे। मुरहन सुहवल के निकट था। भीमली के जोड़ का दूसरा बीर नहीं था। इस बात का भीमली को अहंकार भी हो गया है कि वह अद्वितीय बीर है।

बनारस के पांचू भगत, इलाहाबाद के रामअवतार तथा मिर्जापुर के ददई केवट के पाठ में ये विस्तार नहीं है। पांचू भगत गउरा और बोहा का वर्णन करते हैं, ब्रह्माइन बनसत्तो का चित्रण करते हैं फिर सोहवल के राजा बामरि के प्रण का उल्लेख करते हैं कि 'मैं समुर नहीं कहलाना चाहता और न मेरे लड़के साले कहे जायँगे।' बामरि का यह प्रण बनारस के पांचू भगत के पाठ में बार-बार दुहराया जाता है। इसके बाद तुरन्त धोबी अजयी और उसकी पत्नी विजवा का प्रसंग आता है जिनकी अगुवाई में ही संवरू (मलसांवर) का विवाह सुहवल में होता है। इलाहाबाद के पाठ में प्रारम्भ में गउरा का वर्णन है। गायक रामअवतार यह चित्रित करते है कि गउरा के राजा सहदेव महदेव राज्य में खोइलनि और उसके

पति टिकइत सुरवलि तेजउलि, कनउज आदि चले जाते है। बारह वर्ष तक खोइलनि शिव की आराधना करती हैं तब लोरिक वंध्या खोइलनि के गर्भ में अवतार ग्रहण करते हैं। मिर्जापुर के ददई केवट ने खोइलनि के तप और लोरिक के अलौकिक अवतार की कहानी नही दी है।

प्रस्तुत गायक सीनाथ चौधरी ऐसा गाते हैं कि संवरू का जन्म सूर्य की दृष्टि लगने से एक ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ। उन्ही के तप से शिव वरदान देते हैं और शंकर जी द्वारा दिये हुए चावल का पिंड खाने से लोरिक पैदा होता है। सीनाथ चौधरी के पाठ में यह सम्पूर्ण कथा विस्तार से दी गयी है। अब तक के मेरे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी पाठों की तुलना से यह बात प्रकट हो जाती है कि सभी गायक मलसांवर का विवाह और इससे सम्बन्धित लड़ाइयाँ, फिर लोरिक का विवाह और उससे सम्बन्धित लड़ाइयाँ विस्तार से गाते हैं किन्तु सभी गायक कहानी अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत करते है। सब में निजी मौलिकता है। केवल यही नहीं कि कोई गायक पहले मलसांवर का विवाह गाता है फिर लोरिक का विवाह या कोई गायक इस क्रम को पलट देता है। सच तो यह है ये गायक अपनी कथा भी अपनी विशेष मौलिकता के साथ गाते है। शिव कारण है लोरिक के जन्म के। पर दो गायक इस प्रसंग को दो प्रकार से गाते हैं। मलसांवर के जन्म की कथा जिसमें विधवा ब्राह्मणी को सूर्य की दृष्टि लगने से ही गर्भ रह जाता है केवल सीनाथ चौधरी के ही पाठ में है। इसी प्रकार सतिया के जन्म की कहानी जिसमे बामरि के समाधि-यज्ञ से तथा गंगा और शेषनाग के वरदान से सतिया उत्पन्न होती है केवल सीनाथ चौधरी के पाठ में ही पायी जाती है। इन विस्तारपूर्वक चित्रणों के कारण सीनाथ चौधरी का पाठ अन्य पाठों की तुलना में लगभग दुगुना हो गया है। वर्णन विस्तार इस गायक की अपनी विशेषता है।

(3) लोरिक के अखाड़े के गुरु अजयी धोबी का सुहवलि में विवाह

धोबी अजयी अपनी शक्ति अजमाने सुहवल जाता है। वहाँ के युवकों को 'गंगनी' प्रतियोगिता मे पराजित कर देता है। फिर प्रसंगवश वह अपने और लोरिक-सांवर के गाँव गउरा का भी परिचय देता है। बामरि पत्र लिखकर झिंगुरी को गेरुवा पहाड़ से बुलाता है। झिंगुरी पहले तो अजयी के सामने दुर्बल दिखाई पड़ता है पर अपने पूज्य किसी अवगढ़ बाबा को पुकारता है जिनकी वह पूजा किया करता था। अवगढ़ बाबा झिंगुरी की सहायता करते है और अजयी की टाग खीच लेते है। तब झिंगुरी उस पर आघात करता है। अजयी बुरी तरह आहत होता है। सोहवल का धोबी मक्खू और उसकी पत्नी उसकी सेवा करती है। अन्त में वह उनकी दो कन्याओं विजवा और सरासीर से विवाह कर गउरा वापस आता है। धोबी अजयी और विजबा बाद मे चलकर अगुवाई करते हैं और संवरू का विवाह सोहवल के बामरि की कन्या सतिया से होती है।

यह विस्तार मेरे द्वारा प्रकाशित न तो बनारस और इलाहाबाद के पाठ में और न मिर्जापुर के पाठ में मिलता है। यह प्रसंग मीनाथ चौधरी के पाठ की अपनी विशेषता है। वैसे संक्षेप में अजयी और उसकी पत्नी विजवा का उल्लेख सभी गायक कर देते हैं। मीनाथ चौधरी के पाठ में सात महीने हलुवा गुड़ खाकर धोबी अजयी चैतन्य हुआ था। बामरि की गुप्त आज्ञा लेकर मक्खू ने विजवा और सरासरि का अजयी से विवाह कर दिया था। कुछ गायक विजवा सरासरि को दो नहीं एक नाम कर देते हैं। मिर्जापुर के पाठ में अजई मुहवल का था जो गउरा में आकर रहने लगा था। इलाहाबाद के पाठ में विजवा की एक बहन बिजासरि है। बनारस के पाठ मे केवल विजवा का उल्लेख है जो अजयी की पत्नी है। दोनों संवरू के विवाह में अगुवाई करते हैं। इस प्रसंग को भी सभी गायक अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत करते हैं। मीनाथ चौधरी के पाठ में यह प्रसंग विशेष महत्त्वपूर्ण इसलिए बन जाता है कि महतो दीवान और मंत्री बामरि को परामर्श देकर उसके प्रण को तोड़वाते है जिसमे अपने राज्य की कन्याओं का वह विवाह नहीं करने देना चाहते।

खेदू विजवा और सरासरि का विवाह अजयी से कर देता है। यह बामरि के प्रण का अपवाद स्वरूप है। धोबी खेदू, उसकी पत्नी तथा अजयी, और विजवा सोहवल के प्रसंग मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। ये लोरिक और बामरि के बीच संदेशवाहक ही नहीं है, ये कई घटनाओं को आगे बढ़ाने मे भी सहायक है। उदाहरण के लिए मक्खू को बामरि भोजी सगड़ पर पता लगाने के लिए भेजता है कि उसका दामाद अजयी किन-किन को लेकर मुहवल आया है। इसी प्रकार अजयी भी सोहवल की परिस्थितियों का ज्ञान लोरिक को कराता है।

(4) होली का उत्सव, चनवा का लोरिक को व्यंग्य कसना—सांवर के विवाह की भूमिका

सांवर के विवाह के पूर्व होली का प्रसंग आता है। अजयी और लोरिक कुसुमापुर होली खेलने जाते हैं। यहीं चनवा लोरिक पर व्यंग्य करती है कि तुम पहले अपने भाई का विवाह करा लो नहीं तो तुम्हारा वंश डूब जायगा और तुम्हें कोई अन्न और जल देने वाला नहीं होगा। चनवा हर पाठ मे लोरिक पर व्यंग्य कसती है पर मीनाथ के पाठ में यह प्रसंग अधिक नाटकीय है। यहाँ लोरिक वैसे ही होली खेलने जाता है जैसे व्रज में कृष्ण होली खेलते थे। चनवा का यहाँ लोरिक के प्रति पूर्व राग दिखाया गया है। चनवा के पिता महदेव नहीं चाहते कि कुसुमापुर में होली खेली जाय पर अजयी लोरिक को उकसाता है। सभी गोल बनाकर कुसुमापुर पहुँचते हैं। चनवा पहले लोरिक पर पिचकारी मारती है, उसकी गर्दन भींग जाती है। तब लोरिक भी घड़े में रंग भरकर चनवा पर पिचकारी मारता है। उसने पिचकारी पर पूरी शक्ति लगा दी है और रंग के बौछार से चनवा के वक्ष पर गहरी चोट लगती

है। लोरिक चनवा पर फिर रंग मारता है। वह चौखट पर नाचकर गिर पड़ती है। अजयी डरकर वहाँ से भाग खड़ा होता है। लोरिक भी गउरा का रास्ता नापता है। तब चनवा लोरिक पर व्यंग्य करती है कि तुमने धोबी से मित्रता की है इसलिए कोई तुम्हारे यहाँ विवाह करने नहीं आता। दो भाई जाठ की तरह कुंवारे हो। लोरिक को यह बात लग जाती है। वह घर आता है उदास, विषण्ण वदन। तब संवरू के विवाह की प्रस्तावना बनती है जिसका उल्लेख कथा के सारांश में किया जा चुका है।

बनारस के पाठ में भी फगुवा का प्रसंग है। लोरिक कुसुमापुर होली खेलने जाता है, साथ में धोबी को बुलवा लेता है। सीनाथ के पाठ में अजयी धोबी ही होली खेलने का कार्यक्रम बनाता है और लोरिक उसका अनुगमन करता है। लोरिक कुसुमापुर में पहले चनवा की मां पर रंग फेंकता है जबकि सीनाथ चौधरी के पाठ में उल्टा है। पहले यहाँ चनवा ही लोरिक पर रंग फेंकती है। बहरहाल, चनवा कटूक्ति करती है कि तुम अपने गाँव की बहिन-बिटिया को नहीं पहचानते और होली खेलते हो। तुम सांवर का विवाह कर भावज लाओ तब होली खेलो। तुम्हें लज्जा आनी चाहिये। संवरू मरगे तो उनको हल्दी लगाना पड़ेगा। स्पष्ट है बनारस के पाठ में लोरिक ही पहले रंग फेंकता है तब चनवा कटूक्ति करती है। सीनाथ चौधरी के पाठ में चनवा पहल करती है। धोबी से मित्रता करने के कारण सांवर और लोरिक का विवाह रुका हुआ है। यह केवल सीनाथ चौधरी के पाठ में मिलता है।

इलाहाबाद के पाठ में भी होली का प्रसंग है और लोरिक यहाँ भी पहले चनवा पर रंग फेंकते हैं और चनवा लोरिक को अपमानित करती है। यहाँ लोरिक का विवाह हो चुका है। यहाँ होली खेलने वालों में लोरिक का साला नहुआ भी है। धोबी अजयी का उल्लेख स्पष्ट नहीं है। लोरिक ने अपने संग अनेक जातियों के युवकों को रखा है। यहाँ चनवा पहले लोरिक पर नाबदान का कीचड़ फेंकती है। यहाँ चनवा का लोरिक के प्रति पूर्व राग स्पष्ट हो जाता है। खोइलिन बिजवा के पास सहायता के लिए जाती है तो बिजवा कहती है कि अजयी बामिन के यहां गाय चरा चुका है। अजयी गलिया को आश्वासन देकर आया है कि वह उसकी शादी करायेगा पर धोबी हर पाठ में कापुरुष और ढुलमुल दिखाया गया है। मिर्जापुर के पाठ में भी होली का प्रसंग है। यहां पहले चनवा मिट्टी और गोबर का पानी मिलाकर लोरिक पर फेंकती है। फिर लोरिक उसकी छाती पर रंग मारता है, वह गिर पड़ती है। फिर कटु वचन बोलती है कि "सतिया से सांवर की शादी कर लो तब तुम्हें मर्द समझूंगी। तुमने अगोरी में एक कमजोर राजा को मारा और किसानों को मारा तो अपने को मर्द समझते हो।" लोरिक इस ताने से यहां आहत हो उठता है।

स्पष्ट है होली का वर्णन सभी पाठों में भिन्न-भिन्न प्रकार से है, पर चनवा का सांवर के विवाह के लिए लोरिक को ताना देना, उस पर व्यंग्य करना सभी पाठों में वर्तमान है। सांवर के विवाह की प्रस्तावना इन्हीं कटूक्तियों से बनती है।

(5) लोरिक की दुर्गा पूजा—सहायता के लिए देवी का लोरिक को आश्वासन

संवरू के विवाह के पूर्व सीनाथ चौधरी के पाठ में एक विशेष प्रसंग आता है जिसमें लोरिक दुर्गा की पूजा करता है। इस दुर्गा-पूजा में सवा सौ मन घी, सवा सौ मन समिधा तथा सवा सौ मन जौ की तैयारी की गयी है। सवा सौ बकरे और भेड़ों के बलिदान की भी इस पूजा में व्यवस्था की गयी है। लोरिक और उसकी माँ खोइलनि सभी इस पूजा में तत्परता से लगे हुए हैं। इसमें कुम्हार, बजाज, पंडित सभी बुलाये जाते हैं। जुलाहे, धुनिया इसमें भेड़ों और बकरों की व्यवस्था करते हैं। राजा सहदेव चंदन की लकड़ी की व्यवस्था करते हैं। इसमें हवन और पूजा जमकर होती है। सवा सौ खप्पर खेद-मैदान में भवानी के लिए तैयार किये जाते हैं। धरमा सांवर (संवरू) इसमें काँवर से दूध भेजते हैं।

पूजा के लिए हवन कुंड में अग्नि प्रज्वलित की जाती है तो धुआं मृत्युलोक से इन्द्रपुरी में पहुँच जाता है। तब दुर्गा वहाँ गर्जना करते हुए प्रकट हो जाती हैं। वह सम्पूर्ण पूजा स्वीकार कर लेती है पर उनका तब भी पेट नहीं भरता। वह सारे खप्पर चाट जाती हैं। अन्त में लोरिक अपनी जांघ काट कर उन्हें अपना खून अर्पित करता है तब जाकर उनका पेट भरता है। फिर वह लोरिक को सहायता का आश्वासन देती है। भवानी लोरिक को बताती हैं कि सुहवल का लोहा बड़ा कठिन है। मैं जानती कि लोरिक सुहवल पर चढ़ाई करने वाला है तो मैं उसकी पूजा न लेती। पर अब तो काफी देर हो चुकी थी। दुर्गा बनारस, इलाहाबाद, मिर्जापुर आदि के हर पाठ में लोरिक की सहायता करती है। लोरिक की वह आराध्य देवी हैं पर केवल सीनाथ चौधरी के पाठ में दुर्गा की पूजा विस्तार से करायी गयी है। श्रोता इस प्रसंग को आनन्द से सुनते है। इस प्रसंग से पता चल जाता है कि संवरू के विवाह की घटनाएँ अत्यन्त दुष्कर है। लोरिक अत्यन्त बीर होते हुए भी दुर्गा की सहायता के बिना एकदम असहाय हो जाता है।

(6) सतिया का अमर सिंदूर का सिंधोरा

दुर्गा लोरिक को बताती हैं कि सतिया के सिंदूर का सिंधोरा पिड़नापुर में है। उसकी हिरिया जिरिया बंगालिनि डाइन रक्षा कर रही हैं। उस दुर्गम स्थान में जाकर अमर सिंदूर सिंधोरा लाये बिना संवरू का सतिया से विवाह संभव नहीं है। दुर्गा लोरिक को सावधान करती है तुम स्त्रियों पर लुब्ध हो जाते हो, पिड़नापुर में स्त्रियों का राज्य है, लोरिक को ब्रह्मचर्य का लंगोट बंधवाती हैं और एक बालक के रूप में लोरिक को लेकर पिड़नापुर पहुँचती हैं। उनका रथ लोरिक के साथ संध्या

समय पिड़नापुर पहुँचता है । दुर्गा की वहाँ देवी बनसत्ती से भेंट होती है । स्मरणीय है कि वनसत्ती दुर्गा के साथ लोरिक की सहायता करती हैं । उनका उल्लेख बनारस के पाँच भगत के पाठ में विस्तार से हुआ है । इलाहाबाद के रामअवतार विरहिया के पाठ में भी इनका उल्लेख है ।

प्रस्तुत पाठ में पिड़नापुर में एक शिव मन्दिर है, वहाँ मसक रूप धारण कर दुर्गा अन्दर प्रवेश करती हैं । बालक लोरिक की रखवाली के लिए वह बनसत्तो को सौंप देती हैं । हिरिया-जिरिया बंगालिन तथा जासो कलवारिन उस मन्दिर में पूजा करती हैं, वहाँ अरुवा-मरुवा, तिखड़ी और गुलाबी फूल खिले रहते हैं । यहाँ कमरू-कमच्छा का जादू चलाकर हिरिया-जिरिया तथा जसुई आदमियों को पशु या पक्षी बना सकती थीं । दुर्गा वहाँ लोरिक को योगी बनाती हैं जो अत्यन्त भव्य रूपवाला है । जसुई कलवारिन तथा हिरिया-जिरिया की कामाग्नि दहक उठती है । वे साज-शृंगार कर लोरिक को आकृष्ट करने का उपक्रम करती हैं । नंगा होकर सागर में स्नान करती हैं । लोरिक कृष्ण की भाँति उनका चीरहरण करता है । हिरिया-जिरिया परेशान होकर सूर्य नारायण फिर नागदेवता के यहाँ जाती हैं और अपने खोये वस्त्रों के बारे में पूछती हैं । यह पूरी कहानी सीनाथ चौधरी के पाठ में एक अलौकिक देवकथा बन जाती है । शेषनाग जादूगरिनों को बताते है कि वस्त्रों की चोरी गउरा के लोरिक ने की है जिसने योगी रूप धारण किया है । जादूगरिनें लोरिक को तोता बना लेती है । दुर्गा की सहायता से वह फिर आदमी बनता है । फिर दुर्गा के साथ वह लोहितागढ आता है जहां सचमुच सिंधौरा रखा हुआ है । वहाँ तीन सौ साठ दानव सती के सिंधौरा की रक्षा करते हैं । भस्मासुर और सुरसी भी वहाँ हैं । लोहितागढ़ से लोरिक सती के सिंदूर का सिंधौरा लेकर गउरा वापस आता है । दुर्गा हर परिस्थिति में उसका साथ देती है, उसके लिए छल भी करती हैं, सुरसी से मौसी का नाता जोड़कर सिंधौरा का ठीक-ठाक पता भी लेती है ।

कथा का यह विस्तार सीनाथ चौधरी के पाठ की एक विशिष्टता है । सीनाथ चौधरी के श्रोता इस कथा को बार-बार सुनना चाहते थे । मिर्जापुर के ददई केवट के पाठ में भी यह प्रसंग है पर कहानी बिल्कुल भिन्न है । मलसांवर के विवाह के पूर्व जब सतिया के लगभग सभी भाई लोरिक द्वारा मारे जाते हैं तो सतिया दुर्गा को बताती है कि मेरा अमर सिंदूर सात समुद्र पार है, उसके बिना मेरा विवाह संभव नही है । दुर्गा बारात की रखवाली करती हैं और लोरिक हंस-हंसिनी के पंखों पर बैठकर सात समुद्र पार करता है और अमर सिंदूर का सिंधौरा लेकर सुरवलि (सुहवलि) वापस आता है । सुहाग से इस सिंदूर से संवरू सतिया का विवाह सभव होता है । मिर्जापुर के पाठ में हंस-हंसिनी का लोरिक के साथ बात-चीत, हंस-हंसिनी को लोरिक द्वारा मांस खिलाया जाना, आदि चित्रण अत्यन्त आकर्षक

हैं । अलौकिक कथा होते हुए भी ये प्रसंग मार्मिक हैं । ददई केवट इसको सारे युद्धों के अन्त में गाते हैं । सीनाथ चौधरी लोरिक और बामरि के पुत्रों की लड़ाइयों के पूर्व ही इसको गाते हैं । ये अलौकिक प्रसंग लोकमहाकाव्य के अलंकरण हैं । ये अतिमानवीय होते हुए भी श्रोताओं को मुग्ध करते है । वे बार-बार ऐसे प्रसंगों को सुनना चाहते हैं । मेरे संग्रह के अन्य पाठों मे पिड़नापुर या अमर सिंदूर सिंधौरा के प्रसंग नही है । पर दूसरे गायक अपनी कथा को अद्भुत बनाने के लिए अन्य प्रसंग जोड़ते हैं । दुर्गा का अपना रूप बदलना, लोरिक को बालक और फिर योगी आदि बना देना दुर्गा की विशेषता है । रूप परिवर्तन भारत की पौराणिक कथाओं मे देव और दानव दोनों करते हैं । भारतीय लोक महाकाव्य भी पौराणिक प्रभाव से अछूते नहीं हैं ।

(7) संवरू की बारात का मुहवल प्रस्थान—
दानव का गेंडा के रूप में सांवर तथा सम्पूर्ण बारात को निगल जाना

बारात गउरा से चल चुकी है और मुहवल के पास तक पहुँच चुकी है । इसी बीच सतिया ने अपने सत के प्रभाव से एक गेंडा का निर्माण किया जिसने लोरिक की सारी बारात उदरस्थ कर ली । दुर्गा ने लोरिक को योगी बना दिया । वह मुहवल का गांव और गढ़ छोड़कर नगर में फेरा लगाने लगा । उसके हाथ मे माया की सारंगी था । वह भीख मांग रहा है । उसकी आंखों से झर-झर आँसू गिर रहे है । वह किसी की भिक्षा नहीं स्वीकार कर रहा है । कहता है मैं भिक्षा के लिए नही आया हूँ, बारात लेकर मैं मुहवल आया था, यहां मेरी सारी बारात गायब हो गयी है । इसीलिए मैं यहां फेरा लगा रहा हूं । किसी को बारात का पता नही है ।

दुर्गा चिंतित होकर धरती से फट जाने की प्रार्थना करती है । धरती फट जाती है और दुर्गा लोरिक को वहां छिपाकर अपने भाई ब्रह्मा के यहां सहायता की मांग करने जाती है । वहां ब्रह्मा को किला फूंक देने के लिए तत्पर हो जाती है । तब ब्रह्मा की पत्नी बरम्हाइन ब्रह्मा दुर्गा के पक्ष मे हो जाती है । दुर्गा के क्रोध से चिंतित होकर देवता लोग बारात का पता लगाते है । इन्द्रासन मे ढूँढ़ते है, कैलाश में ढूंढ़ते हैं, आकाश में ढूंढ़ते है, बारात का पता नहीं चलता । अन्त में शेषनाग पर देवताओं की दृष्टि जाती है । लोरिक को लेकर भवानी शेषनाग के पास पाताल-लोक जाती है कि शायद वह बारात का पता बता दे । दुर्गा वहां शेषनाग का फण नाथ कर लोरिक के हाथ में दे देती है । नागिन त्राहि-त्राहि करने लगती है । नाग को वश में करने के लिए दुर्गा को देवता लोग गरुड़ को भी देते है । दुर्गा नाग को गली-गली नचाती हैं । नाग बता देते है कि यह सारा खेल सती का है । सती ने ही बारात को गेंडे से निगलवाया है । नाग को लेकर वह गेंडे के पास पहुँचती हैं । नाग के निर्देश करने पर लोरिक गेंडे की गर्दन काट लेता है । सारी बारात बाहर

आती है। अजयी आदि के साथ सारी बारात बाहर निकलती है। पूंछ में संवरू रह गये थे। पूंछ काटने पर वह भी बाहर निकलते हैं।

सतिया द्वारा विघ्न उपस्थित किये जाने की यह पहली बड़ी घटना है। मेरे संग्रह के अन्य पाठों में केवल मिर्जापुर के पाठ में यह प्रसंग आता है कि ब्रह्मा अपना दूत भेजते हैं और वह दूत सारी बारात निगल जाता है। यहाँ बारात की संख्या सवा लाख है। बारात निगल कर दानव दूत पानी पीने जाता है। लोरिक दुर्गा के आदेश पर दानव की गर्दन काट लेता है और बारात बाहर आती है। यह प्रसंग यहाँ बहुत ही संक्षिप्त है। मिर्जापुर के पाठ में ब्रह्मा एक डाइन की भी सृष्टि करते हैं जो गांगी नाऊ तथा अजयी धोबी को निगल जाती है। दुर्गा के आदेश पर लोरिक डाइन का पेट फाड़ देता है और धोबी अजयी तथा गांगी नाऊ बाहर आते है। डाइन का प्रसंग सीनाथ चौधरी के पाठ में नहीं है। सीनाथ चौधरी के पाठ में सतिया अपने सत से गेंडे की रचना करती है, जो बारात निगलता है। मिर्जापुर के पाठ में ब्रह्मा ही दानव और डाइन की सृष्टि करते है। दोनों पाठों में दुर्गा की सहायता से ही लोरिक बारात को उबार पाता है।

(8) बामरि के पुत्रों से लोरिक की लड़ाइयाँ—
पुत्रों की मृत्यु के बाद सतिया के विवाह के लिए उद्यत—शादी सम्पन्न

बारात मुहवल मोती-सगड़ के घाट पर है वहाँ भीमली का भाला गड़ा हुआ है। लोरिक पहले भीमली का भाला उखाड़ने मे असमर्थ है, बाद में दुर्गा की सहायता से वह भाला उखाड़ता है। बाराती मुहवल में अच्छी तरह टिक गये हैं। बाजे-गाजे की तुमुल ध्वनि सुनकर बझी बमरी क्रुद्ध हो उठा है। लोरिक बारात की रखवाली कर रहा है, पहरा दे रहा है। इधर सतिया अपने सत का सुमिरन कर रही है और उसकी पुकार पर नागिन हरदाइया आती है। सती उससे प्रार्थना करती है कि वह सारी बारात को डंस ले। हरदोइया उसको ऐसा न करने के लिए समझाती है और कहती है कि सती को अन्त मे पछताना पड़ेगा। पर सती के आग्रह पर हरदाइया सारी बारात को डंस लेती है। सारी बारात मर जाती है। दुर्गा की सहायता से लोरिक बच जाता है। यह जानकर कि लोरिक नहीं मरा है सतिया रो उठती है। मलसांवर की मृत्यु से लोरिक भी करुण क्रंदन कर उठता है। दुर्गा की आज्ञा से वह रात-दिन मृतकों की रक्षा करता है। वह कौवों और गिद्धों को उड़ाता है ताकि मृतकों का शरीर अक्षत रहे। सती ब्रह्मा के पास जाती है और उसे पता चलता है कि ब्रह्मा ने परोक्ष में सती के विवाह का लेख भाग्य में इसलिए लिख दिया था कि सती यदि माया के लोक मे जायगी तो घर-घर में विवाह का उत्सव देखकर वह पछतायेगी और उनको (ब्रह्मा को) कोसेगी। सती दुखी होकर वापस आती है और हरदाइया नागिन से प्रार्थना करती है कि मृतकों के शरीर से वह

विष निकाल कर उन्हें जीवित कर दे। हरदोइया सती को धिक्कारती है और अन्त में विष खींचकर बारातियों को जिला देती है।

यह सारी कथा देवी कथा बन जाती है। यहाँ सतिया का ब्रह्मा के पास जाना, सत के बल से सम्पूर्ण बारात को हरदोइया नागिन से डंसवा लेना आदि ये सारी कथाएँ अलौकिक हैं। सतिया का पिता अपने प्रण से नहीं डिगता। लोरिक दल के सारे बीर अपनी-अपनी शक्ति आजमाते हैं पर बमरी के पुत्रों के आगे उनकी शक्ति काम नहीं करती। अजयी धोबी पर मुसीबत आती है और उसकी सारी शक्ति सुहवल में क्षीण पड़ जाती है। संवरू सतिया के पिता बमरी का किला ध्वस्त करने के लिए अपना बाण उठाते हैं पर लोरिक उनको रोकता है। बमरी पत्र लिखकर अपने पुत्रों को बुलाता है। वे सुहवल में नहीं रहते। झिंगुरी बबुरो बन रहते हैं। सिरजवा भी उसके कहीं पास ही रहता है। भीमली फुलहरि नामक स्थान पर रहते हैं। बामरि के लगभग सभी पुत्र लोरिक से युद्ध में मारे जाते हैं। केवल एक कुसल्हा नामक पुत्र बच रहता है जो सती का लावा परछता है।

सोनाथ चौधरी के इस पाठ से प्रतीत होता है कि कहानी सुरहाताल के आस-पास की है। झिंगुरी और सिरजवा वहीं कहीं पास में रहते हैं यही सुरहाताल के आस-पास की कहानी सुरहन, सुहवल, सोहवलि के नाम से सभी गायक गाते हैं। 'संवरू से विवाह' की लड़ाइयाँ हर पाठ में सभी सुहवल में होती है। एक ही गायक अपने पाठ में सुहवल के लिए भिन्न-भिन्न नाम दे देता है पर सभी गायकों के पाठों में सुरहादह झील या ताल की ध्वनि सुरक्षित है। सुरहा बलिया जिले में आज भी एक बड़ा ताल है। यह चौदह कोस में फैला हुआ है ऐसा लोगों में प्रचलित है। सोनाथ चौधरी भी अपने पाठ में इसका उल्लेख करते हैं।

काहें जे ओकर देखनी चउदह कोस दह चाकर।
आर जड़ में खारहवा जमल वा भइया सुदुमुर
बीचवा म पंवड़ी जामलि वे झीनहारि
जे इमे घुमति बाड़ी गइया सुघरा के
दुर्गाया के सोरजल रे पलइया ले बाइ
आजु जब झरत रहल राव गइयन के
उअ जलसा देखब जागइ दादा बाइ
ओइजा जो जुमलि गइली मो बोहवा में
जेवनि आजू बहक रहली गइया रे हमारि (पृष्ठ 313-314)

केवल सोनाथ चौधरी ही नहीं अन्य गायक भी सुरहा और बोहा का किसी न किसी प्रकार उल्लेख करते हैं। मैं अन्यत्र स्पष्ट कर चुका हूँ कि बलिया के सुरहाताल के आस-पास के गाँवों, गोठहुली, जीरा बस्ती, धरहरा, बसन्तपुर और बोहा के अखार और संवरू बान तथा अन्य अनेक गाँवों में अभी भी लोग लोरिक

का नाम अपने गाँव से जोड़ते हैं। बोहा का संवरू बान, संवरू का स्थान था। 'अखार' में लोरिक का अखाड़ा था। ये सारी किंवदन्तियाँ यह प्रकट करती हैं कि लोरिक का इन स्थानों से शायद सम्बन्ध रहा होगा। अन्य जिलों में कहीं नहीं मिलेगा कि अनेक गाँव इस प्रकार अपने नाम के साथ लोरिक की कहानी जोड़ते हों। यद्यपि यह सच है कि अभी तक बलिया या किसी अन्य स्थान में लोरिक के सम्बन्ध में स्पष्ट पुरातात्विक प्रमाण नहीं मिलते।

बनारस के पाठ में पाँचू भगत ने बामरि के पुत्रों में दसवंत को विशेष महत्त्व दिया है। दसवंत और लोरिक के युद्ध में अनेक बार दसवंत का सिर कटता है पर फिर वह जुड़ जाता है। लोरिक भी अनेक बार आहत होता है। उसको दुर्गा सदैव सहायता देती है। एक बार तो दसवंत के बाण से आहत होकर लोरिक धरती पर गिर जाता है। दुर्गा लोरिक को गुरमरि के तट पर ले जाकर उसे अमृत पिलाती हैं और वह जीवित हो उठता है। दसवंत की मृत्यु के बाद भिम्हली लोरिक से लड़ता है और उसकी मृत्यु होती है। बामरि के अन्य पुत्रों के युद्ध पाँचू भगत नही चित्रित करते। यहाँ भिम्हली की मृत्यु के बाद बमरी स्वयं अपनी फौज लेकर लोरिक से लड़ने आता है पर वह पराजित होता है। लोरिक की तलवार से यहाँ लाशों की ढेर लग जाती है। अन्त में पराजित बमरी सतिया का संवरू से विवाह करने के लिए उद्यत हो जाता है। पांचू भगत के बनारस के पाठ में बमरी की पराजय के बाद अजयी धोबी उसका मुमुक चढ़ाकर उसकी छाती पर कोल्हू डाल देता है तब वह विवश होकर सतिया के विवाह की अनुमति देता है। यहाँ विवाह मुहवल मे ही होता है। सीनाथ चौधरी के पाठ में विवाह 'डोल-कढ़ुई' ढंग से होता है। यहाँ बामरि सतिया और कुसल्हा के साथ गउरा आते है और सतिया का विवाह सम्पन्न कराते हैं। पांचू भगत के पाठ में विवाह की सारी विधि सोहवल में ही सम्पन्न होती है। यहा घर-घर मड़प गाड़ा जाता है और सारी अविवाहित कन्याओं की यहाँ शादी होती है। यह प्रसंग सीनाथ चौधरी के पाठ मे नही है।

इलाहाबाद के रामअवतार के पाठ में भी मुख्य लड़ाइयाँ दसवंत और भिमली की हैं। ये ही लोरिक से लड़ते हैं। अन्य भाई आकर लड़ते हैं पर उनकी लड़ाइयों का विस्तार नहीं है। सतिया का विवाह यहाँ बामरि के सोलह खंडों वाले महल में होता है। यहाँ द्वारचार और दूलहा-दुलहिन की भांवर घूमने का भी उल्लेख है। सांवर सतिया के सिर में सिंदूर डालते है और दोनों कोहवर में भी जाते हैं। बनारस के पाठ में बामरि के पुत्र झिंगुरी लावा परछते हैं। सीनाथ चौधरी के पाठ में झिंगुरी लोरिक से युद्ध में मारे जाते है। यहाँ कुसल्हा लावा परछता है। मिर्जापुर के ददई केवट के पाठ मे भिमली का युद्ध ही प्रधान है। उसके अन्य भाइयों के युद्ध का उल्लेख यहाँ नही है। इस पाठ मे युद्ध के विस्तार नही है। यहाँ भी विवाह

मुहवल में ही सम्पन्न होता है। मुहवल, सुरहन, सुरवली आदि अनेक नाम यहाँ एक ही स्थान के हैं। अन्य गायक भी एक ही मुहवल को कई नामों से पुकारते हैं। मिर्जापुर के पाठ में भी द्वारचार होता है, सिंदूरदान होता है, खिचड़ी और भात खाया जाता है। बारात में कसबी और पतुरिया नाचती हैं। फिर मतिया और सांवर की विदायी होती है। पुरोहित और पंडित का उल्लेख इस प्रसंग में नहीं है। इलाहाबाद के पाठ में पुरोहित विवाह कराते हैं (पृष्ठ 322)। यहाँ कलश की स्थापना का भी चित्रण है। बनारस के पाठ में पुरोहितों का उल्लेख नहीं है। बलिया के प्रस्तुत पाठ में पंडित को वेद पाठ करते चित्रित किया गया है पर यह 'ढोलकढुई' विवाह की परम्परा के अनुकूल नहीं है। पुरोहित की भूमिका इस प्रकार के विवाह में गौण होती है।

स्पष्ट है मूल कथा एक होते हुए भी सभी गायक वर्णन विस्तार में बहुत अन्तर कर देते हैं। हर गायक अपनी कथा में अपनी निजी मौलिकता का रंग भरता है। मैं यह भी अन्यत्र स्पष्ट कर चुका हूँ कि एक ही गायक अपने भिन्न-भिन्न श्रोताओं, स्थानों और परिस्थितियों के अनुकूल कहानी में परिवर्तन कर देता है। वे स्थानों का नाम भी कभी-कभी बदल देते हैं। एक गायक के पाठ की दो रिकार्डिङ्ग करने पर स्पष्ट हो जाता है कि दूसरा पाठ पहले से भिन्न है। यह लोक महाकाव्य की अपनी शैली है। एक ही गायक के दो पाठ सदा भिन्न होते हैं। गायक हर बार नयी रचना करते हैं।

गायक के श्रोता

लोकमहाकाव्य और साहित्यिक महाकाव्य में एक महत्त्वपूर्ण अन्तर यह है कि लोकमहाकाव्य की रचना श्रोताओं के लिए होती है, जबकि साहित्यिक महाकाव्यों की रचना पाठकों के लिए होती है, जो अप्रत्यक्ष रहता है। लोकमहाकाव्यों का गायक श्रोताओं के सामने गाते हुए अपने काव्य की रचना करता चला जाता है। वह एक ऐसा आशु कवि है कि वह तुरन्त काव्य की रचना कर लेता है। लोरिक के विभिन्न पाठों का संग्रह करते हुए यह बात प्रस्तुत लेखक के सामने बहुत स्पष्ट रूप से आयी कि गायक को मूल कहानी तो याद है पर उसकी पद रचना, काव्य-सृष्टि हर बार नये रूप ग्रहण कर लेती है। एक ही गायक के काव्य की रिकार्डिङ्ग एक से अधिक बार कीजिए तो यह विदित हो जाता है कि गायक हर बार नया पाठ प्रस्तुत कर देता है। यही गायक की अपनी रचना शैली है। लोक गायक अपने काव्य को कंठाग्र नहीं रखता।

श्रोता किस प्रकार गायक पर अंकुश रखते है और गायक श्रोता के अनुकूल कैसे अपने काव्य की घटनाओं में परिवर्तन कर देता है या कैसे एक हफ्ते में समाप्त होने वाला प्रसंग कुछ ही घण्टों में गा लेता है, इन सबकी समीक्षा मैं अन्यत्र कर चुका हूँ।[1] मैं यह भी अन्यत्र स्पष्ट कर चुका हूँ कि लोक-महाकाव्य परिवर्तनशील

होता है। गायक उसमें नये तत्व जोड़ भी देता है और कुछ तत्वों को छोड़ भी देता है। वह इस कला का कुशल कलाकार है।[2] जनता के सामने गाते हुए कुछ भूल हो जाय तो वह रुक नहीं सकता। वह कुछ सूत्रों को या प्रार्थनाओं को स्मरण कर, दुहराकर अपने मूल कथानक पर आ जाता है। गायक को बीच में रोक दीजिए तो उसका क्रम टूट जाता है और उसको कभी-कभी दूसरे से पूछना पड़ता है कि वह क्या गा रहा था। यह बात मैंने अपने सभी गायकों में देखी।

लोक-महाकाव्य की शैली में अनेक पुनरावृत्तियाँ होती है। सूत्र शैली के अतिरिक्त कुछ विशिष्ट प्रसंगों मे जैसे विवाह, बारात आदि का चित्रण, लड़ाइयों का प्रसंग, इन सब में एक विशेष प्रकार का सधा हुआ चित्रण पाया जाता है। पुनरावृत्तियाँ ऐसे प्रसंगों में प्रायः देखी जाती है पर हर गायक अपने-अपने ढंग की पुनरावृत्तियाँ अपने कोश में संचित रखता है। ऐसा नहीं है कि लोरिकी के सभी गायक एक ही प्रकार की सूत्र शैली (formula)[3] या पुनरावृत्तियाँ प्रयुक्त करते है। हर गायक की पुनरावृत्तियाँ भी अलग-अलग है जैसे उनकी गायन शैली, वस्तुवर्णन या, घटनाओं के चित्रण में पृथकता है, वर्णन विस्तार में विविधता है वैसे ही उनकी सूत्र शैली और पुनरावृत्तियाँ भी अलग-अलग है। श्रोता उनको बार-बार सुनकर थकते नहीं।

साहित्यिक महाकाव्य के पाठक की दृष्टि से ये दोष है, पर लोक-महाकाव्य के श्रोता इनमें रस लेते है, उनका आनन्द कम नहीं होता। पुनरावृत्तियाँ और सूत्र लोक-महाकाव्य की निजी विशेषताएँ है। इन्हीं के द्वारा गायक श्रोता के हृदय तक पहुँचता है। शिवनाथ चौधरी के महाकाव्य की रिकार्डिङ्ग मैंने दो स्थानों बलिया और आगरा में की। 'संवरू का विवाह' जिसको इस पाठ में प्रस्तुत किया गया है बलिया जिले के रतसंड में मैंने रिकार्ड किया था। उसे सुनने के लिए लगभग पाँच सौ व्यक्ति प्रति दिन आते थे। एक सप्ताह तक रिकार्डिङ्ग होती रही। प्रायः रात मे 8 बजे लोरिकी शुरू होती थी और दो बजे रात तक चलती थी पर जनता वहाँ बराबर बनी रहती थी। ऐसा कम हुआ कि कोई व्यक्ति बीच में लोरिकी छोड़कर उठ गया हो।[4] प्रारम्भ मे रतसंड, पड़वार, निहालपुर आदि के लोग आते थे पर बाद में दूर-दूर के लोग भी सुनने के लिए आने लगे। दस कोस की दूरी तक के लोग लोरिकी सुनने आये यह सूचना मुझे दी गयी।

श्रोता हर कड़ी के अंत मे समवेत रूप से गायक के साथ स्वर मिलाते थे। वैसे भी श्रोता सदैव गायकों की रचना में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी होते हैं। प्रसंगों के अनुकूल रोना, हँसना, क्रोध प्रकट करना श्रोताओं की विशेषता है। श्रोता विशेषकर अहीर है जो यादव[5], चौधरी, सिंह, ग्वाल आदि कई नामों से अभिहित किये जाते है। लोरिकी के मुख्य श्रोता अहीर ही हैं। इस जाति के सम्पर्क में रहने वाले, कुर्मी, कोहार तथा अन्य जातियाँ भी भाग लेती हैं। श्रोताओं में उच्च

कही जाने वाली जातियाँ बहुत कम रहती हैं। सीनाथ चौधरी के श्रोताओं में मैं और मेरे सम्बन्धी केशव तिवारी के अतिरिक्त कम ही ब्राह्मण थे।

रतसंड राजपूतों का गाँव है पर उस क्षेत्र के नामी-ग्रामी ठाकुर सहजानन्द सिंह एक बार उत्सुकतावश आ गये थे। रामनेता सिंह, रतसंड इन्टर कालेज के प्रिंसपल भी एक-दो बार आये, पर इन लोगों की रुचि गायक और लोरिकी में कम, तथा मेरी रिकार्ड करने वाली मशीन और मुझमें अधिक थी। ध्यान देने योग्य बात है कि 1965 में बलिया के इस इलाके में टेप रिकार्डर नयी चीज थी। गायक, श्रोता सभी आश्चर्य में थे कि कैसे मशीन आवाज को पकड़ लेती है। गायक भी मशीन में अपने गायन को सुनकर प्रसन्न होता था और उत्साह से गाता था। उसको इस बात का गर्व था कि उसकी वाणी भावी पीढ़ी के लिए सुरक्षित रह जायगी। वस्तुतः इस आकांक्षा ने गायक को घण्टों तक गाने को शक्ति दी। अहीर श्रोताओं में भी इस बात का उत्साह था कि उनका जातीय गान 'लोरिकी' या 'लोरिकायन' अब अन्य जातियों में भी प्रचार पा सकेगा। पढ़े-लिखे लोग भी इसका आदर करेंगे। लोरिक की कथा एक अहीर शूरमा की कथा है। उसकी विजय, उसकी हार, उसका सुख-दुख, ये सब कुछ अहीर श्रोताओं के हृदय को छूते हैं। आमतौर पर अपढ़ अहीर लोरिक के साथ अपना भावनात्मक तथा मानसिक तादाम्य स्थापित कर लेते हैं। पढ़े-लिखे अहीर जो आमतौर पर अपने को यादव लिखते है लोरिकी के मेरे श्रोताओं में बहुत कम देखे गये। शिक्षित होने के कारण उनकी रुचि बदल गयी है, लोरिकी जैसे 'लोक-महाकाव्य' में उनकी रुचि अब बहुत कम रह गयी है। अतः स्वाभाविक ही है कि लोरिकी के नये गायक नही उत्पन्न हो रहे है। लोरिकी महाकाव्य के गायक कुछ ही वर्षों में एकदम समाप्त हो जायेंगे ऐसा लगता है।

शायद बाद में चलकर शिक्षित विद्यार्थियों में ऐसे विषयों पर काम करने की रुचि बढ़ेगी क्योंकि ये महाकाव्य जनता के महाकाव्य है और साहित्यिक महाकाव्यों से भिन्न हैं। अशिक्षित गायक भी कैसे उच्च कोटि की काव्य रचना करता है, और सजीव कल्पनाएँ प्रस्तुत करता है, लोगों को कैसे घण्टों तक अपने गायन में तल्लीन रखता है इसका अध्ययन करने की प्रवृत्ति पढ़े-लिखे लोगों में एक दिन अवश्य बढ़ेगी। पर तब गायक नहीं होंगे, उनकी कृतियाँ जहाँ कहीं भी सुलभ होंगी, विद्वानों को एक दिन अवश्य आकृष्ट करेंगी। पर कब, अभी कहना कठिन है।

गायक श्रोताओं के बीच अपमानित न हो जाय, उसके गायन में कमी न रह जाय इसके लिए सरस्वती और दुर्गा से वह प्रार्थना भी करता है। वह कहता है "भाग्योदय होने पर आज भवानी जागृत हुईं, युद्ध के समय दुर्गा चलीं, जो ऋषि-मुनियों की माता हैं। आज गीति के समय हे सरस्वती, मेरी जिह्वा पर विराजमान होइये। पंचों की मंडली बैठी हुई है, इनमें छोटे-बड़े सब एक समान हैं, सभी ने मिल कर आज्ञा दी है, मुझमें शक्ति नही है कि गा सकूं। (हे सरस्वती, तुम्हारे

भरोसे ही यहाँ हूँ) । मेरा प्राण बीच जल में पड़ा हुआ है। हे देवी, मेरा सचमुच गीति का गान छूट गया है। मेरा शरीर अब इस संसार में खोखला हो चुका है। दुनियाँ में तभी तक लोग हितू रहते है जब सब चीजें बनी हुई हैं, बिगड़े दिन का कोई साथी नहीं होता। ऐ जगदम्बा, आपने मेरा साथ दिया है, मैं सदैव आपको स्मरण करता रहा, भजता रहा। आगे के युद्धों का हाल मैं नहीं जानता, यह महाभारत मैंने आँखों से नहीं देखा है। यह सुना हुआ गाना है जो मैं गा रहा हूँ, यह गीत मैंने कानों से सुना है। हे देवी, जिस दिन के लिए आपकी पूजा कर रहा था वह समय इस सभा में निकट आ गया है। यदि गूढ़ अक्षर मुझसे टूट जायेंगे तो दुनिया मेरी निंदा करेगी। जिसको गाने का ढंग नहीं है वह भी माथा खोल कर सभा में वैठा हुआ है।"

आजु जागे भागि बेरी भवानी, जूझि बेर चलऽ दुरगमुनि माइ,
आजु गीति बेरी सुरसती जीभा हो जइतू तैयार,
बइठलि मेड़रि सब पंचन के छोटि बड़ि सब हउअनि समान
सब मिलि हुकुम लगावल, हमरे बूते गवल न जाई
तोहरे बले भरोसे अधजल में पड़ि गइल प्रान
आए देवी हमारि गवनू ना ए गीतिया सांचो छूटि बा गऽऽइल
देसवा में खांखारि भईल बयवा रे हमार
आजु देबीय हमार बन लेइ पर, दुनिया ए हितवा बाड़न
बिगरला पर केहू ना हितवा आ रे भेंटाइ।
ए देवी हमार धइले हऊना आ संगवा हमरि जगवादम्भा,
हर घरी भजत रहली नइयाँ, हाँ ये तोहार,
आजु अंगवा लोहवाइ के हलिया ए हमार नइखे जानल
ना अंखिया से देखल हउवे भारत रे हमार
आजु देवी गनवेइं सुनला क ले बानो ए गवले
आ काने का न मोरि सुनले ना गीतिया रे गवाइ
अब देबी जेवनाइ दिननवा के बाड़ी ना पूजलें
समवा में घरी ये गइलवा निये ऽऽ राइ
आजु देबी ये गूढ़िया अछरिया हमसे छूटि ना जाई
काल्हि दुनियां मेहना मारीय ना ओ बरी ऽ यार
जेकरा उ गवहुअ के ढंगवा ना बबुवा रहल
से सभवा में बैठ गईलन मथवा रे उघारि"[6] (लोरिकी, पृष्ठ 3)

अन्त में गायक जगदम्बा से प्रार्थना करता है कि वह गायक को पार लगावें, गायक इस प्रसंग में आगे चल कर यह भी कहता है कि देवी जागृत हो गयी हैं

'लोरिकी' के संवरू भी लोरिक के बड़े भाई हैं यद्यपि वह लोरिक के सगे भाई नहीं हैं। प्रस्तुत पाठ में सूर्य की दृष्टि लगने से एक ब्राह्मण कुमारी के गर्भ से पैदा हुए हैं। लोक लज्जा वश कुमारी कन्या संवरू को एक बर्तन में बन्द कर गड्ढे में फेंक देती है। अहीरिन खोइलनि के यहाँ उनका पालन-पोषण होता है। बाद में प्रस्तुत पाठ में वे बोहा में रहने लगते हैं। गोपालन और भजन भाव में लीन रहना उनकी विशेषता है। वह शिव की आराधना करते है और शिव की कृपा से बन्ध्या खोइलनि के गर्भ से लोरिक का अवतार होता है।

संवरू सूर्य के अंश हैं। अतः स्वाभाविक रूप से उनमें एक विशेष ओज और शक्ति है। अपने तप से उन्होंने शिव का आसन डिगा दिया है। शिव को विवश होकर ब्रह्मा और विष्णु के यहाँ जाना पड़ता है और वन्ध्या खोइलनि के भाग्य का लेख पलटना पड़ता है। स्पष्ट है कथा सामान्य जन की कथा नहीं है। संवरू और उसके धर्म के भाई लोरिक दोनों का जन्म दैवी है, अलौकिक है। लोरिक शिव के दिये हुए पिंड से पैदा होता है। खीर या चावल के पिंड से बीरों का पैदा होना भारतीय साहित्य का एक प्राचीन कथानक अभिप्राय है। राम और उनके अन्य भाई भी इसी प्रकार ऋषि वशिष्ठ के प्रभाव से दशरथ के यहाँ उत्पन्न होते है। यज्ञ का पायस राम जन्म का मूल साधन है। महाभारत में पाण्डवों का जन्म विशेष ढंग से होता है पर वे भी दैवी हैं।

संवरू की माँ यद्यपि ब्राह्मणी है पर उनका लालन-पालन खोइलनि करती है। बाद में चलकर वह बोहा में शिव मन्दिर बनाते है और गोपालन में लग जाते हैं। जब लोरिक दुर्गा पूजा का बृहद् स्तर पर अनुष्ठान करता है तो संवरू वहाँ दूध की नदी बहा देते हैं।

कहा जा चुका है संवरू शिव भक्त है। बोहा में उनका शिव मन्दिर और अखाड़ा है। वहीं रहकर वह गायों की सेवा करते है। उनकी गायों की संख्या काफी बढ़ गयी है। खोइलनि के प्रति उनका अगाध प्रेम है। लोरिक, अजयी सभी को वह अपरमित स्नेह देते है। उनका चरित्र एक उदात्त अहीर का है जो भजन भाव में लीन रहता है, विवाह नहीं करना चाहता। शिव पार्वती बूढ़ा और बुढ़िया का रूप धारण कर जाते हैं और संवरू को विवाह के लिए प्रेरित करते हैं (पृष्ठ 190-191)। बनारस के पाँचू भगत के पाठ में एक मुसहरिन स्त्री संवरू को विवाह के लिए उद्यत करती है। वह रास्ते पर जाती है जहाँ से संवरू गुजरते हैं और पानी छिड़कने लगती है। उसका यह कारण बताती है कि कुँवारे बालक संवरू के गुजरने के यह मार्ग अपवित्र हो चुका है अतः मैं इसे शुद्ध कर रही हूँ। संवरू को इससे दुख होता है और अंत में वह शादी करने के लिए तैयार हो जाते है। (पृष्ठ 26, 30)

इलाहाबाद के रामअवतार के पाठ में दुर्गा बुढ़िया का वेश बनाकर मलसांवर को विवाह के लिए उद्यत करती हैं। वह कहती हैं कि पातक संवरू इधर से

गुजर चुका है अतः मैं इस रास्ते नहीं जाऊँगी मुझे पाप लगेगा। तब संवरू विवाह के लिए तैयार होते हैं (पृष्ठ 244-245)।

स्पष्ट है लोरिकी के सभी पाठों में संवरू विवाह के लिए तैयार नहीं है पर बाद में विवाह के लिए अपनी स्वीकृति दे देते हैं। वैवाहिक जीवन की महत्ता स्वीकार करते हैं। वैवाहिक जीवन की मर्यादा की स्थापना सभी पाठों में की गयी है।

सीनाथ चौधरी के पाठ में संवरू सूर्य और ब्राह्मण कुमारी के पुत्र हैं। रामानंद के आशीर्वाद से कबीर विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, यह कहानी कबीर-पंथियों में प्रचलित हुई। उच्च कुल से किसी न किसी प्रकार महापुरुष को जोड़ने की प्रवृत्ति भारतीय परम्परा में रही है। सीनाथ चौधरी भी शायद इसीलिए विधवा ब्राह्मण कुमारी और सूर्य की दृष्टि लगने से संवरू के गर्भ में आने की कहानी जोड़ते हैं पर संवरू अहीर या गोपालक ही बने रहते हैं। उनका विवाह भी बामरि के यहाँ होता है जो शायद ग्वाल हैं, यद्यपि यह बात स्पष्ट रूप से नहीं कही गयी है। उनकी पत्नी सतिया भी विवाह नहीं करना चाहती पर विवश होकर उसे विवाह के लिए स्वीकृति देनी पड़ती है। यहाँ भी वैवाहिक जीवन की मर्यादा की स्थापना बहुत स्पष्ट है।

ब्राह्मण लोरिक के आदेश से संवरू को विवाह के लिए मनाने जाते हैं तो संवरू पहले तो उनका आदर करते हैं पर जब उन्हें पता चलता है कि ब्राह्मण विवाह का प्रस्ताव लेकर आये हैं और वे इसके लिए पेड़ से गिरकर मर जाने की धमकी दे रहे हैं तो वह ब्राह्मणों को कहते हैं कि तुम लोग मर जाओ "मैं दूध और खीर से तुम लोगों की पूजा करता रहूँगा। मेरे पास दूध की कमी नहीं है।" यहाँ भी उनका अहीर चरित्र प्रखर है।

संवरू बीर हैं। उनके पास विशेष अस्त्र हैं, पर वह उनका उपयोग नहीं कर पाते। उनको वर बनना पड़ा है, अत: विपत्ति आने पर भी वह अपना शौर्य नहीं दिखा पाते। लोरिक और दुर्गा दोनों उन पर नियन्त्रण लगाते हैं। इन प्रसंगों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सक्रिय रूप से वह बीर के रूप में कुछ नहीं करते। लोरिक ही नायक के रूप में बीरता का प्रदर्शन करता है पर संवरू में शौर्य और शक्ति अपार है, इसके संकेत प्रस्तुत पाठ में बार-बार मिलते हैं।

भजन भाव में लीन रहते हुए गायों का पालन उनका मुख्य धर्म बन गया है। उनका चरित्र सौम्य है। माँ खोइलनि, अजयी सबसे उनका अटूट प्रेम है। वे धर्म रक्षक और धर्म के पालक हैं। वे शिवभक्त चित्रित किये गये हैं। शिव यहाँ विष्णु के सेवक हैं।

लोरिक

संवरू के विवाह में भी नायक है। 'लोरिकी' लोरिक की वीरता की कहानी है, अतः स्पष्ट है इस भाग में भी लोरिक का चरित्र विशेष रूप से उभर कर आता है।

विभिन्न पाठों में उसके जन्म की कहानी विभिन्न रूपों में चित्रित की गयी है। प्रस्तुत पाठ में संवरू के तप से शिव प्रसन्न होते है और एक पिंड देते हैं जिससे लोरिक उत्पन्न होता है। पांचू भगत के बनारस के पाठ में लोरिक के जन्म की कथा नहीं दी गयी है। इलाहाबाद के पाठ में खोइलनि स्वयं तप करती हैं और बारह वर्ष के तप के बाद शिव की कृपा से लोरिक बन्ध्या खोइलनि के गर्भ में आते है। इस पाठ में यह भी बताया गया है कि लोरिक इस धरती पर अवतार लेते समय ब्रह्मा से तीन परियों की मांग करते है तब ब्रह्मा मंजरी, चनवा और जमुनी को धरती पर भेजते है जो स्वयं परियाँ हैं। मिर्जापुर के ददई केवट के पाठ में लोरिक की जन्म-कथा संक्षिप्त है और यहाँ गायक ने उन्हें कृष्ण-कन्हाई कहा है। लोरिक यहाँ कृष्ण की भांति भादों में पैदा होता है (पृष्ठ 11)।

लोरिक मीनाथ चौधरी के पाठ में दुर्गा की सहायता पाकर बलशाली है। जहाँ दुर्गा अपनी सहायता खींच लेती है लोरिक निर्बल पड़ जाता है। कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि लोरिक में वह शक्ति है ही नहीं कि शत्रुओं का सामना कर सके। हर क्षण दुर्गा उसकी सहायिका है। मीनाथ चौधरी के पाठ में ही नहीं अन्य पाठों में भी यही स्थिति है। पांचू भगत के बनारस के पाठ में दसवंत की लड़ाई प्रचण्ड है। लोरिक दसवंत की गर्दन काटता है पर बार-बार गर्दन कटकर जुड़ जाती है। दसवंत के बाण से धरती हिल जाती है। एक बार तो लोरिक दसवंत के आघात से मृतप्राय है। वह लोरिक को सुरसरि के तट पर ले जाकर अमृत पिलाती है और उसकी कायरता के लिए फटकारती है (पृष्ठ 128)।

लोरिक भिम्हली (भीमली, भिमली) के साथ भी युद्ध में बार-बार निरुत्साहित हो जाता है। पर दुर्गा उसको शक्ति देती है। दसवंत और भिम्हली दोनों इस पाठ में अमर है और भिम्हली के पास अग्निबाण है जिसका वह बार-बार प्रयुक्त करता है। दुर्गा उसको निरस्त कर देती है। अन्त में लोरिक उसकी गर्दन काटता है। पर यहां लगता है कि लोरिक भिम्हली के सामने कमजोर है। दुर्गा की सहायता न होती तो उसका अंत नहीं होता। इलाहाबाद के पाठ में लोरिक और भिमली की लड़ाई बहुत बड़े पैमाने पर होती है। दुर्गा यहाँ भी लोरिक की सहायता करती है। भिमली के बाद दसवंत की लड़ाई है। लोरिक के बाण से भिमली और दसवंत दोनों की गर्दन कटती है। यहां भी बामरि के अन्य पुत्रों की लड़ाई गौण है। लोरिक यहां भी दुर्बल है। दुर्गा की शक्ति से वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है।

मिर्जापुर के पाठ में भिमली और लोरिक की लड़ाई संक्षिप्त है। ददई केवट यहाँ युद्ध के प्रसंगों को गौण कर देते है और सतिया का अपने सत से छत्तीस नाग उत्पन्न करना, हंस-हंसिनी के पंखों पर बैठकर लोरिक का अमर सिंदूर लाने जाना आदि अतिमानवीय, और चमत्कारिक प्रसंग अधिक रोचक बनाकर प्रस्तुत करते हैं। लोरिक का यहाँ भी दुर्गा सहायता देती है।

लोरिक का चरित्र ढुलमुल है, सांवर अधिक दृढ़ है। सम्पूर्ण कथा में लोरिक प्रधान रहता है क्योंकि वह कथा का नायक है। पर सांवर के विवाह के प्रसंग में लोरिक का पूर्ण चरित्र सामने नहीं आता है। 'लोरिक का विवाह', 'चनवा का उद्धार', 'हल्दी' 'नेउरापुर' 'पीपरी' आदि की लड़ाइयों में लोरिक अपनी वीरता का परिचय तो देता है, वह प्रेमी के रूप में भी प्रकट होता है। अगोरी के सारे योद्धाओं को वह परास्त करता है तथा वहाँ के राजा मोलागत का वध करता है। अपनी जाति की कन्या मंजरी के सम्मान की रक्षा करता है और उससे विवाह करता है। आततायी मोलागत एक क्षत्रिय राजा प्रतीत होता है जिसका चरित्र दुर्बल है। वह अपने राज्य की कन्याओं की इज्जत का अपहरण करता है। वीर लोरिक के हाथों वह और उसका सारा राज्य नष्ट होता है।

लोरिक के गुरु और सहायक अजयी धोबी, बांठा चमार आदि हैं। उच्च वर्ग के पात्र लोरिक के सहायक नहीं हैं। वे इस लोक महाकाव्य में बहुत कम चित्रित किये गये हैं। अगोरी का राजा कहीं-कहीं स्पष्ट रूप से क्षत्रिय बताया गया है, पर वह दुर्बल चरित्र है। लोरिक अपने मित्रों से सहायता लेता है यद्यपि उनके चरित्र में स्थिरता नहीं है। अजयी शक्तिशाली वीर होते हुए भी डरपोक है। बांठा चमार चनवा के साथ छेड़खानी करता है और अन्त में लोरिक के द्वारा वह मारा जाता है।

हल्दी और पीपरी तथा नेउरापुर आदि की लड़ाइयों में भी लोरिक अपने शौर्य का परिचय देता है पर अन्त में दुर्गा उसका साथ छोड़ देती है। लोरिक को अपने युद्धों में स्त्रियों का वध करना पड़ता है। वह चनवा का अपहरण भी करता है। अन्त में वह स्वयं चिता में जलकर अपना जीवन समाप्त कर देता है। एक वीर योद्धा का यह दुखद अन्त है। महाभारत और वाल्मीकि के संस्कृत रामायण महाकाव्य के नायक का अन्त भी भारतीय साहित्य में दुखद ही है। लोकमहाकाव्य के नायकों का अन्त भी प्रायः भारतीय साहित्य में दुखद ही होता है।

सतिया

मलसांवर की ही भाँति सतिया विवाह नहीं करना चाहती। सीनाथ चौधरी के पाठ में धोबी अजयी की पत्नी सतिया के जन्म की कहानी बताती है। "बामरि के छै पुत्र अवतरित हुए पर एक भी कन्या नहीं उत्पन्न हुई। अतः उनको चिन्ता हुई कि देह कैसे पवित्र होगी। तब राजा बामरि और उनकी पत्नी गंगा के तट पर समाधि यज्ञ करने लगीं, वहाँ प्रार्थना और यज्ञ समाधि होने लगी। सिर मुड़वा कर उन लोगों ने गंगा के तट पर धरना दे दिया। पर गंगा ने उनसे कहा कि रानी की कोख में कन्या का सुयोग नहीं है। पर राजा रानी के धरना देने से गंगा परेशान होकर शेष नाग के पास गयीं। शेष नाग के वरदान से सती का अवतार हुआ। गंगा को दान दिया शेषनाग ने, फिर गंगा ने दान दिया राजा बामरि और उनकी पत्नी को। अतः सतिया शेषनाग के वरदान से उत्पन्न हुई है।" (पृष्ठ 195)

यह कहानी केवल सीनाथ चौधरी के पाठ में दी गयी है। इसका महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि सतिया का सर्पों से सम्बन्ध है। वह संवरू और लोरिक के संपूर्ण बारात को हरदोइया नागिन से डंसवा लेती है फिर उसी से सारी बारात का विष खिचवाती है जिससे बारात जी उठती है।

सतिया में सत का बल है। सत के बल से वह माया का बाजार निर्मित करती है, जिसमें विष भरी हुई मिठाइयाँ बारात को मारने के लिये बनी हुई हैं। दुर्गा यह रहस्य जान लेती हैं अतः बारात का अहित नहीं होता।

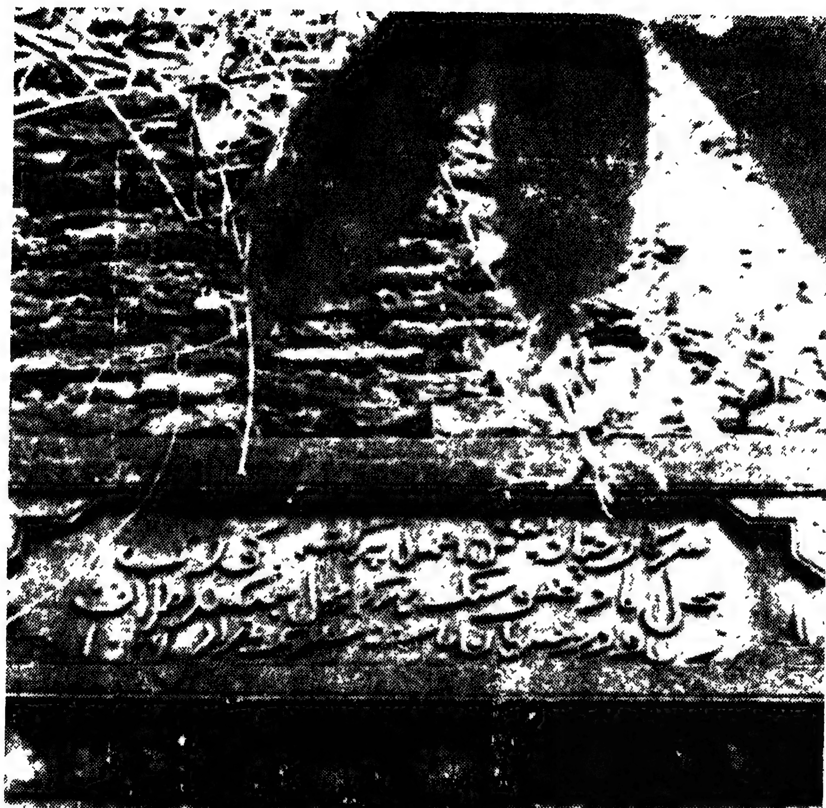
अपने सत से सतिया गेंडा उत्पन्न करती है जो लोरिक को छोड़कर सारी बारात को निगल जाता है पर दुर्गा की सहायता से बारात गेंडे के उदर से जीवित बाहर निकलती है।

सतिया का सम्बन्ध इन्द्रासन से सीधा है। वह ब्रह्मा के पास आती-जाती है। ब्रह्मा के पास जाकर वह पूछती है कि उन्होंने उसके भाग्य में विवाह क्यों लिख दिया तो वह कहते हैं कि मृत्युलोक में वह विवाह में किसी के यहाँ जायगी और उत्सव देखेगी तो पछताएगी इसलिए मैंने परोक्ष में विवाह की रेखा खींच दी। ब्रह्मा सतिया को यह बात बताते हैं तो सतिया दुखी होती है (पृष्ठ 254)। अन्त में संवरू की भाँति वह भी विवाह के लिए उद्यत होती है।

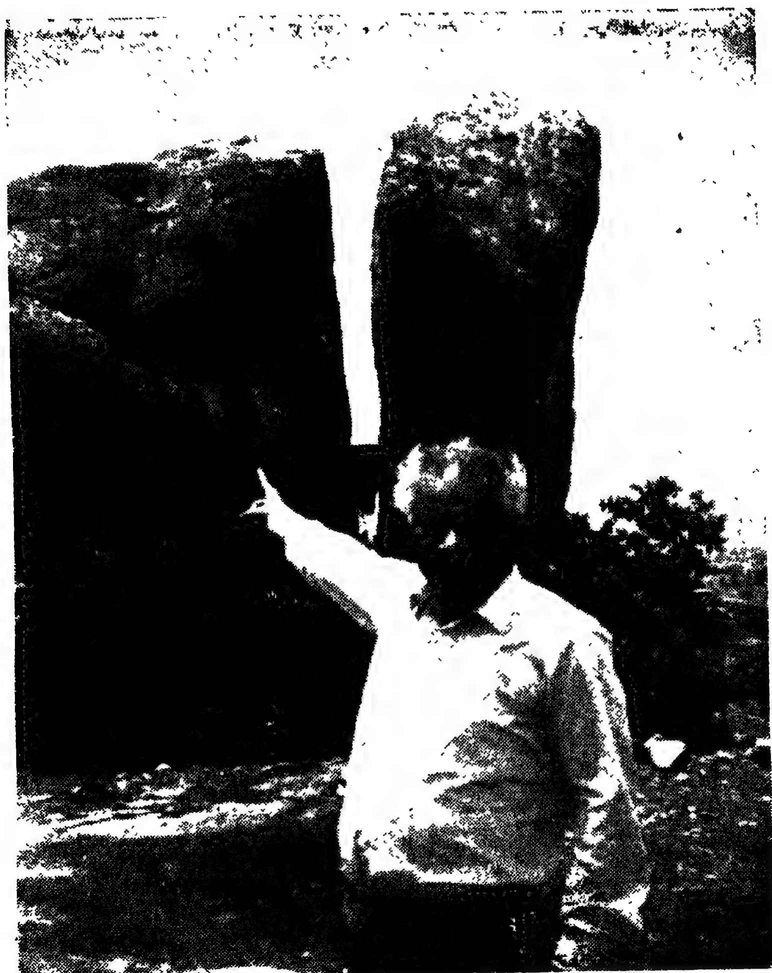
संवरू सूर्य की दृष्टि लगने से उत्पन्न हुए थे और सतिया शेषनाग और गंगा के वरदान से उत्पन्न हुई है ब्रह्मा से उसका सम्बन्ध है। दुर्गा से उसको ईर्ष्या है। दुर्गा ब्रह्मा की बहिन हैं और अन्त में उनकी विजय होती है। सतिया का विवाह तब सम्पन्न होता है जब उसके सारे भाई मारे जाते हैं। सतिया और संवरू दोनों अति-मानवीय चरित्र हैं। विवाह के बाद कहीं यह नहीं दिखाया गया है कि दोनों गृहस्थ रूप में कैसे रहते हैं। संवरू के विवाह की पूरी कहानी अलौकिक और चमत्कारिक है। इसमें सदैव, दैवी हस्तक्षेप होता रहता है। 'लोरिक का विवाह' मानवीय स्तर पर अधिक सशक्त कहानी है। 'संवरू का विवाह' इस दृष्टि से दैवी-कथा है। लोरिक के शत्रु भीमली, दसवंत, तथा अन्य भाई भी दैवी चरित्र हैं। इस अध्याय में मानवीय संवेदनाएं कम हैं।

सतिया के पिता बामरि का प्रण है कि वह अपने राज्य की कन्याओं का विवाह नहीं होने देंगे, दूसरे देश की कन्याएँ अपने देश में आये तो उनको आपत्ति नहीं है। पर यह स्पष्ट हो जाता है कि 'संवरू का विवाह' शीर्षक अध्याय में संवरू और सतिया दोनों विवाह के विरोधी है। अन्त में उनकी हार होती है।

□□



सरकार चनादः अहदेमन ऐमाल परगना अगोरी
महल माधोसिंह हरकि महल बेकानद तलाफ़
ज़न-ओ-दुख़्तर बान बाशद हिजरी 1026



अगोरी के पास मारकुंडो का पत्थर कहते हैं कि लोरिक ने अपनो यादगार के लिए तलवार से पत्थर के दो टुकड़े मंजरी के कहने पर कर दिये थे।

भोजपुरी लोरिकी

गायक : शिवनाथ चौधरी, उम्र लगभग 70 वर्ष
ग्राम : भरौली, (उजियार)
ज़िला : बलिया

21 अक्टूबर को ग्राम रतसंड, ज़िला बलिया में
श्री श्याममनोहर पाण्डेय द्वारा रिकार्डिंग की गयी।

सुहवल-संवरू का विवाह

सुमिरन

हाँ....हाँ...हाँ हे राम, राम, राम, राम, राम, राम, राम हो ओ ओ राम,
आजु रामे जियन वाड़ी मुअन एक दिन रामले जीव के हउवन अघार।
जी राम राम भजन न करिहं, परब ऽ कूमि नगर की गाड़ि,
जी राम भजन जो करब त बन जाई सुरधाम,

डीह देवता का स्मरण

फेरु एहु ले लाभ निवारीं आंगा भजहि ठकुर के नांव ।
आंगा भजीं ठकुर के नांव, थोरे सुमिरि लेतीं डीह नगरे के,
बाबा नाहि जनलीं नाव तोहार।
दूर देस के बालक, सरमें गिरल ढांचा हमार,
आजु जइसे करताड़ऽ रइछा नगरे के, वोंगों बाबा चौकी कर हमार।
पूरबे लोही लगि जाई पच्छिम होखे लगी उजियार,
भूलल डहरि सुधियाई, अपना नगर के करे बड़ाई।
त ये बाबा ज दिन हमार जियत रही ना ढंचवा न मिरुता में,
आ हड़िया में लोटत रही ना बयवा रे हमाऽऽर।
तब दिन गावत रहबि ना गुनवा हम दुनियां में,
आ डीह बाबा लेत रहबि ना नइयां ए तोहाऽऽ....र।
आजु देह के दिमाग दुनिया में हमारि तोहारि चरनि के हउवे बलिहार।

आजु जाइके सूतल बाड़े डीह नगरे के, नाहीं सुने ताड़े अरदास,
अरे मइया एने सूतल बाड़ें डीह नगरे के, अब डीह नांहि ए सुनलेनि अरदास,

मां जगदम्बा का स्मरण

जागलि माइ हो जगदम्मा,
आरे सायर बान्हि देली न ललकार।
पहुँचि गइलीं ना नगरे में, एहि आजु मिरुत मंड़ल संवसार।
धइ धइ अंगूठा मिमोरे, आजु पति मान जइब ना बतिया रे हमार।
आजु दूर देस के डिगर हमरा आइल नगर में बाई,
कते बचा हमार परि गईल संकेता, मिरुता में लेत बांड़े नांव तोहार।
सुनलीं दुख बचवा के, सुनला फाटि गइल छाती हमार,
आजु पति जइसे करत होख रइछा नगरे के,
ओइड़ो बावन घाल लिलार।
कहतियाड़ी जे सैंया जइसे राखत होखऽई ऽ ऽ इजतिया, तू ए ऽ ऽ नऽगरे में,*
सभवा में ईजति तूं धरब हो ए जोगाइ।
अरे सइंया तनि कइ देब ना रइछबा हमारि बचवा के....,
बिहड़ा में पड़ि गइलन बचवा रे हमा ऽ रि।
आजु बाकी सूतल बाड़े डीह नगरे के, नाहि सुनताड़े अरदास।
अरे भाई जगदम्मा सायर लेके, मिरुत मंड़ल संवसार।
मारे तोहथा डीह के—
कहेले जे सइयां न मूरति नारायन, आहा अब सुतल भिनिक होइ जाइ।
बजरपरो ना तोहरा घर, आरे तोहरा पर गिरिति गजबवे के धारि।
दूरवे न देसवा के डिगर, आजु हमरा आइल-नगरिया में बाइ।
आजु बेटा मोर परि गइले संकेता, मिरुता में फाटि गइल छाति रे हमार।
अब चलब खाइके माहुर मरि जांई, कि देबो गिरे जालनि ना हो कुंवऽऽवा हो ईनार ऽ ऽ।

आजु जहिया सूतल डीह जागि गइले, बाबा बान्ह देलन ललकार।
कहलनि जे बियही मोर लरिकवन्हा जेवन पातरि मुंह के नारि हमारि।
अब हम चलि के माइ घिया बन टोनहिन,
आरे बापे पूतवा रे ओझवा अरार।
अरे सवा न बिता बाटे धरतिया, अब जहां लोटि जाइ बया रे हमार।
जे गावत में गर छोड़ि लीह, उनके जब खंभवा देइबि रे तनवाइ,

जेइ लड़त में बल छोड़ि लीहें, उनके जमु-कतरि घालबि मेरुआई ।
अब मइया जागि गइले डीह नगरे के,
अब केहु काड रे करी रे पहुनाइ ।
एहुकर छोड़ि के पंवारा, आ थोरे अब भजिय देबीय के पंचे नां ऽ ऽ व ।

भवानी और दुर्गा का सुमिरन—
गायन का अभ्यास छूट जाने के कारण गायक को चिन्ता

आजु जागे भागि बेरी भवानी, जूझि बेर चलऽ दुरग मुनि माइ,
आजु गीति बेरी सुरसती जीभा हो जइबू तेयार,
बइठलि मेंड़रि सब पंचन के छोटि बड़ि सब एक हुउअनि समान,
सब मिलि हुकुम लगावल, हमरी बूते गवल न जाई,
तोहरे बले भरोसे अधजल में पड़ि गइल प्रान ।
आए देबी हमारि गवलू ए ना, गीतिया सांचो छूटि बा ग ऽ ऽ इल,
देसवा में खांखरि भईल बयवा रे ह ऽ ऽ मार ।
आजु देबीय हमार बनलेइ पर, दुनिया ए हितवा बाड़न,
बिगरला पर केहू नाहि हितवा आ रे भेंटाइ ।
ए देबी हमार धइले हऊना आ संगवा हमरि जगवादम्मा,
हर घरी भजत रहलीं नइयां, हां ये तोहार ।
आजु अंगवा लोहवाइ के हलिया ए हमरि नइखे ए जानल,
ना अंखिया से देखल हउवं भारत रे हमार ।
आजु देबी गनवेइं सुनला क ले बानी ए गवले,
आ काने का न मोरि सुनले ना गीतिया रे गवाइ,
अब देबी जेवनाइ दिननवा के बाड़ीं ना पूजलें,
सभवा में घरी ये गइल बा निये ऽ ऽ राइ ।
आजु देबी ये गूढ़िया अछरिया हमसे टूटि ना जाई,
काल्हि दुनियां मेह ना मारी य ना ओ बरीऽ प्यार ।
जेकरा उ गवहूअ के ढंगवा ना बबुआ रह ऽ ल,
से सभवा में बैठ गईलन मथवा ए उघारि ।
देबी तोहार पूजलइ धिरिकवा हमार होइ रे गइल,
कबहूँ त नाम लेबे जोगिय त नाहीं बा ऽ इ ।
आजु देबी जइसे खेइयइ के पारवा मोह तनी लगावऽ,
हमारि ठट्‌टी तोहरे पर बड़लि इ दिनवां रा ऽ ति ।।
देबि तोहार भगतिय जो छोड़ले होईब मिरुता में,

आ दुनिया में नाहि जनलीं घमंडवे ऐ अपये राधि,
आजु इहे दुनिया काइ गायन खातिर मांग बा बढ़....ल,
हमरा देबी तोहरेले बलवा आरे भरो ऽ स ।
सुनलींह जे खइले हऊ ना पूजवा तू सुघरा के....,
देसवा में चांपि चांपि रहलू तरेवारि...।
जइसे एक बेरि रखले रहलू ना,
.... दुलरा के,
जेकर अब लोहनि में बाजलि बा आ तरेवारि ।
ओंगे मोहिनी तोहार करत बानी पूजनिया हमार ए जगवादम्मा,
आ तनकी एक महिमा कराइ न लेलकार ।
आजु पंचे जागे भागि गइली भवानी,
आरे जूझि गइली सिरवा दुरुग मुनि माइ,
आजु गीतिया बेरी न सुर सतिया,
साचों देबी जीभिवा होली रे तइयार,
कहलीं जे गाव गाव बबुआ अलबेल्हा
अब तनी सुनि लेइं कनवां लगाइ,
ए गो गूढ़ि अछरि भूलि जइहैं,
आरे दु दु केरि मेराइ देइबि लाज, खइली पूजा रे दुलरा के....,
भारथ में गललि हउवे देहिया हमार :
अब बाचा ए गूढ़ि अछरि भूलि जइहैं,
अब दुदु कड़ी गरि मेराइ देबि लाज,
अब पंचे जेवना दिननि के बानी पूजलि य ऽ
अब देबी परसन न होली ललकार,
अब पंचे एगो दुगो केवन ए चलावो,
अब दुनिया काइ ले करी रे कोहनाइ····
पंचो अब गावत बानी गाना भरथे के,
तनी एइजां सुनलेइबि सभै ना भेदवा रे लगाइ,
हाँ आँ आँ····हाँ हाँ····,
अब पंचे हिनु करी गंगा तुरुक करी गोर,
भलि कामिनि संग छोड़लूअ मोरि,
अब देबी कहाँ गीति बानि गावत,
कहाँ आजु दोलें परल बिसभोर,
अब देबी जेवना दीन करि पूंजलींय,

तेवनि धरी गइलि नियरा....इ,
अब देवी कहि द कीरतिया मरदाने के,

कथा प्रारम्भ—

गुहबलि में बामरि के छः वीर पुत्र और एक पुत्री सती सभी अवतार थे

केकरी कारन भारथ भइल तइयार
केकरि जियरवा की कारन देबीय ठनल सुअम्बर बाइ,
त ए पंचे, आजु छ गोई ना पुतवा रहलनि बामरा के,
आजु बबुआ छवो दइब के लाल,
बाकिर दुई मरद सरनामी, जेकर भीमला झिंगुरी ह नांव,
जेवनी बेरि छव वेटा बमरा के सतबे सती के, भइल रहल अवतार,
त ए पंचे तनी सुनि लेबऽ भारथवा हो दुनियाँ ऽ ऽ में,
अब धेना गडे हो जबिया ना लेलऽकार,
अब इहे गरजल ना सानवा उह मरदन के,
एहिजा महाभारथ इ कइल ह ऽ तईयार,

गद्य-पद्य : आजु जवनी बेर बइठल रहल बेटा बामरि के, जेकर गंजे भीमलिया नांव आ सुरहन में खनऽ रहल अखाड़ा, लेके मोती सगड़ की घाट, एक ओर पाठा लड़े सिरजवा, आ झिंगुरी रहत लड़त तारे रहे पहलवान, एक ओर लड़े पाठा दसवंता भंगवता,

लड़त रहलें ओइ लेके सुहवल का निकट अड़ार,
त ए पंचे, एनिया बाजि गइल ना ताड़वा जो मरदऽऽन के,
आ भीमला के बइठल न बलवा उभरि जाइ,
सुनेलीं जे बढ़ि गइल न बलवा जब रे सीनवा में,
अब बल भुजवा में····नाहिं आ रे अड़ाई,

गद्य : उठे बेटा बामरि के जेकर गंजे भीमलिया नांव, अब पंचे उलटा कसे लंगोटा, ऊपर मालबरन के गांठ, घींचल पेटी अजगर के, आरे जेमे भइया गोलवा जीमुस नाहीं खाइ,

ले ले बा माटी न धरती ले, अब बीर गरदन पर देले बा चढाइ,
देला जोरनि ना अलबेल्हा, अब ना जो मउरे पर ले लेबऽ चढ़ाई,
अब बीर उठकी ना करले बइठकिया, आ डड घींचे सोना रे सुहवलिय धारि,
अब घींचि देला डंड अलबेल्हा अब बल पूँचवा भइल तइयार,
हिलि हिलि पगुआ लगावै, जइसे सांचो इनरा अखड़वा में जाइ,

चलल जब भइया चलावल, जूमि गइल सुरहलि का निकठ अड़ार,
जहाँ खनल बा अखाड़ा झिंगुरी के, अब पाठा बन्हिया देलेवा ललकार,
डाँटि के बोलल बा सुहवल में,
आजु जगे बेटा बमरा के, जेकर बली भीगलिया नांव,
कहे ले सुन लऽ भाई झिंगुरी सिराज, भइया मान बाति हमार
दूनो भाई दहिना भुजा दबाव हमसे चाँपि देब अंकवारि,
आ फेर पाछे बोले बेटा बमरा के, जेकर भइया बली भीमलिया नांव ।
कहत बा जे ए दसवंता हमरी बाई तूँही ना, आ भूजवा बबुवा दाबि ना देब,
भंगवता चारूबीर भुजा बल में चांपइ जा आ बांके-बारि,
ओइजा झिंगुरी गरवाइ का आ फनवा भइया डालि बा देले,
उहे जब बीर के करइलेनि अरेदाति,

गद्य-पद्य : का अरदात करतांड़े, कहत बाढ़ें, जे हे भाई, केकरि भाई खइलसि दूध कांड़रि ये बीर देनिया में लेले बाटे अवतार, के तोहरी भुजा में भुजा मेराई ओकरि सुनी नजरि के हालि ।
आरे एक ओर रोवत रहल ना,''' आ बीरवा पंचे ओइजा दसवंता,
आ भीमला का गिरली चरनिये परवे बाइ ।
ए भइया तोहरा भुजवाइमें, ए भुजवा जो त ददे मेराई,
हमरा ई टूटि जाइ पंजरिये के ना हाड़,
तहिया आजु कड़कि कड़कि ना, आ पाठवा बोले राजवा भीमला,
आ भाई झिंगुरी मानि जइबऽ बतिया आ रे हमारि,
जब जब तोर बाजतिया ताटे ना आ तड़िया दादा सुरहन में,
हमरा जाइके कड़कत करेजवा में ना बाइ,
आजुबे भइया छोड़ि देब आखड़वा तू ए सुरहन के,
एहि दह मोतिये सगड़वा आ की ना घाटि,
उहवे ले अब सुरहन झिंगुरिया पंचे छोड़ि बा देले,
उ चलि गइलन बबुरी न बनवां आरे पहाड़,
सीना-जोर आपन खोलि केइना लंगोटवा पंचे बिगि ना देले,
आ कन्हिया पर लठिया उ लीहलनि रे लगाइ,
सिराज अब बबुरी ए ना बनवां में गइया चरावत,
दसवंता भगवंता मेलल ठेलन का आ गइल लोग पार,
आजु मरदन छोड़ि दीहलन आ अखड़वा पंचे सुरहन में,
ओही धन सोनवा सुहवली दहवा पा ऽ ऽ रि,

एने अब बढ़ि गइल ना सनवां देखब भीमला का,
अब चैन परतु सुहवलि, नाहि रे बाइ,
अब बीर बरखत का फेड़वा में भुजा लगावे,
उहै लचि कै अब करवट धरतिये ए होइ ना जाइ,
तहिये आजु सनकि गइल ना पूतवा ह बामरा के,
ओकर बल नाहि जब बाड़नि ए अड़ात,

गद्य : ए पंचे, जब बोर अखाड़ा में छोड़ि दीहल, सब जहें से तहें चलि गइल, अब बल नइखे अड़ात, जब बल ना अड़ाइल भीमला के तब फेड़ का परि के दरखत में भुजा लगवलसि ।

आजु एनिया सनकि गइल ना आ पूतवा पंचे बम ऽ रा के,
अब चैन नाहि मिलत बाड़नि ना दिनवां राति,
अब उलटा कसे लंगोटा ऊपर बान्है माल बरन के गांठ,
घींचे पेटी अजगर के जेहि में गोला जुमुस ना खाइ,
भंइसां जेवनी बेर पंचे, छाती बांन्हि देला लहकारि,
बरछी दुई दूई दुबर होइजाई,
ऊपर घींचे पाट गुलाबी गिरा लंगर पराइ,
अलीगंज के जूता गोड़ में मोजा लेला लगाइ,
अस्सी मन के मुगदर पाठा गरदन लेला उठाइ,
आजु एनिया उठि गईलना आसनवां देख भीमला के,
अब दुनियां महै जब चलल न सवेंसांर,
सौ समरगढ़ के खम्भा आ दुअरा उतर दखिन बनल रहल डंड़सार,
छोटे घर पीतरी के बामरि के लगल कचहरी बाइ,
चलल गइल चलावल बामरि देखता नजरि उठाइ,
तब लगि भीमला सोहरि के माथे ओनावे बामरि असीसत बाइ,
कहे जे जिय जिय हो बेटा जिय लाख बरीस अबखांड़,
गांगा जमुन जल बढ़ो, बैसे बरस बढ़ो तोहार,
हों पूंछी तोहरा से बेटा एकर बाति कहि द भेद लगाइ,
कह केकरि काल गरेसल, केकर मउवति गइल नियराइ,
बेटा असी मन के मुगदर सर पर लेले बाड़ लगाइ,
तब बोले बेटा बमरा के जेकर गरे भीमलिया नांव,
कहत बा जे का का बरम्हा लिखि दीहलनि आ,
अमरवा ए साचो····इनवारासन,

साठि हाथ के बल भुज में दीहलनि भेजवाइ,
हमारि आजु नाहि भेजलनिन, जोड़िया दादा सुहवल में,
जे छतिया के निकड़ि जाई कांटवा आ रे हमार,
अब काका माहना इ ना मथे हम चललीं पिरीथमी,
अब जोड़ी खोजे चललीं पहिया आ रे लगाइ,
जोई केहू जामल होइ ना बीरवा जो बसुधा में,
हमरा के बल से देइय ना बेलमाइ,
पंचे, जब मान मथे ना चलल जो भीमला पिरीथमी,
ओकर जोड़ी दुनियां में ना रहलनि अवएतार,

गद्य-पद्य : जेवना समय में पिरीथमी जब महे चलल, तब सोने में ओकरी सान के बीर केहू नाहि रहल, ए मृत्युलोक में जे बेलमाइ दे ओके बल से ।

आ जेवनी बेर भीमला बारह भठी हेलि गइल बंगाला,
तीन सइ सिलहटि केरि पहार,
दखिन दिसा चलि गइल पंपा पुरी पहाड़,
जेवना नगर में ताल बजावे, उ बीर दादा दसो जोरत नहरना लो बाइ,
ए केकर काल गरेसल, केकरि भारत गइल नियराइ,
गरजे बीर बघेला, केतने गाभी गरभ ढहि जाइ ।
सुनीं ले जे जहिया पहिलेइ में ए घूमे जब लागलि पंचोतर,
काबुल देसवा खोजि के इ घूमेइला ना पने जाप,
जाहिय दिनन करि बातेह, आरे तनी भजिलऽ जे गुर कर नांव,
पंचे, हिनु करि गंगा तुरुक करि गोरि,
भलि कामिलि संग छोड़लूअ मोर, अब देबी, कहाँ गीत बानीं गावत,
अरे कहा दिले परल बिसभोर,
जेवना मो दिनवा के पुजलींय देबी, आजुऊ घरिअ गइलि निअराइ,
कहि दऽ कीरिति सुहवल के, अ कइसे आजु भारत भइलह तइयार :
आजु जवनी बेर लहटल बेटा बमरा के, जेकर गजे भीमलिया नांव;
बामरि के लगल रहल कचहरी घन भरुअर बइठे दरबार ।
बायें मन्त्री बइठल, दहिने बांका राज देवान,
घूमिल मलल कइके लौटल बाटे बीर गज भीमला सुना सुहवली पाल,
जाके सोहरि के माथो नांव बामर देले बाटे ईसरबाद,
कहत बा जे जियऽ जिय ऽ ना ऽ ऽ ऽ आ पूतवा हमार ई आलवाऽऽबेल्हा,
अब जियऽ लखवे बरिसबे बेटा रे खां ऽ ऽ ऽ ड़,

बेटा तोरी मिलि गइलि ना आ जोड़िया देखबे बसुधा में ऽ कि हो आजु नाहीं मिलल जोड़िया आरे तोहार।
आजु भोमला सोचिआइ ना मारि जब देलें अघेड़ा ऽ ऽ,
धरती में रोवे लागल माथवा आरे ओन्हाइ,
कहत बा जे अगियाइ लगीइ ए काका लीखनी में, कहलन चाही जा इन्दर जी का पवने ए दुआ ऽ ऽ र,
बरम्हा हमार लोखि देहलनि आमरवा देख ऽ आलवा बेल्हाऽ, साठी हाथ खाइ के बलवा भुजवा के देलइंना लटेकाइ,
बाकी हमार नाहीं भेजलनि ना आ जोड़िया काका दूनियां में, अ तीनवां के निकड़ जइतन सनवा आरे हमारि।
हा हो पिता बढ़ि गईल ना आ सनवा हमरा बलवे के,
आ ऽ मिरुता में फाटत बाटे छतिया आरे हमार ऽऽ,
अब काका खाइ के इ माहुरवा हम मुइ ना जाईत,
चाहे आजु भंसि जाईब कुंअवां रे इना ऽ ऽ ऽ र,
आजु जरे राजा बमरिया, आरे नैना रोधिल ज होई गईल रे समान,
कहां लागे जे बजर परो बेटा रे बघेला आहो लालन ओंजरे तर जइतऽ रे दबाइ।
सांचो आजु बल में अबर हो गइल ऽ, बुधिया में बहुत बाड़े रे बउराह,
उहे अब जनाना खा के माहुर बाटे, मरल, उहे बेटा गिरे ले जे कुंअवा ईनार,
जोई तोहें ना मिले जोड़ी दुनिया में, हां हो बेटा मानि जइब बतिया हमार,
आजु बेटा देखब ऽ पेटा न अलबेला, सतवे ऊ सतिया ले ले बा अवेतार,
हां हो बेटा छतीसन हथवा के भल्ला, सुहवल में गाड़ि देबे पनिया सुआंर,
जइसे अब सिया ए सुअमर जनकपुर रहल, जेवना में धेना जे गइल रे गड़ाइ,
जेवना में देस देस भूप लोग आइल, अब बीर कोसवन करी न उमड़ाव,
जेवना में धेना नाहीं डोले रे डोलवले, भूप लोग सभ ए लजित होइ जाइ,

रामचंद्र का उल्लेख

पाछे आजु भइल जनम रघुबर के, रामहिचन्द्र अजोधा अवतार।
जाइके ऊ लेइके तड़िका बधन कइंलं, कि हो रन जगिया करैलें बड़ियार,
जाइ बगसर चढ़ि काम मारि दिहलं, अब आसा लई पूरन करेल भगवान,
जा अहिलेके धूरि उड़वलं अहिला के चरन रजि ओही धरीय,
अरे तो जाई जनकपुर धेनां के तोरलन, आ परन छोड़वलनि रघुराई,
ओइसे काढ़ि के साइहि तूहीं अलवेल्हा, अब बेटा मोतिय सागड़ कीय घाट,
आजु तोहरा मुंडवे क कलसा, धराई, जेवन बीर रोपील कोहबर देई रे पोताय,

तीन बेटा छतिया के बीर लड़वाय के, टंगिया के हरिस देईला टंगवाइ,
सेहो आजु कहिया सती मोर सतिया के, लेके आजु सोना सोहवलीय पाल,
एतना जे बोलल बाटे बामर, पाछेइ तोरी के देला जबाब,
सुनलीं जे उठि गइल पठा अलबेल्हा, अब बीर लड़ने में बांक जुझार,
जेवनी बेर असीअ हाथ कर भाला, अब बीर रथवा के लेले बा उठाइ,
चलल....गइल चलावल, आ ऽ गाड़ि देला मोती सगड़किय घाट,
गड़ि गइल सांनइ अब सोहवलि में, आरे भारथ बाटे भइल तइयार,
मुनिल ऽ बयाने अस बामरि के, लेके सोना सोहवलीय पालि ।

गद्य-पद्य : आजु देस देस के वासी, दुनियाँ कोसन के उमड़ाव, आजु लेके उलटा डगा वजावै धउंसा देले हउवै ठोंकवाइ, जेकरा जांघी बल जे होखे, बीर का भूजा बढ़ल ओके बलुसाइ, ऊ बीर लोहा के चना चबइहें, आलेके किला सुना सोहवली पालि, ऊ बीर बान्ही मउर दुल्हा के, सोहवलि करे आई बरिआत, ए जो दूगो केनन चलावों, दुनिया लरकि के करे आई बरिआत, जेवन बीर गाड़ल भाला उपारि के बीग दीहलन मोती सगड़किय घाट, ऊ बीर बावन बुरुज के तम्मू, बावन भींटा देई गड़वाइ रेसम सूत के डोरी ।
आरे अंगवा जो पियरीय जूनी एक राति,
आली प''''सेजरिया खुमखुमा,
बीचवा में हरिय जे जरी रे गिलाय,
जेवना में तेगवा के लागी जो बगइचा,
अब बरछी मांड़ो जब देई गड़वाय,
जवन बीर बइठि जइहें न तमुआ में,
आ ऽ आरे जब सीनवा लो लेई न फुलाइ,
पाछे भइया पांच गोमतहिया लकड़िया,
बाजे लागी मोतिय सगड़किय घाट,
पांच गो सुमतहिय लकड़ बजइहा, पाछे क बियहुती त बाजा बजवाय,
जेइ रे भइया मारुवे डगम पिटवाई, लालन क कनवां सबद परि जाय,
उठि न बेटा अल-वेल्हा, हाँ हो बीर लड़ने में बंकवा जुझार,
अलिय न गंजवा के जूता, अब गोड़ में मोजवा तूं लेई चढ़ाइ,
छतिया प बान्हि जो देई न लोहताये, बरखिय दु दुय दोबर होइ जाइ,
अस्सिय न मन कर मुंगदर, पाठा का गरदन पर देब ऽ हो चभकाइ,
बान्हि देवऽ पगवाह गुलाबी, जइसे आजु जीरा ये लवंग रे फहराय,
जइके आजु भोमल चलल बा चकरा बूह, एन मे ऊ लड़ने में होइल तइयार,

ओड़ो बेटा चलीय न जईब सागड़ पर, एही आजु सोना रे सोहवलिय पाल,
जेहि तोर मूंडवे के कलस धराई, रोधील कोहबर देई न पोतवाय,
जेहि तोरी छतिया के पीढ़ा गढ़वाय के, जंघिया के हरिस देई न टंगवाय,
तेही धरी न झोंटा रे मउरी के, बेटी हमरी सरिया से क लेई बियाह,
सतिया जियरवा के कारन, छतीस जाति के बेटी परि गइली बरिया कुंवार,
केहू बरहे बरिस के रहल छोहड़ा, ए केहू भइया सोरहे बरिस कर नारि,
केहू अन बीर बाड़न गइलन,
अ तिरियन लो परि गइल ना बरिया ए पंचे कुंवा''''र।

हां ऽ ऽ हां ऽ ऽ हां
आरे पंचे हिनु करि गंगा, तुरुक करि गोरि, भलि कामिलि संग छोड़लूय मोर,
अब देबी जेवना दीन करि पूजलिय तेवनि घरी गइलि नियराइ,
अब देवी कहि द ऽ कीरिति मरदन के, कइसे ई भारथ भइल तईयार,
अब पंचे उनकर छोड़ि के पंवारा, हां अंगवा ई भारथ के सुनऽ रे बया'''न।
आजु जेवनी बेर छत्तीस बरन के बेटी, सोहवलि परि गइली बारि कुआंरि,
जइसे बन में बिलिखि के रोवे सियारिन,
कोना में कुहूंके रोवति रहलि बिलार,
ओउने रोवति ह बेटी''''
आजु रनिया चिहुंकि चुहुंकि ना, आ ताकति बाड़ी दूनियां में,
देसवा में ताकति रहलीं मथवा रे ऽ ओन्हाइ,
केहू नाहीं जामल रहल ना, आ बीरवा दइबा बसूधा में,
जे चली अइसन सोनवा मुहवलीय दहें ऽ पारि''''
कहंस जे ए रघुवर केहु के मुंहवा ई परि,
मटिया हो महकति सोहवलीं में रे बा ऽ ऽ इ,
आजु बुला निपूरुख पोरीथमी अब होइ रे गईल,
नाहीं केहू मरद ले लेइबा या अवेतार,
दुनियां में बीरहवे जनमवा सबके केहू बा ले ले,
कुल्हि बुला गदहे लेलनि स अवेता ऽ ऽ र।
जब जब लगनिया के भइया चढ़ुवै रे महोना,
तिरिया सोहवलि रोवति रहलिन मथवे रे ओन्हा ऽ ऽ इ।
हां ऽ ऽ हां हां
हां अब पंचे हिनु करि गंगा, तुरुक करि गोरि भलि कामिलि संग छोड़लू मोर,
अब देबी जेवना दीन करि पुजलीं, तेवनि भला घरी गइलि नियराइ,

अब देवी कहिद ऽ कीरति मरदन के, कइसे आजु भारथ भइल ह्‌''''तइयार
आ''''जु पंचे, जेवना दीन कै बाते''''आगे सुनऽ समै के हाल,
जेहिया छतीस बरन के बेटी, सोहवलि में रोवति रहलिन माथ ओन्हाई,
आजु किछु दिन बीति गइलि मिरता में,

हाँ ऽ ऽ हाँ ऽ
आजु जब पंचे, कीछु दिन बीति गइल लड़िकिनि के,
दुनिया में साख ऽ समात नांव ना,
जब जब लगन के चढ़े महीना,
आजु अगिनि लड़िकिनि के हुरकति बदन में बाइ।
बिट्ठुराई के खाली दुनियाँ का कहे,
कहत ऽ जे ए सखी, आजु हमरी नीयरि ना, आ तिरिया ए रजउआ भईल,
नाहीं केहू दुनियाँ में ले लेइबा अवेता ऽ ऽ र,
केहू के आजु मुंहवइ परि मटिया दइबा होइ बा गईल,
हमनीं के जीयते मोहबति सोहवली में ना बा ऽ ऽ इ,
बुला आजु नीपुरुख न ऽ आ होइ जब गईल पिरीथमी, कि हो आजु
भसिय न जाइत आऽ संवरे सार,
नाहीं केहू सीरीजल बा ऽ आ, जोड़वा दइबा भीमला के,
अगिया हमनीं के हुलुकति ए करेजवे में ना बा ऽ ऽ इ,
आजु कीतऽ जाति जइतन ना, जोड़िया दइबा भीमला के,
किय प्रभु भसि हो जाइत ना, संएसार,
कहत ऽ जे सखिया काल्हि छोड़ि देबे के ए गउंवा दादा गढ़वा सोहवलि,
आ ऽ लोटा धोती लेके सोहवलि ले चलै के हैठिये आइ,
आजु हमनीं के सखिया मारइ के चलि के ना गोतवा सागड़ा में,
आ सूरुजे जो बाबा के देइ के निसि ए कार,
कहत ह जे अदिते इ ना नथवा ई रे गोसाईं,
जेवन आजु हउवन बभनवें के ना ला ऽ ऽ ल,
जेवन आजु बरहेइ ना कलवाउ होइके उगलन,
अ ऽ देसवा में सोरहे करइलें आ बिसराय,
कहब जा के सुरुज बाबा हमनींय के. दुखवा अब रउवां ना देखलीं,
सुहवलि में जरतियाडी देहियां आरे हमार,
सुरुज बाबा जहिया जूझि जइहन ना लालनवा सांचो बम्मरा के,
आ तोहरा के देइब जा दूधउवै के न था ऽ ऽ र।

आजु रनियां एतनाइ ना संउजा जा ब ाड़ी जमउले,
ओहो नगर सोनबै सुहवली दह ए पाल ।
ए पंचे जेकरिय अखियांइ ना आ अन्हवट होइ जो लागल,
ओही के मोर गानवां लउकल नाहीं ना बा ऽ इ,
जेहि आजु हियवंइंना फानि के जो गानां ए सुन ऽ,
अ ई तनिको बल ए बिरथवे नांहि न जाइ ऽ ऽ,
जहिया तिरिया छोड़ि दिहली न गउंवा पंचे त आ ऽ सुहवलि के,
आ ऽ कुल्हि लड़िकी लोटा धोती लोग ले ले बा इ ऽ ऽ ठाइ,
आजु रनियां कन्हिये प ऽ धोतिया लो धइबा लेहले,
हथवा के लोटिया जो लिहलीं रे उठा ऽ इ,
केहू न ऊ कूसवाइ के झारि के न ले ले चटाई,
केउनो मृगछलवै न लेहलीं रे उठा ऽ इ,
केउनो रानी कलियै कमरिया त लेइ बा लेले,
अब चललीं मोतिये सगड़वा आ कीय ना घाटि,
जहिया आजु धइ लेहलीं डगड़िया पंचे सुरहन के,
चललीं स मोतिय रे सगड़वा की ना घाटि,
ओहि में केतनी बरहेइ बरिसवा की रहलीं तिरिया,
केतनेउ सोरह बरिसवे के ना नारि,
केतने के चढ़ल बाटे ज ऽ वनिया सांचो देहिया में,
अ चललीं सभ मोतिय सगड़वे के ना घाटि,
केतने के तीनि तीनि ना आ पनवां दइबा बीति बा गईल,
आजु पन चउथा भइल बा ऽ निय ऽ राइ,
रनियन के हड़वइ न मसुवां बा छोड़ि ना देले,
सुहवलि में ओन्हइ गईल बा करिहांव,
केतने के बान्हल रहल ना आ बरवा दईवा लीलरा के,
केतने का मुंहवां में दंतवा नाहि रे बा ऽ,
आ ऽ रनियां आजु धइ लिहलों डहरिया सांचो सुरहन में,
चललीं मोतिये सगड़वा ना घा ऽ ट,
जाके पंचे करति बाड़िन ना कुलवै ना अपनिये मंजन,
अब कुल्ला दंतुअनि होतु सगड़वा पर भइया बा ऽ इ,
आजु रनियां मारि दिहलींस गोतवा हो सागड़ा में,
आ ऽ धोतो लोग बदलति भींटउवै प ए बा ऽ ऽ इ,

रनियां अपन लुगवै ए ना खोलि देलीं भींटवा प अ,
आ खोलि के आंचर सुरुज ए प धरत निसि ए कार ।

गद्य : का धरसं कहसं जे,—आजु ए नाथ गोसाइँ, रउवा हुई बभन के लाल, बारह कला होके उगल बानीं हो दादा, सोरह करतानी बिसराम, हमनी के दुख नइखीं देखत एहि मिरुत मंड़ल सवंसार

आजु केहु के मुंहे, रहबरि, मांटी होइ नसाइ,
जीयते मोहकति म्रोतू मंड़ल सयंसार,
आरे निपुरुख होइ गइल पिरिथमी कि भसि जाई संयसार,
कि बड़ा मरद के बून ना जनमल ऽ, कुल बीर गदहे ले लनि अवतार,
हमनीं के रउवा दुख जाइके कही इन्दर के पवन दुआर,
कीत देवतन लोग भेजि देउ जोड़िउ मिरुता में,
आ एहि बीरवा के भेजो मिरुत मंड़ल संवसार,
जहिया सुरुज बाबा जूझी बेटा बमरा के, तोहिके देइब जा दूध के धार ।
आरे रानी आजो सुरुजे प आंचर ना विनावत,
देवता पर करति बाड़ी न मिसिकार,
अब रानी नीचवां आंचर धइ लेलींय, आपन भइया धोतिय खींचे लो लेलकार,
अब रानी तुलसी मनियवां लोग लेला; भींटा मृगछलवा जो देलीं स बिछाय,
केवनों का कालिय कमरिया बिछावल, केवनो कुए के चलले चटइया न बाइ,
अब रानी घरेंस धियान रघुबर के, जब माला कटत सगरवा पर ऽ ऽ बाइ,
जहिया जोबनवां जोगिनी होइ गइलींय, सगड़ा पर करत तपेसवा रे बाइ,
जब भइया हिलल धरनि जगदम्बा, डगमग हिले जब लागल सनसार,
जेवना में पाप रे अधिक होइ गइलैं, धरती का बूतवे त नाहीं रे अड़ाइ,
नीचवां जो हिलि गइल बुरुज रे धरती के, डगमग होखे ना लगल संवेसार,
अब भइया केतना देवता मीरुता के, चिल्हि के इन्नरपैर में गइल रे पराइ ।
आ हाँ, हाँ ऽ हाँ ऽ
अरे पंच अब जहिया दिननवां के बातेह्, तनि बाबू सुनऽ ए लगनिया के हालि,
तनी सुनि ला खेला ए सुहवलि के, आ दुनियां में पाप भइल बा अधिकार,
आजु जेतना देवता मिरुता के इंदरपुर में गइल बाड़ें पराइ,
लागल कचहरी देवतन के हलचल उठि गयल बड़ियार,
जे आजु डगमग भईल पिरीथमी, भसे चाहत बाटे सनसार,
आजु केवन बीर उलटा तपेसा कइलसि कि पाप भइल अधिकार,
त सुनीलं जे एनियां बरम्हइ बेसुन जब बिटुबे ऽ रहल, ऽ
जेवना मे बेसुनइ जुमइलऽ भगेवा ऽ ऽ न ।

आजु जेतना देवता इनरासन सभ जमा होइ गइल, इन्दर का पवन दुआर,
बेआकुल लोग होइ गइल देवता के उलटा करत तपेसा बा ऽ इ,
धिआन लगा के ताके लोग मिरता, दुनियां ताके लो पाहि लगाइ,
धियान में चलि गइल नजरि दादा सोहवलि में,
ओहो मोती सगड़ की घाट केउ बारह बरिस के काना,
आरे केहुवे ओइमें सोरहै बरिस कर नारि,
आ केहु के अब चढ़लि जवानी अलबेल्हा,
कुसवा के बइठलि ए चटइया पर बाइ,
आजु पंचे केहु के तीनि तीनि पन बीति गइलें,
अब पन चउथा गइल बा नियराइ,
जेकर ओहि जां हड़वे न मांसि छोड़ि देले,
सुहवलि में ओनही गइल बा करियांव,
रनियन के पाकि गइल बार लिलरा के,
मुसवा में खोजले व दांत नाहीं बाइ।
ओइजां ज देखे धियान लेइ अलबेल्हा,
पपवा ऊ भइया भइल बा बड़िआह,
जहवां उ गाड़ल बा भाला रे भीमला के,
ओही पंचे मोतीय सागड़वा कीय ददेरे⋯बाइ।
आजु बोलल बाड़े बरम्हा के बैमुन,
कहलन जे सुनऽ सुनऽ ए बरम्हा मानऽ इ बानि हमार,
खोलि दऽ बही आजु किला में, अरे तनी अब देखि लेई नयना पसारि,
कइसन लिखनियां लिखल बा भीमला के
अरे जेबन बीर अनड़ी कइले बा बरिआर,
जेई ए घमंडवा करेला दुनियां में, ओके हमार तोड़े खातिन हो ला अवतार,
जब जब भीरिया आइल बा दुनियाँ में,
अरे भीरिया के हरइ चलइलें भगेवा⋯न,
आजु जब पंचे निकलल बही बाटे भीमला के
लिखनीं देवता लोग देखत बा आंख आंख बिलगाइ,
लीलखत बा जे भीमला सानी के मरद, ना केहू दुनियां लेई अवतार,
ना केहू आगे जनम जो लेई, ना पाछे भूमि के लेई अवतार,
जेकर अंगा छओ कलम के अंबर आ झूलत रहल किला ललकार,
जे ई बीर भरले नाहीं भराई, न जरले होई जलछार,

ना पानी में बोरला से नांव ओकर डूबी, कत्तों काल मरल से न आई ।
त ए पंचे, देबिया हमारि डलले रहलीं झूलनवा देखबऽ इनवा ऽ ऽ रासन,
अ झुलति रहलीं इन्दर जी का पवने रे दुआ ऽ ऽ र,
एही आजु भीमला इ ना जिउवा की बबुआ कारन,
आ रचना जो रचे चललेंनि बिसुना भगे ऽ ऽ वान,
सुनलीं जे ओल्हि अइलनि ना, प्रभुआ ए सुना ए देयालू,
आजु दुनियाँ कांड़े चललनि पहिआ रे लगा ऽ ऽ य
सभकर अहीरे इ अहीरे बा लोरकी गवले,
पठा लोग अहीरन के करवे रे बया ऽ ऽ न ।

लोरिक और संबरु आदि के जन्म की कथा —

सूर्य की दृष्टि लगने से ब्राह्मण कन्या को गर्भ रह जाना

आजु भइया सुनि लेबऽना गनवां मोर अलवा रे बेल्हा,
एइजा अब जनमें के करवों रे वया ऽ ऽ न
जेवनी वेर रघुवर महनइ ना मथे जब लगलन पिरीथमी,
आरचे खातिर होन्हीया अइलनि ना संवेसार,
जेवना में चललेइ जो अइलनि हो चलावलि,
अरे जुमि गइलनि गजनेइ गउरवा हो गढ़वा पा ऽ ऽ लि,
एगो आजु बाम्हनि लड़किया बीतल बारह बरिस रहल,
आ गउरा में परलि रहलिन वरिओ रे कुंआरि,
आ तल कि एनियां उगि गइल ना आ डंफुआ भइया सुरुजे के
रानिय कऽ घमवा बेघले बदनिये में न वा ऽ ऽ इ,
आजु रनियां चीहुँकिय के अंखिया ए आपन खोलि जो देले,
ओने डींठि सुरुज के मीलल बा लेलका''' र ।
इहे आजु सुरुज इना लड़िकी के डीठिया मीलल,
ओ रनियां के सांचो के गरभवे रहि ना जा ऽ ऽ इ,
ऊ लड़िकी आजु छमकिय के उठलि बाड़ी बंगला में,
आ''''अहकि के ऊ रोवति अंगनवां में रे आ ऽ ऽ इ,
हे प्रभु हम केवनिय कमइया में चूकि रे गइलों,
आजु गरभवती भइलीं देहियाँ रे हमा ऽ ऽ र,
आजु हमरा मुँहवइं करिखवा हो लागि बा गइल,
आकइसे मुंह दुनियां घालबि ना देखला ऽ ऽ इ,

उहै लड़िकी जाइके नउवै महिनवां गिरल भवने में,
अन जल तेजले इ मीरुतवा में ना बा ऽ इ ।

लोक लाज बचाने के लिए पैदा हुए
संवरू और सोबचन को कुमारी कन्या द्वारा गड्ढे में फेंका जाना

गद्य : ए पंचे, जब रानी गरभवती जब होइ गइलीं, त अन्न जल कुल तियागि के आ जाइ के कोने में मूंड़ी लगाय के अ भवन में रोवे लागलि, कहलसि जे कइसे हम मुंह दुनियाँ के अन्दर देखाईं, कइसे हम मुँह दुनियाँ के देखी अ देखाईं, ई लंछना, लागि गईल भगवान, कबो हम पुरुसो से नजर ना तिकवलीं, आ न गोदी में लेके सुतलीं अंग भिड़ाइ, ई सुखवे हमके हुमकावति बाइ, गरभउती रोवै ।

त ए पंचे सुनिलेबऽ अब रचनवाँ साँचो रघुव ऽ ऽ र के,
रचना ऊ रचले हउवनि ना भगेवा ऽ ऽ न,
सुनलीं जे नउवें इ महिनवाँ गरयभवती
आ रनियाँ ऊ अठवें महिनवाँ बीतल ना ए बा ऽ ऽ इ,
जहिया बबुआ नवउें महिनवाँ बा बीती ना गइल,
अंगवाँ तूँ बीरवन क सुनबऽ हो बया ऽ ऽ न,
जेवनी बेरि अधिये ना रतिया जो भईल बरामर,
आ रतिया जब टूटइ लागल ना····निचल्हाँ····इ ।
सुनलीं जे दुइ गो इ ना बीरवा लो जामि बा गईल,
ऊ बोर अब गउरे में लेलनि ना अवेता ऽ ऽ र,
धरनी निछिनि गईल ना नरवा जो लड़िकन के,
अ नार आजु गउरेह में गइलन हो छिना ऽ ऽ इ,
बाकी ओहिजां पपवै भईल बाड़ी बाम्हनि के,
लड़िकन के तउला में देहलेह कसेवा ऽ इ,
उहै आजु रतियाँइ में गड़ही में बोगि ह दे ले,
दूनों लड़िका गड़हिया में देहले ह बीगवा ऽ ऽ इ ।
जहिया दिननवाँ करि हो दादा बीतेहु
अरे तनी सुनीय लेबऽ जा खेलवाड़,

लोरिकी का गायन कठिन है गायक का कथन

सुनीलऽ गानां हो लोरकीय के····,

अरे नाहीं केहू कइ बुतवा न बाड़ें रे गवात,
घूमि घूमि लोरकिया लो गावल,
अरे सभ बीर एहि के न करेला बयान,
सुनीलऽ बयान हो मरदन के,
अरे जेवन बीर धरमवा त लेलनि अवेतार,
रचना रचल बाटे अब रघुवर के,
अरे अब रचिय देलनि रे भगवान, सुरुजे क डीठिया से जमलन,
बाभनि गरभे लेलनि अवतार, उहै लड़िका बीगल बाड़नि गड़ही में,
अब पंचे अंगवां के करीं लं बयान ।

पीपरी में दुसाध बरम्हदेव के यहाँ सुबच्चन का पहुँच जाना — संवरू को खोइलनि द्वारा घर लाया जाना

मुनीलं जे इहै लमवांड बसलि बा ए भइया ए पीपरी,
लम्मा आजु गजने गउरवे गढेपा·····ल,
जवनी बेर लड़िकाइ गड़हिया में लोग बाटे बीऽ गाईल,
बीरमदेव के सूअरि तोरले खोभरिये ले ना बा ऽ ऽ इ,
सुनोलंऽ जे सूअरि तोरि दिहली खाभरिया भइया पी ऽ परी में,
आ बीरमदेव के खेदले दूसधिनी भइया ए बा ऽ इ,
आजु रनियाँ सोंटवइ ना अ लेइ लेइ साचों रहलि ए घेरत
उहै सूअरि तनिको मनेई में नाहिन ना बाइ,
सुनलीं जे पुरुबेइ ना लागति रहलि रनवां लोहो
पछिवे में सायर भई ऽ ल उजिऽऽयाऽऽर,
तब लग बीरमदेव गउरइ क रहिया परि ए भइया बाइ जूमलि,
अ खोइलनि दही मथवे बेचइ ना चललि ए ना बाऽऽइ,
खोइलनि हऊ धइले रहलि ना अ भीटवा भइया पछिवें के,
अ उहै दखिन से सूअरि जुभलि बा लेलकार,
बीरम देव खोटवइ ना लेइके अब ठाढ़ बे ऽ वरा में,
तब लक सुअरि थूथून मारत लो तउलवे के ना बा ऽ इ,
दूनों बचवा कियां कियां ना बाटे लोग किकिएआ ऽ इल,
आ पंचे अब सुनिल ऽ गानइ के खेलवा ऽ ऽ ड़,
बीरम देव बीगि दिहलसि ना, अ सोटवा भइया गड़ही पर,
अ ऊ त खोइलनि दहियऽ पटकतु ले ना ऽ बा ऽ इ,

अ दूनो रनियाँ काढ़ि लेहलनि कठनियां भइया अलवा बेल्हा,
गड़ही में कूदि अ गइलनि स लेलका ऽ र,
सुबच्चन के ऊलटि लिहलसि, तउलवा भइया जब देवरानी,
अ खोइलनि लूटति घरमिये के ना बा ऽ इ,
दूनों रनियाँ लेइके इ डे ऽ बढ़िया पर लो चलि रे गईल,
अ दूनों अब परिअ गइलनि स अन्हवा टि,
बाकी भइया रचल बाटे रचनवाँ देखऽ रघुबर के,
सभकिय अंखियें पर अंधवटि रे दिया ऽ इ,
एनियाँ ऊ पिपरी में हल्लवा बा भई न गईल,
ब्रमदेव बाझिन कोखी बेटा अब लेहले बा अवता ऽ ऽ र,
एने आजु गउरवाइ में डंकिया हो बाजि ना गईल,
खोइलनि के कोखिया पलटव लेनि भगेवा ऽ न,
ए पंचे ऊ रानी कहियाइ ना भइल हई गरेभवती.
कहिया ऊ गउरा में भइल ह अवे ऽ ऽ तार,
इहै केहू रघुबर के खेलाइ ना ए दूनियाँ जानल,
सभका के भयबे के डललनि हो जंजा ऽ ल ।

अरे पंचे अब जहिया दिननवां करि न सुना बातेह,
तनी आजु सुनऽ रघुबर के खेलवाड़ उठाने, मुनि ला लिखनियाँ रघुबर के,
अरे रचना जो रचिय देलनि लेलकार, मुनी लऽ बयान गउरा के,
आ एहि आजु गजन गउरवे गढ़े पाल ।
आजु पंचे संवरू पी लेहलनि छीर खोइलनि के,
गउरा में अहीर के बाल गइलन कहाइ,
सु बच्चन जाइ के पी लेहलनि छार बरम्हदेव के,
दुसाधनि के परि गइलन दुसाध कहाइ ।
त ए पंचे अंगवाँ बढ़त बाड़न ना अ गनवाँ हमारि इ अल्हवा बेल्हा,
तनीं ध्यान लेके सुनत रहे ए जो मनवाँ रे लगा ऽ इ,
साँचों आजु कठिनि आ भगतिया रहलि रघुबर के,
जेवन भारथ ठानल सुहवलीं में ना बा ऽ ऽ इ,
एही आजु तीरियइ ना जीउवा कि न बबुआ कारन,
आ दूनो बार भोरता में लेअनि ना अवेना ऽ ऽ र,
अंगवां ऊ आइल बाड़नि ना बरअऽ देखबा संझिया के,
जेकरि आजु मलवे संवरू अ ना हुउवनि नां ऽ ब,

अंगवां जुड़ सुनि लेब ऽ ना खेलवा भइया मरदन के,
दूनो बीर पलन पर झूलेइ लो लेलकार ।

गद्य : ऊ पलंग पर झूले लगलन ओइजा अ ई एइजां । बाकी देखि ल खेला अब खोइलनि के, अब लड़िका केतनो ले के लेल मेरवसु, आ देहे लेइके लगावसु धरती पर बइठबे न करे ।

सुनिलऽ जे बुढ़िया ओइजां धइ धइ न गोड़वा बा आपन बिटोरत,
अ चूतर उनकर धरति धरतिये पर,
ए रे लड़िका ओहिजां अब टेढ़वा होइ न जाला,
नाहीं धरती पंगुवा धरत बा लेलका ऽ र,
आरे खोइलनि आपनि धइ धइ ना आगोड़वा में ए तेल मेरावति,
किअ बुला लंगड़ हउवनि बचवा रे हमार,
सुनलीं जे छउवे इ महिनवां के केवन ए कहे,
जेकरा के दुइ बरिस बीतल बरिसवे दूई चारि,
तबो नाहि लतवाइ धरतिय पर बीर त बाड़ें,
उहै आजु झूलति पलंगियें पर बा ऽ ऽ इ,
एक दिन डूबि गइल ना आडंफुवा पंचे सुरुजे के,
अ दूनियां में साजल ज भइलनि ए अन्हा ऽ र,
आरे खोइलनि आपनि अपनेइ न पूतवा हो अलवा बेल्हा,
अंगना ऊ पलंगि पर जब दिहलसि ए सूता ऽ इ,
आजु रनिया बारै गइल ना अगिया भइया चूल्हिया में,
अब पंचे बोर के सुनइ जा खेलवा ऽ ऽ ड़,
आ तहिया बीर छरकिय के ऊठल हउवन पलंगे पर,
आपन एंड़ा डलले धरतिया में न बाइ,
जहिया सांचो छोड़ि दिहलनि ना आ गउवां पंचे गढ़वा गउरा,
उहै जब सुरहनि गइलनि ना हेठि ऽ याइ,
जाके बीर शंकर मंदिलवा में जुमि न गइलन,
अ तोड़ी ओने भोला क लगलि बा लेलका ऽ ऽ र,
आजु धरमी धइ धइ ना गोड़वा लगलनि आ पंचे दबावै,
शंकर का ऊ चरनि में गइलन ना अझुरा ऽ ऽ इ,
एने खोइलनि जुमलोय बाड़ी न हो आंगना में,
नाहीं आजु बबुआ लउकल ओकर ना बा ऽ इ,
अब रनिया एहि जगो न घरवा से ऊ टोला परोसे,

अ जाइ के ऊ पहुँचल बखरिये में ना बा ऽ ऽ इ,
ए सखी के हमरा से कइलू जा खीसवा ए आलवा बेल्हा,
आके हमार लालन के लिहलसि ए चोरा ऽ ऽ इ,
ऊ रनियां आजु मारत बाड़ी मेहनवां देखवब ऽ,
खोइलनि के बुजरो एके बेटा पर तू गइलू रे धाधा ऽ ऽ इ,
हमनीं के छोरि छोरि बबुववा हो दइबा दिहलन,
काहे के तोर पूतवा मो घालबो रे चोराइ ।

गद्य : कहताड़ी स जे काहें के हम तोर लड़िका चोरावे जाइँ रे, हमनी के त दइब चर चर गो अन्हेरिए देले बाड़न ।

त ए पंचे संवरू एनियां घांगत बाड़न चरनियां देख ऽ संक ऽ ऽ रे के,
आ खोइलनि आजु डेंकरति गलिय में घूमलि रे बा ऽ ऽ इ,
आजु हम केकर बीगड़वा हो दादा रे कइलीं,
कि पलंगे ले लूटि लेहलनि ना पूतवैइ रे हमा ऽ रि,
खोइलनि आजु अहकि अहकि ना रोवति रहलि गउरा में,
आधरमिय सँकर की मंदिलवे में ना बाइ,

तपस्वी संवरू का शंकर जी से बुढ़िया खोइलनि को पुत्र देने का वर माँगना

गद्य : पंचे, दू चार दिन लड़िका जब चरन दबवलन त संकर दानी क जब धियान टूटल, त बाल रूप देखि के हहाइ के उठाय लेहलन गोद में ।

आरे धुरिआ अब झारत लड़िकवा के वा ऽ,
आरे एने खुललि बा ताड़ी हो भोला के,
अरे भोला बरबस अंगवा में लेलनि रे लगाइ,
कहलन जे बबुआ न मोर लरिकवन्हा,
आरे सुघड़ मानि जइबऽ बतिया हमारि,
तोहरी ई तपेसा करे के उमिर नइखे,
काहे खातिर चरनी मोर देला ए दबाइ,
किछु अब मांगि लेबऽ वर अलबेल्हा, तोहरा के देइँ अ देईं ए बरदान,
तब एने बोलल बाड़ें बीर सांवर, रसे स देबे जब लगलन जबाब,
बाबा हमरा धन के ललचिया अब नइखे,
नाहीं हमरा बल के कमी न एइजां बाइ,
हमरा अ किछु के कमतिया जो नइखे,
केवल हम तोहसे मांगीं हो बरदा ऽ ऽ न ।

गद्य : लड़िका कहले हउवन, जे आजु हम केवन बर मांगी तोहसे,
हमरा बर उहे बा जे हम तोहरि चरन दबावे खातिन हमरा अवतार बा,
आ दाबत रहीं चरन, हम एही में नेह हमरा बा, न हमरा बल के गरज बा,
न धन के लालच बा, अ न माया में हमार सरीर जाय,
हम तोहरी चरन के सेवा करे खातिर हमार मिरुतलोक क अवतार बा ।
त संकर जी का करसु ।
कहत बाड़ें जे ए बबुआ जे हमार करे ला ईना ऽ आ पूजवा देखबऽ दूनि ऽ यां में,
आ ओकरा के मुंह से अब देइलं बरेदा ऽ ऽ न,
ओही क अ पूरन भ ऽ गतीया बबुआ होले,
हमरा से किछुवे मांगेइ ना बरे ऽ दा ऽ ऽ न,
ए बबुआ एनियां कठिनि हउवे ना गनवां देखबऽ सु ऽ ह ऽ वलि में,
सभवे में बूतवे गवइ लो,नाहि न बा ऽ इ,
आजु बबुआ सुनि लेबे ब ऽ यनवां तू ए मरदन के,
सभ इहे अहीरे के करुबे लो बयान,
ऊब बीर सांचो इं ना आइल रहलन बरवा दानी,
ओही आजु सुहवलि खातिर ना अवेता ऽ ऽ र,
ए भइया अब सुनि लेबऽ ना अ गनवां मोर अल्हवा बेल्हा,
पंचे अपना मनवेइ में धइये के सांचो धिया ऽ न,
एहिजां आजु कठिनि भईल भ ऽ गतिया सांचो लड़िका के,
संकर आजु बरबस से देबे चललन बरवा ऽ दानि ।

गद्य : संकर जी कहसु कि नाहीं बर मांगऽ, नाहीं त हमार भकती पूरन ना होइ, जे मिरतुलोक में आइल बा से हमार बर मांगि के त हमार सेवक भइल बा, अ भइया जेवन धरमी बाड़े, से अपना लेके फंसरी गर में नाइ के, का मंगले हउवन—कहत हउवन जेए बाबा, मांगब तेवन बर मिली, आ त मिली, मिली आ त मिली, तीन जवान भइया काटि दिहलन, बर मांगे के बेरी संकर दानी से, कहलन जे बाई मांगब तेवन मीली ना अ त मीली, तीनि बरदान जे मांगि के का बर मंगलन धरमी ।

कहलनि जे ए बाबा तोहके मांगति बानी ना, अ बरवा हमरे मेरुता ऽ ऽ में,
एही से अब दाबत रहलीं चरनुवे तो ऽ ऽ हारि,
हम गउरा बछिनींय के दूधवा मो पी ए घलली,
ऊहे दूध कइसे होइय ना पत ए पा ऽ ऽ ल,
आजु हम बछनींय के दूधवा मो पीहिए रे घल्लीं,

आजु गउरा पापिन भइल देहिया रे हमा ऽ ऽ र,
ए बाबा हम मांगत बानीं न बरवा देख ऽ दुनि ऽ यां में,
हमरा के संकर जी देब इ ना बरेदा ऽ ऽ न,
देख ऽ आजु हमरे नीयर ना बीरवा हो बलवा ऽ में,
हमरी माइ का गरभे देब ऽ इ ना अवेता ऽ ऽ र,
संकर जी का ठाढ़े इ गरमियां ए चढ़ि ना गईल,
देवता नाचि के गीरल धरतीया ले दादा ए रे बा ऽ ऽ इ,
कहत बा जे अइसन ना बरवा बा पजिया मंगले,
ईय बर चलहु जोगीय त नाहीं ए बाइ,
ऊ धरमी आजु छोड़ि दिहलसि देवलवा भइया संकरे के,
ईहै हमरा देबे के अइलनि हां बरेदा ऽ ऽ न,
चलऽ अब फेरि देई मनियवां हम बोहवा में,
सभ अब देवतन पर धरी अ ना रे धिआन,
ई त बड़ा बरवेइ दे देइ त देबे ना कहलन,
आ बर मंगला से इनका गरमियां अब तोरले हो दादा रे बा ऽ ऽ इ।

गद्य : कहलन ई त हमरो ले गरीब बाड़न, अरे जब बर कहलन त हम बर मंगली, त देबे के नु चाहीं, आ कि एही बर पर इनका झवं आइ गईल, अब धरीं हम धियान चलि के देवतन पर।

गद्य : आ पंचे जेवनी बेर धरमी जो छोड़ि देहले हउवे सिवाला, अ कंठी माला जब लेइ के जब सुरहनि में त्रइठत बाटे बोहा में।

तब ए भइया, बरम्हा बेसुन, अरे जेइमें अब जुमि ए गइलन रे भगवान,
संगवा जो ओल्हि ए गइलन ए बिसकरमा,
अरे रंधिया आजु पहुँचल मंदिलवा में बा ऽ इ, एने अब बरम्हा बेसुन बेटुराय के,
हरे धइ धइ भुजा नऽ उठावत रे बाइ, केहू बबुआ संकर जी के दंतवा छोड़ावे,
केहू जाला चिरुवा पीवलै हो बाइ,
तनी अब सूनिलइ खेला तू अलबेल्हा, अंगमां तूं बीरवन के सूना रे बया ऽ ऽ न,
ओइजां अब जेतना देवता अलबेल्हा, संकर जी के मंदिले गईल हो बेटुराय,
जब केहू धई धई दंतवा दबावे, केहू आजु जलवा पियावत पंचे बाइ,
केहू अब संकर के जो पंखा हो डोलावे, केहू धइके धरती ले उठावत लो बाइ।
अंग जब प्रभु ए दयालु ठड़ा बाड़ें, जेवनी जुगुत बेसुन बाड़े रे भगवान,
जेवन आजु खुलत बा नयन संकर के, अंगवा जो लवकि गइलन रे भगवान।

सुनीं लऽ जे संकर का आजु झर झर ना ऽ ऽ ऽ नीरवा पंचे लागल ए गीरें,
ओइजां आजु हंसि के बोलेइलनि भगेवा ऽ ऽ न,

गद्य : का बोलल हउवन, कहलन, जे हां हो हाइ जे संकर दानी, ई का हो, कहलन जे का करीं, उहे देखावसु अंगुरो से जे उहे माला खटखटावता, देख लड़िका बा सयानो नइखे भईल, ना हमरा ताड़ी लागल रहल हऽकय का जाने कहिया के हमरी चरन पर धइके दाबति रहल ह, हमार धियान जब टूटल हऽ त बाल रूप देखि के हहाइ के उठाइ लिहलीं ह ऽ हहाई के जब उठाइ लेहलीं ह, त हम झारि के कहत बानीं जे बबुआ बर तूं माँगऽ, लरिका कहता जे हमरा किछु बर के कामे नइखे, कहें आत हमरा बल के कमिये नइखे, धन के ललचि नइखे, कई बेर महराज झटकारि दिहलस हऽऽत हम ईहै कहलीं हं जे हमार भकती करै ला से बरदान जब ले ला त उहै हमार सेवक होला ए बबुआ, तवन कहत बा जे मांगब, तेवन मीली आ त मीली, मांगब तेवन मीली आ त मीली, तीन जबान काटि के अ चउथा में मंगले बा, आ अइसन बर मंगले बा, हाइ रे प्रभु जी का कहीं, जेके बरम्हा जो बांझिन लीखि दीहं ।

आ टाँकी मार दीहं मांह लीलार,
दुसरा के कवन चलउले, ऊ बरम्हा का मेटले नाहीं मेटी ।
कइसे हम टारि देईं ना आ ऽ टंकिया दादा दे ऽ बता के,
कइसे गरभउती मो देईं रे बना ऽ इ ऽ,
ओइजां आजु बेसुनेइ ना आ प्रभु जी अ लोगन देआलू,
उलटे संकर देबे जु चलेइ लन बरेदा ऽ न,
इहे बीर भसमइ ना सुरवा के तू दान के दीहलऽ,
कतहींय ना लागत सरनोये रहलि तो ऽ हारि,
आजु हम नर से इ ना नारि मो अ बनि ए गइलीं,
भसमासुर के बर से देईलं जरेवा ऽ ऽ इ,
अइसन कठिन कठिन देत चल बरदनियाँ हो मेरुता में,
अपनी जिय पर गांहक तू दीहला रे लगा ऽ इ,
आजु इहै अपने इ बेकलवा में तू परि तू जालऽ,
हमरी गरदन फँसरी तूं देलऽ न लटेका ऽ इ,
बाकी आजु उठि जइबउ ना संकर हो अलवा बेल्हा,
एइजां अब राखि देइब भगतिया, आरे तोहा ऽ र,
एनें अब रहि जाई ना टंकिया हो बारम्हा के,
आ बबुआ इ तोहरी पूरनि ना अ होइ ना जाइ ।

गद्य : कहत हउवन भगवान, जे एहिङो, बर तू दऽ, हमरी गला में फांसी लगा दऽऽ अ अब तोहार हम भगती पूरा करत बांड़ी, उहे हाथ के तुमड़ी धरा दीहलन, अ कहलन जा लड़िका से दूध मांगि ले आवऽ, अब तोहरो भगति रही, आ उनहू के भगतो रहि जाइ, तोहके बरदानो दिया जाई, बाई दूध माँगि ले आवऽ गाई के, हहाइ के पंचे संकर जी उठि के तूमड़ी जब लेहले हउवन उठाइ, देवता लोग बइठ गइल सिवाला आ संकर जी लइका कीकगरी घवरलन, जाइके दूध के नांव लेताड़ें, जे ए बबुआ तनी धिआन के तोड़ऽ हो लालन, धिआन के तोड़ऽ, हुई थोड़ा से दूध आनि द ऽ, त अउरी हालो हाली, भगती जमवलन, जब कहताड़ें संकर दानी, त तेतने माला खटखटावत हउवन, ललकार के किरोध हो गइल संकर दानी क ऽ उहै निहुरि के ज्यों झटकारि के मनियाँ तोड़ताड़ें त्यों खुलि गइल नयन। (संकर के)।

कहत बाड़ें जेए संकर आजु अपने इ भगतिया तूं बाड़ऽ बिग ऽ रले,
हमरी भगती में लतवा तूं दीहलऽ हो लगा ऽ इ
कहे आजु तोरि दीहलऽ मनियवां हमारि भगती के,
काहे तुलसी मालवा तोरेइ ला झटेका ऽ रि,
संकर के आजु हर हर न लोरक ज लागलि ए आवे,
उनके धइया लगलुउ कलेजवे में ना बा ऽ बू,
कहलनि जे सहियेइ ना अ बतिया कहले अल्हवा बेल्हा,
आजु बाकी सुनि लेबउ बतिया अरे हमा ऽ र।

गद्य : कहलन जे ए बच्चा आजु जेवना वर के मंगले बाड़ऽ हमरा मुनि लोग हो गइल बा, जे जा दूध ले आवऽ त एही दूध से; ई बीर अवतार लोहें, ओहिजां का कहता संवरू, अरे बबुआ बड़े कहलन जे ई गाइ बान्हल रहलि हा, कहां से उनकर गाइ आइल रहलिहा, ओहिजे जेवनी घरी संकर जी दूध भगवान के भेजलेनि, ई बेसनो जी घरी गाइ सरउंज बोहा में ना रहली स, अ सुनि लेई सभे खेला, संकर जी जब दूध मांगताड़ें त लइका कहता जे अहा—हा !

कहत बा जे ए बाबा केकर जंगलेइ में गइया हम दुहि ए देंई,
अ केकर दूध रउरा के देंईय मों घरेवा ऽ इ,
कहत बा जे देवता उहोइ नाऽ होनियां होइ मीरुता में,
जे दूध मांगे जाईबि गउरा इ न केरिया हो बाजा ऽ ऽ र,
जोई आजु मांगे जाइब जो दूधवा हो गउरा में,

अ गलिया में अहकति आ माई रे हम्मा ऽ ऽ र,
बाबा आजु मयवाइ ना फंसवा में नाहि ए जाईब,
दूध मांगे नाहीं जाइब गजने गउरवे दहवा पा ऽ लि,
चाहे संकर देबि देब ऽ न बरवा तूं बरवा दानी,
चाहे जनि द ऽ कीला गजने गउरवे गढ़े पा ऽ लि,
हमारि अब जपत बाटे मनियवां हो कीलवा में,
बरबसे तोड़ि दीहल ऽ मलवा आरे हमार ।

गद्य : कहत बाड़ें जे केकर हम दूध दूहीं, केकर हम दूहीं बताव ऽ, आ ई फांस ना लागी जे हम गउरा दूध मांगे जाइं, जे हमार माता रोवतिआ, अगर जो हम जाइबि, हम फंसि जाईबि एसे हम नियारा बानीं हम जाइ न सकब, न दूध देईब ।

तब संकर एनियां रोवतई तूमड़िया लेइके पंचे जो ल ऽ बटल,
भोला आजु आईल ज मंदिलवे में ना बा ऽ ऽ इ,
आजु प्रभु जीऊ हंसि हंसि ना पूछत बाड़ें दसीया से,
काहें नीरवा चलत नयनवें से रे बाइ ।

गद्य : कहलन जे का कहीं, दूधो न दिहलस, आ बोलावे के ज मन कइलीं त ऽ, त आउर हाली हाली खटकावे लागल ह ऽ, अ दूधो ना दिहलस ह ऽ, अ कहत बा जे केकर हम बन में गाइ दूही, अ गउरा दूध लेबे हम ना जाइब, हमार माता गलिये में अहकति न बा ऽ माया में फंसावे आइल बाइ ऽ, हंसि के बिस्नू भगवान कहलनि, जे ठीक ह ऽ का झूठ कहले बा, अ कइसे तू गइला ह तुमड़ी लेइके, जे गाय त देखते नइखे, केकर दूध ऊ देहो, अ एही पर किरोध लेइके रोवत आव ताड़ा, अच्छा अब इहै होता इंतिजाम तोहरे, तोहरी भकतीके अब हम ठीक करतानीं जा हमनीं का ।

त ए बबुआ उहे जेतनई देवतवा रहलनि इनवा ऽ ऽ रामन,
आ धरमे के गइया लोग दीहलनि ए बना ऽ ऽ इ,
आजु भइया गइया ई ब ऽ नलि बाड़ी धरएमउती,
जवनि गइया सुरही कहवते ए लोग बा ऽ ऽ इ,
उन्हनीं के चढ़ि गईल ना ओतनीं जौ गईया बाड़ी,
हाँ अपना सत के बछरू लोग दीहल ऽ नि रे बना ऽ इ,
जे गइया के छूटति आटे ना भूंड़िया भइया मंदिले ले,
नाहीं अपना चाटति लररुवे के ना बाइ,

गइया उहै बनि केइ धवलीं बाड़ी सू ऽ धरा पर,
आ जाइके देहिया चाटति धरमिये के ना बा ऽ ऽ इ,
तब लगि एमियां बछरू अ ना मायवा के भइया बा बन ऽ ल,
आ मयवा के नोअड़ा देलनि ना भगे ऽ वा ऽ न,
कहलनि जे मइया लेइकेइ बछरुआ तूं जब चलि न जइबऽ,
लरिका दूधवा दूहि के देईअ ना लेलका ऽ ऽ रि,
एहि आजु सूरहिअ ना दूधवा के देखऽ ना लेके,
आ बीर अब सांचो ए लेलनि ना अवे ऽ ता ऽ र,
एइजां हम देबे चललीं ब बीरवा देखा बरवादानी,
बरम्हा के पूरहरि कलमिये रहि ना जा ऽ ऽ इ,
तोहरो आजु भोला ह ना पनियां के राखि ना दिहले,
आ बीर धरमवा त लेइय ना अवेता ऽ र।
आ हाँऽ हाँऽ
आरे पंचे आजु हिन्नू करि गंगा तुरुक करि गोरि,
भलि कामिनि संग छोड़लू अ मोर,
अब देवी कहाँ गीति बानी गावत, कहाँ अब दिलें परल बिसमोर,
अब देबी जेवना दीन करि पुजलींय, एहिजां घरी गइलि निअराइ,
देबी कहि दऽ कीरतिया मरदानन के, जेकरी देसे बजल तरवार,
सुनऽ बयाने जब जब पंचे, तनि सुन जा ई ध्यान लगाई,
एनियां लड़िका दूहि दिहलनि ना आ गइया देखा धरए मउती,
जेवनि गइया सुरही कहवती ले ना ऽ ऽ बा ऽ इ,
आजु लड़िका संकर जोअ के दूधवा भइया देइ ना देलन,
धरमो दूबि नोचति धरतिये ले ना बा ऽ इ,
धरमी चोंथि चोंथि गइयन के घसिया ज लगलनि खोयावे,
आजु पंचे गइयन के जब सुनबऽ ए बया ऽ ऽ न,
आजु ओइजां रनलिअ स गइया सांचों धरएमउती,
आ दूध दूहि के गईल मंदिलवे में ना बा ऽ ऽ इ,
जहां न ऊ जेतनई देवतवा रहलन इनरासन,
आ तेंतीस कोटि मुनी बईठल मंदिलवे में ना बा ऽ ऽ ई,
आजु संकर ले ले रहलेनि ना अ दूधवा भइया सूरहो के,
अ भोला लेइके ढूकल मंदिलवे में ना बा ऽ इ,
जहां आजु बइठल रहलनि ना प्रभु अ बेसून देआ लू,

ओहिजां आजु बइठल बाड़ँ बेसुनो भगेवा ऽ ऽ न,
जब बबुआ जूमि गइल ना आ दूधवा देबऽ सूरही के,
तनीं आजु अंगवा के सुनबऽ पंचे बया ऽ न।

गायक का आत्म कथन—लोरिकी छापा में खींची जा रही है

कहै लोग घूमि घूमि लोरिकिया लोग बा दूनियां गवँले,
सभे उहे अहीरे के करुवे लोग बया ऽ ऽ र,
ए पंचे तनीं सुनि लेब ऽ ना गनवां हमारि अलवा बेल्हा,
अब गीति छपवे में बाड़ी ना एहिआं घींचा ऽ त,
आजु तनीं सुनि लेब ऽ जा ऽ नमवां साचो सूघरा के,
अब कइसे लोरिक के भइल ह अवेता ऽ ऽ र,
आजू ओहि जां तेइतीसि ना कोटिअ न मुनी हो देवता,
अ संकर का आजु मंदिल में गईल लो बिटुरा ऽ ऽ इ,
आजु उहे प्रेम केइ पतुकिया भइया बनि बा गईल,
आ प्रेम के अगिनी लो दीहलनि ए ल ऽ गा ऽ इ,
आजु भइया धरमे इ के चा ऽ उर जब लागल बन्नै,
सभ धरम उलटत पतुकिये में ना बा ऽ इ,
आजु तनीं सुनि लेब ऽ ब ऽ यनवां सांचो सूघरा के,
ओही जग बीर के दीहल ए जात बा अवेता रे ऽ ऽ र,
सुनलीं जे जेतनाहि ना देवता रहलन इनवारासन,
आ ऽ सभ भइया पतुकी में जा लेलीं न बरेदा ऽ न,
ऊहै आजु दानेइ ना चउरा के हो छुटि रे गइल,
ओनें दूध परत सुरहिये के ना बा ऽ ऽ इ,
सभ देवता लेइ लेइ ना अ लागल लोग भइया मेरावै,
अब लोग हुमचत पतुकिये में ना बाइ,
आजु ओइ जा बनि गइलना, खीरिआ सांचो बरवा दानी,
आ पिंड आजु बनत पतुकिये में ना बा ऽ इ,
जेवनी बेर गइलें न प्रभु न अ देखऽ देआले,
आरचना ऊ रचले हुउवनि ना भगवा ऽ ऽ न,
एही आजु तिरिया न ना जीउवा की बबुआ कारन,
अ दूनियां अ भंसत रहल ना सवेंसार,
जब जब आइल हुउवे ना भीरिया जब ले धरती में,

हरे खातिन बेसुन घरेइलनि भगेवा ऽ ऽ न,
अब पंचे, पाकि गइलि ना खीरिया ओनकर मंदिले में,
अब तनीं बीर के जे सुनब रे बया ऽ न,
आजु तहि देखि लेब ऽ न खेलवा बबुआ सुहवलि के,
नाहीं सांचों ठट्ठे में अब गनवां रे गवा ऽ ऽ इ,

ोरिक के जन्म की भूमिका

ंकर जी के दिये हुए पिण्ड को योगी वेश में संवरू का खोइलनि के पास ले जाना

आजु बबुआ सुनि लेवऽ ना जनम तूं अलवा केल्हा,
अब बीर बर से लीहनि ना अवेताऽऽर,
आजु प्रभु खोरि खोरि ना आ पतुकिआ में लगलन खंखोरे,
आ पिंड एगो बान्हिके ऽ भइल ना तईया ऽ ऽ र,
एने अब बेसुनेइ ना प्रभु जे रहलनि ए देआ ऽ ऽ लू,
ओहीजां अब उठि गइलन सांचो ना भगेवा ऽ ऽ न,
ए संकर दासी तोहके देत बानी ना पींड़वा हो बरवा दानां,
हम तोहार हाथ के देईअला बरेदा ऽ ऽ न,
ईहे आजु पींडवा ना लेइके तूं देइबऽ लड़िका के,
आ लड़िका के देइ के आवइ ना बरेदा ऽ ऽ न,
इहे पींड लरिका इ ना लेइके ऊ जाई रे गउरा,
आ खोइलनि के पिंडे देई ना बरेदा ऽ ऽ न,
एही आजु पिंडवेइ ना सुरसरि में गोता जो मारेऽ
आपन धोति बदलि खोइलनि जो होइहनि ना तईया ऽ र,
जहिया रानी पिडवेइ अहारवा जो कह ना दोह,
ऊ गरमउती होइहनि सुरसरि के निकटे रे अरा ऽ ऽ र ।

ाद्य-पद्य : कहि दीहल लोग, संकर जी के, आ संकर जी जब हाथ के पींड लेइके जब चललन, तब धरमी जहां गाइन के दूबि नोचि के खिआवताड़न, जाइ के कह ताड़न जे हे बबुआ हई ल हई पिंड के बरदान हम देतानीं, लड़िका का कहता—

जे एत्रावा हम एही ना धनबां से पिंडवा जब देबे ना ऽ ऽ
जाइब, आरे माता हमके भयवे देईय ना अक्षुरा ऽ इ ।

ाद्य : का कहले हउवन, आज हम्में ए तन से भेजतानीं पिंड लेके, हम ना जाइबि, कइसे जइबऽ भइया, आ त हम जाइब जे जेवनी बेर केसुन अवतार लेहले रहलन,

अ जोगी बनि के रउवां दरसन गइल रहलीं"
आजु बाबा उहै हमके ना जोगिया तूं हम्में बनाऽ ऽ व ऽ,
आ जोगी बनि के जाइबि ओही गउरा के बा बारि ।
हाँ ऽ हाँ ऽ हाँ
आरे बाकी हिन्नू करि गंगा तुरुक करि गोरि,
भलि कामिलि संग छोड़लू मोर, अब देबीय जेवना दीन कर पूजलींय
तेवन भला धरी हो गइल बेऽ नियराय,
तनीं अब कहिदाऽ कीरति मरदन के
कइसे ऊ सुहवलि के हो गइल पबाऽऽन,
हाँ रे देवी अब कहिदऽ कीरितिया तूं अब सूरवां के,
अब बीर भारथ होई रे तइयार केकर सांन गड़ल दूनियां में,
हाँ रे जेइमे अब भारथ भइल तइयार,
जेवना न दीनवां क बातें आंगे आजु सुनींअ सम्मर के पंचे, हा, ल ।
आजु जेवनी बेर बोलल बेटा बाझिनी के, जेकर माल संवरु ह ऽ नांव,
कहलनहं जे सुनऽ दासी ए दानी मानऽ बाति हमार,
हम पींड लेके जो जाईब माता के देबे,
त माता चीन्ह लेइ बेरो हमार, माया में फँसा देई !
ए बाबा जइसे केसुन के ई जनमवां रहल मी ऽ ऽ रुता में,
आ जोगिअ बनि के दरसन के करेइ न गइलन भगेवा ऽ न,
आजु हमके उहै अब ना अ जोगिया ना एबाबा बनावा ऽ,
जेवना में जनि लखे माया ना रे हमार ऽ ऽ,
संकर दासी कहलेन जे डिगरू खोरि खोरि खोरिनाऽ डाहत बाड़ऽ दूनियां में,
हमार तूं बेड़ा ए डालेइल ऽ बरिया ऽ र,
ए पंचे संकर आपन देबे लगलनि ना ऽ ऽ तनवां देखऽ लड़िका के,
जइसे केसुन संगे मिले अब गइल ना संकर जोगी ए बा ऽ,
आजु भइया फूटि गइल ना जटवा ए सांचो लीलारे,
अब जाटा लोटली बदनियां में ना बा ऽ ऽ इ,
आजु उहै लीलरेइ पर भसमि जो बाड़नि ना रमउले,
भभूती उनकी देहिया भोलाइ ना दीहलनि लगा ऽ ऽ इ,
संकर दासी भयवइ के झूलवा ऊ डालि ना दीहलन,
आ गरवा में संकर डलले दुअलिये ए भइया ना बा इ,
जेकरि आजु संसवइ ना नगवा के रहलि दुआले,

ऊ संकर दानो गरदनि में देलनि ना पहीरा ऽ ऽ इ,
आजु धरमी बनी गइलन ना जोगिया हो अलवा बेल्हा,
आ जेकर झोरी टंगलू बगलिए में ना बा इ,
एक ओरी भांगि केइ घो ऽ करिया भइया झूले जो ला ऽ ऽ गल,
एक ओर गोलवन घतूरवे झूलल ना बा ऽ ऽ इ,
आजु जेवन संकर ना आ केसुनइ ने मीले ना गईलन,
आ ओइसन दासी जोगी लरिका के दीहलनि रे बना ऽ ऽ इ,
जेकरी अ माया गायवइ ऽ रंगिया अब बनि ना गईल,
आंगे पंचे सुनीले ऽ बऽ जनमें खेलवा ऽ ड़,
एही आजु तिरीयइ ना जीउवन की बबुआ कारन,
ई भारथ अब रचि के होतु अ बा तइये ऽ ऽ आर,
ओने आजु गड़ल रहल ना आऽ सनवां देखऽ भीमला के,
जेवनी बेर वेकल भइलन बिसुन आ भगेवा ऽ न,
जेवनी बेर पपवेइ भईल बाड़े ध ऽ रती पर,
जेवना में उठल भूंइडोलवा भइया रे बा ऽ इ,
ओही भारथ खातिर रचल जात बा रचना हो अलवा बेल्हा,
आ संकर जोगी जब दीहलनि रे बना ऽ ऽ इ,
आजु मयवा के बनलि रहलि धो ˜ करिया बबुआ जो ऽ गीया के,
ओही में पीडा दीहल मरदनिये भइया रे बा ऽ ऽ इ,
आरे बाबुआ भरमेइना जइबऽ तूँ भीरुता में
इहे अपना माता के दीहइं ना बरेदा ऽ ऽ न,
कहि दीहऽ जे मारि लेई ना आ गोतवा जब सूरसरि में,
आ कुल्ला मज्जन कइ के होइहनि ना तइयेया ऽ ऽ र,
अरे ओही गंगई लीकठवे पर अल्हवा बेल्हा,
अ रनियाँ जु रचि के होई जो तईया ऽ र,
हाँ हो लालन उहे देई दीहऽ, ना पीडवा हो वरवादानी,
अपना रानी पीडवन में करिहै रे अहा ऽ ऽ र,
जहिया रानी पींडवइ अहरवा जो कइ ना घलिहैं,
ओही गंगा तट पर होइहनि ना गरएभवती ऽ ऽ,
ओही जागो रनियाँ त होई ना गरएभवती,
आ बांझिनी के छूटि जाई ना ऽ तनवाँ हो लेलका ऽ ऽ र,

कमण्डल, चिमटा, मृगछाला आदि लेकर
योगी वेश में संवरू का गउरा में आगमन

आजु भइया लेके दासी बाड़ें बनवले,
आरे जोगिया अब बनि ए गइलनि लेलकार, हथवा के ले लनि कमंडल,
आरे जोगी भइया संड़सा जो लेलनि रे उठाइ, कंखिया तर लेके मिरिगछाला,
अब बीर चलल गउरवे में बा ऽ ऽ इ, पुरुबे जब लोही भइया लागल,
अरे पछिमे जो सायर भइल बा उजियार कउवा जब टेरवा उठावल ऽ,
ओने नीनि टूटल खोइलनि के बा ऽ इ,
कूंचवा बाढ़नि बा रानीं लेले,
आपन झारै चलल बखरिया के वा ऽ ऽ इ,
जेवन रानी हथवा के बढ़नी उठावल,
आरे तब लगि जोगिया ऊ जूमि गईल दूव ऽ रवे पर पंचे न बाइ।

गद्य : अब जेंव खोइलनि बाढ़नि पिरिथवी पर डालति हुई तेंव जोगी जे मनावल, का मनवलन—

कहलन जे आजु जय जय ना हाँ जोगिया भइया जय मना ऽ बल,
रानीं सोचि के बाढ़नि बींगल अंगना ले,
कहति बा जे एक बेर केवनीय क ऽ मइया में मों चुकि रे गइलीं,
आ ऊ मिरुता में बांझिन भइलि देहिया आरे हमा ऽ र,
आजु हमरी जोगिये दु ऽ अरवां में जो फिरि न जइहैं,
हमरा के उलटा पापइ न होइ ना जा ऽ ऽ इ,
आजु रनियां मारि दिहलीं ना हेलवा बबुआ बखरी में,
चाउर उहे काढ़ति बसमतिये के न बा ऽ इ,
खोइलनि एगो मूंगवइ के दलिया है लेइ ना लेले,
अ भीछा देवे चललि जोगिय के भइया बा ऽ ऽ इ।

संवरू का बन्ध्या खोइलनि की भिक्षा अस्वीकार कर देना

गद्य-पद्य : जेंव भीछा लेके रानी जुमतियाड़ी, तब ले परि गइल नजर जोगी के।
आरे जोगिया ऊ पांच ए कदम हटि जाइ,
आरे अब बांझिन के भीछा त नाहीं लेइबि,
नाहीं एहजां लेइब हम भीछवा तोहार,
अब मइया रोवेलीं रानीं हो अलबेलहा,
हाँ रनियां उहै लोटि गईल ध ऽ रतिया में दइबा रे बा ऽ इ।

गद्य : जोगी कहले हउवन, जे हम बांझिन के भोछा ना लेईबि, अ ए भले बांझिनी के दुआर पर हमार जे घूमि गईल, ए पंचे जब एतना ऊ जोगी कहले हउवन, त रानी के घाव करेजा लागल, झूकि के कहलनि जे हाय, ए जोगी आजु हम अपनीं अधीन के कहतानीं, ठीक कहताड़ ऽ, हमार झूकि गईल कमाई एक समै में, ए समैं में बांझिन भइलीं ।

बाकी एगो बिधवा पवले रहली लड़िकवा, एही ग ऽ ड़ही में ऽ
आ ऽ तउला में ऊ बीगल गउरवे में ना ऽ बा ऽ इ,
ओ बचवा के लेके हम अलबतियाँ इ ना बनल रहलीं गउरा में,
अ दूनियां कहल जे बांझिलि कोखिया पलटलि भगेवा ऽ ऽ न,
ओ बचवा के ओबति चोवति ना गोड़वा रहली उनकरि ए मलति,
केतनो मीमोरि के गोड़वा धरत धरतिया आ ऽ नाहि रे बा ऽ इ,
बबुआ हमार दू चारिय बरिसवा झूललनि पलंगे पर,
नाहिय लात डालत धरतिया में ना बा ऽ ऽ इ,
आरे बाकी एक दिन बारै गइलीं ना आ अगिया अपना चूल्हिया में,
डंफु एने डूबलू सुरुजवे के ना बा ऽ ऽ इ,
ओही सम्मे में पलँगे पर गायबइ ललनवा मोर होइ ना गइलन,
तहिया ले रतिया दिनवां अहकति बा बयवा रे हमा ऽ र ।

सुरसरि में गोता लगाकर योगी से खाइलनि का पिंड लेना

गद्य : रानी अपनी वियोग के कहताड़ी, त जोगी बोलताड़न जे हाय ए माता ऊठ ऽ आ हे माता ऊठ ऽ, ऊ जोगी तूं जनि जान ऽ अब हम तोहके बर के देतानीं, अ ऊठि के हमरी बरदान के ल ऽ ।

आरे माता हमार अजुवे ले बझिनी के नइयां छूटी,
आजु पिंडा लेइ के देइबि न बरेदा ऽ न,
काल्हि तूंही मारि दीह ऽ न ऽ आ गोतवा ए सूरसरि में ऽ,
आ कुल्ला मंजन कइ के होइहऽ ना तईया ऽ र,
हां हो माता गंगा आ नीकठवा पर धोती बदलिह ऽ
ओही नीकठ पर जो पिंडवा में करबू ना आहा ऽ ऽ र,
माता हमारि ओही जग ना होइ जाबू गरएभवती,
अ बांझिन आजु छूटि जाई ना नइयां हो तोहा ऽ ऽ र,
जहिया तोहरी गोदियाइ ब ऽ लकवा जो जामि ना जइहैं,

तहियें माता निहचै लेइब न भींछवा ए तोहा ऽ ऽ र,
तहिया आजु सूनि लेईं बयनवा लोरिकिया के,
आ बाबा आ थोड़किय गाना में बा फरक ना हम्मा ऽ ऽ र,
जहिया आजु एतनइ ना बतिया जो जोगिया ए ऽ कहलं,
ऊ भीछवा आइके पहले बाड़ो ना रनियें ऽ ऽ आ।
आजु एनियां लेइ लेइ ना अंचरे में बाड़ी बीनवले,
ओहि में लड़िका पींड के देलेइ ह बरेदा ऽ न,
हमार माता जहिया इ ना होइबू तूं गरएभवती,
जहिया बीर कोखी में लिहनि ना अवयेता ऽ ऽ र,
तहियें तोहार ले लेइबि ना भीछवा हम गउरा में,
आजु नाहीं लेइब ना अब भीछवा हो तोहार ऽ र।

शंकर के वरदान से लोरिक का अवतार लेना

हाँ, हाँ ऽ ऽ हाँ
पंचे, अब जाहीय दीन कर बातेह्, तनीं अब सुन ऽ समर के ऽ हा ऽ लि,
अब तनीं सुनि ल ऽ बयान, सांचो ए सुरुवां के,
पींड देबे गईल गउरवा में बा ऽ ऽ इ,
अब तनी बबुआ सुनि ल ऽ जनमवां सांचो ए बीरवे के,
जेवन बरदानो लेलनि अवता ऽ र,
एनें भइया गइल रहल सान भीमला के,
ओही आजु मोती सगड़ की घाट,
त ए ऽ बबुआ गायन लोग सोझिये इ डहरिया पउलनि सु ऽ हव ऽ लि के,
आ गाना लपकि के लोग गावत सुहवलि के ना ऽ वा ऽ इ,
बाकी आजु कठिन हउवे ना गानवां वबुआ सुहव ऽ लि के,
केहू के बूतवे कहइ लो नाहीं न बा ऽ इ,
अब बीर अहीरेइ न अहीरे बा लोरकी ना गाव ऽ ल,
आ एइजां तनीं जनम के सुनब ऽ जा बया ऽ न,
अब भइया घरमेइ के पिंडवा न रहल बनाव ऽ ल,
आ बरदानी आजु संकर के मिलल बा लेलाका ऽ ऽ र,
संकर आजु देले बाड़नि ना दानवां भइया लड़िका के ऽ,
आ दूलर अपना लेके जूमल भयनवे किहें ना बा ऽ इ,
आजु रानीं लेइ लेइ ना अंचरन हई पसरले,

ओही जा के गजने गउरवे गढ़वा पा ऽ लि,
ऊहे जोगी देत बाड़नि ना पिंडवा भइया अंचरा में,
आ मयना आजु जतन करिहं थतियो रे हमा ऽ र,
जब एहिजां उगे लागलि ना डंफुवे जो सुरुजे के,
आ दीनवां जो पिंडवे में करबू रे अहा ऽ र,
हमार आजु गंदाई ना पिंडवा ऊ होइ रे जइहैं,
नाहीं आजु किला मे होइबू न रनिवा ऽ ऽ स,
आरे भाई कालिह पूरुबेइ ना लागी जाइ रनवां लोही,
आ पछिवे में सायर होइ ना उजिया ऽ र,
हां हो मयना लोटवइ ना धोतिया हमार ले तूं लीहऽ,
आ चली जइहऽ सुरसरि के निकठे रे अरा ऽ र,
आजु माता कुलवइ ना अ दतुअन तूं रचि के करिह ऽ,
अ पिंड से तूं बहुत रहिहइ ना खबरदा ऽ र,
हां हो मयनां तनिकइ जो पिंडवा ऊ झरि ना जइहैं,
नाहीं तोहार पूरन करिहनि ना भगेवा ऽ न,
अब जोगी देइकेइ ना पिंड़वा ऊ अलहवा बेल्हा,
आपन ना जो माता के देलनि ना समुझा ऽ इ,
हां हो मयना सूरसरि नीकठवा पर धोती बदलिह ऽ,
उहै अपना पिंड में जो करिह ऽ ना आहा ऽ र,
अरे मयना ओही सुरसरि के ऽ वरवा पर होइबू गर भवती,
ओही जां जो बाँझिन छूटि जाई नइयां हो तोहा ऽ र,
जेहिया तोहरा तन सेइ ब ऽ लकवा जो जगि न जइहैं,
अब पठा गउरा में लीहनि ना अवेता ऽ ऽ र,
जहिया आजु बजि जाइ ना थरिया जो गढ़वा गउरा,
हमरा जा बन में सबदिया आ परि ना जा ऽ ऽ इ,
हां हो मयना छोड़ि देइब ना डेरवा हम अलवा बेल्हा,
आ भोरे जूमबि तोहरे न पवने रे दुआ ऽ र,
ओही घरी नेइ लेइबि ना भिछवा ऊ अलवा बेल्हा,
आ बीर के अब दरसन करबि ना लेलका ऽ र,
देखीं जे हमार झूठेइ जाबनियां जो अब चलि ना जाई,
नाहीं जोगी नीचे परी नइयां अरे हमा ऽ र,
हां हो दूलर दइ देहलनि ना पिंडवा ऊ अलवा बेल्हा,

आ पंचे तनीं पिंड के सुनइ जा आ खेलवा ऽ इ,
अरे रनियां लेइके इ अंचरवा में ऊ ढुलकि ना गइलीं,
आ जोगी आपन पंयड़ा लेलनि ना सुधिया ऽ ऽ इ,
ऊ जोगी आजु संकर का डेरवा में जो चलि न गइलन,
आ उनकर माया उतरल आ मंदिलवे में ऽ ना बा ऽ इ,
आरे जहिया दूलर संकर का ई धियनवां में ना बाड़नि ए परल,
ऊ गईयन का माया में परेइलं लेलका ऽ र.
सुनलीं जे चोंथि चोंथि ना दूबिया रे भइया खीयउलं,
जेकर दखल संरउजि ना बोहवा हो मंझाऽऽरि,
उहै उनके मिललि रहल ना गइया सुनऽ बरवादानी,
आ गइया लोग बढ़ल सरउजें में ना बा ऽ इ,
एनें अब बढ़े लगली ना बयना भइया धरमी के,
जेवन दुअर सेवा करत माताइ ना गऊ के बा ऽ इ,
ए बबुआ आजु घूमि घूमि ना आ गनवाँ बाड़ें फई ऽ लाव,
तनीं आजु सुहवलि के सुनब ऽ ए बया ऽ ऽ न,
ई आजु खरादे के खातिर मसीनवां भइया चलि बा आईल,
एही बेरि गाना के चलीय ऽ ना पहेचा ऽ न,
आजु भइया जेवनीय ड ऽ डहरिया लो धइ के चलल,
केवनों जना तिरीसे देलाइ लो पहुँएचा ऽ इ,
आजु भइया सुनि लेवऽ जा गनवां मोर अल्हवा बेल्हा,
पंचे आजु मेंड़रु बइठलु एइजाँ ना बा ऽ इ,
आजु लड़िका देइके इ ना पिंडवा जब चलि ना अइलं,
अपनी गाई माया में गइलनि ना आ अझुराय,
ओघरी दुरबल रहल ना दिनवां देखब ऽ बुढ़ऊ के,
जेकर बुढ़कूबे ना परलि हन सांचो ए गा ऽ इ,
ऊहे आजु सहदेव के बरघी ए बबुआ चरवलं,
आ संझिया खानि मांगि के बियरिया घरवा खा ऽ इ,
बाकी आजु सुनि लेबऽ ना खेलवा ऊ अलवा बेल्हा,
कइसे गइया उनकरि बढ़लु सरउंजे में ना बा ऽ इ,
गायन लोग जेकरा गाये के ह ठे ऽ कनवा खाये के नाहीं रहल,
उनकर कइसे धनवां ओल्हल गउरवा में ना बा ऽ इ,
तनीं अब देखि लेबऽ ना आ खेलवा तू अल्हवा बेल्हा,

ई गानां में ऊ रचना के रचेइलनि भगेवा ऽ न,

टेपरिकार्डर मशीन का उल्लेख

आजु इहे लेइ लेइना छापवा ए भइया उतरिहें,
सबकर गान के बोजनि देइबी ना टनेवा ऽ य,
आजु सही देखबइ जा खेलवा मोर अल्हवा बेल्हा,
आ पंचे गाइ के गाना अब दिहलीं रे सुनाइ,
तनीं अब सुनि लेबऽ गवइया पचे अलवा बेल्हा,
आ खोइलनि रनियाँ दिनभर जतन करतु थातिय के अपना बाऽऽइ।

गद्य : ह ह, जबसे पंचे, पिण्ड के रानी जब पवले हवीं, तब ओ पिण्ड के लेइके अ दिन्नभर रानी जतन कइले हऽ, ए पंचे, जब डफ सुरुज के डूबलि, आ घर घर जब दियालेसान होता, ओ टेम में रानीं अपनी गढ़ि में दीपक बारि देलो ठीक, बाकी अपने चूल्हि में आगि ना बरले हऽ एही बोच में बूढ़कू बे जब जुमलं, त भर दिन भइया बरघो चरवले रहलं अ उनका किछु भूखि जारी रहल, आ जब चूल्हि के और तिकवलनि त आगोना बारल रहल।

कहत बाड़े काहें, बुजरो काहे नइखे बरले तूँ अगिया चूल्हिया ऽ ऽ में,
कब रनियाँ बिजन तूँ करबू तइरेया ऽ रि,
खोइलनि अब अंचरेइ में आ पिण्डवा बान्हि रहलि ले घलले,
आजु जल लेलछिया गडुववा में बबुवा बा ऽ ऽ इ,
कहति बा जे सइयां इ ना मुरतिया हो नारायन,
काहे थोरे थरियइ में गइलऽ तूँ अंउरेजाइ,
आजु तोहके अइसन नां आ खानवां ए तोहक देखाई,
ऊ देखला से भरि जाई ना पेटवा हो तोहा ऽ ऽ र।

गद्य : रानी कहतिया ऽ खोइलनि, जे है पतो काहें किरोध तूँ लेले बाड़ऽ लोटा में जल लऽ आ गोड़ हाथ धोवऽ आवऽ बइठ ऽ, आजु तोहके इहै खाना हम खिवातानीं, जे ओ खाना से तोहार सरीर अनन्न रही, कहत बा बूढ़कूबे जे ए भाई हमरे के ई सनकी बनवले बा, कि अपने सनकलि बाइ रसोई भइली नइखीं, आकहतिया जे अइसन हम खाना खिआय देबि, जे जनम भर ना खइले होखब, आ भूखि ना लागी। गोड़ हाथ धोइ के बूढ़कूबे आ रचि के जाइ के कहता ऊ नाहीं आजु बइठऽ पलंग पर, आजु बिजन एही पर तोके हम देईबि।

सुनीलऽ जे बूढ़कूबे ओनियाँ जाइ केइ आ पालानवा पर बा बइठि रे
गई ऽ ल, आ रनिया पिण्डवा खोलतु अंचरवे से ना बाइ।

गद्य-पद्य : का कहति आ, कहतिबा देखऽ सइयां मुरति नारायन, अब धन सेन्हुर के लागऽ ताड़ मोवार, एगो भोरे में जोगी जिमुवन, हमरा के पिण्ड दे गइलन बरदान, काहें, आ त देखऽ ए पिण्ड के जब खाइबि त हम गरभउती होइब, सुरसरि का तीरे। जब एतना बूढ़कूबे जब भइया बयान के सुनताड़न।

कहत बा जे ए रनिया तूं आजु हमके अइसनि ना ऽ
आ बतिवा तूं बाड़ सुन ऽ ऽ वले,
जेवना में भरि गइल पेटवा रे हमा ऽ ऽ र,
दूनों खनी रिजुवर ना आ पिण्डवा के बाड़ंनि अगोरत,
हर घरी पिण्डवे पर रहलनि रे धियान।

गद्य-पद्य : आजु भइया दूनों प्रानी बइठि के आ पिण्ड पर दीठि बाड़ें लगवले, पिण्ड के जतन कइके आ अगोरि के लोग भइया बइठल भइया किला में बाड़, तब तक पुरुवे लगल रहल लोहित।

आरे पछित्र गइल उजिया ऽ र, कउवा जब टेरवा उठावल,
हां अब पह फूटति दुनियावं के बाय, बोलत बाड़ी रानीं बूढ़ खोइलन,
हां हो सइयां मानि जइबऽ बतिया हमार,
तूं ही आजु अपनी नोकरिया पर जइबऽ
हम जाइबि अब सुरसरि का निकठे हो अड़ा ऽ ऽ र।

गद्य : आजु भइया पहिला लोही में सुनीलऽ जे मांजरि पिण्ड लेके दतुवन धोती लेके हाथ के लोटा लेली लगाइ आ दे दिहलस सिकड़ी भइया बखरी के, रानी सुरसरि के कइ देहलस पयान।

सुनिलऽ जे इहै आजु बूढ़ियई ना अ रहलीं ए बुढ़िया ए खोइल नि,
आ पिंडवा के रानी आजु बरेले धबिनिये ना बाइ,
ऊ दूनों रनियां रोज रोज न अ संगही बाड़ी नहइले,
आ सखी के नतवा परल गउरवे में ना बाइ,
एनें जब सुरसरि निकठवा पर गइल बा खोइलनि,
तलक धोबिन जूमली खोइलनी का दुआर,
कहति बा जे आजु फाटि गइल ना पाहवा हो मेरुता में,
तोहारि निनिया टूटलु गउरवे नाहीं रे बाइ,
जो लह बीर खोलि देबू न डंड़वा तूं अलवाबेल्हा,
चल सखी चलीं सुरसरि निकठबे रे आरा ऽ र,
ए बबुआ ऊहै दूचारि हाला न धोबिनी ना जो बाटे पुकारत,
नाहीं रानी बोलतु बखरिये में ना बाई।

आजु भइया जब ना बोललि ह बखरी में,
धोबिन के नजरि गइल फाटक पर बाड़, देखे त ईत सिकड़ी चढ़ावल बाड़ ।
सुनीलऽ जे धोबिनिउ काछे लगलि अ कछनिया भइया गउरा ऽ में,
आ तनीं अब घींचि के बान्हति बा ठनेहाऽऽरि,
कीत बुला सखीया ना आ किछु पवले बाड़ी दुनियां में,
तबे धोखवा से गइल सुरसरि का निकठे हो अरा ऽ र,
आजु हतके अचरज ना लउकल बा दादा कु अचरज,
आ रोज रोज संगहो ना रहलीं जा नहा ऽ त,
उहै धोबिन काछि केइ कछनियां जो अलवाबेल्हा,
आ अंचरे बान्हत बा सीना इ ना लेलका ऽ र,
आजु रनियां दाबि लेले एंड़वा हो गढ़ए गउरा,
आ ऊहै आज फानलि ह बेयालिस न भइया ना हाथ ।
जइसे एक बेर माधावइ में हरनी लो पिन्हिनाकल,
जेवन आजु चरले ना हउई रे केरा ऽ ऽ ब,
ओङो अब फानति चलत धोबिनियाउ अल्हवा ए बेल्हा,
अब चललि सुरसरि का नीकठे ना अरा ऽ ऽ र,
ओने खोइलनि मरले रहलि ना अ सोतवा भइया सुरसरि में,
आ धोतिय वदलि के अब नीकठ पर भइलि बा तइया ऽ ऽ र,
जेव रनिया खोलतियाटे ना अ पिंडवा जो अलवाबेल्हा,
अपना जो पिण्डवे में करे ना चललि आहा ऽ रि,
तलक धोबिन लमवा ले देति बाटे किरियवा ए खोइलनि के,
हाँ हो सखी दगवा कइलू ना बरिया ऽ ऽ र,
आजु जोइ हमराइ से करबू तू दादा बलेदानी,
आ तूं ही मारऽ कऽयरे कपिलवा धेनु रे गा ऽ ऽ इ,
जेवनी खातिर छोड़ि केइ ना आ अइलू तूं गउरा में,
ओइमें अब आधा लागल सखी हिसवा रे हमा ऽ ऽ र ।
ए पंचे, अब कहीं, आं हाँ ऽ हाँ ऽ ऽ हाँ आरे पंचे अब जाहिय दिनन कर बातें,
तनीं अब सुनीं बीरन के खेलवा ऽ ड़,
सुनि लेबऽ पाडा अब जनमउतीय आंगे जो लोरिके के करींलऽ बयान,
जेवनी बेर जुमलि नारि घोबिया के,
आरे रानीं पिण्ड क करे जब चललि हो अहार,
अइसन किरियवा धोबिन देइ देले;

आरे रानीं अब सुरसरि परगइल बा कठुवाइ,
कहेले जे आह मोरे दइब नारायन, काहि बिधि उगलि देलऽ हो करतार,
जो ई बरदानि खाइबि पेटवा में, गाई मरला हतया होई रे बड़ियार,
का जाने केवन बाटे गुन पिण्डा में, केवन अगुन एमें परल बड़ियार,
सखी हमार धीरिजा न धरि के सुन ऽ आव ऽ,
अरे लेइ के ढूकि जइबऽ सुरसरि नीकठ, आरार,
आ हाँ हो सखी कुलवा मंजनियाँ करत घटिया पर,
अरे जनि तोहार जिउवा जाई रे घड़बड़ा ऽ ऽ इ,
तनीं अब मारि लऽ गोता न सुरसरि में,
हाँ हो सखी रचि के करऽ न असनान,,
तनीं आ के सखी धोतिया बदलऽ,
अरे दूनों रानी संगहीं न करीं जा आहा ऽ र,
पंचे अब सुनि लऽ खेला न रघुबर के,
जेवन रचना ऊ रचले बाड़नि ए भगवान,
अब जूमि गयल सनजोग घटिवा पर,
आरे पंचे, तनीं अब अंगवा लिखनिय के ए सुनबऽ ना बया ऽऽ न,
तनीं अब सुनि लेबऽ जा आ नामवाँ भइया सुघरा के,
लोरिका लोग गावले लोरकिया लेलका ऽ रि,
समे आजु झुठोकेइ गायनवाँ लोग सुहवल जाला,
ऊहे गितिया अंगवा परेइ ले पटेसाऽऽर,
बाकी आजु कठिन हउवे ना अ गानवाँ साचे अलवाबेल्हा,
ई भारथ जेवन गड़ल सुहवली में नाबा ऽ इ,
जेवनीय बेर गड़ल रहल ना अ सनवां भइया मरदा के,
ओही खातिर भारत होतीय बा तइया ऽ ऽ र,
जेवनी बेरि धोबिन रची रचीना अ दतुवन ए रनियां करे,
आ कुला मंजन कइले सुरसरी की हैं ना बा ऽ इ,
धोबिन आजु मारतियाटे ना आ गोतवा ऊ अलवा बेल्हा,
अबहीं ओकरि आधिय अंगी ना रहल रे उघारि,
आजु रनिया के आधाइ गतरिया बा बुड़ि रे गईल,
आधा अबहीं परली निखहरे में ना बाऽऽइ,
ऊ जाके आपन लेइकेइ ना ऊ धोतिया ए भइया बदललि,
आ पिण्ड आजु मंगले रनिया से ओइजां ना बाइ ।

हे सखी, हमरा के दे द ऽ डालि के,
काहे खातिर चोरी कइलू हा दा दा ऽ,
अब पंचे, खोइलनि सोचे कि हाय भगवान,
का जाने का गुन अवगुन बाटे, त हम हीसा लगावतानी
त तीन गो ए भइया, तीन जनम बाटे,
आ पिण्ड जेवन बाटे से रानी, खोइलनि, तोरि के आधा ले ढेर लिहलसि।
सुनींलऽ जे जब धोबिन पवलसि पिण्डवा हो सुरसरि ऽ पर,
आ रनियां, गप देने पिण्डवा के कइलसि ए आ हा ऽ र,
खोइलनि एनियां पाछेइ ना पिण्डवा ना भूखवा में डाललि,
एतने ऊ लड़िकन के फरक गउरा ना बा ऽ ऽ इ,
धोबिनि आजु अगिनिनऽछतर भइल गरवाभउती,
अ पछिला में पारल लोरिक हऽ पहलवाऽऽन,
पंचे, आजु एकहिय ना पिण्डवा में अलबा बेल्हा,
अ दूइ खंड भइले इ सुरसरी ना कीहें रे बाइ।

गद्य : दू खंडा ए बबुआ, एक बल से दू बीर होइ गइलें, दू बीर जब होइ गइलें त दूनों रानीं गरभउती न हो गइलीं स, अब रानी के पूरन हो गईल, सुरसर ले जे घरे गइलीस, आ धरमी बाड़े से नोचि नोचि गाइ न के दूबि खियावत बाड़ें बहुत सेवा अनन से करत बाड़ें, एनें गाइ रहली स धरमउती, आ सुरु कइ ली, स, आजु भइया सुनिलऽ बयान गाइन के, आ लेके सरउंज बोह मझारि।

आजु भइया बढ़े लगलीं गाइ अलबेल्हा,
आ पिण्डवा में लरिका गरभ परि जा ऽ इ,
तनी अब सुनिलऽ बयान अलबेल्हा, एहिजा अब सुनि लेबऽ गाना रे हमार,
जेहिया अब रानिय भइलीं ना गरभउतीय,
ओही नगर गउरा न केरी रे बजा ऽ ऽ र,
एनें अब बढ़े लागल गाइ सुरुवां के,
जवन गाइ मिललि बाड़ी ना बरेदा ऽ न,
इहै अब लमहर बोहा बा मिलि गईल,
गइया जो लमको संउरुवे के बा ऽ ऽ इ,
धरमिय खनल अखाड़ा अलबेल्हा, ओही जाके संसड़ोय बोहवा मंझार;
उनुका के देव ना बनल बा मंदिले के,
जेबन संकर देले ए हुउवनि बरेदा ऽ न,

जेवन भइया बनल बा देवल बोहवा में,
तनकिय देखिहऽ जा नयनरे पसार,
ओहो आगों ऽ धरमी के खनल ह अखाड़ा
अब तनीं धरमीं के सुनऽ ए बयाऽ न,
ऊहे अब सात फेड़ पकड़ो लगवलं, सात फेड़ पीपर देलन हो गड़वाइ,
धरमिय सात गो न फेड़ बरखत के,
अब बीर बोहवा में देलन हो लगाऽऽइ,
अब इहै ऊगल बगल हर संकरिय, संकर बनल मंदिलवा हो बाइ,
जेकरा ऊ बीचवे न खनल बा अखाड़ा, धरमिय मेहनत करे हो लेलकाऽ र,
तनीं अब सुनलिऽ बयान लोरिकी के,
अब भइया अंगवा के सुनऽ ना बयाऽ न,
आ तवलक एनियां होलीं स गरभउतीय,
अब गरभ निगीचे गइल हो निअराऽ य,
सुनलीं जे अठवें महिन्ना गरभे में,
आ नउवाँ में दूनों बीर के गउरइ भइल बा अवेताऽ ऽ र,
आजु भइया बाजि गइल ना धरिया जो अलवा बेल्हा,
ऊ धरमी के बोहवा सबदिया परि ना जाऽऽइ,
बीर कहता जे बुला खुलि गइल ना तड़िया भइया बरम्हा के,
आरे गऊरा में आ गईल ना जोड़िया रे हमाऽ र,
ए बाबा अब एहिजां तु मऽ सिनवा तूं जारी ए करऽ,
अब इहै बन होता गनवों रें हमाऽ र।
आरे पंचे जहिय दीन करि बातें, आगें सुनऽ समर कर हाऽ लि,
आरे पंचेइ सुनऽ पंवारा, अब अलबेल्हा, भारत काहें भइल तइयार,
गढ़ि गइल सान सांचो भीमला के आरे डंका जो बाजल रहल संवसार,
जेवनी बेर तिरिया जोगीनिया बनलि सागड़ से,
अब भुंइ डोल उठल लेलकाऽ ऽ र,
हलचल में देवता लो परि गईल, रचना उ, रचै अइलन हो भगवान।
आजु पंचे हाँ, हाँ, हा अब हिनु करि गंगा तुरूक करि गोरि,
भलि कामिनि संग छोड़लुअ मोर, अब देबी कहाँ गीति बानीं गावत,
अब कहाँ दिल ए परल बिसमोर,
अब देबी जेवना दीन कर पुजलींय तेवन घरी गइल निअराइ,
आजु कहि दऽ किरितिया मरदानन के, कइसे बीर के भइल अवतार,

अब देबिय जेवना दीन कर पुजलीं, हर घरी भजलीं नइयां तोहार ।

लोरिक का जन्म और छठिहार का उत्सव

ए पंचे, अब सुनि ले बऽ ना खेलवा ओइजां गउरा के,
जेवनी बेर बीर के भइल बा अवेता ऽ ऽ र,
एनें आजु बढ़े लागल ना धनवां अलवाबेल्हा,
जहिया अब बीर के भइल ना अवयेता ऽ ऽ र,
खोइलनि कहति बा जे संइयइं ना मुरति हो नाराऽऽयन,
हमरा अब सेन्हुरे के लगलऽ ए मवा ऽ र,
हमार आजु गउरा इ में भइलनि ए दस ए नहना,
इहै सउरी निकड़ि गइल बयवा रे हमा ऽ र,
तनीं आजु सोरह सैना घरवा हो जदुएवंसी,
जेवन आजु झारि के बसलि बा अहिरा ऽ ऽ न,
सइयाँ हमार ठानि देबऽ छठिहरवा रे बबुआ ऽ के,
आघइ के हथवा दुअरे पर थाले के ए भइया धोवाइ,,

गद्य : कहत बा जे ए रानी छठिहार के बयान कइके ए भइया, आ सतनहना आपन कइके सउरी से पवित्तर होइ के, अब रानी छठिहार के दिन ले जाई ।

सुनीलंऽ जे बूड़कूवे घइ लेइ डगरिया चलि वाड़न रे ग ऽ ऽ ईल,
चलि गइलन कुसुमइ ना पुरवा हो बाजा ऽ रि,
पंचे ऊँचवा लागलि रहलि ना गदिया देखबऽ स ऽ हदेव के,
नीचवां ऊ धरम देखत बा अनियेया ऽ व,
बूढ़ कूबे कहलनि जे ठकुरइना हमारा तूं अलवा बेल्हा,
जेवन आजु लागेलऽ तू ठाकुरे ना हमा ऽ ऽ र,
आजु हमरा लखरिय में खुसिया त भई ना ग ऽ ईल,
अ लालनि हमरी बुन से लेलई बाआ अवेता ऽ र,
हमार आजु रनियाँ सउरिया में निकलि बा गईल,
बचवा के मोरि परि गइल बा छठिहा ऽ र,
तनीं ठाकुर बजा देबऽ ना डुगिया तूं अलवा बेल्हा,
आ गलीय सहनइये के देबइ ना बजवाऽऽइ,
जेवन आजु सोरहसइ न घरवा ऊ जदुरेबंसी,
हमरा ऊ दुवरे पर होइतन ए बोटो ऽ ऽ र,
हमरा आजु बियहीय का हुलस बा उठि रे गईल,

जे पंचे धइके हथवा देइबि ना रे धोवाइ ।

गद्य : ,'ए पंचे खोइलनि के बयान जब जाइ के कहत बाड़ें बुढ़कूबे, त मन दूना हो गइल, कहलसि जे बाह पठा अइसन तुं बाते सुनवले, जे जान ऽ हमार अदभूत रूप हो गईल, चलि जा अपनी देउढ़ी पर, अपनी डेवढ़ी पर, अब हम डुग्गी बजावतानीं ।

हाँ, हाँ हाँ
एनिया बोलुवे राजाइ ना सहरेदेउवा,
ओहि आजु कुसुमइ ना पुरवा रे हो बजा ऽ र,
इहै अब चमरा बोलवलन कुसुमापुर,
चमरा मनब ऽ न बतिया रे हमा ऽ र,
तनीं अब गरवा में डलब ऽ सहना ऽ ई,
डुग्गी किलवा देब ऽ ना फेरवाइ,
जेवन भईल लड़िकवा बूढ़कूबे का, हुलस उठल गउरवा में बा ऽ इ,
इहै आजु लागल ललसवा बचवा का, जेवन कुल ए हउवन ना खानेदा ऽ न,
इहै अब करी छठियार अलबेल्हा,
आरे हम कल्हियां ओही उनका दुआरेइ पर आ जइहऽ जा बेटुरेरा ऽ इ,

गद्य : आजु भइया बाजि गइल ताल सहदेव के, डुग्गी देले हउवें पिटवा ऽ इ जे भइया पहर भर दिन जब बाटे, तब सोरह से घर जदुबंसी झारि के बसल रहल अहिरा ऽ नि, जेतना भइया घर अहीर लोग बाटे आ सभ चलि गइलबा बूढ़ कूबे का पवन दुआर, आजु लागि गइल गादी सहदेव के, दुअरा पर मोढ़ा देले रहल लगाइ, अपने भइया बइठि गइल बाटे मोढ़ा पर, आ बूढ़कूबे गर में कफन डालि के दसो नहन ललकार ।

कहत बा जे ए पंचे ऽ एगो आजु खुलि गईल ना अ भगिया सांचो रघुबर के,
आजुव दूलर हमरी तिरिया क ऽ कोखिया में अवयेतार,
आजु हमार आजु लागल बाड़नि ला ऽ लसवा सांचो अलवाबेल्हा,
आ पंचे दुअरो धोइ लेत ऽ गोड़वा आ लेलइकार,
तनी अब सभइ भइयवा जो मोरि जूठन गिरइत ऽ,
हमरी क बियही क लालसा लगलि बा बड़िया ऽ र ।
आजु तनीं सुनि लेबा ब ऽ यनवां भइया गउरा के,
आ जेवनी बेर लोरिक के परल बा छठिहां ऽ र,
जेवनी बेर आजु ना आमलवा मोर अलवाबेल्हा,

आ धरमी के दूनवां करेजवा भइल ना बा इ,
कहति बा जे माई आंगवाई के पुनिया में लतवा डालल,
बुला साचो सिरजल बाड़ेंनि जोड़ियो रे हमा ऽ ऽ रि।

गद्य : कहत बाटे धरमी जे धनि हे माता, अद्‌बुद हो गइल बाड़ी, हो भइया जवनी बेर सुनि लेब ऽ बथानि खोइलनि के।

हां रे रतिया के करे न चललि रे छठिहा ऽ र,
अब भइया सुनिल ऽ बयान अलबेल्हा,
गउरा में भोजनि करइ ले तइयार,
इहै अब सोरहसइ घर जदुबंसीय ऽ,
जहवां ऊ झारिए बसल बा अहिरा ऽ न,
उहै घरजनवां भोजनि करे चललं, उहै घरजनवा भोजनि करे चललं,
बहुत हमार भइया गरीबत हो बा ऽ इ,
चल ऽ जा अब धोइ लेई हाथ दुअरा पर,
ऊ व टिसुना जो लागलि भाई का लेलका ऽ र,
उहै भइया सभ लोग घरजनवां,
एक एक जाना ए भोजन करै जा ऽ इ,
सुनली जे चर्लाल लोग गइल चलाव ऽ ल,
जूमि गइलन खोइलन का पवन दुआ ऽ र,
उहै आजु एक एक जाना अलवेल्हा,
आ गोड़ लोग धोइ के होला ना तइयार,
बड़ा गरीबता रहल हो दादा खोइलनि काको,
तबो अब लरिका के करत वा छठिहा ऽ ऽ र,
जहवां ऊ सोरह सइ घर जदुवंसीय,
झारिय के बसलि बाड़नि ना अहीरान,
सभ इहै भाई ए चलल वा घरजनवां,
गोड़ हाथ धोइ के होला रे तइयार,
इहै अब बनलि वा भोजनि अलबेल्हा,
अ रचिय के बिजन होतु न भइया वाइ,
इहै अब बनलि बा बिजनि खोइलनि के,
सभकर अदबूद रूप होइ जा ऽ ऽ इ,
कहै लो जे धनि धनि भोजवा बराने,
आरे रनिया अपना हियवे से कइलेन बाड़ी तइयया ऽ ऽ र,

जेइसे हमरा भाई के इ ना असिया न बाड़ी बूता ऽ इल,
ओइसन लड़िका ना बढ़ि जाउ गजने गउरवा आ गढ़ए पा ऽ ल,
सभ पंचे भाइयेइ बरवा बाड़नि देइ ना देले,
आयलि लोग गइल धर घरे लोग ना बा ऽ ऽ इ,
आजु पंचे, एइंजा के गाना ह खतम, आंगा बढ़ता गाना हमा ऽ र,
तनीं सुनि ल ऽ हाल जोगी के, जेवन पिंड के दे गइलन बरदा ऽ न,
संकर मंदिल पर गइ तो हंसि के भोला के देलन जगा ऽ इ,
कहलनि हा इ दासी ए भोला कउल पूजि गइल तोहार,
हमके रचि के जोगी बनाव ऽ, हम देउरो मिलने भाई से जां ऽ इ,
जेइसे केसुन दरसन के गईल ऽ ऊ रूप हमके गउरा देवऽ ऽ बना ऽ इ,
आजु करीं भेंट भाई से अदबुद होइ जाउ मन तोहा ऽ ऽ र,
आजु भइया ऊठि गइले संकर दानी,
आरे भायवा के जटवा जो देलनि रे झुला ऽ ऽ इ,
सिरवा पर झुल्ले ले जटा हो जोगिया के,
एने जब त भसमे जब दीहलें लगाइ,
ईहै अब भसमें न लागल लीलरा प ऽ र,
अंगवां में धुधकी जे देहलन रमाउ,
अब पंचे माया के झुल्ला बा परि गईल,
जोगिय बनिय गइलें हो लेलकार,
तनीं अब देखिल ऽ खेला न जोगिया के,
जोगिय बनल संवरूवे ना बा ऽ इ,
जेकरा जो अंगे में झूला डालि देलें,
एक ओर भांग के गोला न झूलति बा इ,
एक ओर झुलेला गोला न धतूरवा के,
अपना जो लेले ए बगलिया में बा ऽ इ,
जहिया जब हाथे मे संड़सवा बा ऊठलु,
जोगिया ऊ चलल बोहा ले लेलका ऽ र,
एगों जब हथवा में झूलेला कमंडल,
कंखिया तर दाबति मृगछलवा रे बा ऽ इ।

संवरू का जोगी वेश में लोरिक के दर्शन के लिए जाना

जेकर अब सेसवे न नाग के दुआली,

आ बदरिका परलि गरदनियें में बाइ ।
हां ऽ हां हां ऽ ऽ
आरे पंचे अब जहिय दिननवां के सुन ऽ भइया बातेहू,
आंगे जब सुन ऽ समर के खेलवा ऽ इ,
अब सुनिल ऽ बयान लरिकन्न के,
आरे जोगी दरसन के आइल दुअरवे पर बाइ,
जोगी दरसनवां करे न भइया अइलं, आरे लेके जय जब देले रे मना ऽ इ,
उठे जब रानीं अलबेल्हा, आ मोतीय थार अब लेले ह भरेवाइ ।
आजु ऊठि गइल खूसी अब खोइलनि के ऽ, आरे थाल भरति मोती के बा ऽ इ,
ऊप्पर थोड़े धरे चाउर बसमतिया, जेइमें मूंगा बरन के दालि,
देवे चललि भिछा दुअरा पर, पंचे जोगी आइल दुआर पर बाइ,
जेंव जोगी बाबा के भिछा देबे चललि, जोगी पाँच कदम हटि जाइ,
आजु नाहीं भिठा तोर माता लेइबि लेके गजन गउर गढ़पालि,
तोहरी कोखी जामि गइले अलबेल्हा, दरसन के आइल मया हमार ।
सुनीलं ऽ जे खोइलनि एनियां ऊठि गइल ना,
आ मनवा भइया अलवाबेल्हा, एइजां दोच होइ गइलन मनवां रे हमा ऽ र ।
आजु जेवना दीन के बातेह, आरे पंचे जब सुन ऽ ए समर कर हा ऽ लि,
जेहिया रानीं ढुकि के गईल बा बखरी में,
अब थार भिछा के धरेले लेलकार,
अब भइया गोदी में बलकवा बा लेले, जोगी दरसनवें के करेले ना बाइ,
जेवन जोगी चिल्लर नियर दूलर के देखे, आरे भइया निपटे दूबर नात बाइ,
आजु ओइजां जरि गइल देहि जोगिया के,
आरे पाठा घुमिय गइलनि लेलकार,
हमार आजु पूरन बरदानीं नाहीं भइलें,
नाहीं रानीं लेइब अबही भिछा रे तोहार ।
सुनीललं ऽ जे जोगिया आजु खुनुसिनि मा ऽ हुरवा सांचो होइ बा ग ऽ ऽ ईल,
आ संकर जी का जूमले देवलवे पर न बा ऽ ऽ इ,
कहत बा जे बजर परो न संकर इ अलवा बेल्हा,
तोहरा पर गिरित गजबवे के ना धा ऽ र,
आजु तोहो जिव कइ बदलवा मे चिल्लर तूं भेजलल ऽ,
हमरी माई गरभे देलईं ना अवेता ऽ ऽ र,
संकर आजु उठाइ के संड़सवा में बाड़निए धा ऽ बल,

आ जोगी के दुइ संड़सा देले जो बदनिये में ना बाइ,
कहत बा जे बजर परो ना डींगरा तूं अलवाबेल्हा,
आ भले हमसे बड़ि बढ़ि देल ऽ ई ना बतिआ ऽ इ,

शिव के आधे पिंड से धोबी के घर पुत्र अजयी का जन्म

पिंजला एके पिण्ड में दुइ गो ना अ बीरवा ऊ जामि ना गइलें,
एहीय नगर गउरइ ना केरिया हो बजा ऽ ऽ रि,
एगो आजु धोबिनी गरभवा से लइका बा जाम ऽ ल,
एगो गरभ माता तोर लेलेइ बा अवेता ऽ र,
ओही जा ले लवटलि ना आ बीरवा ऊ रहलन बघेला ऽ,
ई जोगी आजु गइलें सुरसरी इहै दुआर,
धोबिन आजु सउनति रहल ना आ आ लदिया भइया दुअरा ऽ पर,
अ पल्लगी ओकर परलु रे सभियें के ना बा ऽ इ,
ऊहै आजु ओंहड़पा ना पठवा ऊ रहल अजइया,
हूमचि हूमचि खूलति खम्हिहवा में ना बा ऽ इ,
धरमी जो देखलनि ना बीरवा हो अलवा बेल्हा,
साँचो आजु जोड़िय ले लेइ ह अवेता ऽ र,
सुनींलऽ जे जोगी चललेइ ना अ गइले ऊ हउवन चलावल,
आ सुघरा के गोदिय में लेहलनि रे उठाइ,
सुनीलं जे लेइ लेइ ना धोबिया के लगलन खेलाबै,
धनि बीर ले ले तूँ हउवई ना अवेता ऽ र,
धोबिन आजु सउनति रहलि ना आ लदिया बबुआ दुअरा प ऽ र,
आ जोगिया हथवा पकड़त जोगिनियें के ना बा इ,
ए माता अब छोड़ि देबू ना आ ऽ लूगवा के एहिजा सउनल,
ईहै आजु होइ गइल मयना रे हमा ऽ र,
तोहरिय गंठियाइ अ बबुवना अब जामि ना गइल,
अदबुद अब जागि गइल भगिया रे तोहा ऽ र,
अब रनिय लुगवाइ के छोड़ि तूं देबू तूँ धोवाइल,
आजु दूधिला पुर होइ गइलू मयना रे हमा ऽ र।

पिंजला धोबी का कपड़ा धोना बन्द कर देना

गद्य : ए भइया जोगी बड़ा गड़बड़ी कइलें, धइके धोबिन के बांह कहताड़न जे

नाहीं आजु लूगा जऽनि धोवऽ, तूं एतना दिन धोबिन रहलु ह, अब हमार माता हो गइलू, धोबिन के देहँ सुखि गइलबा, हाइ भगवान, कहत बाड़ँ जोगीजे लूगा के धोबाई छोड़ि दे, आ ना धुवै देईब आ जेवन सउनल लादी बा नऽ बोलाउ काका के, अ लादी एही गदहन पर लादि के आ घर घर छाड़ी बिगवा दे, आ छाड़ी बिगवा दे, आ कहि दीहै जे, ए भइया एतना दिन लूगा के कइलीं ह धोवाई अब नाहीं धोइब लूगा तोहार, अपना के दूसरे धोबी उहि अइहऽ लेके गउरा केर बाजरि, थर थर धोबिन बा काँपलि, जइसे काँपे बिआइलि गाइ।

कहति बा जे ए बाबा आजु लुगवइ के नाहीं जब करबि धोवाई,
सोरहसइ घरवा अहिरन के एहिजा बा ऽ इ,
तपल बा राजा सहदेउवा कुसुमापुर बाजारि,
जहिया सउनल घर घर लादी बिगवइब ऽ,
तहिया दादा डगडग डगा पिटाई, लकड़ी हेली बाँक जुझार,
चलल आई चलावल दुघिलापुर बजार,
हमरी पती के उलटा मुसुक चढ़ाई, मुंह में गोबर देई ठुंसवाइ,
कांचे कइन कटा के देह के बोकला पती के घली ओकाचि,
मुंह में ठोंकि देई रूपवाली, भंउवां टेकुरी देई गड़वाइ,
अब जोगी नाहीं अइलऽ दुअरा पर।
अरे बुला आई गइल कलवा हमा ऽ र, लुगवा के न छुटी धोबाई,
आरे हमार पतीय परी ना बनखा ऽ नि, हंसल बाड़े जोगी अलबेल्हा,
हां हो रानी मानि जइबू बतिया हमा ऽ र,
ई हो त होली नाहीं होई,
नाहिय दुअरा लदिया जाई रे सउना ऽ इ,
एतना दिन धोबिन तूं कहइलु किलवा में
अरे जोगिया के माता अब गइलू रे कहा ऽ इ,
अब तनीं अंखिया से अन्हवट बा लागल
हां हो मयना कुंववा ना लउकल रे ईनार, काका ए बोला दे बंगला में,
लदियन पर छाड़ी ना देबे ना लदवांइ, जाइ के लूगा तूं बीगि दीहे,
सब एही अहीरन के पवन दुआ ऽ र, तनिको अदब जनि मनिहे,
लुगवा जो बीगि दीहे रे ललकार, जेई तोके घीरई दीहें गउरा में,
तोरे जोव के कारण माई हम मुंहवै देईब ना समएसाऽऽइ,
आरे तोके तिरिछिये नजरिया जे मयना ताके, आ बोहवा में,

भारथ देइबि ना गढ़ु ऽ वा ऽ इ,
आरे भाई हमके तूँ जोगी ना अ जोगिया तू जनि ए जानऽ,
ई भाई खातिर छुटनि धोवइया तोरा बा ऽ इ ।

योगी के वेश में सँवरू का आना और धोबी का पक्ष लेना

गद्य : ए पंचे हाथ जब धइके आ रोकि दिहलें जे ना लुगा धोवे देईबि, त धोबिन बड़ा संकेता परलि, जाइ के अपनो पती के धइके जगावतिया, कि हे पती, त कह ताड़ ए बुजरो इत हम सुनते बाड़ी, कहति का बाड़ हमरा ऊँघाई लागेलिबा तूँ जनि जानऽ ऊ जोगी ना ह ऽ ऊ हमनी के गर क फाँसो ह ऽ जाति त जानति न बाड़ू कि अहीर केंगो उलटा हउवें स, आरे देहि सोझ ना रहे दीहें स, तोहरो हमरो ।

अहीर जाति का उल्लेख

तवलक ओइजाँ जूमि गईल ना ऽ बीरवा भइया अलवाबेल्हा,
जोगी आजु बखरीय में गइलन हो समा ऽ ई,
कहलन जे ककवई ना मोरऽवा अल ए बेल्हा,
आजु पींजला मानि जइबे ना बतिया रे हमा ऽ र,
आजु तोहरिय कोखियइ बीरवा हो जामि गइलं,
एहिय नाते लागत बाड़ऽ ना ककवा रे हमा ऽ र,
केकर आजु असबड़ बा दीदवा हो गउरा में,
तोहके तिरिछिय अंगुरिय देईय जो देखला ऽ इ,
एके हाला लोहवन के हेंगवा हम नाधि ना देई,
व गउरा में में खंड़हरि डालबि ए लेलका ऽ र,
देखऽ आजु उहै जोगिय तनीं अब जनि ए जानऽ,
जेवन दोगला अइले दुअरवा पर जोगिया वा ऽ इ,
ए काका आजु अपनेय ना जोगिया अलवा बेल्हा,
जल्दिय सामो गदहे देबइ ना लदेऽवा ऽ इ,
संवरूय धइके केइ वहियाँ बाड़नि ठिठियेरावत,
जोगिया के ठेलि के दुअरवे लेइ बा जा ऽ इ,
कहत वा जे लेइ आवऽ गादहवा सांचो अलवाबेल्हा,
आ भाईय छांड़ो पिठिये के लेई ना लदेवा ऽ इ,
आजु काका हांकि केइ गा ऽ दहवा तूँ अब लेइ ना जइब ऽ,

सबकर छाड़ी दुअरेइ प ऽ र दीह ऽ तूँ बिगएवाई ।

गद्य : कहत बाड़ें जे सबकर दुआर पर ए भइया, बीगे के परी, धोबिया कहता बियही चलु आजु जवन गति होई तेवन त होइबे करी, बाई जोगी ना हव ऽ तू हमनी के काल आ गइल बाड़ ऽ कहलन जे हाँ काका काले जानऽ, बाई लुगा के धोवाई हिरगिस अब तोहरा ना होई, कहत वाड़न जे आछा, ए भइया पिगला धोबी बा, लेके गदहा जबसे आइल बाटे, आमडे छाड़ी जेवन बाड़ी स, तेवन रानी बान्हि देले ह, आ किछु साड़ी एहिगो खलिहें ध दीहलासि ऊ गदहा के पीठि पर, आ कुसुमा पुर के जेतना छाड़ी रहली स, लेके बगुवा बान्हि के आ ए गदहा पर धऽ दीहलसि ।

आ हाँ हाँ हाँ

तनीं अब सुनिलऽ बयनवां अलवाबेल्हा,
अगवा सुहवलि के होइहं ना पया ऽ न,
जहिया धोबिया छाड़िय बा लादि ले ले, जहिया धोबिया छाड़िय बा
लादि ले ले, धोबिया हंकले गदहवा जब ना बा ऽ इ,
संगवा चललि बा नारि ए धोबिया के,
ओही आजु गजने गउरवा गढ़ पा ऽ ऽ लि,
एनियां हंसि के धोबिनियां बाटे बोललि,
बबुई मनबू न बतिया हमा ऽ र,
अपने अब चीन्हि के लुगई न लोत जइबू,
नाहीं अब धोइबो न लुगवा रे तोहा ऽरि,
जहिया देखलीं सरनियां अहीरा के,
ओही जा जरि के भसम लो होइ ना जाइ ।

गद्य : ए बुजरी त नाहीं तूँ लूगा एके बिना धोवले बिग तारू हमनी के, त कहत बा जे देखऽ आजु ले धोबी तू खोजि लीहऽ अब ना हम तोहार धोवाई हिरगिस करब; आ तोहार लूगा के धोवाइ अब हम ना करब, तू धोबी उहियाइ लीहऽ कहलेसि जे ए भाई सनकि गइल का धोबिया, आरे त लोभ कहत बा जे बोलऽ जा जनि, देखीं जा हमनों के सड़िया ले आइल बा कि कुसुमे पुर क ले आइल बा । आजु जेतना साड़ी रहल गउरा के भइया, सगरी छांड़ी दुअरे दुआरे बीगि दिहलस, फेर जो हांकति आ गदहा लेके अब लेके चलति कुसुमापुर केरि बऽजार ।

कुसुमापुर के राजा सहदेव का क्रुद्ध होना

पंचे ओ ओनियां लागलि रहलि ना आ गदिया सांचो सह ऽ ए देव के,

आ धनवां पर रुहले, रहल ना दरे ऽ बार,
जेतना आजु फाट ऽ केइ पर खड़ा रहलन बबुआ पि ऽ आदा,
तिलंगा लोग सांचों के रहल ना तइया ऽ र,
पि ऽ दवा कहता जे पियादा राजा केइ खबरिया देबऽ बंगला में,
ई लूगा लादि सउनलि पहूँचलि कुसुमापुर में बा ऽ इ,
ऊ भइया सहदेव का दुअरे पर बा लदिया पटकल,
जे सभ लूगा चीन्हि चीन्हि ले जाई,
कुसुमै न पुरवा रे बजा ऽ रि ।

गद्य-पद्य : तब लक पियादा चलल लोग गइल चलावल, जाइ के के भइया ढुकि गईल बंगला में बाइ, कहलन जे ए ठाकुर एगो हाल नइखीं न जानत, आरे धोबिया त बउरा गइल बा, ऊ लूगा बा से सउनल हमनीं का दुआर पर ले आइ के पटक दिहलसिहा, कहत बा जे घर भर चीन्हि के लोग ले जाई। जरत बा राजा के एड़िया दरे लागल अंगार, कहे जे धर सारे के खम्भा में बान्हीं जा ।

अब भइया चारि चारि पुलिसि अलबेल्हा,
धोबिया पर परि ए गइल बा लेलकार,
एने अब पिंगला धोबी ना बाटे भागल,
आरे धोबी भागल ऊ चील्हिकि के ना बाइ,
ओने भइया जोगी के खबरि परि गईल,
आंगबा तूं जोगिया के सुनऽ रे बयान,
सुनलीं जे दुलरा के आजु पलंगा सुतावऽ,
एने अब भोला से मांगेले बरदान, कहलसि जे बिलि जाऊ बनवां ऊ बिसांभर,
जे इनरापुर हमरा के देहले ना हउवऽ जा वर ऽ ए दान ।

गद्य-पद्य : आजु भइया सुन लऽ बयान बांन के, ओही जगह पर बांन के वीर मंगले हऽ आ ओके बांन देवता लोग भेज देले बाटे बरदान । जेवनी बेर धरमी के जूमि गइल बांन बरदानी, पांच सइ बरइछ के धना, बीर के मिलल गउरा में बाइ, पांच गो बांन बिसंभर बान बरम्हा बगल में दे देहलन बरदान, हाय लालन छोड़बऽ बांन अलबेल्हा, बांन बीर चउदह कोस नरियाई, जेवनी बने लागी बनडाढ़ा, चूइ चूइ बरिसे लागी अंगार, कुंआ मे धुआं ऊड़ि जाई, पोखरा खउले लागी इनार, सीधरी दांत चियारी, नीचे गरई मरे लागी अउंजाइ, तड़फड़ होई पिरिथिमी लेके मिरुत मंड़ल संवसार, एतना बांन मिलल हां बरदानी बांन देवता देले लोग हउवे बरदान, तब सोचे बीर बघेला ।

कहत बाड़नि जे बाबा हमके दूसरेइ ऽ न,
आ बनवां तनी एइजां हो देब ऽ ई बनवां छुटले पपवा होई ना बरिया ऽ र,
फेरु बरम्हा तिरियैइ क दनवां दिहलै बनवें के,
ऊ बांन बरदानी उनका झुलते बगलिया में न बा ऽ इ,
बबुआ उहै लेइ आइके तिरवा जब जोगिया बाबा,
आ कुसुमापुर बान्हि के चलल बा लेलकार ।
एने अब परि गईल ना नजरिया अब भइया पुलुसन के,
अ जीव लेके भागल लोग कुसुमवां पुर में बा ऽ इ,
ए ठाकुर एगो जोगियइ न बइठल बाटे दुधिला पर,
आपन देखले सरके लागल मनवां रे हमा ऽ र,
केहू ओने भागियइ के अइलीं जाए र ऽ नवां में,
ऊ जोगिया बुझाता नाहीं छोड़ी न जनवां रे हमा ऽ र,

श्रोताओं की आंख में नींद आने का गायक द्वारा उल्लेख

ए पंचे, सबकी अंखियइ पर झोंके जब लागलि ओंघाई,
ईहे आजु समुझत बा गनवां रे हमा ऽ र,
पंचे अब एहिजां इ ना गनवां बन अब होई,
तनीं बाबा अब मसीन के जारीय ना होइ ना जा ऽ इ,
आजु एइजां होइ जाई नाजरिये जो संगला में,
आ एहिजां अब खतम होई गनवां रे हमा ऽ र ।
आ हाँ, हाँ
आजु पंचे जाहिए दिननवां के बाते,
अंगवां जो सुनिल ऽ समर के खेलवा ऽ ड़,
एने अब जरि गइल राजा सहदेउवा,
एड़िया में दर दर दरै ला अंगार,
आजु आजु एक से अहीरवा एगो जोगी,
सोरह सइ घर वा बसल बा अहिरा ऽ न,
तनीं अब बाजो जा डुगी ना गउरा में,
कुसुमापुर डगर देइँ जा बजवाइ,
जहां आजु सोरह सै ई घर जदुबंसी,
झारियै के बसलि बाड़ी ना अहिरान,
जोगिया के घेरि के मारीं जा दुधिलापुर,

धोबिया के मुसुक देई जा कसवाइ।
आजु भइया बिगड़ि गईल ना आ मनवां सुन ऽ अब सहृएदेव के,
कुसुमापुर बान्हिय दे लेइ बा लेल ऽ ऽ कार।

कुसुमापुर के सहदेव की फौज से योगी वेश में संवरू लड़ने को तइयार

गद्य : आजु भाई चमार लेके धावल बाड़े सहनाई, गर में सहनाई देले बाटे बन्हवाई, एगो चमार लेके डुगी चलि गईल गउरा में, जहां धन बसगिति रहल अहिरान का बाजे डूगी।

अब भइया बाजेली डुगी ना सहदे ऽ व के,
अब बाजलि कुसुमान पुरवा रे बजा ऽ र,
अब बीर गवनन के छोड़ि द गवनहरि,
अब एहिंजां दोंगा के छोड़ जो बहुआ ऽ रि,
हां हो बीर छोड़ि देब ऽ सेजि बियहिन के, आंगा झुलनी के छोड़ ऽ ज बया ऽ न,
अब ठाकुर जेवना दिनन के लालन पललैं,
अब एहिजा घरिय गइल बा निअराय,
आपन भइया कसि के लंगोटा अलबेल्हा,
झटपट लडे के होइ ऽ जा तइयार,
एगो अब जोगिया आइल वा दुघिलापुर,
अब भारथ निहिचय देले बा गरुवाय,
सब करि सउनलि लादी अलबेल्हा,
अ बरबस दुअरे देले बा भेजवा ऽ इ,
एही बेरी घेरी के जोगी के मारि घाल ऽ,
आ धोबिया के मुमुक देइँ जा चढ़ेवा ऽ इ।
आजु भइया भारथ के होखे जब लागल तेयारी,
एही आजु गउरई ना केरिया हो बाजा ऽ रि,
एने सभ नारूनेइ ना नारू अब कइ के धावल,
दुअरा पर सहदेव का फउदि बा बिटुएरा ऽ त,
सुनलीं जे ऊठल बाटे न अ राजवा अ सहृदेउवा,
सत सत गो मुकुनइ ना लेले बाड़न बोलएवा ऽ इ,
सुनलों जे सत सतना आ हथवा रहै बीर ऊ के,
जेकर आजु राजवे सहृदेउवा ए परल ना नां ऽ व,
सुनलीं जे सिकरेइ में हथवा बा नंधएवावत,
कुलि हाथा गरदन मेंइ देल हृउवनि ना बन्हृएवा ऽ इ,

सुनलीं जे चढ़े लागल ना हुउदा जब ए ह ऽ थवा पर,
ओही नगर कुसुमा इ पुरवा हो बजा ऽ रि,
सुनलीं जे कसलेइ लंगोटा बा पट्टा जेवनी बेर सहदेव,
बाजू मुरेठा बन्हलनि ना, मंहवंइ रे लीला ऽ र,
आजु जाके ऊंचवेइ ना हथवा पर बइठि बा गईल,
पंचे अब भारथइ लड़ेइ के ह तइयेया ऽ र,

सहदेव की फौज की ओर से नगारा, नेपाली बिगुल तथा अन्य बाजों की तुमुल ध्वनि

सुनलीं जे गर्हू रहलि ना पलटन भइया सहएदेव के,
आ बादी अब लड़े के केइ ना भइल वाड़ेनि तइयेया ऽ र,
अब बाजलि बावनी से जोडिए बबुआ नगारा,
जेहि में आजु तिरपन से जोड़िया ए करए ना ऽ लि,
आजु एनियां बीस से तु डुहिया साँचो बाजे ना लगल,
सिंगवा जो करुवे गोहरई ना गोहा ऽ र,
जेवनी बेर बाजल वाटे ना अबीगुला हो नय ए पा ऽ ली,
जइसे जुधिया में बजलु ब ऽ मुधवा ए भइया ना बाई,
जेवनी बेर बाजि गइल न बजवा बा अलए बेल्हा,
कदरन के दुनवां ना मनवाँजो होई ना जा····इ,
जेहिया बबुआ बाजलि बाटे बिगुलवा जो नएए पाली,
कदरन के रोउँवाइं ना बाड़नि ना ए फहए·ा ऽ त,
अब बीर लड़े लडे ना करत लोग बाटे तैयारी,
जोगिया के घेरि केइ मारेंइ ना लेलएका····र,
ओनें आजु धरमिय ना आ कछवा जे लागल चढ़ावे
जोगी बान्हें मलवे बरनवा के भइया रे माँ ऽ र,
जहिया जब घींचे लाल ना छजवा जो लोहवा के,
अब बीर सिनवेई में देलनि नाए चंभए का ऽ इ,
जोगीया का हलर हलर जटवा जो लागल ए करे,
ओही दऽहा कुसुमइनां पुरवा रे बजा ऽ रि,
ए बबुआ लोग बड़ बड़ना पइनी ना हो इबि पुआइल,
घरवा तूं भरले बड़वरे ना होइबऽ रे गा····ल,

रिकार्डिंग करते समय मुझे रतसंड के भोल पर नींद आने लगी गायक का मेरे ऊपर आक्षेप

हम आजु सुने जाइबि ना गनवां ए भीलवा पर,
जहां गाना आजु होत मसीनवें में भइया रे बाइ,
जोई तोहरा लागति रहल ना निनिया तोहें ए गनवा में,
आपन गोठहुली धरवै लेबऽ न सुधि ए आ ऽ ऽइ,
जाके बबुआ गोठहुलि ना घरवा में सुति ना रहऽ,
कादर आजु नारीं संगे ना जइवऽ तू अलए सा ऽ इ,
आजु जो ई मरदन के संगवा जो बबुआ होखे,
सभवा में सुनत रहऽ गानवां रे हमार,

जोगी संवरू के बान से सहदेव की पलटन का भयभीत होना और अपने महल में घुस जाना

एनें अब कठिन बाटे लड़इया भइया जोगियाऽ के,
अब बीर लड़े केइ ना भईलन तइयार,
ओने आजु चलल बाटे ना आ सनवां भइया सहएदेव के,
अब जोगी पुरुवेइ ना खेतवा जो मयरेदा ऽ न,
अब धरमी एगो दाबि दिहलन ना गोसवा हो धरती में,
एगो गोऽखिलल अकसवे पर भइया बा ऽ इ,
जेकर आजु सरइय के तीरवा हऽ अलवा बेल्हा ऽ
आरे बनवां पर धरि ना लेलेइ बाड़नि रे भिड़िरेकाऽऽइ,
अंगवा जो मच मच ना करे लागलि भइया ए धेना,
धरती में चर चर ना चले जे लागल कमा ऽ ऽ इ,
एगें आजु हीलि गइल ना जंघिया हउवे रे सहरे देव के,
आपन हाथा पंछवे के देल्हे हउवें लवरेटा ऽ इ,
ई त जोगिया बनवंइ के जोगिया त नाहीं ए हउवें,
न ई बीर लड़ने में बंकवा ए भइया जुझा ऽ रि,
जीन्हि आजु परि जइहें ना सनवां जो रे जोगिया के,
ओकर जिउवा बंचहू जोगिया ना भइया बाई,
एने आजु हटल हउवे ना आ पलटनि भइया जोगिया के,
आ पलटनि सहदेव के बखरी में गइलन रे समा ऽ इ,
बीर जब अपनइ ना अपने जो घरवा गईल,

ओ लोग के मउगी गलिये में संउजा करइं संऽ लेलकार।

योगी के वीर्य से धोबिन को बच्चा हुआ है—
लोगों का झूठा आरोप

गद्य : हे बहिन, आरे धोबिनियां के नइखु न जानत, आरे बन में जोगी से मीललि रहलि हा हो, ओकरा कोखी से बेटा भईल बा न, ऊ जोगी से मीललि रहलि, हे, उदे न गोहारि करे आइल बा, हमनीं के सउनल लादी भेजवाइ देले बा।

योगी सांवरू का मां खोइलनि और धोबिन को

सहायता का आश्वासन देना और बोहा में जाकर आवास करना

आरे ई त धोबिन जोगिया इ का आ संगवां बुला अझुएराईल,
आ जोगिया का बुन से एही अव लड़िका के भइल बा अवेता ऽ रा,
केहू नाहीं पंचे जनले हउवे मा ऽ रमियाँ देखबऽ लोगिया के,
समे उहेभुभुकाइ ना दिलहनि रे उठा ऽ इ।
पंचे अब जउने दिननवां कर जो बातेह्,
अंगवां जोगिया सुनऽ जा खेलवा ऽ ड़,
कहुवे जे माईन मोखा हो पटोर ऽ मैना दुघिलापुर लगलू रे हमा ऽ रि,
एगो मोर माई गउरवां बुढ़िया खोइलन, दुइगो माता न भइलू रे हमाऽऽर,
गउरा दुइ गो भइयवा लोग बा गईल,
एई आजु गजने गउर जो गड़वापाल,
मयना अन के कमीय जो होइ जो जइहैं,
तो आज फटहा लूगा न होइ ना जा ऽ ऽ इ,
हमके बोहवा खबरिया तुंहि ए दीहऽ,
तोके अब लुगवा देईबि ना भेजवा ऽ इ,
जहिया अन के कमीजो रनियाँ होखे,
तोरा के छांड़िया देइबि हम लगवा ऽ इ,
बाकी अब अहिरन के जनि करिहे धोवा ऽ ई,
सनवां चलहु जोगीय के नाहीं बा ऽ इ,
उहै जो ओहिजां ले घरमी जो लवटल…,
अपना जूमल मयनवां किहें जो बा ऽ ऽ इ,
जाइ के जोगिया न हंसि के बाटे बो ऽ लत,
लत, आरे माता आजु मानि जइबू ना बतिया रे हमार।

कहतिया जे ए मांई हमके जोगिय ना ऽ ऽ,
जोगिया तूं जोगी जनि ए जा ऽ ऽ नऽ,
इहे पलंगे पर लंगड़ा हवीं पूतवा रे तोहा ऽ र।

गद्य : कहत बांड़ें जे जेवन सक में परल रहलू लंगड़ा बेटा के उहै हम बेटा हई, हम माता आंखि खोलि के कहतानीं, जे गउरा राज करऽ काका के बरघी चरावल छोड़ाय दऽ, आ जेतना तोहरा दूध काम लागे, अगर किछऊ के काम लागे त बोहा खबर भेजवाय दीहऽ, हंसि के बोल ताटे बुढ़ खोइलनि देबे लगल जवाब, कहे जे सुन लेवे ए बबुआ दूलर मानऽ बाति हमार, अरे जहिया अब हो गईल जनम बबुआ के, तहिये न लछिमी हमरा घर में गोड़ तोर के बइठि गइली।

कहतिआ जे ए बबुआ हमरा बढि गईल बा ऽ आधनवां,
देखवऽ ब ऽ खरी में इहे धन खइला से नाही रे ओ ऽ राइ.
आजु लड़िका जब देई के धिरजवा जब मलवा सां ऽ वर,
भोला के जब जुमले मंदिलवा पर भइया बा ऽ इ,
एने अब बढ़लि रहलीं ना गइया देखबऽ अलवा बेल्हा,
ऊ अंड़रीं चभकली धरमिये के भइया बा ऽ इ,

सुहवलि में भीमली तथा अन्य वीरों का अवतार लेना

जेवनी बेर बीरवा इ ना सरउंज में चलि ना गइलें,
अब गाना सुनऽ सुहवलि ना केरिया हो बजारि,
तनीं अब सुनि लेबऽ ना ऽ बीरवा हो अलवाबेल्हा,
अब जोड़ी भीमलाइ के लिहलनि अवेता ऽ र,
तनीं अब मुनि लेबऽ ना खेलवा बबुआ दु ऽ ऽ रुगा के,
दुरुगा ऊ दुनियइ में घूमति बाड़ी लेलएका ऽ र,
नाहिय केहू सहत रहल ना आभरवा भइया दुरुगा के,
नाही पूजा दुनियेइ में ए गांड़रि रे केहू मेंटा ऽ इ,
सुनिलऽ जे सउवे बहिनिया हो बरम्हा के,
जब उहै घुमलेइ भिरुतवा में पंचे ना बा ऽ इ,
सभकर लगि गईल ना आ थेघवा भइया मिरुता में,
आ देवी दुरुगा व्याकुलई भइलि बा लेलका ऽ र,
देबिय आपन ढूंढ़त चले ना सेवका हो ब ऽ सुधा में,
नाहीं केहू दुनियइ में मीलल बाड़े पूजवा मान,

गद्य : आ दुनियाँ छांड़ि के, आ जाइ के रमरेखा में गोता मारि के, का सोचले हवी के आजु हमार सभ बहिन के थेघ लागि गइल, आ हमरे नांव काका पटेहिया धइलनि, हमरे नांव काका पटेहिया धइलें इन्नर का पवन दुआर, हमार अब थेघ दुनियाँ मे न लागी, चल ऽ अब सोई लोरिक भइया के टुकी खाँड़ा खाइ के इनरपुर में करब गुजरार ।

सुनीलऽजे दुरुगा के आजु टूटल रहल ना आ मनवां पंचे दुनियाँ में,
नाहिय सेवक गउरा में लेलनि अवएतार,
तनीं इएजां कठिनि हउवै भगतिया देखबऽ धरमी के,
अब लउरि उनुकर भुजा में रहल ना तइयेयार,
ईहे आजु कतिके केइ लागलि बा भइया कथेसरी,
मेला लागल भिरगुन का पवन हो दुआर,
दुरुगा हमार अघवइया अकसवा में रहल ए गईल,
आपनि रधिया मिरुता में देलेइ हऽ लवएटाई,
कइसन आजु लागलि वाडेनि ना मेलवा हो अलवाबेल्हा,
सभबीर दुनियाँ के गइलनि ना बेटु ए रा ऽऽ इ,
एही में नीस्चै सेवकवा ना हो ई हरिआइल,
देबी हमारि पहुँचल बलियवा में ना बाइ ।

धोबी पुत्र अजयी का दूध पी पीकर बड़ा होना —
अखाड़े में युवकों को कुश्ती लड़वाना

हाँ ऽ ऽ आँ हाँ, पंचे,
जाही दिननवां के जो बातेह, अंगवां सुनबऽ समर के खेलवा ऽ इ,
तनीं अब सुनिल ऽ बयनवां सुधरन के, बीरवा ले ले बाड़नि ना अवएतार,
धरमी दुहलन ना दूधवा अलवाबेल्हा,
कंवरिन दूधवा देलनि न भेजवा ऽ इ.
एगो दुधवा गईल बा दुधिलापुर, एगो कांवरि गईल खोइलनी कीहें बाइ,
लड़िका पीये जो दुधवा अलवाबेल्हा, बलवा भुजवा में बढ़त बा लेलकारि,
अब ईहे लागल होखे ना गुघरेगो,
अब बीर लड़ने में बंकवारे जुझा ऽ रि,
एनिया सहकल न भनवां धोबिया के,
सुरहन खनले अखड़वा भइया बाइ,
एनियां चउदह न टोलवा करि जो नवहा,

सभ अब सुरहलि में गइलन न बेटुरा ऽ इ,
धोबिया ऊलटा जो कसुवे जे लंगोटा,
ऊपरां मलवा बरन के भइया गांऽ ठि,
जहिया कसुवे न पेटीय ना अलवाबेल्हा,
अपने ऊलटा जो फंटवा देले बाइ,
जहिया गरदन पर गरदा चमकावल,
डंड करत मिरुतवा में न बाई,
पंचे कहवां ले कहीं ओ बरनिका,
अधजल में दुरुगा के पूजवा ना हमार,
एहिजां अटपट जो गनवां मोर होइं गइल,
एहीं आजु धड़बड़ि मे बसलें ए परान ।
[गायक कहता है कि मेरे गाने में यहाँ गड़बड़ी हो गयीं है]

गद्य : पूरा भक्ती देवी के ना कइलीं घोड़ि दी नं, आंगा करे के पड़ी, आंगा हो जाई, अभी त पूजा करे की बेर होई ।

गद्य : आ भइया चउदह टोला नवहा, आ लेके धोबीं अखाड़ा खनि के लड़ीवे लागल आ लड़िकन के ।

सुनीलं जे एनिया बढ़े लागल आ ना ब ऽ लवा भइया आ धोबिया के,
अब भुजा बढ़ल बाड़नि ना ललकार,
सुनलीं ऽ जे बढ़ि गइल ना आ बलवा सांचो अलवा बेल्हा,
चउदह टोला के नवहा लड़े के होलाई ना तईया ऽ र,
सभ केई ऊ धोबियइ बाजावत बाटे गउरा में,
तबो ओकर मेहनति पूरई ना भईल ना बा ऽ इ,
बलकी मारे बथे लागलि ना देहिया बबुआ धोबिया के,
अब बल दिन पर ना दिन न पुहुका ऽ र,
तनीं अव बढ़ि गइल ना आ मनवां भइया धोबिया के,
कुल्हि अब नवहन के घलल ऽ आ ए लड़ा ऽ इ,
तबो नाहीं नीकड़ल हा बाथवा भइया देहिया ऽ के,
अब बीर रगड़त धरतिया में ना बा ऽ इ,
पंचे तवलक सावनेइ के चढ़ि ए गईल महिन्ना,
जेवन नइया परल पंचइयां भइया बा ऽ इ,
सुनजीं जे देस देस में गंगनी जब होखे ना लागल,
आ बीर के ऊ करत सरहना आ ले न बाइ ।

गंगनी के खेल में बमरी के पुत्र झिंगुरी से मुकाबले के लिए चुपके से अजयी का सुहवलि जाना, संवरू का व्याकुल होना

गद्य : दिन पर दिन जब धोबिया के पंचे बल बढ़े लगल, आ सावन के महीना में अ बल बूतन नाहीं अड़ाइ, सावन के आईल महीना जब इहै कहावत पचइयां बाइ, दुनियां में जे बीर लड़े के होला तेयार ते सब बीर लड़ेला, सुनिलऽ जा बयान अजई के, आ एनें बोई फइलल बा झिंगुरिया के का आ त भइया झिंगुरी सानी के गंगनी नाहीं केहू खेलता मिरुत मड़ल संवसार, सुनि गइल बेटा पिंजला के जेकर बलो अजइया नांव, कहलसि जे भाई सुहवल नगर में चले के चाहता, आ केहू से कहलस नाहीं :

सुनिलं ऽ जे एनिया डुबि गईल ना डंफुवा जो सुरुजे ऽ के,
अपना जो मनवां में कहलन हो दीमा ऽ ग,
अब बीर भजनींय ना कइले बाड़नि अलवाबेल्हा,
अब दूध पीयले बयनवें के ना बा ऽ इ,
थोरे आज़ु लेइ लिहलनि ना, दमवां अपना मयना से,
कहत बाड़न जे किछु हमरा पइसा के गरजिया लागलि हो बा ऽ इ
आजु धोबिन देइ दिहलसि ना दमबां मुनबऽ अलवाबेल्हा,
अब बचा आजु लेइ लेबे दमवा आ ललका ऽ र।

गद्य : आजु नाहीं धोबी के कहले ऽ ऽ ना धोबिन पूछत लड़िका से बाइ, जे काहें के दाम ले ले बाड़े, पूछलहु ना ह ऽ आ दे दिहलसि, दे दिहलसि,
बीर जब खाइ के आ खान-पीयन हो गइल, आ पंचे आ मूता परि गईल।

धोबिया तहिया छोड़ि दिहलस ना आ गउवां आजु गउ ऽ ऽ रा के,
लंगोटा अपना धइले जब गरदनी में ना बा ऽ इ,
आज़ु एगो कन्हियइ पर जांघिया बीर बा लेइ न लेले,
अब चलल सोनवां सुहवली दहएपा ऽ लि,
चल तनी देखि आईं ना आ सनवा हमरे झिंगुरो के,
जहवां गंगनी होति बाटे ना सुहवलि में लेलइकार,
जइसे एक बेर सनकल रहलान ना आ पूतवा देखव ऽ बमरा के,
जेवनां के गजवे भिमलिया ओ रहल एनां ऽ व,
ओतने बबुआ बढ़ि गईल ना सनवां देखबऽ धोबिया के,
अब चलल सुहवलि ना केरिया हो बजा ऽ र,
अब धोबिया रतियाइ ना दिनवा ना पंचे हउवें धावल,

नाहीं कतें पंथड़ाइ में कइलनि ए मोका ऽ म,
आजु गउरा दुइ घरी ना दिनवा आ भइया चढ़ि बा गईल,
नवहा लो जूमल दुधिलवापुर में वा ऽ इ,
कहस जे ए मयना लाजु कहां गइलनि ना आ मितवा देखबे अलवाबेल्हा,
आ बोहवा में मेहनति के तेयरिया भइल ना बा ऽ इ,
धोबिन कहति बा जे वचवा भोरे सेइ ना आ पतवा लांगल सुधरा के,
न जाने कहां गईल मितवा रे तोहा ऽ र
खोजत खोजत पहरइ भर दिनवां गइल नवहन के,
नाहीं पता लागल धोबिया के मइया रे बा ऽ इ,
सुनलीं जे धरमीय खबरिया बाटे चलि रे गईल,
आजु गउरा बन ए अखढ़वा होइ रे जा ऽ इ,
अजई के नइखे लागल ना आ पतवा भइया दुघिलापुर,
ऊ अव नापता भईल बीरवा आ लेलएका ऽ र,
आजु धरमी जोड़ि दिहलनि ना आ बोहवा सांचो अलवाबेल्हा,
जूमिय गइलेंनि धोबिनीय का पवना हो दुआ ऽ र,
ए माता कि तोरे अनवां के कमिये वा भई ना गईल,
कि गउरा में आजु फाटि गईलें ना परदवा हो तोहा ऽ र,
हां हो मयना केकरीय करजिया तूं गउरा ए खइलू,
केहू साहू दामवा आ दिलनि ए लगा ऽ ऽ इ,
किय मयना दूध केइ कमिया भइल दुधिलापुर,
काहें दुधिलापुर बिछड़ि गइलनि ना जोड़िया हो हमा ऽ र,

गद्य : जाइ के माता से धरमी पूछताड़ें जे हे माता केहू के करज खइले रहलूह, धोबिन हंसि के कहतिया जे हाइ लालन अईसन केकर हम करज खइले बानी आ के तोहरा नीयरजब्र परतापी बीर बाटे त के हमके आंख देखाइ, आ दूध बबुआ ओहिगो घड़ा के आइके परल,बाटे बकीआ काहें हम कही, बेटा हमार कहि के गई रहित त हम कहबो करती कि किछु दुखो नाव पाता दुअरे पर रहीत।

आजु धरमी रोवते बोहाई मे वाड़ेनि ए गईल,
ई गउरा फाटल करेजवा रे हमा ऽ र,
आजु केवन अयगुन ना भइ गईल हमरा से,
काहें आजु बिछुड़ि गइलेंनि जोड़िया रे हमा ऽ र,
धोबी बिना धरमीय बेयाकुल भइलनि बोहवा में,
अजई सुहवली ना लेले बाटे निअरेरा ऽ इ,

आजु बबुआ पहर भर ना दिनवां अउरी सोहवलि ए रहल,
ओने गंगनी मचल सोहवली में हिरवा बा ऽ इ,

सुहवलि में गंगनी क खेल में अजयी का भाग लेना

तवलक जूमि गइल ना आ पठवा ए अजइया,
जेने आजु चभकलि गंगनियं हो भइया बा ऽ इ,
सगड़ा पर उलटा इ ना कछवा जब लागल चढ़ावे,
अब बान्हे मलवाइ बरनवां के भइया ना गां ऽ ठ,
अजई जो बान्हि देला ना आ पेंचवा रे अलबाबेल्हा,
ऊ परां जो जंघियाई न आ ले ले हउवन अंड़एसा ऽ इ,
अउरी लूगा धइलेइ देले हउवे सगड़ा पर,
माटी आजु लेलेई धरतिया में पठा रे वा ऽ इ,
जहिया अपना गरदनि में गरदा हो लागल ही मेरावे,
अउरु रोरी अपनी लीलराऽ पर देले हउवनि चभएकाइ ।
हाँ, अब पठा कोठवइ मे धूरिया जब लागल मेरावे,
सरम डंड घीचे लागल ना एंड़वा हो लगा ऽ इ,
जहिया आजु घीचे लागल ना डंडवा भइया सुरहन मे,
अब फूला फूलि के इ ना भुजवा हऽ ए तइयेयार,
ई त ऊ झोंके लागी ना निनिगं तोहार पंजरा मे,
हाथ फेर ले टूटि जाइ न दंतवा ए तोहा ऽ र,
तलक भइया सुने केइ ना गनवां मऽन ए बबुआ लागल,
सोझे आजु ताकत रहऽ जा नयने ना पसा ऽ रि,
तनी अब देखि लेब़ऽ जा खेलवा भइया धोबिया के,
अब बीर चढ लेइ गंगनिया में सचो ना बा ऽ इ ।
आजु धोबी धरती एंड दबावे, औ बीर कूदल बयालीस हाथ,
जाइके चढ़ि गइल गंगनी पर आ पट्ठा ... देला बजाइ ।
सुनीलंऽ जे सुरहनि में बाजि गइल ना आ तड़िया भइया धोबिया केऽ
गरगरहटि उठलु सुरहनि में नां बा ऽ इ,
अब बीर कड़कड़ाइ केई ना धोबिया पर लोग परि बा गईल,
अब बीर के मारत धकाई आ ले लेकार ।
जेकरा पर मारत बाटे ना आ धकवा भइया सिनवा पर,
ऊ बीर लेके झंड़ा नीयर ना गइल लोग भइया कंड़ा ऽ इ,

अब बीर मुंहवई में मटिया लोग लागल उठावे,
सबकिय ओठ पर फेंकरीय परई ना लेलका ऽ र,
अब धोबिया लेई लेई ना आ उठकी जब करे बइठजी,
तालु आजु मरलेइ ना गंगनी में लेलएका ऽ र,
जेवन आजु दुइ हाथ ना आ खेलवा भइया बार्टे देखवले,
तबलक डंफू डूबलउ सुरुजवा के भइया बा ऽ इ,
आजु उहै डूदि गइल ना डंफुआ हो सुरुजे के,
सुहवलि में झूलि ए परति बा लेलका ऽ र,
सुहवलि में बन भईल ना आ खेलिया भइया गलवा में,
सभ बीर सुहवलि न गइलन ए हेठिआ ऽ इ,
धोबिया के चिन्ह लोइ ना आ लोगवा ना हउवे रहल,
ऊ डेरा बीर डलले सागडवा पर साचो रे बाइ ।

गंगनी के खेल में अजई की श्रेष्ठता—
सुहवल के युवकों को चोट से बुखार चढ़ जाना

गद्य : ए पंचे, बीर जे लड़वइया बा से सब अपना घर घर चल गइल हा आ धोबिया के केहू ओइजां हीत नइखे, आन केहू जनकार बाटे, अव धोबी बा से चढ़ि के ओइ सागड़ पर डेरा चभकल, डेरा गिराई के ओ खाना का खाई कि एहि ऊ लीटी लगावे आ सांझ सीटी लगावे आ दिन भर देहि रगड़े भींटा पर के आ सांझि के जब लोग गंगनी में परजाइ लोगवा जेवनी बेर मारि देई तहाड़ गंगनी में जइसे झूरे वदर निरआइ, आ जिनका के मारि देइ चोट अलबेल्हा ओ वीर का बथे पंजर के हाड़, चढ़े जर गुड़गुड़ी, सिरे धमके लागल····

आजु भइया धोबिया सातो दिन गंगनिया खेलत सुहवलि में,
आ नवहून का जरवा चढ़ल बा जरवा रे बे जार ।
सभकीय माथवई पर छापि लोग बा देले बा जेवाइन,
आ सभ बेमार परल नवहिये ए लोग बाइ,
सभ जब सुहवलि में बेमरिया लोगन के पकड़ि वा लेले,
धोबियाउ गंगनीय में देले बाड़े बिचिएला ऽ इ,
पंचे, आजु लमहर हऽ खेतवा ए पंड़एवार में,
एगो ओइजाँ पातरे डंड़िय ना खुलि ना जा ऽ इ,
लहमर खेतवा इ ना लउकल तोहार अलवा बेल्हा,
ईहै आजु पातर हउवे डंड़वा रे तोहा ऽ र,

तनीं अब गयनेइ के हुँकवा ए भइया चढ़ावऽ,
कि अब गाना में फाटि गंइल गंड़िया रे तोहा ऽ र,
आजु ईहै लमहर ना गनवां हउवै सुहवल के,
हुँक्का चढ़वइया के गांड़ि फाटल बेरो वा लेलकार ।

गायक का हुक्का चढ़ाने के लिए कहना

जेवना दिननवां के बातेहु
अब बीर मुहवल के मुनऽ रे बयान, बये लागलि देह मरदन के,
मथवा पर छापलु जेवइनी रे बाइ, सतवां दिन बीर हउवें ऊठल,
आरे धोबी जब गईल गंगनिया पर बाइ, केहू नाहीं बीर हउवे गईल,
आ तड़िया ऊ ठोंके लागल ना जरवा रे बेजाऽऽर,
ताड़ी कलिंजर के रहल, मुहवल कान दाहल ना जा ऽ इ,
सूने राजा बमरिया तड़कि के मन ऊठि गईल बगला में बाइ,
कहे जे गाये के सुनिलऽ मंतिरी दहिने महथा राज देवान,
आजु सुहवल अचरज भईल कु अचरज एहसन कबे होखे जोग न बाई,
केनियां बादरि घटा ना लउक ताटे,
सुहवलि मुखले बादर ना गड़गड़ा ऽ त ।

धोबी की ताली की गरजन से बमरी परेशान

गद्य : बमरिया कहता—जे ए भइया ई का हालि ह हो, बादरि त कते लउकती नइखे ई काहे गरगरहटि उठलि बा, मंतिरी लोग कहल जे हाइ ठाकुर बइठ जाईं तनीं, बात के हमनीका जानतानीं जा ई बादरि नागर, जलिहऽ एगो पच्छिंव देस पचोतर, काबुल देस पंजाब, एगो आइल वा धोबी पच्छिंव के, चढ़ि गइल बा मोती सगड़ की बाट, सात दिन लेके गंगनी खेलवल, सभकर फूला देले बाटे गिरवाई, सब मरदन के चढ़िगईल जर गुडगुड़ी, सिरे धमक के बथल कपार, ऊहै बीर बा ताड़ी बा बजवले, ओही लेके सुरहन का नोकठ अड़ार, ताड़ी कहीं बजवले ऊ गरगरहटि ऊठल मुहवल में बाइ ।

नर्म जाति धोबी को झिंगुरी और भीमली पर
श्रेष्ठता देखकर बमरी का अपने पुत्रों को धिक्कारना

बामरि कहत बाजे वजर परो ना आ पूतवा सुनऽ गजवा भीमली,,
झिंगुरी पर गोरिति गजबवे ए के रे धा ऽ रि,

कहलनि जे काका महनइ न मथि न घललीं पिरिथिबी,
दुनियां आजु कांड़ी धलली पहिया ए लगाऽऽइ,
ईय बीर केवनाई अंगनवां में बा बसि रे गईल,
आजु तड़िया गरजत सोहबली में ना बाइ,
जेवनो आजु नरमि हउवे ना आ जतिया देखबऽ धोबिया के,
लुगवा के करत धोवइये लोग बाइ,
जेकर आजु अइसन होइहनि ना आ धोबिया भइया किलवा के,
ऊव बीरवा कइसन बईठल बाटे लेलएका ऽ र,
आजु हमरा डूबि गईल ना आ नइयां भइया झिंगुरी के,
देसवा में बीगरि आ गईल बा मरेजा ऽ द,
धोबिया जो धइ लेइ ना डहरिया साँचो अलवाबेल्हा,
अपना जो नगरेइ के ए करि हनि रे पया ऽ न,
कहिहन जे बजर परो ना रजवा रे बमरिया,
ईनिका अब गिरिहनि गजबवे के बबुया घा ऽ रि,
एगुड़ो नाहीं जामल बाड़नि ना आवीरवा भइया मांचों बमरा के,
कुल बीर गइहेइ ना लिहलनि अवएता ऽ र,
आजु जहिया रोवै लागल ना रजवा हो भइया बमरिया,
हमरी बुन से गदहन के ए भईलनि भइया अवएता ऽ र,
तब एनियां बायें लगलन ना आ मंतिरी जो समुएझावे,
दहिने जेवन बइठल बाड़नि ना महथई रे देवा ऽ न,
हो राजा आजु लिखि देबऽ ना आ पतिया रे अलवाबेल्हा,
भेजि देबऽ बबुरिय ना बनवांइ रे पहा ऽ ड़,
जहां आजु बाजति आटे ना आ तड़िया दादा ठकुरे के,
उनुका के गउरेह में लेबऽ ना ए बोल ए वाइ ।

गद्य : ए पंचे जब सुहवलि के बोलाहट जब होति आटे, त जब बीर बइठ गइल बाड़े आसनि पर बामरि, त कहत बाड़न जे ए भइया केहू बार क नांव जानता, आ गांव जानता, मंतिरी लोग कहे जे हमनीं का त देखहू ना गइली जा, जे कइसन ऊ बीर बा, बाइ जेतना नवहा बाडं स गउरा के सोहवलि में सबके बोलावल जाइ जे ओ बीर के नांव गांव पूछल जाउ, जे कहां धरह ऽ अब भइया पियादा जब छूटल बाड़ँ स नवहन के दुआर पर त, केहू आपन दोगा ओढ़ले सरवा जाई ।

आरे केहू अव डलले खोलि बा लेलका ऽ र,

केहु अब देह पर दुपटवा बा ओढ़ले,
आरे बीर लोग परल बेमरवा हो बाइ,
सभका ऊ लीलरा पर छापलि बा जेवाइन,
देहियाँ में अथवा रे गइल बा समाइ,
अब जब छूटल बा तिलंग रजवन के,
नवहन के भइल बोलाहटी रे बाइ,
तोहन लोग के बामर भइया बाड़े बोलावत,
तनीं अब धोबी के बताइ दऽ बुनियाद, अब बीर कंहरी के ऊठल अलबेल्हा,
केहू अब ले ले रजाई ओढ़ल बाइ, केहु भइया ओढि के दोगवा बाड़े चलल,
केहू खोलि ओढ़ले बदनियाँ पर बाड,
केहू भइया काली ए कमरिया डालि लेला,
अब जरचढ़ल गुड़गुडी ए बाड, सभका अब सिरवा पर छापल बा जेवाइन,
मरदन के घमकि के बथेला कपार,
अब बोर सोंटवा न लेइ के बाड़नि चलल,
हाँ हो दादा बमरी का पवने रे दुआर
जेवनी बेर चलल अब गइलन रे चलावल,
अब जहाँ परल कचहरी रे बाइ, सब नवहा अब ढुकल बंगला में,
ऊपरां जो तक ले बमरिया रे बाइ देखेला अब सांचे जो वेहाल मरदन के,
दंतवा में अंगुरी त बाटे हो चवा र :

गद्य : ए पंचे, जब नवहन के दसा जो देखत बा, त बामरा बा से दांत में अंगुरी दाबे लागल जे हाइ भगवान, जब सबके नवहन के अइठाइ के पूछताड़न जे ए बबुआ तनी कहऽ जा ई कुसलि सागड़ पर के ई काहऽ, का नवहा लो कहऽता

कहत लोबा जे ए ठाकुर एगो आइल बाटे ना ऽ ऽ,
आ धोबिया देखबऽ पछिवाँ ऽ के,
सातो दिन गंगनीय न दिहलसि ए खेला ऽ ऽ इ,
सभकर उखड़ि गईल बा नारवा हो देहिया में,
ईहै आजु नसिया इन गइलनि ना धुनऽऽऽऽइ,
ऊ धोबिया का गंगनिय ना खेलला से बा जरवा चढ़ल,
हमनी का बाथा बेधलेइ करेजवा में ना बाड,
हमनीं का खेलले हवीं जा गंगनीं सांचो झिंगुरी से,
तनिको ई दाब ए आईल त नाहीं ना बा ऽ इ,
अइसन आजु धोबिया गंगनियां हो ठाकुर खेलावल,

हमनीं क नारा उखरल बदनियां में न बा ऽ इ,
जहिया आजु सोचे लागल ना बीरया जो अलवाबेल्हा,
आ बामरि धइके दंतवा में कलमीं रे चबा ऽ ई,
हां हो गइला खेवनिय ना कोनवा में बीरवा ना छूटलेंन,
जेवनी बेर भीमला कांड़े अब गइल न आ संवेसा ऽ र,
जेकर आजु बाड़नि ना बीरवा आ दादा ए धोबी,
ओ राजा कइसन बाड़नि मिरुतेइ मंडलवा हो संवएसार ।

अजयी का अपने गांव गउरा का परिचय देना
और लोरिक और सांवर के बारे में बतलाना

गद्य : सोचता बमरिया जे हाइ हे भगवान, जेकर अइसन धोबी बा नरम जाति ह लूगा के धोवइया, करत होई किछु लड़त त होई, बाकी आई के दंगा कइ देहलसि सुहवलि में, आ नवहन के ई धरम करम बिगाड़ि दिहलसि, आ कहताड़न से हमनो का गंगनी खेलले हवीं जा आ झिंगुरी के, एतना दाव हमनो के कहियो ना लागल, त कहत बाड़ें जे ए बबुआ बताव ऽ स जे ऊ बतावेला जे कहां के ऊ धोबी ह, कहलन स जे ए ठाकुर बतावेला बाइ बड़ा अड़बड़ बतावेला, रउवां जब कलम उठाइबि त हमनी का कहबि त लिखिह ऽ, ना त एतना गांव के नाम ऊ धरेला अड़गुड़ जे बातन के कहइबो न करी, अब उठि के राजा बमरिया हाथ के कलम लेला उठाइ, आंगा जब पुरुजा ध देले बा भइया, आ नवहन से गांव जब पूछत बीर के बाई, का बीर लोग बोले, जे उत्तर बहलि बा देवहा दखिन गंगा दरे रे काछ, बीचे झील सरजू के, जा के बलिया मिले मोहान, बलिया भरत पुरबसे परगना बिहियापुर डंड़ार, ऊंचे चउर बरम्हाइन नीचे गउर गड़पाल, छोटा टोला गढ़ गउरा गल्ली तिरपन लगे बजारि, उत्तर टोल बभनइया दक्खिन झारि बसे कोइरान, पच्छिंव घर जोलहन के मंगल बसल बाड़ें पयठान, पुरुबे टोला अहरिन के सोरह से घर जदुवंसी झारि के बसल बाड़ी अहिरान, ओइजां खेती बारी ना होले ना झूमर चलै कुदार, घर घर खनल अखाड़ा, दुअरा परल दोहरिये माल, हंस हंसिन दुइ जोड़ी बीर के सांवर लोरिक ह नांव, लोरिक करीं कमाई गउरा सब भोगे एकउंजे राज, हम हवीं धोबी दादा लोरिक के चढ़ि अइलीं सोना सोहवली पाल ।

सुनीलं जे बमरा का लागि गइल ना दंतवा भइया बंग ऽ ऽ ला में,
ऊ नइयां सुनले गिरल धरतिया में ना बा ऽ ऽ इ,
कहेल ऽ जे धनि धनि ना पनियां बाटे गउरा में,
एगो रांड़ी पालि के कइलेह बा तइनाया ऽ र,

जेकरि आजु नरम हउवे ना जतिया दादा धोबिया के,
आ सुहवलि में नारा अब दिहलसि रे उखाड़ि,
सभकर आजु ऊखड़ि गईल बा नरवा भइया न ऽ रद के,
आ सभ नवहन के दिसवे गइल हो गड़बड़ाइ,
एनें अब दहतिय नाजरिया कई ना दले,
आ लस से जरवा गोतेइला लेलका ऽ र,
आजु एनियां हंसल वाटे मंतिरिया हो अलवाबेल्हा,
हमार दादा कहले से गइलं अउं ना जाई,
केकर आजु मइयइ ना खइले बा दुधवा कांड़रि,
केवन बीर बसुधा ले लेई बा अवनाता ऽ र,
केवन बीर खेलि लेई गंगनियां हमरा झिगुरी के,
जेवन ठाकुर बसल गेरुइया पर ना बा ऽ इ,
आजु ठाकुर लिखि देब ऽ ना पतिया तूं अलवावेल्हा,
आ भेजि देब ऽ गेरुवइ ना करिया हो पहा ऽ र।
आँ हाँ ऽ हाँ ऽ हाँ
आरे बाकी हिनु करि गंगा, तुरुक करि गोर,
भलि कामिनी संग छोड़लू अ मोर,
आरे देबो अब कहां गीत बानी गावत, अब कहां दिले परल बिसभोर,
बाकी आजु जेवना दीनकर पूजली तेवन घरी गइल निअराइ,
आजु कहिद ऽ कीरति मरदानन के जेकरी देसे बसल तरवारि,
अब देबी जेवन ऽ दीनकर पूजलीं, आंगांधरी गईल निअराइ।
सुनीलं ऽ जे बभरी एनिया रोई रोई ना, अ पतिया सांचो लागल ए लीखे,
ओही आजु सुहवलि न केरिया रे बजा ऽ रि।

गद्य : आजु लीख तांड़े, अगल बगल सिरनामा, बीच में दगल सलामी बाइ, ओरंगा पर लीखे नांव सुरुवां के।
कहत बा जे ए बेटा एगो पछिव ना देसवा ~ नजोत ऽ रि,
जेवनि आजु काबुल न देसवा पनेजा ऽ ब।

गद्य : आजु बलिया भरतपुर परगना आं निजु के बिहियापुर डंड़ार, ऊँचे चउर बरम्हाइन, नीचे गजन गउर गढ़पाल, छोटे टोला गड़ गउरा गली तीरपन लागे बजारि, उत्तर टोल बभनइया, दक्खिन झारि बसे कोइरान, पच्छिंव घर जो लहन के, मंगल बसल बाड़े पयठान, पुरुवे टोला घर अहिरन केऽ लेके गजन गउर फुलहारि, सोरह सें घर जदुबंसी झारि के बसल बाड़ी अहिरान, ओइ जां हंस

हंसिन दुनो जोड़ी ओइसे सांवर लोरिक दूनो भाई, सोरिक के करीं कमाई बेकति खाताड़ी गउरा केर बजारि ।
कहतियाड़ी जे ए बेटाएगो आइल बाटे ना
आ धोबिया देखऽ लोरिका के,
आ सात दिन गंगनी खेलले सुरहनी में ना बा ऽ ई,
मरदन के ऊखड़ि गइलनि ना अ नरवा बबुआ देहियां में,
आ जेकरि अब दिसवे गइलि बा गड़बड़ा ऽ इ,
आजु एनिया होखे लागलि ना आधा टटिया हो मरदन के,
जर आजु चढ़ल गुड़गुड़ी बबुआ बाइ,
अब बीर कोनवइं में ए मुंड़िया डालि के गिरि लो पर ऽ ल,
तलक धोबिया तड़वड़ ना ऽ दिहलति ए बेटा बजाऽइ,
जेवनी घरी बाजि गइल ना आ तलबा बाटे सु ऽ धरा के,
आजु बबुआ सुरवली बादरिये बाड़ी गड़गड़ाऽऽत,
ईहै अब धोबियई का गरजे से अलवाबेल्हा,
केतने ऊ गभिनीय गरभवा लो ढहि ना जा ऽ इ ।
आ ऽ जु बेटा जनम ना लिहलऽ, गदहा ले ले बाड़े अवतार,
आ तोहं लोग के गड़ि गईल सान सोहवल में,
लेके सोना सुहवली पालि,
कहलऽ जा जे महना मथीं पिरिथिवी दुनियां कंड़ली पाहि लगाइ,
केहू जोड़ी ना मिलल, लेके सोना सोहवली पालि,
छत्तीस हाथ के भाला सोहवलि में गाड़ि दिहलऽ जा, पानी छुवान,
ई गउरा केवना अनला में छूटि गइल जहां सिरजै मरद कर खांन ।
आरे बेटा जहिया धोबिया सुहवलि ना,
आ गउंवा हमार छोड़ि ना देई,
चलिय जाई पछिवेंइ ना देसवा हो पनेजाब,
आजु कहिहं स जे बेटी चोदिय ना आ रजवा ओही बमरा के,
ऊ सांन ससुरां गड़ले इ सुरहनीय में ना बाइ,
एगो आजु नरम रहलि ना आ जतिया भइया सोहवलि के,
चलिय गइल सोनवां इ सोहवली दहवापाऽऽलि,
आजु ऊहै जाइके इ गंगनिआं हो खेलावल,
नवहन के पनियांइना घललसि रे बिगाऽऽड़ि ।
आजु उखड़ गई नारा मरदन के

आरे जेकर दिसवा गइल रे गड़बड़ाइ, चढ़ि गइल जरवा गुड़गुड़ी,
सिरवा के धमकि के बयल रे कपार, आजु बेटा ई जनम नाहीं ले ल,
बमरा का गदहै लेलन स अवेतार, गिरि गइल सांन धोबिया के,
अरे बेरो सनवां न देले बा ऊखाड़, एहू के छोड़ि के पंवारा,
अंगवाँ आजु बढ़ी बाबा ना गनवां रे हमार ।

बमरी का झिंगुरी को गेरुवा पहाड़ से पत्र लिख कर बुलाना

आ ऽ हाँ ऽ हाँ
आजु जाही दीन के बातेहू आंगे सुनी समर के हालि,
सुनीं पंवारा बीर मरदन के, लड़वइया सेर जवान,
आजु लीखि के पाती बमरिया, उ धावन के हाथे देला धराइ,
चले ना ऊ फूल गेना, जाये के गेरुवन का पवन दुआर,
जहिया हाथ के पाती लेके गेना ।
सुनोलंऽ जे गेनवाँ एनों लेइ लेला ना आ पतिया पंचे सुहवलि में,
आ अब चलल गेरुवा न करिया रे पहाऽऽर,
तहिया आजु धइलिहलसि ना आ डहरिया जब रे गेऽऽरुई के,
नाही कतै पंयड़ऽई में करुवे हो मोकाऽऽम ।

गद्य : आजु चलल गइल चलावल, जूमि गइल गेरुवा करी पहार, झिंगुरी कसले रहल लंगोटा, ऊपर माल बरन के गाँठ, आ बीर मेहनत रहलि जमवले, ओही गेरुवर करी पहार, एही में जूमल धावन अलबेल्हा आ बीर सोहरि के दागे सलाम, ऊठि गईल हाथ दादा झिंगुरी के देबे लगल असिरवाद, कहै, जे जियऽ जियऽ हो पवनी जियऽ लाख बरीस, ओ खाड़ गंगा जमुन जल वढ़ो, ओइसे बरतो अवतार, आंखी अम्मर होइ जियऽ जुग जुग चलो नांव तोहार, तनीं कहऽकुसल दादा सोहवलि के, ओही सोना सोहवलीपाल, कइसे काका हमार बामरि बाड़ें, कइसे बहिन सती बाटे हमार अ कइसे हमार नगरी बसल बा भइया सोना सोहवली पालि, एतना कुसल तूं कहि दे बबुआ अ भले चलि अइले सोना सोहवली पाल, चतुर जात नाऊ के दसों जोरे नहरना, एक्के होखे चरन पर ठाढ़, कहे जे ठाकुर मोर बड़ि-यरा आ बीर मानऽ बाति हमारि, जो बातन-चीतन हम कहै लागब हमरे बहुत जाई भुलाइ ।
कहत बा जे ए ठाकर जेतना लीखलि बाड़ी नाऽऽ,
आ कुसलिया देखबऽ सोहवलि के,
एही अब लीखल पुरुजवे में ना बाइ ।

गद्य : आजु अपना हाथ के जब पाती धावन जब झिंगुरी के हाथ में दे दिहलन, अब जब झिंगुरी जब काटें गाठ कुलुफी के आंक आँक बिलगाइ। का लिखल बा जे—

अगल बगल सिरनामा बीचे दगल सलामी बाइ,
जब औरंगापुर लेके आंगा के नांव बाचताड़ें,
त लीखल बाजे उत्तर बहल माइ देवहा,
दक्खिन गंगा बहे लेलकार,

बीच के झील सरजू के जाके बलिया मिलल मोहान,
बलिया भरतपुर बसे परगना बिहियापुर मंझार,
ऊँचे चउर बरम्हाइनि नीचे गजन गउर गढ़पाल,
छोटे टोला गढ़ गउरा जेहि में तिरपन लगे बजार,
उत्तर टोल बभनइया दक्खिन झारि कुसे कोइरान,
पच्छिंव घर जोलहन के लिखल बा जेहिमें झारि के बसल बाड़ें पयठान,
पुरुबे, टोला घर अहीर के सोरह से घर जदुवंसी झारि के बसल बाड़ी अहिरन,
लिखल बा जे खेती बारी ना होले ना बबुआ झूमर चले कुदारि,
घर घर खनल अखाड़ा दुअरा पड़ल दोहरिये माल,
हंस हंसिन दुइ जोड़ी बीर के सांवर लोरिक ह नांव,
लोहन करी कमाई, बेकति भोगताड़ी एकउंजे राज।
लीखल बा जे ए झिंगुरी एगो आइल बाड़नि ना····
धोबिया भइया गउरा के,
सात दिन गंगनी खेललेइ सुहवलीय में बेटा ए बा ऽ इ,
आजु बटुरी नवहन के ए पनियाँ मोरना बाड़न बिगरले
नारा आजु ऊखड़ल ना आ मरदन के ना बाऽ इ,
आजु एनियां ऊखड़ि गइल बा आ नारवा भइया म ऽ रदन के,
अब जर गोतले इ सुहवली में बेटा ना बा ऽ इ,
अरे पछर्वा बा बाड़ी ना ऽ आ तड़िया देखऽ धोबिया के,
जइसे बेटा सुखलीय बदरिये हो गड़बड़ाइ,
ईहे बेटा तड़ियइ के ऊठलि हउवै गड़गड़हटि,
केतने सुहवलि गमितीय आ गरमवा हो ढहि ना जाइ,
आजु हमार बेटाइ ना अ जनम तूं नाहीं न लेलऽ,
गदहा का बुनवइ से भइल तोरा अवएता ऽ र,
नात बेटा मारि देबऽ ना धोबिया तूं अलवाबेल्हा,

सुहवलि में बनलि रहो ईजतिया हो तोहार ।

झिगुरी और अजयी का गंगनी खेल में मुकाबला

आ हाँ ऽ हाँ आजु बाकी जाहिए दिनन कर बातेह,
अब आंगे सुनीं समर कर हाल ।
आजु जरे बेटा बमरा के, जेकर गजे झिगुरिया नांव,
कहत बा जे आजु दइबा खुलि गइल नाऽऽआ तड़िया बाटे रघुबर के,
जोड़ी हमार जूमलि सुरहनी में ना बाइ,
अब चलि के मनवइं के पूजि मोर जाई मनोहरि,
पेटवा के ललसाइ ना जइहं ए बुताइ,
अब बीर सुनलेइ बा नइयां जब म ऽ रदे के,
अब बल भुजवाइ में अउरी नाई ललएकार,
जहिया जेंवन कसलेइ लंगोटवा बाड़न गेरुवा में,
अब धूरि छपलेई गरदने में भइया रे बाऽऽइ,
आजु भइया ऊठत बाटे नाऽऽआ सनवां जब ए झिगुरी के,
आपन डेंगा गरदनि में लीहलनि रे लगाइ,
अब बीर हिलि-हिलि ना आ पगुवा के जो लागल दावे,
अब बीर सुहवलि के कइलनि हो पया ऽ ऽ न,
एनें आजु खुनुसुनि माहुर ह अलबेल्हा,
ओकरा के कुँववाइ ना लउके हो ईनार ।

गद्य : आजु जरे मरद झिगुरिया अपना मन में करे बिचार, अतबल दीदा हो गईल सारे धोबी के, जे आइ के ताल हमरा सुरहन में देलनं बजाई, जहिया बोर जब खुनुसिन बाउर बा भईल, आ लेके चलल बा सोना सोहवली पालि, आ तबलक पंचे ए अलंग बबुरी बन जो परि गईल, जहां गाई सिराज चरावत बाइ, देखे रोब दादा झिगुरी के सिरुजवा पहुँचल पयंड़ा में बाइ, गरे डाले गर कंपा दसों जोरत नहरना बाइ, कहे जे भाई झिगुरी अ बीर मानऽ बाति हमार, भइया केकर काल गरेसल, केकर मउवत गइल निअराइ, केकरा पर तोहार ऊठलि गइल डेंगा ए दादा ।''

त झिगुरी कहत बाड़ें जे ए भइया अब कहंवइ ले कहीं ना रे तोसे,
पलंजर कहला पर बहुतेइ ना ऽ ऽ ओराइ ।

गद्य-पद्य । (डाँटि के) बोले पाठा झिगुरिया, सीराज के देताटे जबाब, कहे जे भाई मोर अलबेल्हा आ सीराज मान ऽ बाति हमारि, पच्छिंव देस पचोतर काबुल देस

पंजाब, एगो बलिया भरतपुर परगना बिहियापुर डंड़ार, हंस हंसनि दुइ जोड़ी गउरा सांवर लोरिक ले लेनि अवतार, ओही में एगो दादा जाति के लुगा के करे धोबाई जुमि गइल वा सोना सोहवलि पालि, सात दिन गंगनी बाटे खेलवले, नवहन के नारा देले बाटे उखाड़ि, चढ़ि गइल जर गुड़गुड़ी, सिर पर धमकताटे कपार, केहू गंगनी वीर खेले नइखे चढ़ल ओही मोती सगर की घाट, बाजि गइल ताल दादा धोबिया के, दल के गेरुवन करी पहार, आ ताड़ी करी गड़गड़हट केतने सुहवल गाभिन गग्भ गिर जाय।

कहत बा जे भइया तनीं देखि लेइं ना ऽ, आ धोबिया सांचों ग ऽ उरा के,
कइसन धोबी आइलेइ सुहवलिय में पंचे ना बा ऽ इ,
झिंगुरी आजु मारी दिहलनि ना ऽ छतिया हो अधेड़ा,
आजु झिंगुरी मानी जइव ऽ ना बतियाइ रे हमा ऽ र,
आजु भइया जाये देव ऽ ना बतिया ए तूंही जहनम,
अब गांन रहहू जोगीय त नाही बाइ,
जेवना तूं ए मरदन के नइयां बाड़ ऽ भइया ए ले ले,
ऊ जेवनी बेर वहकलि रहलीयस गइया रे हमार,
आजु हम खोजत खोजत ना आ गउरा में ले ऊ चलि ना गइलीं,
जहां बीर के सरउंजि ना बोहवाइ हो मंझा ऽ रि,
आजु भइया कंहवाइ ले करीं ल ऽ ए दादा बरनिका,
उ बरनिका कहले हुलुकत बा छतिया ई रे हमा ऽ र।

सती का बोहा में विवाह कर दिया जाय—
यह प्रस्ताव करने पर भाई सिरजवा से झिंगुरी की झड़प

कहे जे ए भइया झिंगुरी' अब तोहसे कहतानीं जे वड़ बड़ पइनि पुअइल ऽ अब मरल ऽ बड़वरे गाल।
आरे बाकीं हम देखली गा बीरवा आ अलवाबेलहा,
आरे लड़त रहलनि गजन गउरवे गढ़ेपा ऽ ल,
आरे ओकरा के धोबिया न धोबिया तू जनि बनाव ऽ,
आरे धोबिया ऊ लड़ने में बंकवा रे जूझा ऽ र,
आपन जो भइया राखे ए ईजतिया तूं आपन ए होख ऽ.
त फिर जइब ऽ बबुरीअ न बनवां रे पहा ऽ र,
आरे ना त जाइ के काका के अपना समुएझाइ द ऽ,
जे ए काका आजु मानि जइबा ऽ ना बतिया रे हमा ऽ र,
चल ऽ अब खोजे चलीं जा आ बरवा हो गउरवे गढ़ेपा ऽ ल,

जइलन आजु ऊगलि, बहिन बा अलवाबेल्हा,
ओइसन पाहुन ओकर बइठल बोहउवे मे रे बाइ,
आजु एनें जरि गइल बदनियां बा झिगुरी के,
गारी आजु देत सिरजवो के ना बा ऽ इ,
कहत बा जे सिरजवा हमरी अंखिया का अन्हवा तूं होइ न जइब ऽ,
सरऊ अब फाटि गइल ना गंड़िया रे तोहार,
आजु हम मारि देइब ना धोबिया रे गंगनी में,
उनकर सांन तोड़ि दी एहि घरी सोना मुहवली दहएपाल,
कहत बा जे अच्छा एहिजां बड़ बड़ पइनियां तूं भइया पुवा ल ऽ,
आ चलि जइब ऽ सुरहनि का नीकठ न अड़ार ।

गद्य : जो हो जाई भेंट बीर से त तोहार मुंह के गलसटका जाई भुलाइ, एइजां बड़े बड़े बात बतियावताड़ ऽ, ओइजां जब लोहा पर तोहार सांन ढहै लागी, अ हमरी कहल के नइखे मानत न जा तोहार मन के पूरन होई जाउ ।

झिगुरी और अजयी में मुकाबला —

पराजित होते हुए झिगुरी का धोखे से अजयी का पैर फंसा देना

अजयी बुरी तरह घायल

आं हां ऽ हां,
कहलींय जाहि दिननवां करि जो बातेह्, अंगवें सुनीं समर के तनीं हा ऽ लि,
जहिया उठवे जो सनवां झिगुरा के, चललेंनि सोनवां मुहवलि दहपा ऽ लि,
जइिया चलल न बीरवा सुहवलि में, एहिया सोना सुहवलीय दहेपाल ।
आजु हरगे हरग मुंह तोडे, आ वीर जब परगे दबावे थाल,
जेवनी बेर बींर धावल धूपल जब बीर गइल हउवें,
आ जब पहर छ घरी दिन रहल तबलके झिगुरी जूमि गइल बाडे सुहवलि में ।
सुनीलं जे एनिया जब जूमि गइल ना, आ पूतवा भइया बमरा के,
सुहवल के लड़िकी रोवै लगलीं ना, आ मथवा ए पंचे ओन्हा ऽ इ,
कहस जे ए सखी आजु बुतइलूय ना, आ आगिया हमार धधकि रे गईल,
बादिय आजु लउकल नजरिये से न बा ऽ इ,
कहिया आजु जूझि जइहनि ना ललनवां सांचो बमरा के,
जे सुहवलि में हमनों के होइतन ए बिया ऽ ह,
रनिया अपना बादिय केइ ना अंखियां बाड़ी सांचो ना देखले,
अ घाव लोग का लगलो करेजवे में हो बा ऽ इ ।

गद्य : आजु धरे डहरि झिंगुरिया, चलि गइल सोना सुहवली पाल, ऊंचे गादी लगल

रहल बामर का, नीचे रोहल बाटे दरबार, आ बीर सोहर के माथ ओन्हावे, बामर असीसत बाइ, कहे जे जीय जीय हो बेटा, जीय जीय लाख बरीस औ खांड़, गंगा जमुन जल वढ़ो आ गोबरतो आवो तोहार, बाकी बेटा बड़ि बड़ि पइन पुअइल ऽजा, मरल ऽ बड़वरे गाल, भीमला मथलसि पिरिथिमी जे हमरा सांन के, मरदन ना केहू सिरजल मिरुत मड़ल संवसार, आ तू कहल ऽ जे काका केहू बीर नइखे जामल, जे हमके गंगनी में देई खेलाई।
त झिंगुरी तोरा आइल बाटे नां आ जोड़िया देखबे सुरहन में,
एही दह मोतीए सगड़वे किय ना घा ऽ टि,
आजु बेटा तोरि दिहलसि ना आ अ ससवां साँचो नवहन के,
सबका जर गोतलेइय सुहवलि में बेटा रे बा ऽ इ,
एनियां आजु उखड़ि गइलन ना नारवा देखबे नवहन के,
दलकि के सिरवा के बथलन ए कपा ऽ र,
आजु हमार बेटा इ जनमवां तूं ही नाहीं न लेल ऽ,
हां हो लालन गदहाइ लेला ऽ तू अवेतार।
आजु भइया लागल जब धिरकारे बामरि,
झिंगुरी नीचे मउर जब देलें, अ नोर हुलुकत नयन से।
सुनीलं ऽ जे झिंगुरी जाइ के दुसरै बंगलवा में बइठि बा गईल,
ओही जाइके सोनवें सुहवली दहे ए पाल,
आपन भइया छोड़त बाटे पियदवा जब रे सुहवलि में,
आपन ऊहे नवहन के बोलवतो ना बा ऽ इ,
जहिया एनियां घूमे लागलि दोहइया जे झिंगुरी के,
सुहवलि में आइ गईल ना बयवा रे हमार,
ए मीतवा आजु खेले केइ गंगनिवां परी सुरहन में,
सब जमा होख सोनवां मुहवली दहवा पा ऽ लि।
आजु जब जेतना नवहा बाड़ें सुहवलि के,
सब सिर के धोवत जेवाइन लो बाड,
जब घुमल पाती त नवहा लोग बाइ, से सिर के जेवाइन धोइ के,
आ करेजा में छाती लोहा बान्हि के,
आ बीर हाथ के लंगोटा लो ले ले बा एक हाथे जंघिया लोग लेला उठाइ,
जेतना नवहा अलबेल्हा सभ बीर,
कान्ह पर लिंगोटा धइके जूमि गइल झिंगुरी का पवन दुआर।
हारे भइया जहां बइठल बा बेटा न बमरा के,

आरे जेकर गजने झिंगुरिया बा नांव,
जेतना नवहवा सुहवल के अरे सब सांचो के गइल बा बिदुराय,
हंके न बेटा हो बमरा के अब मीता मानि जइबे बतिया हमारि,
कहु तोरा जंघिया में घुन लगि गईल, किय भुजा घटिय गइल रे बलुसाइ,
तनीं आज कहि द ऽ खेला न सुरहन के, कइसन धोबी आइल सुरहनी में बाइ,
तब भइया बोले लोग मरद अलबेल्हा,
आजु बोल पट्ठा अलबेल्हा तोर तोर तोर दे तांड़स जबाब,
कहलें स जे सुन ऽ सुन ऽ ए झिंगुरी मनब ऽ बाति हमार,
तोहरो से हमनी का गंगनी खेलली हईं जा,
ओही ले सुरहनि में मोती सगड़ की घाट,
कहां ले धोबी के करी बर्गनिका, ओ बल के थाह नाहीं बुझात,
जेकरा पर मारि दे लप्पड़ अलवेला, ऊ बीर झंडा नियन गइली बिगाय,
तड़कल हाड़ छाती के, ओने सबकर गइल बाटे (करिहाव ?)
कहति बा जे ए भइया चलि के देखी लेवऽ ना आ बलवा सांचो धोबिया के,
जेवन बइठल मोतिये सगड़वे की ना घा ऽ टि,
आजु एनिया जरि गईल ना आ देहियां पंचे झिंगुरी के,
अब नयना रोघिले ना भइलनि रे समा ऽ न,
जहिया बीर छरकिय के ऊठलवाड़ अलवाबेला,
बमरी का बिड़वेइ लगवलेइ भइ‍ा ए बा ऽ इ,
सुनोलं जे झिनुरी आजु लवलेइ ना बांड़वा न बाड़न उठवले,
लोहे के अब बीड़बइ ना आ दंतवा में चबा‍,
कहत बा जे काका तोड़ी देईवि ना सनवा हम रे धोबिया के,
जेवन बीर अइलेइ सगड़वा पर बाबा ए बाइ,
बाबा आजु थोरे थोरे न कंड़िया हमारि लागति ए खोले,
जेवन गरवा छोड़ि दिहलनि ना संगवा र हमार। हाँ ऽ ऽ हाँ ऽ
अब पंचे, हिनु करि गंगा तुरुक करि गोरि भलि कामिनि संग छोड़लू य मोर,
अब देबी कहां गीत बानीं गावत आजु कहाँ दिले परल बिसभोर,
देख ऽ अब जेवना दीन कर पुजलीय तेवनि घरी गइल निअराई,
थोरे अब कहि द ऽ कीरति मरदन के, अंगवा ई धोबिया के परलनि रे बयान।
आजु बिगड़े बेटा बमरा के, जेकर गजे झिंगुरिया नांव,
उलटा कसे लंगोटा ऊपर माल बरन के गाठि,
घींचे पेटी अजगर के जेहि में गोला जुमुस ना खाइ,

आजु भइया मुठी धूर लगावे गरदा छापत गरदन पर बाइ ।
सुनीलं जे आजु जेतनाइ ना आ नवहवा रहलन सुहवलि मेंऽऽ,
झिगुरी सबके संगवां में लीहलनि ए लगाऽऽइ ।
अंगा अंगा जब झिगुरी, पांछा नवहन के लिहलन लगाइ,
छोड़ि दिहलनि भइया गांव सुहवलि आ बीर सुहवलि में गईलबाटें हेठिआई,
देखे बीर अजइया बईठल ओही मोती सगड़ की घाट,
उठि गईल सांन पट्ठा के जेकर बली अजइया नांव,
ऊलटा कसे लंगोटा ऊपर माल बरन के गांठ,
घींचे पेटी अजगर के जेहि मे गोला जुमुस ना खाइ,
लेके धूर लगावे गरदा छापत मउर पर बाइ,
अ बीर ऌठको करे बइठकी डंड घीच देला लेलकार,
फुलि गइलऽ सांन मरद के, गज मे छाती नहीं जमाइ,
अंइठल अंइठल वा पिंडुरी जाइके घूमे कबुज केर हाड़,
फूलि गईल सीना धोबिया के अबदेहि गोला नियर गईल बुझाइ ।
सुनीलंऽ जे अंगवां झूमत रहलनि आ पूतवा भइया बमरा के,
धोबी आजु फनलेइ गंगनियां मे वा लेलएकार,
आजु एनियां जूमि गइल ना आ गोलवा भइया झिगुरी के,
अव लोग धोबियाइ के देखत बाड़ें लेलएकरऽऽर,
आजु भइया झिंगुरीय का आ अंखिया लागल टकवाटकी,
मुंहवा पर फेंफरीय न गइल बा छितरेराइ,
अव बीर देखत बाडं ना रोबवा साचो धोबिया के,
आजु घइके दातवइ मे ए अंगुरी हो देलनि लगाइ,
ईत आजु मोरी बेरियइ की बेरिया मोरि बरजल सोरजवा,
जेवर कपरां परले सगड़वा पर ना हमरा बा ऽ इ,
एही आजु बोधियाइ गरहानियाँ के मोर दादा मरद,
नाहीं कतें लउकल न भिरुते में ना बाऽऽइ,
बाकी झिंगुरी गंगनिय में ए जूमलनि अलवाबेला ।
अ धोबिया ऊ मेहनति जमउले न भइया रे बाइ ।
आ बोर लेइ लेइ मेहनत रहल जमउले, झिंगुरी जब जूमि गइलें पहलवान,
जाके खड़ा भइ लें गंगनी पर, एनें पट्ठा बोलल झिंगुरिया बाइ ।

गद्य : का बोलल हऽ, बा जे हे भइया नवहा अद्धा चलि जा जा धोबिया, के गंगनी पर, आधा हमरी ओर ठठा ऽ जा, अब होई खेलि अलबेल्हा, लेके लउकती सगड़

के घाट, जेके राम दिहेन से लेई, सुरहन में ले ली हैं ऽ
सुनिलेइ जे एनियां आ घइ ना नवहवा रहलन सुहवलि के,
जाके बबुआ ठटले गंगनियें में ना बा ऽ इ,
आधा नवहा जाइके, झिगुरीय गंगनिये में लोग ठटि रे गईल,
आधा जाइके ठटल धोबियवे की ओर ना बा ऽ इ।
आजु छरके पठा बघेला जेकर बली अजइया नां ऽ व,
रन में चकर लगवलस जइसे मंइसा बेरो गुरूजल बाइ,
दिहलसि ताल गंगनी में, जाइके दरकल गेरुवन करी पहार,
जब बाजि गइल ताड़ो धोबिया के गंगनी पर चढ़ि गईल बाटे लेलकार,
जेवनी बेर फानि के पहुँचल बाटे झिगुरिया ओहि लेके सोना सुहवली-पार,
दूनों बीर का देखादेखी हो गईल, लड़ने में रहलन बांक जूझार,
अब देले ताल बाटे अजइया, जाइके थापा मारत झिगुरी के बाइ,
झिगुरी जब बीर पाछा याड़े बिगाईल, आ जाइके लौट गइल धरती पर, (बाइ)
सुनेली जे ए धोबिया ओनकी छतियइ पर एड़वां सांची दाबि बा देले,
आ फानि के अब गंगनी में गइले अ अपना पराऽऽइ,
आजु ओहिजां आइ गईल ना अब झंडवां रहल भइया झिगुरी के,
आहा दहबा बिगड़ि गइल न गंगनिया रे हमाऽऽर,
अब बीर के बटि गइल बा आ सनवा भइया अलबाबेल्हा,
जाके अपना हो गइल गंगनियें में ! ठाढ।

गद्य : जब ठाड़ हो गईल बा त धोबिया जाइ के अपनी गंगनी में रचि के फेरु मेहनति करे लागल आ सोच हो गईल मन में झिगुरी का हाऽ भगवान, अइसन बीर से सचहूँ भेंट ना भईल तब का कहले हउवन झिगुरी ·

कहत बाड़ें जे आजु जागऽ जागऽना आ अवघड़ हमार सुहवलि मे,
सुहवली में अवघड़ खइले बाड़ऽ ना पूजवाई रे हमा ऽ र,
आजु अवघड़ जेवुनाई ना हां दिनवा के मों बानी ए पूजले,
सुरहनि अधजल परो गइल ना मटिया रे हमा ऽ र,
एनें आजु झिगुरिय ना आ अवगढ़ बाड़ें सुमिरले,
तबलक धोबिया गंगनीय मे ए बान्हत बाटे ले लऽएकार,
तबलक अवधड़ जूमिये गईल बाटे गंगनी में,
तबलक तलवा धोबियइ न दिहलस रे बजाइ,
आंगा जब झिगुरीय गंगनियां में जब चढ़ि ना गइलं,
तबलक धोबिया चोट मारे ना चलल बा लेलकार।

आंगा जब झिंगुरी रे संभइया रन में जब लड़ने के ग इल हउवें,
आ पहुँचि के बीर मन जे मारि देई एनका के फेर अधेड़ें इनकर-
बदन दुए टुका होइ जाइ,
रोस बान्हि के जो चलल अजइया बाकी होइ गइल धोखा अलबेला,
जेगों पहुँचि के मन करता मारे के, अवघड़ि गोड़ घइके फँसा दिहलनि,
सुनिलंऽ जे अवघड़ि एनियां घीचि दिहलनिना,
आ गोड़वा भइया धोबिया ऽ के,
तवलक झिंगुरी एंड़बाइ ना मरलसि सांचों लेलएका ऽ र,
आजु अइसन उछड़िय के एड़वा बीरवा मारि बा देले,
धोबिया के बदन गड़लूय गरदवा में ए पंचे ना बा ऽ यू,
ताहिया बीर का आई गइल ना आ गस्ती उनुका देहिया में,
धोबिया के दांत लागल सगड़वा पर ना ओने ना बाइ,
अब नवहा जय जय ना बोले लोगल गंगनी में,
धोबिया के केहू नाहीं ना हितवा न ओइजा ए बाइ,
धोबिया के मबही गंगनियाँ में बा छोड़ि ना देले,
सभ बीर सुहवली का चललनि हो बाजार।
पंचे जाही दीन के बातें आंगे सुनीं समर के हाल,
सुनीं पंवारा अब सोहवलि के लेके सोना सोहवली पाल
जेवनी बेर छोड़ि के गंगनी में धोबी के आ सभ बीर,
चलि गईल बा सोना सुहवली पालि,

कुछ युवकों की सहायता से मक्खू धोबी द्वारा
अचेत और घायल अजयी को घर लाया जाना।

वाई जाति के धोबी ओइजा मखुआ रहल,

गद्य : आ नवहन क जेवन दाया बाटे ऊ जाइ के कहत बाटें स, जे ए मक्खू एगो जाति के तोरा धोबी आइल बाटे, ओके झिंगुरी एंड़ मारि देले बा, आ गंगनी मे ऊ गीरल बाटे, ओकर के हू दाई नइखे,

त मखुआ बो कहतिय बा जे ए सइयां तनीं लेइ लेबऽ ना,
नवहवा दादा सुहवली मेंऽऽ,
ओ बीर के मंचोलना पर लेइ तूं आव ऽ ऊठाइ,
जे दिन ऊहै जीयत रहिहैं ना ऽ बचवा हमार गउरा के,
सुहवलि में सेउवा करे इ के बरियार,
सुनींल, जे मखुआ लेइ केइ ना ऽ, नवहवा चलल सुहवलि के।

ले चलल ह् धोबी, जब चलल बाटे मखुआ, अ भइया सोना सुहवलो पाल,
अ खाटी के मचोला बना के, ले के गइलन सुरहन केर बजारि,
जहां भइल रहल गंगनी सुरवां से,
ऊ बीर गिरल धरती में बाइ,
लोटा में जल लेके मखुआ पहुँचि गइलि सुरहन में बाइ ।
सुनींल ऽ जे मखुआ धई घई ना दंतवा लागल भइया छोड़ावे,
अउरी बीर धइके ऊठावते न लोग ना बा ऽ इ,
तहिया आजु त्रिरुवइ से ए जलवा भइया देइ बा देले ऽ,
धोबिया के हलके ना गइलन हो जुड़ाइ ।
टांगि के पठा अजइया के, नवहा लोग लेके धरत मचोला पर बाइ,

गद्य : अ भइया मचोला पर धइके आ नवहा टांगि के लेके लोग आइल ह सोना सुहवलो पालि, मखुआ बो बोलतिया जे हे बेटो बीजा आ हे सरासरि, कउनों चलि जा स कोइरी को कोड़ार में, आ केउनो गोंड़ के जइबू स भरसांइ ।

अरे अब देइ देई जा आ लोथवा एही सूघरा के ऽ
देहियां इनिकर गतरि गतरि गइलीं रे धुना ऽ इ,
सुनलीं जे बीजवा कोइरीय कोड़रिया में बा चलि ना गईलि,
सरासरि गईल गोंड़वइ का रनियां रे दोका ऽ न,
सरासरि आजु लेले बाटे ना आ बलुआ भइया गो ऽ ड़िनी से ऽ,
बालू लेके अवतूय सुहवलीय में न: बा ऽ इ,
सुनींल ऽ जे बीजवा लेइ केइ ना भंटवा बाटे कीनति अब रानी,
भांटा लेके पहुँचलि ना सोहवली का बजारि,
ए पँचे, एनियां धोबियइ पलगिया पर उ रहलन सूतावल,
अ बीर का अपना देंह के खबरिया नाही न बाइ,
मखुआ बो चोकरेइ के प ऽ टिया जब लागलि ए बान्है,
सरासरि बालू के पोटिया इय बान्हति बा॰लेलका ऽ रि,
सरासरि अब फारि देहलसि ना अ भंटवा भइया सुहवलि में,
ऊ रानी भांटा के लोथवइ ना ऽ दिहलसि रे बनाई,
एगो जब बोरसिय ना ऽ लेके बा बोजा ए बइठल,
सरासरि एगो लेलही बोरसिया में ना बाड़ी रे आ ऽ ई,
एगो अब मखुवइ बो, बोरसिया न बाड़ो लेल ऽ,
अब रनियां ठहुवइ ना ऽ देलीं स बइरेठा ऽ ई,

6

अब रनियां देबे लगलीं स लोथवा जब रे धोबिया के ।
आजु एक बेर पचे सरासरि जब लोथा लगलि चलावे,
आरे एक ओर बीजवा घुमवले रे बाइ,
एक ओर मखुवा बो लोथा ए चलावे,
आरे बीर के जब देहियां पर बाड़ें रे दीयात,
तनीं सुनि ल ऽ बयान सुहवलि के,
अब बीर गिरल पलंगिया पर बाइ,
जब सात दिन लोथवा बा चललि,
तब अंखिया खुललि अजइया के भइया बाइ ।

लोथा चलाकर मक्खू की पत्नी और पुत्री विजवा द्वारा अजयी की सात दिन सेवा धोबी की बेहोशी दूर होना

गद्य : सात दिन जब रानी लेके बदन पर लोथा घुमवलीं, अ सतवां दिन तब नयन जब उघरल, त का कहतिया म ऽ खू बो, हाइ बेटी सरासरि आरे हमरा बचा के सात दिन पर नयन खुलल बा, थोड़े हलुआ पतरे बना के ले आव ऽ, हलुआ ले आव ऽ अ बीर के अंगुरी चटावल जाउ, अब हमार बच्चा की खेरि बांचि जइहै, मरिहैं नाहीं ।

सुनीलं ऽ जे एनियां ऊठि गईल न ऽ आ घियवा बाटे मक्खुआ के ऽ,
जेवना के बीजवे सरासरी रहलि ए नां ऽ व,
आजु रनियां लेइ लिहलसि न ऽ दमवां देख ऽ दिल ऽ वा मे,
हथवा के जब घुरुला जब लिहलसि ना ऊठा ऽ इ,
आजु रनियां धइलेइ डहरिया सांचो चलि बा गईलि,
चलिय गईल अहरिन का आ पवने रे दुआरि,
आजु रनियां कीनति आटे न ऽ घीउवा जो ए भंइसिन के ऽ,
अपना ऊ लेलहीय कुरुलवा में ना बाई,
आके जब सुहवलि में लेहलसि ए कराही,
घीव अब रेलि के डालति बा आ अधिनाका ऽ र,
सुनीलं जे पतरेइ हलुववा रानीं बाटे बनवले,
हलुवा जब बनलूय सुहवली में भइया रे वाइ,
आजु रनियां ले ले बाटे न थारी जब अलवाबेलहा,
हलुवा जब लेलही थरियवा में ना बीजा रे बाइ ।
आजु चले बेटी मखुआ के, जेकर बीजा सरासरि नांव,

हाथ के भइया धारी लेके जल लेले गड़ुवा में बाड़,
चललि बेटी मखुआ के बींजन लेके पहुँचल धोबी कगरी में बाड़,
अब रानीं गड़ुआ जल जबधइके, आ वीर के उठावे,
सुनीलंऽजे धोबिया के देति आटे गड़ुववा सांचो हथवा के,
कुल्ला ऊहै करत पलंगिये पर ना बा ऽ इ,
बीजवा ऊहै अंगुरिय अ हलुवा लागलि भइया, चटावे,
धोबिया ऊहै चाटत बा हलुववा लेलाका ऽ र,
आजु भइया लागल बाटे ना आ एंड़ा सुनबऽ झिगुरी के,
अब भइया हलुवा चाटत अजइया ले ना बाड़ ।

सात महीने हलुवा खाने के बाद अजयी का चैतन्य होना

गद्य : अ भइया, केतना दिन हलुवा चटले हउवेंन आ त जवनीबेर एंड़ जब लागि गईल, त एक एंड़ का लगला मे सात महिन्ना बीर हलुवा गुड़चटले हउवें, तब देहि टुकटुकाइल अजइया के, अब भइया अजई हाथ के सोंटा लेके, अब दीसा होखे लागल मयदान ।

एही में आजु छत्तीसइ बरनवाँ के ऊ जूमलि लोग बेटी,
चलि गइली स मखुआ का पवने रे दुआ ऽ र,
कह स जे आजु मखूबो हऊ ना आ माई तूं रे सखिया के,
आ सुहवलि में लागेलू भयना रे हमा ऽ र ।

गद्य पद्य ; का कुहतियाड़ी स छत्तिस बरन के बेटीआ बिटुरा लोग गईल आ मखुआ का पवन दुआर, कहँ से जे हे माता, तिरिया क दुल्ल तिरिये जानेला, आज अपना पति के भेज देतू, बमरा किहें जे मारल मरद बा ओकरा के दूनों के हम सादी अपनी लड़की से हम केके देई ।

त ए माता अंगवा लागि जाई त लगनियां जो रे सुहवल मेंऽ,
ऊ पपिया पछवाँ हमनो के होखे ना देईत बियाह ।
बेमतलब के भइया केहू ना आवे,
छत्तीस बरन के बेटी अपनी मतलब गुने सब धोबी किहें अब बेटुराइल लोग
आ ऊ कहे जे देखऽ जा, ई नाँव जन चलावऽ जा.
ना त का जने कउनो चुगुला उगला सुनि
जाई त राजा से खबरि जोजना देई, त ऊ
बमरिया हमरी पती के उलुटा मुसुक चढ़ाई,
मुँह में गोबर देई ठुंसवाई,

कांचे कइन कटा के देह के बोकला घाली छोड़वाइ,
नहन ठोंकि देई खपचाली भहुँवन टेकुरी देई गड़वाइ,
उलटा बांह चढ़ा के डगरहीं देई गिरवाइ,
छत्तीस हाथ के भाला हमरी पतीका सीना देई दबवाई,
ई बयान जनि करत जा ए सखी लो ।

विजवा और अजयी के विवाह की मखुआ और उसकी पत्नी द्वारा गुप्त तैयारी

ए पंचे, एनियाँ तनीं सुनि लेबऽ बयनवां सांचो सुहवलि के,
आ लरिकी लोग बेकल भईल बा लेलकाऽऽर ।

गद्य : अब एक दिन के के चलावो, हर घरी कह स, अब कहत कहत मति के के न टरि जाला, कहलसि जे अच्छा सखी अब कहति आड़ जा, त आजु हम बचन के कहतानी, पती जब अइहै न हमार, त बीजन के बइठिहै त हम जरूर कहब जांके बाइ कहला में बहुत ऊरेब बा ।

त कहंऽस जे ए माई तिरियइ की हलिया सभ बा तिरिया जानत,
ऊ मरद का जनिहैं स सोनवाँ सुहवली दहवापालि,
ए माई दिन भर हंसतेइ खेलतवा में ऊ बीत ना जालऽ,
आ रतिया खन धधके ले अगिया लेलका ऽ र,
हमनीं के मटिया इ आ थधवा में ई दइबा डललनि,
केवनों जोड़ी नाहीं लउकलि भिमलिया के ना बाइ,
कहसऽ जे ए हमनीं के देहिया बेचयने में रहे ले ए सुहवलि में,
कुल्हि बीरवा गदहे लेलनि स आ अवएतार ।

हाँ ऽ हाँ,
आजु पंचे, एइजां करीं पंवारा, अब हऽरना के करत बानीं बयान,
तनीं सुनि लीं सभै खेला अब सुहवलि के,
सुनीलंऽ जे अ मखुआ बो ऊ रचि रचि बिजनिया रानी बाटे बनवले,
सुहवलि में बींजन करति बा तइनाया ऽ रि,
तलक मखुआ लेइ केइ ना, आ लदिया जूमल घटिया ले,
आ ओही नगर सोनवां सुहवली दहवा पा ऽ लि,
सुनीलंऽ जे लोटवाइ में ऽ ए जलवा धोबिय लेइ बा ले ले,
हाँ हो सइयाँ, बेरो अब न गोड़ हाथ धोवे ला लेलना कारि,
हम तबलक खोलत बानीं ना लदिया देखब गदहा के,

तनीं सइयां कइ लेब ऽ ना एइजां तूं ए जलवा दान।

गद्य : तब मखुआ कहता जे ए भाई ई त हमार आज बड़ा सेवा हो ता, अइसे त कहियो ई ना पूछति रहलि हऽ आजु त ई लादी लेके कहतिया जे हम खोलतानी आ ए जल पींय, कहतिया जे केवनो हरज ना, बाई आजु नीयर कबे हमार इस्तिरी खूस होइ के हुलसि के जल ना देले रहलि ह, अपनी मनमें मखुआ सोंचि के आ गड़ुआ के जल ले के, आ धोबिन बा से लूगा खोलि के आदेतिया गदहनि के, लादी छटका दिहलसि।

अरे मखुआ बो हंसि हंसि ना आ बोलति बाटे सुघरा से,
हां हो सइयां मानि जइबऽ बतिया रे हम ऽ ऽ र,
आजु सइयां जलबेइना पानियां तूँ कइ ना लेब,
अपने जाइ के दिसवा होखइ ना मयरेदा ऽ न,
आजु तनीं खाइ लेब ऽ जेवनवा अलवाबेल्हा,
जेवन हम रचि के करीलें ऽ तइएयार,
आंगे आजु धोबियाइ के भगिए में रहल खिअवले,
दूनों आपन लड़िकी के देले रहल भइया सुताऽऽई,
दूनों लड़िकी दूसरा बखरिया मे रहल लोग सूतल,
आ अजई उहे सूतले दुअरवे पर ना बाई,
धोबिया जो दिसवा मयदनवां बा होध ना गईल,
ओही जाइ के सोनवांइ मुहवली दहबा पा ऽ लि।

जेवनी समें में दिसा मयदान जब होके बीर जब आवत ताडे ओ टेम में किछु राति अब चलि जातिया अधिका, आ अब घर घर में सूता परि जाता।
घर घर सूता जब परि जातिआ त लेके गड़ुआ के जल धोबिन घरावतिआ जे हे पती चलि के खाई लेब ऽ जेवनारि,

जब धोबिया हाथ गोड़ धोइके आ ठहर पर बइठ ताटे आ धोबिन बज आंगा थरिया अपना पती के आंगा टारि के,
आ बइठि के कहतिआ जे हे पती आजु हमरी कारज खातिर तोहरा के एतना आरती कई रहल बानी जे कारज के तनीं सुन ऽ,
का आ त जेवन झिंगुरी मरले बाड़नि ना आ संड़वा ऊहै मरदा के,
ऊ जाति के लड़िका लगलनि मिरुता रे हमा ऽ र।

गद्य : ए सइयां काल्हि भोरे कचहरी जो चलि जइत ऽ, आ राजा से अरज लगा के

अपनी लड़किनि के दूनों सादी क देतीं जा, हुकुम देतें त ऽ। जरे बजर धोबिया
के जे कूदि गईल बयालिस हाथ।
हाँ हाँ आरे पंचे, आजु हिनु करि गंगा तुरुक करि गोरि,
भलि कामिनी संग छोड़लूय मोर,
अब देबी कहां गीति बानीं गावत,
अब कहां दिल ए परल बिसभोर,
जेवना दिन कर पूजलींय,
तेवन घरी गइलि निअराइ,

गायक का आत्म-कथन— मेरा शरीर अब शिथिल हो गया है

एनें अब गावत गीति छुटि गइलींय, खांखरि भइलीय बया हमार,
आजु देबीय बनले पर बाडू संगी, बिगरला पर छोड़ि देलू संग हमार,
जे दिन संग धइलू मिरुता में, ते दिन देबी गावत बानीं ना गनवां रे तोहार।
आजु जागे भागि बेरी भवानी, जूझि के चलऽ दुरुग मुनि माइ,
आजु गीती बेरी सुरसत्ती, झऽटपट जीभा होखऽ तइयार,
देह के दिमाग दुनियां में, हमार देबी तोहरी चरनि बलिहारि,
बइठि गइल मेंड़रि पंचन के छोट बड़ि एक समान।
आरे देबिय हमार सभ दीनि ना हुकुम के वाड़न लगवले,
आ अधजल में परलि बाड़ी डेंगिया रे हमा ऽ रि,
ए देबी हमार खेइ खेइ ना आ परवा तूं मोहनी लगाव ऽ,
ना त अधजल छोड़ि देबू डेंगियारे हमा ऽ रि,
ए देबी, दुनियां के देह केइ घमंडवा भईल बसुधा में ऽ,
हमारि देहिया तोहरे अलमवां पर नऽ बाइ,
आजु बनला पर दुनियांइ ना हितवा हो देबी भेंटाला,
आ बिगड़ला पर अब केहू नाही हितवा रे भेंटाइ,
ए देबी तोहरी, केवनी भगतिया में हम चूकि रे गइलीं,
जे सभवा में छोड़त बाड़ऽसंगवा रे हमारि,
आजु पंचे सुनि लेबऽ ना खेलवा हमरी देबिया के,
जेवन हमरा जीभे पर होइहनि ना तईया ऽ ऽ रि।
आजु जागे भाग करी भवानी, आरे जूझि बेरो सिरवा दुरुग मुनि माइ,
गीतिया बेरी न सूरसतिया, आरे सांचो जीभवा होलीं न तइयार,
कहलीं जे गावऽ गावऽ बबुआ अलबेला,

थोरे अब सुनि लेइँ कनवां लगाइ,
खइलीं पूजा न सुरुवां के, देसवा में गहले वानीं न तरवार,
जेवना कोना लागल महाभारथ,
हांहो लालन घुमि गइल देहियां रे हमार,
जइसे रखलीं पानीं न भरथे में रनवां में गहले बानीं न तरवार,
ओङो बेटा गाइ दऽ बयान मरदन के, जेकरिय देसवे बाजलि तरवारि,
ए गुड़ कड़ी जो भूलि जइहें, अब दू दू गढ़ि गढ़ि मेराइ देबे लाइ,
कहि दा कोरति अलबेला, तोहरे अब जीभवै भइल तइयार,
पंचे आजु जेवना न दिनवां के बातें,
आरे सभवा में तनीसुनि लेइं ना गनवां रे हमार ऽ र।
आजु जेवन दीन के बातें, पंचे सुनीं समर के हालि,
जेवनो बेर धोबिन कहतिया जे है पती,
आजु हमार जो कहल तूँ करीतऽ, एही सोना सुहवली पालि,
का अब जेवना बीर के मरले बाड़ें,
झिंगुरी छ महिन्ना हलुवा गुड़ चटल हं,
आ बचवा के देहि टुकटुकाइल ह सतवा महीना में,
आ जइबऽ तनी राजा से हुकुम माँगि के अपना,
दूनों लड़िकी हमनी के सादी कइ देती
बिगड़ल बाटे जे मखुआ भइया,
अपनी बियही के झोंटा धइ के मार ताटे एंड़ा समसाइ,
जब चीलिहके लागल मखुआ बो दूनों ओकर लड़िकी पहुँचत बखरी ले बाइ,
कहें स जे आहि ए दादा, आज हमार माता जेवन बा।
कहं स जे भाई हमारि केवनोय बेजइयाँ काका कइ बा ऽ देले,
आ बखरी में मारत बाड़ऽ मयना रे हमा ऽ र,
कहति बा जे बुजरी हमरी देहियंइ पर गंहकोय भिरि रे कवलसि,
कल्हियाँ रजवा नाहीं छोड़ी जिउवा रे हमा ऽ र,
केवनों ऊ चुगुलाइन ऽ गलिया में बतिया सुनले होई,
ऊ बमरा से हंकने के कही सोनवां सुहवली दहवा पा ऽ लि,
आजु कल्हियां उलुटाइ मुसुकवा न बामरि चढ़ाई,
हमरा मुँह में गोबर देईयन ठुंसेवाइ,
आजु ऊहै कंऽचवे कइनियां से न लागी ए मारै,
देह के बोकला गतरि गतरि ना सुहवलि में लेई छोड़ा ऽ इ,

कल्हियांजु उलटाइ ना मुसुकऽ न हमके दिआवाइ के,
हमरो के सुहवलि में देई ना हो ढहएवा ऽ इ,
कल्हियां हमरा लेइ केइ ना छतिया पर भाला दबाई,
नहवन में ठोंकि ठोंकि ना देई ना ए खपए चारि,
काल्हि हमरी भंहुवई के खरिया हो दादा दबाई,
ई सुहवलि बुजरो होइ गइलीं ना बदिया रे हमार ।

गद्य-पद्य : पंचे जेवन दीन समेला आँगे सुनऽ लगनि के हाल, लड़िकी धरहरिया कइ के काका के देले बाड़ीं हटाइ, अपनी माता के भइया देह पर लेके, तेल लगाइ के सेवा करसऽ जे हाय हो माता तूं काहें के कहलूह ।
धोबिन कहतिया जे बुजरी लड़िकी रोज रोज ना ऽ ऽ,
हमरा के लोग रहल ए कह ऽ त,
ई आजु बतिया हमरा से पतो से ई ना गइल बा ए बेटी कहा ऽ इ,
बाकी मुरहा मरले बाड़नि ना एंड़वा हमरी ब ऽ दने में,
बेटी हमार घुंसवाइ भईल बाटे करिनाआंव,
काल्हि बाकी तिरिया चलित्तर न हम न इनके देखाईब,
ओही धोबी घटवेइ ना जाइब हम लेलएका ऽ र,
इनकर हम तोड़ि देइब ना आ सनवाँ हम रे सोहवल में····,
ई पनिया का सांन त रहलू जोगिय त नाहीं बाइ ।

गद्य : का धोविन कहतिआ, जे हे बेटी अव एंड़ महुरे तूं जनिहै, काल्हि हम तिरिया चरित्तर इनका के देखावतानीं ओही धोबी घाटे काल्हि इनिका के हम धोबी घाटा देखावतानीं आ ओही जां हमार इनका बाति होई, का होई पंचे,
आजु जेवनी बेर पंचे, पुरुबे लगल रहल लोही,
पच्छिम होखे लागल ओजियार;
कउवा टेर उठावे, भोरे भोरे होखे लागल बिहान,
तब दूनों बेकति का झगड़ रहल आ पंचे सोना सुहवलो पाल,
भोरे लेके लादी अ लादि के धोबो, आ लादि के धोबी,
आ चलि गइल धोबी घाटा बाइ ।
सुनीलं जे धोबिया एनें धोवे गइलेंनि ना लुगवा बबुआ धोबिया घ ऽ टा,
धोविन अपना उठलू बखरिये ले ना बाई

गुप्त रूप से बिजवा और अजयी का विवाह

गद्य : कहता जे है बेटी बीजा जलदी झटपट रसोई बनावऽ

आ बींजन कइ देबे तइयार, आ हे सरासरि लेके हमरी केस के झारऽ
अब हम तिरिया चरित्तर करबि दूनियाँ में,
उनके आजु खेला न देई न देखलाइ,
घींचि के एंड़ा बा पापी मरले,
अब घाव लगलु बदनियें में बाइ, पंचे सुनि लऽ खेला न तिरिया के,
अब नगर सोना रे सुहवली पाल, ररहल रानीं न मखुआ के,
आरे तनीं सुनऽ ए सुहवली न हाल, बिजवा जो करेले रसोई,
आरे धीरन करति सरसरी रानीं के बा ऽ
का करति आटे रानीं,
अब सरासरि अपनी माता के केस के झारै लागलि ।

बिजवा की माँ का विभिन्न आभूषणों से
अलंकृत होकर राजा के मन्त्री के यहाँ जाना

आजु रनियां गूंथे लागलि ना आ चोटिया भइया लीलरा ऽ ऽ पर,
ऊँचे जुरवा बान्हति न उपरां ए बाटे घुमा ऽ इ,
मुनी लं जे रनियाँ नयनाइ कजरवा जब ए लागलि लगावे,
जइसे सावन घटवाइ कलइलो भइया बाइ,
अब रनियाँ देले बाटे ना आ बुनवां बबुआ दुधिया के,
मंगिया में सेन्हुरेइ ना आ डालति आटे लहरिना दा ऽ रि,
अब धोबिन पोरे-पोरें ना आ अंगूठा जब लागल दबावे,
उपरां भइया टेढ़ी टेढ़ी बोछिववा न लागल ना बाइ,
जेकरा ऊ बीछियेइ में घुंघुर रहल भइया लगावल,
ऊ अँगूठी अपना अंगुरिय में लीहलसि संड़एसाऽऽइ,
अब रनियां गोड़वेइ में डाले लागलि गोड़वा रइला,
ऊपर नेउर बान्हति आटे ना गोड़वा में घुमा ऽ इ,
अब रनियां कमरेइ में डालति ना ए बाड़ी करधनी,
आजु करधनी हिले लागलि ना आ डंडवा हो लेलएका ऽ र,
अब रानीं साठियेइ ना गजवा के जेवन ए हलका,
अपना जो डलतू गरदनि में रनियाँ बा ऽ इ,
एनें अब बंहवन में डालत बाटे भइया ए छाड़ा,
आजु रनियां पेन्हति आटे ना गहना जो अंग लगाई,
आजु रनियां पोरे पोरे गहनवां ए लागलि भइया ए पेन्हे,

अब लेके सोनवांइ सोहवली हो दहवा पालि ।
आजु भइया सोन के अरसी बजवलसि ऽ
सोन के तोरि के तार खिंचवले बाड़,
सोनन का झबझबिया धोबिनि का हिलि गइल मांह लीलार,
नाक में डालति आटे नकबेसर, ऊपर झुलनी छोड़ति आटे बुलाक ।
अरे सुनीलंऽ जे उगली रानी बा अलबेल्हा,
लेके अब सुहवलि केरी न बजारि,
एक तई सुनली धोबिन बा सुहवलि में,
दूसरे जो अपने न कइले बा सिंगार,
जहिया भइया पेन्है ले चोली न मखमल के,
जेवना में चंवतीस लागेला बयारि,
अब रानीं पेन्हति आटे छिटिया दखिनहीं,
जेहि पर पंछी लागल बाटे छपन हजार,
जेकरा जो अंचरे पर मोर्हवा बिराजे,
कोइलरि कुहुँकति बगलवा में लाइ,
ऊपरा बीजे तासवा बदलि कर चद्दरि,
जेपर जोती लगलु सुरुज के न बाइ,
जेकरा जो बायें जव लागल बा चनरमा,
लेके अव सोना रे सुहवलीय पाल,
जहिया जब पेन्हल बाटे छींटि अलबेल्हा,
जेपर पंछी लागि बाड़ी छप्पन अजारि ।
ऊपरा जो तसवा बदलि के बीगे चद्दरि
जेपर जोती लगल, सुरजवे के वाइ,
अब रानीं बायें जो घुंघुट मारि देलें,
दहिने जो घींचि के चले ले ओलवांरि,
जब रानीं थारिय ले ले बा जेवने के,
अब जल लेहले गड़ुववा के बाइ,
जहियां जब हीलि हीलि पगु लागल डाले,
जइसे अब दोंगा के चले ले बहुआरि,
जइसे अब गवनन के चले गवनहर,
अब बाबू दोंगा के चलेले बहुआरि,
ओंगो जब चलति बा धोबीन सोहवलि ले,

अपना जो चलल धोबी घटबा न बाइ,
जब भइया गोड़ में वाजल बा गोड़रइला,
अब नेउर जसंवे अवंतहेनकाल,
अब रानीं बायें से परद देब देले,
दहिने जो घुंघुट मारे ले लेलकार,
अब रानीं धइले बा डहरिया धोबी घाटा,
अब चलल सोना न सोहवली पालि,
अबहिंय दुइये बीघा न धोबिन बाटे
तलक धोबी ऊपर मथवा न देला रे ऊठाइ,
अब भइया देखेला सुरति धोबिनी के,
मन ओकर हिलल धोबा-घटवा में बाइ,
कहत वाटे अहा मोर दइब नरायन,
कांहे विधि उगिल देला करतार,
आजु तिरिया अइसन बांटे ओधिरन कइले,
सोभा अब कहहू जोग नाही बाइ,
जेवनी बेर गवनन के आइल गवनहरि,
जेवनी बेर दोंगवा करी न बहुआर,
अब भइया हिलि गइल मन धोविया के ।

गद्य : बे बोलत्रले लुगा धइके जूमि जात बा अरार पर, अ धाबिन बासे तेवन बीजन धइ के हटि जातिया, ता जाइ के कुला ओला कइ के कहता जे देखू हम आजु बींजन खातानी, बाकी एतना किरोध काहें लेले बाड़े । एतना किरोध काहे लेले बाड़ी झारि के बोलत वा धोबिनि हे, हे धोबी घटिहऊ हमसे बोलि जानि सकिहऽ ।

आजु हमरा से टूटत बाटे ना आ नतवा देखा दू नियां ऽ में,
अब डिगरू जनि छुइहऽ देहियां रे हमा ऽ रि,
धोबिया के उहै खयकेइ महुरवा सांचो होइ जा गईल,
धोबिन तिरिया कइले चरितरे ले ना बा इ ।

गद्य : कहतिआ धोबिन जे देख ऽ, खइबं ऽ त खा, आना खइब ऽ तबो हम खायक के लेके हम चलि जाइबि, बाई हमरा से जो बोलब ऽ त हमरा तोहरा अब ना बनी ।
आरे धोबिन झारि झारि ना बोलति बाटे धोबिया घाटा,
आ धोबिया के सूरति लउकति वियहिये के ना बाइ ।
कहति बा जे दादा एक एंड़ मारि दिहुवीं ओही से ई गुरनाइल बाबा,

अब पिरीति जल्दी ना लागो,
उहे दू चार कवर धोबी खाइ के आ खायक टारि दिहलं, ए पंचे ।
अ कहतिआ जे छोड़ि द ऽ थरिया आ तूं लूगा धोवे जा त लेके हम जाईबि,
धोबी ए भइया झंखि के आ कुला कइके अ चलि गइलें लूगा धोवे,
अ धोबिन बा से थारी लेके अ हाथ के जल लेके चलि आइल,
चलि जब आईल,
त सूनीलं ऽ जे ऊ धोबिया भर दिन ना लूगवा बाटे ए ना धोव ऽ त,
सूरति ओकरा नाचति नजरिये पर ना बाऽऽई,
सुनीलं ऽ जे रनियां तिरिया न कइले बा चरितर,
आ धोबिया का चैन नाही परत मिरुतवा में ना बाइ,
फेरु रनियां जाई के बीजनीय हो बनावे,
डंफु एनें डूबति सुरुजवे के ना बाइ,
फेरु आजु अजई के सांझे में खियावलि ।
अ अपनी लड़िकीन का बखरी में देहलस ना खिआऽऽइ,
रनियां ऊ दूसरो बखरिया में बाटे सूतावत,
धोबिन आजु ढूकलि महलिया में ना बाऽऽई,
अपना ऊ बारि दिहलस दीपकवा जब ऊ बखरी में,
सेजिया ऊ लावति ना आ बंगला में ना बाइ.
आरे रनियां ऊ चूनि चूनि ना सेजिया न बाटे लगावत,
अ अपना सोरि भरि ना रखलसि ए ऊठाऽऽई,
सुनीलं जे लाई के सजियवा जब ए तिरिया,
आ उनका जल लेके जूमल दुअरवे पर ना बाइ ।

गद्य : कहति बा जे चल ऽ खाल ऽ, कहतिआ जे खाल ऽ, अ भइया, धोबी झपट के आ लोटा लेके आगोड़ हाथ धोके आ बीजन जब खाये गइलनि खाये जब बींजव जाताड़ें त धोबिन अपना उहे लेके उनके बीजन टारिके अपने जाके पलंग पर लेटि गईलि ।

आरे धोबिया के माहुरि भईलि बीजनिया भइया बखरी में,
दू चार कवर पवले ठहरिये पर न बाइ ।

गद्य : पंचे, जब लालती में आ जाला अदमी त ओकरा केहू सोहाला ना, अब त धोबिन की आरती में आ आइ गइल रहलं दू चार कवर कँगो खायक जनाता जहर, खाइ के तरतावरि जाइ के कुला ऽ मंजन कइके आ जाइ के कहताड़ें जे

हे तिरिया राति के किरोध जन ले आव ऽ झारि के उठि गईल धोबी। कहत बा
जेए घटिहवा तोहरा तनिको नइखेना ल ऽ जिया इ देहि ऽ ऽ या में,
हमरा तूं सुरती में गइले रे लोभाइ।
जेवनी बेर हम गवनन के आइल रहलीं गवनहरि,
आरे देखऽ दोंगवा करीं न बहुआरि,
हमरा तूं सूतिय रहल ऽ न सेजिया पर हमरा तूं झुलनी के लूटले बयारि,
तूं ही आजु कटले बहार झूलनी के,
सेजिया ऊ सूतिल ऽ न रोज रोज आइ,
बाकी आजु बजर परो ना टिसुना पर,
तोरी टिसुनामें अगिया हम देतीं न लगाइ, तोरा अजु अइसन टिसुनवा बा लागल,
ओ तने अगिया हमरी लागलि लड़िकियनके पंजिया रे बाऽऽइ,
आरे जव लक राजा से बतिया त नाहीं ए कहब ऽ,
तवलक ना सेजिया पर सूति रहब ना अंगवां रे लगाइ।

गद्य : धोबिया कहता जे आजु न कालिह हम जाइबि त कहलस जे कल्हियें कहलि न होखी, आज ई होनी ना होई जे कहलि हमरा तोहरा, तू हमरा सेज पर सूति रहब ऽ,
जब लक ठाकुर से अरदात ना लगई ब ऽ,
तबलक हमरा तोहरा बहनि हो ना सकी।
धोबिया ऊ केतनो उपइया बाए भइया लगबले,
धोबिन ना अब जाये देति कगरिये ले ना बाई,
कहलसिजे कल्हियां निहिचे न रजवा न किहै ना जाईब,
आजु निजगुत निहचै डालबि ना बतिएठाड़ि।
त कहति बा जे छोड़ि देब ऽ असरवा हमरो सेजिया के,
परसों हमरा तोहरा जय ना होइहन रे बीगाड़,
धोबिया क टूटि गइल बा मनवां भइया व ऽ खरीमें,
अ कउल कइके सूते गईलि दुअरवे पर अपना ऽ ऽ बाइ।

गद्य : बाकी ऊठल बा रानी धोबी भइया जा के खिरकी के खोलत फाटक जब बाइ आ ध ले ले डहर सुहवल में, आ चलि गईलि मंतिरी का पवन दुआर, जहां सूतल रहलें मंतिरी, छतिरी के, जाइके कहतिया जे है, बबुआ, तनी ऊठि जा।
आजु एनियां चिहुँकिय के, हे मंतिरी हो बइठि रे ग ऽ ऽ ईल,
का धोबिनि आधी रात खन आई गइलू ना हमरा ए रनिया हे दुआऽऽर,
कहति बा जे बबुआ घटिही धोबिनियां तूं हमके जनि ए जान ऽ,
जे तोहरी हम सूरतो क जरिया आ अइलीं ऽ....जू,

आजु हमरा लागि गईल बा कमवा बबुवा अलवाबे ला ।
ई रतिया में जूमल बाटें बयवा रे हमा ऽ र,
ए पंचे आजु कठिन हउवे ना ऽ आ गनवां देखबऽसुहवलि के,
पंचे, तनीं सुनि लेब ऽ जा धयनवां जे ए लगा ऽ बू,
जह्यिा आजु मंतरिय से रनियां बोललि धोबिन ए बाटे,
कहति बा जे बबुआ मानि जइब ऽ ना बतिया ना रे एइजा हमा ऽ ऽ र,
जेवन आजु आईल रहल ना आ बीरवा देखब ऽ गउरा के,
जेवन झिंगुरी एंड़वइ से मरलनि हो संइहेया ऽ रि ।
कहतिया धोबिन जे हे मंतिरी आ जेवन धोबी के मरलसि एंड़,
आ बीर के लागि गईल आ ओनकी देह में गरमी छा गईल,
आ सब छोड़ि के चलि आईल,
त हम पती के भेजववली आ दू चारि गो नवहा लेके आ,
ओहि बीर के खटोला पर लादि के हमले आइल बानी किला मे,
खटोला पर लादि के ले आइलि बानी आ ए बबुआ मंतिरी हम सात,
महिन्ना बीर के लोथा चला के आ हलुवा गुर चटा के,
आ ओ बीर के देहि टुकटुकाइलि बा,
आ अब घूमताड़न फिरताड़न आ दुआर पर बइठऽऽताड़न,

राजा बमरी के मंत्री से मक्खू की पत्नी का
छतीस जाति की कुंवारी कन्याओं की दुर्दशा कहना

बाकी आजु बबुआ हमारि अरदासि लागति आटे,
देख ऽ जेतने तोहरी अगिन देहिमें ह, ओतने हमरी लड़किनों के हउवे,
आपन दरद सब जानता सुहवलि में,
आजु बाकी लड़िकिय अभिगिनो लोग जामि बा ग ऽ ईल,
छतीस बरन के बेटी त बमरा छेंकि दिहलन ना आ बरिया हो ठाकुर कुँवारि,
कवनों रनियां बारहे बरिसवा के ऊ भइलीं स का ऽ ना ।
केवनों लड़िकी सोरहइ बरिसबा के भइलीं स ना ऽ रि,
कवनों के चढ़लि बाड़ी जवनियां आजु अलबावेला,
लेके बबुआ सोनवांइ सुहवली हो दहवा पा ऽ लि,
कवनों के तीनिअ आ पनवां न हेले अब लागलि,
सुहवलि में लड़िकिन के ओन्हइ गइलीं करिए हां ऽ ब,
लड़िकिन के पाकि गईल ना आ बरबा देखब ऽ लीलरा में,

मुखवे में दंतवा टूटति बा लेलका ऽ र,
आरे रनियन का अंखिया से लूरवा नाहीं बा परल,
सुहवलि में कुहुँकि कुहुँकि ना कइलीं स बिहाऽऽन,
आजु अरिकरनी छुईलऽ सुहवलि में,
आ रजवा के मंतिरिय न गइलऽ हो कहा,
काल्हि आपन सइयां, हम भेज बिना कचहरी,
जेवना में सइयां करिहैं अरएदा ऽ ति,
जो ई ओइजां बीगड़ि जाई ना रजवा रे बमरिया,
आ बतिया से बतिया के हमरा पती के ए लिह ऽ न ए बबुआ जोगाऽऽइ,
आजु इहे केवनो उपइया तूं पछवां रखिह ऽ,
जे दूनों लड़िकिन के हमरा सादी ओही बीर से होखोइ ना लेलकार ऽ ऽ ।

विजवा सरासरि का अजयी से विवाह की आज्ञा माँगना

गद्य : धोबिनि कहतिया हे मंतिरी, आजु हम आइल बानी ए अधिरता से केवनो हम घटिहो ना हुई जे घुमतानीं, बाई देख ऽ जा जेवन तोहरी देहि में अगिनि ह ऽ ऊहे अगिनि हमरो ह ऽ अ ऊहे देहि न हमरो लड़िकिनो के ह, कहताड़न जे हं रे ठीक त कहत बाड़ी, बाइ अब का करीं, बाई भेजिहे तड़क लगावल जाई, लगि जाई त लगी जाई, ना लागीतब त बेअखतियारी बाति वा, त ए पंचे जब धोबिन एइजां से हटतिआ त कहां गईल ।
सुनीलं ऽ जे एनें बेकलि रहलि धोबिनियां भइया सुहवलि में,
आ मंतिरिन के छोड़ि जब दिहलसि ए दुआ ऽ रि
आजु रनियां पतिरिय ना गलिया, सांचो धइ बा लेले,
आ चललि महंथइ न रइया हो देवा ऽ न,
जब धोबिन महंथइना दुअरा पर जूमि बा गईल,
ऊ महंथइ सूतल रहलेंनि ना आ गोड़वा रे पसाऽऽरि,
आजु धोबिन धइकेइ दुपटवा जब घीचे ना जब न" लागलि,
एइजां बबुआ उठि जइब ऽ ना तनीं तूं लेलएका ऽ रि,
आजु बबुआ अधियेइ ना रतिया बीति बाटे ए गईल,
अब रतियां नीचवंइ ना आ लरकलि बा लेलएका ...रि,
आजु बबुआ लागि गईलि करजिया हमरा बखरी में,
देहिया में चयनेइ आवति त नाहीं रे बाइ ।
गद्य : आजे ऊठे न धोबिन के रोबि देखिके कहे जे ए भाई ई का आइलि ह, त ओकर

जवाब दे जे देख ऽ हम घटिही ना हईं आ न हम तोहसे घटे आइल बानी ऽ आजु अपनी दुखगुने आइल बानी त ऊठ तनी सुन ऽ हमरी अरदास के, ए पंचे जब राजा के महंथा राज देवान जब बठि गइलें त घोबिन कहतिआ जे देख ऽ हमरे ऊखी पतई नइखे, सभका सुहवलि बा, आजु हम चलल बानीं जे कालिह हम अपने पती के हक्कन भेजब राजा की दरबार में, आ देवान तूं हउवऽ, हमनीं का घूमि के सबके अरदात लगाव तानीं जे देखीं सभे जे छत्तीस बरन के बेटी हमनी के सुइवलि में परि गइल बाड़ी स बारि कुंवार, आजु जो कुंहुकत आड़ी स बेटी सुहवलि में, फाटि गईलि छाती हमारि।

त कालिह आपन पतियइ का कचहरी में देख ऽ भेजाइल,

ओहिजां महंथा बइठि जइबऽ असनी रे दवा ऽ इ

गद्य : आजु जो हम पती के हम भेजबि, आ पती हमरा अरदास लगइहैं कि हम लड़किन के सादी क देईं, त हम जानतानी जे हकने राजा बीगड़ि जाई, बाई किछु उपाय लगइह ऽ जा, देख ऽ जा उपाइ जो लगा देब ऽ जा, त ई लगन का जाने लागि जाइ त सबकर लड़किन क बिबाह होइ जाई।

त ए महंथा राइ के ए भइया टीकि गइल बा, बतिया देखबऽ देहिया में,

सही आजु कहतू धोबिनि ए दादा रे बाइ।

गद्य-पद्य : कहता देखु कालिह बाई भोरे भेजिहे, पहिली अरदास में, अपनी पती के कहि दीहै अरदास डालि दीहैं, अ जौ किरोध लीहैं त हमनीं का ओइजां किछु समुझाइबि जा न, ए पंचे एनना इस्तिरी कइ के अपनी ग्रिही के लवटि आइल, लवटि जब आईलि, त सोचतिआ मन मे जे अब त राति थोड़ा थोड़ी आइ के रहि गइल बा त हम अपनी पती के जगाईं जे दिसा मयदान होके ठीक रहसु आ हम बीजंन बनाईं जे साफ होत होत हमार बींजन हो जाइ आ हमार पती खा लेसु जे जेवनीं बेर राजा के कचहरी लागत लागत ले, हमार पती चलि जा।

आरे भइया एनें बेकलि बाटे नारी मखुआ के,
एनें अब बेकलि बाटे नारी मखुवा के,
ओकरीय बूतवे सहल नाहीं जाई,
अब रानीं चलले न गइल बा चलावलि,
रतियां ज पहरे भर बबुआ जो बाइ,
रानीं जब गडुवा में जल लेइ लेले,
दुअरा पर जूमिय गईलि लेलकार,
कहे ले जे सइयां न मुरती नरायन,

अब घन सेन्हुरे के लागेल ऽ मोआर,
सइयाँ अब पहरी भर रतिया जो बाड़ीं,
अब राति होत ए बिहनवां न बाड़,
तनीं अब दिसा मयदान होखे जइब ऽ,
कुला मंजन सुरहन का नीकठें अरार,
ओने अब कइके मजनियां तूं आव ऽ
हम एनें बींजनि करी ल ऽ तईयार,
पहिले जो राजवा कचहरी न लागी,
पहिले तूं जलदी से लगइह ऽ अरदास,
अब भइया झंखे लागल मखू अलबेल्हा,
अपना ऊ मनवां में करत बा विचार,
कहत बा जे बजर परो न बुजरी पर,
इनका पर गिरती गजबवा के धारि,
हमार खंसी नियर दिनवां अब धइलसि,
अब रानीं बीजंनि करति बा तईयार,
एतना जो सोचि के ऊठत बाड़ं मखू,
देहिया जो गइलि बाटे न मुरझा ऽ इ,
बाकी अब कइले बाड़न कउल रतिये के,
अब कइसे नाहीं ए कंरसु लेलकार,
बाकी अब कहंरि के ऊठल बाटे मखुआ,
लोटवा अब लेले बाटे न लेलका ऽ ऽ र,
अब बीर हिलि हिलि पगु लागल दाबे,
झंब अब पहुँचल सुरहनी में बाड़,
किछु घरी झड़वा फिरत में बाड़ें सोचत,
उनुका के घरी ए पहर बीति जाइ,
एनें अब रचि के न पानी बाड़ें छुवले,
अब बीर सुरहन जालें न हेठिआइ,
सुरहन में लोटा ए मांजे ला अलबेल्हा,
अब कुल्ला मंजन करेला लेलकार,
तबलक फाटि गइल पौ मिरुता में,
दुनियां में सायर भईल बा उजियार,
एने जब धोबिया किला में बाड़ें करत,

दंतुवन मंजन करत लेलकार,
एनें अब धोबिन बिजनिया बा कइले,
बीजन अबरुचि के कइले बा तईयार,
ऊठि ऊठि जोहत बाटे बाति सेन्हुरा के,
कहां आजु पती मोर गइलें अझुराई,
आजु ईहे दुइ घरी दिनवां ऊ चढ़ी,
राजा के कचहरी लगी न लेलकार,
जोई हमार झेल रे कचहरी होइ जइहें आ,
जल्दी ऊना अइलं पतियो रे हमार।
ए पंचे एनियां सोचति रहलि ना नारि देखब ऽ म ऽ खुआ के,
तब लक धोबिया जूमल सुहवली में ना बाइ।

गद्य : हंस के बोलतिया धोबिनि, हा सइंया अरे देरी होतिया हो, पहिला अरदास में जो हमार मोकदमा ना परी, त कंजड़ होइ जाई जलदी झटपट खा।
त कहत बा जे ए बुजरो बींजनीया ना ऽ हमके तूं नाहीं बनवलू,
हमरा के जहरे न बाटे रे बुझा ऽ ति।

गद्य : जेवन खियावताड़ जे, आज हमके गर में जहर दतबाड़ु। ए बियही हमके माहुर लागलि बींजनिया दादा सुहवलि में, हमरा अन धंसत करेजबे नाहीं ना बाऽऽइ, एनियां जब हंसलि बाटे ना नरिया भइया मखुआ के, कहता जे सइयां हमरा ईहै बतिया ना बड़ा बाटे साचो सोहा ऽ ति।

गद्य : कहै के रहलं ह अ ऊहै कही दिहलऽ ह त चल, आई के खाय के त रोज-रोज बा, ए पंचे मखुवा के जाये के ना मन करे, बरबस घइ घइके मखुवा बो कहतिया जे चल ऽ, चले के परी।

सुनींल ऽ जे मखुवाबोऊ बरबस गरदनी मे आ हथवा लगावलि,
गलिया में ढकेलि के ले चलतु कचहरी मे ना बा ऽ इ,
कहति बा जे तोहार डगमग डगमग टोसुनवां रतियां करत ए रहुवे,
हमरा से कउल तूं कईल ऽ ए करा ऽ र।
सइयां आजु मोर पूजइ देबऽ कउलवा देखबऽ बंगला में,
काल्हिय संजिया लूटि लोहइ रसवा रे हमाऽर,
मखुवा कहत बा जे बुजरो तोर अब माहुरि भईल सुरतिया हमारि सुहवलि में,
हमरा जिय पर गंहके ना देहलू हो लगाइ।

विजवा सरासरि के विवाह की आज्ञा लेने के लिए
मक्खू धोबी और उसकी पत्नी का राजा बामरि के यहाँ पहुँचना

गद्य : कहत बा जे चलल न बटले बानो का ढिढिरावताड़ी, आजु हमार धई के वांहि झटकार द त हम त चलते बानी चलु, अब त चलबे करवि, त भइया मखुआ बो अछी तरह दाबि देले रहलि ना मखू उहै तब जा ताड़ें कचहरी मे, एनें जब चलल चलावल चलि गईल, पंचे जउमे बइठलि बा महफिल मसीन में ओही जो महफिल जमल रहल, लेके सुहवलि के बजारि, लागलि रहल कचहरी घन भरि उहाँ रहल दरबार, ऊँचे गादी लगल रहल राजा के, नीचे धरम लगल रहल अनियाय, बायें मंतिरी बइठ गईल बाड़ें दहिने मँहथा राज देवान, मखुवा चलल गइल चलावल, बाईं फाटक पर हटि जाइबि पाछा के ।

मखुवा बा उनका गरदनि म हथवा भइया लऽवटि ए बाटे,
एगो हथवा चूतरेइ पर लिहलसि ए लगा ऽ ई,
ओ दिन ओही फटकेइ में इ जो बाटे ढकेलत,
धोबिया कांपत जूमलेइ कचहरी में दादा अ बाइ ।

गद्य : ए पंचे जब धोबिन उनका गरदन मे हाथ लगा के आ उनका चूतरे पर ले लेके आ ढकेलि हूकि के फाटक के भीतर ढुकवलसि ह त के जो भों जूमल हउले, एही तरे उठि गइल नैन राजा के, बोले राजा बमरिया तोर तोर देबे लागल जबाब, कहे जे सुन रे म ऽ खू, ई कहु, काहें घर में कफन झुलावताडे, के तोहे मारल ह, के गरियावल ह के तोके चढ़ावल ह जे एतना अधीन होइ के गर में फांसी लगा के बोलता, त बोलत बाटे ऽ मखुआ कह जे ठाकुर मोर बड़ियरा अ बोर मान ऽ बाति हमारि, केहू हमके नइखे मरले, न केहू दरब देला चढ़ाइ, एगो हम बाति के आइल बानी, बाइ पूछला बिन रहला रहियो नइखे जात, आ पूछला से डरियो लागति आ ।

आजु मखुवा रोई रोई ना आ कहत बाटे बमरा ऽ ऽ से,
ए ठाकुर एइजां कांपति आट ना आ ऽ बयवा रे देख हमा ऽ र,
सांचा हमरा पूछतेई में ए डरिया ठाकुर लागि बा गईल,
बाकी पूछला बिन बनहू जोगियवे त नाहीं रे बा ऽ इ ।

गद्य : ए पंचे, जेतने कांपे आ आतने डेराइ, आ कहे जे का हम कहीं कहला में उरेबे बा, आ ना कहबि तवनां में उरेबे बा ए ठाकुर, अब हमसे कहात नइखे, हम का कहीं,

कहत बा जे कहु, कहु कहति बा जे डर लागतिया कहू जा, कहता जे नाहीं कहु, जेवनी अरदास के आइल होइबे ओ अरदास के कहु, हम सुनीं, कहता डर लागतिआ, कहताटें मंतिरी अरे भाई कहु, अब का डरताड़े, कहता जे कहीं, कहताटें जे हां कहु कहता डर लागतिआ, कहताटें नाहीं कहु, कहत बा जे अच्छा कहतानीं ए ठाकुर बाई, डर लागति बाई अब मनबो न करब, कहलन जे कह ऽ, कहतानीं जे ए ठाकुर जेबन ऊ बीर आइल रहलह ऽ धोबी गउरा के आ जेबन झिंगुरी गंगनी पर एड़ से मारि देहलं हूं, से आ ऊ बीर के माटी में धरि गड़ि गइल रहल हा, आ जाति के हमरा लड़िका हउवे, ओके हम टांगि के सोहवल में ले आइल बानीं, छ महिन्ना त पलंगे पर हलुवा गुड़ चटवली हूं, आ बड़ा ओकरी देह में सेवा कइलीं हूं ए ठाकुर त कले कले देह टुकटुकाइलि बा, आ ऊहे लेके टहरता, हमरा लेके सोना सुहवलि पालि, हमार बियही ना मानलि हा बुजरी, आ हमरा डरियो लागतिआ, बाई अब कहला बिनु बनहू लायक नइखे, कहत बाड़े बामर जे नाहीं कहु, का कहलस ह, कहता जे ठाकुर मोर बड़ियरा आ बीर मान ऽ बाति हमारि, ऊहै कहतिया जे जा ना तनी राजा से हुकुम ले आव ऽ जे अपनी हमनी का दूनों लड़िकिन के सादी क दी जा।

धोबी पर राजा बामरि का क्रुद्ध होना

गद्य-पद्य : एड़ी आगि लगि गईल बामरि का लहर चिरुकी गइल गोंगियाय, लाल भइल भरउनी नैनरोघिल भइल तमान, कहलसि जे धर साले धोबी के, खंभे देई बन्हवाइ, परल ललकारा भइया मखुआ पर, अ मखुआ गिरत परत अदमिये पर चलल बाटे पराइ।

सुनीलं जे मंतिरी एनियां रोकि दिहलन पि ऽ ऽ यदना भइया बंगला मे,
पियादा तनीं बइठऽरह जा असनी ए दबाइ।

गद्य : ए भइया जब मंतिरी डांटताआड़, जे खबरदार उठिह ऽ जनि तिलांगा लोग, बइठि लो गईल आ ऊ जब भागल जाताटे तू ओही फाटक किहें खाड़ि बा मखुआ बो, तऊ ऊ भइया जान जे ओके झारति झूरत त अ जाके ओनकी पोंछिटे में हाथ लगाइ के आ एंडो घ लेहलसि फाटक, आ धोबिया चिल्हिके जे अरे छोड़ि दे बुजरी जुमलं स ऽ।

आजु धोबिन उहै धइले बाटे पो ऽ छिटवा भइया म ऽ खुआ के ऽ,
अ हाथ आपन डलले फटकबे पर न ऽ बाइ।
बायें के बोलत मंतिरी, दहिने महथा राज देवान,
कहलन जे ठाकुर मोर बड़ियरा अ बीर मान ऽ बाति हमारि,
अब हमनीं का कहत बानीं तोहरा के,

सुहवलि सुन ल ऽ कान लगाई,
ई सान केकरि खातिर गड़ल बा भोमल के, रउवां से पूछनानीं जा।
मरद खातिर न सान गड़ल बा, आ कि जे निमरद हो गईल,
आ धुना गईल आ बीर के जो सादी जो हो जाई त ओइसे तऽहमनीं का
देखतानी जे सांन न बिगड़ी,
सोचे राजा बमरिया अपना मन में करे विचार,
कहत बा जे मारल त निकलि के मारल ह ऽ,
जेवन सात महिन्ना हलुवा गुड़ चाटता सूतले ऊ बीर बाकियो बा,
आ ए ठाकुर ई जेवन गाडल बा राउर सांन किना,
ऊ काहें जे जेकरी जांघी बलि न जाई, भुजा बढ़ि जाई बलुसाइ,
ऊ बीर बान्ही मउर दुलहा के, दुनियां करे आई बरिआत,
एगो दूनो केवन चलावों बसुधा करै आई बरिआति,
धइले डहरि चढ़ि आई, एही मोती सगड़ की घाट,
गाड़ल भाला उपारि के बीग देई सोना सुहवली पाल,
ऊ बीर बावन बुरुज के तम्मू, बावन भोटा दीहें गड़वाइ,
रेसम सूत के डोरी आंगे पियरी झुली कनात,
आरो पास कुमकुमा बीच में हड़िया जरी गिलास,
तेगा लगी बगइचा बरछी मांडो देई छवाई,
ढालि के लागी ओसारी एही सोना सुहवली पाल,
एक एक मरद जोधा तम्मू बइठी भुजा फुलाइ,
पांच गोमतिही लकड़ी बजाई, पाछे बियहुती देई बजवाइ,
जहिया मारुत डगा पिटाई, सुहवलि सबद जाई सुनाइ,
सूनी बेटा बामरिया जेकर गजे भिमलिया नांव,
उलटा कसिहै न लंगोटा बन्हिहै न माल बरन के गांठ,
उड़ि जाई साँन सुरुवां के, चढ़ि जइहं मोती सगड़ के घाट,
जे बीर का मुंड के कलसा धराई, रोधिल कोहबर देई पोताइ,

अजयी को नामर्द समझकर धोबी को बामरि का चुपचाप विजवा की शादी कर लेने की अनुमति

छाती पिढ़ा गढ़ाई टांग क हरिस देई टंगवाइ,
सेही धरी जटा किला में मौरी तोहरी सती से करी वियाह।

गद्य : छत्तिरी लोग कहले ह ए पंचे जे जेकर सान गड़लवा त ऊ मरद आई त सांन

से आई, आ ई त निमरद होइ जाला ओकर नांव हिजड़ा में पर जाला ए ठाकुर, ओकरा बियाह में त केतनो हमनीं के भंग नइखे जनात, कहलें जे बलावा ऽ त मखुआ के, त मंतिरी लोग कहता जे ए पियादा, खोजे जात त अब उ घरहूँ चलि गइल होई, अ पियादा लोग चलल भइया मखुआ के खोजे खातिर जै अब सादी ठीक होखो, अ जेवनो बेर तिलंगा चल ताड़ें स तब त धोबिया के देखें ला जे धोबिनियां पोछिटा में हाथ लगा के धइले बा आ ऊ टहि पटकता, कहत बाड़ें स जे ए म ऽ खू, कहत बा जे हम ना ए दादा हम ना ईह ईहे, कहताड़े जे आ लोग तनीं सुन ल ऽ , कहत बा जे हमना कहलिहाँ ईहे कहलस हउवं, पियादन से कहताड़ें जे हम नइखी कहत इहे ना मनिली हवीं, कहताड़ें स जे ए धोड़ा, तनी चुप रहू, ऊहै जाई कचहरी, कहतिया जे का करी ऊ जाई त, कहलनि जे नाही ठढाइ जो, अब तोहरी सरीर के हमनीं का जानतानी जा जे डरु तनिको जनि, अब तोर कारज हो जाई, कहताजे हो जाई, कहल स जे हा हो जाई ।

तब धोबिया के देहियाइ धीरज ऽ वा भइया परि बा ग ऽ ईल,
आसभरि के ऊ चलल कचहरी में ना बा ऽ इ,
जहिया बबुआ सम्हरि केइना अ धोबिया भइया जूमल अजइया,
जाके अव भईल सनमुखे हवे ना ठा ऽ हू,
धोबिया के हल हल ना ऽ आ डोलत न रहल करेजा,
जइसे गइया कंपलूय बिजइले हो दादा ना बाऽऽइ,
एनें आज कांपत रहल ना आ धोबिया भइया बंगला में,
अब बामरि हंसि हंसि ना दिहलसि रे जावाव ।

मंडप कलश तथा ब्राह्मण के बेदपाठ के बिना शादी करने का आदेश—
धोबिन द्वारा सारा अनुष्ठान करने का उपक्रम

गद्य : कहलनि जे आरे जनि डर बाबू, डर जनि, बाई हम कहतानी तेहीं डो बियाह होई, कहलन जे कहीं टाकुर कहलन जे देखु, तोके लड़िकी के सादी हमार आडर होता जो करु गे, बाइ अंगना मे मांडो जिन छइहे, हरिसजनि गड़इहे, कलसा जनि धर वइहे, वेदजनि पुरवइ हे, आ सखिन से मंगल जनि गवइहै आंगन में, जाइके अन्हारे घरे अपनी लइकिनि के घरावन कई दिहे, अब धोबिया परल सोच में, जे आहि हो दादा, केडो बियाह होई, अब धोबिया कहलनि जे जो धोबिया जब निकड़ताटे त पूछता धोबिनिया जे का हो, कहलस जे का नाही, लांड़ हो,

गद्य-पद्य : का हम कहीं, ए डो बियाहो केहू के लड़िकी के परेला, जे कहता जे कलसा जनि धराइ, मंगल जनि गवाइ, हरदी जनि लगै, बेद जनि बरामन पढ़े, त कहु बियाह केड़ो होई, कहता जे चलु निरबंसिया ओही में होला कुल्हि ।

सुनीलं ऽ जे धोबिन आपन लेइ लिहलसि से ऽ न्हुरवा भइया सुहवऽऽलि में,
दूनों येकति जुमि गइलीं आपना रे दुआरि,
कहति बा जे सइयां तूं अब कनियंइ ना ऽ आ दनवां तनीं अब देइ ना देब ऽ
भले अनगुतहां ना खइव ऽ बिजनियां रे हमाऽऽर ।

गद्य : कहत बा जे बरम्हा के लिखनी ना मेटी, देख ऽ ई लीखल रहल ह त बेटा तोहूँ भोजन नइखे कइले, कोइलरिनहानि न कइले बाड़ हमरो हाल आज उहेवा, अब एही कनियादानें लड़िकिन का हमनीं सादी क दीं जा केड़ो सादी भइया भईल ह, जे, अब आजु से धोबिनि आ लड़िका के लेके अजई के ओ लड़िकिन के लेके अपनी पती के लेके जाइके बखरी में जाइके डांड़ा दे देतिआ ।

आ, हा, हाँ, तनीं भइया सुनि ऽ सादी न रनियन के,
तनीं अब सुनि न हो सादी रनियन के, जेकरिबीजा सरासरि ह नां ऽ व
रनियां रहलि न नारि जो मखुआ के,
जेकरी परल मखूऽवो वाटे नां ऽ व
रनियां रचि के कलसवा कोरे धरेऽऽ,
गउर गनेसवा न देले हऽ ननाऽऽइ,
रनियां पुरलसि चउकवा मंडवा मे,
ईगो एइजां हरिस देले हा टंनवाय,
ईहै जेतना टोटरम बा सदिया के,
धोबिनीय बटुरीय कइले बा तईयार,
ईहै जब लागलि हरदिया तनीं करे,
मुंह में मंगल गावति बा सरेचार,
ईहै जो रचि के ना हरदी ह लगवले,
हरदी वन मे कइले बा मटकोड़,
इहै जवन लेइके हरदिया भइया लागल,
अपना लड़िकिन का घललसि ना लगाइ,
रनियां लागलि हरदिया अजई का,

ओही अब सुहबलि के केरिया हो बजारि,
रनियां डूबे ना डंफ ना सुरुजे के,
घर घर दियवा जो भइलें जो लेसाई,
एनियां उठ लूय ना नारि जो मखुआ के,
नवछू नहावन उहै करति जो बबुआ बाड़,
उहै जौ नहछू नहावन बा करवले,
अब जल लेले भरुकवा में न बाड़,

बिजचा सरासरि का अजयी से विवाह—
धोबी धोबिन का कन्यादान देना

जब इहै जेतना टोटरम बा सदिया के,
रनियां बटुरीं करतबे कइले बाड़,
ईहै जौ पियरी लड़िकिया पहिरवलसि,
पियरी अजई के दिहलसि पहिराऽ इ,
रनियां अपने केरी बा लूगा पेन्हत,
कोरी मखुआ के दिहलसि ए पिआ ऽ इ,
इहे कनियादनवां देले बा बखरी में,
चउका पर बइठल मोखू ना लेलका ऽ रि,
रनियां अपना में कइली गठबंधन,
ईहे जो बइठलि मांड़ो क वर बाड़,
इहे जब लड़िकिनि अडरवा होइ न गईल,
दूनो रालि जंघिया बइठं ऽ लस लेलका ऽ र,
एनियां बोलबे ना नारि जो मोखुआ के,
बबुआ मनब ऽ ना बतिया रे हमा ऽ रि,
तनी लब मंगिया सेन्हुरवा डालि तूं देबऽ,
हमरा लड़िकिनि के हो जाई बिया ऽ ह,
तनीं अब देखि ल ऽ लेखा न किलबा में,
दुलहा बनल अजइया भइया बा ऽ इ,
उहै जो मंगिया सेन्हुरवा चलल डाले,
उहै जब मंगिया सेन्हुरवा चलल डाले,
दीपक बारल मंड़उवा में न बा ऽ इ,
ऊहै जो रचि के न बुंदा हुउवै देले,
सेन्हुर मंगिया में दिहलनि जो छुवा ऽ इ,

इहे जो भईल सादीय ना रनियन के,
आरे भइया ओही आजु अजई के भइलनि रे बियाह।
ए बबुआ गायन लोग गावै लें लोरकिया,
जे आजु लड़िका करै गइल रहल ससुररिया आ सुहवलि में,
जे पाछे गंगनी खेलतिय सगड़वे की ना घाटि,
त कहता जे केवनो बेरि भयल हउवे ना, आ सदिया भइया म ऽ खुआ के,
केवनि घरी जाइके आजु अजईय के भइलनि रे बियाह,
जेकर गायन अबहीं गावल रहल ना, आसनवां देखब ऽ सुहवलि में,
कइसे धोबिया के गाइ के करेल ऽ जा भइया आ ससुरारि।
हाँ ऽ हाँ आरे पंचे अब जाहिय दिननवा के बाते,
तनीं अब सुन ऽ ए लगनि करि हा ऽ लि,
तनीं तनी सुनिल ऽ पंवारा अलबेल्हा, अब लड़वइया ज सेर ए जवा ऽ न,
अब बबुआ सुनिल ऽ सादी न धोबिया के,
अब बीर सूनल ऽ सादो न धोबिया के,
एही ओ सुहवलि में हो गइलन बियाह,
तबलक रतिया खतम बाड़ी भईल, अबहिंय घोर घोर रतिया जे बाइ,
मखुआ बो सुतिय रहलि बखरी में, दूनों लड़िकी सूतल अंगनवां रे बाइ,
अजईय जाइ के दुअरवा पर सूतल, अब जाके सोना रे सुहवलिय पालि,
मखू आजु भीतरां डेबढ़िया सूति गइल,
रतिया भर बेर अ जागल लोग बाइ,
तबलक पुरुबे लागल बा रन लोही,
पछिवें जो सायर भइल बा ऊजिया ऽ र,
जेवना बेर कउवा भइया टेरबा ऊठावल,
अब भोरे भोरे अब हो गइलन बिहान,
सुनलीं जे चलल अब किलवा में, अब रथि उगतु सुरुजवे के बाइ,
एनें भइया छतीस बरनवां के बेटी, कुल्हि चिहुँकि के ऊठल बखरिया में बाइ,
कुल्हि रानीं धइलीं स डहरि किलवा में,
चलली स मखुआ का पवन रे दुआर।

छत्तीस जाति की कुमारी कन्याओं को विजवा के विवाह से प्रसन्नता

गद्य : का लोग चलल जे राति के दादा दीन हमरी सखी के परि गइल बा, चल ऽ जा मंगल गाइँ त आ हमनीं का, आज त हरदी मट्कोर होइबे करी।

सुनीलं जे एहिमें छतीसेइ बरनवां के बबुआ रे ऽ ऽ बेटी,
दिलवा में खुसींय भइलि बा बड़िरे ऽ यारि,
आजु रनियां बान्हि बान्हि झुमेलवा चललीं ग ऽ लिया ऽ में,
चललीं स आजु मखुवा पवने रे दुआ ऽ र,
कहें स जे हमरी सखी के ई ल ऽ गनियां परल सु ऽ हवलि में,
चल ऽ जा तनी मंगलवेइ गाये के सइं ना चारि,
चल ऽ स सखिया चुनि चुनि गानवां गाई आजु ब ऽ खरी में,
आजु अंगवा लरको जहरिया लेइ के लेलएका ऽ रि,
आरे लड़िकिन का दिलवेइ ना आ खुसिया बबुआ होइ वा गईल,
आ मंगल गावे लोग चलल जा मखुआ का दुआर ।

गद्य : जेतना बरन की बेटी बाड़ी से सबके दिल में खुसी होखे के पंचे, चल ऽ लोग गाना गाये लो, आ कहें स के अच्छा धनि भागि कहें के सखी के ओने जे सादी हो जाइ त देख ऽ स हमनां के धीरजा धइले बानीं जा, का जाने हमनों के भगवान बुझबो करसु, जेतना बरन के तिरिया बाड़ी स पंचे, लड़िकी अपना मन में संतोख लोग का देइ जे आच्छा जो एकर सादी होई आ एही लकम लागे का जाने हमनो क सादी होइ जाई, हमनों के भागि जागि जाइ ।

आजु भइया छतीस बरन के बेटी, जब झुमली स मखुआ का पवन दुआर,
जेंव दोगही मे लात डालताड़ी स तेव ए भइया
ककन बान्हल रहल अजई का लुगा पहिनले गुलाबी बाइ,
तन मे पियरी धोती पहिनले तिरिया गइली स घवड़ाइ ।

गद्य : तब सादी हो गईलवा, हो गइलबा, कहस जे सादी हो गइल बा, त कह स जे देख ऽ कफनी बान्हि ले ले बा दुलहा, नयन में काजरभइले बा ।

अरे भइया जब नयन कजरवा बाटे कईल,
लीलरा पर गुलाबी अलमएन अलल कर बान्हल बाऽऽइ,
नीचवां जो पियरिय धोती बा पहिरले,
अब रोब लोटति रहलि मंड़वां लीला ऽ र,
जेकरा जो हाथ में ककन रहल बान्हल जेकरा जब हाथ में ककन बाटे बान्हल
अब लडिकी देखली स नयन रे पसा ऽ रि,
कह ऽ स जे अहा मोर दइव नरायन, अब हेला मरले बखरिये ले बाबू,
बीजवा क मंगिया सेन्हुर बाड़ी देखले, सेन्हुरा जो पेन्हले सरसरी न बाबू,
कहें स जे बजर परो माई अब किल्ला,
तूं ही आजु ओइड़े तर जइतू रे दबाऽऽइ,

आजु हमार कइ देलू सादी सखिया के,
काहे नाही आजु अइगा तुं देलू न भेजाइ,
हमनों का मिलि जुनि गीति रहलीं गवले,
हमनों का मिलि जुलि रहली गवले,
लिछु गीति मंगल में देतीं जा सुनाइ,
किछु आजु सावन के कजरिया रहती गवले,
सललें नेहिया के ललसा मोर जाइत रे बुताई,
हमनीं के लागल टिसुलवां रहि गइलें,
काहें नाहीं बेगे अब देलू ना भेजवाइ,
तब हम एनें बोलत जो बा नारी मखुआ के,
हां हो बेटी सुनबू जा नइयां तोहार,
केहू डो जागि गइल भागि बीजवा के,
उधवल में जब मुहवलि में हो गईल बियाह ।

गद्य : एही फेर मे बाड़ जा, एही फेर में पड़ल बाड़ू जा, धनि ए बियाह में केतना त्रिकट भईल, आ धीरजा घर ऽ जा, तोहनो लोग के भगवान न बाड़न, कहली स जे अच्छा भगवान बाड़न बाकी हमनी क मनोहर ना पूजल ह, तनी थोड़ हू गाना गा देले रहितो जा आ सखी का सादी मे त हमनी का किछु सबूर हो गईल रहीत, बाकी ठीक हो गईल बियाह भ गईल त ।

अब तनी बबुआह अंगवांइ के ऽ खेलिया बबुआ वानी बताबत,
मुहवलि में सुनिलेब ऽ जा आ बतिया रे हमा ऽ र,
जब एनियां होइ गइलि बा आ सदिया देखब ऽ अजई के,
सरसरों के रचियेइ के भइलनि ए बियाह,
एनें अबू छतीसेइ वरनवां के ना अब बेटी,
रोज रोज धोवियेइ का आ घरवां लो बिटुएरा ऽ इ,
केहू अब मुंहवंइ में ए दहीय लोग लागल लगावे,
केहू बीर का खोदतेई पंजरिये में ओइजां बाइ,
केहू आजु धई इई दुपटवा घीचे किलवा में,
बेटी लोग करतेइ मजकवा लोग दादा रे बाऽऽइ,
ऊहै अब थर थर ना कांपत बा ए भइया अजइया,
ओकर रोवां डरन फूटत न सुहवलि मे ना बाइ ।

विजवा सरासरि की विदायी की तैयारी

गद्य : कहत बा जे दादा, बड़ बरियार राग भगईली स, का आने कवनों पर हाथ

फेरि देइबि, आ जाइके बमरा से हाथ जोड़िहें स त हम बेगवंत हो जाईबि, पाहुन के नाता चलल पंचे, पाहुन के जब नाता चलल त छत्तीस बरन के बेटी अब धोबिया के उदबेग में डललीं स, तीसरे दिने धोबिया कहत बा जे बाबा, अब हम रहबि ना, हम रहबि ना अब एइ जाँ, पूछता जे काहें बबुआ, त कहत जे ना ना, अब हम रहबि ना, हमार काल्हि बिदाई कऽ देईं, अ हम पूछतो बानीं रउवां से, अपनी लड़िकी के जो गवन करे के होखे तब त गवन क देईं, आ नाहीं त, हकन हम जाइबि गउरा में, मखुआ सोचि के कहता जे आरे बेटा, बबुआ, जेवन तूं सोचताड़ऽ तेवन हमरा दिले में बा, बाकी जइसे रहलऽ एतना दिन तइसे दू दिन रहि जा लड़िकी का विदाई में खरचा किछु होला, लड़िकीन के दिन ध देतानीं तीसरा दिन तूं लिया जइहऽ अपना डोली असवारी में हम भेजि देइबि कहत बा जे अच्छा, केहुङोने दिन हम काटते बानी बाकी ई दिन एइजां कटाये जोग एइजा नइखे, ए भइया एही बमरा डरि के मारे अजई के भइया थर थर जाँघ कांपे, जे दादा जे कवनो झुठहूँ का कहलसि जे फलनवा के बेटी से ई खिसाईकइलसिह त ई हमार जीवो छोड़ी ना, ई सादी ना भईल ई जीव के हमरा गांहक हो गईल।

ए बबुआ ओतना परल रहलि संकठिया देखव ऽ अजई पर,
आ ओही आजु सोनवां सुहवली दहवा पाऽ लि,
जेवनी बेर बीरवइ के दिनवां पंचे बाटे धराईल,
सरासरि के दिनवां ना गइलनि रे धराइ,
अब ईहै जेतनाइ ना आधियवा रहलीं सुहवलि के,
जाके लोग मीलति ना रनियन से लोगए बाऽऽइ,
कहंस जे सखी हमार अजुवेइ ना मीलना न बाटें ए जुलना,
तोहार दिन गउरेई में जइहनि ए लिखा ऽ इ,
सखी तोहार जागी गइल ना भगिया हो अलवा बेल्हा,
हमनीं की भगिया लिखलू लिखनियां में दहवा बा ऽ इ,
आजु ईहे सखी लोग ना भेंटया लोग पंचे ना करे,
सुहवलि में सोचें लोग ना रतिया रे बिहाऽऽन,
अब रानीं सोचि सोचि ना, आ दिनवां लोग रहलि ए काटत,
अब दिन कल्हियें ना गइल बा निअरेराइ

गद्य : अब पंचे लड़िकिन के दिन अब धराइ के अ कल्हियें विदाई बा, आ मखुआ बा से जाइके ले आके लुग्गा झुल्ला करता लड़िकी के, आजु अब जानऽजे अब लुग्गा झुल्ला कई के आ अब लड़िका के धोती पियरी मे रंगलि बाटे, आ सभ तेयारी

कइके आ लेके असवारी ठाकुर से कहि के, करवा देले रहल हा डोला तिरियन के, डोला जब हो गईल हा आ कुल साई ओई ठीक कइ के

त ए पंचे अब कल्हियाँ होखिहनि बिदइया देखबऽ रनियन के,

जेकरि आजु बिजवेइ सरसरीय हवे न नाँव ।

गद्य-पद्य : अब पुरुबे जब लोही लागतिआ, पच्छिंव हो ताटे उजियार, तेंव अजइया न अंउजाइल, कहता जे बाबा लम्मा न हमार गांव गड़ गउरा बा, का तूं गाड़ी छकड़ा हमके लदबऽ, आरे जेवने जूटल तवने सड़ दे तैयारी कइ के हमार डोला फनवावऽ लामा हमार घर गउरा बा, कहत बा जे अच्छा बबुआ धीरजा धरऽ तनीं दतुवन कुल्ला तू क लऽ आ लड़िकिन के हम बिदाई करतानीं, आ पंचे अजई के लोटा दतुवन मिलि गइल आ जाइ के दतुवन जब करताड़ें सुहवली में, आ एही में डंड़ी पर बइठाई के लड़िकिन के मखुआ आपन डोला उठवाइ दिहलस, ए पंचे, आजु के नाहीं, सब दिना लड़किन के ड़ोला गोंइड़ा छिपालाऽ ।

सुनीलऽ से एनियाँ बांजवइ के ऽ बिदवा जब ए होखे ना लागल,

डोला पठवां चलनुअ सरासरि के भइया ना बा ऽ इ,

कोठवा पर चढ़लि रहलि ना ऽ आ धियवा बबुआ बमरा के,

ऊ रनियाँ डोलवा देखलेइ ना बीजवा के लेलनाका ऽ र,

सतिया अपना कल्ले कल्ले ना आ कोठवा ले ना बा चलल,

अब नीचे ओल्हलू ना ऽ सुहवलि में ना बाइ,

रनियन के छिपल रहल ना आ डोलवा भइया सगड़ा पर,

सती आजु पहुँचलि बा भींटवे पर लेलएका ऽ रि,

सतिया जाइके धइ लिहलसि ना आ डोलवा भइया रनिया के,

जेकरि आजु बीजवेइ सरसरीय रहल ए नांऽऽव,

आजु रनियाँ सखियेइ के डोलवा बाटे धइना ले ले,

सभ लड़िकी संग लेइ गईल बाड़ी बिटुएराऽऽइ

उ रनियाँ आजु हँसि हंसि ना करें स ए दादा केलाउलि,

कहंसजे सखिया जागी गइलि ना भगिया ऊ लेलनाकाऽऽरि,

सखिया के उदवेइ ना भगिया बाटे जागि ना गईल,

डोलवा में बनि केई ना बइठलि बाटे बहुएयारि,

केतने रनियाँ आजुवेइ ना अपना में बतियावलि,

सतिया ऊ खड़ाइ सगड़वे पर भइया रे बाइ ।

गद्य : सभ इस्तिरी बोलताटे, ए पंचे, सती धइके बांस रानी के आ ठाड़ा ह, आ सब

इस्तिरी जे बा से बेकल में परल लो बा, बाँस धइके जब खड़ा रहल सत्ती, थोड़े घड़ी का बीतला पर, आ पंचे, बिदाई होतिया अजइया के ।
आजु भइया अजइया पियरी धोती जब बाटे कान्हे पर धइले,
हिलके पयर दबावे जइसे इनर अखाड़ा जाइ,
चलल आइल चलावल जब मनरसा नियर जूमि गइल,
एही मदरसा का एतने बीचे रहल हा पंचे,
घूमि गइलि नजर दादा अजई के आजु नजरि चलि गइल सती पर बाइ,
देखे बेटी बमरा के धइके दांतन अंगुरि चबाइ,
हर हर रूप बा धरल, रानी के कोखि लउकलि मिरुता मे बाइ,
कहत बा जे हाइ हे दइब,
हम हइसन सुरति के तिरिया हम ना देखली ए ददं ।
आरे धोबीया का मुरुझाइ ना आईल बाटे मनवाँ मे,
सतीया बांस धइ के खड़ा जो बिजउवे के ना बाऽऽइ,
उहो जियरा जाते में इ अरजिया भइया बाटे लगवले,
जे बियही आजु पूछत बानीं बतिया लेलएकारि ।

गद्य : जाइके कहताजे ए बियही डोला मे तूं बइठल बाडू, आ एक बात हम पूछतानी, अब हमरी सवाल के सुनऽ, का पूछताटे पचे, पूछताटे जे तनी डांड़ा परद मारू आ हई देखू, हई कंगला के बेटी हउवे, कि कंगला धरे ले ले रानी अवतार ।

की रनियां हमार बीजवा, एनें बेउवा होइ बा गईल,
मंगिया ना लउकत सेन्हुरवा आ दादा रे बाऽऽइ,
आजु जेवनी बेर अजई अंगुरिया बाड़नि देखवले,
सतिया का अगिया ऊठल अंगूठवे ले ना बाऽऽइ,
रनियाँ का अंगूठे लहरिया लागल हो बरे,
ओकर देहिया जरति चलतिय सगड़वा पर न बाइ,
रानी का जो मन में ए किरोधवा बा उठि ना गईल,
मन कइलनि जे तकि देई नयना रे पसाऽऽर,
तलक बीजवा सतिया का गोड़वा पर गिरि बा परलि,
हाँ हो बहिन मानि जइबे नऽ बतिया रे हमा ऽ र,
आजु हमरी पती पर नजरिया जो डालि ना देबू,
सगड़ा पर जरि जइहनि सेन्हुरा रे हमा ऽ र,
सगड़ा पर बेउवा होइबि ना हमारि ए बहीन,

ई रंड़ापा खेवत बीतोय ना दिनवां रा ऽ त,
सखी हमार गउवां ना नतवा गोदे ए गोतिन,
ई सेन्हुर हमार लागलेनि ना पहुना रे तोहार ।

गद्य : पंचे जब एतना जाइ के रानीं चरन पर गिर परल बीजा, कहति बा जे हे सखी, आजु जब मउर उठा के ताकि देत जेवना में जरि जइहें पती हमार, बेवा हो जाईब सगड़ पर, अधजल में परि जाई माटी हमार, देखऽ नाता गोता से हमार पती लागले पाहुन रे तोहार ।

त एनियां भइया हंसि दिहलसि ना आ धियवा देखब बमरा के,
ओहो जाके मोतीए सगड़वे की नऽ घाटि ।

गद्य : जब एतना बयान के कहले ह बीजा, तब हंस देतिया सती, सती जब हंस देतिया त का अजई कहताड़न, हंसे बेटी बमरा के, लेके भइया मोती सगड़ की घाट, बोले पठा अजइया, बान्हि देलऽ ललकार सुनऽ ए नारि सोहवलि के, सागड़ पर मानऽ जा बाति हमारि, अब कहतानी तोहन लोगन से अपना हिया में लीहऽ बइठाइ, आजु ईहै झिंगुरी के एड़ दही-चिन्नी होतिआ, अब हम बियही के डोला लेके चलि जाइब गजन गउर गढ़पालि ।

जाइ के अपना मितवइ के ए करबि देखबू अगुएआई,
सुहवलि में बमरे के खोजबी रे दामाऽऽद,
आजु निहचे लेइ आइबि ना बरवा देखबऽ सतिया के,
आजु सखी निहचे लेइ कुल्हि जन के होइहन रे बियाऽऽह,
अंगवा जो होइहति ना आ सदिया साँचो सतिया के,
ओही बेरि दू चार जन के हमहूँ न देबों रे भंजा ऽ इ,
भोंटवा पर बतसल ना मनवां रहल प ऽ ठवा केऽऽ,
सती ओठ लुगवेइ में आ दंतवे रे चबाइ,

विजवा सरासरि तथा अजयी का सुहवलि से गउरा पहुँचना—
बोहा में संवरू और अजयी का मिलन

बाकी ओइजा नतवेइ ना आ गोतवा ए दादा न कारन,
सतिया सोचति बा जे लागे रे पहुनवाँ ना हमार ।

गद्य : ए पचे अगुवाई त हो गईल, ओहीजां कहि के आ डाँड़ी अब उठि गइल इस्तिरी के, सब तिरिया अब घर घर चलल, आ गवन करा के अब अजयी चललें गउरा में ।

त ए पंचे तनीं अब सुनि लेबऽ जा आ गनवां बबुआ सुहवलि के,

अब गीति चललु गउरवा में लेलना का ऽ रि,
आजु एनियां फानि गइल ना डोलवा देखबऽ बीजवा केऽऽ,
संगवेइ में चललइ सरसरी के ना बा ऽ इ,
आजु बाकी दुलहइ ना बनि के हो चलल अजइया,
अब चलल गजनेइ गउरवे ना गढ़ ए पाऽऽलि,
सुनलीं जे धावलेइ ना घूपल ह पठा ए चलल,
अबहिंय दुइ घरी ना दिनवां ए बबुआ बा ऽ इ,
धोबिया आजु लेइलेहलसि ना आ संगवा में डोला बियहिन के,
ओही आजु बोहवेइ में गइल हउवे हेठिएआऽऽइ,
सुनलीं जे परि गइल नऽजरिया बबुआ धरमी के,
धोबिया आज लउकल बोहउवे में दादा ना बाऽऽइ,
जइसे गइया बोमि के बछरुया पर बाड़ी ना धा ऽ बल,
ओंगों धरमी पहुँचल अजइया पर ए बबुआ बाऽऽइ,
अजई जब सोहरि सोहरि ना दागे लगल पवए लगी,
अब धरमी देबे लगलनि ना आ बोहवा में इसएवाद ।
अब पंचे सोहरि के माथ जब लेके धोबी,
ओन्हावे धरमी खुसी के देवे लागल इसरबाद,
कहे जे जीयऽ जोयऽ ए पट्ठा जोयऽ लाख बरिस ओ खाँड़,
गंगा जमुन जल बढ़ो ओइसे बढ़तो आयू तोहार,
आजु कहऽ कुसल मिरुता में बबुआ मिरुत मंडल संवसार,
जहिया ले गउरा गाँव तूँ छोड़ि दिहलऽ
तहिये ले बेचैन रहलि हऽ बया हमारि ।
काहें तूं गांव के छोड़ल ऽ, काहें गाँव के छोड़ल ऽ,
कहत बा जे सुन ऽ संवरू दादा,
पियलीं दूध मयना के हमार भूजा गइल मोटाइ,
चउदह टोला नवहन के, एक्के हाला लड़ा देइँ, एहीं मोती सगड़ की घाट,
तबो हमरी देह के कंडा ना छुटे, ना वल सोना मे रहल अमाय,
सुनलीं बयान सोहवल के जे, जे गंगनी होतिआ बार्मार का पवन दुआर,
आजु ओहीं बले घमंडे संवरू दादा, हम केहू से न कहलीं,
अ सभके छोड़ि के चलि गइलीं सोना सुहवली पाल,
जाते में गंगनी बढ़वलीं आले के ओही मोती सगड़ की घाट,
केतने नवहा के फूला झारि दिहलीं,

झंडा धरती में दिहलीं गड़वाइ,
दू चारि हाथि खेल जब खेलवलीं, ओतने में सब बीर गइल हउवें सिहराइ।
कहत बा जे पछवां जब झिंगुरीय का गंगनिनां बानी भइया खेल ऽ वले।
आ झिंगुरी ले गंगनी में दिहलीं बिचिएला ऽ इ,
आजु ईहै दुइ गोइ ना नरिया जीतलीं सुहवलि में,
आ लेके संगवा गउरवे गढ़एपा ऽ लि,
धरमी जौ सुनलनि ना रनियन के भइया ए जीतल,
उनुकर गज में छातियाइ नाहीं रे अमा ऽ इ,
कहत बा जे ले चल ऽ ना भवहो मोर अलवाबेल्हा,
तनीं रानीं बखरीय में लेत स ना उतारि,
आजु ओइजां खुसी भइल ना आ मनवां भइया संवरू के
अब उनुका बलवेई में भइलनि रे दीमा ऽ ग,
धोबिया आपन पीटइलेई बहनवां भइया दाबि हो देले,
कहत बा जे रनवाँ में जीति लेहली, ना नरिया हो लेलएका ऽ ऽ र।
पंचे जाही दीन के बातेह, आंगे सुन ऽ समर के हालि,
तनी सुनिलेत ऽ जा खेला सुहवलि के, एही सोना सुहवली पालि,
धोबी बड़ बड़ पईनि बाड़ पुजाइल, बोहा में मरले बड़वरे गाल ऽ,
तनी सुनि लेइँ सब खेला अब धोबी के।
आरे रनियां आजु पहुँचि अऊ गईली बाड़ी बंग ऽ ला ऽ ऽ में,
आजु रानीं लोग उतरले धोबिनियें के न ऽ बाइ।

अजई का अपनी दो पत्नियों के साथ बिहार करना,
और युवकों को कुश्ती लड़वाना

गद्य : तब ए पंचे सरासरि के डोला ले उतरले हउवें स, अब हल्ला हो गइल सुहवल
में न जे पिजला का दुई पतोहि आ गइलीं स।
सुनील ऽ जे पंचे एनियां जमि गईल ज ऽ लसवा बबुआ अजई के,
अजई अब झुलनी के लूटलनि ए बहा ऽ रि,
नवहा आज रोज-रोज ना आ लड़े लोग बा भइया आईल।
मेहनति आजु जमावलि नवहनवन के ना बा ऽ इ,
बाकी एनियां बीहड़ रहल ना पूतवा बबुओ पिजला के,
सभका का सुरहनि में ढिहलसि ए लड़ाइ।

फागुन का महीना होली की तैयारी, होलिका दहन सम्पन्न

गद्य : सबके लड़ावे, आजु पंचे, विधि बरम्हा के लिखनी सुजनी गइल बाटे निअराइ, थोरे दीन का बीतला पर, फागुन के चढ़ि गइल महिन्ना हिन्नू के आ गईल परब तिउहार ।

यहाँ गायक अपने शिष्य रामदेव का उल्लेख करता है
जिन्होंने बीच में अपनी लोरिकी सुनाई

त रामदेव एही जाग ले गनवां बबुआ रहलन ए गा ऽ वत,
आधा गाना खतम कइनन ना बेरो रे हमा ऽ र,
कहिहन जे आजु हमहीं सिखवन भइया सीवनाथ के,
देसवा में काहे लूटल ना ईजतू रे हमा ऽ र ।
ईहां जे के गाना महाराज जी उठवले न रहलन, तनी हमार गाना
ऊगाना के देखीं केतना दूर जालन हमार सीख हउवन नू ।
के ? आरे रामदेव ।
जेवनी बेर फगुनह के चढ़लनि ए महिन्ना,
सुहवल में हिनू के आइल बा तिहए वा र ।

गद्य : साँझे संवत फुंकाला, लेके भइया गजन गऊर गढ़पालि, बाजे लागल डुग्गी सहदेउवा के, चउदह टोला में डांका देला पिटाई जे ए भइया कालिह जेकर ताल बाजि जाई मिरुता में, ओकर हम उलटा मुमुक चढ़ाइबि मुँह में गोबर देइबि ठुँसवाइ, कांचे कइन कटा के देहि के बोकला लेइब छोड़वाइ, नहन में डालि देहवि खपचाली भहुँआ टेकुरी देइबि गड़ाइ, ढाहि देइबि बंगला में मिरुत मंड़ल संवसार, आधा धड़ राखब दोगही में, आधा घामा देइबि टंनवाइ, छत्तीस हाथ के भाला तोहन लोग के सीना पर बरवस देइबि दबबाइ ।

पंचे, अब त राजा के डुगी बाजि गइलि,
जब डुगी बाजि गइल, अ संवत जब फुंकाइल बा,
त तनीं थोड़ी बयान न रानीं के कहि न दीं ।
सुनीलं जे जेवन बेर गवनन के रहलि लोग गवएनहरि
गउरा कुल आजु दोंगा के इ रहल लोग बहुएआरि,
रनियन के दबि गइल ना मनवां पंचे गउरा में,
ऊ दू घरी राति ऊठलेइ बंगलवा में लोग ना बाइ,
अब रानीं हथवई के लेइ के लोग दाम्रो ए कानो,
अपना लोग ठड़ा ए फटकवे पर ना बा ऽ इ,

कहिहन स जे उठिहनि ना पठवा जो बीरवा लोरी,
जेवन दिसा होखे चलिहन ना गउरा मयरे ऽऽ दान,
फजिरे जो बबुआइ पर खेले के अब जो दाधो ए कानो,
हमनी के ललसे न जइहन ए बुताऽऽइ,
रनियन का लागल बाटे ना मनवाँ पंचे गउरा में,
सभ बाटि जोहत लोरिकवे के लोग ना बाइ ।
जेतना इस्तिरी लोग रहल गउरा में, गवनहरी आदोंगा वालीसे
सब दाधोकानों ले ले, अपनी फाटक पर पंचे, बाटि के जोहि लोग रहल,
केकर आ त लोरिक के,
जे आजु हमनो का अवसर आ गइल बा,
फगुआ हमनीं का खेले के जरूर बबुआ पर,
जो फगुआ खेलतानीं जा, त हमनीं के मन के पूजि जाई मनोहर,
पेट के ललसा जाई बुताई,
तब कब तक ले रानीं खड़ा रहलीं स, आ त दिन दू घरी चढ़ि गइल पहर
तब ऊ रानी का कहति आड़ो स,
कहति आड़ी स जे ए सखी, आजु परि गईलि बिपतिया जो बुला लोरिका पर,
ऊ अपना बिपती में गउरा में गइलनि ए दबा ऽ इ,
को त ओकर बोहवा धरमियां जूझि ना गईल,
ऊ बिपती में परले लोरिका न गउरा रे बा ऽ इ ।
हाँ, हाँ, अब पंचे जहिया ना दिनवा के बाते,
तनी अब सुनी ए समर कऽ हालि,
सुनि ले बया ऽ न साचो हो गउरा के,
एहि आजु गजन गउरवे गढ़ ना पालि,
आजु भइया सांझे न समति फुंकाला,
साहादेव डुगी देले बाटे बजवाइ,
जेकर बाजि जाइ तालि सुहवलि में,
लेके काने सबद जाइ सुनाइ,
ओ बीर के उलटा मुसुक चढ़ाइ के,
ओह में गोबर देइबि ठुंसवाइ,
आजु एनिया घूमि गइलि दुहइया भइया सहादेव के ।
एहि नगर गजने गउरवे गढ़ए ऽ पालि ।
: पंचे जेतना गवननि के रहली गवनहरि, उ गउरा के न करी, बहुआरि, पहर

भरि राति जो बाटे जो तिरियन के खुसी उठल मन में बाइ, कहं से जे हे सखी, अब दिसा मयदान होके आ हमनी का क्रिरिया करम कइके अब हमनी का लोरिक पर फगुवा जरूर खेले के।

आजु रनिया करतियाड़ी ना आ बतिया भइया गड़ही में,
कुल्हिय गोपी लहउरा ले गइल रहल ना बिटुयेराइ,
आजु अबहीं लागल रहलि ना आ लोहिया सांचो गउरा में,
उ दाधो-कानो लेके ठड़ा जे फटकवे पर ए बाइ,

गद्य : आजु रानी जोहतियाड़ी बाटि सूरमा के, जे एहि पड़े बबुवा उठि हं आ दिसा मयदान जे होखे चलिहं त फजीरे खेले के बबुआ पर दधिकानो, मन के पूजइ लेबे के मनोहर, खेलि के ललसा घाली बुताइ। सांझि खानि खेले मारि अबीर के, केसरि गली में देबे के उड़ाइ।

आजु रनिया सोचि सोचि अपनइ दे ऽ ऽ ह, एबढ़िया पर खाड़ा बा भइल,
फाटक धइ के बटिया जोहत लोग लोरिकवे केन बाइ,
रनियन के घरी एइ पहरवा दिनवां चढ़ि बा गइल,
अब दिन छ छ घरी न ऽ गइल बा नियरे राइ,
गउरा में नहिं उठे ना आ पूतवा बबुआ बघिनी के,
आ दुअरा पर बइठलि रहलनि ना आ असनिय रे दबाइ,
गउरा में टूटे लागलि ना आ मनवा भइया रनियन के,
रानी लोग गारी देत लोग लोरिकवे के ना बाइ।

गद्य : का गारी द स, कहेस जे हे सखो, ओ डिगर के अन के कमीं हो गइल, कि घर में परदा गइल ओराइ, केवना विपति में फंसि गइलनि, जे नइखन उठत गजन गउरा गढ़ पालि, केवनो कहतिया जे एकर बुला बोहवइ में ए संवरू बुला मारिबा गइल, ओही से लोरिक विपतीय में ए गइलनि रे दबाइ,
जइसनि आजु तोड़त बाड़नि न आ मनवा जे हमनी के गउरा में,
उनकर मनवाँ तोरिय दीहनि ए भगेवान,
तिरिया लो देत बाटे न गरिया भइया गलिया में,
धोबिया सुनलि दुधिला ना पुरवा रे बनाइ।

गद्य : स्त्री जब गारी देबे लगली स, पंचे त धोबिन का बूते अब दूधिला पुर ना रहि जाइ, कहलसि जे हम का कहीं हम मीतवा अब ल धोबी लेके भइया बोलत बांड़ बिजा से, कहलनि जे बियही मोर लरिकवना, जेवन पातरि मुंह के नारि हमारि, जेवन टांगलि जामा बाटे सोसिया के, खूंटी उतार ले आव, अब हम बान्हब पाग

गुलाबी । बेइ पर बीड़ा कलंग पहराई । कलीगंज के जूता, गोड़ में मोजा लेई लगाइ, घरि डहर कीला में अब चलव मीता का पवन दुआर ।

धोबी की वेशभूषा

सुनिलं ऽ जे धोबिया जब पेन्हे लागल ना, अ जमवां भइया अलवा बेल्हा, जेकर सोन के पनियेइ धरवले ना कुरुता पर बाई, जेकरि आजु सोनवन के तरवा रहलि गरदनि में,
उ बीर का फुलना झुमत रहलनि ना अ बगल पर ल ललये कारि,
जहिया धोबिया बान्हे लागल ना आ पगिया सांचों अलवा बेला,
जेवना पर झरझर न हं बांसवा ई लागल हो बाइ,
जेवनी बेर झरे लागल ना हं रोगवा भइया लवंगे के,
जेवन पासल बीर के इ दूपटवा ह ऽ लेलकारि,
अब अजई गोड़वाइ में ए मोजवा ह पंचे लगवले,
ओहिय नगर दूधिलाइ ना आं पुरवा हो बाजारि,
जहिया आपन छोड़ि दीहलसि ना, हं घरवा सांचो अलवा-बेला,
अब चलल लोरिके का आ पवने हो दूआर,
जहिया बबुआ चलले इ ना अजई गइल चलावल,
चढ़ि बेदा गइले इ लोरिकवे का न बाई ।

लोरिक और अजयी का लड़कों के साथ कुसुमापुर में होली खेलने जाना

गद्य : आजु बइठल पाठा ह बीर लोरिक, अपना बइटल बंगला में बाई, जूमल पाठा अजइया । कहत बा जे का मीता, इहे होई । सुनत नइख । स्त्री सब गारी दे रहलि बा । आरे उठावऽ, भाई ढोलक, हम डफ उठाईं । ताल दुअरा पर बाजो, लरिका बिटुरा स, होखो होरी ललकारि के । सोचे पठा बीर लोरिक, मन में करे विचार, कहे जे सुनलेबे मीता मन बे न बाति हमार, सुनऽ सहादेव के दाब नइखे लागल कि हमार का करि सकि हनि । बाई दाव वमरा केकर बा, आ त भाई अपना धरमी के । कांहे दाब बा उनकर जे हमार मलिकार न हउवन । त जे के मालिक ब दे ला । जे मालिक ओतने कहेला, ओतने करे के चाहीं, हमके एइजा अधिका जनाता ऽ हमार आज ना फगुआ खेले के । साफे कहतानी मीता । आजु हम फगुआ खेल ना सकब, त कहत बा जे ना खेलब, कहत बा जे कोटिनो ना । भले सहादेव बरियारा कहासु । एकरा हम तनिक सक में नइखीं ना हमरा हीनता बा । बाई ईत समेय ह, हमहीं हिन्दू नइखीं न, सब नगर हिन्दू बा । अगर जो फगुआ ना होखी गउरा में त हमरा तनिको भरि

विषमादि भाई नइखे । बाई हम गा ना सकब । कहत बा जे आछा ए मीता तोह से पूछतानी, हम जा तानी बोहा में । संवरु दादा, संवरु भाई जो कहिहन, त डंफ उठइब नू त कहतानी तुरन्त :

लोरिके कहतांड़ जे जो भइया, भइया ई अडरवा हमारि देइ ना ऽ ऽ दीहं ।
गउरा फगुआ गली में गाइबि हो लेलकार ।

गद्य : कहत बाडे जे भाई जो हमार अडर दे दिहन त हमरा भइ नइखे । बाई भइया, देख कांहे जे मलिकार जे बदले बानी । एने हम डंफ बाजि गइल, आ का जाने सहकल मन बाटे सहदेऊवा के, आ भरथे उठि लागि जाइ । आ लोहा लागि जाइ । तब हमार धरमी सुनिहन त कहिहन जे बजर परो भाई पर, गोंयड़े जाई दबाई—आज बजर परो भइया, उपर गोयँड़ जाइ दबाई । आरे हमके झूठो के मलिकारि बा बदले । बुला, गाइन में बानी हम चरवाह । ए बेरी ना पूछे के चाहीं इनका । एतने जे हमरा लागि आ डर बा ए अजई, हे मीता । नात सहादेव के हमरा तनिको अदब नइखे जे हमार कोहना के काकरि हं ।
बाकी हमरा लागतियाटेना आ डरिया दादा संवरु के
बोहवा में मालिक हउवनि भइया आरे-हमार ऽ ऽ

गद्य-पद्य : अजई कहताजे आंछा जातानी, त कहलसि जे जा, देख भइया एइजा का बतियवले बाडे पंचे, आ ओइजा देखिहे जे उल्टा बतियाइ अब, संवरु की हां ले चलल बाटे, बातचीत कके । तनि सुन ल जा खेला, अजइया के,
अजइया त धरती एंड़े दबाके कूदल बाटे बयालिस हाथ ।
छोड़े गांव गढ़ गउरा जमीं सुरहनि में गइल बाटे हेठिआइ,
आधा जब गइल बाटे सुरहन में जब सरउंज में गइल बांड़े हेठिआइ ।
मय लागल रहल ह हरिसकरी, धरमी गाइनि के बइठल रहलन ह अरारि ।
लहमरि रहल गाइ सुरवाँ के, शोभाकहे जोग ना बाई ।
तबलगि घुमि गइल नजर धरमी के, गऊरा कि ओर ताकत बा नयन पसारि ।
देख ता जे धावल आवता अजइया । त संवरु देख तारन जे हं भाई ।
सोंच तांड़ अपना मन में, कहलन जे ओ हो, आजु भाई खुशी के दिन ह,
आ मंगल के दिन ह । ईत मीतवा देख तानी जे हमार भाई,
अजइया देखतानी जे भवहिन के बुला परदा फाटि गइल का ।
आजु एनियां सोंचति बाड़नि नाऽऽआ बीरवा बबुआ अलवाबेलाऽऽ,
संवरुय अपना मनवन मे कइलनिऽऽरे बिचार,
कहलनि जें बुला खगि गइल ना आ लुगवा हमरी भवहिन के,
बुला दूधिलापुर पइरदाइन ना ऽ भइलनि ए पुरान,

कीया कीछु घटि गइलि खरचिया बुला दुघिलापुर,
तले धोबिया आवत बोहउए में नाऽऽबाइ।
आजु धरती एत नाइ ना आ बतिया बाड़नि भइया ए सोचत,
तब लक धोबिया मउरे ए ना दे ले बाटे लटएकाई।

गद्य : मउर लटका के पंचे का अजई कहताड़ें, घरमी पुछताड़े जे हे बबुआ इ कह ऽ कुछ कमी तहार हो गइल बा, अजइया कहत बा जे सुन ऽ ए भाई मल सांवर-मान बीर बाति हमारि।

तोहरा नियर बीर बाड़ें बलवन्ही, त हमरा केथु कर के बाटे अकाज,
त पुछत हवन संवरु जे का अइल ह त का कहीं, कहला से कहा तो नइखे।
ए पंचे, अजइया ओइजा आधीन होई के बनल बा जे ओइसन आधीन,
संसार में ना होई। का कहे :
कह त बा जे साहादेव संझवेइ में, समत ए दादा फुंकाइल,
संझवें में डुगीया आ देलेइ ह ऽ बजेवाइ।

गद्य-पद्य : ओकर डुगी बाजि गइल बा सांझे में, ए संवरू दादा। जे डीह काल गउरा ताल बजा दोह उनका हम उलुटा मुमुक चढ़ाइबि, मुंह में गोबर देइबि ठुंसवाइ, कांचे कोईन कटा के —देह के बोकला घालबि छोड़वाइ, नोंहन में कहले बाजे ठोंक देइब खपचाली, भंहुवा के टिकरू देइबि गड़वाइ, आधा घर खड्डु दोगही में, आधा घामा देइबि ठनवाई, छतीस हाथ के भाला लोग के छाती देइब भीड़काइ। इ है त सहा-देव के दोहाई फिरि गईल।

बाकी हमार रोवत बाड़नि ना ऽ अं भइया आजु बीरवा लो ऽ ऽ रीक,
दुअरा पर ऊगल बाटे ना ऽ अंजोरिया हो दादा हमा ऽ र,
कहत बा जे फुटि गइल क ऽ रमवां हमनी इनवारासन,
आ बरुआ घरे होइ गइलनि ना आ जनम ए दादा ह ऽ ऽ मार।
आजु जो बड़ियार घरे ना आ ना जनम जो धाई बा देत ऽ नि,
हमहु अ फगुआ खेलि लेतीं मनवाई हो लागई।
तहिया आजु लागी गइल ना, अगिया भइया घरमी का,
अब लहरि बिगलेइए बा बदिनिया मै उनकाए बाइ।

गद्य-पद्यः आजु पंचे लाल लाल हो गइल बरौनी, नयना रोधिर भइल समान। कहलन जे सुनले पाठा अजइया, मनबे बाति हमार, जीयते बानोदुघरने के, बाजा कोखि देला आज हमार। जाइके कहतानी जे घुमि के फगुआ गइहे, आ चढ़ि जइहै सहादेव का पवन दुआर, बाजी ताल कुसुमापुर, लेके कुसुमापुर बाजार, जहिया सहादेव तीरछी अंगुर देखइहं, बोहा खबर दीहे भेजवाइ, एही ललकारे चलल अहिर

चलावल, चढ़ि जाइ सहादेव का पवन दुआर । एक्के हाला, मारब बान अलबेला
बखरी बटुरी पहर देइ खनवाइ ।
हाँ, हाँ, कहिलीं ए पंचे जहिय दिनन वां कइ जो बाते ।
अंगवा सुनीय समर के तनि हालि,
जहिया लौटल धोबिया जो बोहवा ले,
अइलन गजनि गउर हो फुलहारि ।
जहिया बीरवा गइल बा दुअरे पर ।
लोरिका बइठल बा आसनि रे दबाई ।
कहुए सुनले न जे पठवा बीरवा लोरिक ।
बोहवा गइलीं ना बयवा रे हमारि ।
धरमीय भोंकरि भोंकरि के बाड़नि रोवत,
बीरवा रोवत बा जारवा रे बेजार ।
कहुए जे बजर परो न भइया पर,
उनुका गीरिती गजबवे केन धारि,
भाई का कोखिया कादर न भाई जामल
कदरा लोरिका ले ले बा अवेतार,
एनिया बाजलि डुगिया जो सहादेव के,
गंड़िया फाटलि न लोरिकवे के न बाई,
इहे आजु लोरिक भाई त नाहिं जामल,
बुला गदहे ले ले बा अवेतारि ।
एनिया ज ऽ रलि बदनिया लोरिका के,
उठिय जब गइल बंगलवो में बाई ।
कहत बा जे ए भाई तनि खोलि देवे फाटकवा, देखबे अलवा बेल्हा,
एहि आजु गजने गउरवे ए गढ़ ऽ पालि,

यह वेशभूषा कुछ भिन्न है

अब बीर ऽ दाबे लागल ना आ डलवा देखब ऽ बखरी में,
ओहि नगर गजनि गऊरवा हो गढ़े पालि,
अब बीरऽ पेन्हे लागल ना जामावां हो सोंसिये के,
जइसे सोन के पनिया लगवले ऽ भइया रे बाई ।
सोनवन के तरवेइये के, कण्ठवा हो रहल बनावल,
तार ओही घींचल कुरुतवे पर बबुआ बाइ,

पीलवा का रूमलियई में ए तार के बा फुलना बा लागावल,
जेवन ए घरी नवहन के ऊ गवटी कहावतु भइया ए बाइ ।
बीर का रूमलियन पर फुलना ना रहल लगावल,
उ बीर अपना धरत बा बदनियें पर बाई,
ऊपरा जे बान्हि दोहलसि ना तगवा भइया अलवा बेल्हा ।
जइसन अब चीरवें लवंगि फे आइलि बा पाइ ।

गद्य : आ ऽ हाँ ऽ इ बीर जे अलीगंज के जूता, गोड़ में मोजा लेलन लगाइ । ए बीर जेवनी बेर दावे एड़ बखरी में जुमि गइल दुआर पर गाईं । कहे जे मीता मोर बघेला अब बीर मान बात हमार, आजु भइया उतारि लऽ ढोलक अलबेल्हा । हम डंफ लेई उठाइ । पहिले बाजो ताल दुअरा पर ।

पद्य : सुनिलं जे एनिया धोबियाइ ढोऽऽलकवा बबुआ लेइ बा ले ले,
लोरिक डंफु ले ले बाड़न खुंटिया ले उतारि,
ऊय बीर बइठि केइ ना,
आ तालवा जब बाड़नि बजवले,
गउरा के लरिका धावल गलीय में लोग ना बाइ ।

गद्य : जेवं धोबिया ताल बजावल ता, तेंव लरिका आ जेतना नवहा जुमि न गइलन पंचे लोरिका के पवन दुआर, आ जे बाजि गइल ताल दुअरा पर, आ एक ताल जब होरी होखे लागल ललकारि, एने टुटलि आस तिरियन के, सब रानी उठि गइलि बखरी में बाई । कहं स जे ए सती । बाजि गइल ताल हमरा बबुआ के । एहि नगर गजन गउर गढ़पाल । चलऽ जा हमनों का देहि के करीं तैयारी, रंग ले के होइ तइयार । केहू ले के केसरि उड़ावो केहू गली अबीर देहीं उड़ाइ, होखो होरी अलबेला, बबुआ पर फगुआ खेलीं जा मन लगाइ ।

पद्य : आरे पंचे, अब जाहिये न दिनवा के न बाते
पंचे अब जाहिये न दिननवा के बाते,
तनी अब सुन ए राजवा के खेलवाड़,
अब लोरिक खेले फगुवा बा चलल ।
ओने रानी बनी के भइली न तइयार ।
कुल्ही रानी हाथ में केसरिया बा ले ले,
एगो हाथे रंगवा जो ले ली ना उठाई,
जेवनि बेर उठल बोया बीरा अलबेला,
संगवां में धोबिया चलल बे न लेलकारि ।
अब बीरऽ गावे चलल फगुआ गलिये में,

अब वीरऽ गावे चलल फगुआ गलिये में,
ओहि नगर गजने गउर गढ़ पालि,
अब बीरऽ होरी ये छोड़ल अलबेला,
गलिये में तालवा जो देले बा बजाइ,
जइसे आजु होति बा होरी गली में बिरिज में,
जइसे होरी होत ए बिरीजवा में बाई,
जइसे अब गोपी के कन्हैया रहलन ऊगल,
अब केसरि उड़लि उ बदनिये पर बाई,
ओंगों अब उगल बाटे बीर अलबेला
जेकर बीर के बंका ए लोरिक परल नांव,
अब भइबा उड़लि बा केसरि गलिया में,
अब बाबू उड़लि बा केसरि गलिया में,
जइसे केसरि उड़लि बिरजवा में बाई।
जइसे अब ब्रिज में बा फगुआ जो भइल,
केसरि आजु उड़लि बाड़ी न लेलकारि,
ओड़ो भइया उड़ति बा केसरि अलबेला,
बीरऽ फगुआ खेलले गउरवा में बाइ।
जहिया दादा रंग से बा देहिया रे गोहताइल,
अब होरी गावत बाड़े रे लेलकारि,
अब बीर घुमि घुमि फगुआ लगल न गावे,
सभका जो गवले दुआरवा पर के बाइ।
अब भइया बदुरिन गली घुमि घालव,
अबहिय दूई घरी दिन बा चल बाइ,
तब ओइजा में बोलल बाटे पाठवा अजइया,
आ त मीता मानि जइब बतिया हमारि,
एहि जाले धले इ डहरि अलबेला चल चलीं कुसुमापुरवान बाजारि,
तनी अब खेलीं जा फगुअवा कुसुमापुर,
देहिया के लालमा हो घाले के उतारि

गद्य : ए पंचे, आइ के दुई घरी दिन बाकी बाटे। मगर गउरा में फगुआ गाइ के अजई कहता जे मीतवा कल चलि जा कुसुमापूर। कहतबा जे हं चले के, आजु पंचे सुन ल बयान सुधर के। जे बीर बा से, गउरा गांव छोड़िके, आ जे कुसुमा पुर बहुरिया तांड़, सऽत जेबन रहलि बेटी सहदेव के, उहें अपना बइठल घरहरा

बाइ। आ पंजरे पड़रे में बइठलि रहलि नारि महदेव के। जवनि चनवां के भउजाइ रहलि। जेव बीर जब फगुआ खेले चलल ह।

पद्य : आजु एनिया ठुनुकति बाटे ना ऽ आ धीयवा देखब सहएदेव के।
आजु भउजी मानि जइबे ना, आ बतिया हो दादा हमारि।

गद्य : का कहति बा—कहतिया जे हे, भउजी, आजु हमरा के अडर दे द ऽ। आजु हम बीर पर फगुआ हंकड़ि खेलबि। जब चनवाँ कहतिया जे हम फगुआ खेलबि।

पद्य : त महादेव बो छतिया दिहलसि नऽऽ,
आ रनियाँ भइया बंगला में,
कोठवा पर रोवे लागलि जरवा ए बेजारि,

गद्य : का कहतिया—हाइ ननदि, हाई ननदि, इ का कढ़वलू, जो ओ बीर पर फगुआ खेलबू। त गांव भर के नाता गोता से उ बीर भाई लागेलन तोहार। आजु जो खेलबू फगुआ दादा लोरिक पर, अजुवे ले हमरा पती के पगरी जाइ गड़ाई। बिगड़लि बेटी सहदेव के। कहता जे सुन भउजी, अब हम तोहसे कहतानी,। अगर जो अडर से हमके कहि देतारू खेले के। त फगुआ हम खेलब तबे कुसल जनि ह। आ ना जो खेले देबू, त काढ़ि जरूर हम, माहुर के बिया फेरि देबि कुसुमापुर में। त का बोइबि आ त काल्हि हम पान के दोकानि जरूर छानबि।

पद्य : कहतिया जे भउजी भउजी तोहरा ओरि तर न,
अ दोकनिया साँचो छानि ना देइवि,
चुनिय चुनी बीरवा घालव ओ रे लागाइ।

चनवा का लोरिक के प्रति पूर्ण राग

गद्य : चुनि चुनि बीरा लागाइबि, तोहरि ओरी तर हंकनि छानबि दोकानि, देश दूनिया के गुण्डा चभिहंस बोड़ा हमार, ले के सेज्रि लगा के तोहरे सुति रहबि, एहि कुसुमापुर बाजारि। तहार अउरी ईजति बनाइबि, ले के एहि किला सोना सुहवलि पालि, एतना जब बयान कहतियाटे जे भइया चनवां। थर थर कांपतिया ए दादा महदेव बो। कहतिया जे आहा कइसन नारि। कहतियाटे जे देख जो फगुआ खेले के मन होखे। त ओह ले नीक फगुवे बा जा खेलिलऽ त कहतिया देखु तोरा से हमहु कहि देतानी। हम बजरिए निछान ना गउरा ना करे जाति रहंलि ह। एहि कारन हम तीन जिला के केहू एक बेरि बाजारि करेला, हम तीन जूना

जात रहलीं हंऽ। ओही बीर कारन। आजु हम फगुआ खेले के कहतानी त
कहतिया जे जा खेल गे खेलऽ
सुनीलंऽ जे एनिया भइया चलल बाटे ना,
आ गोलवा जब रे धोबिया केऽऽ
आ लरिका लोग चलले कुसुमवापुर में बाइ।
चनवां आजु गइले रहलि न अऽबीरन भइया देहिया के,
चीरई अपना खंसले रहलि ना आ महवा रे लिलार,
आजु रनिया घरिला में रंगवा घोरि बाटे ना ले ले,
हाथवा के फुचुकाइ नाऽऽले ले, ना ए बाटे उठाइ,

इसके बाद टेप में एक बिरहा है लोरिकी से उसका सम्बन्ध नहीं है

तबलक एनिया जुमि गइल ना ऽ गोलवा भइया धोबिया के,
साहदेव का खिरिकिया पर जुमल बाटे लेलकारि।

गद्य : जेंव गोल जुमत बाटे तें भइया चानवाँ मारितया फिचुका लोरिक पर, खेले के फिचुका लोरिक पर लगि गइल दोसरा पर।

यहां से मूल टेप का कुछ अंश दूसरी बार रिकार्डिंग करते समय नष्ट हो गया है।

चानवां के खाली फुचुकवा लोरिक वा खलि नाऽऽगइल,
तबलक धोबिया हंसे लागल ना मुँहवा ए उठाइ,
कहत बा जे सुनबू अब धियवा हो साहादेव के,
ई गउरा आजु मीतवा लगवले हऽ हमार,
मीतवा पर बूंद भर जो रंगवां हो रनियां हो जो तूं लगइतू,
त जानब्रि जे असल सहादेव के बेटिये तू भइलू हा, काहाई।
सुनिलंऽ जे धोबिया देइ दिहलसि डांफवा भइया आलवा बेल्हा,
ओहि आजु साहादेव का पवने हो दुआर।
हं ऽ ऽ आजु पंचे, जहिये दिननवां के फगुआ,
तनि पंचे सुनिल ना मनवाँ लागाइ।
अब एइजा राति के हो दिनना बबुआ होइ,
एहि जा जे माहाभारय जइहन रे ठानाइ,
अब पंचे विधिये बरह्या के सुनऽलिखनियाँ,
अब जुमि गइले कुसुमापूर पाल।
अब भइया बाजि गइले ताल गलिया में,
धोबी जब तिरिया में देले बा घीरिकारि,

अब भइया जरलि बा बदनि चांनावां के,
एड़िया ले हरहर गिरेला अंगार,,
आजु भइया डांटि के बोलत बा बंगला में,
बाबिया तू मानि जइब बतिया हमार,
अपना त मीता के त सजग कई देव ।
अपना त मीता के त सजग कइदेब । (पुन०)
अब दीहनि रंग न घरीला लेलकारि ।
अपना त मीता के सजग कइ दीह,
होरिया जे गाइ अब जेवन लेलकारि ।
जोइ हम एकहि ना बाप के होइब बेटा,
एकइ आजु माता के गरभे ना अवतार ।
आजु मारि देवि फगुआ लिलारे,
तोरे मीता एड़िये ले जइहन ए रंगाइ,
अब पंचे, बबुआ दब इये बंगले पर,
अब दादा परलि बाल सदेहे ल बिगारि,
पंचे आजु सुन-सुन लड़कि जब होके,
तनि अब बइठ ऽ जा आसन दबाइ,
आजु हमार कठिन ह गाना सुहावलि के,
आजु पंचे कठिन ह गाना रे सुहवलि के,
होरी अब खेलत फगुआ लो बा,
तनी अब सुनि ल फगुआ अलबेला,
चाना अउरी फिचुका ना दोहलसि रे उठाइ
का उठावतिया

गद्य: कहतिया ए मीता सजग राख अपना मीता के, अबकी जो फिचुका हमरा परि
जाइ त कहि ह जे हम बेटी साहादेव के चानवां बेटा ह ।
आजु रनिया खाइ घललसि कोरियावा भइया कुसुमापुर,
अब तनी सुन गउरा में गहलीं रे ठानाई ।
अब तनी सुन गउरा में गहलीं रे ठानाई । (पुन०)

गद्य : कुसुमापुर में पंचे अब तड़रवा उठि गइल । आ फगुआ उठलि बा लोरिक के
बाजि गइल ताल धोबिया के
आरे होरी दादा उठिये गइल बे लेलकारि,
अब भइया बाजि गइल डंफ मोर पंगिया,

जेवना में बाजि गइल बाजा लेलकारि,
एने भइया बाजलि बा जोड़ी त लरिकनि के,
होरी अब होत ए गलिन में लेलकारि,
चांनवा उ भरे जो फुचुका अलबेला,
अपनीय फांड़वा में ले ले बा घोराइ ।
इहे जब धइले फाटकवा इ अलबेला,
अब रानी खाड़ा देखेउ कोठा पर बाइ,
एने अब मचल बा फगुवा अलबेला,
अब होरी होत न बाटे न लेलकारि,
जब भइया सुरहा में सुरभि जे लागलि,
धीयवनि के अंखिया दे दे ली न बताइ,
चांनवा जो मारतिया फुचुक लोरिका पर,
अब बीर एड़िया ले गइलनि हो रांगाई ।

गद्य : जब ताल बाजल । आ सुर में सुर मिलल । आ पटे दे नयन ढाक ता, ओहि समे में चानवां अइसन फुचुका मार देतिया कि यार ले की उनकर बटुरी गरदनि मींजि गइल । छरकल बीर बघेला । अब वीर मान बाति हमार । अब हम खेलबि अब हम खेलब फगुआ चांनवा पर. एहि जा कुसुमापूर बाजारि, थर-थर धोबिया कांपे जैसे कांपे बियाइल गाइ, हाइ हो । मीता जो खेलब फगुआ चानवां पर दादा, एइजा भारथ जाइ रचाइ । कहता जो खबरदार अधिका बोलिह जनि, जेवना सान से हमके लिआ के अइलह अब हम खेलब फगुआ ऽ जरूर से जरूर । अब कहता लोरिका जे हे लरिका, मारि के धाका बखरी में अमां जा स । मारि के धाका बखरीं में अंभा जास (पुन) आ बहरा जनि आव स । अब होरी होई । एकत पाजी लरिका गउरा के रहलनिस दोसरे लोरिक बान्हि देलन लेल-कारि । अब भइया लरिका, जाइके मार स धाका कवनो सीना पर । केवनो फुरुहुर धइके, केवनो लुगा धइके ठेलि के ले गइलनि स उनुका के ढाबा में ।

आधा लरिका लंगो-चंगो ना चानवां के लोकइ बा देले,
आधा लरिका बखरी में गइलन रे सामाइ,
जाके बबुआ लेइ लिहलनि ना जालवा देखब गगरा के,
बरबस से गलिइये में लेइके आइल वा पराइ ।

गद्य : गली में जब गागारा आइल । आ चानवां के जब लरिका छोड़ द स त तनिको अदब नइखे जो हमार, लरिका का करि हैं । ए पंचे, बेगम होइके फाटक धहले बा । आ लोरिक फगुआ खेले के तेयारी कइ रहल बाड़न ।

बाकी एनिया चढ़लि रहलि ना धियवा भइया सहादेव के,
नाहिय तनिको लगतिया दाहवा ए पंचे न बाइ,
आजु रनिया धइकेइ फाटकवा खाड़ सांचो ए रहलि ।
लोरिक रंग घोरतेंइ बा आ गागरवा में आपना बाइ,
अब बीर के सतवेइ ना हाथ के बा किचुके हकारी ।
अब बीर मुठियाइ में लिहलनि ए लागाइ,
अब पाठा मेरवे लागल ना रंगवा मइया गागारा में,
चाना, बाबू हंसति रहलि ना ओठवा पर लुगवा लागाइ,
आजु रनिया हंसतिया ना ए फाटके पर,
ओकरा तनिको हया बातवा त नाहि रे बाइ,

गद्य : रंग लोरिक मेरवे तरे आ बेगम होइके फाटक धइले बा । आ हंसतिया । जेतने हंसे ओतने बीर के कीरोध उठे ।

गद्य-पद्य : सुनि लें जे लोरिक आ बिरवा महुरवा होइ बा गइल,
फिचुका ए भरले बा रंगउ में न बाइ ।
जेतना बल देहि में रहल उ बटुरी बल भइया फिचुका पर दीह नि चाढ़ाइ । ताने फिचुका अलबेला चांना का सीना पर चढ़ल बाइ । झांवर मुंह हो गइल, दादा ओठ पर फेफरी परि गइल । छितराइ नाचि गइलि बेटी सहदेव के, ओहि लेके कुसुमापूर बाजारि । जब बायां फिचुका दया वे दहिने परल बजर के हाड़ । दहिने ले के घुमतारी जे मारब फिचुका बायें से दहिने त करब फुटिजाइ बरियारि । अब रानी के सुन ऽ हाल, जेंव जेंव फिचुका दाबावे ओंगों नाचि के चोखट परलि । आ धोबिया जीव ले के चिल्हिक के भागल । कहलसि हाइ लोरिक एहिंगो फगुआ खेलल जाला, त खेलि के जब हटल त कहलसि जे आरे भाई अबो से हटी ना जा न त सहदेउवा जीव ना छोड़ी । आ अइसे फगुआ खेलेलऽ जे का रे जीवे मारि घाले ला । कहत बा लोरिक जे अधिका जनि बोल । हम एहि से फगुआ ना खेलत रहलीं हं । आ बरबस तू खेलाव के ले धइल ह । अब गांड़ि फाटे लागल । त कह, ता जे ना खेलब त चलब त चल । आ लोरिका भइया जेंव चानवा गीरतिया तेंव धइलरा डहर गउरा । लोरिका हड़बड़ा के धइल स गउरा । दुनों बीर पाठा जले घुम ताटे जे ओनिया जात लो बाइ तेंव बाँटे से चानवां देखि के जुड़तिया आ उठि के ठाड़ा होइके बोलतिया जे हे अजई लवटि आवऽ । आ ना लवटब तोहके हम काका से लहरा लगा के हम तोहके बोलवा लेबि दुधिलेपुर ले ।
आजु अजई चलले इ नाऽऽडरिया के रे पंचे ना मारल ।

उहै आजु लवटलि दूधिला पुर ले बाड़ ।
सुनिलऽ जे ना धोबिया कुसुमुवा पुरवा चलि ना आइल,
फेरू जाइके भइले दुअरिये पर ना ठाढ़ि ।

गद्य : ए पंचे दुनों बीर जब चलल लो । त जाइके गली में ठाड़ां लो होता चानावां हंसि के बोलतिया—जे देख अब हम कहतानी कथा तोहरा से आजु जो तहरा घरे तिरिया जो रहिति त तूं तिरिया के दरद जनित ऽ । लोरिक से कहतिया के हालि जनीत । आजु जो तहरा घरे तिरिया रहीत बबुवा तूं तिरिया के हालि जनीत । आहा ऽ हा । अब हम कहतानी जे धोबिया करे मीताई, दूनो बबुआ परल बाड़ जा बार कुँवार । जा दिन बुढ़िया जियतिया गउरा में । दुगो ड़ीठि लगवले बाड़ ।एगो उ लिखावतारे गउरा में, एगो उ बोहा परल मंझारि । जा दिन बुढ़िया जियतिया गउरा में, गली में घुम ताड़ जा निगम । जहिये दिन बुढ़िया मरि जाइ गउरा में । तहिये तेरहो लउकि जाई गजनि गउर गढ़पाल । तू गउरा में अहरा सुनु गइब । ऊ सरऊ बोह मझारि । ज दिन जियतिया त दिन संगी बिया तहारि । एहि जा ले खतम हो जइब, बारछ दिया त जाइ बुताइ । चनवां तड़का देतिया । एहि धोबी के कारन जाठि नियर दूनो भाइ कुवांर परल बाड़ जा बाइ ज दिन जिय तार तवे दिन नाइ चलतिया, जहिया मरि जइब जा खतम होइ खेला तहार । चुन चुन जब चनवां मेहना मारे भइया । त लोरिक क जाइके गजनि परल बा जाइ ।

लोरिकइ का अब भरि गइ ना नीर बा भइया अखियाँ में ।
कहतिया जे तिरिया तनिको झूठो नइखे कहति बा जे कुसुमापुर,
तहिये धोबी कारन दूनो भइया परि गइलीं जाठिये हो कुंवार ।

गद्य : ए पंजे आजु एकरे कारन नू हमनी का दूनों भाई कुँवार बानी जा, अब पंचे परि न गइल मोटि धोबी का एहि जगह से । मोटि परि गइल धोबी का लोरिक का । ना लोरिक धोबी से बोल ता, आ ना धोबी लोरिक से बोलता ।

गद्य : आरे दुनो बीर भइलेइ ना कगरिया, डंफ जे एकगरी टांग के, आ ए पचे लोरिक खूँटी में ढोल टाँग देलनि आ ओहि जा बीर सुति जा तारन । सुति जा ताड़ें । जब बीर सुति जाताड़े त उनको आँखो नीनि ना आवे । कवनो सुतल ना लोरिक हउवन । जब से मेहना मर ले हैं तब से जब जब सुधि आवै त बइठि के रोवसु कहसु जे आहाऽऽकेतने लंगड़न के बियाह हो गइल केतने जवन छोट हउवन स हमनी ले उन्हनि के त मेहरि आ गइल । आजु हमार दादा धोबिये कारन मीताइ गउरा में बंस डुबता हमार । आजु जो हम अपने भाई के चिलम चढ़इंती त जरूर दुनों भाई में एको जाना के ता बियाह हो गइल रहित ।

आजु लोरिक रोइ रोइ ना बइठल बाटे खम्हिया में,

आ भइया मऽनऽवाँ में कइलन हो बिचार,
कहलसि ए पंचे बुढ़िवा टोकले ह कि बेटा,
हमार घूमि के फगुआ गवले बा।
आ सिहरा गइल बा।
देहि तनि देखि आव जा, आ अगर जो मुँह में मांगे त खियइब।
एह मरम में खोइलनि सुति गइल बाड़।
आ एने बीर बाड़न से जवन सोंच आवे त रोवसु।
जब मन करे सुते के त नीनि न आवे।
एहि बीच में पूरबे लागलि लोही,
पछुवे लागल बिहान। अब भइया जब पह फाटे लागल गउरा में,
आ के के गजनि गउर गढ़पाल।
लोरिक झूठो के दुपाटा तानि के भइया सुति गइल खमिया में बाई।
त बीर बा से मुँह तोपि के आ दुपटा तानि के,
आ दबाइ के सुति रहलनि।
तब ए पंचे दुइ घरी जब दिन चढ़ल।
आँगना में जेवं जेवं धाम जाता तेंव घर
के मन परि गइल खोइलन के बेटा से।
कहतिया जे आहा – हा, आरे हमार हाइ हो लाल।
आजु हम एके बेटा ले के सतिनी होइ गउरा,
केहू ना दूसर परे फेर हमार।
आजु हमरा बाचवा के मरलसि खराई, काल्हि ठमसि के बथी कपार,
बुला बेटा के उठी बेमारी, बेकल हो जाइ मन हमार,
धउरे धउरे आवे अंगना रानीजुमल दुअरा बाइ,
चलल गइल चलावल, बीर सुतल बा दुपटा तानि,
जेंव दादा दुपटा के खोइलनि घींचलसि,
आंखी लागल बाटे टकटकी बीर चलत नयन से बाइ,
लोरिक का जब झर झर ना नीरवा चले नयना से,
टकर टकर तिकवत बा बड़ेरवे आपन भइया रे बाइ,
खोइलनि आजु धई धई ना लोरिका के उपाटि बोलवसु,
आजु आ तनिय उठि जात ऽ ना बाचवा रे हमार,
नाहिय आजु बोलत बाटे ना बीरवा साचो आलवा बेल्हा,

टकर टकर मुह ऽ वेइ निहारतो ए खोइलनि के बाइ,
लरिका के हर हर ना नीरवा गीरल ना आना से,
छतिया मारि के खोइलनि गीरलि पलंगिये पर दादा रे बाई,

गद्य : ए पंचे, जब छाती मारि के खोइलनि डेकरि के गीरि परलि त हाइ भगवान हमरा लंका में आगि लागि गइल। अब त भइया टोल परोस लागल न धावे। टोल परोसिन जेतना गोतिन बाड़ी स जुमली स, कह स जे का हालि हवे, कहतिया जे हमका हालि कहीं हमरा हइ दासा बेटा के देख लो, कहलसि जे हम दूसरा बेटा दिहलसि हमार। हमार बेटा फगुआ गावे जात न रहल, बरबस अजइया ढिंगरा गइल लिआइ। आजु न जाने केवनो बुजरी मारि दीहलसि टोना, कि केवनो जादो मरलसि सरिहाइ, की केवनो हमरा बाचवा के मेहना मारि दीहलसि ए दादा हमार बेटा के कंठ गइल रुन्हाइ। आजु पंचे जब टोल परोस बिटुराताटे त खोइलनि कहतिया टे जे हे परोसिन लो! हमार बेटा फगुआ जाइत ना बरबस अजइया लिआ गइल ह। आजु बाकी तनी थोरी घरी खातीन आजु हमरी दुआर के अगोर जा। तनी जातानी हम दुधिलापुर। त टेंगरा से पूंछी। जे के मेहना मारल, जो के हू ढेला मारल। की का हालत हमरा बेटा के हो गइल जे वे बेमार ही कंठ रुन्हन हा जाले।

सुनील जे खोइलनि एनिया रोइ रोइ न, आ चललि बाटे दुधिलापूर ऽ,
रनिया चललि धोबियाइ का प ऽ वने ए भइया दुआर,
जहिया रनिया छोड़ि दीहलसि ना गउवा सांचो गढवा पाल,
आजु गइलि दुधिलाइ न पूरबा हो बाजार।

गद्य : दुइगो नारि धोबिया का रहली भइया जेकरि बिजा सरासरि बा नांव। बिरजा नजरि उपरि उठावे खोइलनि के देखत गली मे आइ। आजु पंचे जेवना दिन से मेहना लागल सुन ऽ लगनि के हालि। धावलि बेटी जे मुखुआ के जेकरि बीजा सरासरि नांव। चललि आइल चलावलि खोइलनि जा संगे गोरि परलि बीया। कहतिया जे हाइ मइया — आरे एतना काहें परीसानी उठवलु ह। केवनि काजि लागलि ह काहे ना हमनी के बुलवलु ह ऽ।

आजु एइजा रोवे लागलि ना ऽ रनिया उ बुढ़िया खोइलनि,
ए पंचे, मानि जइबू ना ऽ बतिया रे रनिया हमार।
आजु बाचवा गंवाहिय फगुआ जात नाहिये रहलनि,
आजु धोबी बरबल ना गइलनि हो लियाइ,
आजु बबुआ गावे गइलनि ना फगुआ मोर आलवा बेला,
आ गउरा में मोर पइठलि बेमरिया आ रनिया ए बाइ।

गद्य : कहतिया जे हे पतोहा आजु हमरा बेटा के कंठ रुन्हनि हो गइल आ एकहो बेटा रहबे कइलनि ह । आजु कहाँ अजइया सुतल बा धिगरा । तनीं हमके देखा दऽ । तनीं हम भेंट कइ लीं । जे केवन बेमारी हमरा लड़िका के हो गइल । जे फगुआ गावे ले उ ले गइल रहल ह । इहे मुरुख नु ह संवसार हंसि के बोल तिया बीजा । जिन परल चरन पर बाइ । कहेजे भइया मोर मटोरा मैना मान ऽ बाति हमार । धर डहरि गउरा के चलि चल अपना पवन दुआर । तनी हम जातानी बखरी में । जहां सुतल बा पतो हमार । निजुगुत पूंछि के आवतानी । तब खबरि हम दुअरा देइब जानाइ ।

कहता जे खोइलनि बानइ ना धारवा आके बा सुतलि,
आ ए ने धोबिन चललि ना दुधिलापूर बाजारि ।

गद्य : अब खोइलनि बा जे पूछि के लवटि के घरे गइलि हइ । आ बीजा बा से अपनी दुआर पर जब पहुँचलि बा । त धोबिया भइया के लागल रहल गलइचा । आ बइठल बा आसन दबाइ । आ चढ़ रहल पीस ? गुड़गुड़ा बुटवलि के । जेहमे चीलमि जहाना बाद । नावचा पियत रहल लपेटुआ । गला में छाती नाहि रहलि आमाई । तिरिया जे ले के सरासरि जे ले के पंखा डोलावे । आ धोबी खम्हिया मे भोग ताटे

तबलकि एनिया बोललि बाटे ना,
आ धीयवा भइया मखुआ के ।
जेकर बीजा सरासरि नाँव ।
कहेजे सइंया मूरति नारायन धनि सेनुर के लागल चलल मोआरि ।
बबुआ हमार फगुआ गावे ना जात रहल ।
तू बरबस से गइल ह लिआइ ।
हम पूंछो तोहरा से एकरभेद देब बतलाइ ।
केवनो मुदइओ ना मारि देले बा टोना,
की केवनो मारलि मेहना बरियारि ।
केवनि बाति हमरा बबुआ का धसि गइल करेजा बाइ ।
आजु हमार बेटा भइले, आजु हमार बबुआ भइल बाड़े गुमना ।
आ कंठ रुन्हनि हो गइल गउरा में बा ।
आ हम के माता मोहे धइलनि देख के फाटलि छाती हमार ।
एतना बेयान धोबिन जब पुछतिया,
धोबिया छाड़ि देले गुड़गुड़ा बा ।

आ हतियारा पिछहुँडि मुड़ी उठाइ के । आ कुंडा नियर मुँह देले लटकाइ ।
तब पंचे, आपन गड़गड़ा टांरि के धोबिया आ पाछा मुँह कइके
आ कुंडा नियर मुँह लटका देले ऽ
सुनि लं ऽ जे एनिया जरि गइलि बा देहिया भइया बीजवा के,
तहिया सोचे कीरीति गजबवे के ना बाइ ।

गद्य : हम बोली तोहरा से, आ तू पाछा घुमि के कुण्डा नियरि मुँह देल लटकाइ । आज त तूं फूलल बाड़ जे जानाता की आइल बाड़ ससुरारी, पवलगी लेब का तूं । एगों कोहनाइल जाला ससुरारि में । त पूछतानी एकर भेद बताव ऽ । घोबिया का कहता जे ए बुजरो पूछतारू त कहतानी,

कहताजे ए बुजरो केकरि बहिनि ना बेटिया हम दुनिया में काढ़ीं
केकरि हम लोरिका के करी रे बियाह ।

गद्य : एहि से त कोहनाइल बा । त कहताजे आहा ऽ हाइ ए पती । जब शादी खातीर कोहनाइल बाड़े बबुआ त सखिन के तूं धीरजा धरा ऽ आव सुहवलि में । जे हम बीर के अगुवाइ करबि आ बावरि के दामाद ले आइब ।

अरे सखिया हमारि उठि उठि ना ताकति होइहनि सुहवलि में,
कहिया पाहुन बंगरिया के लेइके हों अइहन दामाद,
अजु हमरा बबुआइ के कइ देव अगुए आइ,
सुहवलि में खोजतियाड़ी ना सखिया रे हमारि,
धोबिया कहत बा जे सुबहे नांव तू लेले बाड़ेना नइया दादा सुहवलि के,
आजु बइठलि उभरि गइलि ना धइया न दादा हमार,
आजु धोबिया जठिइये नियर बा हो गीरि न परल ।
बुजरो जारवा चढल इ गुड़गुड़ी हो लेलकारि ।
धोबिन आजु मारतियाटे न हाथवा भइया अजई के,
इनिका अब देहियाइ पर पटकति रे लुआठि,

गद्य : कहतिया बीजा जे कि चल चल घर में चली जा । इनके देहि पर लुआठि पटकु । ओइजा सखिन के धीरजा धरा के । आ एइ जा सुहवलि नावे सुनत घइये उभरि गइलि । दूनो बहिन फेरु से आ बखरी में ढुकली स । कहतिया बीजा जे हे बहिन अब करे जाइ अगुआइ एहि बबुआ का पवनि दुआर । तनी हमरा बारे-बारे गुथि दे मोती, हीरा डालि दे मांह लिलार । सोन के अवसी बनल । सोन के तार घींचवले बाइ । सोनन बनी झबिया हमरा लटकि जाइ सिरहानि, कमर झूले कर धनी । आ इनका छाती उपरि लरिआइ । पोरे पोरे बाड़ी उनकी

घुघुर लागल बाडे झनकार। ऊपर पेन्हे चोली मखमल के। तनी झुरझुर लागे बयारि। काल्हि फिरी दखिन्ही पंखो लागल छपन हजार। रचि के पहुँच जाई दुधिलापुर। अब हम चलब बबुआ का पवन दुआर।

ए पंचे, जहिया तिरिया लेइ ले लीनाऽऽ,
अब बुला देतिया महवे रे लीलार,
रनिया जे मंगियाइ में ए सेनुर बाइ न आलवा बेला।
आपन जुरा उचवे लेइ बा ऽ बान्हेवाइ।
एकत उ सुन्दरि रहलि ना घोयवा देखब मखुआ के,
अब रानी ओहि घरी ना करति बाटे लेलकारि।

गद्य-पद्य : अब पंचे बनि के धोबिन चललि। ओढ़िरनि कइके चलतिया अहीर के पवने दुआर। पेन्हे चोली मखमल के। जेइ में झुर झुर लागे बयारि। पेन्हे निरि दखिन्ही। पंखी लागल छपन हजार, आंचर मोर बिराजे, कोइलरि कुहुकति बगल पर बाइ। रानी क ऽ चमकल जइसन जोति लागल सुरुज के बाइ। बायें लागल बडेरी चनरमा। रोज जब झूलस डगर पर बाइ।

हारे दादा भइया चललि बा बेटी मखुआ के,
जब भइया चललि बा बेटी न मखुआ के,
जेकरि अब बोजबा सरासरि परी नांव,
अब भइया बायें जे परद मारी देले,
जाहिय ले जे बीगि के चललि बे ओलवाइ,
जइमे चले गवननि के बाबू गवनहरि।
अब आंगा डोला के चलेलेवा उ आरि।
ओंगो दादा चललि बा बेटी न मखुआ के,
ओंगो भइया चललि बा बेटो न मखुआ के।
आपन झोरति गोड़वा चले के न लेलकारि।
अब ओकरा गोड़ में बाजे ले गोड़वाइल,
अब नेउर देखुवे जे मन ठहकाइ,
अब भइया भइल बा हाला गलिया में,
अब हाला उठल जवन हहकारि।
इत आपन आवति बा धोबिन दुधिलापूर,
चली सखी मुरति देखि लेइ नयन रे पसारि।

गद्य : जब धोबिन चलेलि ए पंचे लोरिक के दुआर पर मय नारि सब मोहित हो

गइल जे तनी धोबिन के देखि ली जा जे केहू देखले ना रहल ह। आजु धोबिन जब चललि अहीर के दुआर, जब गली धइके चलतियाटे त सब अपना दुआरे दुआरे खाड़ा होइके :

बाकी एनिया चललि हउवे ना धोयवा भइया मखुआ के,
नाहिय घरवा चिन्ह लेइ लोरिक का एइजा रे बाई,
आजु रनिया चारु ओंग्आि महुआवा ताकति चललि नाचावलि,
थाकि आजु थकले गुनउन के ना पाइ।

गद्य : ए पंचे, जब रास्ता धइके चललि ल गुंडा जेतना बाड़ं म आ पछेड़ा जे कहऽस जे तनी हमनो के तिकइ देइति। आ स्त्री लोग जे बा से धइके दांतन आंगुर चबाइ, लो कहे लो जे हाइ भगवान धनि तू सुरति देले बाड़ ए धोबिन के जे एकरा सुरति के स्त्री अव ले गउआं में केहू बाइ ना।

हरे भइया आजु बनि के धोबिनी बाटे चललि,
अब पंचे बनि के धोबिनी बाटे चललि,
आ त चललि लोरिक के पवने दुआर,
अब इहे सारवा ए मोहित होइ गइलनि,
धोबिनी के सुरति पर गइलनि रे लोभाइ,
अब रानी पतरे गली में बा गइलि,
अब चललि बबुआ का पवने दुआर,
रतिये आजु सभके दुआरे ना ए चललि,
नजरि आपन टेरवे में छम छुम जाइ,
जब भइया चललि गइलिए चलावल,
आंगा बेटा परल लोरिक के न बाइ,
आजु भइया तुलसी न गांछि बा लागावल,
अब झंडा गाड़ल महवीरी जब बाइ,
जहिया दादा धोबिनि नीसा में बाटे खिलिलि,
ओही आजु गजन गउर गढ़ पालि,
हमरा से बबुआ रहलनि बतिआवत,
दुअरा पर गाडल झंडा हो लेलकारि।

गद्य : अब पंचे निसान का पवलसि धोबिन। लड़े जासु त कहे जे बबुआ तहार घर केने बा त कहलसि जे हमरा दुआर पर झंडा गाड़ल बा तुलसी गछियातर। ओहि जा पंचे निसान पर जब धोबिन जुम गइलि। त सोंचि के कहतिया जे अब इहै

हमरा बबुआ के दुआर ह । अब गोड़ धोइके जब बेढा चढतियाटे । तलक लोरिक एगों ताकता ऊ जे धोबिन खुब बाटे ।

अउरी एनिया जरि गइल ना देहिया भइया लोरिका के,
खम्हिया में खुनुसनि गइल हो बउराइ,
अउरी आपन दाबिइ केइ दूपटवा बा सुतिना गइल,
कहत बा जे बूजरी धोबिन अउरी लुटलसि इजतिया रे हमारि ।

गद्य : लोरिक ए पंचे, अउरी कीरोध क लिहलनि । जे धोबिन बनि के ना आइलि हमार नास करतिया । नास करतिया । जे जेतना लोग देखले होइ उ इहे न कहले होइ जे धोबिनिया बुला बिया मिलल लोरिक से । तबे न बनि के जातिया । एतना सोंच के मन मे अउरी कीरोध आइल, आगि लागल । आपन बान्हि के मन, ले के दुपटा आ बान्हि के लोरिक सुती गइल खम्हिया में ।

हरि एने भइया जुमलि बेटी बा मखुआ के,
जेकरि इ बीजवै परलि ए नाव,
अब तनी झुकिये गइलि बे बंगला मे,
आरे पटिये धइले ले विकटे बाइ,
अब रानी हसि के बइठलि वे बंगला में,
अहो दुलर मानि जइब बनिये हमार,
तनी अब उठि के बइठ बंगला मे,
आरे बबुआ आइ गइलि बा रे हमार,
तहरा के एनी जो उठलि बा बेमारी,
आरे बबुआ एकर भेइवा देबऽ रे बतलाइ,
धोबिन अब धइके दुपटवा बा घीचति,
अउरी बोर बरबस परले जे बाई
जरे बदनि लोरिका के । इनहीं कारन परल बानी बारवा कुँवार ।

गद्य : जब धोबिन दूपटा घीचे त लोरिक का आगि लागे । भइया अउरी रोस बढ़ल जाता : केतना घरी पंचे धोबिन रहलि । आ त घरी दू घरी । कवन चलाइ छव घरी अस्तुति लोरिक के कइले ह जे हे बबुआ हमरी आइल के राखि दऽ ईजतिया, उठि जा । उठिके तनी हमरी सवाल के सुनऽ आ अपनी दुख के कह । आजु हमार देहि अइसन हो गइल जे हमरा बोलवला से तूं नइख बोलत आ रोज दूधिलापुर हंसी खोसा होत रहल हऽजा आजु तोहार इ बेंवत आ गइल । हीयें बबुआ तनी उठि के बइठि जा । तनी हमार पती के राखि द । आजु हम परन कइ देले बानी माता खोइलनि से जे चल तोहार हेराइल बेटा के कंठरुन्हनि हम

आइके बबुआ के बोलाव तानी। काहे उठत नइख। काहे नइख बबुआ पति राखत हमार।
आजु धोबिन एनिया छव घरी ना,
आरती बाए भइया उतारति,
बीरवा से रोइ रोइ ना कइलसि ए रे बयान।

गद्य : तब पंचे धोबिन का कहतिया जे बबुआ बाइ अधिका होता। अधिका होता ऊठ। आ ना ऊठब त उ धोबिन तू जनि जान। जे हम फिरि के गउरा आइबि। आ अइसन बीनि के दागी हम लागाइब जे उ दागी धोबियो घर धोवले ना छुटी। चेत कर। नात उठि के बइठ। अब हम मारब दागी लील से तहरा पर। उ जनमे भर दागी छुटे जोग ना बाइ।
नात बबुआ राखि देब इजतिया हमार अलवा बेला,
दुअरा पर आजु बइठलि त असने बा दबाइ।

गद्य-पद्य : केतनो पंचे धोबिन कहतिया। आजु जो लोरिक बाति ना सुनले हउवन। त का कहतिया जे अब दोख जनि दीह। इ जनि जनि ह जे हम घुमि कै गउरा ना जाइब। आपन अब भातरिन्हल अबरी का ना खइहन मीता तोहार। बबुआ अब जाइके हम खाइके माहुर मरि जाइबि। की हांकड़ि परे जे गीरि परबि कुँआ-ईनार, कालिह फुहरी हंसब ठठाइ। लरिका होलरी देइ उठाइ। मची हाला दुनिया में। ले के मुलुक मंड़ल संवसार। धोबीनि काहि कारन गइलि रहलि ह ओहि बीर तोहरा का पवन दुआर। किछु भइल हवा। घाटि बाढ़ि कइ दीहलसि ह। ओहि से धोबिन गीरि परतिया ना इनार। एतना लेखा बाति बोलतिया बीजवा। दूपटा झारि के लोरिक, बइठि गइलनि पहलवान। कहलन जे हाइ भगवान एकत हमार अकलंकी देहि ह बाकी तू कहि ल। बइठि गइलीं न चलि जा। कहतानी नाही अपनी दुख का कहत ये न दुख तोहरा कहला से ना आड़ाइ। अब हमार दुख काटी के, आ त हमार भाई। देख तहरे मीताइ के मारे केतने छोटन के सादी हो गइल। लगंड़न के बियाह हो गइल। केतना हमरा दलिदर ए गउंवा में बाड़न केहू घुमि आवो त कुंवार बा! तोहरे संगे रहलासे न हमनी का दूनो भाइ जाठि नियर कुवांर परल बानी जा।
आजु एनिया हुंसलि बाटे न धोबिनिया सांचो सुहवलि के,
ए बबुआ आजु मानि जइब ना बतिया ए रजउ हमार,
काम तहार करे केइ ना बानी हम अजुए आइल
ओहिय नगर सुहवलि ना केनिया हो बाजारि।

गद्य : कहति बाजे तहार सुहवलि में हम अगुआइ करति फीरी। बाइ ईहोत इवनि

जान कि सुखले फुलवरा कट बऽ। सुखले फुलवरा ना चभ ब ऽ। लोहे के चना चबइब। तब जे फेरु जे ले ले होइब अवतार। त छतीस हाथ के भाला जिनका से सान गईल बा बत्तीस गढ़ की वाइ, सत्ती ऽ की कारन ए बबुआ, सती नियर वेटी बमरी का परल बानी जा कुवांर। आजु बान्ह मऊर अलबेल्हा दुलहा का। सुहवलि करे चलऽ बरियाति। गीन के मुंजि के कलशा धरइब। रोधिर कोहबर के पास, छातो पीढा गड़इब, जान तहरी बा तलवारि के, धरव लोहा मउरी के ले के मुहबलि करब बियाह। जो एतना पावर होखे त खा। खोंखि के बीर बघेला उठि गइल हउवे लेलकारि। कहे जे भउजी परि गइल अलबेला, रानी मन के बाति हमार, अन के खा तानी कीरिया, जल के मन्दिल चल धराव, बीचे पानी पी घालबि। मारब केर कपिला गाइ। चल त इमान रही दादा। मारब बेटा बमरा के। मुहवलि बाजे सीमरिया नाव। सती ऽ के कलशा धराइब। रोधिर कोहबर देइब पोताइ। गउरा होइ पंथ हमार।

आरे पचे, अब हिन्नू करी गंगा तुरुक करी गोरि।
भलि कामिनि संग छोड़लुअ मोरि।
आरे देवी अब कहां गीति बानी गावत, कहवां आजु बीचे परल बिसभोर,
अव बेटी जेवना दिन के पूजलीय तेवनि अब घरी गइलि नियराइ,
अब जाग ऽ भागि बेरी ए भवनिया।
आजु जाग भागि! भवानी जिनकर चलल नांव सुर नर मुनि मांहि,
कीरति बड़ी सुरसती देवी जीभा होख तइयार,
एक समे जब लोहा तानी के जुमे बीर जवान,
त ए देबी एनिया धारवाइ न चानवां हमारि छोड़िबा देले।
हा हो मुंह नियरि खांखडि भइल ना ऽ वायवा ए देबि हमार,
आजु देबीय बइठि गइलि बा मेंड़रिया,
देखब सभवा में हमरा लेखे छोट बड एकइ ए समान,
आजु चान रूप मेरावल :
आरे हमरिय बुतेए गवल ना जाइ, तहरे न बलवा भरोसे,
अध जल मे परि गइल डेंगि रे हमार,
चाहे देबी खेइके न पारबा लगाव ऽ चाहे आधा जल में बोरि देवू डेंगि रे हमार,
आजु बइठलि बा मेंड़रि पंच मारि के, हमरा लेखे छोट बड़ ए समान,
सब बिबि हुकुम लागावल हमरीय बुते खेंवलि नाहि जाई,

इसके पूर्व का टेप नष्ट हो गया है। सौभाग्यवश टेप नष्ट होने के पूर्व एक बार पूरा अंश लिपिबद्ध कर लिया गया था।

आ ऽ हाँ ऽ हाँ
अब जा ग ऽ भागी बेरी भवानी, जूझि बेरि दूरुग मुनि माइ,
गीति बेरी सुरसती जोभा हो ख ऽ तइयार,
जेवना दीन के पूंजलीं तेवन घरी गइल निअराइ,
देह के दिमाग दुनियां में तोहरी चरन के बलिहार,
ए देबी हर घरी भजत रहलीं ना, आ नइया तोहरिआ मीरुता में,
आजु देबी तोहरे पर रहुए रे धीयान्,
आजु देबी एकहीय समइया के ना हउवे ए लोहा,
कानवा के ना सुनलि भले गोतिया रे गवाइ।

गद्य-पद्य : आजु देबी आंखी देखल ना बाटे ना कान के सुनल गीति गवाई। देबी, तोहरे वले भरोसे मेहरी मे वइठि गंइली मांथ उधारि। ए गुड़े अच्छरि भूल जाई। काल्हि दूनिया मेहना मारि दी बरियारि आजु देबी जेवना दिन के पुजली तेवन घरी गइलि नियराइ, सुनली जे खइलू सुरुवा के देस मे गइले बाड़ू तरवारि, जेवना कोना लोह लागल, ओने घूमलि बया ह तोहारि। जेवना भारथ में जुमलू रन म कइले हउ तइयार। जइसे रखलू पानी सुरुबां के सभा में राख ऽ पानी हमार।

ए पंचे, अव जाग हमरा भागियेइना बेरिया ए साँचो भ ऽ वानी,
जूझि बरे चले दुरुग मुनि माइ, गीती बेरी मुरसती, जाके जीभा होली तइयार।
कहली जे गाव गाव ए बालक सुनीं कान लगाइ।
एगुड़ो अछरि भूलि जाइ दू दू गरि गरि मेरा देबि लाइ,
कहि द कीरीति मरदानन के, जेकरि देहि से बाजि गइल तरवारि,
आरे पंचे, अव जाहिये न दिनवा के बातें तनी अब सुनिय समर कर हाल,
जाहिय जो धोबिनि कइले ह अगुआइ, ओहिय नगर गजने गउर गढ़पलि,
अब बीर आनवा के खाइ घललन किरिया,
जालवा के मंदिले न वोललऽ हराम,
कहे आजु बीचवा पानी न पी घालव अब मारवि कयरे कपिल धेनु गाइ,
आजु जो हम बीचवा पानी न पी घालवि, अव मारबि कयरे कपिलवागाइ,
जब लक बान्हव न मउरवा भइया के, सुहवलि करे न जाइबि बरियाति,
आजु जब चललि जव जाइबि ए चलावल,
जूमि जाइबि मोतिय स गढ़ किय घाट,

अब सांचो गाड़ल जब भालवा उपारि के,
आ बोगि देइबि मोतीयसगाढ़वा कीय न घाट,

गद्य-पद्य : आँ ऽ ऽ हाँ ऽ हां आजु घोबिन पंचे चलि गइलि दुधिलापूर, आबिनु उठि गइलि बा गजन गढ़ पालि। चललि गइलि चलाबलि आजु खोइलनि उठलि बाटे ललकारि। हां हो बेटा कुला कइल दतुअनि, तनी मुँह मे कइल ऽ अहार।
कहत बा जे ए माई अब नाहिय पीयबि ना आ जलवा तोर ए गउरा में, हमारि प्रनि गउरे में गइली रे ठनाइ।

गद्य : का कहता जे हे माता, अब हमार प्रन आजु ठना गइल, अन के खा गइलीं कोरिया, जल के मदिल बोल ऽ हराम, बीचे पानी पी घालब, मारब कैर कपिला गाइ। बान्हब मउर भइया के, सुहबलि करे जाडब बरियाति। माता अब हम अनेर आनाज ना गरे सकबि। बाइ आजु हमरा दांति लाग ता इहे
जे ए माई तनी बोहवाइ म ए भइया के तू भेजवा देबे,
अब एहिजा दुरुगा केइ ना आ पूजवा वरति हमार।

गद्य : आजु माइ क ऽ र पुजा दुरुगा के। भाई से अडर लेके मंगवाइ। हम कहीं तोहरा से, एकर मानऽ बाति हमार। हलुक पुजा हमरी भवानी के ना ह। ले के मिरुत मंडल संसार। गरह पूजा हउवे भवनी के। माता मानि जा बाति हमार। अगर जो तोहसे पाहि लागे, आ ना पाहि लागे त ठावें देबू जवाव।
कहतिया खोइलनि जे ए बचवा तोर थोरे-थोरे ना।
आ मानवा इलागल पुजवा के ढेर मन लगलो बा गउरा रे हमार।

गद्य : ढेर मन लागल बा-काहे जे आजु बेटा आ घन के कमी नइखे। लक्षीमी गोड़ तोर के बइठन बा। इ घन डोले जोग ना बाइ। बोले बेटा बरती के, देवकीनन राजकुमार, कहे जे माई मोर पटोरा मेन; मनुबू बाति हमार। ढेर रुपये से काम ना होइ। इहें बहुत करतबी करे वाला चाही। तनी चलि साहादेव से अडर मांगु। आ काल्हु बिटोर होखो गउरा, आ ओहि हम बिटोर मे गर में कफन लगा के हम भाई लो के सुनाईं।
आजु एनिया चतुर रहल ना, आ पूतवा भइया खोइलनि के,
अपनीय माता के उ भेजलसि ना ओ साहा-देव का दुआर।

लोरिक द्वारा दुर्गा पूजा की तैयारी

गद्य : कहत बा जे हे माता तनी ठाकुर से अरज लगावऽ। चललि बाटे रानी बुढ़ि खोइलनि पहुँचे छोडे गांव गढ़ गउरा, चलि गइल दुधिलापूर बाजारि, उंचे गादी लाग रहल सहदेव के, घन भर उहल बाटे दरबार। जब जुमल बाटे बुढ़ि खोइलनि,

सभदेखि के कहतिया जे खोइलनि आ गइलि। चलल रहे चलावल सब हटि गइल पोयादा बाइ। लाग रहल कचहरी उहें जुमि गइलि बुढ़ि खोइलनि, कहति बाजे सुन लेब ए ठाकुर मानऽ बाति हमार। आज हमरा कारज लागि गइल, अरज जो होखे त कहीं। कहलन जे कह। कवन कारज लागलि बा। आत कारज इहे लगलि बा जे आजु हमार बेटा आदि शक्ति भवानी के, दुरगा के पुजा करे के कहि रहल बाड़न। त हम कहलीं हाँ जे केवनो हरज ना। हमरा बाटे ओतना रकम। कहलनि जे ना ना हलुके पुजा हमरी भवानी के नाह। तनी ठाकुर जो कहसु त तब हम ए पर लात देईं। ना त इ पूजा दीयाये मान के नइखे।

सुनिलं जे एनिया फुलि गइल न मानवा भइया ए सहाएदेव के,
आजु खोइलनि मानि जइबे ना आ बतियारे दादा हमार,
आजु तोर थोरे थोरे ना आ मानवा लागल पुजऽवा के,
ढेर मऽनवा हमरो लागलेइ बा आ कुसुमा ना पुरवा बाइ।

गद्य-पद्य : सहदेउवो कहलसि जे हा ऽ हा हा। तोरा ले मन हमार हुलसि गइल। पुजा भवानी के होखो। अब कहतियाजे हमार बेटा कहलहन जे बिटोर सभ जाति के दुआर पर होखो, आ डुगी राजा बजवा देसु। कहलन जे ठीक बा। जे पूजा गउरा में सुनले ह, छतीस बरन, ओकर छाती गज में छातीना अमालाऽ, सब कहले ह जे नाहि आजु शक्ति भवानी के आज पुजा करे के चाहीं। हाँ हां हाँ एनिया हंसलि वाटे न बुढ़िया खोइलनि, अपना पहुँचलि दुअरवे पर न बाइ। एनिया बोलुवे न राजा न सहदेउवा किलवा हुकुम न दिहुए रे लागाइ। चमरा गर में वान्ह स सहनाई, चमरा गर मे बान्ह स सहनाई। कीलवा डुगीय देइँ जा पीटवाई। कल्हिया पुरुबे लागी न रनवा लोही, पछिवें सायरे होइ न उजियार। इहै आजु जेतना न लोगवा गउरा के कल्हिये खोइले दुआरवा बिटुवंराइ।

इहे ज होइहनि पुजाई दुरुगा के, एहिया गजने गउरवा गढ़ ना पाल।
इहे आजु राजवा के डुगिया बाजि बा गइलि,
आ सभइये सुनत बा मानवां रे लागाइ।

गद्य : आजु पंचे, पुरुवे लागल रहल लोही आ पछीं होखे लागल उजियार। कउवा टेरि उठावे। भोरे भोरे होखे लागल विहान। उठे राजा सहदेउवा, चलि गइल बाटे लोरिक का पके पवन दुआर। ऊंचे गुरु गादी लागि गइल, बंगला में आ लेके नीचे मोढ़ा देले हउवे लगाइ। सभके घइल भइया मोढा बइठे के, सहदेउवा लेके जुमि गइल बा, आ लेके ओइ लोरिक का पवन दुआर। जेतना छतीस जाति

बाड़ी से सभ जाना हो गइल गजन गउर गढ़। ए पंचे, जइसे मेंड़रि बइठे ओराती ओतना मेंड़रि जाइके बइठि गईल त रजा सहदेउवा बोलता जे ए बबुआ अपनी गरज के कह ऽ।

सुनीलं जे लोरिक अपना गरवेई में कफन बा डालि ना ले ले।

गद्य-पद्य : अब पंचे दस जोर नहरना, एक्के हाला चरन पर ठाढ़। कहे जे ठाकुर मोर बरियारा अब बीर मानऽ जाति हमार। हम कहतानी गउरा में हमरा कारज गइल बरियार। आजु सभ भाई, सब पंच मिलि के अगर सहइता करिहं त हमरी आजु शक्ति भवानी के पुजा दे देबि। बोले राजा सहदेउवा जे ठीक ठीक। कहलनि जे सब का हाथ उठा द जा। सभ ए पंचे, सब जाति हाथ उठा दोहल जे जेकरा जवन काम लागी हमनी का करि रहबि जा रूपया पैसा धन से कुल्ही से।

आजु एनिया होइ गइलि बा आ खुसिया भइया पुजवा में,
पहिले पुजा मिलतेइ दुरुगवे के देखब वाइ।
आजु पंचे सुनिलेय जा-पुजवा हमरी मोहनी के,
मये गउवां देबे के भइल बा तय्येयार।
आँ हाँ हाँ ऽऽ
आजु बोले बेटा बरती के बीर के बांका लोरिक ह नांव,
कहे जे पंचे सुन रजा महदेव।
आ सभ पंचे सुन जा बानि हमारि पुजा के हम बयानि करतानी।
एतना चिज हमके जुटावे के परी।
कहतबा जे ए भाई एइजा सावा सई ना आ मनवा घीव के लागि बा गईल,
सावास मन सकलिय में लेइतू ना मनएवाई,
आजु मैना सावासइ ना आ जउवा तू अब मांगि ना लीह ऽ,
उहु मालि मीसिए के ना करिह ए तइएयारि,
माता आजु पहिलेइ हुमाधि होइ खेतवा मे,
ओहिय नगर पूरवेइ ना खेतवा हो मय रे दान,

गाय का सवा सो मन घी, सवा सो मन समिधा तथा सवा सो मन जौ की तंयारी

गद्य : लड़िका कहता हे माता, अगर जो तहरा लालच बाटे त सवा स मन गाई के घीव, आ सावा स मन सकली, आ सावा स मन जव लेके हम न होई पहिले। कहतारन माता ठीक बा बेटा ई हम कर सकब।

गद्य : तब कहता ना जे भाई। धरमी के त अडर नइखे भइल बाई उनहोके अडर

भेजावे के चाहीं। त सावासइ खपर हमरा भरे के परी खेत में दूध के। कहतिया खोइलनि जे बेटा ठीक ह। दूध के केवन कमी बा। हम एक दम तेयार बानी। गर में कफन लगा के कहत बा जे हे राजा सहदेव, जे जेवना लायक बाटे ते तेवना लायक हमरी खातीर के करी सभे। हम उजुर के लागावतानी। रउवां के अडर बा ई की चनन काठ के लकड़ी फरवा के आ कुर खेत में कुंड खनवा देईं। अब भइया अडर सहदेव के उ लागल।

सवा सौ खंसी भेड़ा आदि के बलिदान की तंयारी—

मियाँ लोगों का उल्लेख

जे मियां लो बाटे ओ लो के कहता जे ए भइया पुजा में जब हमरा
सामिल बाड जा, त सवा सइ खसा खूब हडवना, आ सोरह सो पाठि,
आ खंसी भेड़ा ओकरा बाद में गनती ना रहे।
जेतना कीनल सभे तेतना एइजा जुटावे के परी।
उहो लो कहल जे एक दम ठाक बा।
कहत बा जे एइजा आजु पुजावार न कारजिया लागल कोंहरा के,
सावा सइ खपड़ी गढ़िये के करीहऽ बबुआ तइनायार,
आजु हमरा गरहू हउवे ना आ पुजवा देखऽ देबिया के,
ई पूजा हमरी बुतवे अड़इलो नाहि रे बाइ।

गद्य : कहत बा जे एतना पूजा पहिले ठीक होखो। आ हे माता तोहके हम कहतानी जे कालिह दुआर पर वजाज बोला के, जेतना पंडित लो बा आ जेतना पंडिताइन लो। ओ लो के लूगा धोती रंगवा के कालिह दान क द। पूजा आँगे पाछे होत रही। बाइ एके दान तोहरा करे के चाही काहें जे उहै पंडित लो जाके हुमाघि कराइ लो। आ पंड़ितानइन लो ले ले सब पीयरी, ओ मे ई ना रहे जे केहू पियरी ना पहिने।

कहतिया खोइलनि जे ए बेटा तोरा,
थोरे थोरे ना मनवा लागल गउरा में,
ढेर मन लगलोइ ना बाड़न रे हमार।

गद्य : एतना हम पूजा के तैयार करब। अब ए पंचे पुजा के जब तैयारी हो गइल। त बाई से उठि के खोइलनि, दरब उखारि के आ कहत बाजे ए भइया जे खंसी भेड़ा कीने जाइ, उहे ल ई तोड़ा।

यह मंजरी कौन है ?

आजु मंजरी लेइ लेइ ना आ तोड़वा लागलि भइया धरावे,
दुनियाँ में खंसीय भेड़ा कीनि के करइजा तइयेयारि,
कहत बाजे साहादेव हइ चनने इ ना काठवा के नू लकड़ी लेव,
आजु तुहीं चनने इना काठवा के लकड़ी माँगा वऽ ।
खेतवा में कुंडवाइ देबई नारे खन ए बाइ ।
आजु बबुवा डालि दीहलसि ना दरबिया देख दुअरा पर ।
साहादेव तोड़ि तोड़ि ना कइलनि रे जबाब ।

गद्य : का जवाब कर ताड़—जे देख, इ सब के पूजा हउवे, हम रजो हवी इहाँ हम हूँ किछु दान करबि । कहता जे नाही । जब हमरा खगि जाइ रउवां पंइचा उधरि देत्रि । रउरा लालच जो पूजा करावे के होखे त एही हमरी देबी के दूसरा हाला पूजा करा देवि । काहे जे आजु हमरा बेटा, आजु हमरा बेटा देबी के पूजा के कइले बाड़ें तैयारी । रंग में भंग परिआई । मिरुत मंडल संवसार, तनी देखीं पूजा लड़िका के, कइसन करेला गजन गउर गढ पालि ।

आ हाँ हाँ
एतना बोले रानिय न बुढ़िया खोइलनि,
ओहियां गउरा न केरिया हो बाजारि,
रनिया गड़ले न धाजवा ऐ उखारे,
दुअरा कइले बाटे न लेलकारि ।
जेकरा जेवन मने करे न मन बाबू,
रुपया पैसा लेवजा गंठियाइ,
पहिला पूजा होइ न दुरुगा के,
तनी अब देखीं जा नयन न पसारि ।
तनी अब लागल लालसवा गउरा में,
लालन दीहन जो पूजवा न हमार,
ठाकुर तोहरो लालासवा ओहि लागल,
दूसरि हाला पूजवा दीह ना करवाई,
पहिला पूजवा बबुआ मोर ठानिबा देले,
तनी अब सुफल गउरवे होइना जाइ।
पंचे अब पूजवा के होतू बा नू तैयारी,
अब पंचे पूजवा के होतू बा तैयारी ।

एहि आजु गजने गउर वे ना गढ़ पालि ।
एहि ना आजु गजने गउरवा गढ़ना पालि ।
तनी अब देख लीं पूजवा दुरुगा के,
एहि आजु गजने गउर गढ़पाल ।
केहु अब खंसिया भेड़ा न कीने जाला,
केहु अब चलल सकलिये कीने बाइ ।
केहु अब घीउवा कीनत बा टीनवा के,
ओहि आजु गजने गउरनगढ़ पालि,
एनिया दूअरा कंठा बा झुलि गइलि ।
एहिया लोरिका के पवने न दुआर ।
एनिया हुमधिया तउल न बाटे होते,
एहिया तउले करत बा न तइयार,
जहिया सावा सौ मन घीउवा बा बटोरल,
सौ-सौ मन सकली देले ह करवाइ,
इहै अब सावा सौ मन जउवा के, एकमे हूम देले बा करवाइ, •
सहादेव चनन काठावा करी लकड़ी, एहरो देले बा बन मे फरवाइ ।
इहै जो कुंड खनल वा कुंडवा के कुंड बनत खेत में लेलकारि,
इहै अब बनल बा खेतवा कुंडबा के, जाहि में होखे न चलियन हुमाधि,
पंचे गर्हुवे बा पूजवा जो ठानाइल, ओहि आजु गउरा नगरिया रे वाजरि,
सगरे गउरा बेकल बा भइ गइल,
आरे पूजवा के करते तेयरिया ना पंचे हो बाइ ।

हाँ, हाँ, हाँ
आजु पंचे जाहिय दीननवा के न बाट, तनी अब पूजा के सूनी जा खेलवाड़,
एने अब जोलहा धुनियाइ लोग वाटे खंसी भेड़ा कीनि के करे लो तइयार,
अब भइया दंवरी जोताले-खंसिया के, आ कीला आइल मिरुत मंड़ल सवंसार,
अब जेतना कीनल बाड़ खंसी अब भेड़ा,
अब गउरा कीलवा न गइलनि रे छेंकाइ,
एक ओर भेड़ा के दंवरी बाटे नाधल, खंसियन के दंवरी देला लो नधवाइ,
एक ओर पठियन के दंवरी बा नाधाइल, कीलवा में भइल बाड़ रे तइयार ।

गद्य : आजु उठे रानी बूढ़ि खोइलनि, सुनिलं जे आइ आजु गजनि गउर गढ़ पालि गाड़ल दरब उखारि के रानी घर दुबरा पर बाइ, दुअरे पर बजाज बाटे बोलवले । आ अब दान करे चलल धोती के बाइ ।

आरे सुनिलं जे आजु धोतिया जो पीयरीं में रंगलि,
आरे हम पंडित के करत बाड़ीं दान ।
पीयरी में गमछा बा रंगल, पीयरी में कुरुता देली हो रंगयाइ ।
आजु जेतना बाड़ी पंडिताइन गउरा में, लोगिन के धोतिया देले बा फरवाइ ।
रनियन के झुलवा रंगल बा पीयरी में, रंग रंग करत बाड़े रे तइयार ।
अब खोइलनि करे लागल दान अलबेला, आपन दान करती बिपर के बाइ ।
जब भइया सभ लोग पीयरी पहिरल सभ दान लेइके भइल बा तइयार ।

गद्य : जब सभ दान लेइके तेयार हो गइल आ कोंहार वा से सावा सौ खपरी लेके चलि गइल कूर खेत मैदान । पंचे, जब लेके चनन काठ की लकड़ी के चीरि के सजा ता हुँड में । ओहि गजन गउर गढ़पालि । हुँड जब सजा गईल तब पंडित लोग के अडर भइल आ साहादेव के । जे जेतना हुमाधि ले ले वानी से चली कूर खेत मैदान ।

आजु पंचे, आजु हुमधियइना ऽ लागल जब पंचे ए ढोवे ।
रासीय आजु कुण्ड कीहें ना ऽ आ देले लोग बाटे लागाइ ।
तनी अब पुजावाई के होति बाए पंचे तेयारी ।
आजु तनी पूजावई के होते बाडे न तेयारी,
ओहिय नगर गउरे ना केरिया हो वाजारि ।

गद्य : सावा सै जब खप्पर लेके भइया अब बीर गांजि देले कूर खेत मैदान । धरमी कांवरि दूध जोटावे, बोहा ल देले हउवन दहवाइ । कहलन जे धनि-धनि भागि अलबेल्हा, भाई दुरुगा पूजन करो लेलकारि । दूध के कमी नइखे । कीला में लागल मन हमार । धनि भागि गउरा में बेटा भवानी के पूजन कईल तइयार, भइया ।

भाई, पूजन कईल तइयार । ए भइया, संवरू जब दूध लगलनि,
भेजावे ऊ दूध गीरे लागल कूर खेत मैदान ।
जब अच्छी तरे दूध जुट गइल तब बीर का कहता ।
तब लोरिक का कहतांड़ जे हे भइया अब रोकि द दूध कवंरी के ।
आरे तनी सुनइय लेब न खेलवाड, अब पंचे पूजवा के हो गईल तेयारी ।
आरे नर नारी सभ गइलनि बिटुराइ, अब पंचे कूर खेत पुजवा चलल ।
लमहर खेतए पूरा ना ओइजा बाइ, अब भइया जेतना ना लोग गउरा के,
नर नारी सभए जाला रे बिटुराइ ।

आजु दादा होइ न पुजबा दुरुगा के,
तनो अब देखि लेइ मनवा लगाइ, अब जब पंडित पोथी लेके लो चलल,
अब जाइके बइठे ए कुंडे पर लेलकारि,
देवता लो डालि जो देला अगिनि कुंडवा में,
अगिनीय जरतु भरो न लेलकारि, उहे जब लड़िका के सफलक करावल।
लड़िका के सफलक देलन करवाई, अब भइया लेइके हुमाधि अलबेल्हा,
सभ पंडित बइठल बगल में बाइ, सभ अब सोहा ए सोहा न लागल करे।
अब भइया कुंडवा मे हुनवा दीयाइ, जब उड़ल बा न धुआं न मीरुता में।
चढ़ि गइल इन्दर जी का पवन दुआर।

दूध, घी, समिधा, भेड़ाखंसी आदि के साथ दुर्गा-पूजा सम्पन्न होगा

गद्य : ए पंचे जब हुमाधि अच्छी तरे जब हुम होखे लागल। त तब हनरासन मे धुंआ खोलि गइल। आ एने लड़िका बा से, कूर खेत मे खप्पर के भर देले रहलन, लोरिक। खप्पर भरिके तेवना की बाद में हुमाधि के तेयारी इहो होत बा बाबा जब हम हूम होताटे आ जब धुंआ मीरुत लोक ले उठल। चलि गइल इन्नरपुर बाजारि। जब बास मिलल इनरासन, सभ जय-जय करे लागल इन्नरपुर बाजारि। का करत लो बा।

कहे लो जे केवन बीर ठानि दीहलनि ना आ जगिया दादा मीरुता में,
हुमाधि बुला होतु ए जगियवे मे ना बाइ।
इनरापूर वासवा इ से अद्‌बूद उ मनावां भइल,
उह पूरन कइ ए दीहलनि ना भगे वा ऽ ऽ न।

गद्य : तब पंचे, भवानी ले के झूलन लगवले, रहलीं, इन्नर का पवने-दुआर। उठे माई जगदम्मा चलि अइली इन्नरका पवन दुआर, कहे जे बुला बबुआ हो गइल बुझनउग गउरा कइलसि खोज हमार पूजा के कइलन तेयारी ओहि गजन गउर गढ़ पालि। दुरुगा हंसि के बाघ सिंह दूनो डोरा रथि हांके लगली बेरऊ कुबेर।

हाँ ऽ हां, दुरुगा बाघवा सिंहवा दुनोए जोड़ी, रथिया नधलन न ज बेर कुबेरि,
आजु रथ नधलन न ज बेरु न कुबेरि, दुरुगा बइठि गइली न रंथिया पर,
ओहि आजु इन्नर का पवने ना दुआर।
इत मार बाचवा भइल बा गुधवारेंगड़, पूजवा कइले तेयरिया बुला बाई।
इ हे जो धुंअवा खोललवा इनवारासन, दुरुगा अइगा धुमल ए लेलकारि,
दुरुगा हंकलि ना रथिया इनवारासन, दंबिया ओल्हलू मीरुतवे में ना बाई,

बबुआ आधवा आकासवा जब चलि जब अइलीं,
मेलवा लागल खेते में भइया बाई

भृगुमुनि का उल्लेख

जइसे कथियां में लगली जो कथेंसरी,
मेलवा भीरगु मुनिये के दरबार।
ओइसे लागल बा मेला बा खेतवा में,
जाहि पर आंगवा पर आंगवा ना छिलाई।

भवानी का आकाश से गर्जन करते हुए प्रकट होना

गद्य : उहे जब कसमस ना कसमस मेला लागल, खपर भरि के रहलनि ना ए तइयार। आजु अकास ले गरजलि माइ भवानी, रूप धरति बाघ के बाई। जब गरजलि माइ भवानी, आजु गरजति बाड़ी मीरुत मय संवसार। अब भइया छुटलि टांग पंचनि के, ले ले भागल लो जे दादा इत बाघ सिंह आ गइल।

सुनिलं, जे पंडित लोग लेइ लेइ ना पोथिया भागे लागल खेतवा में,
आ पंचे लोग सभे जरते चललनि ए पराइ।

गद्य ऽ जवना समे मे भवानी के पुजा के लेबे चलली हवी, त बाघ के रंथ छोड़ि के लगली जब गुरुज बान्हे त ए पंचे अब सब खेत में भागि चलल। अइसन भागल लो जे केहू के केहुन फुटेला आ टेहुन, केहु के भहुआ फुटे लागल लीलार पंडित लो भागल बाटे खेते में। सुनि लें जे ओहि चीलिलहटि परल गउरे मे बाइ। पंडिताइन लो कहे आरे इ पुजा करावे के ना डिगरा ले आइल रहल ह, हमनी के बलिदान देबे के लीआआइल रहल ह।

सुनि लं जे देबिय हमार बाघ नियरि ना ऽ आ न गरजति बाड़ी खेतवा में,
आ लोरिक उहे बइठल बाड़ननि ऽ आसनू अ हो दबाई।

ए पंचे, भवानी जब सिंह बनि के आ गरज जब बान्ह तियाड़ी सब नर आ नारी भागि गईल। आ भागि का गइल लो घर घर डांड़ा दीयाइल। इ बाध सिंह जो ढुकुल गांव में त बहुत खइकारि करी। जब ए पंचे जब घर घर डांड़ा दिया गइल आ खेत में एक दम से सब भरक गइल। तब भवानी आपन रूप छोड़ति-याड़ी त कइसन धरति आड़ी। त बिरधा-पुरान। आ एक दम से अपनी बदन में मरज फुले लगली।

तब ओइजा उठि गइल ना, पुतवा बाटे खोइलनि के,
दुरुगा के गीर लो चरनिए पर बाइ।

दुरगा का जाइके इ गिरल बाड़े चरने में,
आहो माता मानि जइबू बतिया रे हमार।

गद्य : हाई भवानी। हाइ जगदम्बा। आजु हम पुछतानी रउरा से, आजु हम पुछतानी रउवां से, एहि कूर खेत मयदान। आजु हमरी पूजा में कमी हो गइल, आजु हमरी पूजा में कमी हो गइल की भरभट्ट भइल पुजा हमार। मइया मोर भवानी, ओइजी तोहरे धरम का पालि। काहे बुझि बाड़ू छोड़ति, ले के मीरुत मंडल संवसार गोड़ में हउवे अझुराइल। माता मानऽ बाति हमारि। तब से हंसे माई भवानी, जेकर देबी अपरबल नाव तहिया बायें हाथे खपर बिराजल। दहिने मोहि लेला नचाई। आजु देबी पीयरी धोती पहिरले लट चुए तेल के धार। हंसे माइ जगदम्बा, बीर के गोदी ले ले उठाई, हाई लालन हाई बेटा, धनि धनि भागि मीरुता में, हमार पुजा कइले बाड़ऽ तइयार। बाइ आजु हम वाचा पुछतानी जे कहां तू लोहा लगइ बे, कहां भारथ जाइ गरुआइ। केवनी गरज की मारे वेटा देत वाड़ऽ पुजा हमार, बोले बीर बघेला आ देबी मान वाति हमारि। आंगे अइगा गइल इनरासन पुजा कइले बानी तइयार। खालऽ पुजा गउरा में। पीछे पुछि ह दुख हमार।

हाँ, हाँ हां
पंचे, जाहिय दिननवा करि जे बाते, आंगवा सुनी पुजा के खेलनावाड़।
एनिया भरल खपर बा खेतवा में, खपर भरि के रहलन न तइयार,
एनिया लपकल न मनवा दुरुगा के, पहिले खपर परेली लेलकारि।
देबिया धइ धइ खपरवा लागलि चाटे, बीगलि कुरवा खेतइ न मैदान,
इहे जब बटुरी खपरवा चाटि बा घालल, देबिया रोवति खेते में ओइजा बाइ :

गद्य-पद्य : आजु कहे जे बेटा मोर अलबेल्हा, अब बीर मानऽ बाति हमारि। टुटलि भुखि जगवल तन में आगि लगल बड़ियार। जल्दी पेट के भरऽ, नत कुशल परे जोगि न बाइ। उठल बेटा बरती के देवकी नन्नन राज कुमार। हाथ के तेगा हउवन उठवले खंसीन के देवे लगलन बलिदान, आ जब छाक परल, खा के जूमल भवानी, खंसीय परि गईल लेलकारि, जेंवनी मारे तेगा गरदनि में देबी गप दे घोंटि घाले किला में बाइ, धाई धाई उठाइ के लागल घीचे रोधिर के, सीठी बीगे लगली कूर खेत मैदान, सावा से खंसी हलुवाना में खा गइली, सोरह से पाहि जब खइली कुंयार, जेवना में भेड़ा के गनती ना रहल, कतनें खइले रहलि ललकार, जहिया बबुरी रोधिर जो चाटि घाललि फेरि दुरगा रोवे लागलि, माथ ओनावे लागलि।

कहतिया जे बेटा हमसे बदुरिय ना आ भुखिया हो लागल आड़ाला,
अध काटलि हमरी बुतवेइ बा आड़ ऽ तो तमे ना इए बाइ ।
आजु दुरुगा खाइ घलली ना पुजवा उ अलवा बेल्हा ।

पद्य : जब भवानी रोवतियाड़ी । कहली जे हे बेटा, हे लालन आजु हम तह से कहतानी जे बदुरी भुखि अड़ा जाई भले । आध-काटलि भुखि ना आड़ाई । अब हमके द पूजा ललकारिके भरि के पेट के । नात ऽ आगि लागल तन में बा । अब बीर तिकवे ऽ त मइया कीती ? जान, पुजा ना । खंसी भेड़ा खपर-सपर सब चाट घाली तब आधा में गइल । सोचे बेटा बरती के आ दुरुगा सोझे मउड़ के बा । कहे जे जल्दी पुजा दं ।

त लोरिक अपना मारि दिहलनि ना तेगवा भइया जांघवा में ।
आ रोधिर अब छोड़ि छोड़ि देले बा फुंफुकारि ।
आजु अ देबी पीये लागलि ना ऽ आ खुनवा देखब लोरिका के ।
ओठ उनका जंघवे में लीहली ए दाबाइ ।
आजु उहे घींचि लीहलि रोधिलवा सुनब बीरवा के,
अब बीर गीर ले धरतिये में ना बाइ ।

भवानी द्वारा लोरिक को सहायता का आश्वासन

गद्य **पद्य** : रोधिर जब चाटि घलली, कहतियाड़ी जे बेटा मोर बीर लोरिक मानऽ बाति हमार । अब किछु किछु कमी बा लुकुर फुकुर करता मन हमार । आजु बल्कि पुजा ना देले रहित ऽ त सबुर होइत बेटा बदुरी खियावल तोहरा आकारथ हो जाइ । आ ना भरल पेट हमार । तब सोचे बीर अलबेल्हा अपना मन में करे बिचार । कहे जे काह देवनारायन का विधि देल ऽ करतार । भवानी की पुजा की कारंन भले चलि जइतन हमार, लेके आपन जीभा धरे चिरुकी से तेगा साचो देला लगाइ । बहल तेगा अलबेल्हा, पानी अउस बहि जाइ, रुधिर के चलल फुहेरा, जइसे गंगा चललि काटि के अरार । ओठ में ओठ जब भवानी लगवली आ रोधिर पिये लगली मन लगाइ । फच फच खुन जब लगली बीगे ओहि कूर खेत मैदान, रहलि माइ जगदम्मा जी भरि के चिटुकी देले दबाइ । जय जय करे जगदम्मा ओहि कूर खेत मैदान । बेटा जइसे मारि दीहल खेतन में । रोधिर के भरि दीहल पेट हमार । ओइसन लागी लोहा मीरुता गप से भारथ जाइ गरुवाइ । रन में हमहूँ बेटा जुड़वाबि एहि मीरुत मंड़ल सवसांर । देबी ए पंचे, आजु जब बलिदन देइके जइसे पुजा तू हमार दीहल, ओइसे जो पसेना तहार ढुरि जाइ, तहां हमार खुन गीरी । कहि के देबी ।

आ जांघ पर लेके बइठि गइली, कहताड़ी जे कह अपनी गरज के। काहें कारन हमार पुजा दे ताड़। हंसे बेटा बरती के देवकी नन्दन राज कुमार, कहे जे मइया मोर भवानी जु तोरे धरम के पाछ। आजु हमार दुख पुछ तानी। आत हं। कह ए कवनी कारन से हमके पुजा दीहलह। कहत बाजे मइया मोर भवानी जी तोहरे धरम का पाछ। आजु हमार धोबिन भउजी अगुवाइ कइले बा सुहवलि में।

छव बेटा बमरा के। छवो दइब के लाल, छतीस हाथ के भाला, गाड़ि दीहल बा पानी छुआइ। देस में डागा पीटावल, दुनिया हलचल देला मचाइ। जाति पांति नाही बरावल। बटुरी हाथ देला संसार। जे जेकरी जांघी बल बढ़ि जाइ, भुजा बढ़ि जाइ बउसाइ। उ बीर छाती ढाल दबाई दुल्हा मउर देई बान्हवाइ। एगो दुर्गा कवन चलावो बसुधा करे आइ बरियाति। चलल आइ चलावल चढि आइ मोति सगड की घाट जवनी बेर गाड़ल भाला उपारि के आ बीर बीगि दी मोतिसगढ़ की घाट। उहै बीर पाछे बावन बुरुद के तमू बावन भींटा देइ गड-वाइ। रेशम सूत के डोरी। आंगे पियरी हिली कनांत। आरी पास मुखमा। बीच में हंडिया जरी गिलास। तेजन लगी बगइचा। बरछी मांडो•जाइ छवाइ। ढाल के लरकि जाइ ओसारी। एहि मोती सगड़ की घाट। उ बीर बइठे मोढ़ा पर, गज में छाती नाहीं आमाइ। ओकराबाद में पाँच गोमतही लकड़ी दे बीर बजाई। पाछे बियहुती देई बजवाइ। जहिया मानि डागा पीटाइ, सुहवलि शबद जाइ सुनाई। सुनी बेटा बमरा के जेकर गजे भीमलिया नांव। असी मन के मुंगदर पाठा गरदनि लेइ लटकाइ। गोड़ मे मोजा लगाई, लेके सोना सुहवलि-पार। ऊपर खींचीं पाग गुलाबी। जइ पर जिला अलंग फहराइ, अलीगंज के जूता सोहि के लोहा दियवले बाइ। घरी ददा कीला में, चलि आई मोतिसगड़ की घाट। भीमला करी गरजले, गढ़ की गरुआ करो पहाड़।

लिखल बा परमान, जे एंगो कइके आ भीमला कुंटि के कलशा धराई, रोधिर कोहबर देइ पोताइ, छाती पीढ़ा गडा के, जान के हरी देईतलवार, से ही घरी घटा मउरी के। बेटी ओकरी सती से करी बियाह। सती धिया के कारन हाइ भवानी छत्तीस जाति के बेटी परी गइली बारि कुंवारि। भौजी कइली अगुवई लेके गउरा केरि बाजार। अन के खइली कीरिया जल के मंदिल परी हराम। बीचे पानी पी घालब। मारब कैरे कपिला गाइ। जब लकि ले इ मारब बेटा बमरा के जेकर गजे भीमलिया नाव। मुंड के कलसा धराइ। रोधिर कोहबर देइ पोताइ। धरब झोंटा सतीया के भउजी के करब बियाह। सती खोइंछा के

चाउर । देबी होइ पंथ हमार । एनी ना बोलल बेटा बरती के, देवकी नन्दन राजकुमार

सुहवल का कठिन लोहा—

भवानी का कथन

हरे दुरुगा, एनिया मारि दीहली ना ऽ आ छतिया भइया खेतवा में,
देबिय हमारि लोटे लागलि ना गउरा केरि बाजार ।

गद्य-पद्य : का लोटतियाड़ी । कहतियाड़ी हाइ एथी के । आजु हम जनीतीं त ना पुजा खइतीं । खइलीं पुजा गउरा में, भइल जियर के काल । हां हो लालन, जहाँ जे बात जोहनल जो बीर के नांव लेबे जोग ना बाइ, ले ले बाड़न नाव सुहवलि के बाचावा पड़के लागलि छाती हमार, बीर के नांव लिहला से आजु शक्ति भवानी रोवतियाड़ी जे गरूह लोहा न मुहवलि के । बेटा के हू के बूता नहीं अड़ाई । ए बात के जहन्नम जाये द । बोले बेटा बरती के बीर के बांका लोरिक हनांव । कहे रमइया पर भवानी गीरि परल घरम का पाछ । अन का खइली कीरिया जल के मंदिल बोली हराम । बोचे पानी पी घालव मारब कैर कपिला गाइ । आजु जबलक ना करब सादी सतिया के कइसे अन गरेसब्र मीरुत मंडल संसार । आजु मइया मोर भवानी जी तहरे धरम का पाछि । जियला के लालच नइखे ना मुअला के बनल बाटे पछताब । ध ऽ र संग गउरा में ले के चल सोना सुहवली पालि । जहिया धारि गीरी धरती पर, बाजि जा इनर का पवन दुआर, छोड़ि के संग जगदम्मा तु मेढ़ के बइठ जा बरधे का पवन दुआर ।

बाकी देबी जानि न घइले बाडु ना ऽ संगवा हमारि जगवादम्मा,
त दिन सुहवलि नाचति रही ना देहिया रे हमारि ।

गद्य-पद्य : बारह बरीस पर जे कुकुर, सोरह बरिस सीयार, अठारह बरीस जो सुरुआं अधिके होखे जियल धीरकार । जियला के लालसा नइखे जगदमा ना मुवला के तनिको बाटे पछताव । बाइ लेइ के चल ऽ सोहवलि में, आ ओहि सोना सोहवली पाल । गरजे बेटा बधिनी के लड़वइया सेर जवान ।

सतिया का अमर सिधौरा दुर्गम पिड़ना पुर में,

भवानी बालक रूप में लोरिक को लेकर पिड़नापुर के मार्ग में

आ हां ऽऽ हां

गद्य : आजु पंचे जाही दीनन के बाते, तनी सुन ऽ मरद के हालि । रोवे भाई भवानी कुर खेत मैदान । हाइ हो लालन । ए जाति के जहनम जाये द । कहलसि जे

हाइ माता । हम अन के किरिया खा घललीं । जल के मंदिल बोली हराम, बीचे पानी पी घालब, मारबि कैर कपिला गाइ, आ परि जाइबि नरक में, तहिया ना संगी होइबू इनरका पवन दुआर । अगर जो इन से हटतानीत हमके नरक के निधान होतिया । हाइ भवानी तहिया संग तू ना धरबू । देवी जब कहतियाड़ी जे एहि कुल के ना न, अबना मनब आत ना । भले हम मरि जाइबि, जूझि जाइबि । भवानी, हमार संग छोड़ि दीहन, चलि जइहन इनरका पवन दुआर । बाई अजु पाछा एड़ दाबि देइबि परि जाइब कुंभि नरक की गाड़ि । जियला के लालसा नइखे भवानी, ना मुअला तनिको बाटे पछताव । उ बोवलि माटी गउरा के लागि जाइ सोना मुहवर्ली पालि । कहता जे आछा ठीक बा । अब तनी काकह ले हई । कहतारी जे इ जनि जान, जे धरम के हलि सुहवलि के चलि जाइब मोती सगड की घाट । अब तोहरा से कहतानी बाचवा तनी सुन ल कान लगाइ । जे उ सत्ती बाटे से आपन सिन्होरा भेजले बाटे कहवां, अ त पिड़ना पुर । जहाँ हिरिया-जीरिया हउवे बंगालिनि, जेकर जासो कलवारिन ह नांव । हाइ हो लालन । तिरिया चरितर तू हये हव, त कइसे उ पिड़नापुर जाइ सिन्होरा, जे ले के चले के सोना सुहवली पालि ।

हाँ हाँ हाँ,
एनिया वोलुवे न बेटा बरती के, देवकीनन रे रजवा रे कुमार,
कहुए मइया ना मोरवा रे जगदम्मा, जीउवा तोहरे धरमवा का ना बाइ ।
हमके ले के चल ना पिड़नापूर ओहिया पिड़ना-पुरवा रे बाजार ।
हमरातीरिया नजरि त नाही देखब, नाहि ओ झुलनी पर जइबो रे लुभाइ ।
देबिया धरब ना संगवा जगवादम्मा हमके पीड़नापूर चलबू न लिआइ ।
तहिया हंसु ए न मइया भवानो, बद्गुरी जानत बानी खेला हो तोहार ।

पिड़नापुर में स्त्रियों का राज्य-लोरिक को भवानी की चेतावनी—

गद्य : एइजा हिरिगीस मान ना सकब ऽ । आजु बेटा कहि रहल बाड़ जे हम तीरिया के आसीक ना हईं । बाई हम जान तानी जे हर घरीतू तिरिया के आसीक हउव । आ बेटा ओइजा राज स्त्री के बा मरद के नइखे । आ ओइजा जो लोभि जइब त हमार परि जाइ माटी संकेता । कहे बीर जे मइया मोर भवानी, जीव तोहरा धरम का पाछ, जेङो हमके साधे के मन करे ओंगो आजु हमके साधि लेबू कूर खेत मैदान । कहताड़ी जे ठीक । ए पंचे, अब देवी का कइले हवी ।
दुरुगा एनिया मांगतियाड़ी, न ऽ लंगोटवा भइया इनावारासन,
ऊ लंगोटा मील लेइ पीतरिइये के न बाइ ।

गद्य-पद्य : पंचे, जवनी बेरि भवानी घींचि के लंगोटा जब चलवे लगली बीर के, जवनी बेर उल्टा काछा दुरुगा बाड़ी चढ़वले, ऊपर माल बरन के गांठ। जवनी बेरि घींचि के पेटी बन्हली जेवइं में गोला असल न जाइ। जहिया भवानी लेइ के कसल लंगोटा, ओहि कुर खेत मैदान। ई लंगोटा खेलला से ना बीचे खुली ना केहु का खुलले खुले लोग न बाइ। कटले नाहि कटाइ। चलि के पिड़नापुर बाजारि, देबी बर्हमचर्ज के लंगोटा बान्ह दीहलीं ओहि कूर खेत मैदान। जब लंगोटा भवानी पंचे बान्हि के, आदि शक्ति ब्रह्मचरज बना के, उ लगोटा कसि के बान्हि के तब कहलीं, जे है लालन, अब चल पोड़नापुर चलीं जा। त ए पंचे दुरुगा ओइजा बाघ सिंह के डंवरू रथि जे हांकति बाड़ी बेरुर कुबेर। घरे ना गइलन, ओहिजा से चढ़ाइ ह भइया। अब भवानी बाघ-सिंह जूझ नहरू रंथि जब नधलन बेरुर कुबेर। बइठी गइली जगदम्बा, संग में बीर के ले ली बइठाइ, देबी हाँके रथि गउरा के अब चलली पिड़नापूर बाजारि।

अब देबी रंथिया पर बीर के चढ़ावल,
आ ले के चललि पीड़नान पुरवा बजारि।
अब देबी रंथिया पर देबी बान चललि,
नाहि कते पंजरा में करति बा मोकाम।
एने भइया डूबि गइल डफ् सूरुजे के, जइमे अब घर घर हो गइले सांझि,
अब पंचे पहर भर रतिया बा गईल, देबी हमार जुमल पीड़नपुरबाइ,
जब देबी जुमिय गइल बा बानवा मे, जहां अब खनल पोखारवा रे बाई।

सगड़ पर दुर्गा और बनसत्ती का मिलन

गद्य : अब आदि शक्ति भवानी, कहां पीड़नापुर गइली हवीं, आत ओहि गइली पोखरा पर, पोखरा पर गइली त बारह से मर्ही आ चोदह सौ भूत बैताल के खंजड़ी बाजि रहलि बा।

आजु एनिया होत रहलि ना आ नचिया भइया मर्हीयन के,
केनियों खंजड़ी बाजेवे भूतवे लोग नचुए ए ब य ता ऽ ल,
आजु एनिया थर थर ना कांपलि,हउवे जागवादम्मा,
हमार मोहिनी बनवाइ में गइलीं रे सामाइ।

गद्य-पद्य : अब भवानी बाड़ी से गोद में बीर के ले के, आ सती भवानी पंचे बाल रूप बना के पीड़नापुर में गइल रहली, अब गोदी में लगाइ के अब देखि के भागि चलली जंगल के। आ एने बाजतिया डुगी दुतन के आ नाच होइ रहल बा

सागर पर। अब हमार भवानी कोना कोना जव घुमे लगली, आ बन के काटे लगली पाहि लगाइ। चलल गइली चलावल, आधा गइली जंगल में बाई। परे चउरि बनसप्ती के दुरुगा हूँचि लागावति बाइ। अब भवानी बाड़ी जे के के हुँचि लगवली, हे बनसप्ती। हे बहिन ! अब पंचे टुटि गइलि नीनि बनसप्ती के, ओहि ले के पीड़नापुर बाजारि, जइसे गाइ धावे बछरू पर ओंगो बनसप्ती, पंचे चललि हई लेके दुरुगा पर, जे भले बहिन आ गइलू आजु गउरा हमार। बहुत दिन के संग छुटलि इनरासन के। आ कारज लगले का आ गइलू। ए पंचे, बनसप्ती जब दवरि के चललि बा मिले, आ गोद में बालक लउकल।

आजु बनसप्ती, आजु मारि दिहलसि ना आ छतिया जब ओइजा अधेड़ा।
आजु बहिनि अइलू पीड़नाइ ना आ पुरवा ऐ दादा बाजारि।

गद्य ऽ आजु पुछतानी जे हइ केकर बालक ले के तू चलल बाड़ू। जेकर लंगड़ जे लूझ बेटा मरि जाला, ओकर माइ झांके ले कुंवा इनार। केकरि हे भवानी, केकरि हे बहिन, तू अंग तोडे खातीर ए बालक के ले अइलू पीड़नापूर बाजारि। भवानी कहताड़ी, जे अच्छा काम ना कहलू हा, हा, हा, अइसन सुन्दर बालक लेके आ चलि अइलू पीड़नापूर बाजारि, देखु हीरिया-जीरिया बंगालिन जेकर जासो कलवरिन ह नांव, काल्हि पूरबे लागलि बा लोहा, पच्छी होखे लागी उजियार, कउवा टेरि उठाइ, भोरे भोरे होइ बिहान देखा देखी होइ जाइ, एहि मोती सगढ़ की घाटि। जहिया कंवरू कमइच्छा क बीदा, मरिह स नयना जोगिनि के बान। तोहार त जवन गति होइ तवन त होइबे करी, बाई ए लरिका के जरूर छोर रे लीहें स गोदि ले। हाइ भवानी, हाइ बहिन, अच्छा काम न कइलू, तू ए बालक के ले के चढ़ि अइलू पीड़नापूर बाजारि। एइजा केहुँ के ई रती ना रहे देली स। तोहरा के आ ए लइका के कवन चलाओं। इ कंवरू कमइछा के बीदा मारे लीम। त रोज दूघरी देवतन के भेड़ा बनावे लींस। आ खपड़ी में चाना चबवावे लीस, आ खपड़ी में पानी पीयावे ली स। गरजे माई भवानी जेकर जगिया परल ह नांव, कहे जे बहिन मोर बनसप्ती, तिरिया मनवे बाति हमार, हम कही तोहरा से, एइंजा लागतिया अरज हमारि, उहे हवी तू जनि जान चढ़ि अइली पीड़नापुर बजार। संगे दुलर लगवली एहीं मोतिसगड़ की घाट। अधिका बातचीत जनिकर हमार कहल कर हमार। जइसे दूइ घर चलि के हमार बेटा, आ ओही अगोर द मोती सगड़ की घाट। तनी जाये देबू पीड़नापूर, पीड़नापूर देखि लेइं खेलवाड़ जल्दी से लवटि आइबि सगड़ पर आ दे दीह बालक हमार। अपने देखिह खेला, एकदम देखिह बहिन बनसप्ती एहि

मोतिसगड़ की घाट। उहो दुरुगा तू जनि जान, जे चढ़ि अइली पीड़नापूर बाजारि। असल होइब भवानी एहि मोती सगढ़ की घाट। उघारे नाहीं नचबलीं त बेसा परि जाइ नांव हमार।

हाँ ऽ हाँ ऽ हाँ
आजु पंचे जाही दिन के बातें तनी सुनऽ भवानी के हालि,
संग में बनसप्ती के बाड़ी लगवले लेके चढ़ली मोती सगड़ की घाट।
जब जुमलि बाड़ी बनसप्ती, आजु बा जूड़ी भांग गईले भूत बैताल,
वारह दंगली लो भागि गइल, सागर छोड़ि के जंगल के कइल पयान,
जब जुमल बाड़ जगदम्मा जेकर देबी अपरबल नांव।
संगे आजु बन के रहली बनसप्ती, चढ़ि गइली मोती सगढ़ की घाट,
बोले न माई भवानी बहिन मान बाति हमारि।
आजु हम तोहके थाती बानी हम संउपत, हमना जाइब पीड़नापुर बाजार।

गद्य-पद्य : आजु बहिन दूइ घरी हमार थाती त जोगाइ द, उ कहतिया बनसप्ती जे हे भवानी, दूइ घरी के के चलाओ दू चार दिन हम तोहरी बेटा के बचा देबि, ए सागर पर। जा अपनी कारज के कर ऽ। एतना जब भवानी के बनसप्ती कहतियाड़ी ए पंचे, त आपन थाती हमार जगदम्मा, जो बनसप्ती के संऊप देतियाड़ी। जे अब जा तानी।

आं हाँ ऽ हाँ ऽ
पंचे, जाहिय दिननवा करि जो बाते, पंचे जाहिय दिननवा कर जो बाते,
तनी अब पीड़नापुर देखब खेलवाड़, दुरुगा छोड ले बा सांगवा सागरा के,
चलली पीड़ना पुरवान ए बाजारि, इहै अब छव घरी न रतिया बाटे गइल,
रतिया पर तियाड़ी न नीचवां जब ई जुमलि माइना जगदम्मा,
उहै जो पहुँचल पीड़नवापुर ना बाइरनिया सुतलि बाड़ी स बंगला में,
रनिया सुतलि बाड़ीस वंगला में जाहां लो देत पहरवा भइया बाड़,
कवनो निगहटा बटोरले बा झिलरुवा केवनो कांखत बड़ेरिये पर न बाड़,
इहे अब देत बान चउकिया कीलावा के, दुरुगा लंबेले देखतिया लेलकारि।
कहनी हाइ न दइव हो नारायन, काहि विधि उगिली देल ऽ हो तारे तार।
इत जो होइ न मेंटवा जदवे से, नाहिय अब छोड़ि हंस जानवा रे हमार।

दुर्गा का मसक रूप धारण कर पिड़नापुर के शिव मंदिर में प्रवेश करना

गद्य पद्य : त भवानी, पंचे बड़ा संकेता परली। आ जादव बांड़ स, त कवने निगाहटा पर बिलार छान रहल बांड स। आ केवनो ले के नाचता खपड़ा पर। आ

केवनो, नीचे पहरा दऽस भवानी बाड़ी से चारि हाला जब किला चयउउ-गोठली। पंचे, चारि हालाजब किला मोहनी जाइ चउगोठल। केवनो में ना ढुके के गंव ना बाइ। अब सुनि लीं खेला जगदम्मा के, देबी परल संकेता बाइ। चललि गइल चलावल, मंदिल बनल संकर के बाइ। संकर के जल पंचे चढे, उ नरदोह बन रहल। ओहि ले के पोड़नापुर बाजारि, ओहिजा भवानी तनी खाली पवली, ओहि जा भवानी तनी खाली पवली, पंचे सुनी सभे कान लगाइ। मस भवानी रूप होइके संकर की नरदोह में गइली समाइ। आदि शक्ति भवानी पंचे ओहि नरदोह में लेके मसके रूप धइके अब जगदम्मा पास हो गइली, ढुकि गइली डेवढ़ी में। जब डेवढ़ी में चलल बाड़ी त ओइजा लागल रहल फुलवारी।

हिरिया जिरिया बंगालिनि शिव मंदिर में

हरे मंदिल जो बनल संकर के न बाड़,
अब भइया अरुआ न फुल बाटे मरुआ
अब फुल उड़ल तिखड़िये के बाई एक ओर उगल बाटे फुलवा गुलाबीय,
फुलवा इ लह लह करत वा लेलकार, जेवना में हीरिया न जीरीया बंगालिन,
जेकर आजु जासो कलवरीनी ह नांव, अब रानी कर स पुजा हो संकर के,
ओही दादा पीड़ना ना पुरवा बाजार, ओहि फुलवरिया जुमलि हो जगदम्मा,
अब भइया फुल के लेबे लागलि जो वास, देबीय जो फुल पर मोहित होइ गइलीय,
फुलवा पर बास ले लोन लेलकारि अब देवी लेति बाड़ी बास फुलवा के,
तनी अब दुरुगा के सुन न खेलवाड़, कहली जे खइलीं पुजा हम डिगरा के,
हमरा इ हो गइल जियरवा के काल, नाहिय पुजा त रहितीं खइले,
पीड़नापुर लेतीं हम फुलनवे के बास।

गद्य : त भवानी कहतारी, जे आजु हम डिगर के पुजा न खइले रहली त आजु हम फूले के बास लेके आघा रहिलीं। बाई पंचे कीछुए घरी का बितला भवानी छोड़ि दीहली फुलवारी, कहली जे नाहीं, आजु हमार बेटा पुजा देले बा। एइजा हम जो रहि जाइब। आ बहिन वनसप्ती बइठल सगर पर बाइ त कही जे हाई दुरुगा अपने मने बेसा बने लू। आजु भइया झनके माइ भवानी, आ दूसरा देवढ़ो में गइल समाइ। कहां गइल भइया, आ त चलि गइल आंगन में, सात गो लंउड़ी घाड़ा भरि भरि जल लो धइले रहल। काहे खातिर, आत जल जेंव नीनि टुटे ओजसुई के, त सात घड़ा ए भइया जल से नहाइ बासी, आ सात घड़ा टटका।

आजु जसूई सुतलीय बाडी देवढ़ी में,

घइला भरि के धइल ऽ अंगने वे मे न बाइ ।

पद्य : अब भवानी बाड़ी से पंचे मन मे तजबीज कइके, लातन मारि के घरीला के ढरका दोहली सातो । जब लेके घरीला जब डगरल, आ चलल जल हुलान ऽ त तीरियन के जाके केहूके चूतर मींजे केहु के फुरहुर, अ चीहाई जब के उठ ली स कहस ए बुजरो तू हमरो लुगा मूति के बोगरलू । त केवनो कहे स ना तू मूतलीह, तू बिगड़लू ह । अब अपने में झगड़ा कइली स । देबी देखि के तमाशा हंसतियाड़ी आंगन में । अब जे अपना में हरतुज कइली स, नाहिं तू ढेर मांड पियले से मूति दीहलूह । उ कहे जे ना हमरो तू देहिया बिगार दीहलू । कइली सगर हरतुज आज सक्ती भवानी, देख के हंसतियाड़ी पंचे, तव भवानी एगो स्त्री के मउर फेरि दीहली, केने आ त, घाड़ा की ओर । घाड़ा की ओर जब नजरि जातिया त कहतिया रे बुजरी त रे का झोंटा झोंटी कइले बाड़ु स मूतला से हइ पटि जाइ आंगन । अरे हउ घरीला साफे डगराइल बाटे कहली स ढगरा गइल बा, आत हं एकदम ढगरा गइल वा । कहलीस चल जा जल्दी से ना त भोर होइ जीव ना छोड़ी जसुई । अब रानी घड़ा के लो कईल तेयारी, भइया दुरुगा धइली कीला के डगर चढ़ली मोतिसगढ की घाट ।

सुनिलं जे दुरुगा इहे घरीला के, ए जलवा भइया बाड़ी गीरवले ।
देखिय हमारि चललि सागारवा के ना बाई ।
कहति बा जे मुनिले बे ना बहिनिया वानवासपती एइजा बले देड दीहलू
वाचावा रे हमार ।

भवानी द्वारा बीर लोरिक को योगी बनाया जाना

गद्य पद्य : कहताड़ी भवानी जे हमार कारज हो गईल ए बहिन, अपनो स्थान के धल हम जवनी कारज के लाग रहलीं हं उ कारज हमार हो गइल । अब ए पचे ओहि जाले बनसप्ती उठि के चलि गइली अपनी स्थान के । आ भवानी बीर के का कर तियाड़ी, जे जोगी रूप बनवल्नी । आ भवानी भारी उमीर के लखुआ सीरे सोभे सबुज के बार, लरबर धोती पहिने, डाडें लटकि रहल करिहाव, आंखि मुंह बा ढुरहुर, मुख में सोभे दूधा के दांत । पातर पातर बा पीडुरी, मुंड़री करिआव, छाती ह गज बरना पीटि गइल धोबी के पाट, उलटल रान सुघर के जइसे फेड़ बनल केढली के बाइ । बढ़ल रोब लडिका के पंचे ओही मोतीसगढ़ की घाट । एक त सुघर बीर रहल अलबेल्हा जेकर बा लोरिका नांव । दूसरे जागलि माई भवानी जेकर देबी अपरबल नाव । बीर के बइठि गइली सिरे पर, ओहि मोती सगड़ की घाट ।

आ ऽ हाँ ऽ हाँ
आजु जब सातो लड़ि लउंड़ी उठलि बाड़ी बखरी में

गद्य : आ सुनि ल भइया पीड़नापुर बाजारि, भरे चललि स जल सागड़ पर, त केंगों चललि हइ स। सातो लंउड़ी कंवरू कमइच्छा के वीदा मरली, मरली नैना जोगिन के गांव बान, उडल घइला अंगना में, अब उड़ा जाइ छावत प्रकासे बाइ। नीचे गेंड़ुरि बाड़ी नचवले, गेंडुरि अब तोरे लागलि जन तान।

आरे सातो लंउड़ी गरवाइ में ए गारवा बबुआ बाड़ी मेरावत।
कजरी गावति चलली मोतिये सागरवा की बबुआ न इ घाटि।

गद्य पद्य : रानी जब घड़ा उठवली स, त सावन के कजरी छोड़ली स लहरा। आ गावत जल ले चलली स आ घइला बा से आकासे उड़ि रहल बा। ऊ जब स्त्री गाना गाई के जब ताल मार स थपरी के, त ठेके गेडुरि ताल बजावे। आजु रहलि माइ भवानी, जेकर देवी अपरबल बा नाँव। कहे जे बेटा मोर बीर लोरिक मनबे बति हमार। बेरि बेरि नाहीं बरजली नाहि मन ले कहल हमार। देखि ले खेला अब पीड़नापूर एहि मोतिसगढ़ की घाट। का देखवले हई। घरीला गुरुज बान्ह स, जइसे हवाइ जहाज बा तेतना गुरुज स। ऊपर जब आपन मउर बा उठवले ऊपर भइया गुडुला बाड़ स घोंघियात। नीचे निहुर ताल बाटे बजवले, नीचे तिरिया गाना छोड़े ललकार। देखे बेटा खोइलनि के देवकी नन्नन राज-कुमार। मइया मोर भवानी जेकरे घरम का पालि। अब लरिका फरकि के जाके देवी के आंचर में लुका ता। कहताड़े जे मइया मोर भवानी जी तहरे धरम का पाछ हम त जनली जे लड़े के बाटे भीमला से ओइसना सुहवलि पालि। इ खेला हम ना देखलीं मोरुत मंडल संसार। जे माटी के घरीला बाड़ी स उड़ावत ईत हमार देहि दीह स उधियाइ। फरके लोग जाला मइया कीला में, जांधि कांपति बाटे ओहा मोतिसगढ़ की घाट। दुरुगा धइके मुंह दबवली, नीचे मउर देली लटकाइ, ऊपर चढ़ि वइठली भवानी। मउर उतारि के बइठ गइली मोतिसगढ़ की घाट। लरिका फेरे माला तुलसी के। अब खटके लागल।

हारे मायावा के धुँइया ज देली ना लागाइ,
अब भइया लागलि वा घुँइ ना सगड़ा पर,
ओहिय आजु मोतीय सगड़ कीय घाट।
पंचे अब सुनिल खेला न सुहवलि के।
पंचे अव सुनिल खेला न सुहवलि के (पुन०)
गायन लोग पवले सुफल लोग बाइ,

इहे भइया सोझवे सड़कि धइके जालन,
जाला लोग मोतीय सगर कीय घाट।
साचो भइया कठिन ह गाना रे सुहवलि के,
एहि अब सोना रे सुहवलिय पालि।
पहिले भारथ हउवन सुरुमा के,
दुरुगा के देखिय लेब ऽ न ऐनवाड़।
आजु भइया जोगिया बना के बाड़ी बइठलि,
ओही आजु मोतीय सगड़ कीय घाट।
तबलक सातो ए लंउड़िया जुमि गइलीं,
ओही आजु मोतीय सगड़ कीय घाट।
जाके रानी भर स न पानी घरीला के,
घरोला लो घरे भीटउवे पर बाइ।
अब रानी लेइके गेडुरिया लो धइल,
तले दुरुगा सरंगी बजवले ना बाइ।

गद्य-पद्य : जेंव लउड़ी पंचे सीर पर धरत ला बा गेडुरि के, जे अब घड़ा उतार लीं जा। एहि बीच मे आजु आदि शक्ति भवानी लेके सरंगी खीचली, आ ओही सरंगी मे निकलल बत्तीसो राग। घुमि गइल मांथ लंउड़ी के। कहस जे आहि सखी। आरे हउ देखु ना रे। जमल त घुंई बा। आ एक जना जोगियो बाड़। चल स चलीं जा।

सुनिजाँ जे लंउड़ी छोड़ि दीहलीय घ ऽ ऽ रीलवा पंचे सागरा पर।

गद्य : सातो लंउड़ी जोगी कीहे जुमि गइली स लेलकारि। देख स जब जोगी के ओही मोतीसगढ़ की घाट। रानी को आगि बुताइल, धधक गइल कोला में बाइ। ओली लागल जब पनके, चोली ले के मीरुत मंडल संवसार। आजु भइया, रसके भीने कलेजा, उन्हनी के मंहुआ चढ़ि गइल ललकार। कहस जे हाइ सखी इत हमनी के बुतइलो आगि जोगिया जगवलसि। अब चैन परे जोग न बाइ। कहस जे ए जोगी बाबा अब मउर उठाव, तनी। हमनी की ओर ताकि द। आ नयन में नयन भिड़ा जे हमनो के टिसुना रहि जाइ। अब एतना जब लंउड़ी कहति बाटे त लोरिक अउरी हाली हाली खडखटावे लगलन। रानी जब एतना कहति लोबा त अब पंचे, अउरी मनियावा से खटखटावे लागल बीर। लंउड़ी डांट स, जे देख जेतना माला तहार खटकता, ओतने घाव हमनो के करेजा लागतिया। रहनि से ताकि द आ ना तकब, त इहो जनिह तोहके माला

हमनी का ना खटखटावे देबि जा, आ ना जोगी रहे देबि जा एही मोतीसगड़ की घाट। मारब जा कंवरु कमइच्छा के बीदा नयना जोगिन के बान, आदीमी तन छोड़ा के तोहके भेंड़ा घालबि बनाइ। गर में पगहा डालि के ले चलब पीड़नापुर बाजारि। भर दिन खपड़ी जल पियाइ ब। खपड़ा चला देइब चबाइ। करवि जा हालि पिटऊर के। तोहके निश्चय सरब भोगी घालब जा बनाइ। डांट तारी स लंउड़ो जे बीदा त करबेकरबि जा बाकी सरबा भोगिया बनाइब जा तोहरा के। ओइजाना कहब जे नाहीं। आ नाहीं त रहनि से ताकि दऽ। आजु भइया सिर पर बइठलि रहली जगदम्मा जेकर देबी अपरबल नांव। धइके डांड़ रहली दबवले, अब बीर के मउर देले रहली लटकाइ, केतनो रानी, लो धीरवे बाटे ना मउर उठल सगड़ पर वाइ। चारु ओरिया घुमि के जां स, त कह स जे तनी ताकि ना द। तकला में का लागलि बा ए जोगी। ना तकब त बड़ी बोरहुल होइ। अब भइया सिर पर बइठल रहलि भवानी, जेकर देबी अपर बल नाव। केतनो ताके लो सागड़ पर, बीर के मउर ना उठे मोतीसगढ़ की घाट। न जे मउर उठे। तब कहतियाड़ी स, जे है सखी,

आ हाँ ऽ हाँ
आज पंचे जा ही दिनन के बातें आगे मुनऽ समर के हाल,
जरे वदन तिरियन के ले के मोतीसगढ़ की घाट।

गद्य ऽ कहलीस जे मारी जा कंवरू कमइच्छा से बीदा, नयना जोगिन के वान। आज अदमी तन बनाके सखी के भेंड़ा ले चली बनाइ! भर दिन सगड़ा में जल पियाइबि खपड़ी चना देइब चबवाइ। आ राति खानि इनके सर्व-भोगी बनावे के।

आजु रनिया इहे कंवरू कमइच्छा के जो बीदा लोग ले ला।

गद्य : कंवरू कमइच्छा के बीदा जो छवोरेरानी हाथ में ले ले हइ उठाई, मार स बीदा लेलकारि के जोगी पर ओहि लेके मोतीसगढ़ की घाट, परसन रहलि भवानी जेकर देबी अपरबल नांव। लेके बीदा बाड़ी रोकत आ के ले गढ़ सगर में वाइ।

अब भइया जले लागल बीदा अलबेल्हा,
जोगिया पर माया न जोगिन कर बाइ।
बाकी आज परसनि रहली भवानी, अब जेकर देबीय अपरबल नांव।
अब दुरुगा नाचति बाड़ी न लोलरे पर जादो के इ धई धई मीमोरवै न बाइ,

आजु दुंरुगा लुटि लुटि जादो अलबेला,
लेके गाड़े पीड़ना न पूरवा बाजारि,
अब रानी हायले-कायले होइगइली, सुनलऽ ओहि मोतींय सगड़ कीय घाट,
अब बबुआ नाहिये दीदा त बाटे लहल, नाहि लोके लागल जोगिय पर बाइ,
अब रानी ठक देने ठाढ़ा लोग भइल, हा हो सखि मानि जइबू बतिया हमार।

गद्य : का कहतारी स—कहतारी स जे इ जोगी बुला कंवरू-कमइच्छा में गइल बा, हमनी के बटुरी बोदा खतम क दीहलसि, त केवनो कहतिया जे चल हमनी के खतम क दीहलस, त हमनी का ठकुराइन के ले आइंजा। ना माला खटकी तेहार जा तानी जा रह, सागड़ पर तुरन्त लवट तानी जा हमनी का लेके सखी के। अब छवो लउंड़ी भइया हारि मानि के घड़ा उतारि के चललीस लेके पीड़नापुर बाजारि, चलली गइलीं चलावल, ओहि पीडनापुर बाजारि। हीरिया सुतल रहलि बंगला में, लेके ओहि कीला पीड़नापुर बाजारि। छवो लउंडी चलि गइली, कहलि जे ठाकुर मानऽ बाति हमारि, आंख के चरितर का कहीं। मये हमनी के घइला सांचो ढगरा गईल हा।

अब खेला हमनी का कही जा राति के, आजु के, जे सातो घईला हमनी के डगरा गइल रहल ह। आ घरीला जब डगरा गइल रहल ह त हमनी केजब उठली हां जा त कहली हां जा जे आहि दादा जो ना पानी ले आवतानी जा त काल्हि हमार ठाकुर जो जागे पाइ, त हमनी के जीव ना बांची, छोड़ी,

योगी के दिव्य रूप पर पिड़नापुर के जादू गिरिनियों का आकृष्ट होना।

जब ओइजा जल भरि जब मन कइलि जा चली जा, तलक अइसन सुन्दर जोगी आइल बा जे ओह जोगी के रोब कहे जोग ना बाइ। बाजलि ह सरंगी अलबेल्हा जेइमे निकलल बत्तीसो राग सरंगी करेजे जलेले बजले, हमनी के अगिन फुंकि देले लल-कारि। जब मउर उठा के तिकवली हां जा ठाकुर त देखतानी ओ रोब दाब माटिकटनी आ जब देखतानी ओसारे पर जोगी के रूप। बारह बरीस के गभरू सोरह बरीस के रहल पहलवान, पातर पातर पीडुरी, ऊपर मुनरी बनल करिहाव, छाती ह गज बरना, फेर धोबी पुर गरेरी पाट। बाकी देखलीं रोब लडिका के, दग दग जरे पलीता। महुआं लुटते रहलि लीलार, नेतरि छावलि बरवनी, मुखले अतर चले गुलाब। कहाँ ले रोब बरानी ठकुराइनि उ रोब देखले फाटे छाती हमार। तब हमनी का कहतानी जा रउआ से, घरीला धइके हमनी का मन कइलीं हां जे हमने का जोगी के ले ले चलीं जा

जब जुमली हां जा आ कहतानी जा जे ए जोगी तनी ऊपर तिकव ऽ त, अउरी कले कले मालवा फेरि देतारन, खट-खट खटावे लागल ह, हाली हाली। त उ जतने माला खट खटावत रहल, ओतने हमनी के करेजा पर घाव सुलति रहलि ह। अगिन फुंकति रहलि ह। कहतानी जा जे ए जोगी तनी हइ ताकि द रहनि से। हमनी के तोहारसुरति देखतानी जा तइसे हमनों के सुरति तिकव ऽ। जे नजरि में नजरि भीड़ा द जे हमन के टिसुना जा बुताइ। हे ठकुराइन, उ तनिको अरदाति ना सुनलस ह। आ नीचे अब मउर देले बाटे लटकाइ। केतनो जब पुंछली हा जा, आ ना समुझल ह, तब हमनी का छवोजानी कमरू कमइच्छा के बीदा, मरिलीं जा नयना जोगिनि के बान, केतनो वीदा मरलीं हा जा, ओ जोगिया पर ना असर कइलस ह। ओहि मोतीसगढ़ की घाट। ना जाने कंवरु कमइच्छा में गईल की बीदा सीखलसि नयना-जोगिन का पास। कवन चरितर हो गइल की बीदा सीखलसि नयना-जोगिन का पास। कवन चरितर हो गइल जे हमनी के जादो असर जोगी पर ना कइलस ह। तब हमनी का आइल बानी जा। एतना जब सुने बेटी दादा सहुआ के जेकर बियहल जसुइये नांव, वहे जे इत बुताइलि आगि धधकवलू स रे। ऐ पंचे, तनी सुन ल बयान पोड़ना पुर के

अब भइया उठलि बेटी बा सहुआ के, जेकर देख परली जमुइया अब नांव,
अब भइया सुनले सुरति बा जोगिया के,
आगि ओकरी लगल ऊ बदनियां में बाड़,
कहति बा जे सुनि लेवे लउंड़ी अलबेल्हा, पोड़नापुर मानि जइबे बतिया हमार,
जेवनी पर कवरू कमइच्छा बीदा मारव अब मारब नयना जोगिनि करवान।
जोगिया के केवनि ए चलाओ, दैना तर के भेडा हम देइलं बनाइ।

गद्य : चलु, अब हम चलबि सागर पर। बाकी तीसरी देवढ़ी में हेलि जो सखी हीरिया जीरिया सुतलि बंगालिनि, तनी उन्हनो के जगा ले आउ : मिलि जुलि तीनो जानी चलि जा ओही मोतीसगढ़ की घाट। ओही जोगी के कवन चलावो। देवतन के देब भेड़ा घालब वनाइ। गर में पगहा डालि के, खपड़ी चाना देबि चबवाइ।

अब लउड़ी डालि दीहलिस हा आ आगिया भइया पोड़नापूर।
आ जमूई जब उठिये गइलि बा आ उ ना जाई।

गद्य : कहतिया जे जो बोला लियाव। अब लंउड़ी जब मारे हेला बखरी मे, भइया तीसरा गढ़ दबवले जाइ, जहां सुतलि रहलि हीरिया, जीरिया बंगालिनि जेकर जासो कलवारिन वा नाव। है रानी सुतल बाड़ जा ए गो जोगी आइल बा।

जासो कहतिया तनी बोला लियाब, सुनत के साथ दुन नी का भइया नीनि टुटि जातिया, आ तड़ देने लेके जादो की धोकरि जुमि गइलो स जसुई का पवन दुआर। कहतिया जसुई जे ए सखी हीरिया-जीरिया, एगो अइसन जोगी आइल बा एहि भींटा पर जे लउड़ी सरहना कर तारीस, ओकरा जोगी के रोब के आंगा जोगी संवसार में नइखे, आ बारहे बरीस के त गभरूवा बा। बाकी जेकर नेतर हवले बा बरवर्ना, मुखले अतर-चलल गुलाब, है सखी, चल जा जोगी जो राइ से आई त ओके राइये से ले आवे के। ना त मारे के कंवरु कमइछा के बीदा, नयना जोगिनि के बान।

लोरिक को भेड़ा बनाने की तैयारी

अदीमी तन छोड़ा के उनके भेड़ा घाली बनाई, लेके चलि आईं पीड़नापूर, एहि पीड़नापूर बाजारि। भर दिन भेड़ा बनाई, राति खा मनुष देइ बनाइ। अपनी अपनी सेर पर काटि ले बे के वहारि। पारा पारी कहतियाटे जे हमनी के हिस्सा बखरा परिजाइ ओ में बीच ना पर्रा। बाइ चलि के जोगी के मनिया तोड़ दी जां। तब एने हीरिया जीरिया बंगालिनि जेकर जासो कलवारिन ह नांथ। कहै जे सुन लेबे ए सखी, मनव वात हमार। अब कहे के नइखे, चल चलीं जा सागर पर। जवन जोगी आइल वा मोतिसगढ़ की घाट।

जादूगरनियों द्वारा आभूषणों से सज्जित होकर योगी लोरिक के पास जाना

आ ऽ हाँ ऽ हां
पंचे जहिय दीननवा करि जो बाते,
आंगवा सुनब पीड़नपुर खेलवाड़।
रनिया बइठी गइल लोग अंगना में,
ओभिरन करति बदनिये मे न बाई।
जब ए वारे वारे न गुथे मोती,
हीरवा जड़ लीस समंहवे न लीलार।
जेकरा सोन के अरधी बा बबुआ बनल,
सोनके तारवा घींचवले ददे बाइ।
जेकरा सोनवे झबियावा रहलि, लागल जेकरि लटकि गइलि बा सिरहान।
रनिया कमर में डलली जो करधनी,
हलका छतिये ऊपर जो नरियाह।

जहिया गांगावा जमुनिया बबुआ हुंसले,
अपना गरदनि देलिय स अड़ंसाइ
नीचवा गोड़ में बान्ह स गोड़रयला
नेऊर जतुए आवत बे बबुआ काल।
उहे जो टेहि टेहि अंगुठिया लगली डाले,
जेहि मेंबीदिया लागलि बा सेना चार।
ओहि जा अंगुठो में घुघुरा कटे लागलि,
ओहिया पीड़ना ना पूरवा रे बाजारि।
रनिया पेन्हली चोलिय जो मखमल के,
जाहिये में झुर झुर न लगुवे रे बयारि।
जहिया पेन्ह स छीटिया जो बकेना ए,
पंखि लागलिह् बा छपनो हजारि,
जेकरा अंचरे पर मोरवा जो बिराजे,
कोइलरि कुँहूकति बगलवा पर न बाई,
रनिया तासवा-बदलिये करि जो चादरि,
अपना बीगले बदनिया पर न बाइ।
इहै जब लागलि बा जोतिये सुरुजे ले,
बायें उगल चनरमा लेलएकार,
जहिया उठल झूमेलवा सखियन के,
जहिया उठल झुमेलवा सखियन के,
ओहिय पीड़ना ना पुर रे बाजारि,
जहिया छोड़लीस गउवां पीड़नापूर,
अंगवा सगरा के कईल सा पेयान,
केवनो छोड़ले बा सावन केर कजरी।
केवनो लहरा उठवले भइया बा,
पछिली पहपट गाव स ओहि जा तिरिया।
ओहिया मोतीया सगड़वा की न घाट,
जहिया धइले डगरिये चललो गइल, ओहिये मोतिये सगड़वा की न घाट।
एनिया बने गाना बा भइ गईल,
आ सूरते देखले रनिया धइ धइ अंगुरिया लो भइया चाबाइ।

गद्य : से जोगी के देखतियाड़ी स, धइके दातन आंगुर काटतियाड़ी स, आ जेवना समे में स्त्री जुमल बाड़ी स अब बीर फेरे माला तुलसी के भवानी पर धइले रहतिया।

अब बीर गर में हरधरी जपे माला तुलसी के, माता दुरुगा के घइले रहल धीयान, ऊपर बइठल रहली जगदम्मा जेकर देवी अपरवल नांव, एकल रहत सुन्दर बीर लोरिक, दूसरे दुरुगा मायाले के बइठि गइल बा। एहि बीच में जब जुमली स हीरिया-जीरिया बंगालिनि जेकर जासों कलवारिन नांव। कह स जे हंस के जे हे जोगी बाबा आपन इज्जत जो चाह तू मउर उठावऽ त क कह स ताके के त अउरी माला खटखटावे लागे। आजु बड़ा जो दिसा लागे जेकर बियहरि जसुइया नांव। सुन, सुन ए जोगी मानऽबाति हमारि, जब जब माला खटखटावल, घाव लागता करेजा बाइ। रहनि से मउरि उठाव ऊपर तीकव नयन पसारि, तनि देखि ल हमनीं के सुरति अलबेल्हा आइल बानी जा मोतिसगढ़ की घाट। बस एतने ले जरूरत बाटे आ ना जो ऊपर मउर उठइब त अब कहतानी जा जे मारब जा कंवरु कमइछा के बीदा नयना जोगिन के बान, अदीमो तन छोड़ा के तोहके निश्चय पीड़नापुर चलब लियाइ। भर दिन भेड़ा बनाइब राति खा सेज देइबि लगवाइ। निश्चय सरब भोगी बनाके छोड़ब, एहि पीड़नापुर बजारि। ना तहार जोग रही ना तोहार माला खटके देइब। बाइ ताकि द।

तबो नाहीय ताकत बाटे ना आ बीरवाईरे बघेला।

अब नीचे मउरबा देलेइबा लटेकाइ।

ख : जतने धीरवे लो भइया, ओतने माला खटकावे। जसुइ कहतिया जे इ ना मनि हं। बहिन हीरिया जीरिया आ सभे मिल के मार ललकार जादो। आजु सीर पर बइठल रहली भवानी जेकर देवी अपरबल नांव। एने जे भइया उठि गइल हीरिया जीरीया बंगालिनि जेकर 'जोसो' कलवारिन ह नांव। तीन जा कंवरु कमइछा के बीदा, आ जोगी पर मार तियाड़ी ललकार, परसो रहल भवानी जेकर देवी अपरबल नांव, लोके बीदा के गेना नियन लेके बोरे सागड़ में जाइ।

हाँ ऽ ऽ हां ऽ ऽ
एनिया चलुए ए बीदा न दादा जदुए के,
एनिया बीदा जो जदुवे के,
सिरवा दुरुगा रहलि न मइया बाइ,
इहे जा सीर पर नाचलि बा जगदम्मा,
इहे जा सिर पर नाचलि बा जगदम्मा,
ओहिया पीड़ना ना पूरवा रे बजारि।

पूई कलारिन तथा अन्य जादूगरिनों का जादू विफल

जेतना चले जादो न पीड़नापूर, दुरुगा लोकतिया हथवा न लागाई।

आजु इहे बटुरी जदउवा छोरि ह लेले, देविया बोरले सगरवा में न बाइ।
अब इहै रानी लो बाटे कठुआइल,
आ नाहीं जादो लहली जोगिय पर रे लेलकार।

गद्य : ए पंचे, जब जोगी पर ना लहत बीदा, तब लो का कहता। ए सखी, अब का करे के। आरे इ नान्हें के गइ रहल ह कंवरू कमइच्छा में, हमनी के बटुरी बीदा न काटि दीहलसि। आ हे सखी, ईत बुताइल आगि हमनी के खोरि दीहलसि। अब चैन हमनी के न मीली। चल स लुगा खोलि के तनी सागर में नहाइँ जा। ए पंचे होरिया-जीरीया बंगालिन आ जेतना तिरिया लो बा से अब कुल्हि तिरिया घुमि के जाके, अइसन अगिन फुंकलेसि कहली जे नाहि तनी नहाइब जा तबे जीव ठंढाइ। ह बुताउल आगि खोरनी से खोरि दीहल स बीगड़ऽ इ जोगी आइके। अब जेतना रानी बाड़ी पीड़नापुर लामाहटि के भइया लुगा खोलि खोलि आपन देहि के समग्रीही सब ध देले ह भींटा पर, आ कुल्हि स्त्री ओहि जलमें गइली समाइ। मार स गोता अलबेल्हा रचि के कर ताड़ी स्नान। कंवरू कमइछा के बीदा नयना जोगिन के बान। बनलि देबी सागर में डेंगी देले हइ बनाई। खेले लगली स झींझीरी। ओहि ले के पीड़ीनापूर बजारि। अब पंचे भवानी का कहतारी, हाइ बेटा अब डर भाग गइल। दुरुगा ललकार तियाड़ी जे हाइ बेटा लुटि ले चीर इस्तीरिन के, लुटि ले चीर इस्तीरिन के, एतना कहताड़ी जगदम्मा ओइजा रोवे बघिनि के लाल, कहे जे मइया मोर भवानी अब जीव तोहरे धरम के पाछ, तिरया छाड़ी उठाइव, भुजा घटि जाइ बल हमार। के लड़ी भीमला से चढ़ि के, सोना मुहवली पालि। पंचे जब देबी ललकारतिया जे लुटि के लुगा के, त बीर ओइजा रोदन कइले ह। का कइले ह जे हाइ भवानी आजु हमसे छाड़ी जो उठवइबु त के लड़ी भीमला से चलि के गउरा सोहवल की रे बजारि। एतना लेके जब भवानी कहतियाडी, हंसे माइ जगदम्मा जेकर देबी अपरबल नाव। बा न बेटा बउरइले की तोर माना परल गियान। उठे माइ जगदम्मा ओहो मोतीसगढ़ की घाट, ए भइया ले के धेनुही हइ बनवले। भवानी ले के धेनुही बनवली आ तीर के ओमें खंस दीहली। बेटा हाथे जनि छुव ऽ एहिगो तीर में खोंसि खंसि कुल्हि लुगा के लुटि के आव।

कामातुर जादूगरिनों का कपड़ा उतार कर मोती सगड़ में स्नान करना—कृष्ण की भाँति लोरिक द्वारा चीर हरण—दुर्गा का चीर धरती को सौंपना

आजु लोरिका लुटे चलल नाऽ लुगवा भइया तीरिया के,
जइसे कृस्न लुटे चलल न आ बिरजवा में बबुआ बाइ।

ओंगो बीर बा लुटे चलल ना ऽ आ चीरवा देखब रनियन के,
हथवा में धेनुही ना लीहलसि ए लगाई ।
अब बीर खोदि खोदि ना ऽ आ चीरिया लागल पंचे लुटावै,
बटुरिय चीर खंसले ना आ तीरवा लेनाए लेलएकार,
आजु ओइजा कुटि केइ ना आ चीरिया आपन आलवा बेल्हा,
दुरुगा बइठलि मोतिये इ सागड़वा की बाड़ी ना घाटि ।
आजु देबिया घीचि लिहलसि ना आ लुगवा देखब रनियन के,
धरती के कहति बाड़ी ना देबिया हो लेलकार ।

गद्य : कहे जे हे धरती अब फाट, हमरा थारी के, अब जतन तू राख, उ कहां धरती फाटलि ह, जहां जोगी मीरिगछाला बीछवले रहल, ओहि का नीचे जाके फाटि गइल धरती भइया, आ ओहि में आदि शक्ति भवानी जाके सुति रहली, लुगा ठुसि के आ ऊपर मीरिगछाला घीचि ले अइली । सुति के आ मीरिगछाला बीछाइ के ओहि परदा के ऊपर भवानी बीर के बइठा दीहली आ फेरु अपने मउर बइठि गइली, आ फेरे लागल मनिया जोगी न, आ एने झीझींरी सखी खेले लगन्ी ।

हाँ, हाँ, हाँ,
आजु पचे, जाही दिन के बातें आंगे सुन न समर के हालि ।
बीर जब लुटि लेलो चीर इस्तिरिन के,
आ भवानी के गाडि दे ले धरती में बाइ,
कहली जे जतन करऽ थाती के, जब लागी कारज मीरुता में,
धरती माता दे दीह थाती हमार,
हम लेके बेटा के चढ़ल बानी एही मोतीसगढ़ की घाट ।

गद्य : देवी बाड़ी से धरती के संउपताड़ी जे हमार थाती रखले रह । तबलक पंचे अब सुनी बयान तनो पीड़नापुर के, जवन रानी झींझोरी खेलत लो बाइ, तब लक पुरबे बोले लागल चुहचुहिया, अब पह फाटे मीरुता के बाइ, कहत जे हे सखी, अरे चल स चली जा जल्दी से कपड़ा बदलि के ना त अब साफ हो जाइ ।
सुनि लं जे रनिया छोड़ी दीहली ना ऽ आ डेंगिया पंचे सगरा पर,
आ चढ़ि गइली आजु मोतिये सागरवा की रे घाटि ।

गद्य : अब रानी जो जाउ लो भींटा पर त लूग्गे ना । कह स जे हाइ सखी । अब का केरी के, कवन अइसन चोटा रहल ह, कवन अइसन चोटा लागल रहल ए ददे, जे आजु हमनी के चीर लुटि लिहलसि, त ओहि में कहतिया जे का जाने जागिया आके हा हा, आरे इ का कइलु स रे बुजरो तोहरा बोलावल से जोगी

नइखे बोल त आ उहे जोगी तहार साड़ो लूटी, लछना नति लगाव। अब हीं त जोगी जहां बइठल बा तहवें बइठल बा। इके चोटा लुगा चोरावल ए ददे, के लुटि लीहल चीर हमार।

अब हमनी का उघारे परलीं जा सखी एहि मोतीसगढ़ की घाट। अब मइया रानी झपटि के सागर में पुरइन पात पहिरि के आधा पुरइन आंगा आधा पाछा, साटत लो बा तोर-ताबर। कहलीस इत बड़ दुरगति भइल, हमनी के ए सखी। तब बोलल जे हीरिया जेतनी रहजा केहू ले गइल होइ पीरीथिवी का अन्दरे न ले गइल होइ। धीरिजा धऽर स ए सखी, आ पंचे पह फाटता, अब हीरिया जवन बाटे बंगालिनी कंवरु कमइच्छा के बीदा मारे नयना-जोगिनि के बान, लहिगइल बीदा अब रानी के, बंडा-सुर वीदा के बीगता आकासे बाइ, जाके रोकि द न रथ सुरुज के मीरुत मंडल संवसार पुछ जे के हमरा चेला के ले लुगा चोरावल, उनकर हालि होइ जानल जरूर।

ऐ पंचे, जादो ह सेअकास के जब जल्दी बीगलस ह ऽ आ सुरुज नारायन उदे कर तारन तले जाके हाथ जोरि के खड़ा हो गइलन। सुरुज नारायन कहताड़े का भइया, कहत बा जे हे बाबा, कहां ले कहीं बरनिका, हमरी बुते कहि हद लाग जाता। बड़ा परि गइल बानी संकेता ओही मोती सगढ़ की घाट, जेवन चेला हमार गइ रहली हा स जोगी के देखे ओही मोतीसगढ़ की घाट, लुगा खोलि के नहाति रहली हा स। झींझरी खेलत सगड़ में बाइ तलक बीचे के चोटा लुगा चोरा लिहल हमरी चेलन के, परल बाड़ी स लांगट उघार, एकर रउंजा भेद बता देइं। हमरा काने देइं सरेखा डालि। नरायन कहता ड़ न जे भइया अगर जो अकास के चोटा लेके जो लुगा ले के आइल होइत त जान सकती। इ तोहार चोरी भइल बा धरती का अन्दर में। ए चोरी के हाल बात जानी शेष नाग। ए पंचे, सुरुज नारायन कहलन जे अगर आकास में जो आइल रहीत चोटा, त एकर हम जानि जइतीं की नाहीं चोटा लुगा के ले गइल ह। ह चोटा धरती का अन्दरवा एकर भेद नाग जनिहन। नाग जनिहन, आत हं नागे जनिहन, दूसरा से पाता ना चली हमरा राज में अइले नइखे चोटा।

हिरिया जिरिया का सूर्य नारायण के पास जाना और इसके बारे में पूछना
सूर्य देवता का शेषनाग के यहाँ भेजना

अब भइया रोइ रोइ बीदा वियोग रोवताड़ के के आत सुरुज नारायन से, कहलन, जे हे बाबा हमारि मीनती इहे बा जे थोड़ा घरी रउआ थम्हि देइ, अगर जो उदे होइ त हमरी चेलन के तन दुनिया देखी। आजु ए भइया, लेके

जादो रोवसु जाइके ओहि सुरुज नरायन के आंगा, त्राहि त्राहि करसु जे इ धरम करम रउवां पास बा। कहलसजे अच्छा जा ले, तनी कीछु अंटसे हो जाई। सुरुज नरायन के असतुति कइके ए पंचे जादो जब लटकल ह। आइल बा हीरिया जीरीया बंगालिनी उधारे परल बाड़ीस।

हां ऽ हां ऽ।

आजु पंचे, जाही दिन के बाते आगे सुनऽसमर के हालि। जुमल जादो जब हीरिया की ओही मोतीसगढ़ की घाट। कहे जे हीरिया जेकाह हालि ह बाबू, जादो कहत बा जे का कहीं। सुरुज नारायन कहतांड अगर ऊपर जो चोटा लियाइल हो लुगा त ओके हम जनीतीं। उ चोटा ऊपर लुगा नइखे लेयाइल। उ धरती के अन्दर चोरी भइल बा। एकर हालि शेष नाग जनिहन।

त हीरिया कहति बा जे आजु बीदा जेवना इना अ दिनवा के हम हवीं ए सीखले, आजु हमार घरी गइलि नियराइ, तोड़ि देब जमककातिर हेलि जा पताल में लेलकार। का हमनी के जियते तन देखवल, दुनिया देखि जाइ संसार तोहार, संग में बीदा लगावल, हमके होइ जाइ धीरकार। एतना तू अडर लगावल जेकर परल हीरिया बा नांव। जेवनी में बांडासुर जो बीदा।

हारे जमु कतरी में लेला लेलकारि, अब भइया तोड़िय देले बा जब जमु कातरि, अब काली दह में गइलनि लेलकार, अब ओइजा लार्गलि बाटे नीनि नागेके जहां नागिनि बेनिया डोलाव तू रे बाइ।

गद्य : पंचे, जादो जब जुमि गइल। नाग जी का नासा लागल बा। आ नागिन बेनी डोलावताड़ी। हाथ जोरि के जादो का कहताड़, कहतबाड़ जे है नागिन तनी अपनी पती के जगावऽ। हमरा कारज लागलि बा। कहतिया जे देख, हमार पती सुतल बाड़ें हाले में, ओ नासा में जब अगिनि ले के बीगिहनि न त जरि जइब। जादो कहता जे हे नागिन जब हमार शरीर तोहरी जीव का पाछा बा। चाहे हमके जारि देसु आ फुंकि देसु ओइसन हमरा गरहन लाग गइल बा। हमार चेला उधारे परल बाड़ी स ओही मोतीसगढ़ की घाट, केवन चोटा लुगा चोरवल स जे देश में हमार लुगा लिहल चुराइ। ओही खातीर पता लगावे खातीर हम चलि आइल बानी रउवां पवन दुआर। नागिन कहतारी जे अच्छा अब जाये द पाठा। ए पंचे, जादो बाड़ें से नागिन का पाछा जब हटि गइल बाड़ें धइके नागिनि अंगुठा बाड़ी मीमोरत। नाग जब बीग ताड़ रोसियाय, अगिन जब बीग ताड़ेत कहलस जे हे पती छेमा कइ द। जब अगिन के छेमा कइके जबनीचे मउर उठावल, त नागिन कहताड़ी जे कह गरज के अपनी जादो। अब भइया जब नाग सुतल जब जाग गइले जादो दसो नोंह जोरल एके भइल चरन पर

ठाढ । कहे जे नाग बाबा मिनती मानत रह हमार, कहीं ले कहीं पवांरा, हमरी बुते कहल ना जाई । आजु हमार चेला गइल बाड़ी स सागर पर । एगो जोगी बइठल सागर पर बाड़ । ना जब जोगी बोललहआ केतनो अकिल हमनी का लगवलीं हां जा आ बीदा न लहल ह त हमार जवन चेला बाड़ी स से सागर में नहातियाड़ी स देहि जुड़वावे लगली हा स । आ लेके खेले लगली हा स झींझीरी । ओही बीच में हे नाग के अइसन चोढा भइल जे हमनी के लुगा चोरा लिहल । त नाग ओइजा का कहतारन ।

हिरिया जिरिया को शेषनाग द्वारा सूचना मिलना—

योगी वेश में गउरा का लोरिक है ।

कहत बाड़ं,
जे ए जादो उ जोगिया ऽ ईना आ जोगिया तू बाड़ ए कहत,
ओहिका चढले चढल बाड़न ना जारवा रे हमार ।

गद्य-पद्य : उ जोगी नाह । चढ़ाइ जब पीड़नापुर कइले बा त हमरो देहि अल साइल आवतिया । आ तोहरी बिपति के कवन कहीं, एक बेरि– तोहरी बिपति के उ, जोगी हमार गाँड़ि मारी । उ जोगी नाह जे कहताड़ जे जोगी बाटे । अब हम कहतानी, तोहरा चोटा के । तोहरा बेंवत हो खे त ले लीह । बाइ अब बताव-तानी तोहरा चोटा के उत्तर बहल माइ देवहा, दखिन गंगा करे ललकार, बीचे झील सरजू के जाके बलिया मिलल मोहान । बलिया भट पुर परगना विहियापुर डंड़ार, ऊँच चउर बरम्हाइनि, नीचे गजन गउर गढ़पाल । छोटे जो लागल गउरा, गलीची तीरपन लागे बजारि, उत्तर टोल बम्हनइया, दखिन झारि बसे कोइरान, पछिम ओर जोलहन के, मंगल बसल बाड़े पैठान । हंस हंसिनि दुइ जोड़ी बीर के सांवर लोरिक न नांव । हवें भाई संवरु के बीर के बंका लोरिक ह नांव । आइन डाइन ना पुजे, ना पुजे भूत बैताल, पुजे बहिन बरम्हा के जेकर देबी अपरबल नांव । खने रही मीरुता में, खने इन्दर का पवन दुआर । खाइल बीरा दादा सुरुआ का, एहि सोनासुहवली पाल । जवन सत्तो के अम्मर हउवे सिन्होरा हीरिया जेवन ले गईलि । ओहि सिन्होरा कारन, देबी ले के टीकलि बा मोतीसगढ़ की घाट । उहे जोगी बा लुगा लुटले, दुरुगा बरबस ले ले बाटे लुंटवाइ । ओहि से जाके मिनती कऽर, तब तहार दूख हरी, ना त बीचें हरे जोग ना बाइ । आ देख इ तोहरा पर का विपति परलि बा जेवनी बेरि सुहवलि पर

चढ़ाइ होई, तेवनी बेरि। हमार बड़ दुरगति होइ। आजु हमरा ओही भवानी के, ओही बीर के दाब लागता, जे अबहीं छाती हमारि कड़कतियाटे। तोहार जइसन गाहक लागल बा, ओकरा चरगुना हमार गाहक लागी। एही बारी बड़ी हमार दुरगति होइ, जवन सत्तीया बइठलि बा सोना सुहवली पालि। हाइ होहाइ जादो अब हम कवन हालि के कही। जा तोहार चोटा हम बता दीहलीं।

ए पंचे, अब त चोटा के पता जब लाग गइल त जादो चलल हउवन। अब जादो छोड़ देला जमकातरि, ऊपर गइल बाटे उपराइ हीरिया जीरिया बंगालिन जेकर जसुइ कलवारिन ह नांव, जुमि गइल बा ए भइया ए जादो त हंसि के जसुई पुछतिया जे का हालि ह। कहलसि जे हालि का पुछले बाड़ू। अरे ई जोगी नइखे ए दादा। इ जोगी नाह, अहीर गउरा के ह। आ देवी एकरा संग में बाड़ी। जेकरा संग में आदिये शक्ति भवानी बाड़ी। त चोटा बतवलन ह जे उहे लगा ले ले ब ऽ जा तहरा बेंवत होखे त लेल। तब जसुई कहतिया जे आच्छा। आजु हमरा के इ सिन्होरा खोरि-खोरि खइलसि। इ हे हमार सती आजु हमार थाती दे दिहली। ए ही सिन्होरा कारन हमार पती हमरा छोड़ के भागि गइलनं। आगि लागलि आई सिन्होरा अब हीं डहते बा।
अब पंचे, हीरिया जीरिया बंगालिन, जेकर जासो कलवारिन ह नाँव धइली स डहर सागड़ पर, आ पुरइन पात लपेटले बाई। चललि गइ चलावल, जोगी के जोरत नहरना बाई। कहे जे सुनऽ बबुआ अलबेल्हा, सुधर मानऽ बाति हमार, आजु हम कहीं तोहरा से, एइंजा सुनऽ दुख हमार, जानल हाल ना रहल, तहके अब बरबस दीहलीं रिझाइ. आजु बबुआ अबहीं कहल के मानऽ आजु हमके लुगा दे द, आ चलि के हम सती के अमर देइं सिन्होरा। सती नाता गोता से सागर पर लागलि पाहुन हमार। एतना बेयान जब तिरिया कहे, खेला करे सगड़ पर बाई। तड़पल बाई भवानी, जीभ दबवले बाड़, बीर जब एतना बात बा सुनले, दिल में खुशी भइल उपताइ जब ले के ऊपर मउर झटकारे, देबी दू दू बीगहा बिगाई। हंसत बेटा बघिनी के बीर के बगा लोरिक ह नाँव जेतना तिरिया अलबेल्हा, जुमि गइली स आ लूगा कोड़ि कोड़ि दे दीहलसि। अब भवानी बा से लम्मा बिदुकि गइली, रोवताड़ी जे अब हम बेरि बेरि हम बरिजतानी, अब त हमार अकीलि ना लागी, अब त उड़ि के सुगा हमार झुलनी पर लोभा गइलन।

आजु सगड़ा पर रोबति याड़ी ना ऽ
आ भइया पंचे अलवा बेल्हा,

लोरिक सखियन संगे हँसी हँसी न करे,
जब लगलनि जबए मजाक।

लोरिक का कृष्ण से तुलना—
जादूगरनियों के प्रेम जाल से मुक्ति

गद्य : अब भवानी हटि के देबी के अकिलि भइया ना अब लागतियाटे। हंस के कहतारी स चल। लुगा जब पहिरि लिहली स, अब इहे कपड़ा डालि के देह में जे गहना जो डालि के, त केंगो चललि हइ स जइसे क्रिस्न कदम के डाढ़ि पर बइठ रहलं आ चीर स्त्रीनि के उ देले लूटले रहलं उ सखी जब बान्हि के झुमेला जब जूमल लो त गर में गर मेराइ
आरे सुनि लं जे गरवा में गरवा मेरवलीय,
आरे चारु ओर घेरले बांर के बाइ,
कहस जे बबुआ द मोर अलवा बेल्हा।
अब चलऽ पीड़ना न पुरवा बजारि,
चलऽ अब देइँ देइँ लूगा अलबेला,
ओही आजु पीड़नान पुरवा बजारि,
जइसे अब गोपियन में उगल कन्हैया।
सखि लोग चलले हाट पर बाड़,
जइसे आजु जमुना किनार पर भइया,
क्रेसुन मिलल सखिन संगे बाइ,
ओंगो अब मिलल बा अहीर रे गउरा के,
ओंगो भइया मिलल बा अहिर गउरा के,
सखियन के झुमटा में गइलन रे समाइ,
सखिया जब लेइ के चललि न अलबेल्हा,
चलली स पीड़नानपुरवारें बजारि।
आंगा आंगा बीर साथे चलल,
लेके चलल पीड़ना न पुरवा बजार,
पाछावां जो रोवत चललि भइया जगदम्मा,
आगा देवी रोवत कीला में बाड़ी बाइ।
कहलीं जे आह मोरे दइब नरायन एहि दादा पीड़नान पुरवा बाजारि।
ईत हमार उड़ि गइल सुगा ए पखेरू,
ईत हमार उड़ि गइल सुगा ए पखेरू। (पुनः)

रानियन के झूलनी पर गइलन रे लुभाई,
अब हमारि मटिया न परिगइली संकेता,
एहि नगर पीड़नापुर बजारि ।

गद्य : सखी जवन बाड़ी स बीर के झूमेला में लेइके हँसि के का पूछत लो बा जे हे बबुआ आजु तोहसे पूछतानी जा एक बेर दइब गुनल जो रखिहन बिघनापुर जइहन आस, जो होइ सादी सतिया के, आ जब गउरा अइबऽ ले आइ, त का जाने कबे भेंट होइ त कहीं जे हमार एक बेर बबुआ गइ रहल कीछु खातीर ना कइलु जा । त ऐ बबुआ चल सिन्होरा त देइ देइबि जा, बाई थोरे खातीर तहार कइलींस जा । आई बताव देवी के पुजा का तोहरा ह । लोरिक हँसि के कहसु जे देख, हमरी देबी के पुजा लमहर ह । केहु का बुनन दीयाइ ना । आ एगो हलुक का पुजा उहै ह जे जो घड़बडइट रही त देबी के पुजा ह जे हम भट्ठि पर दारु पियाइ लें । कहली जे त ठीक बा । अब भइया जब ले के बीर के जुमि गइली स पीड़नापुर । त डलली सब रेसम सुत के खटिया ऊपर, गरी पटिहाटि, चटि चटि के नाव गोइंतारो, चटि चटि घुमि गइल सिरहाने बाइ । तोशक लागल गलइचा मुमुरुम लावंल बीछवना वाई । कह स जे बइठि जइब बीर बहादूर, तनी वइठ जा आसन दबाई । केवनो गोड़ धोवे चलल, केवनो जल लेके चलल, केहु मीठा ले ले बा । हाइ बबुआ तनी जलपान क ल । एकरा बाद में हमनी के भवानी के उतजोग करतानी जा उन्हांके तनी किछु खातीर क दी जा । हमार बहिन सती जो आइल कबे के, त इ कही जे हमार देबी गइ रहली आ हमार बबुआ त किछु ना खातीर कइलु जा, ओके संती तनी हइ जल पीलऽ । एइजा लोरिक का कह तारन, कहतारन जे हे रानी ठीक बात कहतियाडु जा, बाई गउरा हम अनके खइलीं कीरिया आ जल के मंदिल बोली हराम, बीचे पानी पी घालब, मारब कैर कपिला गाइ । जबलक मारब ना बेटा बमरा के जेकर गजे भीमलिया नांव । मुंड कलश टँगाइब, रुधिर कोहबर देइब पोताइ । छाती पीढ़ा गड़ा के जान बहरी देइब टनवाई । धरब झोंटा मउरी के ले के सुहवलि करब बियाह, सती-खोइंछा के चाउर गउरा होइ पंथ हमार । बीचे पानी पी घालब पर जाइबि कुम्भ नरक की गाड़ि ।

ए पंचे, बीर कहले ह स्त्रीन से आजु हम बीचे पानी पी घालब त हम नरक में परि जाइब । नरक कुँड़ि में हम परब । सखी कहतारी स अच्छा ठीक बा जनि पिय । बाइ तनी देबी के हमनी का उतजोग क लीजा । अब पंचे हीरिया-जोरिया चललि बंगालिनि जेकर जासो कलवारिन ह नांव । सत सत भठी फुंकवावलि, लेके पीड़नापुर बाजारि । अब जित्त मद जे लगली चुवावे, महुआ मय झराइ ।

चुवलि मद लउंगा के, भट्ठि दे ले बाड़ी भरवाइ। भरि गइल भट्ठि अब अलबेला, ओहि लेके पोड़नापुर बजारि। धावलि बा हीरिया-जीरिया बंगालिन संगे जासो कलवारिन ह नांव, कहै जे बबुआ मोर अलबेल्हा, अब बीर मान बाति हमार, चलल बाड चलावल भट्ठी पर हो जइब तइयार। द भवानी के पुजा, पाछे देइ सिन्होरा ले के चल जा गजन गउर गढ़ पालि।

ए पंचे, जब लोरिक चलल हउवन त चढ़ल गइल न चलावल, आ कीछु भवानी के ओइजा कइसन मन डग गइल, उ मद देखला से कहतानी जे तनी चाट लेबे के। अब बीर जब भट्ठी पर चढ़ि गइल, कहे जे मइया मोर भवानी जी, तोहरे धरम के पाछि आजु हम इ मद तहके पियावतानी एही पीड़नापुर बाजारि, जहिया चढ़ि चलब सुहवलि में ओहि सोना सुहवली पालि। होइ सादी सती के गउरा निहचे आइबि लिआई गरहू पूजा देइब भवानी ओहि लेके कीला गजन गउर पढ़ पालि। हलुके पुजा दे तानी पीड़ना पुर, देबी खालऽ पुजा हमार। रहलि माइ जगदम्मा मद पर परिगइल लेलकार। मद में मुंह बाड़ी लगवले सात भट्ठी के मद भइया देबी खीचि घललो पीड़नापुर। देबी जो आजु मद जब पीयली, आ जब भवानी के नासा गोतरलसि भइया आ बीर जब देवढ़ी में बइठ तारें, अब भवानी छोड़ि दीहली संग। बाघ सिंह दुइ डंवरू रथि जब्र हंकली बेरुन कुवेर। सनकलि माई भवानी, आपन ना पराया ना चिन्हात पंचे जब बाई। छोड़ि दीहली संग बीर के, अब पंचे देख ऽ तनी बीर के खेलवाड़।

अब जे बासे भवानी रंथ लेके आ बउराके चलि गइली इनरपुर बजारि। दुरुगा सुति गइली इनरासन। बीर कहतारन, जे देरी होतिया हमके द जा, त कहतिया जे न देइब जा ना न। जइसे हमनी के रिझवल ह सागर पर, ओहि ङो बबुआ हमनी के ओसरि आ गईल बा। आजु राति मे पहिला पारी हीरिया के परतिया, आ ओकरा बाद मे जीरिया के।

ओकरा बाद में जमुई के। ई पारी तहरा उतरना परी। आ ओकरा बाद में जब खाली हमनी से हो जइब त तब लंउड़ी जे बाड़ी स इन्हनो के तहरा पुरन करे के होइ। त तब हमनी के तोहरा के सिन्होरा देइबि जा। जले बेटा बधिनी के बीर का बंका लोरिक ह नांव, कहे जे सुन सुन ए जासों, मन बू बाति हमार, इहो होनीना होई छरकि के इतरि गईल खटिया ले बाई। जाके बीर बइठि गइल बाटे धरती में ओहि पोड़नापुर बजार। आजु त हमार तोड़ दीहलु जा आसा भवानी के। अवसर परि गइल बा बया हमार। बाई हमार भवानी क त टीसुना टुटि गइल, ओहिङो तहनो लो के टिसुना तोरब बरबस नानु करबू जा। ना

सुतब सेज पर । हीरिया कहतिया जे नाहीं ऊठ । नीक परी बबुआ हम तोहके दे देइब जरूर क के ।

अब ओकरा बाद के बाति ह ए पंचे, राति खतम हो गइल रहलि । दूसरी राति में आ जीरिया अपनी बखरी में ले गइलि बा, आ ओहिजा कहतिया जे देख, हउ सेज बइठ, आ हमरी मन के राखि द । बीगडे बीर बघेला लेइ के पीड़नापुर बजारि, ले के झारि देले वा हाथ भइया अलबेला । खबरदार बोलि ह जनि, देहि जनि छुइ ह, कहतिया जे देख राइ से सुतब त सुत आ ना सुतब त काल्हि तोह के बड़ी डाहन डाहब । कहत बा जे देख, अब लीलाम छोड़िके तीलाम ना करबू, अब त हमरी गर में फांस लगा दिहलु जा धोखा से, त लीलाम छोड़ि के तिलाम तू ना करबू, बाई इ न होइ जे तोहरी लगे सुतबि । ना हम झुलनी के काटब बहारि । कहता जे समुझऽ ।

ए पंचे, भरि राति तारा-सोरो में बीति गइलि रानी के । ना बीर बइठल पलंग पर, ना झुलनी के लुटलि बहारि । पूरबे लोह्री लागि गइल पछी होखे लागल उजियार, कउवा टेर उठवलस भोरे भोरे होखे लागल बिहान ।

जादूगरनियों द्वारा लोरिक को सुग्गा बनाया जाना--

मरली कंवरू कमइछा के बीदा नयना जोगिन के वान, अदीमी तन छोड़ के सुगा देले हवी बनाई । सुगा बनाइ के अब पीजड़ा के बन क दीहलसि, कहलसि जे ठीक रह अब ऐही में । अब पंचे, बिहान भइला के सुन खेला । हीरिया के पारी पहली रात आ दूसरी पारी परल जीरिया के कहतिया जे दे दे इ सिन्हौरा राज त तोहार पुरा भइल न, कहतिया जे ले जा तू हूँ, अघा जइबू । कहतिया जे जब पुरा तोहार भइल, त हमार पारी आइल वा, त कहतिया जे ले जा तू हे अघा जइबू ।

अब पंचे, अपना हाथ के राखी जवनि बाटे हीरिया अब दे दीहलसि जीरिया के, उ जब ले गइली त रचि के जेवन वना के बीजन तैयार कइके । बड़ुवा में जल ले के, सेज लगा के, फुलन के सेज लगा के, दीपक बारि के महल मे कहतियाड़ी जे हइ सुन, हई लऽ जल के, मनुष तन वना दीहलसि सुगा से, कहतिया जे हइ जल के ल, आ तनी आ गोड़ हाथ धोव तनी हमार जेवन खालऽ । तब कहत बाड़न जे न । बार बार न कहत बाड़न जे हम कीरिया खइले बानी । त कहलसि जे अच्छा कीरिया खइले बाड़ त ओही के कीरिया खइले बाड़ । चल तनी सेज पर सुत । बोगड़े बीर बघेला रानी के देले वाटे झटकारि । कहताजे उ होनी ना होइ, ना सुतब सेज तोहार । तीन बेर बरम्हा के लिखनी । सुजनी गइल बाटे नियराइ । दुरुगा कहल भोरि परि गइली । पीड़नापुर थाकि गईल दवर तोहार ।

अब त हमार बादी होइ गइलू । बाई जइसे हमरी भवानी के आस तोड़ले बाड़ू ओहिङो तोहार पुरन ना करब । केतनो भइया जीरिया लागलि, बाई ना छोड़ि के हं बीर ना कइले ह ऽ । अ आंगन में बइठि गइल ह । अब पंचे ओकरा बाद में अब जब जसुई के पारी आइल, तीसरा दिने जुमलि जे अरे तोहार पूरा हो गइल देबू हमरो के सुगुवा के न, आ त हं लेजा ।

अब गइल केकरा पास में आत जसुई का । जसुई के ले जा के आंगन में धइके अपनी बीजन बना के खान पियान कइके, सुगा के सेज पर उतारि के आ खुंटी पर जब कंवरू कमइछा के बीदा मारतिया नयना जोगिनि के बान, छरके बीर बघेला कुदि गइल बेयालीस हाथ । सेज पर नाहीं बीर गइल हा । जाइके बइठि गइल आंगन में । कहतियाजे देख, हमरे पास में सिन्होरा बा गड़बड़ाव जनि । हम कहतानी तवन कर । आ कान्हि तोहके सीन्होरा दे देबि । हमार मन ना रखब त ना देइब । कहत बा जे न देबू आत ना देइब ।

ए पंचे, अब कहां ले पवांरा कहीं । इ पंवारा कहला से नाही ओराइ । अब कुल्ही के दोहरउआ पारी घुमि गईल । दोहरउआ पारी जब घुमि गइल, त सात दिन बीति गईल । बीर के ओहि पीड़नापूर बजारि । अब बीर के टुटि गइल असरा, जे भवानी संग छोड़ि दीहली । अब ना धरी हम संग हमार, अब हमार अकील ना लागी । एहि पीड़नापुर बजारि । की कीछु इनहनि के अकीलि में सामील हो जाइं । त जसुई सेज पर जब गइल हउवन । जब ले के मनुष बनावतिया कहतिया जे मुति रह, त कहत बाड़न जे देखु हम कइसे सुती, हमार भवानी पीतरी के काछा चढ़ाई के आ माल बरन के गांठि, हमके लंगोटा चढ़ा देले हई । ई लंगोटा खोलला से न खुली, कइसे राखी मन तोहार । साफ बयान जब वीर बोलल ।

आजु हम केइसे देखऽ लंगोटा इ हमरा खोलला से ना खुली इ आदिशक्ति भवानी हमके लंगोटा बन्हले हई । त हंसि के उठलि बा जसुई, दुलर मान बाति हमार, न खोलला से खुली हं, चेट मे हाथ लगा के हाथ के छुड़ी जब ले ले बाटे उठाई । तड़कल छाती दुरुगा के इन्दलपुर बजार, बचन पर खलल परि गईल पीड़नापुर बजारि दुरुगा नाधे रथि अल बेल्हा, ऊपरा बेरगुन बइठि गइले कुबेर, हुंउके रथि जगदम्मा जुमल पीड़नापुर बाजारि । चेट में रहल हाथ रहल लगवले छूरी ले ले रहलि उठाई । जाइके दुरुगा मारे थप्पड़ लोरिका के ओहि पीड़नापुर बजारि । बजर परो घटिहउ, तोहरी करिखा लगे जोग ना बाई । इहे करे के रहल त काहे हमके पीड़नापुर अइले लिआइ ।

देबी भइया, जब चेट में हाथ लगवले रहलि, आ जाके बीर के मारतिया चटकन से आ कहली जे हाइ घटिहउ जो इहे तोहरा करे के रहल आ एहि से हम डरत रहलीं, कइसे सती के बियाह होई। ओइजा रोवल बेटा खोइलनिके देवकीनन राजकुमार, कहे जे मइया मोर भवानी, जीतोहरे धरम का पाठ केवनो अकील लगावऽ अब खतरा परि गइल माटी हमारि, गुरजल माई भवानी जेकर देबी अपर-बल नांव। आ धइके हाथ जसुई के लमा देले बाटे झटकारि, बेटा कमर में काढ़तेगा लिगी सुरुक देबे तरवारि, पटकऽ खांड मनोहर, झुरे बदन नरियाई, लउका नियर लउकावऽ खांड़ बिजुली नियर घहराई, लागि जाउ दांत ' ' ' ? का, धरती लोटे लागी लेलकार। काटि ले मुंड अलवेल्हा मोरुत मंडल संवसार। ऊपरे तेगा देखइहे, कंठ जाइ झुराई। ना भवानी कहली जे काटि ले कहसु जे एके देखाउ दरसु।

अब जे एतना बोलल बाड़ी भवानी पंचे, देबी दुरुगह नांव। अब बीर काढ़े मखमल के सुरुक के बीगत बाटे मियान। मारे तेगा धरती पर, बान जब कोहा नियर अललाइ। बान करी तड़तड़हटि रानी न के हलख गइल झुराई, अब रानी झांवरि बदन हो गइल, ऊपर तेगा दे ला झटकारि, जइसे भादोदेऊ नवलि, ऊपर बिजुली चमकलि बा, तेगा करी चमचमाहट, उठलि पीड़नापुर बजारि। गीरि परलि बेटी सहुआ के दांते धरती चिल्हिकलि बाई। गइल जीव भवानी, अब जीव बांचे जोग ना बाई।

अब हम सिन्होरा देंइ, अब भवानी जोगवऽ पानी हमार। तब डांटि के भवानी उहे लेके तेगा बाटे बिदुर ले ऊपर मखमल के डालि दीहली। पुछतानी समे आछे खबर सुनजा।

आजु जाही दिन के बाते, तनी आंगे सुनी समर के हाल, आजु बोलतियाटे हीरिया, अब देख कीला में जीरिया बोलति बंगालिनि बाइ, बोले रानी जब जसुई आजु भवानी मानि जा बाति हमार। केकर माई बेटा बियाइल, के बीर ले ले बाटे अवतार, हमरा से जब सीन्होरा नाहि अड़ाइल, त हम भेज दीहलीं लोहितागढ़ बजारि, के अब सिन्होरा के आइ जब सात ठहीं समुन्दर हेले के बा। ओढ़ि के चल जइहें ओहि पार, जवन भास्मासुर बा दानो ओ सिन्होरा के परत बाड़ें रख वार।

हंसलि माई भवानी, जेकर देबी अपरबल नांव। बजर परो ए जसुई तोहके गीरो गजब के धारि। ईबाति आँगे जो कहले रहितीं त चल जइती लोहितागढ़ बजारि। बाकी हमरे बेटा बानी लगवले संगे, हम अब चढ़लीं पीड़नापुर बजारि। जबलक

लेके ना आइब सिन्होरा तब लक बेसा धइले रहि हे नांव हमार। जब लेके सिन्होरा चलि आइब तब दुरुगा घ दीहे नांव हमार।

दुर्गा का सती का अमर सिंधोरा लेने लोहितागढ़ लोरिक के साथ जाना

हाँ, आ ऽ हाँ, ऽ
दुरुगा खइली बीड़ा जो पीड़नापूर,
दुरुगा खइली बीड़ा जो पीड़नापुर।
राई से सरब्ररि जा देलीय जो मचाइ,
कहली बेटा न मोरवा बीरवा लोरिक,
लालन मन बऽ ना बतिया रे हमार,
इहे अब बाधवा सिहवान दुनो जो जोड़ी।
रंथिया नघली जो बेरुन न कुबेर,
जवनी में बइठलि बा मइया जगदम्मा।
उहे जांघ लड़िका के ले बइठाई,
दुरुगा हंकलिसि ना रथिया अलवा बेला,
चलली लोहिता गढ़वा रे बाजारि,
दुरुगा हेले जब लागलि ए समुंदर,
सातगो खढ़िया हेलियन गइली बाइ,
दुरुगा ओहि ए न पारवा वाड़ी गईल,
जहाँ राति बनल दनउवे के न बाई,
जहाँ तीन सै साठिय न दानों बाड़न,
देवता देले न बाड़ेनि रे वरदानि,
एक ठोप खुनवा गीरी न दानवे के सइगो दानों लीहनि ना अवतार।
ओकरा बीचवा में धइल बा सिन्होरा,
ओहिजा लोहिईता ना गढवा रे बाजारि।
एनिया रोवे माई न जगदम्मा अपना चोथे मउर के बार।

गद्य : कहे जे हाइ लालन, अब का करे के। ईत देख तानी एइजा माई के बर दीहल बा, जे एक ठोप खुन गीरी त सइगो दानों अवतार लोहन स। आ एइंजा सोरह सौ दानव बसल बाड़न स। बीच में सती के हमार सिन्होरा बा। अब तई अकील हमनी के के तरे करी।

रोवे बेटा खोइलनि के देवकी नन न राजकुमार,
माइमोर पटोरा दुरुगा मानऽ बाति हमार।
आ तोहरे बले, भरोसे एजिन तोहरे जीव के बाई।

गद्य-पद्य : ए कुल बिकट हम ना जनलीं भवानी, जे एतना सतिया में उरेब बाटे। हम ना खइले रहितीं बीरा, आ ना खइले रहितीं किरिया, भले संवरु रहि जइतन बार कुंवार, बाई मइया मोर भवानी अब जीव तोहरे धरम का पाछ। चाहे खेइके पार लगावऽ चाहे अधजल में बोरि द डेंगा हमार। जब बीर भवानी पर एतना बात जब कहता त दुरुगा कहतारी जे अच्छा हे बेटा, अब तोहके चल ले चलीं कनगुरा में, भवानी बाड़ी से लोरिक के लेके भइया ओही समुन्दर का अनला में कनगुरा में बइठा दीहली। जे एइमे बइठ रह अब हम जाइं इनरासन।

अब पंचे, बीर के बइठा के आ देवी जब बार्घसिह के डंवरु नांधि के आ बेरुर कुबेर जब हांकसु आ बइठि के भवानी चढल हई इनरासन देवतन का पवन दुआर। लागल रहल कचहरी घर भर रुहल बाटे दरबार, बायें बइठल बा मंतीरी दहिने महंथा राज देवान, रोवत चलल जगदम्भा ओही इन्दर का पवन दुआर। रोवल माई भवानी हीया फारि के इन्नर का पवन दुआर। खुलि गइल ताड़ी अब देवतन के, ओहि इनरपुर बजारि। उठि गइले विधि बरमा, चललनि फेरु अगा परि जाई। कहे जे वहिनि मोर अलबेल्हा मनवे वाति हमारि। केवन विपति परि गइल रोवतारू जारि बे जारि।

दुरुगा कहतियाड़ी जे मइया बिहड़ेयि में,
हे मटिया हमारि परि बा गइल।
सेवक गउरा देले बाड़नि ना पुजवा ए मइया तोहार।
आजु दुरुगा धइले रहली ना -- आ गोड़वा साचो बरम्हा के,
रोवति रहली इन्दर जी का पवने रे दुआर।

लोहिता गढ़ में तीन सौ साठ दानवों द्वारा सिंधोरा की रक्षा

गद्य : हाई हो मईया। आजु हम बेटा के लेके चलि गइल बानो लोहितागढ़, सत्ती के अमर सिन्होरा राखाई, ओ सिन्होरा में दानों के जब हम वरदान देखतानी, अब तोहरे दिहल हउवे, जे एक ठोप खुन गीरी त सइगो दानों अवतार लीहं स। तीन सई साठ घर, तीन सइ साठ दानों बाड़ स चारों ओर बसल बाड़ स, आ बीचे सती के सिन्होरा धइल बा, अब ओइजा हमार लरिका संकेता पड़ि गइल बा। अपनी बालक के हम समुन्दर के अनला में बइठा के आइल बानी। का जाने लालन के का गति होतिया। भइया अब हमार उद्घाटि कर ना त हमरे नांव पेटहिया हउवे।

भइया, रोइ रोइ भवानी कहतियाड़ी, ब्रह्मा कहताड़न अच्छा बहिन चुप रहु का कहताड़े कहु तवन करीं। कहता जे देख थोरे घरी की खातीर हम जातानी आभा

देखाइब । बीस कोस का अन्दर में लामा एहि समुन्दर का मासु बरिसावऽ आ हम आभा देखाईं, जे हे भस्मासुर दानों का एइजा बाड़स, लागल मकर तिरवेनी अइसन मकर आवे जोग ना बाइ, चल स मार स गोता समुन्दर में भोजन तोहनी के मिलल मासु के बाई । ब्रह्मा कहलन जे जा ठीक हो जाई ।

अब आदि शक्ति भवानी देवता से बर मांग के ब्रह्मा से मीरुत लोक में अइली । आ ड़ंफ सुरुज के डुबि गइल बा लड़िका के लेके भवानी अब लगली दानो न के आभा देखावे, का देखावतियाड़ी जे हे दानों अइसन कवे मीरुत लोक में मकर ना लागी जे गोता मारि के मासु खाइ ऊतरि जाई । जा के भस्मासुर दानों के देखवलसि । दानो के जब नीनि टुटलि ए भइया आ जब ओही लागि गइल त कहत बा जे ए भइया राति के हम आभा खुब देखले बानी । हेतना दूर पर इ नहान लागलि बा हमनी खातीर । काहें खातीर जे गोता मारि के आ ओ मासु के जब हमनी का आहार करब जा त हमनी के तार ना लिखल बा । काल्हू चल चलीं जा कहल लो जे का भइल बाटे ।

अब पंचे, दानो न के होखे लागल तैयारी तिरवेनी नाहाये के—ओहि समुन्दर का तट पर, सभ दानों गइल हवे बिदुराइ, तब भस्मासुर दानों बोलल जे हे माता सुरसी हमनी का जा तानी जा नहाइब जा किछु फल के ले आइब जा । बाइ तू चलि जइबू त हइ सती का सिन्होरा खातीर बड़बड़ उपाइ रचलि बाटे । एहि फाटक पर बइठु का जाने ओने गइलीं जा आ उ बीर चढ़ि आइल । त चढि आवे त तूँ चिल्हिकि हे । चिल्हिकि देबे त हमनी के चारु ओर ले घेरि लेइबि आ, जा बीर के जरूर हमनी के खा घालबि जा ।

भस्मासुर और सुरही का उल्लेख

एतना बड़ आंउजा बा ए पंचे जब भस्मासुर दानो लेचर दीहलं सुरसी कहतिया जे अच्छा जा बेटा । अब सुरसी के ओही फाटक पर बइठा दीहलं । आ जेतना दानों लो बासे सभ जंगल के छोड़ि के, आ चलल लो समुन्दर का तट पर । जेंव छोड़ि के लो समुन्दर का तट पर चलल तेंव भवानी आदि शक्ति बारह बरीस के तिरिया सोरह बरीस के नारि पीयरी धोती पहिरले गोद मे बालक लीहली लगाई । अब भवानो केतना दूर लउकली आत मनरसा माने, आ सुरसी एहि फाटक पर देतिया पहरा । जब देखतिया त कहतिया जे हाइ भगवान, अच्छी तरे बुला मकर लागल बा, हमार त भोजन एहि दुअरवे पर चलि आइ ।

आरे सुरसी एनिया हंसी हंसी न ऽ खुसिया बा भइया मनावति,
हमरि भोजन अवतुव दुअरवे पर एइ जा रे बाई।
आजु दुरुगा छउवे इ महिनवा के सुनब दुलर ।
अपने भइया के गोदियाइ में ले ले न बाड़ी लागाई ।
आजु मोहनिय धइ लिहलि डगरिया जब रे दनवे के,
जहां सुरसी देतियइ बापहारवाए न पंचे ना बाइ ।

भवानी का लोहिता गढ़ में सुरसी से मौसी का नाता जोड़ना—
लोहिता गढ़ से अमर सिंधोरा लेकर लोरिक के साथ गउरा वापस आना—

पद्य : जेंव दानो हा हाइके उठतिया, तेंव आदि शक्ति भवानी हाइ रे मंउसी, हाइरे मंउसी, भाला जे भेंट हो गइल दादा। दानों, ए पंचे, खाये के चलतिया आ एने भवानी कहतारी जे हे मउसी हम भले भेंट करे अइनी ए जंगल में, सुरसी बा से कहतिया जे ओहो हो, अब त इ बचन बोटी हो गईल, अगर जो एके खा तानी त बहुत पाप हो गईल । कहतिया सुरसी जे अच्छा तोहके इ पुछतानी जे हमार त दुसर बहिनिये ना केहू भइल, केवना नाता से तू हमके मउसी बनावताड़ू त कहति बा जे सुनु मउसी हम का जानतानी, हमारि माइ कहे जे सुरुसी के गवना भइल त हमार जनम भईल । हमार माई कहले ह । आ कान के सुनल ह । त तोर जनम भइल त तब त हमरी महतारी के जनम भईल, आ ओकरी कोठि से हमरे अवतार भइल, त कहलस जे देखु, कबे विपत जो परि जाय त चल जाइ हे लोहिता गढ़ में हमारि बहिनी सुरसी बा । कहतिया सुरसी जे अच्छा ठीक बा । बाई अब हट । भवानी कहतारी जे हम हट जाइले, ले सुरसी मउसी, तनिकी हमके भइया के कीला देखा दे, जे कइसन लोहितागढ़ के कीला बाटे ।

आदि-शक्ति भवानी पंचे डालि देले बाड़ी माया लोहितागढ़, ओहि लोहितागढ़ बजारि, सुरसी कहतिया जे अच्छा देखि ले । जाइ के फाटक के बखरी के फाटक खोलतिया । छव खंड़ के बाखरि रहलि, जेंव खोलतिया तेंव दूगो झोरी लटकल बाड़ी स । जेंव चउकठ हेलतिया, तेंव दुरुगा छिउकी काटतिया लरिका के आ ल ऽ रिका चिल्हिकल बे ह्वांस, जरे बदन सुरसी के ओहि लेइके लोहितागढ़ बाजारि । कहेजे सुन लेबे ए बुजरी मन बे बाति हमारि । लड़िका के बाड़ू रोववले कीला फाटि गइल छाती हमार । आ सुनि जइहं स त तहार जीव ना बांची ।

कहति ह जे का कहीं ए माइ का कहीं ए मउसी आरे इ डिगरा बड़ा अचाइठ ह, होइ आगे कढावताटे । कहतिया सुरसी जे देख उ झोरीके छुइ ह जनि, आजु

अहिर जीव की खातीर हमार बेटा बड़बड़ रचले बाटे उपाइ । उ आन्ही के झोरी ह । पहिला फाटक पर जुमि ह, त इहे आन्ही छोड़ी हमार बेटा । इ झोरी जब छु देले त माहुर बोबा जाइ । एक ओर पत्थर के झोंरी, एक ओर आन्ही के झोरी, भइया टांगलि रहलि, ओहि लोहितागढ़ पहिला फाटक पर । फेरु बोलतिया भवानी, जे चलु मंउसी आंगा ले का करी इ अचाइठ हवन । फेरु आगा नाजाइब सुरसी पचे पचे संगे ले ले हउवे लगाइ । चललि गइल चलावलि, दूसरा हेलल चउकठ पर बाई त फेरु ओइजा का खेला देखतिया जे दुइगो सोटा झूलतारन स ।

अब भवानी लेके जब लरिका के छिउंकी काटल बा लरिका चिल्हिकल लोहितागढ़ बजारि । सुरसी कहे जे रे बुजरी काहें रोवावतारे । कहतिया जे मनते नइखे छरिया गइल डिगरा, ओहि डंटवा के त कहता, कहे जे ना, ना, ना उ डंटा के तू छुइहे जनि । उहै जीव की कारन उ इँटन पीटन सोटा लोग ह । एक जाना के इँटन नाव ह आ एक जना के पींटन । जवनी घरी सोटा हमारि बेटा छोड़ देइ त अहीर के पीटि के ढाहि दीहन स । कहतिया ना चुप रहवलो निगरू ओमें उरेब बा इँटन-पीटन सोटा मारि के ढाहि दिहन स । चल-कहतिया जे चलु मउसी इहवांसे ।

फेरु पंचे जब जाइके उ चउकठ हेलतिया, फेरु दुइ धोकरी । फेरु दुरुगा छिउकी काटि चिल्हिकावतियाड़ी, फेरु जब चिल्हिकल त मुरसी कहतिया जे मनबे ना, तू काहें लइकवा के रोवावताड़ी हई । कहतिया जे का कही हइ हे टांगलि बे झोरिया कहल सि जे नाही ओके छुइ हे जनि । एगो झोरी में हाड़ा ह, एगो में हाड़ी ह । जब ओह से पार ना पाईबि । तब इहे जब छुटि हंसन त बीर पर जब झुकि हं स आ जब काटे लगि हन स लंगो चंगो, त तब हमरा बेटा के दर फारि के खा घलि हं स, अहीर खातीर इ रचना रचल वा । कहति बा जे चुप होख वाचा बाड़ा उरेब बा एने, हाड़ा हाड़ी बाड़ी स । काटि दीहन स, चलु मउसी चुप हो गइल लइका । फेरु पंचे जब आदि-शक्ति भवानी जब चउइया में ले गइली त ओही में लोहे के कोठिला बनल बा आ ओहीमें सती के सिन्होरा । जब कोठिला देखलियाड़ी भवानी, त फेरु काटतियाड़ी छिउंकी । जब काटताड़ी छिउकी त फेरु डांटतिया मुरसी जे फेरु रोवावताडीसि । कहै जे का कहीं ए माई, अरे इ बड़ा अचाइठ डिगरा हउवे । हे कोठिलववा पर चढ़े के कहता । कहतिया जे ना ना ओपर चढ़इहे जनि, ओही में सती के सिन्होरा बन्द बा । जो लरिका चढा देबू त आगि लागि जाइ । कहतिया दुरुगा जे आरे जरि जइबे रे

डिगरा चलु । कहतिया जे अब त जइबे न कहतिया जे चलु ए मउसी तनी तोर सेवा क लीं, हम त जइबे करब ।

ए पंचे कुल्हि किड़िरा भवानी देखि के अब लिया गइली सुरसी के आंगना में। कहतिया जे जइबे नाहीं, रहु तनी मंथवा में तोर ढील हेरा देईं, बाड़ा ढील परल बा । अब माया के भवानी, पंचे जब लेके मांथ में हाथ लगावतियाड़ी त बारह से मर्ही चौदह सें भूत बैताल, जेतना जम्हु दुनियां के, ओही सुरसी पर बीगे लगली लेलकारि । सुति गईल बाई सुरसी ओहि चउकठ पर, आ लेके लोहितागढ़ बाजार । कहली जे बेटा मोर अलवेल्हा अब बीर मान बाति हमार । सती के लुटऽ सिन्होरा, जल्दी चली गजन गउरगढ़ पालि । परल लेलकार अब लरिका बान्ह देले लेलकार । आइ जेतना हाडा-हाड़ी झोरी बाटे आ डंटा-संटा कुल्हि भवानी लुटि लीहली, देबी । आ लुटि के जे लोरिक जुमऽतारे कोठिला पर, आ जेंव मन कर तारे जे पेहान भरि के हाथ डालीं, तेंव अगिनि ऊठलि ।

सुनिलं जे बीगि दिहलसि ना आ लहरिया भइया कोठिला में,
रोवत भगलनि लोहिताई ना गढ़वाई रे बाजारि,
माई हमारि अगियाई लागलि बाटे कोठिला में,
लोहिता-गढ़ में जरितयाटे न आ देहिया रे हमारि ।

गद्य : लोरिका अंगना भागि आइल । भवानी कहतिया जे हे आरे बेटा आरे देरी जनि करु रे, तनी सुमिरु सत सवरुं के रे । अब बोले बीर बघेला बीर के बाँका लोरिक ह नांव, कहे जे सुन ले भाई मल सांवर, आरे बइठल बाड़ गजन गउर गढ़ पाल । आरे हमार माटी परल संकेता, लेके लोहिता गढ़ बजारि, जागो सत अलबेला, सत परगट होखो गोहारि, जागलि सत धरमी के, कोठिला पर चढ़ि बईठल ललकार ।

आरे सतिया के बइठि जब गइलनि रे सिन्होरा,
अब धरम बइठल सिन्होरवा पर बाई ।
अब पंचे कोठिला में अगिया बुताले,
सुनि लेव लोहितान गढ़वा बजारि ।
अब दुरुगा लुटि ले ले अमर सिन्होरा,
ओहि नगर लोहितान गढ़वा बजारि ।
सुनलीं जे बघवे न सिंहा न दूनो डोरो,
अब रंथि हंकल न जो बेरुन कुबेर ।
अब दुरुगा लेइ के जो भागलि बा सिन्होरा,
अब-दब धइले आकासवा में बा ।

फेरु आजु कूदल ह बेटा न रणिये के,
हा हो देबी मानि जइबू बतिया हमार ।

सिंघोरा लाने के पहले लोरिक का सुरसी पर आघात करना

गद्य : हमरा के रथ पर ऊपर मत ले चल । अब हम एइजा भागब त हमरा के नरक के निधान होई । तनी हमके अडर द मारीं सुरसी के । मार देब सुरसी के, त हमार भागल न कायम होई । कहतिया जे अच्छा अंगा हम ठीक कइले बानी, मार दे एक लात । अब पंचे, गरजल बेटा बघिनी के ऊपर कूदल बेयालीस हाथ, आ घींचि के जब ऐंड़ मारे सुरसी के, सुरसी चिल्हिकल लोहितागढ़ बजारि । सुरसी के इ चिल्हिकल दानों न के बदुरी गइल सुनाई । कहलस जे आ गईल अहीर गउरा के, ओही लोहितागढ़ बाजारि ओने से परल बाटे ललकारा, देबी लेके भागलि कोला में बाई । लेके अब भवानी लड़िका के अमर सिन्होरा लेके, पंचे रंथि पर अब भागलि बाड़ी ओहि गजन गउर गढ़ पाल । अब त जुमे लो दानों त अब भेंट होता ।

अब त पंचे जादो लुटि के सिन्होराऽऽआ अब रोई रोई कहतिया सुँरसी, चलु कहता दानों भस्मासुर, तू ना जनल हे, जे अहीर के पुजमान दुरुगा ह । हाई रे माता आजु हमार तू अधजल माटी डालि दिहलू । सतिया हमके सराप देई । कहतियाजे सुरसी के त हमके कहि गइल रहिते तब न । हमके त जनाइल ह जे सांचो इस्तीरी ह । हम भवानी के ना जनलीं हवीं । अब भवानी लेके भगली सिन्होरा भइया ओहि लोहितागढ़ बाजारि । राजी बेर दुरुगा रथ पर चढ़वले, जुमिगइल पीड़नापुर बाजारि । जहाँ हीरिया जीरीया रहलि बंगालीनि, जासो कलवारिन बा नांव । हंसे माई जगदम्मा, बीर के देले सिन्होरा बा । हे जासो, देख हइ हन, कहलसि जे धनि भवानो, हं इहे सतीके सिन्होरा ह, इहै हम लेके आइल हवीं ।

अब पंचे, ओइजा ले लेके चलल हउंवे सिन्होरा, चढ़ल ह गजन गउर गढ़ पालि । सब गायन लो कहेला जे नाहों ई बरात सजाई रहल । आ बियाह ठट्ठे मे ह । ठट्ठे में नाह सादी संउरू के, तनी बोहा के मुन लेब खेलवाड़ । जब सिन्होरा लेके आदि शक्ति भवानी आ लोरिक जुमल हउवन । त लोरिक कहताड़ेन जे तनी चलीं जा भइयो के कहि दीं जा जे बर बनसु आ बरात चले के । जब भइया ले के भवानी जब बोहा में जुमलि हवी, आ धरमी जब देखले बाड़न नयन पसारि । कहलन जे आहा दइब नरायन का बिधि उगिल देल करतार । आजु भाई कहां से तू जुमि गइल, आ कहां गायब रहे देहि तोहार ।

धर्मी संवरू का विवाह का प्रस्ताव अस्वीकार कर देना

लोरिक की उदासी

हूंसे बीर बघेला बीर के मखा लोरिक ह नांव । भाई मोर मल सांवर अब पाठा मानऽ बाति हमार, खइलीं बीड़ा गउरा में, एहि गजन गउर गढ़पाल । तोहरे सादी की कारन चलि गइली ह ओहि पीड़नापूर बजारि । भइया हमार इहै मिनती बाटे । अब दुरुगा सजग बाड़ी हमार, मिनती बाटे, ए पंचे, दूइ रसी लामा हटि के, आरती कइके बीर बाललन जे भइया हमार प्रन हो गइल बा जे वर वन गउरा में, च ल सोना सुहवला पालि । होखो सादी सतिया से ओहां ले के मिरुत मंडल संवसार । जरे, बीर बघेला, जेकर माल संवरू ह नांव धरत बिगा में ? भाई, आजु बादी हो गइल हमार । धइ के बीगि देबि टांगरि मीरुता चढ़ि जा गेरुवन करीं पहार, खंडे खंडा उड़ि जइबऽ मीरुता ना छोड़लि जीव तोहार । परल ललकारि ओ लरिका पर, दुरुगा बर देखतियाड़ी ललकारि । जे पहुँच के बीर धरे के मन करता, तले भवानी फेरु होने हाथ भर बीगि देतियाड़ी, परल खेदा भइया केहूओ लोरिक के जीव बांचल, त लाई के कठहर नदी ओल्हि गइलनि । संवरू जब सादी के नांव सुनलं त बड़ा किरोध भइलऽ कहलन जे हई देख । हम सादी करब मीरुत लोक में । हम भक्ति करे खातीर भइलीं ।

आ, हाँ, हाँ हाँ,
आजु भइया संगवा बाड़ी न जगदम्मा,
आ लोरिक चलल गजने गउरगढ़ पालि ।
कहेला जे भइया न मोरवा भवानी,
अब जीव तोहरे धरम का दादा पाछ ।
अब हम अनवा के खाइ धललीं कीरिया,
जलवा के मंदिल बोलिलाहऽ राम,
आजु जो हम बीचवा पानी न पी घालब,
अब मारब कयर कपिलवा न गाई,
अब दाता केई बनी बर कीलवा, में,
केकरि हम सुहवलि जाइब बरियाति,
इत बीगड़ल माइ अलबेला,
दुलहा बने इ जोगीत नाहिं बाई,
इहै अब बोलति बा माई हो जगदम्मा,
जनि बेटा थोरे में जइब अउंजाइ ।

तनी अब चलिय-चल न गउरा में,
आ बांभन देइँ जा आ न सरउजि ना बोहवा आ रे मंझारि।

गद्य : भवानी कहली जे चलऽ बइठ धीरजा धरऽ, सादी त होईन। ब्राह्मन के भेज दीं जा, आ किछु बाबाजी लोके लालच दे दींजा, नाकर नुकर करसू सुत इ धरना दे के मरे लो लागि लो। अब बीर के संगे भवानी लेके गइलि हइ जब गउरा में, आ खोइलनि बड़ा खुसी भइल, जे हाई भवानी ह कहली जे सुनु अब अउजों जनि, हइ देखु सती अमर सिन्होरा खातीर चलि गइल रहली हाँ जा अब इ संवरू के सादी होइ। जब सादी के नाव पंचे खोइलनि सुनतिया त बड़ा दिल में खुशी भइल, धनि रे बेटा धनि बेटा अलबेल्हा हमरी कोखी लालन ले लऽ अवतार। थोर मन लागल तोर बचवा ढेरमन बहुत दिन ले लागल रहल हमरा गजन गउर गढ़पाल। त लोरिक कहतांड़ जे देखु तोर मन लागल बाटे, त हमरो मने लागल बा। बाइ भाई धरमी हट्टी क दीहलस, जे कहताजे हम दुलहे ना बनब। तनी बिपर बोलऽवऽ भेजों जा बोहा में।

आ हाँ ऽ ऽ हां ऽ ऽ
आरे पंचे, अब जाहिये दिननवा के बाते,
तनी भइया सुनऽ जा समर क र हालि।
संगवा जो बइठलि बाड़ी मइया रे भवानी,
अब बीर लोरिक बइठले न बाई।
खोइलनि छोड़ि दीहलसि गउवां गढ़ गउरा,
अब बभन टोलवा जुमेले ललकारि।
जाके आजु बिपर लो के बाटे जब कहल,
बाबा आजु उपरोहित मानि जइब बतिया हमार।
आजु तनी बेटा ए बोलावल गउरा में,
आ दू चार जाना चलऽ जा गजने गउरवे गढ़े पालि।

गद्य : अब खोइलनि पाँच गो ब्राह्मण लेके पंचे, गउरा में चललि बा अपना दुआर पर, आ कहलसि जे तनी पोथी ओथी ले लीं सभे। बाबा बिपर लो गोड़ में खराऊँ डालि के, एक धोती पहिरि के भइया, आ काँखी तर पोथी लेके, हाथ के छड़ी सोबरनी। चलल, लो जे चलीं जा। ईत हमनी के जजमान किछु दानो भेंटाइ गइलं। अब मइया पोथी ले के जब चलल गइले चलावल जुमि गइले लोरिक का पवन दुआर। लोरिक ए भइया जाइके देवतन के चरन पर गीरल। आ गोड़ लागत देवतन के बाई। कहे जे सुन सुन एबाबा मानऽ बात हमारि त आजु हम रउंआ से कहतानी जे आजु हमरा बोहा में जाइके भाइ के समझा दीं

सभे, जो अगर भाई सादी सकार लीहं न त रउवां सबके बहुत दछिना हम देइब। इ दछिना देइबि भाई के सादी में, जे रउंआ खइला से ना ओराई।

आ हाँ, हाँ,
आजु पंचे जाही दिनन के बाते,
आगे सुनऽ समर के हालि,
सुनिल बयान सादी संवरू के,
ओहि ले के भइया गजन गउरगढ़ पालि,
अब बीपर लोग के जब भेजता लोरिक,
आ चलि जाइ रउंआ दादा,
सांसड़ि संवरू का बोह मझारि।
आजु भाई समुझा जो देइब,
आ दुलहा बनि जइहं माई हमार,
त ले के भाई के चलब पूरा दान तब मिली।
आरे वीपर,
एनिया कंखियेइ तर आ पोथिया लोग बा दाबि न ले ले।
गोड़ में लोग पेन्हले लेई खारांउवे लोग पंचे रे बाई।

लोरिक की प्रार्थना पर ब्राह्मणों का बोहा में संवरू के पास विवाह का प्रस्ताव ले जाना घरमी द्वारा अस्वीकृति

गद्य : हाथ के छड़ी सोबरनी ले के, पंडित महाराज पंचि पंचि जाना छोड़ दीहलन गांव गढ़ गउरा, जेवनो वेरि बोहा म गइल बाड़े हेठियाइ। अब वीपर लोग घरे डहरि सरउंजि के, चलल लो बा भइया गाइन करी अड़ार। लम्मा रहली गाई अहीर के, ओहि गजन गउर गढ़ पालि। घरमी बइठ रहलन हरसंकरी की ओर, ताकता नयन पसारि, ईत आवत बा लो देवता बीपर लो आवता सरंउजि बोह मंझारि। अब दिल में खुशी हो गईल दादा, संवरू उठि के कमरी बिछावत बाई! ईत हमार भगवाने न लोग ह। अब आ लोग गइल देवता, त तनी किछु लोग के खातीर क दीजें का मांगे आवत लोग बा।

अब भइया एने बीर जब लेके कमरी बाड़ बिछवले आ बाबा बिपर लोग झुमि गइल हर संकरी किहें बाड़, अब संवरु सोहरि के मांथ ओनावे देवता लोग देते बाडे आसिरवाद। जीय जीय हो घरमी जीय लाख बरीस अब-खाड़, गंगा जमुन

जल बढ़ो, बढ़तो आवो तोहार एतना असीस लो देता तब संवरू कह तारन जे बाबा तनी बइठि जाईं सभे आसन दबा के। सेवा क दी रउआ सबके। बाबा जी लो वइठत नइखे, कहल लो बा जे ए बबुआ हमनी के बइठल उहे बाटे जे आजु हमनी के धरम राखि देईं, का राखि दैब, जे तोहार सादी अब होई सुहवलि में, त हमनी का एहि खातीर तोहके मनावे आइल बानी जा समुझावे, दुनियां सादी कर ता। सादी रउआं क देईं सुहवलि में, जरे बीर बघेला एनियाँ दहे के लागल अंगार, कहे जे सुन सुन ए बिपर बाबा मनव बाति हमरा एतने के लागता दाब, जे बराभन हउव, लागेलऽ देवता हमार, ई जो नाव लेब त कुशल परे जोग ना बा।

तहिये छरकल लो बाम्हन भइया ओही अड़ार में, ओही हरसंकरी केरी अड़ार, कह स जे उहो बाम्हन तू जनि जान, जे फिर के जाइब जा गजन गउरगढ़ पाल। हमनो का पीपर पर चढ़ि के फंसरी लगाइब। आ मरब जा सरउंज वोह मझारि। जरे बीर बघेला, बीर के नाव संवरु ह नाव। कहता एकर तनीको अदब नइखे लागल, सरउज वोहु मंझारि चढ़ जा गिरऽ जा पीपर पर। हमरा दूध का कमी नइखे, ढकनी मे जाउर खियाइबि, गाऊ चरइब जा हमार। अरे बापर हउवऽ जा त तहन लोग के पुजा त जउरी न ह। त एकर हमरा कमिये नइखे गिरऽजा न।

अब भइया पोथी-ओथी बाँगि के, अब बाबा बीपर लो चढ़ता पीपर के दरखत पर। चढ़ि के ऊपर आ धइके डाढि के झूलता लो जे संवरू अब गिरब जा, त कहता जे छोड़ द छोड़ दऽ छोड़ि दऽ भइया गिरऽ आ तू मूव, ऽ हम पुजा चढ़ाइब, तोहरा जनेव तोरला से, आ तोहरी फसरी से हमरा डर नइखे, हमार बरबस सादी करब ऽ। हम सादी कर ना सकब। अब बाबा जी लो कहताजे आरे दादा। एकरा बीप्रो के डर नइखे, आ कहताजे देख तोहरी नियर बराभन के हम खोजीं ले। ई जानत न बाड़ हमार नाव संवरू ह। तोहरा नियर ब्राम्हन के चाहीं जे मरो, जे हमरा गाई के चरवाह बढ़ो। आ जाउरि आ दूध तहन लोग के खियावत पियावत रहब। बीपर लो कहता, जे आरे भाई छोडु रे चलीं जा अब उतरी जा। इ हो हट्ठी मानी ना, इ अहीर मुंढ़ ह, मान ना सकी।

अब ए बीपर लो पंचे, मन तोरि के कले कले पीपर ले उतरि लो आइल। उतरि के, आ चुप चाप पोथी ले के डहरि लो धइल गउरा। ना बीर माने। चलली गइल चलावल, बाकी लोरिक जोहत बा मनके वाई देवता लो चलल गइल चलावल, जुमि गइल बा लोरिक का पवन दुआर। हंसि के बोले बीर

बघेला, बाबा मान ऽ बाति हमारि आ त का हालि ह नइखऽ देखत जे हमनी के बे जनेव के परल बानी जा। तोरि के बीगलीं हा जा, हमनी के जनेवो भरभठ भइल, अबऊ हठी कहता जे हम सादी करबे ना करब। फंसरी नाही मू जा जा, मू जइबत जाउर चढ़ाइब, गोरू चरइब जा। त ए भइया का करीं जा तोहरी सादी कारन हमनी का जीव नान मरवाइब जा।

लोरिक का रुदन

आजु भइया रोवे लागल ना आ पूतवा भइया खोइलनि के।
आजु गउरा रोवे लागल ना जारावाड रे बेजार।

गद्य : कहे जे मइया मोर भवानी, अब जीव तहरे धरम का पाछ। अब त हमार धोवलि गाई अलबेल्हा, धरमी अधजल म दिहलं अटकाइ। जाइके भवानी मुसुक धइके रोकतिया जे बेटा जनि रोव। जेकर दुरुगा असबारी संगो सेकर कइसे होइ आकाज। देखीं जे कइसे उनकर हठ रहेला, एहि सरउंज बोह मंझारि। बइठ रह गउरा में अब चढनी भइया का पवन दुआर। ए पंचे, अब भवानी बाड़ी जे लोरीक के बइठा के, इनरासन चढ़लीं। कहाँ गइलीं, चलत चलि गइली अपना भइया का पवन दुआर। रोई रोई कहे भवानी, भइया मानऽ बाति हमार अमर लीहली सिन्होरा, अइली गजन गउर गढ़ पाल। हो गइल भेट मुंढ से, संवरू से, सरउंज बोह मझांरि। हमार जो सेवक कहलसि ह सादी करे के, त बुझाइल ह जे डीगरा तोड़ि के बीगि दी गेरुआ करी पहाड़। केहु जो आपन बाचा बचाइके आ लेके अइली गजन गउर गढ़पालि, बीपर लो के देवता जानि के भेजलीं हाजां, तउ देउतन के कहता जे, चाहे भूवबभा जीयब, एक ढ़ंकनी चाउर चढ़ाइब जाउरि, आ जाऊरि खइब गोरू चरइब। बाई ई अरदास ना सुनबि, सादी ना करबि हीरिगिस ना कर सकब।

आजु बेटा हमार बेटा अहकि अहिकिये के बाड़नि ए रोवत।
कइसे गउरा जोहीय ना पुतवाई रे हमार।

गद्य : कहताड़ी भवानी, ए भइया, अइसन के होइ जे समुझावे चली। हसि के बरम्हा बोललन जे आछा आ सबके उपाइ कइलजाउ, सब केहु से बुझल जाउ जे ई केहूओ मानी की ना मानी। अब पंचे, आदि शक्ति भवानी सब देव-तन के बिटोर भईल। आदि शक्ति भवानी, गर में कफन लगा के आ रोवतियाड़ी इन्दरपुर बाजारि। आजु पंचे केहु अइसन दाहीं हो जाइत जे ओ संवरू के जाई के समुझा देइत। जे सादी बेटा के लेके हम करे जइतीं सुहवलि केर बजारि।

तब संकर जी आ गउरा पारवती जी हंसली, कहली जे मीरुत लोक के बीरा हम खातानी, चल हम संवरू के मनावे चलब।
त ए पंचे, ओइजा संकर जीय ना आ बोड़ ऽ वा जो बाडनि चबइले।
गउरा पार्वती चलली डंड़वे न पुराले बाई।
कहली जे देवी चालू कर त जानी ना, आखेलवा हमरे बोहवा में।
आ मुढ़वा के एहीं बेरी देइबि जा रे समुझाइ।

शिव पार्वती का बोहा में जाना—
और पार्वती का बुढ़िया वेश बनाकर मलसांवर के विवाह के लिए राजी करना

गद्य : अब पंचे, गउरा पार्वतीजी आ संकर जी चल लो, बीर के समुझावे सरउंज में, तनी सुनीं सभे कान लगाइ, केंङों अब समुझइहन, आ त जवन गउरा पार्वती जी बाड़ी, आ इहे लोही लागलि बा, आ सुरुज नरायन उदे हो तारन, ओही समय में गउरा पार्वती जी बिरिधा हो गइली आ मांथ पर छितनी ले लिहली, आ लगली बोहा में कंड़रा बीने। आ बाबा संकर जी बुढ़ हो गइल बाड़ें, ओने करिहाव गइल बा, लिलार के उनकर बारो पाक गइल बा। आ एगो हाथ के फाटहा डंटा ले के, जब खोज तारन रे बुढ़िढ, रे बुढ़िढ उ कहतिया जे का खोदतार। आत हमसे बियाह करबे, हं, अरे बुढ न भइल बानी, आकी मनवो थाकल बा, का संवरूवा नियर हींजड़ा हहँ हम सादी ना करब। तहार थोर मन लागल बा त हमार ढेर मन लागल बा हम सादी करब।

आरे पंचे, अब होत बा खेला न बोहवा में,
आरे बीर बइठल हर संकरी मे बा।
गउरा पारवती छितनी बा ले ले,
आरे संकर जी ए बुढ़ए बनेलं लेलकार।
जाइ जाइ खोदसु बुढ़िया के, आरे बुढ़ि मानि जइबे बतिया हमार।
हमरा से सादी तू ही करबे, एहि आजु सरउजि बोहवा मझांरि,
बोललि बाड़ी मालता गउरा पारवती,
ओइजा अब कहति बाड़ीन लेलकारि।
सुनि लेब बुढ़ उ अलबेल्हा, एइजा आजु मानि जइबऽ बतिया हमार।
तनवा थाकल बा मीरुता में, सादी के अब डगत बाटे मनवा हमार।
हींजड़ा त हईं संवरू नियर,
जे नाहिं आपन मीरुता में करब रे बियाह।

टकटकर ताकत मल सांवर,
अब मन उनकर घुमि गइल बोहउवे में रे पंचे रे, बाई ।

गद्य : कहताड़न जे हई देख एभाई, बुढ़ि हो गईल बा, बार पाकि गइल बा, चमड़ा छोड़ि देले बा, आ हइ बुढ़वा लरियाइल बाटे, आ खोद ताटे जे कहुरे बुढ़िया हमसे बियाह करबे । त उ कहतिया जे हं, हं बियाह न करब त का संवरू नियर हम हींजड़ा हईं । ई त हमार नाम हिजड़ों में ठेल लसि । अब पंचे, गउरा पारवती जी महादेव जो, लेके अब रिझावल लो संवरू के सरउज बोह मंझारि । अब भइया डटि गईल मन संवरू के हम सुहवलि निसचे करबि बियाह । जब ए भइया बीर के मन डगि गईल, तब गउरा पारवती जी संकर के जे अब चल लो, आडर लगावल लो जे दुरुगा अब भेजु ।

अब करिहन सादी धरमी । अब भइल बोलाहट केकर त भइया, आ त फुलगेना नाऊ के । कहे लोग जे सुन ले फूल गेना नाऊ जे मनबे बाति हमारि अब धइके डहरि ये चलि जइबे जो सांसरि बोह मझांरि जाइ के कहि दीहे धरमी से जे अब सादी होखो सुहवलि केरि बजारि । थर थर कांपता गंगिया जइसे कांपे बियाइल गाई क हे जे अहा दइबे नरायन का बीरगुल देला ऽ करतार । आरे बिगरल बाड़न संवरू हमार जीव छोड़िहन, आ ना जाइब त लोरिको जीव ना छोड़िहन । कहताडी भवानी जे ए फुलगेना, कुल्हि काम ठीक हो गइल बा, आ जो तोरा डर भइ लागत होखे । त हरसंकरी किहें जाइके दूसर रास्ता धरि हे । दुसर रास्ता घरिहें, तब तोहके बतावतानी जा तब धरमी के खेला तू देखि हे । कहत बा जे ओंङो काहे ना जइब ऽ । वाइ कहब ना कहल लो जान कहि हे; जब पुछे लगिहन तब कहबे न, कहलसि जे तब काहे ना कहबि ।

संवरू और सोबचन के जन्म की कथा

अब पंचे फुलगेना, नाऊ जब बीड़ा बाटे चबाइल, चल ता सरउज बोह मझांरि । आधरमी का आंखी लागल बाटे टकटकी, तिकव ताड़ं गउरा केर बाजारि, जे ए भाई, ज केहू जे आवत रहित त हमराके मनाइ त तब त हम बियाह करबे करब । ऊ जब नाऊ चलल गइल चलावल, जे आधा सरउंज में जाता, तेंव उ दूर दखिन के राहता धइलस, धरमी कहलन जे अरे नाउ फुलगेना सुन कहाँ जाताड़े रे, आत नाना हम जातानी नेवता करे । कहलन आउ आउ आऊ, घुमि आउ । जब नाउ घुमि के गइल बा, त पुछ तारन-कुछु दुआर पर बतकही सुनले ह । आत काहें ना सुनलीं हं सुनली हं त जे रंउआ बियाहे नइखी करत लोरिक रोवतांडन । कहलन जे जो कहि दे जे संवरू के जे जनम बताई गउरा में,

जो हमार जनम बताई त जो कहि दी हें जे हम सादी करब अब काना के। जे ओ काना के जनम के हालि बता देइ आ जे हमारि जनम के हालि बताई तब हम सादी गउरा करब।

ए पंचे, जब एतना बात संवरू कहलन, घुमि के जब आइल बाटे नाऊ, त अरज लगाइ दीहलसि। भवानी साथ में बइठल बाड़ी, लोरिक बांड धरमी संकर लन ह आपन बियाह करे के बाई, इहें कहलसि जे हमरा जनम के हाल बताइ आ आ काना के। तब हम आपन सादी करब। खोइलनि से पुछ तारन लोरिक जे एमाता ईका हालि भइल। कहत बा जे ए बाचा, ईत हमहुँ नइखीं जानत जे केकरा कोंखि केइ लइका ह। हम त गड़ही में पवली हमका जानतानी जे कहा इ जनमवती ह। हमरा कोखि में जामऽ रहित त हम जनतीं हम त इनके बीगल गड़ही में पवलीं, ए बेटा। अब भइल बोलाहट भइया लोरिक कहां गइलन, आत बीजा की हाँ गइलन। कहलन जे हे बीजा। अब त भाई हमार संकठ लगा दीहलन। कह तारन जे जे हमरा जनम के हाल बताई आ काना के, त तब हम आपन सादी करब।

अब हम कइसे के कहीत, कहत बा जे हे बबुआ हम भमुर का जनम के हाल ना बताइब। बाई सती के जनम के हाल हम जान तानी। जेंङो अवतारह तेंङो। सती के हम जनम बता देइबि। बाई के हु नइखे जानत त नाऊ के भेज द, धरमी आपन जनम बता देसु। एहि गजन गउर पुर हाल फेरु चले नाऊ फुलगेना चलि गइल सरउज बोह मंझारि। लाग रहल हर-संकरी, जहां गाइन करी अड़ार। बइठे पठा मल सांवर ओहि सरउज बोह मंझारि। सोहरि के मांथ ओनावे, सबरू असीसत बाई, कहलन जे जिय जिय ए धावन, जिय लाख बरीस अब खांड, गंगा जमुन जल बढो, बढतो आओ तोहार, आखिय बढो, युग युग चलो नांव तोहार। धावन से पुछ तारन जे का हालि ह। कहत बाड़न जे हालि कहांले कहीं रउआं जनम के त केहु हालि नइखे जानत। बाई जवन बीजा बाटे अजई के इस्तीरी उ कहलसि हाजे, भसुर जो आपन जनम के हाल बतइहं, त हम कानाके हालि बता देइबि गउरा में। त,कहलन जे अच्छा जाइके कहि द सभ गउरा बिटोर होखो हम आवतानी।

आ हम आजु अपना जनम के हाल आजु हम बतावतानी। अब त हो न गइल हाला पंचे गउरा में। कहले लो जे ए भाई आजु त जनम संवरू बतावे चललन त हमनी का त जानत रहली हां जा जे खोइलनि के बेटा ह। अब आजु जरूर सुने के चाहता, चलि के हमनी का दुआर जामा होईं जा। सवरू जब एतना बात कहलन भइया, आ जामा जब अदीमी दुआर पर होखे लागल। त तब

लोरिक बीजा कीहें गइलन। कहलन जे हे भउजी अब त भइया जनम बतावे चलल बाड़न, त कहतिया जे देख हम भसुर के सोझा कइसे अब बोलब। ओ कचहरी के अन्दर में एगो छोटे छलदारी डाल द जे ओही में आजु हम बइठब। अपनो जनम क हाल बतइहन त हम सती के जनम बता देइबि।

आरे पंचे, अब जहिया दिननवां के बाते,
तनी अब सुनजा लगनिया के हालि।
अब एइंजा गोतरा उचार होखे चलल,
अब एइंजा गोतरा उचार होखे चलल, (पुन०)
एही पंचे गजन गउर गढ़ पाल,
छोटे अब परीय गइल बा छलदारी,
एही आजु लोरिके का पवन रे दुआरि,
इहे आजु चारु ओर मेड़री बाटे बइठल।
बीचे छलदरिये बनलि बा ललकार,
ओही में जो चललि बा बेटी न मखुआके।
जेकर भइया बीजवा सरसरी बा नांव,
अब रानी बायें जो बरद मारी देले।
दहिने जो बीगि के चललि ओलवाइ,
अब रानी चलल जब गइली ए चलावल,
जाके ओही ढुकल उ परदवा में बाइ,
अब रानी बइठि गइल बे तमुए में।
जवन छोटी बनले छलदरिया हो बाइ।

द्य : पंचे जाइके धोबिन जब बइठि गइल छलदारी में। तब धरमी जुमल न उनुका के मोढ़ा लागल, लोरिक दीहलन जे हे भइया बइठ। बइठल गइलन संवरू त, कहल, जे हे भइया कह जनम के हालि।

बीजा बोलतिया भीतरे भईल, जे हे भसुर तोहरा जनम की हाल हम। नइखीं जानत। बाइ सती के जनम के हाल जानतानी। आपन रउआं जनम बताईं। त पाछे हम जनम देईं बताइ। कहलन जे आजु पंचे, हम कहतानी, सब जानत न रहल ह जे खोइलनि के बेटा संवरू हउवन। सब जानत न रहल ह आत हे ए बाबा सब जानत रहल ह, बीर जे खोइलन के बेटा तू हउव। त कहताड़न जे आजु हम अपनी मुंह से बेयान करतानी, इहे सुरज नरायन के डीठि से आ बराभन की गरभ में एहि गउरा अवतार हमार ह। बाकी दुई भाइ

सुबचन-संवरू एक कोखि में सुरुज नारायन के जीभि से हमनी के अवतार भइल।

बाकी बाम्हनि का बीचे पाप लागि गईल, लछना गइल जे हमनी के जाइके नउवा महिना में जनम भइल आ जेंव धंगड़ीन नार छीनतिया तेंव हमनी के ले के तउला में कसवा के गउरा दीहल बीगवाइ। जेवन माता खोइलनि हमार बाड़ी से दहेंड़ी ले के चलली दही लेके। आ बीड़ान बो के सुअरि गड़ही में जुटि गइली स सोटा लेके। त जाइके सुअरि जब हमनी के थुथुन से मरलीस, त हमनी का कियां कियां कइके की-की यहलीं जा। कियां कियां जब की कीयइलीं जा, त कछनी काछि के भाई सुबचन के तउला लुटि लिहलसि दुसाधिनि हमार, दहेंड़ी बीगि के हमरी माता खोइलनि लेके लुटि लिहली तउला। आ एहि गउरा जाइके अमन अलवांछ परि गइलो।

सती नाग के रूप में अवतरित :

बिजवा द्वारा जीवन-कहानी बताया जाना

आजु पंचे, विधि बरम्हा के लिखनी वीचे मिटे जोग ना बाई। जे के भगवान रचि देले हवं, ओकरी आंखी अन्हवट गईल दी आइ। कहिया रानी भइल गढबंकी कहिया बीर ले ले हउवन अवतार। संवरू पूछ ताड़े जे इ रचना भगवान रचि दीहलं, बाइ त लउकत न ह जे बाझिनि बा खोइलनि। रउआं से पुछ तानी जे कहिया इ गरभवती भइल आ कहिया अवतार भइल। त आजु हम अपना जनम के हालि कहतानी, जब मता के छीरि जब पी लिहली हम गउरा मे अहीर गइली कहाइ। हाइ भवानी अब हमार जनम तू सुनि गइलू। अब हमार अरज लागतिया, आ बोलतिया जे शक्ति के बोल ऽ। बोलताटे लोरिक जे हे भउजी, तनी कहि देबे सती के कइसे अवतार ह।

सती के रोइ के कहले ह बीजा जे ए पंचे हम मुनले हवी बाई निजगुत देखले ना हवीं सती के कइसे अवतार ह। जे छव गो बेटा बामरि का अवतार हो गइलं स। राजारानी का का हीनता आइल, जे छव बेटा त ठीक होगइलन, बाई एगो बेटी हमरा अवतार ना लिहलसि जे हमनी के कइसे देहि पवितर होइ। राजा-रानी राज के छोड़ि के ए पंचे जाइके समाधि-यज्ञ ओहि गंगा जी के तट पर करे लगलन। जब जाके बामरि आ बामरि बो ओहि गंगा के तट पर आ जाइके स्तुति आ यज्ञ-हुमाधि होखे लागल, अधीन होके मांथ मुड़ा के गंगा पर धरना दे लो दीहल।

गंगा महारानी कहली जे ओहो, इ रानी की कोखि में बेटी के अवतार नइखे। इत बड़ हमरा आके धरना लगवलं स तट पर। आ इ समाधि यज्ञ करे लगलं स। गंगा जी, अब धरना दीहली नाग कीहें। नाग कीहें जब गंगा जी धरना दीहली, जे हे नाग तोहरी पैदासे सती के अवतार हो गईल बा बेटी के, त मनुष ह, एकरा के दान दे द जे हम रानी के खोइंछा डालि दीं। जेवना में रहिजाउ पति हमार। हम सुनले हवीं देखले ना हवीं। धोबिन बीजा कहतिया, सुनलीं जे ओहि गंगा के जी दान नाग दीहलन, आ नाग के दान से गंगा जी लिआके दान दीहलो राजा-रानी के। जे बड़ अंकरखन कइल, हइ ल बेटी।

आजु एनिया हंसि दिहलनि ना
लोगवा सभए गउरा के,
ईत बाभिन गन्ह गनना बनवल हो लेलकारि।

गद्य-पद्य : कहलो जे गनना खुब बनि गइल। आ अब सब चिहाये लागल जे माइ ठोक त हम नी का जानत रहलीं हां जा। अच्छा बढ़ाइँ तनी अब, इहै।

संवरू के विवाह की तैयारी

हां ऽ ऽ हां
आजु पंचे जाही दिनके बाते,
आ गाना सुनि लीं सभे मन लगाई।
आजु सकठ सादी हउवे संवरू के,
आ सुहवलि के अ जत्र हउवे बियाह,
गायन लो सोझे डहरि धइके जाला लो।
आरे तनी सादी के सुनीं जा खेलवाड़,
बोलल बाड़े पाठा मल सांवर,
हा हो लोरिक सुनि जइब बतिया हमार,
सुनि लेबु मइया रे भवानी।
अब गउरा हमरो लागति बा अरदाति,
नरकी पलकिया नाहीं चढ़बि।
कइसे चलबि सोना ए सुहवलिय पारि,
दुरुगा मांगसु पलकिया इनरसनोय,
दुलहा बनिके चलबि लेलकारि,
हँसतियाटे भइया रे भवानी।

कहतिया जे अच्छा धरमी मानि जइब,
न बतिया रे हमार।

गद्य : एकर हरष नइखे हमरा। बाई दुलहा बनल न, आत हं एकदम ठीकह् भवानी। दुलहा बनब बाई नरकी पालकी पर हम ना चढिके चलब सुहवलि। कहतारे जे अच्छा ठीक रह ले। अब लोरिक के कहतिया जे बेटा अब मरदन के पाती भेजु। आ हम जातानी इनरासन, तनी भइया के अरज लगा आईं ईनरपुर में, अब दुरुगा ए भइया जेवनी बेरि उठल भाई भवानी जेकर देवी अपरबल नांव। बाघ सिंह के डंवरू, जब रथ जब नाधतियाड़ी, बेरून कुबेर। रथ पर बइठल बाड़ी जगदम्मा। देबी चलली इनरका पवन दुआर। सुनलऽ बयान एहि गउरा के। एहि गजन गउर गढ़ पालि। रहल बीर बघेला बोर के बंका लोरिक ह नांव। सुनल बेयान सुरुआ के एहि गजन गउर फुलहाल। अब त भइया मरदन के पाती लिखाइल।

आं ऽ हां ऽ हां
जहिया बइठल बेटा बा रणीये के,
बीर के बाँका लोरिकवे परल नांव,
इहै जो परली सादिय संवरु के,
निहचे सुहवलि में परल न बियाह,
इहै अब दुअरे पर पाति लागल लिखाये,
इहै आजु गजन गउर न गढ़पाल।

गद्य : का लिखाइल ह,-पंचे पहिला पाती गंगा के लिखातिया, पहली पाती गंगा जी के लिखातिया (पुन०) अब लागलि पाती देवतन के लिखाये। ओहि गजन गउरगढ़ पालि। जब रचि के देवतन के पाती लिखा के पंचे आ अब देवले देवले घुमे लागलि।

सुनी लं जे गंगा जी के चलि गइल नेवातवा भइया गउरा में।
सुहवलि में संवरू के परलनि रे बियाहि।

गद्य : अब परिगइल सादी संवरू के, आ किछु पाती पंचे कलिका के भेजल, किछु डीहवन के पाती भेजल, जेतना देवता गउरा के सभके बीर पाती देलं भेजवाइ, पाछे पाती लागलि लिखाये मरदन के, लेके सोना सुहवली पालि।

आं, हां, हां, हां
एजिय अगल बगल न सिरवानामा, बीचे दगलि सलमिया भइया बाई। पहिले पतिया भइया लिखातिबा सील हटि के, पहिले पतिया लिखातिबा सील-हटि

के (पुन०) ओहिया सील-हटि न देखवा रे लेलकार, इहे जब धा जा राउतबा कर जो बेटा जेकर बलिय सीव-धरे बाटे नांव, जहिया रचिये के पतिया जो लिखा ले, पतिया बेरो लिखात ददे बाई, मींतवा बेरो चलिय न गउरा में, हमरा परिय करीय न भातवानि, इहे जब संवरू का मउर जो बन्हाइल। सुहवलि करे के परी बरियाति।

ओ बीर के पाती लिखाइल भइया। अब लिखातिया पाती, केकरि आ त पीपरो में, देवसी के, देवसी के जब पाती बाटे लिखाइलि मरदन के लेके गजन गउरगढ़ पालि। ओकरा पाछे पाती लिखाइल बाँठा के ले के बिहियापुर बजारि। ओकरा पाँछा पाती घुमे लागलि सहदेव के। ओहि कुसुमापुर बजारि। ठाकुर अब परि गइल सादी भइया के, ओही सोना सुहवली पालि जेतना रोब होखे तेबन सब तेयारी क के, चले के परी सोना सुहवली पालि। अब भइया घुमे लागलि गउरा मरदन के पाती जे भइया चले के सुहवलि केर बजारि। जेकर जहुके मन ना रहल ओ बीर के छाती गज भर चढि जाई। कहे जे भइया चल एहि चढले चढईआ चल चले के गजन गउर गढपालि। तनी देखे के बेटा बमरा के, जेकर गजे भीमलिया नांव। लागल नेवता घुमावे, देबी गईल इनरपुर बाई, एइंजा गीति रहाई, चढी बरम्हा का पवन दुआर। रोवे माई भवानी, धरना देले देवतनपर बाई।

कहे जे भइया मोरि अब बरम्हा अब मान बाति हमारि। लगि गईल अउर मीरुता, गरह गईल बाटे नियराई, संवरु मंगलसि पलकी इनरसनी। एहि तोहरा पवन दुआर। सादी त लरिका हमार सकारि लिहलसि ठीक में, बाई कहतबा जे हम नरकी पलकी पर ना चढ़ब। बरम्हा कहलन जे आहा-हा-हाई रे बहिन तोहरी आंखी अन्हवट नइखे न लागल। आज इ पालकी इनरसनी। आ तु मीरुत लोक में ले जइबू। आ ए पलकी पर मुरुख चढ़ि हन नरकी। कहतारी भवानी जे देख हम कुल्हि बेयान मुनि के चढ़ल बानी।

अब एइजा सब देवतन के बिटोर ऽ होखो, बिटोर गहि के। नरकी बना दीहल ऽ। अब सब बिटुराव एही बारी चोरी जे देवता मीरुत लोक में कइले होइ, एही जड़ से ऊपर होता। अब भइया सुनऽ बयान भवानी के, इनरपुर, बजारि। डलले रहलो धरना देवतन के ओही बरम्हा का पवन दुआर। अब सभ देवतन के बिटोर भईल बाटे इनरासन। सुरुज नरायन ओहि जा बाड़न।

देबी कहतारी जे अच्छा, आजु पुछ जा। नरकी बनवल ह त सुरुज नरायन ब्राम्हन की डीठि में ठडोर गरभ दे ले बाड़न की ना। सुरुज नारायन मउरे ना उठावसु। बरम्हा पुछलन जे ए भइया उठाव, मउर रोक ताड़। अब वेस्नो

भगवान बोलताड़े जे नाहीं सुरुज नरायन के हम भक्ति बिगड़ले हईं। काहें जे एहि भीमला कारन आ एगो तिरिया जवन बाड़ो स तेवन बन में जाई के जोगिन बनिके, आ कंठी माला बजवली स।

धरती पाप भइल अधिकाइ, डगमग में डोले परिथमी ऊपर हीले लागल संवसार। पाप भइल मीरुता में, भठे चाहत रहल संसार। भोरि आइल वा इनरासन, धरती पर तब हम हरन करे जाइलंऽ ए भइया। त इ रचना रचल हमार ह। ठीक सुरुज नरायन के बेटा, अवतार ले ले ह अधरमी। आ, ब्राम्हन की कोंखि में, उ ब्राम्हन जे सादी ना भईल, कुवांरे भइल, तब लो कहल जे अच्छा तब त मंजुरे नइखे।

मलसांवर सूर्य नारायन के पुत्र

पद्य : आजु देबी ले ले बाड़ी पलकिया भइया इनवारासन।
चंवर आपन बरम्हेइ ना आ दीहलन भेजएवाइ।
अब दुरुगा लेइ केंइ पलकिया बाड़ी जुमि ए गईल,
पंचे, तनी सुहवलि के देखब ए बयानि,
संवरू आजु अदिमीय न होई के इ नाहि ए रहलन।

गद्य : देवता बीर ले ले गउरा ले ले रहलं अवतार। आइल पलकी इनरसनी चऊंर बरम्हा के भवानी ले के जुमि गइल हवी। पंचे, एहि गउरा केरि बजार। एहि जा गाना, अब बन होता पंचे, तनी अब सुनिल हालि हमार।

आं, हां हां
आजु बाकी जहिये दीन कर बाते, आंगे भजी समर के नांव,
आजु हिनू करी गंगा तुरुक करी गोरि, भली काभिनि संगे छोड़े लू अ मोरि,
आजु कहां गीति बानी गावत कहां, आजु दिलें परल बिसभोर।
जेवना दिन के पुजलीं तेवन घरी गईल नियराई,
घरी पहर की खातीर देबी कारज करऽ हमार।

गद्य-पद्य : आजु बाकी एहुजा के छोड़ि के पंवारा, आरो फिरि भजिये ठकुर कर नांव। आजु बाकी जेवना न दिनवा के बाते, आंगे आजु सुन समरवे के न हालि, आजु पंचे, तनी त संवरू वर बनि गइलं, आ लोरिक करे चलल बरियाति, चले धजा राउत कर बेटा, जेकर बली सीवाधरा नांव। आजु जुमे बेटा मकरा के, जेकर वली देवसिया नांव। जेवनी बेरि जुमल बेटा ददा नोनवा के जेकर बोरे वंठा ह नांव।

बाकी सभ एनिया जोहत बाड़नि ना आ बटिया भइया धोबिया के,

धोबिया रहल दुधिलाई ना आ पुरवाइ रे बजारि ।
आजु एनिया छुटलि रहलि ना, घावनिया सुनब लोरिका के,
आ चलिय गईल दुधिला न पुरवा रे बजारि ।

गद्य : जाके बोले जे एहे भइया अजई सब बराति ठीक हो गईल बा । सब बराति ठीक हो गइल बा, चले के मुहवलि में, तोहरे बिना बाटि जोहा रहति बा जे तोहार जानलि बीरुत बाटे मुहवलि के । ओहि सोना सुहवली पालि, एतना सुने अजइया लेके दुधिलापुर बजारि । छाती मारे गदेला, धरती गीरि परे लललाइ । कहे जे बजर परो बियही पर, बुजरो सूतऽ चूत दबाई । आजु सुहवलि के नांव लिहला से किला में उभरि गईल घाव हमार । आजु जो न कइले हउ अगुवाई त ना हमरी जीव के होउत काल । आजु जरे बदन बीजवा के एड़िया तरे लगलि अंगार, कहे जे बजर परो ए सइंया ओढ़े जइत दबाई, आजु हम कहतानी तोहरा से, एइजा मानऽ बाति हमार । देद लंगोटा देदऽ तेंगा हम चढ़तानी बाई हमार साड़ी पेन्हलं ऽ ।

आरे बहियां में चुड़िया तनी अब ले व ऽ न अड़ंसाइ,
तनि अब मांगि मे सेनुरवा तु डालऽ,
लिलरा पर रोरिये कर न लेलकार,
तनी हमार क देबऽ जेवन अलबेला,
ए ही नगर दुधिला न पुरबा बजार,
अब हम खालेइय जेवन कोलवा में,
एहि नगर दुधिला न पुरवा बजरि,
अब हम उलटा न कसब लंगोटा ।

गद्य-पद्य: आजु उलटा कसब लंगोटा ऊपर बान्ह बरन के गांठ, छाती बान्हि देई लोहिता अपरबल की सींघं न हो जाई आजु लेके सीना बान्ह देइ मीरुता में, मीरुत मंड़ल संवसार, ऊपर घींचब पाग गुलाबी जीरा अलंग फहराई ।
अलीगंज के जुता, गोड़ के मोजा लेइँ चढ़ाई । दाबवि एड़ गउरा में, बबुआ के ले के चलि जाइ वरियाति । त अजई कहत बा जे ए बुजरो हम से नरवेइसे, नारिया तू बाड़ बनवले, अबं सुहवलि करे न जाईबि न अय बरिययाति । पाने लागलि पनचुना, बाति भइया धंसि गइल करेजा बाई । लागि गइल आगि सुरुंआ का, ओही लेके सोना सुहवली पालि । कहत बाटे जे जाये के मन हमार ना रहल ह बाई देख हम जातानी, आ लंगोटा कसतानो बाई आपन मांग धो घाल । सबुर क घा लऽ ।
आजु तोहारि वेवा होई ना आ देहिया देखबू दूधिलापुर,

रणपा खेइबू दूधिलाई नऽ पुरवाइ रे बजारि ।

गद्य : बोले नारि धोबिया के तोरि तोरि देलबे लागलि जबाब, कहे जे सइंया मुरति नरायन अब धन सेनुर के लाग मोआर, हम राणापा होके रहव बनियन के चट्टी पोतब दोकानि । लेके खेइब रणापा कइलेब गुजारा । सइयाँ बाइ माइ एइजा एड़ दबाव, चल जा सोना सुहवली पालि । परे मारि सीवाने । परजा हेलि चले परवार, अगीनी धार पर जुझब, तहके बनि जाई सुरधाम । आंगे जनम तहार बनी, पाछे तरि जाई बया हमारि ।

हाँ ऽ हां ऽ हाँ
कालिह पंचे जाहिय दिननवा करि जो बाते,
अगंवा सुनब समरवे के न हालि ।
तनी अब सुनि ल बयानवा धोबिनी के,
धोबिया उठल दूधिलवा पूर मे बाई ।
जहिया उलटा न कसुबे जो लंगोटा, ऊपरा मलवे बरन के ना गांठि ।

बीर धोबी की वेशभूषा

हाँ हाँ हाँ ऽ ऽ
आजु जो धोबी उलटा कछा चढ़ावे ऊपर माल बरन के गांठि,
घींचे पेटी अजगर के जेइमे गोला जुमुस ना खाइ,
तहिया अलीगंज के जूता गोड़ में मोजा लेला लगाइ,
आजु पंचे जेवनी बेर ले ला तेगा अलबेल्हा जेकर गुप्ती रहल हथियार ।

गद्य : बान्हे पाग गुलाबी, ओपर जीरा अलंग फहराइ । अब बीर कहताटे जे हे तिरिया, अब सबुर क घलि ह । अब तोहार निहचय मांग धोआइ । तिरिया का कहतिया

कहति वा जे सइंया हमारि अगिलिय ना,
आ धरिया पर जो जुझिन जइब, ऽ
तोहरा के बनिये जाइ एन सूर ए धाम ।

गद्य : आजु आंगे तोहर मुक्ति बनी, पाछे बनी जाई मुक्ति हमार । पाछा एड़ देखइब परि जइब कुम्ह नरक के गाड़ि । जियते होइब अरधंगी मुअला परब नरक के गाड़ि । हमरो जनम बीगरि जाइ इन्दर का पवन दुआर । अगर जो जुझि जइब सुहवलि में हमरा के बनि जाइ सूरधाम । ए पंचे, अजइ कहले ह—जे भाई पाछा पग जनि दीह, पाछा जो पग देब तबे हमार कमाई डुबी । एतना बाति जब धोवी कहि के भइया । आ चलल सुहवलि ले बाई ।

आ हाँ हां हाँ,
जहिया घरुवे डहरिया गउरा के,
चलल हं लोरिका के पवने ना दुआर,
जहिया चलल जो गइल जो चलावल,
बीरवा पहुँचल दुअरवे पर न बाइ।
तहिया जेतना न बीरवा अलवा बेला,
ओहि आजु लोरिका के पवने न दुआर,
तहिया जेतना ना बीर बा रहले कीला,
आ सभकर दूनवा न मन न होइ न जाइ।

संवरू के बिवाह के लिए विभिन्न जाति के वीरों का सुहवल प्रस्थान

गद्य-पद्य : आजु बोले बीर अजइया, तड़ तड़ देवे लागल जबाब, कहे जे मीता बीर अलबेल्हा अब बीर मान बाति हमार। उठो बराति गउरा ले अब चललि के के कीला सोना मुहवली पालि। हंसि के बोले अलबेल्हा बीर के बाँका लोरिक ह नांव। कहे जे मीता मोरि अलबेल्हा अब बीर मान बाति हमारि। तोहार जानल बीरुत बाटे सुहवलि के भइया ले के चल।

हाँ ऽ ऽ हाँ
जहिया जेतना मरद ना करवा घनिया,
जहिया जेतना मरद ना करवा घनिया, (पुन०)
सभ अब करिहिय चलल बा बरियाति,
तहिया सोरह सै घरवा जदुवेबंसी,
जेहि में जतिये के अहीरा रे गुवाल,
जहिया बसल बाड़े ना गउरा में।
तनी अब सुनऽ सभे भइया के हालि।

गद्य : ए पंचे ओ घरी सभे बनल रहलि गउरा के, खेतो बारी ना होले, झुमत चले कुदारि, घरघर खनल अखाड़ा। दुअरा परल दोहरिये माल। हंस-हंसि न दुन जोड़ी बीर के सांवर लोरिक ह नांव। बन ल रहल गउरा के सोभा कहे जोग ना बाइ। तप रहल रजा सहदेउवा ओहि कुसुमापुर बजारि। एक एक बीर बघेला दूजे लला दइब के लाल, जेतना मरद करधनिया झारि के चलल हउंव बरियाति।

आ हाँ ऽ ऽ हाँ
एक ओर डग डग डगा न लागल बाजे,

एक ओर डग डग डगा न लागल बाजे। (पुन०)
एक ओर लकड़ी जो बंकवा न जुझारि,
जेवना बाने न जोड़िय जो नगारा,
अंगवा तिरपन जोड़िया ना करनालि,
जहिया बीसा त तुरिया बाजे लागलि।
सिंहवा करुवे गोहरिये न गोहारि।
एनिया बाजल बा जा बादलवा गंजनि।
जेइमें धरती चलनि न होइ जाइ।

गद्य : आजु पंचे, आरे गरूह आरे बराति चलति सुहवलि में, भइया सोना सुहवली पालि। जेवना में मन्तर के अधि रहल ना, हाथी गनले बाड़ी ना गनाति। उठे टंडा हथिनि के, आ पलकी पर धरमी बइठि गइलें लेलकारि।

आजु सुनिलं जूमलि जे रहलि ना आ धीयवा देखब सहएदेव के,
जेवना के कुंवरीय चनयिनी त रहलिए नांव।
आजु रनिया गावति रहलीय आ मंगलवा देखब ऽ बखरी में,
आ धरमी आजु बइठल पलकिया पर साचों ना बाइ।

गद्य : आजु बीर के शेष नाग करी दुआली, उनका झुलति गरदनि में बा। शेष नाग करी दुआली आ बीर का झुलति गरदनि में बाइ। आजु सुनि ल बयान संवरू के, जेवनी बेर पलकी पर भइल बाड़े असवार। आजु भइया जेवन रहल बान बिसम्भर।

हारे बान बरम्हा देलन रे बरेदान,
आजु जेवन बंसल बइठ कर धेना,
अब रहलि गजने गउर गढ़ पालि,
अब बीर बांसवा वइठकर धेना,
अबे ना जो बगल में लेलनिरे लगाइ,
अब बाबू पांचि गो जो बानवा बिसम्भर।
उ अपने बगल देलन हो लटकाइ,
आजु तनी शेष नाग को रहलीं दुआली।
अब बीर के गरदनी देलं रे दबाइ,
अब भइया सुनिल सोभा न दुलहा के।
ओही नगर गजन गउर गढ पालि,
तब बीर चलल गइले जब हो चलावल।

अब बीर बइठल पलकिया पर बाइ,
तब इहे सुनिलऽ बेयान अलबेला।
आरे खोइलनि बोलतिबाड़ी हो लेलकारि,
कहली जे बबुआ न मोर अलबेला,
आहो लालन मानि जइब वतिया हमारि,
एगुडो ओढ़नावा दुलहा के नाहीं लिहल, ऽ
कइसे अब दुलहा होइब रे पहिचान,
आहो बेटा घ देब तू तेगा अलबेला
आरे गंगा गहना अंगवा में देइहो लगाइ,
तब ओने हंसे लागल बीर मल सांवर।
आहो माता तोरे रोगन मरि जावं,
आजु तोरा लागलि बा ललचि दुलहा के।
दुलहा अब बनाल बाड़ी देहिया रे हमारि,
दइब गुनल नीके रखिये सुहवलि में।
काइ गति लिखल बाड़रे भगवान,
ध देइब तेगवा आपन गढ गउरा।
सुहवलि मेंकेवन करबि प्रभुताइ,
बाउरइ माइ अ तु हुँ बउराउलू।
कीय तोरे मन्द परि गइल गियान,
अब मत तनी दूलहा करतू तैयारी।
सिरवा गुलाबी अब गमछा देले बान्हि,
हाथावा कंकनवा सोमेला अलबेला,
अब माता चलली सुहवलि रे गांव,
एकराइ फेर में तनिको जनि दादा पर ऽ।
ना त आंगा बिगड़ि जाइ कारज रे हमार।

गद्य : पंचे बीर जवनी बेर बइठल हउवन पालकी पर, उनकर माता अरदात लगावत हइ जे हे बेटा एही ढंग से जइब। तनी सरीर का अन्दर दुलहा के एक ओढ़ना नइखे। कहलन जे हे माता, अब हम तहसे कहतानी जे आजुतेगा जो हम घ देइ, हमार हथियार जो गउरा रहि जाइ, आ का जाने का गति ओइजा बाटे, आखीरी दाव पर जे मेढ़ परि जाइ, त हम करब कवन बउसाइ। माता अगर तोहरा दुलहा के जो लालसा लागल बा त गुलाबी रंग के गमछा बान्हि द हमरी लिलार पर। आ हाथ में ककन ठीक बटले बाइ।

बाकी माइ जहिया छोड़ि देइबि ना आ तेगवा आपनि गउरा में ।
का जाने खाता नागा बाइ त हम केवन करबि ना आ ओइजा रे उपाइ ।

गद्य : धरमी कहतांड़े जब अइसी हालि ह, अगर जो खता नागा हो जाइ, अब त माता ओइजा से दुइ करे के परी कि पाछा एड़ देइ के भागे के परी आंगा परला पर जुझे के परो । अगर जो हमार सान रही त सुहवलि में किछु मनसाह करब । तहरा जो लालच होखे दुलहा बनावे के त हमरी सिर पर गुलाबी गमछा दे द । हाथ में कंकन रही ।

आरे दादा एनी हटलि बाटे न बुढ़ि खोइलनि,
आरे रानी बंगला में गइलि बा समाइ ।
चलल जब गइलि ए चलावल,
आरे गमछा उ लेले गुलबिया के बाइ,
आजु भइया लेइ के आइल बे दुलहा के ।
आरे बीर जब बन्हले बाड़नि लेलकार ।
इहे जब लाल ते गमछा उ रहल,
आ दुलहन के बीर इ हइये इंतजाम ।

गद्य : हाथ में कंकन बीन्हल । अब रानी बुढ़ि खोइलनि घुमलि बाटे अपना बंगला में गइल समाइ । छतीस बरन के बेटी सब आगन पर गइल रहल बिटुराइ, कहत बाजे हे सखी अब उठे एइजा कीछु मंगल, हम परीछे चली बालक हमार ।

हाँ ऽ ऽ हां ।
पंचे जाहिय, दिननवा करि जो बाते,
आंगवा सुनबि समरवे केन हालि ।
तनी अब सुनि ले खेला न गउरवाके,
ओहि आजु गउरा न केरिया ए बजारि ।
जवनी चलली स नारि जो अलबा-बेल्हा,
घर घर जुमल गोतिनिया लोगन बाइ ।
एनिया अंगना में मंगल उठि बा गइल,
आ गाना उठल बियहुति ले न बाइ ।

गद्य : आजु खोइलनि बायें परलि बा मंगले दहिने मरले रहलि ओलबाइ । पंचे सोन के आरती ह उटवले आ दही, गुर, अछत धइल थरिया में बाइ । रानी हाथ के मथनी हवे उठवले, था लेके ए भइया परिछे चललि तैयार ।

आ, हाँ, हाँ,
एनिया उठल मंगल बा गलिया में,
मंगल उठल गउरवे गढ़ पालि ।
खोइलनि पुजे चललि बा आपन लइका,
पछवां रनिया चल स लेलकार ।
उहे जब चललि जब गइली जेबा चलावल,
रनिया धइले पलकिया ओइजा बाइ ।
एनिया उठुवे पलकिया मुघरा के,
एनिया उठुवे पलकिया मुघरा के ।
उपरा बिगलसि अछतवा लेलएकारि,
जवनी घरि अछत बिगति बा पलकी पर,
रनिया सगुन करतिया लेलकार ।
तनी अब सुनिल बयानवा अलवा वेल्हा,
ओहि आजु गजने गउरवे गढ़े पाल ।
आजु रानी दही गुर के अछत आ बीर के बुंदा दे देली माह लिलार ।
आरे रनिया लेई लेई ना ऽ पूतवा आपनि दादा परीछे ।
तिरिया मंगल गावतेइ बा ऽ डिय सन संग ए चार,
जेवनि आजु गवननि के रहलि आ गवनहरि,
ओ गउरा बबुआ डोमवन के रहलि लोग बहु ए आइ,
एनिया जब देखतियाड़ी मूरतिया सांचो धरमीके,
हा हो सखी मानि जइबू ना बतिया रे हमार,
आजु धनि धनि मिलल बाड़नि ना ऽ बरवा दादा सतिया के,
आपन पती षवले बाड़ी ना ऽ गंगवाइ रे नहाइ ।
आजु नारि कहे ले,
जे धनि भागि सती के कहे के,
आ धनि बर धवली गंगा नहाइ ।
एतना कहि के मोहित सब भइल बा ।
आ मथनी रानी के घुमत लिलार पर वाइ ।
अब पंचे, जब परीछ ले ले ह,
परीछ के तब देवढ़ी बहरतिया ।
आजु एगो टोला परोसिन रहली गोतिन ।
आरे एगो पलकी धइले बुढि खोइलनि बाइ,

अब भइया चले जो पलकि पीलवाने ।
ओहि आजु गजने गउर गढ़ पालि ।
कहली जे मुठवनि छींटे लागलि पंचे,
मुठवन छोटकी मोती के बाड़ी बानि ।
जहिया जो लागलि जब लखिये लुटावे,
पलकिय चललु गवें में लेलकारि ।
इहे अब घुमि घुमि गोड़ अब लगावल,
जेवनि डिहवा बोली कर माइ,
सभ देवतन का जब गोड़वा लगाइ के,
तब पंचे सुनए कीला में खेलवाड़,
तब इहे तीलिये अछत आड़े देले,
सुनिल ऽ जे खोइलनि मोतिय दे लवले न बाइ ।
जाहिया जो छीटे लागल धन पलकी पर,
अब पुनि कइले हउवे न लेलकार ।
जेकरा जो खाये के खबरि ना इरहे,
उहो धन कुटले पलकिया के बाइ ।
कहे लो जो धनि धनि भागि अलबेला,
धनि रानी खोइलनि लेली अवतार ।
आजु इहे धनि हउवे कोखि खोइलनि के,
आजु बेटा पवलीय गंगावा नहाइ ।
जेकर अब कबही दर्शनि नाहि मिलल,
आजु पेट कंगली के गइल रे अघाइ ।
हनिकर जियत रहो बेटा अलबेला,
जात बांड़े सोना रे मुहवलिय पालि ।
जेतना कंगालिन बाड़े रे गउरा के,
सभ मिलि जुलि देला हउठो इसरबाद ।

गद्य : ए पंचे, जवनी घरी पालकी जब उठलि बाटे, आ सुनलसि सिकोहवा जे गरीब बांटे जे मरल बाटे ते त केतना होइ । बाइ गरीबता जे रहल से कहे जे धनि हे भगवान । । आजु धनि इ गंगा नहा के लड़िका पवले बा, आ धनि इ माता के कहे के जे तीन अछत चाउर लुटावल जाला, ले के मोती के अछत बीग-तिया । अब जे भइया ले के गांव बांटे चौगोढले सब देवतन के घुमा के गोड़ देले हउवे लगबाइ । जाके बीर के पलकी छिपि गइलि बाहरा गाँव का । तब

भइया जेतनी बड़े-बड़े करधनिया सोभा कहे जोग ना बाइ, एक एक मरद बा जोधा, दूजे रहलन दइब के लाल, गरहू बराति रहल सुरुआ के, चलति बा गजन गउर गढ़ पालि, चले राजा सहदेउवा लेके नगर सोना सुहवली पालि। बनऽ रहल गउरा के सबके चलऽ रहल ठकुराइ, केहु से मोटि ना रहल भइया ओह घरी, ओहि कीला गजन गउर गढ पालि। जेकरा जहु के मन ना रहल उहो देखे गइल सोना सुहवली पालि।

आजु भइया लमहरि बा आ रतिया चललि लोरिका के,
अब चललि सोनावाइ सुहवलि हो दहवा पालि।
जहिया जब चलल बाटे ना धोबिया सुनऽ अलवावेल्हा,
आंगा आंगा लेइ लेइ ना चललबा बरियेयाति,
अंगवा उ चललि बाटे ना पलकिवा भइया धरमी के,
पाठावा उ बटुरिइ चललि बा बरियाति,
जहिया तनी सुनि ले ब जा आ खेलवा भइया पंयड़ा के,
कोठ्ठु ए दुर बीर के इ चललि ह बरियाति।

सती का बारात नष्ट करने के लिए सत सुमिरन करना, माया का बाजार निर्मित करना

गद्य : पंचे, केतना दूर बराति बढ़लि ह, नीरोग से, आ त दू चार कोस। दू-चार कोस जब बराति चललि ह! हः हः, जरि गइल बदनि सती के। का कहे, कहे आरे अब बजर परो डिगर पर पानी, ओंड़े तर अइतन दबाइ। ना हमार सादो लिखल इनरासन, न लिखल वाटे बियाह। इ पापी आजु झूठो के हमार बांस में लुगा टाँगि दिहलसि। देस में पाजी लुटलसि धरम हमार। जेने चलल होइ पलकी कीला में, जाइ सोना सुहवली पालि। जरे बेटी बमरा के। जेकर सती मदइनि नांव, आगि लगि गइल बदन में, आगि हुलकत करेजा बाइ। उठि गइलि हरानी ले के, सोना सुहवली पालि। आपन सत सुमिरे, सत बीगतारे झटकारि। कुंआ में सत बीगताटे झटकारि. त ए भइया सागर में जहर ह छोड़ि देले। कुंआ में भांग घोरवा देतिया।

आ अगल-बगल बजारि माया के बसि गइल। जहर के, आ रंग रंग के मीठाई जब बसि गइल बजारि। आ खेला जब सती क दीहलसि। तब धावलि माइ भवानी जेकर देबी अपरबल नांव, जाके रोकि दिहलसि बरात जगदम्मा, कहे जे हाइ लालन तोहके बेरि के बेरि बरजलीं जनि चलऽ सोना सुहवली पालि। आजु बेटा परि गइल मेंड़ कीला में। गरहु ले ले बाड़े बरियाति। बंगला ले बराति

आइल रहे पंचे । आ एहि रतसंड में बजारि ठनि गइल । एतनी की देखाउज में भवानी बराति के रोकि दीहली । कहली जे हाई लालन एगो दूगो तू लेके चलत नइख, गर्हू हइ बराति, तू ले लिहल । तेवन नाया आ पुरान । आ सती बाइ से सागड़ में मारि जहर डालि दीहलसि । कुंअन में भांग घोरि दिहलसि, चारु ओरि दोकानि बसा दीहलनि । बीचे अब बराति चली माया के बसलि बजारि इ बेटा बा । उ मीठाइ ना ह सती जहर ह ।

जे बीर खाइ से ठावे निकाम हो जाइ ।
त कहुए जे त कइसेइ बरतिया चली सुहवलि में ।
कइसे चलबे सोनावा इ सुहवलि ए दहबे पालि ।
ए पनिया जेकरो लंगरोइ जो पुतवा जुझी सुहवलि में ।
उनकर माइ कही जे आजु जुझि गइलनि ना पाठवा रे दादा हमार ।

गद्य : जेकर बुढ़ो सेनुर जब मरी, त उनकर स्त्री कही जे हमार पती एहि संवरू की सादी में जुझि गइले रे कियाउठाति । हाइ बेटा, आजु हो गइल अकलंकी गर्हू ले ले बरात जो धाइ । आदि-शक्ति खेला बा, कइले, इ खेला माब जोग ना बाइ । हमरो न अकिलि लागी ना तहरो लागी किरियवा पालि कहु कइसे अब बराति ले के चले के ओहि सुहवलि केरि बजारि । बोले बेटा बरती के देवकीन नन्न न राजकुमार, गरे डालल गेरफांसा दसो जोरि-नहरना बा ।
भइया मोर भवानी जीव तोहरा धरम के पालि । आजु इ गति हम नाजनलीं, हम जनली जे सुहवलि में लड़े के भीमला से काम बा । इहे माता ए गती के हम ना जनलीं जे अइसन हालि सती बहुत जो कीला में बा, अब चाहे हे माता चाहे खेड़ के पार लगावऽ, चाहे अधजल में बोर द डेंगी हमार । हंसे माई भवानी जेकर देवी अपरबल नांव ।

दूरी बताने के लिए रतसंड सुखपुरा गंडवार आदि का उल्लेख

बेटा मोरि अलबेल्हा अब वीर मानऽ बाति हमार । फेर ऽ बराति मोरनी पर ओहि गड़घा पर फेरि के चली जा । ऐ पंचे रतसंड ले बराति आइके भवानी हटाइ के ले गइली गंड़वार । मुखपुरा के जब रास्ता धराबताड़ी त सती अउर कुरुचि गइलि । का कुरचतियाटे कहलसि जे अच्छा अब हम केवन देइ दोष लरिका के । इत खास भवानी हमरी पीठी अंगार दर दीहली । दर दीहली अंगार जगदम्मा । बाकी सहकल बहकल ह बड़ा बाउर । बहकल हउसे जीव के काल । पार गइल काम सुहवलि में एही सोना सुहवली पालि । चलि आवसु चलि, आवसु सुहवलि में अब एइजा खेला होइ बरियार ।

ए पंचे दुरुगा आ लोरिक के एइजा से छुटि जाता अकलंक । अब केकरा से झगड़ा चलल सती के ब आदि शक्ति भवानी से ।
कहतिया जे दुरुगा हमार देसवाइ में, हे चिरिया बाड़ी दादा ए लुटले,
देसवा में लुटि लिहली न आ घरमइ रे हमार ।
तनी सुहवलि धइले अपना नगरिया अंगवा चलि जो आव ।
एहि बेरि उनकर सहकल बटुरीय न देइबि हम भुलऽएवाइ ।
ए पंचे, एनिया कठिन हउवे ना ऽ आ गानावा भइया सुहवलि के ।
कइसे गानावा सगड़ेइ प देल ऽ जा हो पहुँ रे चाइ ।

ताग पाट सिंधोरा गउरा में छूट गया, रास्ते में लोरिक को स्मरण

गद्य : ए पंचे, जब बराति भवानी फेरि के आ जब सुखपुरा ले गइली, ओही जगह पर का भंग भइल । जब लोरिक का मन परि गइल जे हाइ भवानी । आजु त हमार ताग पाट सोइगइली अमर सिन्होरा छुटि गइल गउरा केरि बजारि । तब जे बोले माइ भवानी जेकर देबी अपरबल नाम कहे जे बेटा मोर अलबेल्हा अब बीर मानऽ बाति हमार । अगर जो ताग पाट सोहगइली सिन्होरे ना रही त सादी केकर होई । सादी केकार होई । लोरिक कहतारन जे हे मीता अजई, भइया तोहार जामन बीरुत बाटे सुहवलि के, लेके चलऽ बरियाति, भइया अब हम जातानी गउरा में । आजु हमार ताग-पाट सोहगइली, अमर सिन्होरा छुटि गइल ओहि पीड़ना गउरा केरि बजारि । दइब गुनल जो रखिहन विधि ना पुजइहन आस । कहत बाजे मीता मोर अजई बीर मान बाति हमारि ।
आरे भइया तोहार देखल डहरि बाटे सुहवलि के सोना सुहवली पालि तू ले के बराति भइया चल, आ जेने चली बराति अलबेल्हा, ओने हाला भइ रही बड़ियार, हम उहियावत चलि आइबि । अब हम जातानी गउरा सखी के ताग-पाट सोहगइली भइया अमर सिन्होरा दोखि से छुटि गइल ओहि गजन गउर गढ़ पालि पंचे, अब ओही जां से हंटि आवतारन आ अब गउरा के चल जा तारन । भवानी त जब भीर आवे त पहुँचसु अब भवानी बाड़ो से चलि गइल हइ इनरासन के, रास्ता धरा के, देबी दोखि परिगइली जे अब त सागर पर हमार बरात चली जाइ । अब भवानी जा के अलसा गइली इनरासन में ।

हाँ ऽ हाँ हाँ ऽ
आजु घूमल बेटा बरती के देवकोनन्न, न राजकुमार,
सुनिलं जे धरे डहरि गउरा के चलल बा गजन गउर गढ़ पालि,

एने खुलि गइल बा डंउरू सुरुज के, घर घर भइ रहल ले सारि ।
दुइ धरी तीन धरी राति बा गइलि आ ले के ओही गजन गउर गढ़ पालि,
छतीस बरन के तिरिया ओहि आंगन में जलुआ बनल रहली जलसाइ ।
आजु एनिया होत बाटे ना ऽ आ खेलिया भइया जलवे के ।
तब लक लोरिक हुतियेइ लगवले ए दादा रे बाइ ।
अब बीर भाई भाई न हुँतिय के हउवं लगवले ।
चानवा उहै धवरुव आंगानावाले बबुआ बाइ ।
जाके आजु खोलि देले बा फाटाकवा जब अलवाबेल्हा ।

गद्य : खोलि दोहलसि फाटक पंचे आ पहुँच गइल चनवा लेलकार, हँसि के का बोललि ह, कहतिया जे हा-हा-ईकह, कहां हमारि नजरि पर सुरति खिल गइलि ह, जे तू फिरि अइल ह, जरे बदन लड़िका के एनिया दरे लागल अंगार, कहे जे वेसा की जी वेसा हउवं तोर कुल परिवार । हर घरी तोहरा उहे लागल रहलह । भाइ के खबर दे दे, सती के ताग-पाट सोहगइली अमर सिन्होरा छुटि गइल बा, उहै ले जाये खातिर हम आइल बानी । ए पंचे जाइके जब खोइलनि के कहलसि, त सही में ताग-पाट सोहगइली अमर सिन्होरा ले आइके देतिया । हाइ बेटा ! एतना हरान भइलऽ । कहता जे तू ही न राखि घललू ह । हमार मन त दोचित रहल ह तोरो त कहे के चाहीं जे ए बचवा कीछु भुलाइल हेराइल त नइखे न अब त हमार देहि हरान हो गइल, राति चलि गइल हेतना, बाई दे । हमके सिन्होरा थाती दे दे, उहे थाती दे के, ए पंचे खोइलनि डाँड़ा दे देले ह । आ लोरिक सोंचलन जे का राति खाने अब धाई अब हम आवतानी इहें । बीर गउरा सुति गइल । सूति गइल बीर बघेला, पंचे तनी सुनि सभे ध्यान लगाई । सुति गइल बीर बघेला भवानी अलसा गइली इनर का पवन दुआर ।

सुहवली सुरहा के निकट के तट पर सती के सत से गेंड़ा के पेट में बारात का प्रवेश कर जाना, वर संवरू भी उदरस्थ

आँगा आँगा बाँस धइले बा धोबिया, पाछाले बटुरी चलल रहे बरियाति । हँसलि बेटी बमरा के जेकर सती मदइनी नाँव । फाटि गइलि दौरि सुहवलि में, एहि सुरहन का निकट अरार । भइया लागलि सत सुमिरे । सत गेंड़ा कइ दोहलसि तइयार, कइसन गेंड़ा जे ओकर एगो ओठ आकासे लाग गइल आ एगो धरती देले हउवे सटाई ।

ओही में अब ढुके लागलि बरतिया भइया अहीर के ।
उ बटुरी आ हेललि बदनिये में दाता रे बाई ।

कहँरा कहस जे इकेवना आनालाइ में बसलि
बा एगार्‌हवा सुहवलि ।
दू घरी दिन ही डहरिय में भइल बा दावा आन्हार ।
सुर्नलिय जे वटुरिय बारातिया ढुकिय बाटे न गईल ।
तब गेंडा आपन मुँहवाइन लिहलसि रे बटोरि ।
आजु गेंड़ा छोड़ि दीहलसि ना अहरिया सांचो अलवा बेल्हा,
जाके ओही सुरहनि में लोटल हउरे लेलएकार ।
उ गेंड़ा अपना पोंछियइ में मुँहवा में डालि बा देले ।
उ आजु सुति रहलना सुरहनि की अरार ।
ए पंचे, एनिया गायब भइल बरतिया पंचे होइ बा गइल ।

× × ×

डरिये पर ना लाइ ।

गद्य : ए पंचे, जब गेंड़ा बराति के घोंटि घलले ह, आ मुँह मुदि के आ रास्ता छोड़ि के आ सुरहन में जाइके आ मुँह में पोंछि लगाइ के आ दाबि के सुति रहल । लोरिक बीर बाड़न जेवन टुटतिया नीनि ओ अलबेल्हा के, त लगलन धावे, राति चलसु दिन चलसु, राति मे कम चलसु जे पता ना लागी, ढेर दिन में चलसु । बाकी हर ठागो बरात के पाता लागत चलि गइल । जे नांहीं ए पंचे बराति गइलि ह । अब बीर चलल गइल चलावल जुमि गइल सोनासुहवली पालि । अब बीर जुमि गइल सुरहनि में, त ओहि जाले जाइके पन भरिन से, जाइके कुँजड़िन से, सोरह से घर के कुँजड़िन के रहलि ए पंचे ओ सुरहनि में, द्वारे द्वारे व्याकुल होके पुछता जे एने बरात गइलि हा आत ना, एने त बरतिये ना गइल ह ।

आजु बीर सगरेइ से ऽ सुहवलि में घुमि ना आइल ।
केनियो बाराति के नाहि लागल ना पाताबाइ रे पंचे ठेकान ।
तब ओहि जा रोवल हउवे ना पूतवा देखब राणिया के ।
देबी हमार घुवलेई इनारवापुर ले बाई ।
इत कतहीं बाचावाइ संकेतवा हमार परि रे गइलं ।
लालन आजु रोवत बाड़नि ना जारावाइ रे बेजारि ।
सतिया आजु देले रहलि आंचारवा आपना ओठवे पर,
आजु रनिया हंसतूये अटरिये पर पंचे ए बाइ ।
जहिया देबिया पहुँचोय गइली बाड़ो जगवादामा,
लरिका बइठल रहल मोतिये इ सागाड़वा की सुन बयान,

जब एनिया पहुँचलि बाटे ना भइया हो जागाबादामा।

गद्य : पहुँचे माई भवानी अब बोर के गोदी ले ले उठाइ। जमीनी पर देवी लेइ के गोदी बइठा के आंसु पोंछत लड़िका के बाइ। हाइ हो लालन केने लोहा लगवले, केने भारति गइल गरहुआइ, केने तोर दांत टुटि गइल काहे खातीर रोवे बालक हमार, रोवे बीर अलबेल्हा माता मनबु बाति हमार, कहां ले कहीं पंवारा हमरी बुते कहल ना जाइ। सुनल दुख सुहवलि के एहि सोना सुहवली पालि। बरात जो····ओहि घरी हमार ताग पाट सोहगइली छुटि गइल। सती का अमर सिन्होरा के कहली जे उ ना आई त बियाह कइसे होइ। अब हम भवानी तोहरे कहल हम कइलीं, जगदम्मा रहली पंचे ओह घरी। कहत बेटा जे, कहलीं रउआं जे बे ताग पाट सोहगइली सिन्होरा के का होई। कइसे सादी होइ। त आजु हम धोबी के कहलीं जे मीतवा तोर देखल डहरि सुहवलि के बा। बराति ले के चल, आ अब हम जातानी गउरा ले, ले आइं। ओहि जा ले भवानी हम लवट गइलीं। लवट जब गइलीं। त जब राति कीछु चलि गइल त हमरा देहि में कीछु आलस हो गइल, कीछु हमरो भूल हो गइल सुति गइलीं। सूत गइलीं जब उठलीं त चलली बरात जे ने जेने बराति आइलि ह, ओने हलड़ मचत आइल बा। बाइ हाइ माता, हाइ माता।

आरे हमार एहीजागो बरतिया गायब भइ बा गइल,
नाहिय पाता लगतोइ सुहवलि में दादा रे बाइ।

गद्य : रोवत रहल। एने कहे जे आहि बेटा, हम कहत रहली जे सतीया बड़ बिदार करी। कीछु हमरो आलस आ गइल ह, आ ढेर तहरो आलस आ गइल ह, अगर जो रह रहीत ऽ आ जेंव एंड़ बेड करीत त जेंव हमके आगम बुझा इत। बाई त तू दल में रहल ह ना। आ हमहूँ ना रहनीह, एतने में सती अब बराति गायब क दीहलसि। फानि त गईल बा। ओ कोठा पर पंचे केहू ए भरम के ना जाने सती हंसतिया। कहलिया जे बड़ा सहकल मन रहल ह। सहकल बहकल बड़ा बाउर झूलनी हवे जीव के काल, आज बड़ बड़ पंच बू अइलू आजु बड़ बड़ मरलू बड़वरे गाल। परि गइल काम सुहवलि में इनकर गंड़िसटके गइल भुलाइ।

हाँ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ।
एनिया रहलि माई न जगदम्मा जेकरी देबिये-दूरगवें न मुनी माइ।
कहुए बेटा न मोरवा अलवाबेल्हा, अब बीर मनब न बतिया रे हमारि।
एकर तनिको हरणवा जनि तू मान ऽ नाहि अब तनिको मानइ न बिसवास।

दुर्गा का लोरिक को योगी बनाना,
गाते हुए उसका बारात खोजने जाना

गद्य : तनी सुनलऽ पूतई न अलवाबेल्हा ए देहि में बेटा, तनीक खंरासी जनिले अइहऽ। जेकरा संगे जगदम्मा बाड़ी, थोड़े घरी खातीर अब त फांस में सती डाल दिहली। बाइ असलहई भवानी, असल हई भवानी ले के सोना सुहवली पालि। जइसे हमार तोड़ तारी थेग पयडां में उनकर निहचय सुहवलि के थेग तोरबि। बारल दिया देइवि बुताइ। नइहर के नाता तोड़वा देईबि। निहचय ले चलब गजन गउर गढ़पाल। अब पंचे एतना कहिके भवानी का कइले हई, आजु पंचे जाही दिन के बाते आंगे सुनी समर के हालि। अब भवानी का कइले हई बीर के, जोगी बनाके, माया के, सरंगी धरा के, अब भवानी खेला करतियाड़ी ले के ओहि सोना सुहवली पालि। जवनी बेर ले के जोगी रूप बना के आ भवानी हाथ के सरंगी देले हई धराई।

अब जोगिया गावत चलल ना, आ गानवा भइया दुनिया में,
आपन उहे खोजे जब ना चलल बाड़नि बरियेयाति।
आजु जेकरा संगवाइ ना मइया रहलि जगवादम्मा।
जेकरि, आजु देबिये अपरबल रहल ए नांव।
आजु लरिका छोड़ि दीहलसि ना आ गउंवा गढ़वा बबुआ ए सुहवलि।
दूसरि नगर में ना फेरियाइ दीहलनि रे लगाइ।
रानी लोग देबे जाला ना भांखवा हो जोगिया के।
नाहिय एकर लागतियाटे ना फेरिया रे हमार।

गद्य : जोगी कहतारन जे हमार फेरी भीछा खातीर नइखे लागत। नगर के लोग कहे जे ए भाई अइसन त जोगिये ना आइल। कहल लो जे केथुके तोहार फेरी लागलह। जोगी जब बाड़ ऽ। आ दुआरे दुआरे जब रटि रहल बाड़। जेवना नगर में फेरी जब जोगी घुमावसु। आ ऊ अदमी जब भीछा देबे के दान चलसु त कहसु जे एह खातीर फेरी हमार नइखे लागत आ ना भीछा हम लेइं केहुके। कहे लोग जे भाई का लेब, जोगी बाबा, कवनो खातीर फेरी लागतिया।

आजु जोगिया का झर झर ना ऽ नीरवा कइलस भइया ए जारी,
जोगिय बाबा रोवत ना गलिये में लेलएकार।
ए पंचे, हमार परि गइलि बिपतिया देखब देहिया पर।
ई बिपति आजु परी गइली ना उ बीर पर लेलएकारि।

आजु हम बान्ही दीहलीं मउरवा दादा दुलहा के,
आजु सुहवलि लेइ केइ ना आ चललीं हो बरियेयाति ।
आजु ओइजां गायब भइल ना दुलहा हमार अलवाबेल्हा ।
ओही खातीर लागलि बाड़ो न फेरियोरे हमारि ।

गद्य : कहताड़ें जे हे पंचे अपनी हम दुख के कहि दिहलीं, हमारि फेरि ओही के लागतियाटे । जे केहू दुनिया के अन्दर बराति देखले होखे हमार त तनी बता दीं सभे का जानी केनियों बहकि के, अनले में चलि गइल होखे सब कहे जे ना, आ कइसन बराति जाइ त हलड़ मचल जाइ । अपना ढंग के बबुआ बराति बतावत ताड़े जोगी, ओ ढंग के बराति जो जाति रही त दुनिया में हलचल रही । एने बरातिये नईखे गइल ।

सुनिलंऽ जे दुरुगा बा इहे गांव गांव न जोगिया के बाड़ी घुमवले,
नाहीं पाता लागत दुनियवे में भइया रे बाइ ।

गद्य : जब ना पाता लागल अब भवानी सोचि के फेरु सुहवलि ले आके । सुहवलि में भवानी के अब बीर के ओइजा केकरा के संउपतियाड़ी, अब पंचे जब भवानी ले के अइली, सोचतियाड़ी जे सुहवलि में सती के इ हालि बा, आ का जाने हम गइलीं हम, भइया का दुआर पर आ बीचे मउरी अपना धरम से गायब जो क देई त हम के के संगे लगाइब । अब आदि शक्ति भवानी कहतारी जे हे धरती फाटऽ । अब हम आपन लडिका जतन करी, बेहू हमार दाही नइखे । एइजा दाही बाड़ू हमार ।

त ए पंचे सागड़ा पर दूइ खण्डा ना धरतिया होइ बाड़ी न गइल ।
दुरुगा रोइ रोइ सउंपति न धरतिये के दादा रे बाइ ।
कहति बा जे धरती हमार जोगवत रही ह, न आ थातिया तू सुरहन में,
आ एइजा आजु देइ दीह थतिया रे ह ऽ मार ।

पद्य : भवानी कहतियाड़ी जे जहिया मांगब, तहिया हमरा थाती के दे दीह । ए पंचे, जब धरती माता अब बीर के लेइजे अंग मे मेरइ के आ जतन कइ रहल हई । अब आदि शक्ती भवानी ओही सुरहन में बाघसिंह के डंवरू रंथ जब हांके बइठि गइलन बेरु न कुबेर । रंथ पर बइठि गइलि जगदम्मा चढ़ि गइलि इनर का पवन दुआर । सुनलऽ खेला इनरासन के, ओही बरम्हा का पवन दुआर, जेवनी बेरि देबी चलल गइली चलावल । देवतन के लागल कचहरी बा । घुमे लागल जगदम्मा । सभ का तिकवत मुंह के बाइ । ओ देवता देखत बाटे दुरुगा के, से नीचे मउर दबावता । ए पंचे, सुनिल आजु बनलेइ पर, हितवा बा दुनिया में बा लउकल ।

बिगरल केहु के केहु न हितवा रे भेंटाइ ।

गद्य : जेवन देबी गइला पर, सभ बहाइ के पूछे, आ सभ में बिगाड़ि जाये से पंचे तनी देखिलीं खेला जगदम्मा के, गइल रहली अपना भाइ-न का पवन दुआर । अब जेही की जासु दरवाजा पर, ऊ मउर लटका दे, के हू ना बोले आ जेवनी बेरि घुमलि माई भवानी बटुरी, चउगांठि घललमि इनरपुर बजारि । केहु ना बोले ददा दुरुगा से, नाहिं के हु पूछ ताटे कुशलात । झंखे माई भवानी जेकर देबी अपरबल नांव, कहे जे आहा दइब नारावन का विधि उगिलि दीहल करतार । सात भाइ सात बहिनि काका का जमली पवन दुआर, अनका धरके बरम्हाइन भोगताड़ी एकउंझ राज । हमनी के भइल झोंटा मीरुता में कि मीरुता देले लो बाटे ओल्हाइ । सभकर थेग लाग गइल काका पेटहिया भइलन नांव हमार । हमार दुनिया के केहू पूजा ना दीहल । आ केहुओ जो गउरा लागल थेग हमार, उहो थेग लागल ए दादा आज हमार तोर लो दीहल, एहि सुहवल केरि बजार । एहि बेरि फुंकि देइब कीला इनरासन ।

आ हाँ, हाँ, हाँ
जहिया बिगड़े माई न जगवादम्मा, जेकरी देबिया भइया अपरपल नांव,
उहे अब मचल ना गढ़वा इनरासन, पहिला लोहवा हउवे ना लेलरेकार,
इहे जो अगिले लोहा न भइया मुनऽ, सभ नीच मउरे देले ह लटकाई,
इहे जब कुरचलि माई न जगदम्मा, ओहि आजु ईनरका पवने बा दुआर,
देबिया लुकवल न अगिया जो उठावल,
देबिया लुकवल जो अगिया जा उठावल,
भांजति चललि ओहि इनरवे पुर में बाड़,
एहि बेरि फुंकबि ना कीला न इनवारासन ।
जेहि में चुइ चुइ न बरिसी रे अंगार,
जइसे टूटल ना तहवा मीरुता में ।
मीरुता टुटलो बा थेगवा न हमार,
ओहिगों तोरबो बा थेगवा भइया के,
ओहिगो तोरबो न थेगवा भइयाके, एहि आजु ईनरका पवने न दुआर,
इहे अब जेतना देवतवा इनवारासन, अपना बंगलन में गइल न समाइ,
जाइके बरम्हा जे सुनल बाड़ वोलल, तिरिया मनवे न बतिया रे हमारि ।
आजु मोर बिगड़लि बहिनिया इनवारासन, फुंके आइल न कीलवा रे हमारि ।
केवनो मलिया में तेलवा बाले के, केवनो अबटन ना लेबूस उठाई ।
केवनो हाथ के पतियावा ले के धवले, केवनो हाथ के मचियावा लेके घवले ।

केहु आजु ले ले चले न भइया बा,
इहे आजु जेतना बाड़ी न बरम्हाइन सभ भाई आंगा बढल के भइया बाइ ।
ओनिया कुरचलि बा मइया जगदाम्मा, जेकरी देबिया अपरबल भइया नाव ।
उहे जब फुंके चलली ना इनरासन, ओहि आजु देवतन का पवने ना दुआर ।
तनि अब सुनलीं बयान न दुरुगा के, ओहि जब इन्दरका पवने न दुआर ।
केहु जाके आंगवा मचियवा धरत बाटे, केहु अब आंगवा मचियवा बाटे धरल ।
केहु अब तेलवा न दिहली रे देखाइ, कहली सुन ननदिन न अलवाबेला ।
बाजिब मनबु न बतिया रे हमारि, तुहिया बहिनि मीरुतवा चलिना गइलू,
तनि मचिया बइठ न आसन रे दबाइ, हमनी के लेइ के तेल न अब मेराइ ।
केहु अब पंखवा न लेइं जा हिलाइ, उहे आजु डरे न भाइ ऽ ।

आजु भइया जरे माइ जगदम्मा, जेकर देबी अपरबल नांव, लातन मारि के मचिया अब तोड़ि देई, देबि थपरन दे सुघियाइ । मारब दोहथा रानिन पर, लेके इंदरपुर बजार । सुन सुन ए बुजरो, भउजी मान बाति हमार, अनकर घर के बरम्हाइन । इनरपुर हो गइल एकउंझे राज । हम करीं नास दुष्टन के, कहीं दे द पुजा हमार । आजु हमरा बालक के थेग बा टूटल ओही सोना सुहवली पालि । जइसे हमार थेग तोड़ देबू, ओइसे इनरपुर फुंकब कीला तोहार । चाहे आजु हमार थेग टुट जाइ, आ तोहरो कीला तोड़ देइब । पंचे, एतना बयान जे भवानी बिगड़ल बाड़ी, जाइके ए पंचे केतनो उतकल धुतकल देवी मारतिया, आ जाइके बरम्हाइन का गोड़ ध लेतिया, जे ननदि कहल सुनल माफ कर, चल हम कचहरी लगवाव तानी, जेवन पुछे के होखे सब तोहरी गोहार पर ठाड़ा होई, बाई कीला जनि फूंक । देवी कहतिया जे इ बाति बा जा कहि द हमार लूक उठले रही । अगर जो हमरो दुख के केहू ना सूनी त जरूर हंकड़ि कीला फुंकबि इनरासन हमरो त एमें ह । हमरो त ह । आजु हमरा बिपति पर केहू हित ना जो भेंटाई तब हम ओके फुंकी त देइब हमरो त नइहर ह किना, ए पंचे, बरम्हाइन लो कौल कइके हटले ओंइजे नाहिं तनिको छेमा कइ देइं पतीं लाग हमार कचहरी लगवा देता, अपनी दुख के कहीं आ काहें ना हरी लो । ए पंचो बरम्हाइन, जब अपना घर घर गइल बाड़ीं ओही लेके इन्दरका पवन दुबार, कहै लो जे सइंया मूरति नारायन धन सेनुर के लागताड़ मोआर । दोष नइखे ननदि, के कुल दोष कोलाम तोहने लो के, काहें जे तोहार परवा फुंके चलली ह त दूख लागल ह न । काहें उनुका बालक के संकेता डाल देले बाड़ जा, जे हमार ननदि परल संकेता बाइ । अहकि अहकि बा रोवति, फाटि गइलि छाती हमारि, जेंगो होखे ओ बिपति में सामिल होख जा, नात फूंकि दीहें कीला, घरघर देवता लो

कांपे जइसे कांपे वियाइल गाइ । कहे लो सुन ले बे ए बियही मनवे बाति हमार । हमनी का अइसन उरेब ना जनलीं हा जा हमनी का अइसन उरेब जनले रहितीं जात बहिन के पु ंछि ती दुख सुख त कहलसि नाहीं अब जा । जा जा कचहरी लगाव जा । त ए पंचे तनी सुनि ली खेला सुहवलि के'

आरे बड़ बड़ खेलिया भइलि बा बरियारि,
कइसे गयनवा लो सुहवलि के गावल ।
एके दिन में चलिय गइलि ह बरियाति,
कइसे सादिय भइलि हउदे सतिया के,
एही से जे अब बेकला में परि जाला परान,
सुनिल ऽ गाना ई मोर साचो अलबेला ।
आरे झक झुमरी उठलि बे लेलकार,
देबिया जो फुंके चलति सांचो इनरासन ।
अब बिपति परली गउरवे ना बाइ,
परली विपतिया रहलि हो सुहवलि में ।
देबी रोवे इनर जी का पवन दुआर,
लागे जब लागलि ए कचहरी अलबेला ।
जइसे मजलीस बइठल वाड़ीन लेलकार,
आंगो अब जेतना देवतवा इनरासन,
सभ कर लागल कीला में लेलकार
अब जब बइस गइल बर रे न कचहरी,
उंचे गादी पर जब बरम्हा ले लन रे लगाइ,
तब देबी पटकति बा आगी धरती में ।
आरे देवी अब चलली बाड़ी न कयलास,
धइली डगरिया सांचो हो जगदम्मा ।
अब देबी चललू कचहरी में वाइ,
ऊंचवेई गादीय लागल हो बरम्हा के,
जहा आजु रूहल बाड़े रे दरबार,
तलक बरम्हा उठिय गइल न रे लेलकार,
हां हां बहिन अलबेल्हा ।
आरे केहू, कांहे आइल बा आवा तोहार,
हंसली माई बाड़ीय ओइजा माइ जगदम्मा ।
हा हो भइया मानि जइत बतिया हमार,

इहे अब बचनिया आंगे न रहित पूछले ।
नाहिय दादा फाटलि रहीत छतिया हमार,
आजु हमार दुखि ते न मने होइ गइलं ।
तोहरा के फुंके ए चलली अब कैलास,
इहे अब बचनिया आंगे न रहित पुछल ।
नाही भइया मोटिये चलो हो लेलकार ।
हाँ हां हां हाँ

रमरेखा घाट शायद बक्सर में है

गद्य : आजु पंचे जाही दिनन के बाटे, तनी सुनिली इनर का पवन दुवार, जब रोइ रोइ देबी बाड़ी, कहति भइया मान बाति हमार । कहताड़ी जे भइया मान, मथी पीरीथिबी दुनिया कइलीं पाहिलगाइ । केहू दुनिया के अन्दर हमार सेवक ना भेटाइल, जे दे देइ पुजा हमार । टुटि गइल आस मीरुता में, हम जाके गोता रमरेखा लिहली लगाई । गोता लगा के रमरेखा सोंचि के रंथि कइलीं तइयार, जे चलऽ अब हमसेंइ डोरी भइया के ओहि इन्दर पुर बजारि टुकी खाँड़ा खाइ के हम करत रहब गुजारि । हमरे काका नाव रखलन पेटहिया । दुनिया का अन्दर ना लागल थेग हमार । आस भइया टुटि के हम आवत रहलीं तोहरा पवन दुआर, कासी के लागल रहल तपेसरी, ओही भीरुग-मुनी करी दरबार, घुमि गइल मलक मीरुता में, तिकवलीं मीरुत मण्डल संवसार । अंग पर अंग छिलात रहल, दुनिया के मनवा सब गइल रहल बिटुराइ । फेरु हमार लालच दवर गइल, आ परस नीचे दीहल ललकार । आजु भइया, आजु भइया हम तोहरा से दुख रोवतानी आ सुनऽ दुख हमार ।

आजु दादा मोरि घुमि गइलि ना ऽ
रंथिया दादा पाँछअवा के,
चली गइली भइया भीरुगुन का पवने रे दुआर ।

गद्य : चढ़त रहल जल, चढ़त रहल जल खुब अच्छी तरे आ सब खेखी में जल ले के जय योले । ओ ओहि कीला मीरुगुन का पवन दुआर । जाके खड़ा भइली फाटक पर जाके मीरगुन का पवन दुआर । जेकरा भरि तनको आसा देदी बीर गीर तारे दांत चियारि के टगराइ चन चन फुटे लागल खंसी उ जल गइल बाटे बहाइ ।

भृगु मुनि का उल्लेख

आजु दुजा बढे हो गइल ओहि ले के बलिया सहर गुलजार। खुलि गइल तालो अब भीरगुन के, तिकवसु नयन पसार, जब फाटक पर बाड़न देखले, धाबल हउवन हा हा इ, कहलन जे बहिन केवनी गरज की लगले चलि आइल बाया तोहार। भइया भीरगुन, अब हमरी दुख के पुछे लगलन, त कहलीं जे ए भइया, हम पीर-थमी कांड़ि घलली, कते हमरा अइसन सेवक ना भेंटाइल, जे दुनिया के अन्दर देइ पुजा हमार। हमार आस त टुटल जात रहलि ह। अब भइया ओने डहरि घ ले ले रहली हं, बाइ आधा आकासे जब गइलीं हं आ जब देखलीं ह मेला लागल, जे पर अंग पर अंग छिलाइ, फेरु हमार मन घुमि गइल ह। मन जब घुमि गइलह त फेरु रथ के लवटा के भीरगु की हैं ने गइली हंत। ए भइया हमरा के इहे कहतानी जे हमरा त आसि रहल ह जे एहि दल में हमार सेवक भेंटा जाई। बाइ तूं ढेर दिन के आइल हउव, आ तू जानत होइब जे सेवक हेइजा वा।

आजु भइया हमरा सेवकेइ के, ए पतावा तू एइजा लागाव।
केवन बीर देइ देउ न पुजवा रे हमार।

गद्य : के पुजा देई। कहलन जे सुनऽ बहिन, आजु हम तोहसे कहतानी, जे आजु तोहार मंदिर हम बनवा देतानी अपनी बगल मे। आ अपना मंदिल में हम बानी। अपनी हिस्सा में, अपनी हम बखरा में, आधा हम तोहके चढ़वाइ ब। आधा बतासा आ जल तोहरी मस्तक पर चढ़ी, आ आधा हमरा। कहली जे हाइ हो भीरगुन, आरी हम तोहरी जल में आगि लगाइब हो। ओ बतासा में अगिनि देइब लगाइ। इहे जले खाये के रहीत आ बतसे खाये के रहीत त हमरा के पुनियरु ना मेंटइतन। आगि लागो तोहरी बतासा में भीरगुन आ जरि जाउ जल तोहार। बीर बतावऽ। हमरे नांव काका पेटहिया धइले हउवन, नांव ओहि इन्दरपुर बजार। जे बोर हमार पेट के भारी ओकरो हम मारि के पाहि देइब लगाइ।

भइया भीरगुन कहलन जे इहे पतरे डहरि घइले चल जा बोहा में, एक पाठा बाटे बीर मल सांवर सबसे बीर ऊंपर बाटे, उहे तहार पूजा देई। आजु भइया व्याकुल हमार मन रहल छोड़िके भीरगुन के फाटक, अब धँवलीं सरउंज बोह मंझार। चलल गइली चलावल, जब सुरहन गइल रहली हेठियाइ, सात फेड़ पीपर रहल लगावल, सात पेड़ पाकड़ लगावल बाइ। बन रहल हर संकरी गाइन के बीर के रहलि अड़ार। ओह घरी जब लवटि के घुमि के अइलीं त जम रहल मेहतन

धरमी के। देखलीं रोबइ सुरुआ के जइसे अद बुद मन हो गइल हमार कहलन जे धनि भाई अलबेल्हा सांचो हमार सेवक दीहलन भेजाइ।
इहे पूजा बीर हमार देई, दूसर, पुजा कोइ देबे वाला ना बाइ। अब जाइके खाड़ा भइली हर संकरी तर, अपना मन में कइली विचारि जे साधि लेइं। सुन्दरे का जाने होखसु हमार न पुजा देसु। तब भइया बारह से मर्‌ही आह चौदह से भूत बेताल, जेतना भार ह पीरथमी के हम मस्तक पर लिहलीं चढ़ाइ। फानि के बीर के चढ़ली लीं लिआरे, ओहि सरउंज बोह मंझारि। नाचि गइल देहि सुरुवां के भरि मुंह माटी ले ला उठाइ। नाचि गइल देहि सुरुवां के भरि मुंह माटी ले ला उठाइ, (पुन०) चिल्हिकि के लाभा भाग गइली सुरहन में।

जेईत आजु लछना लागल बरियार,
इ रोबवा ना देके बानी परल।
इ ह लाछना लागिय गइल बरियार,
टुटि गइल आस बोहवा में,
अब नाही मिलिहं सेवक रे हमार।

गद्य पद्य : भइया ऊ बीर मुरझा के फर मन उठल, ओकरा सोचि हो गइल, जे केवन भूत बैताल हमरा के दाबि दीहलसि। कबे अइसन ना भइल ह। मन में सोचलीं बोहा। बोहा छांड़ि के अब हम चललीं गउरा, कहलीं जे देखीं त एकरा का जाने केहु खानदान में, आ गउरा नगर में हमार सेवक होखे काहें जे भीरगु बोलवले बाड़न। जे भइया छोड़ि देहलीं बोहा जब चढ़लीं गजन गउर गढ़ पाल। चढ़लीं गजन गउर गढ़ पाल। चलल अइलीं चलावल, जुमि गइलीं, बुढ़िया का पवन दुबार। छव महिना के बालक अ बीर हुमड़त पलंग पर बाइ। अब हमार बेलम गइल रथ भइया गउरा में, चढ़ि गइलीं ओहि बुढ़िया का पवन दुआर। चलल गइलीं चलावल, मन में कइलीं बिचार, जे का जाने ए डींगर के हम सेवत रहि गइलीं। आ दुहुत भइल सेयाने, एकरो उहे का जाने हाल भइल, अबहीं बारी उमर के लफुवा पलंग पर हील ता। अब मन में सोचि के भइया हमरा धीरजा न परे। ओइजा कइसन काम कइलीं, जे थोड़ा एक मर्‌ही-भूत बेताल लेके अपनी गाटा पर ले के जब ओकरी सीना पर दबवलीं त लड़िका अंगराइल। जेतने जब दाबी ओतने जब अंगिराये लागल त अब भइया सावे लगली लड़िका के। अब हमहूं बारह से मर्‌ही लेके चौदह से भूत-बेताल, जेतना भार पृथमी के आ बीर के सीना पर दीहलीं चढ़ाइ।
तबोबीर अंगराइल, तहिये ले हम सेवे लगलीं ना, ओरिया हमरे लोरिका के,
ओहि आजु गजने गउरवे गढ़े पालि।

गद्य : एक हाला खोइलनि अबटे, त दिन भर में हम दूहाला अबटीं। दू हाला अबटे त चारि हाला हम अबटीं। जइसे मलहोरी फुलवारी सींचे ओतना हम लेके सींची लड़िका के ओहि कीला गजन गउर गढ़ पालि। बारी उमर के लफुआ सीरे सोंभे नवुज के बार ! लरबर धोती पहीरे, डांड़े होलत रहल करिहाव, लचर लचर करे पीड़ुरी, हीये कबुज के हारि जवनी बेर घुमे बीर बघेला ओहि गजन गउर गढ़ पालि। लड़िका लड़े लागल अलबेला। अजईसंग में रहल पहलवान। रोज रोज बल बढ़े लागल ओही कीला सोना सुहवली पालि। रोज रोज जब बल बढे लागल गउरा में, त तब जब फगुआ हमार लड़िका खेले गइल, एगो स्त्री जब मार दीहलसि मेहना, ओहि मेहना के सीव में आजु हमार बालक अन के खा घललसि किरिया, जल के मंदिर बोली हराम, कहे बीचे पानी पी घाली मारब कैर कपिला गाइ। हे भउजी, अजुए अन के खातानी किरिया, जल के मंदिल बोली हराम, बीचे पानी पी घालब, मारब केर कपिला गाइ। बान्हब मउर संवरू के, मुहवलि करे जाइब वरियाति। गाड़ल भाला उपारि के बीगब मोतीसगढ़ की घाट। बावन बुरुज के तम्बू, बावन मींटादेइब गड़वाइ। रेशम सूत के डोरी आंगा पिथरी झूली कनात।

आरी पास के मुखुमा, बीच में हड़िया जरी गिलास, तेगा लागी बताइचा, बरछी माड़ो देइब छबाइ, ढाल के लागि जाइ ओसारी ओहि लेके सोना सुहवली पालि। आ जवनी बेर पांख के मतही लकड़ी बजवाइ पाछे बियहुती देइ बजवाइ। मारुक डागा पिटाई ओहि सोना सुहवली पालि। सुनी बेटा बमरा के जेकर गजे भीमलिया नांव। उलटा कछा चढ़ाई। दीपतल माल बरन के बा, छाती बान्हि देइब लोहसाइ जे पर बरछी मना होइ जाइ। अलोगंज केजूता अ बीर मोजा केइ चढ़ाइ। बांधीं पाग गुलाबी जेहि पर जिला अलंग फहराइ। अस्सी मन के मुगदर पाठा गरया लिहन लगाइ। हीलि के पग दबइहन अइहन मोतीसगढ़ की घाट। परी माहि सीवाने, पंजा हेलि चली तरवारि, मूंजि के कलसा धराइ, रोधिर कोहबर देह पोताइ। छाती जुआ गड़ा के जांघ के सेहरी देइब टनवाइ।

धरब झोंटा सती के संवरू के करब बियाह। सती खोंइछा के चाउर गउरा होइ पंथ हमार। भवानी अपनी दुख के पंचे इनरासन में रोवतियाड़ी। एतना हम तकलीफ उठाइ के आ बाचाके हम पलनी। जब रानी मेहना मार दीहलसि आ कीरीया बेटा खा घललसि। त भइया कीछु तोहनो लो जानत होइब जा। अब लड़िका हमार पूजा ठानि दीहलसि आ इनरपुर मे पेंघति रहल देहि हमार। जेवनी बेरि भइल मीरुत लोक हुमाधि आ इनरासन जब खिलल धुआं त सभ

जय जय कइले हु । जे केहु अइसन जगि करता मीरुत लोक में । तब हम छोड़ि दीहनी तोहार गादी । ओल्हि गइलीं मीरुत मंड़ल संसार ।
जाके खइनी पुजा बेटा के ओहि गजन गउर गढ़ पालि । पूजा जाइके का खइलीं जे काका हमार पेटहिया नांव धइल ही रहलं । सवासइ खपर हम बटुरी चाट घललीं, जब खपर चटलीं त आगि लागलि हमरा देहिमें, कहलीं जे हाइ लाल न सुतलि भूखि जइवल अब जल्दी कर तइयार । जब खंसी भेड़ा बघन करे लागल । देबे लागल पतारि । पीये लगलीं, रुधिर अलबेल्हा । पीये लगलीं ढेरो मन लगाइ, बटुरी खंसी भेड़ा के रोधिर पीये लगलीं ओठ लगाइ ।
तब आजु फेरु रोवलीं जे बेटा बटुरी मुह खांड़ अड़े अध काटलि अड़े जोग ना बाइ । सुनल बेटा करतबो जवन बीर ले ले हउवे अवतार । जब कते की गाड़ तरबुजे नाहीं खेत में नेवता देह । आ हमसे कहीं जे हाइ हो बेटा काहे के अइगा दीहल ह आधा पेट ना खियावे के चाहीं, अब बीर की रोध ले के हाथ के तेगा नचा के अपना जांधा देले हउवे हीरकाइ । हीरकल तेगा अलबेला रोधिर चलल फुहेरी पाइ । लगली बीर के रोधिर पीये ओहि कीला सरउंज बोह मझरि । नाहीं पेट बा भरल अबहीं कीछु-कीछु नाहीं भूखि अड़ाइ ।फेरु कह लीजे हाइ लालन इत पी लिहली बाइ अबही कीछु-कीछु तनी तनी कभी हो गइलि बा ।
त आजु बेटा हमार कइ दीहलसि कघलंगिया जब जीभिया के,

आ रुधिर जब छोड़िय देले बा फुफुकार ।
अब भइया ओठवा में ओठवा न बानी मेखले
जइसे गंगा फाटिय के चललि बाड़ी दरियाव ।
ओंगों बीर का चलल वा रोधिल वा जीभवा से ।
दूनो बगल फीच फाटे ना रोधिर रे बीगाइ ।
आजु हमार गइल ना पेटवा उ अलवाबेला ।
खेतवा में जय जयकरीय ला जयकार ।
जब हम जय जय न करीलं खेतवा में,
ओहि जाके गजने गउरवं गढे पालि ।

गद्य-पद्य : ए भाई ज ब हमार शरीर भरि गइल, त ओइजा का बरदान दीहली । कहली जे हाइ बेटा आजु हमार जइसे गउरा में पेट भर ब, ओंगो लोहनि में पेट भरब तोहार, जहां ढुरि जाइ पसेना तहांगीरि जाइ खून हमार । भइया एतना पूजा ह बीर दले आ चढ़ल वा सोना सुहवलो पालि । बुटुरी बरात ओकर गायब हो गइल बा आ जाइके ओही सुरहन के निकट धराइ । दूनियां में भीठा मंगवली । लड़िका के जोगी दीहली बनाइ । आरे ढुढ़ली पारे कुड़ियां ढूंढली

पाहि लगाइ, कते हमरी बरात के पाता नइखे लागत अधजल में परल बा बेटा हमार। एकर रउवां सब भेद बता देइं। एहि इन्दर का पवन दुआर।

आ हां ऽ हां ऽ हां
आजु पंचे जाहिये न दिनकर बाते,
तनी अब सुनी समर के हालि।
जेवनी बेर दुरुगा जो अरजी लगवली लेके,
आवा इन्दर जी का पवन दुआर।
आजु जेतना देवता इनरासन सम भवानी के,
अरज सुनले ह कान लगाइ।
बाकी भइया केहू क अकील न डुबे,
जे कहां गायब भइल बरियाति।

गद्य : देवता सब सोचे जे केवनी जगह से बराति भइल गायब, केवना अमला में गइल। एकर हमनी के ढुंढे के चाहीं। देवता लोग इनरासन ढुंढे लो केलास के उपर ढुंढे लोग आकाश के ढुढे लोग, ना जब पाता चलल तब लो का कहले ह, कहे लो जे सुन देवी बहिनि दुरुगा, अगर जो आकास के बराति आइल रहित आ नाही इनरपुर में, एक डावो जो करे इनरपुर आइ रहिति बराति के एने त पाता हमनी से ना लागी। एकर पाता के जानता जे पीरथमी का अन्दर चोरी हो गइलि बा। त ए चोरी के जनकार के होइ आत शेष नाग। शेष नाग ए चोरी के जरूर जानत होइ हन, आ उहे ऊपर करीहन। तब भवानी रोदन कइके कहतारी जे भइया शेषनाग बिखिघर हउवन, बिखिधर हउवन, (पुन०) संग में वालक लगा के हम जम्ह कातरि तोड़िके उनकी देवढ़ी पर जो चंहुपी जाइब त बोगि दीहन जब लहरि त हमार बेछा जरि जाइ। भइया आजु हम कहतानी इनरासन में जो कारज होखे हमार, त अधिका काम केहू के नइखे। गरुड़ जी के हमरा के दे द ऽ। तब हम पुरी पताल में जाइबि।

आजु पंचे, भवानी जब अरदात लगवली देवतन के हुकुम भइल जे हे गरुड़ जी जे अब जा संग में।

आजु पंचे जब सुनिली बयान—
बाकी आजु अजब हउवे ना आ गीतिया साचो सुहत्रलि के।
ए पंचे गर बिन बिगडत बाड़नि ना गानावारे दहे हमार।
एहि खातिर आपन बेटाइ पालल बाड़ें दुनिया में।
थाकला में आइ जइहन ना कामवाइ रे हमार।
रतिया बदुरी रोइ रोइ ना दुखवा के बानी न कहत।

ओहि आजु तनिकोइ ना सुनलनि हो आराएदाति ।

बालक रूप में लोरिक को लेकर दुर्गा का शेष नाग के पास जाना—

गद्य-पद्य : ए पंचे दिन जब पातर हो जाला ओकर हित केह ऽ जब भवानी के ना हित भेंटात रहल त हमार दुनिया के अन्दर भेटाइ । बाई पंचे जेतने हमरी सरीर के अन्दर बाटे हम कहि रहल बानी । आदि शक्ति भवानी गरुड़ जी के ले के भगवली ओल्हल हवी बाघ सिंह दू डंवरु, रंथि हांकसु बेरुर कुबेर । बइठलि माइ जगदम्मा ले के अइली सुहवलि केरि बजारि । चलल अइली चलावल चढ़ि गइली मोतिसगढ़ की घाट, कहली जे सुन धरती अलबेल्हा एइजा मान बाति हमार, देद थाती हमरा के सागड़ पर, अब हमरा कारज लाग गइल भारी ।
पंचे, जब भवानी मांगतारी थाती धरती से, अब बीर निकलि गइल अंगिरा के । अंगिरा के जब निकड़ि गइल रोइ के कहतियाड़ी भवानी जे हा हो लालन, तहरी कारन भीड़ से मोटि परि गइल, कीला फूंकली, आजु इ मोटि कहां ले कहीं जनम भरि हमार नइहर भाई । तोहरी जड़ की खातीर हम इनरासन फूंके चलि गइली । बाई अब आकास पर नइखे गइलि बराति । आ ना इनरासन गइल, बराति गाय बहो गइल धरली का अन्दर । आ जब हम तोड़बि जम्ह कातरि आ तोहके ले के चलबि पताल ।
लड़िका कहे जे भइया मोर भवानी जी तहरे धरम का पाछ । जतने कहबू मीरुता में ओतने करब कहल तोहार, हमके संग लगाव ले चलू नाग का पवन दुआर । केंडो चललि ह भवानी पंचे । जब जम कातरि तोड़ले हवी जगदम्मा लेके चलली छव महिना के बालक बीर के बना के । आजु देबी तोड़े लागल जम्ह कातरि, काली दह में ले ले हवी पइसार । संग में पाछा गरुड़ के हवी लगवले, चलि गइली नाग का पवन दुआर । लागल रहल नीनि नाग के नागिनी बेनी डोलावत बाइ । गोदी में बालक लेइके भवानी नागिनि से बोलत बाइ, कहे जे सुन लेबे ए नागिन मनबे बाति हमार । सुतल पती जगा दे, हमरा कारज लाग गइल बरियार । जरे बदन नागिन के, नजर उपर देले उठाइ, देखे रोब लड़िका के, धइके दांत से आंगुरि चबाइ । कहे भइया मोरि भवानी देवता मनबू बाति हमार ।

आजु जेकर लंगर लुझ ? हो जाला सेकर भाइ झांके कुंआ इनार । केकर हइसन लालन ले के चलि अइलू हमरा पवन दुआर । पती के कहत बाड़ु जगावे के लेजे मीरुत मंड़ल सवंसार । जब दाबि देइबि अंगुठा पती के लहर बीगि देह फुफुकार, जरि जाइ बालक अलबेल्हा औ रानी के दीया जाइ बुताइ । नागिन कहतिया

जे जगावे के कहताड़ू बाई हमार बिखिधर नाग हउवन अगर जो हम जगाइबि, त कीरोध लेके उठेलन, त जरूर फनी पर अगिन दीहन। अगिन दीहन त जरि जाइ बेटा तोहार। जरि जाइ बेटा। भवानी कहतियाड़ी जे हे नागिन अगर जरि जाऊ भा मरि जाउ, ओइसन हमरी जरूरत आ गइल बा। दाब नाग के जगाव। कहतिया नागिन जे जगाइं आत हृ जगाव। पंचे :—

आजु नागिन धइ धइ ना आ आंगुठा न बाड़ी दबवले।
नाग फन्नी उपरकेइ बीगलनि ए लेलकारि।
तबलक दुरुगा गंड़ल जीय के अंगवा ठेलि बाड़ी साचों ना ए देले।
गँडुल बाबा पंखियाइ ना देले बाड़नि ना फाहा ए राइ।
जाके उनकी फन्नी पर न नाग दानी न देलन।
अब नाग लोटलेइ न धरतिया में बबुआ बाइ।
अब नागिन त्राही त्राही ना करे लागलि कालीय दह में।
आजु दुरुगा काहे मरलू न पतिय ऽ रे हमार।

गद्य : अब नागिन त्राही त्राहि करे लगली हाथ जोरिके के हाइ भवानी ई कवन हम बीगरी कहलीं, जे आजु हमरी पती के दुसुमन ले के आ चढ़ि अइलू। इनकी डर के मारे हमनी का जल में नोचे काली दह में अइलीं। आ आजु ओही बादी के लेके हमरी पतो का सिर पर बइठा दिहलू। कहतिया जे सुन नागिन जेतना तोहरा पीड़ा आइल बा नाग के आ धरती में गीरल बाड़न ओतने पीड़ा हमरा हइ लालन के आइल बा। एतने दरद जानि जा। हे नागिन हम तहार पती मरवाये खातीर नइखीं आइल। बाकी हम जानत न रहलीं हृ जे हमार अरदात ना सुनिहं, ओसे हम मारुक तहार लेके आइल बानी, जनि रोव। बाकी अपनी पती के समझइबू न कहतिया जे अब हम समझाइबि कहां ले, अब त उनका कपरे परि गइल बा।

हे भवानी अब त कपारे परिगइल इनका, तब भवानी कहतियाड़ी जे हे गडुर अब छाड़ि द। एतने के हमार कारज रहलि ह, आपन स्थान के धल। ए पंचे, आ नाग पटाइल बाड़े। भवानी कहली जे हमार कारज हो गइल गडुर के। अपनी चलि जा सीधा रास्ता के। गडुर जी जब रास्ता ध लिहलं। तब जाइके नाग से पुछतियाड़ी। आ नाग उठि गइलं, केतना काँप सु जे जेतना बियाइल गाइ कांपे ओतना। कहलन जे हाइ भवानो इ कवन काम लगा के हमार बादी लेके चलि अइलू हृ।

नाग द्वारा दुर्गा को बारात के बारे में सूचना दिया जाना

देबी कहतिया जे हे नाग आजु हमरा कारज लागलि बा जे तोहरे राज में आजु हमार बराति बदुरी गायब हो गइल बा, सुहवलि में। नाग कहलन जे ठीक कहतानी त हम बता दे तानी रउंआ बराति के। इ सती खेला कइले बा। सती खेला कइले बा। सत के गेंड़ा बनवले बा। एगो ओकर ओठ धरती में लगा दीहलस ह एगो आकास में धरा दीहलस ह, ओही में राउर बदुरी बरात लिलवा घलले बा।

ऊ गेंड़ा सुरहन में मुंह में पोंछि डालि के आ लोटि रहल बा। भवानी कहतारी जे नाहीं कहले ना बनी। चले के परी। गेंड़ा कहताजे नाही नागकहताड़न जे नाहीं, हमरा के सासत दे देइ। कहली जे नाही जेतना सासत हमरी सरीर का भइल बा, उ खेला कइले बाड़ी। तब तोहरी नाक में हम बरहा पहिराइब, जइसे क्रेसुन जी नाथ के आ कंस कीहें ले गइलं फूल लादि के। ओहिंगो तहरा हम नथिया पहिराइ ब। आ के चलब सोना मुहवलि पालि। गलीगली घुमाइब उ सतिया देखि ले ऊ नयन पसारि। सती के खेला देखावे के, तहके ले चलब हम नाग ओहि सुहवलि केरि बजार।

पंचे भवानी का हो गइल प्रन जे जेवनी बेरी कंस की दुआर पर गइल हउवन आ क्रेसुन नाथि के ले गइल हउवन उहै नाथ चढ़ाइब आ तोहके ले चलबि सुहवलि केरि बजारि। सुहवलि में ले के नाच नचाइबि, ओहि ले के सोना सुहवली पालि सती से नजरि के देखा देईं जे हमसे धरमवता देखि लेउ। ओहि चलिके सुहवलि केरि बजार। पंचे भवानी बरबस ले के कुश के बरहा नाको में डालि के एक बरहा लड़िका के धरवा दीहलीं। लड़िका के बरहा में धरवाइ के भवानी कहतारी जे चलऽ। नागिन त्राहि त्राहि करतियाड़ा। जे हे भवानी, कहली जे नाही हम जे तरे तोहार जे जा तानी पती, ओहिंगो पहुँचाइबि। बाइ आजु अपनी कारज खातिर हम ले जातानी, ओहि सुहवलि केरि बजारि। ए पंचे जइसे क्रेसुन जी नाग के नाथि के कमल के फूल लादि के कंस के ले गइलं।

ओहितरी भवानी ले के अब नाग के लरिका के धरवा के चललीं सुहवलि केरि बाजारि। अब पंचे जेवनी बेर लरिका ले के बरहा बाटे धइले आ सुरहन में जब नाग के देखत सतिया जब बाइ छाती मारे गदेला धइके। दांतन आंगुर चबाइ। पटके मुड़ी कोठा पर ओही सोना सुहवली पालि। आहा दइब नरायन का विधि उगील देल करतार। विधि बरम्हा के लिखनी बीधे मीटे जोग ना बाइ। अजब कहे दुरुगा के इहै मीरुत मंड़ल संवसार। आजु हमरे जीव की

कारन इ फजिहति होतियाटे बरियारि। अब भइया गली गली भवानी नाग के नचवली।

आरे सतिया उ रोवती सुहवली में बाड़,
आजु रोइ रोइ बाटे जब कहत,
आरे दुरुगा नाहीं छोड़लू पती रे हमार,
बासवा में लुगवा दूनिया में टांगि देलू।
देसवा में लूटलू इजतिया हमार,
सदियाना लिखली बाड़ी हो इनरासन।
बरबस में लूटेलू इजतिया हमारि,
सदिया नाहीय मोर लिखल इनरासन।
बरबस में लुटेलुतू चीरिया हमार,
कालीय दह में नाग के नाथि देलु।
गली गली सुहवलि देलू रे घुमाइ,
सोचे बेटीय जब लागलि बमरा के।
जेकर पंचे सतिया मदइनी बा नाव,
बटुरिय गलीया घुमावलि जगदम्मा।
तब लेइ गइली सुरहनी में बाइ,
धई के बरहवा देबी न लेइ गइल।
जहां गेंड़ा लोटले बाड़े रे बरियार।

भवानी की सहायता से लोरिक द्वारा गेंडा के पेट से बारात निकाला जाना, वर संवरू भी बाहर निकले

गद्य-पद्य : ए पंचे भवानी ले गइली जहां गेड़ा बराति लीलले बाइ। कहतारी जे कहां बराति हमार वा देखात। नाग कहतारनजे उहै बाटे, मुंह में पोंछि डलले बा सूतल बा। देबो कहली जे मार बेटा। देबी कहतारी केइो बराति निकड़ी। बताव एकर बिस्तार। नाग से पूछ तारी नाग कहतारन जे बस इहै गरदन भर खाली बा अगर जो बीचे छुरा लागी त बहुत बरियाति खंज हो जाई। अब ही एगो बराति एमें खंज नइखे ओहु खातिर त भवानी जीवे न मारे लग बू। काटि ल ऽ गरदन गेंड़ा के बरात निकड़े लागी। भवानी कहताड़ी, जे हे लालन जाके काटिल गेंड़ा के अब मुंड।

ए पंचे, लोरिक जब काछा काछि के ऊपर माल बरन के गांठ छाती बन रहल लोहताइ जेपर बरछी दोना होइ जाइ बायें ओड़न नैपाली, दहिने सांसरि बिजुल

के खांड । छपन छुड़ी बगल में, बीर का लिंगि झूलत रहल तरवारि, ऊपर सोभे पाग गुलाची, जेपर जिला अलंग फहराइ, अब पाठा जेतना बल भुजा में लेइके गेंड़ा मारे चलल हउन । जब बीर चलल गइल चलावल, गेंड़ा के ले ले हउवन नियराइ । गेंड़ा लेके पोंछि झटकारे, आ ऊपर जब आंखि नचवले बाइ हो गइल भइ सुरुआं के, लामा रोवल बघिनि के लाल भइया मोर भवानी । अब जीव बाचें जोग ना बाइ ।

ऊपर के मुंह बा बावत लीलि घाल चाहता बाथा हमार ह'सलि माइ भवानी जेकर देबी अपरबल नांव । बेटा मोरि अलबेल्हा अब बोर मान बाति हमार जो चलो अइली मीरुता में, के लीली बाया तहार, काटले मुँह गेंड़ा के । जब भवानी ललकार पंचे बन्हली, त तव कहतारी जे काटिले जब हम संगे चलि अइलीं त केइसे तोरी सरीर के लीलि घलिहन ! तव ए भइया लोरिक धरती एड़ दवा के कुदल बाड़ें बेयालीस हाथ । मारे तेगा गरदनि पर उ मुंडि दूइ टूका होइ जाइ । लागलि बराति निकड़े अहीर के । ह' जब बराति लागलि निकड़े ए भइया । बटुरी बराति जब निकड़ि गइलऽ बाइ दुलहा अगुआ के पाता नइखे ।

तब भवानी कहतारी जे हाइ नाग, इ कुल्हि बराति हमार बेकार निकड़ल जे आजु हमार दुलहे नइखे आ अगुआ अजइया नइखे । तब कहलन जे हे भवानी उ टेढ बांस पलकी के वाटे ओकरी पोंछि का अन्दर में ठेकि गइल बा, अब एके फारि द, तब निकलि, हे दुलहा । अब भवानी अपने सनमुख लेके नागजी ऊपर सरीर के फरववले हउन । ओही में अंगीराइ के बोलता धोबिया जो हो हो इ रे पहुँच रे भाई अनला में ढुकले हो गईल, बोलस बा बींर बघेला जेकर बंका लोरिक ह नाँव । कहे जे बजरपरो ए मीता ओंहड़े जइतऽ दबाइ हम्म जनलीं जे जानलि डहरि ह सुहवलि के, लेके सोना सुहवली पालि । झइसन तू अनला में राम कइल ह ओइसन सुहवलि जनि सुतऽ बादी हमार ।

आ हां हां हाँ,
आरे पंचे अब जाहिये दिननवा के बाते,
तनी अब सुनो समर के खेलवाड़ ।
आजु निकड़ि गइलि बराति सुरुआं के,
आ सब होइ सुरहन के निकट अरार ।
अब पंचे गरुड़ (गरूल ?) के भवानी ले के,
काली दह में देले हई पहुँचाइ ।

गद्य : काली दह में भवानो नागिन के कहली, जे देखु तोर पतो ले अइली ह' ओ

ढंग से अब पहुँचा दीहलीं । अब हमार कारज हो गईल । एतने कारज खातीर हम तोहरी पती के ले गइल रहली हाँ कहलसि नागिनि जे धनि भागि, पंचे जब ओइठा के चललि हइ भवानी सुरहन में बटुरे रहलि बरियाति कहतारी जे बेटा मोरि अलबेल्हा अब बीर मान बाति हमार, धोबो देख रास्ता बा कहाँ बाति चलो । बोलल बीर अजइया देबे लागल जवाब, कहे जे भइया मोर भवानी, आंगा मान बाति हमार, बारह हाथ अब निगिचा गइल बा, अब करीबे में डेरा परबो करी ।

सुहवल में मोती सगड़ पर
भीमली का गड़ा हुआ भाला देखकर बारात चिंतित

आंगा आंगा ए पंचे, चलल बाटे अजइया, पाछे ले बटुरी चललि बाटे बरियाति । चलल गइल चलावल अजइ चढ़ि गइल सगड़ पर बाइ, जाहाँ छत्तीस हाथ के गाड़ल बा पानी हुआं । ऊपर लिख के टांग रहल पतरिका, ओहि ले के दादा मोतीसगड़ की घाट बराति जेंव उतारि के खड़ा होतिया से अजइया ठोलता जे हे मीता तोहके बेरि के बेरि बरिजली ओहि गजन गउर गढ़पालि, अब तोहरा से पूछतानी भइया ए सागड़ पर बाति दे ब बतियाइ । दे का लिखल बा तिलाक । लिखल बा जे बाराति आइ, जे गाड़ल भाला उपारि के बीगि देई आंगे भाला ऊपारि के भइया बीगि देई उहै बीर बावन बुरुज के सभ बावन भीटा देइ गड़वाइ । के वीर आइल बा अइसन सुहवलि में । के हइ गाड़ल भाला उपारि के भइया बीगि दीं मोती सगढ़ की घाट ।

ए पंचे, जब एतना बाति अजई कहले हउवन । त ओमे एक एक बीर बघेला दूजे लो रहल दइब के लाल । देखल भाला लो भीमला से सभकर हलक गइल झुराइ । का झुराइल-हाइ भगवान केकर काल गरेसल, केकर मउअत गइल नियराइ के भाला के उखारो, एहि मोतीलगढ़ की घाट । अब बीर सोचेला मन में जे अइसन बीर हमनी का जनलीं जा, इ त हमनी क गउराके गवननि के छुटि गइल गवनहरि दोंगा करी बहुआरि, छुटि गइल सेजि हमनी के झुलनी छुटि गइल बयारि. जनली के चांपे के परी फुलवरा, कलीयर के खाइब मेख लेलकारि । इ त भइल फुलवरा जीव के काल दादा एहि सोना सुहवली पालि । जेवन बीर गाड़ल भाला उपारि दीहन, आ बीग दीहन मोतिसगढ़ की घाट । ओकर पानि ना छोड़ी जान भीमला, एहि लेके सुरहन का निकट अरार ऽ

ए पंचे, जेतना बीर लो गइल रहल ओ भाला देखे से सबकी मुँह पर फेफरी आ गइल । लोरिक घुमें, आ ए पंचे बरात जब भाला की है गइल बा त भवानी

उत्तर भींटा चलि गइल बाड़ी। अब लोरिक ए पंचे गर में गमछा लगाइ के घुमे लागल। का घुमता जे ए भइया एही खातीर हम नेंवता देले हवीं इ आ सब बीर हमार करे अइल बरियाति, त जेकर जांघे बल जो होखे आ भुजा बढ़ल होखे बलुसाव, अब कवनी दिनराति के भइया गाड़ल भाला उपारि के, भइया बीगि द जा मोतिसगढ़ की घाट।

जेतना बड़न करधनिया नाहीं ना कइलन। ए भइया हमनी से भाला उखरि ना सके। सब बीर जब नाहीं कहि दीहल त बीर का हीनता आ गई ल त पंचे, छोड़ि के भाला अलबेल्हा रोवत चलल जहाँ बइठल दुरुगा माइ। हंसे बेटी बमरा के जेकर सती मदइनी नांव। बड़ बड़ पोइनि पोइव लन डिगरु मरलन बड़वरे गाल। हो गईल भेंट भाला से एही मोतीसगढ़ की घाट। देखि लीं सान अलबेल्हा। एहि मोतिसगढ़ की घाट, जे केवन बीर गाड़ल भाला उपारि के, बीगि देलं मोतिसगढ़ की घाट, पंचे सती बा से अटारी पर बइठ के, आ जब बीर दुरुगा की हैं चलल हउवन, तब ओकरा का ओइजा भइल बाटे। जे बड़-बड़ इ पइन पुआइं के आ गउरा बनल इ गालि मरलह।

आजु परिगइल काम भाइ का भाला से देखीं जे केवन बीर गाड़ल भाला उपारि के बीगि दे ल मोतीसगढ़ की घाट। हंसे बेटी बमरा के जेकर सती मदहनी नांव। हीनि के पग दबावे बीर ओने आखाड़ा जाइ चलल गइल चलावल। गर में कफन ले ला लगाइ। मइया मोर भवानी जीव तहरे धरम का पालि, गीरि परल चरने पर रोइ रोइ करे लागल बयान, कहे जे मइया मोर भवानी देवता मान बाति हमारि एक एक मर्द जोधा दुजे लिहली दइब के लाल जेतना बाड़न करधनियां सुहवलि झारि के आइल बाड़े बरियाति। देखल लो भाला भीमला के, सभकर ओठ गइल झुराइ।

पंचे जड़कलि माइ भवानी जेकर देबी अपरबल नांव, कहे बजर परो ए बेटा ओइड़े जइतऽ दबाइ। बेरि बेरि वरिजलीं ओहि सोना सुहवली पालि। हमार कहलना मन ल ओहि गजन गउर गढ़ पालि। आइके दाबि के चढ़ल सुहवलि में, वीर ले के चढ़ल बाड़ मोतीस गढ़ की घाट। आजु हम कहतानी बेटा तोह-रासे एहि मोतीसगढ़ की घाट। आजु हम भाला ना छुअब ना लागब तोहरी गोहारि। आजु जो गाड़ल भाला उपारि के बीगि देब एहि मोतीसगढ़ की घाट। काल्हि पूरबे लागी लोही, पछीं होखे लागी उजियार, कउवा टेरि उठाई। भोरे भोरे होखे लागी बिहान काल्हु बेटा डंका बजाई। सुहवलि धरब संग तोहार।

भीमला मूंग सड़सा चढ़ाई व रोधिर कोहबर देइब पोताइ छाती पीड़ा गड़ा के,

जांघ के हरीस देइब टनवाई, धरब झोंटा मउरी के, संवर रचि के करब बियाह। सती खोइंछा के चाउर भोजन करीह गजन गउर गढ़ पालि। बाकी आजु तहार हम मन थाह तानी भइया एहि मोतीसगढ़ की घाट। ए पंचे, अब देबी बीर के झाड़ि दीहली, की आजु हम संग ना धरब। हम तोहके बरिजले हवीं आ एक एक बीर करधनिया तू ले चढल बाड़, बाइ अब तोहसे कहतानी बबुआ जे आजु हम एकर नाता ना राखबि, आजु तोहरी बल के हम थाहि लीं जो गाड़ल माला उपारि के, जो बीगि देब त काल्ह हम संग घरब।

आजु झंखे बीर बघेला बीर के बंका लोरिक ह नांव। कहे जे आहा दइब नारायन का विधि उगिल दीहल करतार। बिधि बरम्हा के लिखनी सुजनी सांचो गइल नियराइ। हटल बेटा राणी के सिंघिनी पीयल दूध ओनाइ। चलल आइल चलावल जुमि गइल मोतीसगढ़ की घाट। उल्टा काछा लागल मारे, मुगतल मालबरन के गांठि घींचे पेटी अजगर के, जइमे गोला जुमुस ना बाइ। छाती ले ले बाटे अलवेल्हा, मुठवन घुरि ले ला उठाइ। छापे गरदा गरदनि पर। ए पंचे, एहि जा अब उखरे चलल ना ऽ सांगवा जब रे भीमला के,

ओही आजु मोतिइये सागड़वा की ना घाटि।
आजु सती देके भइया ओठन पर
धइके आंचर देखत तमासा बाइ।
अबहीं बीर बारी उमर के लफुजा,
सीरे सोभे नवुज के बार।
लरबर घोती पहीरे डांड़े लचति रहल करिहाव।
आंखि मुंह बा ढुरहुर, मुख में सोमे दूधा के दांत।
कहे जे आहा जेकर लंगर लूझ मरि जाला,
ओकरि माइ झांके कुंआ इनार।
जेकर हइसन लालन जुझि जइहन,
उ माता कइसे जीही गउरा केरि बजारि।

गद्य : आजु गर्हू सान भइया की हउबे, जेवन माला गाडल बा मोतीसगढ़ की घाट। जेवन बीर पंजा मेरइहन, अंगा में माला दीहन दबाइ, उ बीर ठावें काल हो जइहन। सतीया सोंचतिया जे हेइसन लालन, हइसन बीर ए समे में, लोहा काबीज नइखन, आ हमरी भाई क सान उखाड़े चल चललन। बाकी फुटि गइल करम स्त्री के, जेकरी कोंखी ले ले होइहन अवतार। जेकर लंगर लूझ जुझि जाला ओकरि माई झांके ले कुंआ ईनार। जेकर हइसन लालन जुझि जइहनि। ऊ रानी केइसे जी ही गउरा केरि बजार। सोचतियाजे ऊ लालन केइसे जीहन।

अब एतना बेयान कहि के पंचे, जब वीर एने लंगोटा कसि के तेयार भइल बा त ए पंचे अब बीर मुठा सोहरि के माटी उठावे ।

अब ले के सुमीरे देवतवा लागल हो मीरुता में,
अब बीर सुमिरे देवतवाके बाइ,
कहे लाजे आहा मोर दइब नारायन,
काहि बिधि टंकिया तू भरल ऽ लिलार,
आजु मोर पाठवा न संग छोड़ि देल,
आजु हमार पाठाबा न संग छोड़ि देला,
नाहिय केहू सुनत बाड़न अरदास ।
आ हां हां हां हां....
आज हिन्‌ करी गांगा तुरुक करी गोर
भलि कामिनि संग छोड़लूय मोरि
अब देवी कहाँ गीति बानी गावत
कहाँ मोरे दिलें परल बिसभोर
जेवना दीन कर बातें
एइजा घरी गइलि नियराई
कहि द कीरिति मोर जगदम्मा
गीति अब चढ़ल भला पर बाइ
कइसे कारन भाला उखरी
आंगा गायब गीति हमारि
पंचे जवना दीन कर बातें
देबी सुमिरि करीं तइयार

लोरिक भीमली का भाला उखाड़ने में असमर्थ

गद्य पद्य : जब बीर लेके अब भइया लेके माटी उठाके आ देवतन के सुमिर ताड़ें, आ देबो संग छोड़ देले बाड़ी, केहू बीर नाहीं भाला उखारत बाई । त रोइ के बीर कहताड़न, जे हाइ भगवान, हाई बिसनों हाइ देवता तैंतीस कोटि मुनि देवता हउव, अब हम समकर हाथ जोरि रहल बानी । अब हमार जगदम्मा संग छोड़ दोहली, बीर छोड़लन संग हमार, जब हमार केहू दाही नइखे, एहि सुहवल केर बजार, जइसे सभा में दुरपती के चीर बचवलीं, ओंगों सुहवलि में जोगयि दीं चीर हमार, परि गइल माटी संकेता, केहु नाहि लउकल हीत हमार, एतना जब बीर कहि के आ माटो बीगल धरती ले बाइ ।

जइसे भइया बाघवाइ ना''''आ इउकल बाटे बटई पर,
अब बीर भालावाई पर पल्हल बाड़नि लेलएकारि,
जहिया बीर चाँपि दे ला ना आ भालावा जब रे सीनावासे,
उव भाला सातवेइ दोबरवे होइ न जाइ,
अब आंगा धरतीय में ए भालावा जब हृ लोटि ना गइल,
ओहिय नगर सुहवलि ना केरिया हो बैजारि।

गद्य पद्य : ओने जो बीर भाला दबवलन, अ भइया अंइठिके धरती के अन्दर चलि गइल धरती का अन्दर जब जाता। त बीर का अब लंगी चलतिया। अब फिर धइके भाला के अंकवारी बान्हि के अब बीर जव झटकार ताटे त भाला छल-छल छलकि जाता। आजु भइया फेरु पहुँचि के पाठा घरे आ भाला धरत कीला में बाइ, जेव भाला झटकारे उ भाला छल छल गइल बाटे बिछिलाइ। गोर बदन सुरुआ के झाँवर बदन होइ जाइ। तर तर चलल पसेना देहि पानी से गइलि गोताइ। ना हीले भाला भीमला के ओहि मोतीसगढ़ की घाटि।

हंसे बेटी बमरा के जेकर सती मदइनी नांव। बजर परो भवानी लेके मीरुत मंडल सबसांर। लालन भरताटे मीरुता में तोहरा पुजल भइल धीरकार। एतना सुने जगदम्मा उठि के धवल सगड़ ले बाइ। चलल आइल चलावल, दूइ लठ्ठा बोलल बाड़ी गड़गड़ाई। बेटा वल में आगर बाड़ ऽ बुधि में बहुत बाड़ बरियार, छोड़ द ऽ भाला अब अलबेल्हा सोनासुहवली पालि। बहठि के बानीदेता सीखावल सीखिल बुधि हमार। तबे भाला जो उखरी, ऐहि मोतीसगढ़ की घाट। केतनो जोर लगइब इभाला हीले जोग ना बाइ। बोले भाइ जगदम्मा भाला लड़िका से देले हउवे छोड़बाइ।

छोड़े देला पाठा जब भाला के, खाड़ा हो गइल मोतीसगढ़ की घाट। बोलत बा भाई भवानी बेटा मन बे बाति हमार। जइसे भादो में भंइसा मड़िआला। आजु हो लालन लोट एहि मोतीसगढ़ की घाट। कूरचे बीर बघेला धरती मार ताटे परसानि। मारे सीना धरती में लोटे मोतीसगढ़ की घाटि, भवानी लेके उड़ावसु बीगत बदन पर बाइ। सुखि गइल बदन सुरुआंके ओहि मोतिसगढ़ की घाट। भवानी बोलतारी जे उठि जा बेटा। उठलि बोलि बघेला देबी लागल लेलकार। हाई बेटा वल में आगर बाड़, धाहि लिहलीं बल, बाइ बुधि में कीछु कमी आ गइल, अब कहतानी बेटा, जाइके चलल जइब चलावल आ भाला नीचे देबे लटकाई, चीटुकिनि भाला दबा दे, एहि मीरुत मंड़ल संवसार।

तीन मर छाती में भाला लबेट, तीन मर गरदनि देला घुमाइ, अधिका भालाजो बाच न अब बीर ठाटी लेला लगाई। धरती एड़ दबाव, ऊपर कूद ऽ बेयालोस

हाथ, उखरो भाला सुहवलि में, संग तुरे जोगि ना बाइ। पंचे, जवना दिनसे मेला, आंगे सुन लगनि के हालि। एतना बोले भवानी ओहि लेके मोतीसगढ़ की घाट, पहुँचे पाठा बघेला संग धरंत बीरा में बा, धरे गोसा भाला के, अब नीचे देला लटकाइ, जाइके चीटुकी भाला दबावल मीरुत मंडल संवसार तीन भर छाती में भाला लपेटे तीन भर गरदनि देला घुमाइ, अधिका भाला जोबाचल अब बीर छाती लेला लगाइ। तब बोले माइ भवानी हाइ लालन जेतना बल होखे तहरी देह में एड़ा दाबि के ऊपर कू द।

आजु पंचे सुनल बेयान सुरुंजा के ओहि मोतिसगढ़ की घाट। धरती अब दबावे ऊपर कूदल बेयालीस हाथ। उखरि गइल भाला सुरुंजा से ओहि मोतीसगढ़ की घाट। जइसे लछुमन के शक्ति लागल लंका में, ओंगो शक्ति वीर के दबवले बाइ। गीर परल धरती में खून बीगत धरती में बाइ। रोवे भाइ जगदम्मा गोदी ले ले बाड़ी लगाइ। हंसे बेटीं बमरा के जेकर सती मदइनी नांव। बजर परो भवानी इहै लाढ़ लेके चढलू जे खून हुलुक दोहल मोतीसगढ़ की घाट। रोइ सेइ भवानी मुँह मुंदतिया आ हावा देतियाजरके बाइ।

कहतिबा जे सुनऽ बेटी बमरा के सती मदइनी नांव, जा आजु जो हम जीयत बालक या जाइब एही मोतीसगढ़ की घाट। जेतना हकल बानी सुहवलि में, एहि मोतीसगढ़ की घाट, ओहिगों आ लालन के जो पाइब त कालिह लागी लोहा के लउंजा, हीका बहि चली तरवारि, भीमला मुंड का कलशा धराइब, रोधिर कोहबर देइब पोताइ छाती पीढ़ा गड़ा के, जांघ का हरी देइब टंगवाइ, धरब झोंटा मउरी के संवरू के निहचय करब बियाह ऽ जइसे अहकत बानी सुहवलि में, ओहिगो अहकबू मोतीसगढ़ की घाट।

आ ऽ हाँ ऽ हाँ ऽ हाँ
अब पंचे जाही दिन के बाते तनी सुनि समर के हालि।
उखरि गइल सान मरद के ओहि मोतीसगढ़ की घाटि।

गद्य : अब बोले पाठा बघेला वीर के बांका लोरिक ह नांव, कहे जे ठाकुर मोर सहदेउवा राजा मारऽ बाति हमार। बावन बुरुज के तमू बावन भींटा देबऽ गड़वाइ, रेसम सूत के डोरी, आंगा पीयरी झूलो कनाति आरी पास कुमुखुमा बीच में हंडिया टांगल गिलास, तेगा लागो बगइचा, बरछी मांड़ो जाउ छवाइ, ढाल के लटको सारी एहि मोतीसगढ़ की घाट, भइया एक एक बीर बा जोधा आ तमू में बइठ जा जा भुजा फुला फुला।

एतना जब अड़र बीर दे ताटे, त अब पंचे राजा सहदेउवा उठि के, उठि गइल

राजा सहदेउवा। अब बीर देता अडर, उठि गइल बावन बुरुज के चोभ के तमू बावन भींटा देला गड़वाइ, रेसम सूत के डोरी आंगे पीयरो हीलल कनात, आरी पास कुमुखमा बीच में हंड़िया जरल गिलास, तेगा लागल बगइचा, बरछी मांड़ो गइल छवाइ, ढाल के लागल ओसारी, ओहि मोतिसगढ़ की घाट, एक एक बीर बघेला मोढ़ा पर वइठ लो गइल भुजा फुला फुला। बइठ गइल सान मरद के। जव सान बइठ गइल तब बोल ताटे सुन पाठा बजनिया, ओकर दीहली मजूरी भइया एही खातीर हम गउरा पांच गो मतही लकडी बजाव लो, पाछे बियहुति दे व बजवाइ, पाछे मारुक डगा पीटाव ऽ सुहनलि शवद जाइसुनाइ। एतना जब बोले बीर बघेला भइया मोतीसगढ की घाट, बजनिया लेके बाजा उठि गइलन। ओही मोतीसगढ की घाट।

बारातियों के बाजे गाजे की उच्च ध्वनि सुनकर बमरी क्रुद्ध

बाज ताटे पांच गो मतही लाघल बाजे लकड़ी, पांच गो मतही लकड़ी बजावल, पाछे बियहुति देले हउवे बजवाइ, पाछे जब मारुख डगा पीटवल ऽ सुहवलि शबद गइल सुनाइ। सुने रजा बमरिया घइके दांते आंगुर चबाइ। कहै जे बांये के सुनल मंतीरी दांये के महथा राज देवान, आज पूछतानी तोहन लोग से एकर भेद बता द के चूपे दही गुर बा खइले, के तिलक आइल चढाइ, केकरा धरे मांड़ो छवा गइल, केकरी लड़की के परल बियाह। काहें बाजल बा बाजन एहि सोना सुहवली पालि।

पंचे, आज जाने में भइल बा। आजु जाने में भइल बा जब लकड़ी बाजि गइल बा त बिगड़ल बा बमरिया। कहता जेकेकरा घरे माड़ो छवाइल हे भइया, आ केकरा घरे आइल बाटे बरियाति, अब हीं गाड़ल सान बाटे भोमला के ओहि मोती सगढ़ की घाट, के चूपे दही गुर बा खइले, के तिलक आइल चढाइ, केकरी लड़की के सादी परि गइल बा, एहि सोना सुहवली पालि, एकर भेद बताव जा जल्दी से लेकर सोना सुहवली पालि। बिगड़ल राजा बमरिया ओहि सोना सुहवली पालि ओहि घर घर सब बीर कांपल, आ उहै कांपत कीला में बा, कहल लो जे हाइ ठाकुर।

अइसन नइखे केहू के दीदा जे केहू तिलक चढ़ावे बाकी लमहर पीरथमी बा। हमनी के मालूम दे टावे कि कवनो लाभा बराति बीर के चढ़लि बा आ पयंड़ा में अबेर हो गइलि बा। ओहो से आजु बाजनि बाजि रहल बा सागड़ पर, कालिह जब पूरवे लागी लोही, पछीम होते लागीन उजियार कउवा टेरि उठाई, भोरे भोरे होते लागी बिहान। अब बीर गाड़ल सान उखरिहन, अपना कीला

में क लिहन पयान, एतना बयान जब कइले लो भइया तब बमरा के देहि गइल जुडाइ।

पंचे, बामर के देहि जुड़ा गइल। जे अच्छा जब रास्ता ध ले त केवनो हरज ना, सुहवलि नइखे न सान केहू गड़ले, आत ना। सब जब नाहि नाहि क देलेह त ओ राजा का धीरजा परिगइल सरीर का अन्दर, आ कीरोध हटि गइल।

अब धरम, अनियाय देखि के। अब बीर बइठल अपना महल में बाइ। बाकी अब पंचे सुनि की बेयान सागड़ के ओहि मोती सगड़ की घाट। उठे बीर बघेला, नाच जमलि रस मंडलि बा। चललि गइल चलावल जहाँ बीर बइठल सहदेउवा वाई। बोले बीर बघेला ठाकुर मान बाति हमार बन क द नाच। अब एइजा नेवहन लकड़ी चलाव आजेकरा जेवन दिल खाये के करे, उहे सीधातू द। पंचे जेकरा जवन मनभावे से रचि के बीजन बनाव जा, आ खा जा मोतिसगढ़ की घाट। कालिह पूरबे लागी रन लोही, पच्छी होखे लागी उजियार कउवा टेरि उठाइ, भोरे भोरे होखे लागी बिहान। कालिह के भगवान बाड़न। अब पंचे, नाच बन हो गइल।

नाच जब बन हो गइल तब सहदेउवा ले के—छली काटि दीहलसि आटा के, आ एक ओर चाउर के, आ एक ओर टीनन घीव खोलवा दीहलसि, आ गोल में गोल पियादा घुमे लागल, मइया जेकरा जेवन इच्छा खाये के करे चलि के तउला ल जा। हो गइल छुटी मइया सागर पर तबले केतना खुशी होके तउले लो बा। अब ओइजा बरतन ना मिले से भरुकवो ले ले जाइ। केहु ले के आटा तउलावे केहू दाल चाउर लिहले हउवे तउलाइ, केहू लोटा में घी भर ले ह। केहु भरुके में भरवा लीहल। गोल गोल जब सिघा त बंटा गइल।

पंचे सुन ल मोतिसगढ़ की घाट। लागल जब अहरा फुँका के मड़ाये पीसान। त जान जे समकर पीसान केहु दालि भात बनावे। केहू घीव खीच्चड़ बनावे। केहू ले के भउरी लो लगावे। आ कंहार बाड़ स चिरुआ घीव डाल सान ऽ स, जा बजनिया रचि के पीसान जब माड़ि के, आ बीरजब लोटी लगा के, आ जब खाये लो बइठा ताटे, सब बीजन तेयार हो गइल, त बोल तारन स बजनिया कंहरिया से का बोलतारन स

कहस, सुन पाठा बघेला मान स बाति हमार। अइसन त खाना आजु खइंलो जा कालिह दू दू गो लंगोटा लेबे के सियवाइ। दू चार दिन त जो बराति रहि जाइ एहि ठाकुर के एहि मोतीसगढ़ की घाटि, रचि के मेहमत जमाइं एहि मोतीसगढ़ को घाट। लड़ी जा रोज सगड़ पर एहि सोना सुहवली पालि का जाने जो आइ जइहन बेटा बमरा के, चउथा दिन हमने का देइब जां बेल माइ।

अइसन खाना मोलीत भरसक बलगम नइखे भइल लो। हमनों का काल्हि लंगोटा सियावे के। आ मेहनत करे के हकड़ि के एहि सागड़ पर, बढ़ि गइल सान कहरिहन का भइया ओहि मोती सगड़ की घाट। अब सुनल बेयान सुरुआं के, ओहि मोतीसगड़ की घाटि, खान पीन जब बीजे हो गइल बा पंचे हो बाइल बाटे तैयार, बीजे जबहो गइल ब

आँख पसार कर सती का बारात की ओर देखना
और बारात डंस लेने के लिए नागिन को बुलाना
सती का विवाह न करने की कामना

अब पंचे अंगवा के सुन ब बेयान,
फेरु पंचे गरहुअ विपति बाटे लिखल।
पंचे अब गरहुअ बिपति बाटे लिखल,
ओही अब सोना रे सुहवलिय पालि।
जब भइया खाइके खाना ना अलबेला,
सभ आपन सूतल तमूइया में बाइ।
बाकी आजु रहल हो बेटा बधिनी के,
बीर करबांका ए लोरिक परल नांव।
अब बीर देत बा चउकिया सागड़ पर,
टहरता मोतिये सगड कीय घाट।
तनी अब सुनि ल खेला न अलबेला,
सतिया जब ताकतियाटे नयन पसारि।
सतिया जो आपन भइया सतवा सुमीरे,
अब जम्हु वीगले लड़िकवा पर बाइ।
अब भइया लागे लागल नींनि सुरुआंका,
अब नीनी धोवलो से टुटति नाहों बाइ।
अब बीर जाइ जाइ बांड़ धोवत,
अब नीनि टुटइ जोग नाइ बाइ।
पंचे अब सुन जा गाना हो सगड़े पर,
ओही आजु मोतिय सगड़े कीय घाट।
अब बीर के दावे लागल जम्हु भीटवा पर,
अब जम्हु पहुँचता मंहवा लिलार।
अब बीर रोइ के न देबी के पुकारल,
अब देबी होइये गइली न तइयार।

कहत बा जे मइया मोर सुन ऽ जगदम्मा,
इह जीउवा तहरे धरम कर पालि ।
आजु इहे हमना कहीला तोहरा से,
सुहुती में आइल बाटे देहिया ना रे हमार ।
हमरा के बहुत दिन धावल धुपत बीतल,
कतहुँअ सुते के बेंवत नाही बाइ ।
अब हमरी अंखिया पर नीनि बा दबवले,
हमरे इ बूतबे सहल ना इ जाइ ।
अब देबी केइ ए चउकीया एइजा देइ,
एही आजु मोतीये सगड़ कीय घाट ।
ओइजा अब हंसतियाड़ी मइया रे भवानी,
हा हो लालन मानि जइब बतिया हमार ।
तमुए ले धइले बाड़ी बाँह दुयरा के,
लेइ देबि गइली भींटउआ पर बाइ ।
हा हो लालन एहि जागो तु हु ओंठगि जइब,
तनी अब सुतिलेबऽ नयन पसारि ।
तमुज बहरवा कहले ह जगदम्मा,
अब तनी सगड़ा के सुन जा बयान ।
जब आपन लइका ए सुतवली ए सागड़ पर,
अब देबी खंचले गुड़लवे ना बाइ ।
भइया आजु मंडा भर में गुड्डुरा वा खांचल,
बीचवा जो सुतल बा बघिनिया के लाल ।
एने पंन्ने छोड़ि देली संग जगदम्मा,
मेलिह के गइली मइयन का पवने दुआर ।
ओइजा बबुआ फानि गइल दाव सतिया के,
तनी अब सती के सुन न खेलवाड़ ।
अब पंचे चलल जब गइलि ह चलावल,
जाके अब मुरहन गइलि बे हेठियाइ ।
जहवां उ रहलिय मानि नगिनो के,
केकर मइया परलि हर देइया बा नांव ।
ओहि जागो अहकलि बेटी बा बमरा के,
जेकर आजु सतिया मदइनी बा नांव ।

कहे ले जे बहिनि न मोर हरदेइया,
एइजा अब कारजि लागलि बरियार ।
देख हमार लागेलु बहिनि नातावा में,
निजगुत बहिनु तू हउरे हमार ।
हमरा के ओहि बेरी हउ सखि कहले,
ओही आजु मीरुत मंड़ल संवसार ।
सती तोरा परी जो बिपति सुहवलि में,
बिपत्ति में गामिल होइ देहिया रे हमार ।
आजु हमरा लागलि बा गरजि सगड़े पर,
चलतिया तब अब बहिनि रे हमार ।

गद्य-पद्य : ए पंचे नागिन के पुकार कइले ह सती, नागिन के काने भनक गइल नागिन, सड़ दे निकड़ि के जाइके कहतिया हा हा का बहिनि । कहति बा जे का अब कहीं । अब एह बिपति, एह ले बिपत्ति बहिन हरदेइया, अब हमरी देह पर आफति ना आइ । कुल्हि कावा हमार्रार कटि गइल बा ! बाइ एहि बेरी बहिन थोरे सामिल हो जइबे विपति में, त तू डाँसि दे बराति अहीर । के हरदेइया कहतिया जे बहिनि बाई डांसे के कहतारे डाँसि देबे बाइ जब बोलले ह न त आभा में हमार ड़हि डूबल रहलि ह । का डुब रहलि ह आभा में, जे हमरी बहिनि सती के दुलहा चलि आइल बा, बहिन आभा में हमरा एकदम से साफ जनाइलहा लइन । जे आजु हमरी बहिन के दुलहा चलि आइल बा सागड़ पर । अब इ नगन टेर जोग ना बाइ जरे बदन सतिया के, एड़िया डरे लागल अंगार, कहे जे, वजर परो ए बहिन ओइड़ें जइतू दवाइ, आजु बहिन जनम ना लिहलू, सतुर ले ले बाड़ू अवतार सभे बिगडि गइल पर तू हू मेहना मरले बाड़ू फाटि गइल छाती हमार । आजु बइठि के जनम लिखवली इन्नरका पवन दुआर जेवनी बेर बरम्हा लिखत रहलन जनम हमार, रोदन कइके कलम बेलनवली, बाबा मान बाति हमार, छव हाला जनम हमार दीहल मीरुता में, छव हाला बेवा कइल माटी हमार, तिरिया जनम तू जानि द बाबा । जनि भेज मीरुत मंडल संवसार । बरम्हा कहलन जे ह सती अब हमार कलम डुबि गइल बा, आ नांव परि गइल बा जे मीरुत लोक में सतिया जाई । तब हमरा मेटअला से ना मेटाई । जब एतना बेमान के जे कइलन बरम्हा जी त हम कहलीं जे अच्छा हमार सती जनम लिखि द, बाइ हमार पती जनि लिखऽ । आना मीरुत लोक में सादी लिखऽ ।

त बहिनि आपन सोंझवेइ कलमिया हाँथ लिखय वले,

ओही बाबा बरम्हे जी का पवने रे दुआरि ।
आजु हमारि नाहि लिखलि बा आ सदिया दादा इनवारासन,
नाहीं मीरुता सीरजल बाड़नन बारबाइ रे हमारि,
आजु बहिनि मारि दीहलू मेहनवा दादा सुरहन में,
आ सुरहन में फाटि गइलि छतियारे हमारि ।

सती के आग्रह पर हरदोइया नागिन द्वारा बारात डंसा जाना

गद्य : हरदोइया कहतिया जे अच्छा, ठीक कहताड़ू, बाइ फेरु दोष जनि दीह । जवन हम तहसे टीसाइ करतानी तवन टीसाइ के भगवान हालि जनिहुन अब द अडर का देतारु अडर । बाइ समुझ के अड़र दीह । अब त तू नजरि से देखि आइल बाड़ू हमना देखली जे तहार पती लिखल बा की नइखे लिखल । बाइ आजु हमरा के पती के मारवावे के भेजतियाड़ू त फेरु हमरा के दोष जनि दीह । सती कहतिया जे नाहीं ना दोष देइबि । जाइके बराति अहीर के डंसि दे, जेमें खतम होइ जाई बरियाति । देखि जे कल्हिका करेली भवानी, एहि मोती सगड़ की घाट ।

बबुआ अब सुनि लऽखेला हे सगड़ के बबुआ अब सुनिलऽ खेला सँगड़े के ।
ओही पंचे मोतीय सगड़ कीय घाट,
ओइजा ले जब चललि बा नागिनि हरदेइया ।
ओइजा ले जब चललि बा नागिनि हरदेइया, (पुनः)
अब हरदेइया छोड़ति बा फुफुकार,
अब भइया चललि जब आइलि बा चलावल,
तब आऊ तमूअ में गइलि बा समाइ ।
जइसे आजु बारल बा दीपक गोलवा में,
जइसे पंचे बारल बा दीपक गोलवा में, (पुनः)
ओइसन ओइजा हड़िया न जति बा गिलास ।
ओहि जागो पहुँचलि जब नागिनि हरदेइया ।
लेके आजु मोतिय सगड़ कीय घाट,
पहिले अब लागलि डसे ओ बजनियन के ।
कहंरियन के डंसे लागलि बहिया लगाइ,
अब भइया डंसे जब सुरुभ कइल नागिन,
बदुरिय डंसति चलतु बा लेलकार ।
तमुआ में घुमि घुमि बीर के लागलि डंसे,
तनिय आजु सुहवलि सुन जा खेलवाड़

आजु भइया बटुरिय नागिन न लागल डंसे,
घुमि घुमि करति चलति बा पहुचान।

नागिन का वर संवरू के पास पहुँचकर पहले ठिठक जाना फिर उनको डंस लेना, दुर्गा द्वारा लोरिक की रक्षा

सुनलीं जे बटुरी बराति डांसि घालल,
संवरू का घुमल कगरिया न बाड़,
जवन बेटा दग दग जरति बा पलिता
भहुँआ अब लोटत रहल महवा लीलार।
अब नागिन देखति बा सुरति दुलहा के,
मउरि आपन पटक धरतिया में बाड़,
कहे ले जे बजर परो न सतिया पर।
उनुका पर गोरीती दइब कर धाइ।
आजु जेइसन हेइसन ए सेनुरबे मरवावति,
ओकर बाबा कइसे करिहन निहतार।
आजु हमरा लाग गइल डर अलबेला,
कउलवे हम कइले हवीं रे करार।
अब निहचय डांसे के परी न सुरुवां के,
एहि आजु मोतीये सगड़कीय घाट।

गद्य : आजु ओहि दिन की बाते, आजु जाही दिन के बाते, आँगे सुनी समर के हालि, हरदेहया बाटे नागिन, से बीर के जाइके मुरुझा गइल हवी डाँसे में संवरू के। बाड़ सोचतिया हरदेइया कि जे बे डाँसल बनहु लायक नइखे। त ए पंचे, उनका सिर पर इहे हरदेइयां चढल ह। सिर पर चढ़ि के आपन मुंह गोरतारी कइके आ पोंछि उनकीं नाक मे डालि के हिलावे। नाही बीर जागे,

फेर नागिनि हरदेइया उहो पोंछि काढ़ि के दूसरी नाक में जब ले के नथुना ठेकाइ के हिलवलस त बीर छीके नाहीं करवट घुमि गइल झटकारि के, जब पाठा करवट होके झींक ताटे आ नागिन् के गतरि जब धाका लाग गइल उहे घुमि के डंसि दीहलसि।

अब बीर फेंकि फेंकि ना आ फेनवा मरि लोग बाटे रे गइल,
गाज लो का बीगले हरदीये के न बाड़।

हरदेइया आजु बटुरिय समुइया में ऊ डांसि बा देले ।
एगुड़ो नाहीं छोड़ले रहलि न बरियाऽऽति ।
अब नागिनि छोड़ि के इ तमूइया जब बाड़ी ए चललि,
फनी आजु उठवले सगड़वे पर न बाइ ।

पद्य-पद्य : पंचे तमू ले जब नागिन बहरा भइल बा, त फनी उठाइ के ताकतिया सागड़ पर, जब भींटा पर ताकतियाटे त चमकल दूपटा जाइके लामा बीर के ।

हरे नागिनि आजु चललि हरदेइया रे बाइ,
अब भइया बान्हि के चललिह ललकारा ।
आरे डंसे खातीर चलली बोर के लेलकारि, कीछु दूरी नागिनि दाबि दे ले ।
अब उहे बोर पर बान्हति बा लेलकार, एने अब फुटलि बा लहरि गुड्डुरा पर,
दूइ मँडा बीगले लामा न भइया बाइ, अगियाइ लगि हो गइलि नागिनि के,
घुमि के उ जीव लेके चलली रे पराइ ।

गद्य : ए पंचे, अगिनि जब फुटलि गुड्डुरा नियरउले हउवे त अगिनि कइसे बीगल लहरि आ त मंडा भर में, मंडा भर में जाउ लाफि ले के जब लहरि झपटलि ह त नागिनि के सरीर जब छंवका लागल ह त भागि चललि ह । भागि चलल त कहां ओइसन सुरहन केइसे रहल, आ त जेइसे हइ ताल बहल बा । ओहिङो पंचे, नागानि बा से फानि के जाके जल में कुदि परल । आ कुदि के ओहि पांक में लोटि के आपन गतरि गतरि देहि में आ पांक लपेटि के, आ डीहटा बान्हि के चललि जे डांसब हकम ।

आरे नागिनि जब छापि लिहलसि ना आ पंकिया जब रे देहिया पर ।
हिम्मति बान्हि के डंसे चललि सागड़वा पर रजउ बाइ
अब नागिनि दाबि केइ ना····आ गुड्डुरा हवी नियरवले,
तबलक लूक गिरलुअ ना-नागिनिया पर लेलएकारि ।
अब नागिनि लोटेइ लागलि बा ए भींटवा के ।
ओकरि बदनि लहरि से गइलि ना उसी ए नाइ,
अब नागिनि चललि य ना बाड़ो न ए सुरहनि के ।
उनकर देहिया फोंकचा चलल हो लेलकार ।

गद्य : चललि गइलि चलावल नागिनि जुमलि अपनी मानिपर बाइ, सतिया हंसि के पूछतिया जे हं बहिनि कइसन हालि कहु सागड़ के बाटे, ओहि मोतीसगढ़ की घाट, कहतिया जे सुनु बहिनि सतिया मनवे बाति हमार । बटुरी बराति डांसि

दीहनी ह हमरा तनिको अदब ना लागल ह। एगो बराति हम नइखे छोड़ले तमू में, बटुरी हम डांसि देले बानी एइमें सक तनिको नइखे। बाइ जब चलले लगली हवीं त तमू ले बहरा उठाइ के जब फन तीकवली हं, त एगो बीर सुतल लामा रहल ह, बान्हि देहली हं लेलकार जे चलि के डांसि देइं जेंव जातानी अबहीं दूइ मांडा लमे बानी बीर ले, आतना आंचि हमरा पर बिगलसि ह लूह, जे जवना में हमार काफील तलफल सरीर होखे लागल ह। आ भाग के जाके हम सुरहन में कुदि गइली हं। कुदि के बहिन आ दृढ़ता बान्हि के जे नाहीं हम अडर कइले बानी, त डांसबि हकन। इनिके छोड़ि ना सकब, काहें जे बीर तेजवंसी बाड़न। बहिन तोरा जीव की कारन अपनी गतर पर भये पांकि हम चढ़ा दीहली हं। माटी चढ़ाइ के आ घमंड में बान्हि के चलली ह जे हांकडि ए बेरि डांसबि डींगर के, एहि मोतीसगढ़ की घाट। बान्हि दीहलीं लेलकारा आ जब फेरु जुमि गइली हं ओही जगह पर लेलकार। अइसन अगिनि गोरलि ह हमरी बदन पर। अब जीव बाँचे जोग न बाइ बहिनि कहला से ना पतियेबे। देख केतना जरि गइल चमड़ा हमार।

लोरिक को सुरक्षित जनाकर सतिया का करुण क्रन्दन

अब ओइजा रोवे लागलि ना - आ धीयवा भइया बामरा के,
जेवना के सतीयाइ मदइनी रहलि ए नाँव।
बहिनि हमार बरतियाइ के उह न बादी रे हउवे,
डंसि दीहलू मोतीयेइ सगड़वा की दादा रे घाटि।
आजु हमार छोडिय दीहलू न बदिया ना आलवाबेला।
दूनियाँ में लूटले ह चीरिया रे हमारि।
सती जब रोदन करे लागल तब हंसतिया,
नागिनि हरदेइया जेबहिनि का बउरइलीह,
कहतियाटे जे बहिन की खबरकाम सुफल ना भइल,
हमरा देह में लहुगुन बहुत हो गइल,
काहें जे अपनी सादी कारन हम केतने बराति डंसवा दोहनलीं,
खतम हो गइल, आ असली बादी हमार,
छोड़ि दीहलू त फेरु हमार गति उहै न करो।
फेरु काल्हि हमार गति जवन भइल ह एकहाला,
तवने गति फेरु करी।
बोले लागल हरदेइया तड़ तड़ देबे लागल जबाब,

बाउर बहिनि बउरहलू की तोर माना परल गियान ।
जेवना बीर के डांसि देइ मीरुता में उ बीर ठावें काल होइ जाइ ।
केहु का जीय के नाही जिया इ ।
लेके मीरुत मंड़ल संवसार ।
उ नागिनि तू जान, ले के मीरुत मंडल संवसार,
आ सब डींगर बाड़े ओहि मोतीसगढ़ की घाट ।
काल्हि गीधि करी काटाकटि,
गीधिनि गावे लागी मंगल सारि ।
सीयरा मंकुरा धावे लागी,
मांसु खाये खातिर एहि मोतिसगढ़ की घाट ।
क दिन उ पाजी अगोर ले रहिहन,
एहि मोतीसगढ़ की घाट,
सरे लागी लास मरदन एही मोतीसगढ़ की घाट ।
अन्हेरिये छोड़ दीहन डहरि सुहवलि के,
उ चलि जइहन डींगर मउरा केरि बजार ।
नागिन कहतिया पंचे, जे घड़बड़ो जनि, केतना दिन उ जीहन,
आ केतना दिन रहिहन,
आ के बीचे अइसनबाटे जे हमार डंसलि बराति जीया देइ ।
भले तू रोबतिया ड़ू तू देहि छोड़ले बाड़ू ।
सतिया कहतिया जे बहिनि हमरा के खोरि खोरि डहले बा ।
कहतिया जे सबूर करू ।
बराति अब जीया के सकी बोचे ।
आ क दिन उ टीक रहिहन ।
आच्छा तब जातानो ।
ए पंचे, बाराति जब डंसि दोहलसि ।
जब सब खतम हो गइल, नागिनि अपनी स्थान के चलि गइलि ।
आसतीया सुहवलि के चलि गइलि ।
जेंव सती सुहवलि में जुमतियाटे तेंव पूरुबे लोही लागि गईल, पछीम होखे लागल उजियार, कउवा टेर उठवलसि भोरे भोरे होखे लागल बिहान, ।
फाटि गइल पह मीरुता में
दूनियां सार भइल उजियार ।
उगि गइल डंफ सुरुज के भइया ओहि लेके मीरुत मंड़ल संवसार ।

दूइ घरी दिन चढ़ि गइल ।
आ बीर का घाम बेधत बदन में बाइ ।
टुटि गइल नीनि सुरुआं के उठि के बइठि गइल हुउव लेलकार ।
जब ताके तमूमें त सब सुतले बा ।
आ दू घरी दिन चढ़ि गइल बा ।
सोचे बीर बघेला ओहि मोतीसगढ़ की घाट ।
हा हा दइब नरायन का बिधि उगिल देल करतार, सब बीर सुति गइल बा ।
आ केहू उठल नइखे पहर भर दिनले ।
आ आजु हमार धरमी भाई पूजेरू उहो नइखन उठत ।
धावल हु बीर बघेला, तमूमें गइल हुउवे समाइ ।
जेवने बीर कीहे जुमें उ बीर फेर बिगले बाड़ें लेलकार ।
फच फच गाब हरदी के बदन में गइल पियरा पियराइ,
देखे बीर बघेला, नयन पसारि पसारि ।
घुमि घुमि बराति हु देखले ओहि भइया मोतीसगढ़ की घाट ।
बटुरी बीर मरि गइल वांड़े ओहि मोतीसगड़ की घाट ।
सोचे बेटा बघिनि के, ढुकि जब गइल पजांर में बाइ,
जहाँ सुतल पठा अलबेल्हा,
बीर सुतल अजइया बा,
ओहू जा चढ़ल गइले चढ़ावल त देख तारे जे,
फेन बोगि के देहि गइल बाटे पियराइ ।
ओइजाले बीर जब हटल धरमी जुमल कगरी मे बाई ।
जाते मन सनक गइल सुरुआं के ओहि मोतीसगड़ की घाट ।
सुनल बयान भइया बीर के बीर के बंका लोरिक हु नांव ।

भाई की मृत्यु पर मलसांवर का रुदन करना—
दुर्गा की आज्ञा से बारात की रखवाली करना-गिद्ध सियार आदि से रक्षा

कहत बा जे तनी उठि जइब ऽ ना ऽ भइया मोरि मालवा साँवर ।
नीनिया तोहरी लगलू बदनिया में दादा रे बाइ ।
धरमी के अब लकड़ी नियर न देहिया टंनिय बबुआ रे जाले ।
अब बोर रोवे लागल ना जारवाइ रे बेजार,
तबलक एनिया पहुँचि गइलि न आ भइया देखब जगवादम्मा ।
सुघर ऽ के गोदीयइ में लिहलीय रे लागाइ ।

देबिया बीर के लेइकेइ तमूइया ले उ भागि बा गइल ।
बीर के आजु लमबे देलीय न उ बइएठाइ ।
आजु माइ रोइ रोइ ना आंसुअ जब लागलि ए पोंछे ।
सतिया उ हंसेतु अटरिये परे बाइ ।

गद्य : पंचे जब रोइ रोइ बयान जब बीर क दीहलन, आ देबी जब अहकतारी त सती का खुशी मन में आइल त हंसतिया ठठाइ, हंसतियाटे लोरिक कह तारन जे हे माता, अब हम भइया बिना कइसे जियब आ अब हम कहां मुँह देखा इब कइसे हम घुमि के चलोगंउरा केरि बजार । फुहरी तू त ठठइह, लरिका होलरी दोहन ललचाइ । कहिहन जे लोरिक की देहि बजर परि गइल इनका पर गीरी दइब के धार । दुनिया के पाठा, जवार के मरद लेके चढ़ि गइल सोनासुहवली पालि बटुरी बीर जुझि गइले धरमी जुझि गइल माइ लेलकार तबो हींजड़ा ले के देहि बा भागल आवता सोना सुहवली पालि फुहरी चूतर ठेठवली लरिका होलरी दीहें उठाइ, मइया मोर भवानो जी तोहरा धरम का पाल । बोर ओइजा कहताटे जे अब हम मुँह देखावे जोग दुनियाँ में अन्दर नइखीं । सब बीर का हो गइल हमार मुखले मरि गइल । देबी कहतिया जे हाइ लालन अब तोहरा के कहतानी अब तोहके हम गुरिया गुर-देलि बनाव तानी आ धेनुही बनावतानी । काटी दिन बचवा समै ह आ बखत हमार जुमि गइल । जेतने हमार सांसति होतिया, ओतने सती के हम सांसति करब । एहि ले के सोना सुहवली पालि । असल जो होइब भवानी निहचय देइब देखलाइ उठि जा लालन अब हम तोहके देतानी । अब बराति में अब द चउकी, जइमें जे गीध, कउवा, सीयार, माकुर अंग भंग जनि होखे । एकरी खातोर सजग रही ह । अब हम रासकीट नाधतानी जाइब इनरासन ।

हारे पंचे, अब जेवना ना दीन कर बातें,
तनी अब सुनिय समर कर हाल ।
देबिया जे मथवे के धेनुही बनावल,
मायावा के तिरिया जब देले ना बनाइ ।
उहे बीर का गुरिया गुरदेलि ए बनाइ के,
अब देबी झोरी में देलो रे टंगवाइ ।
बेटा मोर सुन अलबेल्हा अब लालन मनब ऽ तू बतिया हमार ।
सागरा पर कड़े कड़े कउवा तू उड़ाव ऽ,
कड़े कड़े कागवा तू दीह रे उड़ाइ ।

हाहो लालन दीनवा में गीधवा तू उड़इहऽ,
एहि आजु मोतीय सगड़ कीय घाट ।
जब पाठा जुमे जो कीरीनि मीरुता में,
जोइ जब सागर होखे न उजियार ।
रतिया खा लेले सियरा लेले करीह,
बबुआ तू लेले सियरा लेलकार ।
चउकीय देतय बानी न बरियार,
अब हम चलीय जाइबि इनरासन ।
ओहोय बाबा भइयन का पवन दुआर,
एहि आजु सतीय जीयरवा को कारन ।
भइयन से मोटिय चललि बा वरियार,
जेतने उ डाहति बाड़ी न सुहवलि में,
ओतने डाहबि सोना रे मुहवलिय पालि,
अब देबी जागली रहलि जगदम्मा ।
तनी अब दुरुगा के सुन जा बयान,
देवि अव गुरिया गुर देलिय बनाइ के हाथवा के धेनुहीय देली न धराइ ।
अब बीर का हाथवा में धेनुही धराइ के,
देवी आजु तमू में देले ह खड़कखाइ ।
बेटा हमार खबर वा दार तू एइजा रहिह,
इनर पुर में जाति बाटे बाया न हमार ।
पंचे आजु सुन जा खेला न सगड़े पर,
ओहि आजु मोतीय सगड़कीय घाट ।
एने देबी चढ़ली बाड़ी व इनरासन,
कोठवा पर सतिया बइठलि बा लेलकार ।
अब रानी आपन जब सतवा सुमिरे,
अब लेके कागवा ह देले उड़ाइ ।
एक ओर भर भर गीध लगलन उड़े,
सागड़ा के छाइए लेलन स लेलकार ।
अब बीर मारे जब गुरिया गुर देलि कीलवन में,
गीधवन पर धेनुही मारेलन नचाइ ।
उवे गीध चरि चरि बीगहवा लोग भागल,
ओहिया भइया सोना रे सुहवलीय पालि ।

कउवा लो दसले बीगहवा भागि गइल,
टांई टांई करत खेत में लोग बाइ ।
अब बीर देत बा चउकीया अलबेल्हा,
ओहिय भइया मोतीय सगड़कीय घाट ।
पंचे एने गरवा बा संग छोड़ि देले,
सागरा पर जुमि गइल डंफु रे हमार ।
बाबा हमार हाली हाली चउकी तू लगाव,
कीछु दूर गानावा न देईं जा बढ़ाइ ।

दुर्गा का इन्द्रासन में भाई ब्रह्मा के पास जाना—
लोरिक का कौवों और गिद्धों को उड़ाना—

गद्य : जाही दिन के समें तनी सुनी बिपति के हाल—आजु भवानी इनरासन के जब लएन ध लीहली त ओइजा सती का खेला कइले ह

पद्य : आजु रनिया मयवेइ के कागावा जब लागलि उड़ावे,
एगो हाथे गीधवा ना दीहलसि रे उड़ाइ ।
सोने अब कट कट न गीधवा बाडन कटकटाइल,
कउवा टर टर करतेइ ना धावल बाड़ें लेलकार ।

गद्य : सजग होखे पाठा अलबेल्हा, बीर बांका लोरिक ह नांव, डाँकि के मारे तीर गीधन पर, गीध लो चरि चरि बीगहा हटि जाइ ।

हारे पंचे जब मारत बाटे तीर कगवन पर,
आ जब भइया मारत बाटे तीर कगवन पर,
बीर जब कड़े कड़े बोलल लेलकार,
जब भइया कड़े कड़े काग लागल उड़ावे ।
अब दादा मोतीय सगढ़ कीय घाट,
अब गीध पांचि पांचि बीगहवा लोग भागल ।
बीर जब चउकी देले बा लेलकार,
अब भइया केहू त गीध त नाहीं जूमल सुहवलि में हलवा भइल बा बरियार ।
सगड़ा पर केवने कीतन होइ गइल,
गीधवा उ मेंड़री मारस लेलकार ।
आजु सगड़े भींटवा नइखेन ददे लउकत,
केवनि आजु अचरज भइल रे बरियार ।

गद्य : पंचे जेवनी घरी गीध सगरे मेंड़ार छाइ देलें हउंअ स आ काग, त मुहर्वाल जब सागड़ किहं हेठियावा अदीमी, त देखता जे बालि रे बालि गीधन की मारे कट व टहरि काने नइखे दीयात । मन अनेसा में मुहर्वलि पार गइल जे ए भाइ अइसन इ हालि बाटे सागड़ के, जे इ गीध का बटावटि कर तारें स, जे इ झोंक मे जइ लायक नइखे ओइजा । अ पंचे लोग दिन गुनता उ, आ भर दिन बीर कड़े कड़े काग उड़ावे । कड़े कड़े जब काग उड़वले हउवे भइया जब मोती सगड़ को घाट । जवना दिन के बातें आगे सुनी सगर घे हलि । भइया जनि सुत पंजरे पर आलस देइ दबाइ । जवना दिन के पलली, तवन घरी गइल नियराइ । एगुड़ो काम न कइल ऽ जा एहि मोती सगड़ को घाटि । अब पंचे, दिन भर बीर कड़े कड़े काग उड़ाव ताड़न, गीधनके मारत हुलकारी आइ । जब डुबि गइल डंफ सुरुज के, घर घर दिया भइल लेसान । पंचे अब का झगड़ा चलल । डंफ जब डुबि गइल आ घर घर दीया जब बरा गइल । अब छुटलि कट कटहटि सियारन के ।

आजु लोरिका ले ले मा ज सीयरन के बा हलुए कारव,
लेलकार अब परलेइ सीयरने पर भइया बाइ ।
आजु भरि राति ले ले न अ सीयरा लागल ए लेलकारे ।
जइसे पंचे भदयां अगोरत ए लोग बाइ ।

गद्य : ओंगो बीर सीयारन के लेलकारा देइ देइ, आ भींटा ले खेदे लागल । अब सगरे राति जब बीति गइल भींटा पर सीयारन के लेलकारा । बाइ डाट के जब बोलें बीर जवनी घरी, तेवनी घरी सीयार लो दुइ बीगहा के के चलावो दस बीगहा लो भागे, जनाइ जे पंजरे आ गइल । फेरु जब गोल बान्हि के सीयार के झुमेला चले, हइ तड़प के बीर लेलकारे ।

आरे भरी राति बदी खेलेलान बरियार, अब बीर रोइ रोइ सीयरा लेलकार ल ।
ओहिय पंचे मोतिय सगड़ काय घाट, तनी अब सुनि ल बिपति सुघरा पर ।
सतीया आजु मारतीया गजबवे के धारि, आजु तनी सुन जा खेला हो सुगड़े के ।
बटुरोय जुझिये गइलि बे बरियाति, अब बीर ले ले सीयरा जब लेलकारे ।
अब बीर खेदत सगड़वे पर बाइ, सतीया जब हुलेले सीयार भयवन के,
आरे भींटवा उछावो स बेरो न लेलकार, बाकी बीर डपटि के बाटे लेलकार ल ।

गद्य पद्य : बीगहा भर दू दू बीगहा सीयार लो भागि जाइ । पंचे भरि राति सीयार लेलकार लेहू । भरि राति जब सीयार लेलकारताड़े तक पूरबे लागि गइल लोहो पछीं होखे लागल उजियार, कउवा टेरि उठावे, भोरे भोरे होत बाटे बिहान, जे उदे होतिया डंफ सुरुजेके, एहि मोती सगड़ की घाट, सती काग लागलि उड़ावे, गीध। देले हउवे उड़ाइ, मार स मेरि गीध चंउधोटा जेइ पर बादरि छाइ चलि जाइ

जाइके पहुँच स भइया अब बीर मारे तौरि अलबेला ओहि मोतीसगड़ की घाट। जब तीर लागल सरकावे, दू दू बीगहा लो गइल पराइ। जब पाछे भइया काग जब करे लो कटकटाहट ओहो मोतीसगड़ की घाट। अब बीर कड़े कड़े काग उड़ावसु हाथ के ले ले घेनुहिया बाइ।
अब बीर गुरिया गुरदेलि जब घुमावे।
आरे लेके डोरिय जब देलेह नचाइ कड़े कड़े कागवा उड़ावे।
आरे सतीया ए सोचतिया मन में लेलकार कहे ले जे बजर परो ना पजिया पर।
हारे इनिका दइब कोरितिया दइबवे के बाइ,
एकरे तनिको उंघाई अँखिया पर नाइ छाते।
नाहीं बीर का लगलू थकइनि रे बाइ, थोर मजनवा ना एकर नाहीं दादा होला।
एहि आजु मोतीय सगड़वा कीय घाट, भरि दिन कागवा उड़ावल।
आ उहे गीध हांकत सगड़वे पर पंचे रे बाइ।
ए पंचे जब डुबि गइल डंक गुरुज के, घर घर दीया जब होखे लागल लेसान।
सुन ल हालि सतीया के, ओहि मोतीसगड़ की घाट,
फेरु सियार हुउवे हुल करले।
आरे हुँआ हुँआ सोयरा बोल स लेलकार, सोयरा जो हुआंहुआ कइके बाड़न धावल।
अब भइयामोतीय सगड़ कीय घाट, अब लोरिक ले ले बान्हे लेलकारा।
सियरन के बेरो ए देले बाटे न हुलुकाइ, पंचे अब परलि बा बिपति सुघरा पर।
पंचे अब परलि बा बिपति सुघरा पर, ओहिय आजु मोतीये सगड़ कीय घाट।
जब भइया हुले ले ले सोयरा लेलकारे, नाहिय बानक लागल सियरने के बाइ।
सियरा जब दस दस बीगहवा भागि जालन, ओहो आजु मीतीये सगड़ कीय घाट।
एने आजु सोचति बा बेटीय ना बमरा के, जेवना के सतीया भदइनी बा नांव।
कहे के जे बजर परो ना डींगरा पर, इनिकाजब परल गजब कर धारि।
अउरी भइया सतीया कीरोध होइ गइल, खुनुसीनि गइली बाड़ी न बउराइ।
केतना कीरोध सती लोहलसि, उ ठेकान में कीरोध कहांले कहीं, सरीर का अन्दर। भान न आवे। जेवं पंचे पुरवे जब लोहो लागतिया,
पंछीं सायर होतियाटे उजियार।
कउवा जब टेरि उठवलन मोरे भोरे होखे लागल बिहान,
सतीया आपन सत सुमीरे।

गद्य : आकासे बीगत देव के बाइ, जइसे माघ महिना में बादरि लाल रंग होइ जाले, ढोका परत मी॰ता में बाइ ओंगे भइया परे लागल ढोका सागड़ पर। आरे लड़िका अब ढलिया के कइले बा तैयार।

अब भइया तड़तड़ पथल लागल तड़के ।
अब झकड़ उठल मीरुतवा में बाइ, अब बीर ऊपरा न ढालि बाड़न कइले ।
आरे पथल ठोकर मारता ओड़ना वे परवाह,
केतने पथलवा उछड़े जब किलवा में ।
ओ बीर के लागत ठेहुनवे में बाइ,
परली बिपतिया रहलि हो गुहर्वाल में ।
ओही पंचे मोतीये सगड़कीय घाट, अब बीर रोइ रोइ कागवा उड़ावे ।
ओहिय नगर मोतीय सगड़कीय घाट,
बाकी बीर बीचवा खड़ा न होइ गइलन ।
अब गजे मोतीय सगड़ कीय घाट, लोरिका न तनों रे गरजले ।
आर गीध कमे बाउ न मेड़राइ, लम्मे कागइ सचहू लो भागि जाला ।
अब बीर कइले बा ओड़नवा के आड़, अब भइया भीरे जो ढोका न सुघरा एपर ।
आरे तड़तड़ करता कीला हो ललकार, सुनिल बेयानवा सुनहो विपति के ।
अब बीर परल सकतुवाम बाइ, कोनि नुइ पथल लागत बा केहुनी में ।
जह बीर सांचो हो जाला तलफलाइ, बाकी नाहीं छोड़त बा तमू न अलबेला ।
नाहीय भागल जीव लेके चलल रे पराइ, भरि दिन ढोकवा गीरल हो मीरुता मे ।
तलक डंफु डुबल मुरुज कर बाइ, डुबि गइल डंफुआ साचो न अलबेला ।
अब घाटा दूसरा ओरि गइले उड़ियाइ ।

गद्य : जेवनो घरी कतनों देहि धुना गइल, मुरछा आ जाइ । बाइ हरघरी बीर डांटत रहे । सतो तलक डुब गइल डंफु मुरुज के, डुबि गइल तब अब जान जे काग लोग अपनी स्थान के चल लो गइल । अब सतोया का करतीया । पंचे, पथल जब बन हो जाता त अइसन तूफान उठल, अइसन अन्हरिया उगल, जे ओहि सागड़ पर नाही लउके उवार पार । सतो जब ले के झकड़ चकोरल, आ बीगि देले तमूपर बाइ, ढहि गइल तमू सुरुवां के ओहा मोतोसगड़ की घाट । बाकी केतनो झकड़ झकोरे अब बीर गरजे लागल जार बेजार । हर घरी मार मार कइके डांटे । सीयरन पर बान्ह देले ललकार, ओने उगलि रहलि अन्हरिया, निगिचे जे बाइ से लामा चले पराइ । अब पंचे लेइके बीर जब लागल सियार ललकारे । आ डांटि के जब डांटे त सियार अब घइके सागड़ भागे लोग कहे लो जे जीव अब बांचल ना दादा । इतना गंव लागे दीहलस ।

हारे लड़िका सगरेइ न आ रतिया बा सीयरारे हांकत ।
अब बिपति सुनवइ सागड़वा पर न लेलएकारि ।
जब भइया पूरबेइ ना लोहिया सांचो लागिबा गइल,
पछियें ओ सायरेइ भइल बाड़न उजियेयार ।

गद्य' : फेरु सती आन्हा उठाइ के फेरु पथल के रोरा के घौंटा बन्हलस । अब भइया जेंव साफ होता तेंव लागल पथल ढहे ।
हारे लड़िका आजु करेला ओड़नवा केवाड़, अब भइया तड़तड़ पथल लागल गीरे ।
अब कड़े कड़े ए उडावते न बाइ,
तबलक पहुँचलि हो माइय जगदम्मा जेकरीय देबीय अपरबल बा नांव ।
तनी अब सुनीन्बि गीति इनरासन, एइजा भइया गाफिल भइल मानवा हमार ।
एने अब सतिया वा ढोका बा वरिसावल, देबी हमार पइडलि इनरपुर बाइ ।
जब ओहजा पहुँचलि बाड़ी माइ जगदम्मा, आहो भइया मानि जइब बतिया हमार ।
अब हम कहवां ले विपति करानी, इय बिपति खेवला से नाहि न खेवाइ ।
अब त हमार बालक न परि गइल संकेता, ओहो आजु मोतीय सगड़ कीय घाट ।
अब त दादा केवन न हो गइर चरितर, हमार आज बटुरिय मरल बा वरियाति ।
हमार लालन रहकि जाइन रोग्रत, ओहीय दादा मोतीय सगड़कीय घाट ।
एने आजु हंसल बाड़ं हो विधि बरम्हा हा हो वहिनि मानि जइबे बतिया हमार ।
अब त सतिया खेला बा इ देले, नागिनि से देले न बाड़ी रे डंसवाइ ।
बहिनि आजु सात दिन पर सतीयउ आवे, भेंट करे हमनी का पवन दुआर ।
तू ही अब घइके डहरिया अब जइयवे, चलि जइबे मोरुत मंडल संवसार ।
आजु इहे हउवे न पारी न सतिया के, अइहन आजु हमनी का पवने दुआर ।
जेतने त लरिका पुछत बा सुहवलि में बिपति आजु करतू सुहवलि में बाइ ।
उन्ह के ओतने सांसति होइ इनरपुर, एहि आजु इनरे न पुर वा बाजारि ।
देबी मइया कइके कउल बाड़ी लवटल, देबी हमार आइल अकासवा में बाइ ।
एने एने परत बा पथल सगड़ा पर, लड़िका उ रोइ के हुलुकारत न बाइ ।
एहि में जब पहुँचलि माइ जगदम्मा, सतिया पर घींचले धरमवा के बाइ ।
आ हां ऽ हां हां ऽ ऽ
आजु देबी चललि आइ चलाबलि, जुमि गइली मोती सगड़की घाट ।
जइसे गाइ बोंम के धावे लवरू (बछरू) पर, दुरुगा पहुँचल लड़िका परबाइ ।
अब झपटि के धरतियाड़ी भवानी, एने रोवे बधिनि के लाल,
मइया मोर भवानी जीवहर धरम के माइ ।
आरे माइ हमके ठर ठर पायलवा बरिसल ओड़ने पर,
ऊ पथल ठरकि के लगले हमरी बदनिया में रे माइ रे,
हमार फुलि गइलन न गोड़वा देखबे सुरहनि में,
इ सुपेली विधुनानि गइली रे धुनाइ,
कहति बा जे बाचवा तोहके बेरियाइ की बेरिया हम रहली बरिजत ।

ओहिय पुजवा कुरवेइ ना खेतवा में मय रे दान ।
एइजा जो जब नाहि सहब बिपतिया जो सुरहन मे,
कइसे बेटा फेर जाइ पारवा ए तोहार ।

गद्य : देबी कहतारी जे इ पैदा तूहीं कइले हउव, बिपति के पैदा तू हो कइले हव, नात जहिया हम सुहवलि पूजा दीहल आ सुहवलि के नाव लिहल, त देखल न हमार नांच के गरमी चढ़ि गइल देहि पर ।

कठिन लड़ाइ ह सुहवलि के केहु के बुतन नाहि अड़ाइ ।

गद्य : त ओह घरी हरघरी कह जे मइया मोरि भवानी देवता मान वाति हमार । हमार तू संग घर, ले चल मोती सगड़ का घाट, भीमला के लोहा लागी आ हमार ढाल धरती पर गीरिजाइ । बाजि जाइ इनरपुर बजार, छोड़ि दीह संग जगदम्मा, आ चलि जइह इनरपुर बजार । हा हो लालन ओइजा तोहार लउकल ना । तहिया लउकल ना, आ एही से न हम बरिजति रहलीं, बाकी ए बनी हरज न बेटा काटि ल दिन समे ह तोहरो आइके रहो, दूसरा कहतियाड़ी आ आइ ए रहा । हे लालन अब सुत ऽ ।

अब देबी अपनेइ ना लड़िकवा मारी साचों बाड़ी सुतवले,
अपने पहरा देति जगदमबे बाड़ी रे माइ ।

गद्य : भर दिन आदि शक्ति भवानी पहरा देतियाड़ी । अब चार सुति गइल ह । ए पंचे, जब डंफ डुबल सुरुज के । घर घर दीया भइल जान, जब खान पान हो गइल, सुता पारिगइल सुहवलि नर बजार । उठोल बेटा बंगरा के जकर सती मदइनी नांव । आपन सत सुमिरे, धरम डोला बइके रहल तइयार । सत के डोला उड़ावल, चलल इन्दरका पवन दुआर । आ सती के चलत गइ । चलावल, आ डांड़ी जुमि गइल ए भईया देवतन का पवन दुआर । सती जब डाइन लेके उतर लगे आ जब बेसनों दुबार पर चलति हवी । त···लेके चइला सुनुगावल रहल अगिनि के । जब बेसनों दुबार पर चलति हवी सती, जतनी हम आपन देवतनरो गाड़ लगाईं, ए पंच जेंव अेसुन के फाटक नियरावतियाड़ा तेंव परोल मारि लुआठा के ।

हारे दूत अब पीटत बाड़नि ए लेलकार, अरे लागलि बढ़ान सतिया क,
अब रोव इनर के पवन र दुआर, लुतवा लुआठिये ले के लाल पीट ।
अब एने भगलू सतीये जब बाइ, अगुन दुअरवा छोड़ के अब सती ।
आ भागि के अब चलली आ ब्रम्हे का दुआरवा बाड़ी न निचियवली,
ओने दुत पहुँचल लुआठि ले के बाइ, ओनिइयाइ परल बाड़ हो लेलकारा,
दू-चार खोरनी मारत बाड़न स लेलकार, ओइजा ले भागलि बाड़ी सती जब कीला,
अब गइली त्रेमुन भगवान का दुआर,

ओहू जाम दगलि ना अगिनिया अलबेला,
अब चइला फुंकल बा बेरो लेलकार, ओहू जागो परोगइल मारि चइला के ।
देह आजु जरति सतीय के न बाइ, सतीया कतहीं ए सरन नाहीं लागल ।
इनरापुर डंकले न जाके चिलिलाइ, तब भइया रोइ के बोललि बा मीरुता में,
हा हो ब्रह्मा मानि जइब बतिया हमार,
हमरा से केवन चूकन दूनिया होइ गइल, केवन घाटि बाढ़िया कइली रे बरियार,
केवनी विपतिया परलि हो देहिया पर ।
कांहे कारन इनरपुर में बानी रे पीटात, ओइजा अब हँसि के बोलल विधि ब्रह्मा,
हा हो सती मानि जइबू बतिया हमार, केवन दोष बाइ तू ही देलू इनरासन ।
कुलिह तोरा पापवा भइल बा बरियार, जीयते संनुरवा मारे लू सगड़ा पर ।
बटुरिय मारिय घललु रे बरियाति, जेतने इ अहकल बा बेटा बा बाविनि के ।
ओतने तू चइलन बाडू रे पीटात, तब ओइजा रोवलि बा माई हो जगदम्मा ।
रोवलीय सतीया बाड़ी न लेलकार, जाइके जब गीरेले चरन देवतन का ।
हा हो बाबा मानि जइब बतिया हमार, आजु हम पुछिये बाबा न विधि ब्रह्मा ।
तूँ ही अब जनम दे ले हउव तू हमार ।

सती का इन्द्रपुरी में जाना —

सती के भाग्य में विवाह का योग ब्रह्मा का कथन

गद्य : ए पंचे, ब्रह्मा की चरन पर जाके सती गिर परल, कहलास जे हाइ बाबा तूँ ही हमार जनम देले हउव । कवन हम पाप कइले बानी, ओके देखा द । कहलन जे सतीया ठीक कहतारी । तू जनम लिखवलास, इनरासन जे हमार पती जनि लिखाव आ ना हमार सादी लिखाव । ठीक लिखाइल बाको जब ए जगह रो उठलसि त सम मिलि के का कहल लो जे ओहो हो नीक नइखे रुख ब्रह्मा, सती के भेजताड़ मीरुत लोक में त मीरुत सवंसार ह माया, सती जब चलि जाइ आ जब घर-घर सादी परी आ घर-घर बियाह परी त ओह समे में सतिया जब मांड़ों में जाइ, त इहे सतिया का कही जे आगि लागो ओहो ब्रह्मा का कलम में, उनकर पोथी जरि जाउ इनर पुर बजारि, आजु जो हमरो सादी लिखले रहीत एहियों न हमरो होइत बियाह ।

त सदिया मोरि आजु पाछावा से मारल बाड़ी ना, अ टंकिया देखबे लीलरा में ।
इत जीय अब मेटलाइ से ए नाही न रे ददे मेटाइ ।
आपन जाइ के सुहवलि में लाछाना ए रनिया छोड़ाव ।
नात अब पापावा भइल न ए अधिकाइ ।
उहवे ले रोवति लवटलि न घीयवा पंचे बमरा के ।

घरमे काइ डोलवेहू बइठलू रनिया बाइ,
जाके रनिया सुरहनि में जुमि गइलि रानो अलबेला,
जाहां मानि बनलि हरदेइ ए के न बाइ।
आजु सती जब बिलिखि ए बिलिखि के जब लागलि ए रोवे,
बहिनि विपति परि गइलन भटिया रे हमारि।
जब सतिया अहकि अहकि के हउवे ना रोवलि,
हरदेइया आजु पहुँचलि सुरहनी में ना बाइ।

गद्य : कहतिया जे बाहिनि इका। अबका रोवतियाडु ए दादा। कहतिया जे चइलन के मारि से हमार गतर फुटि गइल। हम ना जनलीं जे हमार सादी लिखलि बीया। आजु उहे ब्रह्मा हमनी के चइलन मार के आ लुकन मारि के हमार बिरहुनि के हालि हो गइल इनरासन। बहिनि पुछ बइठन लीहे, हाइ ब्रह्मा तू ही हमके करम लिखले हउव आ आजु हम तोहसे पूछनानी, जे हम कवन बेजाई कइलीं, केवन कसूर कइली जे आजु हमारइ हालति होतिया। ब्रह्मा कहलन जे तू कसूर कइले बाडू जे ओइसन कसूर केहू दुनिया के अन्दर नइखे कइले। सती। का कइले बाडू जे जीयत आपन पती मरववले बाडू, अब एहू से पाप का कहाइ। जियते पती मरवा के आ बटुरी डंसवाइ देतो बाडू, बराति। तब बाहिनि हम रोइ के ओही ब्रह्मा के चरन पर गीरि परलीं, रोइ के चरन पर गिरि परली हम। कहलन जे का गति ह। कहन जे देख, उकहू ता जे तवन ठाक हमरे लिखल ह, आ तोर सादी ना लिखाइल, बाकी बइठ रहलि फहार पंचन के एहि इन्दरपुर बजारि, जब सती हटि के चललसि मीरत लोक में, सब देवता कहल जे इ नीक नइख करत, काहे आ त सती जातिया मीरत लोक में, माया की बाजार में, जातिया आजु सतिया इकहि के जाति आ घर-घर जब गवन बियाह परी आ जाइ जब मंगल सुने तहिये कही जे जरि जाउ कलम ब्रह्मा के, पोथी जरि जाउ इनर का पवन दुआर। तब हम सती जाइके पाछा से तोर हम मारि दोहलीं टांको लिलारि में। इ टांकी मीटे जोग ना बाइ। हाइ दादा। कहतिया जे अब का करीं। अब इहो नाही कही। हमसे बराति जी ना सकी। कोट दरजा से जी ना सकीं।

आजु ओइजा रोव लागलि ना धियवा पंचे बामारा के।
बहनि हरदेइ आजु पार गइल साकाठवा रे बरियेयारि।
कहित बा जे बहिन आजु सही सही न बतिया तू हू कइले।
साचो बटुरी सही रहलि न आ बतिया रे दादा तोहार।
बाकी ब्रह्मा हमरी अंखियाइ में ए अन्हवत डालि बाड़ ए दे ले।
पांछावा स टंकियाइ न आ दोहलनि रे मारि।

आजु बहिनि चाहे नरकेइ मे देहिया तू अब ठेलि न देबे ।
चाहे नरकनि ले काढ़ि लेबे न बायावाइ रे हमारि ।
ए बहिनि हमार जेवन ई जुगुतिया तोर, एइजा लागे सुरहनि में ।
सुरहनि मे तनिको जनि रखि हे रे उठाइ ।

सती की प्रार्थना पर नागिन का
बारातियों का विष खींच लेना

गद्य : अब पंचे, सुनि लीं बयान सागड़ के, जब सती बाड़ी त दोहाई दे दीहली हरदेइया पर का दीहली जे हे बहिनि चाहे नरक में ठेलि द चाहे नरक ले काढ़ द । हमरा से चूक हो गइल, हमरा आंखी अन्हवट लागल रहल । हमरा ना मालूम भइल, हरदेइया कहतियाजे बहिनि अब का कही, बड़ी सकठ उठावे के परी, कहतिया जे बहिनि जेंगो सकठ से बरात जीयो आ जेंगो हमार नरक उधार होखे, ओंको आजु सागर पर क द । कहत बा जे अच्छा अब हम तोके कहतानी सुरहनि के बाति चीत ह पंचे देबी सागड़ पर सुन रहल बाड़ी । ए बयान के गुनलीं सभे । हरदेइया कहतिया जे बहिनि जब बरात जीयावे के चहबे त माया के गाइ बना दे सुरहनि में । माया के गाइ बना द सुरहन में, आ लयन ले आ चारि कोना नांद गड़ा दे । आ दूध दूहवा के नाद भरवा दे । केकरा से दूध दूहवाव आउ जवन बीर सागड़ पर सुतल बा उहे । बोर जब गाई दूही आ तू ले जाके नाद में ढरका दी हे, हम जाइके मरदनि के बीख घींचबि, आ दस बीस मरदन के बीखि जब घींचबि तब हमरी देह मे जब पाया जब समाइ त जाके हा हा के नाद मे कूदबि ।

ओहि में बहिनि झर झर देहिया झोरे लागब,
ओहि मे बहिनि झर झर देहिया झोरे लागब ।
जब देह दूधवन से जइहन रे जुड़ाइ,
उहे दूध ढडुआ नियर जो होइ जइहन ओहि देखु मोतीय सगड़कीय घाट ।
कोहिको मोर जीहीं तोर बरात सुरहन मे, उहे जब सात आ जो करबे न उपाइ ।
दूसर उपइया तनिको ना एइजा लागे, नाहीं निहचे जीहि तोरी निहिचे बराति ।

गद्य : पंच, सती के जब हरदेइया कहले ह, त कहलसि जे ह बहिन कवनो हरज ना । सतीं जब आपन सत सुमीरले ह पंचे, आ उगल रहल अंजोरिया, राति अंजोरिया रहल । पंचे उगलि रहलि अंजोरिया, उ सोभा कहे जाले ना बाइ । सतीया लागलि जब धरम के सुमीरे । सत जब होखे लागल तैयार, सावासइ गाइ अलबेल्हा आ बनली स सुरहनि केरि अरार । अब पंचे, सती जब मायाके गाइ बना दीहलसि । ओदरि धरम से गाइ जब गइलि छन्हारि मारि के, बोम ऽ स बछरू खातीर ।

फेरू सतीया आपन सत सुमीरे भइया लेके चारू कोना नांद दीहलि बइठाइ।
सागड़ पर चारू मींटा पर नाद बइठा दीहलसि।
आरे फेरू जब घुमलिबा बेटी न बमरा के, जेवना के सतिया मदइनी ह नांव।
अब रानी हाथवा के गरदा रे उठावे, ओहिय पंचे मोतीये सगड़ कीय घाट।
तहिया जब सउनी के मटिया नचावल, अब माटी बीगले उपरि के लेलकार।
अब भइया बनि गइलन घुरुला अलवेला, अब घुंचा होइये गइलन रे तइयार।
जब भइया सुरहन में घुंचा बा बनवले, सतीया अब धरम करति बा लेलकार।
सतीया फेरू बाटे सतवा सुमीर ले, सावा सइ बछरू भइलन रे तइयार।
उन्हनि का गर में पगहवा बा लपेटल,
उन्हनि का गर में पगहवा बा लपेटल, ओही पंचे सुहवलि केरि न बजारि।
अब रानी हाथ के नौयड़वा लेइ लेले, अब रानी हाथ के नोयड़वा लेइ लेले।
ओने बछुरु छोड़ले सुरहनि के बाइ।
सतीया जो हांके ए बछरू अलबेला, अब रानी चललूसुरहनि में बा।
हे आ आंगा डपटलि धाइ ए भवानी, हा हो बेटा उठि अब जइबे रे हमार।
तनी बेटा देखि के खेला न सुरहनि में, एइजा आजु जुमलि बा करनिया तोहार।
बेटा अब छेकि देब आग बछरुन के, बछुरुअ पाछावा देबे न भड़काइ।
अब एइजा परि गइल सकेता अलबेला, हाहो लालन मानि जइब बतिया हमारि।
अहिरिनि के गाइ बिसुखा द अलबेला, नतिया जे मोतीये सगड़कीय घाट।
तूहीं अब करि हे कउल रनियासे, रानि अब रोइ के करिहन रे बिलाप।

गद्य : का बिलाप करिहन – त बछरु जब भड़कइवे बेटा रोइ के रानी बिलाप करिहन जे अहाहा…हाइ ए दादा आरे हमार ओदरि गाइ बिसुखावत काहे बाड़ ए दादा। हाइ लालन जब ओदरि गाइ कहिहन जे काहें बिसुखाव ताड़े त तू बेटा कहि हे, जे देख, जइसे तहारि गाइ बिसुख ताड़ी स ओही कबाहटि में हम परल बानी, हमार बराति मरि गइल बे। जो हमरी बराति के जीयइबू त तोहार गाइ ना बिसुखिहन स आ नाहीं ना जियबू व निहचय ओदरि गाइ तहार जाइ बिसुकाइ। हमना जाये देवि सागड़ पर, एहि मोती सगड़ को घाट। बेटा जब एंगो कहबे त त हम तोहके बुधी सिखावतानी, जब उ रानी कही जे अच्छा तहरी बरात जीयाबइव तोरा सक्ति बा देहि में, पूछी तोहरा से तोरि देह में बा, त तू कहिह जे बे शक्तिये के हम बानी त उ बोली जे अच्छा तहरी देह में पावर बाटे त हम सवा स बछुरु छोड़ि दे तानी एके हाला, आ कुल्ही गाइ हमार दूहिल ऽ एके हाला। तब लोरिक कहतारन जे आहि दादा हम त छेरियो नइखीं दूहले। देवी से आपना कहतारन जेवन तू बिकट चढ़वलू जे आजु हम छेरियो नइखीं दूहले। हँसे माइ

भवानी जेकर देवी अपरबल नांव, बाउर बेटा बउरइले की तौर माना परल गियान, जेकर दुरुस्त कायस्थ वाली संगी ओकर कइसे होइ अकाज। एके हाला बछरू छोड़वा दी हे ललकार के एहि मोतीसगढ़ की घाट। असल होइब भवानी बेटा देखिले खेला एहि मोती सगड़ की घाट। केतनो बछरू ली चुंची को उठाइ बून भर दूध ना जाये देब, एही मोती सगड़ की घाट। एगो कल से घुरुला लेके बइठिहे। दूहब गाइ तोहार, बटुरी गाइ दूहि घालब एइजा राखब सत तोहार। कहत बा भवानी जे भरमिहे जनि, नाहीं जनि करिहे। एइजा जइसे कहताड़ तइसे ओइजा जनि कहि दीह जे आहि दादा गइये नइखी दूहले। आ धोवल धावल नाव पांक में अंटकि जाइ बेटा।

एने सतिया हँकले बाटे बछरुबा मइया सुहवलि में,
सागाड़ा ले कुदल बा बधिनिये केन लाल,
ए पंचे उ लइ ले कामार ऽ धा लागल ए भड़कावे,
बछुरुअ पछवइँ के चललनि रे पराइ।

गद्य : तब सती कहतीया हाई डीगर, आजु हमार बछरू दादा भड़कवलें अब हमारि गाइ बिमुख जइहन से, तड़क जइहन स। कहतारे देख ऽ आगा बछरू अब जाये ना देइबि जइसे हमारि बराति दुवार बा, ओइसने गाइ तहार बिसुखा देब, आ नाहीं त जो हमरी बराति के ओयनू, तबे तहार गाइ दुहाइ, तात निहचय बिसुख जाइ गाइ तोहार। सती कहतिया जे अच्छा अइसन तू करब, अइसन करब, बरियाईं, त कहता जे जवने तू बूझ। हीरिगस ना तहार बछरू जाये देइबि।

हारे दुरूगा उ देखत बाड़ी खेला जगदम्मा,
हारे लड़िका आगर रोकले बछरुआ के बाइ।
देखतियाड़ी इहे ह बेटी रे बमरा के, जेकर आजु सतीय मदइनी ह नांव।
बीचे जो इ चिल्हि जाइ बेटा अलबेल्हा, सतीया के बीचवे देह हो बेलमाइ।
आंगावा अब बहुत करजिकर के बाटे, जेवन सान गइल मीमलिया के बाइ,
अबहींय लड़ेके बाइ झिंगुरोसे, अबहींय लड़ेके दंसवता से बाइ,
अवहींय लड़ेके बा पाठा भगवता, अबहीं बीर लड़ेके सीर जावा से बाइ।
अबहींय बिहढ़ लोहा ह पाठावा के, जेकरि आजु गजबे भीमलिया बा नांव।
आजु जब लड़िका के जो बेरो न चिल्हवाइ, बीचवा में घइलेइ बांह लेलकार।
आजु मइया सोचति बा माइ न जगदम्मा, अरे रचना उ रचले हउवन न भगवान।
अब लरिका बीचवा में बछरू बा रोकल, पंचे तनी सुन बाजा ध्यानवा लगाइ।
जब लरिका बीचे में बछरूआ छेंकि देला, तब ओहजा बोलली सती बा ललकार।

गद्य : कहता जे आच्छा, हमारा तोहरा नेम इहे होखो। तोहरी देह में जो शक्ति होखे त हम सावा सइ बछरू छोड़ि देतानी, सुरहम में दूहि द गाइ हमार, आ जब गाइ दूहि देताड़, हांकन तोहार हम बराति जोयाबि मोती सगड़ की घाट। हँसे पठा अलबेल्हा, बीर के बंका लोरिक ह नांव, कहता जे छोड़ ऽ छोड़ ऽ अइसन गाइ हम हम बहुत दूहले हईं गउरा में। छोड़ि द ऽ बछुरुन के। ए पंचे, सतिया सवासइ बछरू एके हाला हुलुकार दीहलसि। आ कुल्हि बछरूँ गाइन पर परि गइलन स लेलकार।

आरे बाको तनी खेल ना खेल दुरुगा रा,
तनी एइजा खेलिल ऽ खेला हो दुरुगा से सती एइजा आइल बाटे अवसरे तोहार।
इहे तोहारि गइया ए बनलि बा घरमउती, इहे तोहारा गइयाँ बनलबा घरमउती।
सातवा स बेकल में डललू ना परान।
अब एइजा खेला ए करेली जगदम्मा, जेकर पंचे देबिया अपरबल ह नांव।
बटुरिय रोकि देली सत गइयन के, बछरू लो चुचीय ठेंठव ऽ त रे बाइ।
अब बीर हाथ के नेवांड़वा बाटे लेले, हाथवा के घुड़ुला जे लेले बा उठाइ।
जब बीर जेवना गाइ दूहे का बा बइठल, अब बीर बइठल बा घुरुला लगाइ।
अब भइया फुटि जाला सोत गइयन के, हउहे दूधवा बनेला ए लगाइ,
अब बीर एक हाला दूधवा दबावे, घुरुला जो दूधसे भरेला लेलकार।
सतिया जब दवरि दवरि दूध बाटे लेले, लेके भइया नाव मे ढाह ले लेलकार।
जब भइया लागलि जब गइया रे दूहाये, ओही आजु मोतीय सगड़कीय घाट।
अब तनी देखिल खेलान ऽ देबिया के, सतीया क अकिली गइलि बा गड़बड़ाइ।
घड़बड़ घड़बड़ मन अंउजाला इत नाहीं लगलू कोरियावा दइबा पार,
आजु तनी सुनि ल ऽ खेलामोर देबिया के, सवा सइ गइया ए देली न दूहवाइ।

गद्य : ए पंचे, जब गाइ दुहा गइल। सती मन करतियाटे जे अब हम चलो सुहवलि में, बीर दवरि के तेगा उठा लिहलनि। बाघ के लेलकारा परल सती पर। बाव कहि के ना जाये देव तोहके। खाड़ा हो जा हारगिसरे। हमारा तोहरा कउल ह, जे हमार गाइ दूहि देव त तहार बराति जिया देइबि। हाथ के तेगाले के जब चलालन झटकारि के, जे तोहार काटि लेइबि मउर हम सुरहनि में, एहि मोती सगड़ की घाट, हँस माइ भवानी बीर के घरतियाटे लेलकार। हाइ लालान, ए बेटा ए लगना में जनि पर, जब तोरिया बधन क देवत ना जोही बराति तोहार, छोड़ि द, कहत बा जे छोड़देइ आव हं छोड़ि द। जो जाइ न आव हं जो जाइ। छोड़ि द तिरिया बध होइहन ना। ए पंचे, सती जब सुरहन के हेठियावतिया त आदि शक्ति भवानी अब बीर पर सुन लेब खेलवाड़, अब बीर के सागड़ पर हई सुतवले ओहि

मोती सगड़की घाट, जब देबी केतना ओजन चढ़ाव-तियाड़ी जे बारह से ए भइया मरही, दुनियां के चलल बाड़े भूत बेताल जेतना जम्हु पीरथमी के, आ ले के बीर के ढ़ाहि देले मउर परवाइ ।

आजु एनिया सुति गइल न आ पूतवा भइया खोइलनि के,
ओके नासा दबलेइ सगड़वे पर पंचे ए बाइ ।
सतिया जब···सजीया इ देबे बरतियाइरे हमारि ।
चललि नागिनि हुरदेइया ।
आरे देहिया जब झोरिके चढ़लि लेलकार, चलल जब आइल हो चलावलि ।
अब नागिन भींटा पर चढ़लि बे लेलेकार, जेनिया उ टीकल न बाड़नि रे बजनिया ।
एक ओर टीकल कहरिहां न बाइ, जागलि जब बिखिया घींचे न मरदन के ।
आरे देवी सबके ठोंकि के सुतावति भइया बाइ, केहुअ के नीनिया टुटे त नाहीं देली ।
ओहिय पंचे मोतीय सगड़ कोय घाट, घुमि घुमि नागिनिया ज लागलि बीखि घीचें ।
आरे बिखि ओकरा चढ़तु मंडववा में बाइ, अब नागिनि कुदिये जाले हो नांदवा में ।
आपन देह बारो ए बेरोन न झरकाइ,
बटुरिया बीखिया झरेले दूघवा में । अब दूघ हरदी जो हो गइले समान ।

हुरदेइया नागिन द्वारा विष खींचकर बारात जीवित करना और दूध के नाव में अपने को ठण्डा करना

गद्य : पंचे, बजनिया कहरिहन के, जेवनी बेटरु बीखि घींचलास, आ नांद में जाइ के कुदलि त जाइके देहि झटकारे लागल आ जब बीखिनिकड़ल त पोयर अस दूध होइके आ थोड़े घरी का बाद में अब डढुआ हो गइल । फेरु पहुँचलि बराति में आं आं ऽ हां ऽ हां ऽ ···
पंचे, देखिल ऽ खेलाई नगिनी के, पंचे देखिल खेलाइन न नागिनी के,
ओहिये मोतिया सगड़वा को न घाट, जहिया घींचे जो बीखोया जो मरदन के ।
जहिया घींचे बीखियाजो मरदन के, आजु इहै घींचतिया अकोरे से न बाड़ ।
जब जब नांदवा में देहिया बाटे न पटकति, बीखिया छोड़ति दूधन में लेलकार ।
उव दूध बीखि से डढुआ होइन जाला, ओहि मोतीय सगड़वा कीन घाट ।
जब इहे दूसरी अलंगिया चलि बा गइल, बीखिया घींचले मरदवे के न बाइ ।
ओनिया घींचति बा बीखिया मरदन के, बीखिया छावत मंडप वा पर न बाइ ।
फेरु आजु तीसराइ न नान्दावा में बाइ कुदलि, आपन बीखिया हुलतिया लेलकार,
उहे जब दूधवन में बीखिया छोड़े लागल, दूधवा तीनिय नादे न डढुआ बाइ,
पंचे एके न नांदवा दूधवा रहल, ओहिय आजु मोती सगड़वा की न घाट ।

गद्य : अब जब बटुरी मरदनि के भइया खिखि घींचि के आ नागिनि जाके नांद में हुलुक देले नाद में बाड़। उ दूध डढुआ समान हो जाला, सुनले सुरहुन का निकठ अरार, आजु पहुँचल नागिन हरदेइया जहाँ दूलहा के डंसले बाड़ी लेलकार। जाके हरदेइया पहुँचल गइल दूलहा पर अंगुरी में मुंह जब ले ले हवेलगाइ लागलि बीखि के पंचे घींचे एहि मोतीसगढ़ की घाट, अइसन बीर बा बीखि का मिलल, नागिनि की देह में नाहीं लेत बाड़े संसा

आजु नागिनि हुटुकि हुटुकि ना बीखिया घींचलसि घरमी के,
गाई जाका चंउथा नांदवा कुदलि बा लेलएकार,
ए पंचे, दुरुगा कइले रहली ना···आ खेलवा देखब सामड़ा पर,
आ उहे जब ठोकि के सुतवले बाड़ी बरिनायाति,
जब हरदेहया सतीयाह का गरिया में बा जुमि ना महल,
तबलक सवंरू देहि तोरिके उठल समूइये में न बाड़।

गद्य : कहलसि जै ओहो हो अइसनकबे नोनि भाइ सुख के न आहलि ह। तबलक रोइके उठल बीर लोरिक, ओहि भइया सोना सुहवली पालि। कहे जै भइया मोर बघेला मीता मनबे बाति हमारि। अइसन नोंनि तहन लोके आइलि रहलि ह ओइसन जानतिया होया हमारि। ओइसनि विपति उ जनि परो सोना सुहवली पालि। कहलसि अब सुतल रहल हा जा सुख से तवन हमारि गति जानतिया देहि, इ नीनि हमार बादियो जनि सुतो···

आ हा ऽ हा ऽ
आजु पंचे हितु करि गंगा तुरुक करि गोरि,
भलि कामिनि संग छोड़े लूअ मोरि।
अब देवी कहां गोति बानी गावत, कहाँ आजु दोलें परल बिसभोर,
जेवना दिन कर पुजलियं, अब देवी परी गइलि नियराह, कहि द कोरिति भरदनि के,
आ जेकरी देह स वाजलि बा तरेवऽवारि।

गद्य : आजु जाग भागि बेरी भवानी जुझि बेरि चल दुरुग मुनिमाई, आजु गोति बेरी सुरसती, देबी जी हवा होख तइयार। कहि द कीरिति मरदानन के जेकरी देह से बाजि गइल तरवारि। आजु एहू ले छोड़ी पंवारा, हरघरी भजों देबी के नांव।

त ए देवी हमारि गवलूअ ना···गोतिया साचों छुटि बा गईल,
एने जब खांखरि भइल बायवा रे हमारि।

आजु बइठल मेंडरि पंच के
आरे छोट बड़ हुउवन रे एक समान, सभ मीलि हुकुम लगावल,

हमरीय बुतवे खेवल नाइ जाइ, अब देवी तोहरे न बलवा भरोसे,
मेंड़री में बइठि गइली मथवा उघारि सभ मीलि हुकुम लगावल,
अघजल में परि गइल डेंगा रे हमार, तोहरे म बलवा भरोसे ।
देवी अब बइठल बानी सभ लेलकार, जेवना दिवन के हवीं पुजले,
हारे तेवन घरी हो गइल बे नियराइ, एक ये समइया के लोहा देवी हउवे ।
आरे बाकी एकेअ समय के हउवें लोहा,
आरे कानवा के सुनलि भले गीति रे गवाइ । अंखिया देखल नाहीं बांड़ ।
कानवा के सुनलि भले गीति रे गवाइ, अब देवी बइठविवा मेड़रि पंचवे के ।
सभवा में बइठि गइली माथावा उघारि,
बनले पर संगी हउवे दूनियां, जा बीगरला पर केहु नाइ हितवारे भेटाइ ।

गद्य : आजु बनला पर संगी देबी ह दूनिया, बीगड़ला पर केहू नाइ होत हमार, बाकी आजु सुनल देवी केवन अइगुन हो गइल अब जै देवी नाहि परसन होलू हमारि, अब जेवना दिन के पुजलो तेवन घरी गइल नियराइ ।
ए देबी सभका देहकेइ दीभगवा भइल दूनिया में,
आजु हमारा तोहरीय चरनिये के बलि ना हारि ।
आजु देवी जइले संघवा घइलू मीरुता में,
तब दिन गावत बानी गानवा ए तोहारि ।
आजु देबी जहिया छोड़ि दे तारू संग मीरुता में,
आरे देसवा में चलि जइहन गाना रे हमार,
जेवना दिन के हवीं पुजले । देवी आजु घइले बाड़ू सगवा हमारि,
जहिया छोड़ि देबू संग मीरुता में । दूनिया में चली जइहन गाना रे हमार । जेवना दिनन के बानी पुजले । अब देबी घरिया गइलि बे नियराइ । एहू करि छोड़ि के पंवारा । आंगावा जब भंजिए देबीय के पंचे नांव ।
आजु जगली भागि मेरी भवानी, आरे सिरवा पर जुझि गइलि दुरुगा मुनिमाइ ।
गोतिया वेरिया जब सुन मुरसातिय, आरे साचो जीभवा होइलन तइयारि ।
कहली जे गाव गाव बबुआ अलबेल्हा, और अब सुनिलेइ कानावा लगाइ,
आजु बाकी एगुड़ अछरि भूलि जइहन, अब दू दू कहिके मेराइ दैबि लाइ,
कहि द कोरितिया आ तू मरदानन के,
देसवा में बाजिय गइलि तरवार,
अब पंजे परसनि भइली जगदम्मा, सिरवा पर बइठलि दुरुग मुनि माइ,
जब हमारि जागि जाली देवी जगदम्मा,
अब दूनिया काइ रे करो रे कोहनाइ ।

गद्य : आजु एहू के छोड़ि के पँवारा आंगा भजो सुरुआ के नांव, सुनिल ऽ भारथ अब मीरुवा में ओहि सोना सुहवली पालि । जब बइठलि मेंड़रि मरदनि के लेके ओहि गजन मउर गढ़पालि । लेके सोना सुहवली पालि । एक एक मरद रहल जोधा दुजे रहल दइव के लाल, जेतना मरद करघनिय । भोफिल बइठि के लेके भइया सोना सुहवली पालि, उऽे बेटा बरती के देवकी ननन राजकुमार चललि गइल, चलावल जब बीर पहुँच गइल रसत की हैं बाइ । रसत कीहें जब जुमि गइल हुउवन, त देख तानी अब नेवहन लकड़ो हमार केतना घटि गइल ।

आजु जब पंचे; जाह्री दिन के बाते आगे मुनऽसमर के हाल, जेवनी बेर जुमे बीर बघेला तुम में गइल हुउवे समाइ । जब रसत की ओर ताकताटे त रसत खतम नियरा गइल बा । खलिहै बोरा आ खलिहे टीन घीव के कुल खतम हो गइल बा ।

आजु ओइजा ले घुमि केइ ना आ लोरिका न चलिवा आइल,
जहवां बीरवा बइठल अजाइया न पंचे रे बाइ ।।

गद्य : बोले बीर बघेला अब देबे लागल जबाब, कहे जे मीता मोरि अलवेल्हा राजा सहदेव मनऽबाति हमारि, आजु हमारि नेवहन लकड़ो ओरा जाइ त हमके पइचा ना मीली उधार, सात दिन हमार एहजा टीकले हो गइल एहि मोती सगड़ की घाट । न सुहर्बलि के पाती आइत सागड़ के आ न आना सागड़ के पाती गइल सोनासुहवली पालि ।

त ए मीता हमार बीचवाइ ना नेम्हड़ जो घटि न जाई,
हमरा के पइचों ना मीलि हनि रे उधारि ।
ए मीता तनी लिखि देवे ना —आ पतिया दा.। अलवाबेल्हा,
आजु भेजि देइ सोनावा सुहवली दह न पारि ।
आजु धोबिया मारि दोहलसि न छतिया जब पंचे गदेला,
आजु लोटि गइव समुइये में ना बाइ ।

गद्य : का कहे कहे जे हे मीता--आजु जो नांव ले ले बाड़ पाती लिखे के, कड़कल हाड़ जेबा छाती के, पंजरी के टुटि गइल हाड़ हमार । कहे जे हाड़ टुटि गइल बा आ चढ़ि गइल जर गुड़गुड़ी, सीरे धमक के बथे कपार, हाथ कांपे लागल कोला में ई पाती हमरो बुतन नाहीं लिखाइ । पंचे, जब एतना जबाव जब धोबी देले हु, सब बीरन के हुलस गइल झुराह ।

सुनोलं ऽ जे केहूनाहीं लिखे ना आ पतीया भइया सुहवलि के,
लोरिक लेइके घुमल पुरुजवे ले न बाइ ।
ए पंचे एहि से गीति···आ हाँ हाँ हाँ

गद्य : आजु जाहि दिन के बाते पंचे सुन समर के हाल, सुन पंवारा अलवेल्हा लडवसया शेर जवान। जवनी बेर ले के घुमे पतरिका ओही मोती सगड़ की घाट। ओइमे एक-एक मरद जोधा दूजे गइल बाड़ें दइव के लाल। जेतना बाड़े करघनिया सुहवलि करे लोगइल बरियाति। बीर जब हाथ के लेके पुरुजा घुमल, ओही मोती सगड़ की घाट, भीमला डर की मारे केहू पाती ना लिखे भइया, ओही मोती सगड़ की घाट। काहे—

जे जे बोलऽलिखि देंइ न आ पतिया भइया सगड़े पर,
उ भीमला जीव ना छोरी सोनवेइ सुहवली ह दहवा पालि।
आजु तनो सुनि लेबऽ ना आ लोहवा भइया सुहवलि के,
आजु तब लगलेइ मरदवन के न बाई।

गद्य : आजु पंचे, ना केहू पाती लिखे, अब बीर घुम के थकित हो गइल ना जब केहू पाती लिखे, त का ओइजा बीर का हरिखा आइल बा, कहवा जे आहा दइब नरायण, का विधि उगिल दीहल करतारि, आजु हमरा घाव आइलि बाटे पढ़ला के। हम जमते लड़े लगलीं गउरा में, ओही मोती-सगड़ की घाट। ना मनसी का दुआर पर गइलीं आ न पढलीं, मीरुत मंड़ल संवसार। आजु जो पढ़ले रहितीं कीला में, त लिखि देती पाती त हमार सुहवलि चलि जाइत बजारि।

आजु लोरिक छोड़ी दीहलसि तमूइया सांचो अलवावेल्हा,
सागड़ा पर रोवे लागल ना जारावा रे भइया बेजार।
एने आजु धावलि बाड़ी न मइया देख जगवादम्मा,
जुमिय गइली मोतीयेइ सागाड़वा के पंजे रे घाटि।
अब देबी रोइयेई के गोदिया में बा दाबिन न देले,
आंसु मोरि पीछे लागलि न अंचरे रे लगाई।
हा हो लालन केवनाइ संकेतवा में परि तू गइल।
आजू रोवल मोतीयेइ सागाड़वा का बेटारे घाट।
आजु तोहार सुनले बानो न रोवल जब ए सुहवलि में।
हा हो लालन फाटियगइलि न छातियाइ रे हमार,
कहू बेटा केनियाइना लोहावा तू बाड़ लगवले,
केनिया बेटा टुटि गइल न डड़ियाइ रे तोहारि,
आजु देबिया रोइ रोइ ना पूछतियाड़ी लड़िकासे,
आजु आंसू पोंछतुय अंचरवे बबुआ रे बाइ,
तब ओइजा ठुनुकल हउवे ना पूतवा तो राणिये के,
जेवना के बंकवे लोरिकवे ए परल ए बांध।

गद्य : का बीर कहताटे कहे—जै मइया मारि भवानी अब जीव तोहरे धरम का पालि आयु हमारि लेवहन लकड़ो खगि जाइ। बीचे हमके पंइचा ना मीली उधार। अब हम, सुहवलि से पाती ना आइल वा सागड़ पर, ना सागड़ पर ले पाती गइल सोना सुहवली पालि। केहू आइल हमार नइखे जानत लेके मीरुत मंड़ल संवसार, आजु जो बीचे लवहन (लावन) लकड़ी ने ओरा जाइ हमके पंइचा ना मीली उधार, एक-एक मरद जोधा, दूजे लोगें आइल दइब के लाल; जेतना मरदकरघनिया चलि अइले सोना सुहवली पालि, गड़ि गइल सान मरदनि के एहि मोती सगड़ की घाट। आजु हाथ के पुरुजा उठवली पाठा मीता अजइया बा ले के जब पाती जुमली ह त मीता।लिखि द पाती सगड़ पर भेंज देंइ बामर का पवन दुआरि, चढ़ि गइल जर गुड़गुड़ी, सीरे धमक के बंथे लागल कपार। मइया मोर भवानी माता सुन ऽ हालि हमारि, सुन ऽ विपति सागड़ के एहि सोना सुहवली पालि। जब पाती कोहें ले के जाइलं उ बीर ठावें देला जवाब, जे हमसे न। लिखाइ।

त ए माइ हम जमतेइ में ए घुरिया न लगलीं लगावे,
सउरी में उ घइलेंहवीं न ऽ धियनवा ए मइया तोहार।
आजु हम पढ़लेइ ना रहितो हो गउरा में,
आ तोहरा के बांचि के पतीया देतिय न भेजवाइ।

गद्य : बोले भाइ भवानो जेकर देवी अपरबल नांव, हाइबेटा, हा बेटा, जेवना दिनके पुजल तेवन देखिल खेला हमार, ले आव अब लिखि दे तोर पातो सागड़ पर, अब ना माहुर के गांछी देइं लगाइ, जिन बीर सुहवलि में पातो वंचि हन ओ बीर का ठावे दांत लागि जाइ। ए पंचे, भवानी कहले हंवी जे एकरा फेर में का बाड़, ली आव हम अइसन पातो लिखि देइं, अइसन करखा के पाती लिखि देइं, आगा माहुर के गांछी देइब लगाइ। जिनि बांचि दीहे पातो ओ बीर का ठवि दांत लागि जाइ।

हारे जब उठल हउने बीर बा बघेला, अब मइया उठल हउवे बीर बा बघेला।
अब बीर तमूआ में गइल बा समाइ,
हाथवा के कलम जब ले ले बा दूआइत, हाथवा के कलम जब ले ले बा दुआइति।
लमहर पुरुजा बा ले ले ह उठाइ,
सुनलींजे चलल जब गइल बा चलावल, जहाँ दुरुगा बइठलि ए सगड़वे पर बाइ।
देविया के हथवे में कलमी धरावल,
जेकर मइया घइल ऽ बांड़ न मासिहान, अब दुरुगा आपना न हाथ कर पुरुजा,
अब देवी हाथवा के ले ली ना उठाइ।
जब मइया सुनि ल बयान दुरुगा के,

एहिय नगर मोतीय सगड़कीय घाटि ।
जब देवी लिखही पाती न बाटे चलल,
ओहिय नगर सुहवलि केरि न बजारि ।
अब दुरुगा आगल-बगल सोरनामा,
बीचे भइया रगल सलामी जब बाइ,
औरगा पर लिखे लागलि नाम अहीरा के,
जेकर बीर के बंका लोरिक परल नांव ।
का लिखतियाड़ी—
लिखतियाड़ी जे ऊत्तर मय बहल देवहा,
दखिन गंगा दरे ललकार,
पवले झील सरजू के जाके मिलल बलिया मोहान,
बलिया भटपुर बसे परगना बिहियापुर डडांर,
ऊँचे चउर ब्रह्माइन नीचे गजन गउरगढ़ पालि,
छोटे टोला गढ़ गउरा,
गली तिरपन लागे बजारि ।
उत्तर टोल ब्रह्माइया,
दक्खिन झारि बसे कोइरान,
पछीम ओर ग्वोलहन के,
मंगल बसल बाड़े पैठान,
पूरवे टोला घर अहिरन के ले के गजन गउर गढ़ पालि ।
सोरह सइघर जदुवंसी झारि के बसल बाड़ी अहिरानि ।
पंचे लिखतियाड़ी जे ओइजा खेती बारी ना होले नाहि झुमत चले कुदारि,
घर-घर खनल आखाड़ा दुआरा परल दोहरिये माल,
हंस हंसिन दूइ जोड़ी बीर के सांवर लोरिक नांव,
संवरू बर बनि के अइल लोरिक करे आइल बरियाति,
लेके डगा दियवल 5 चढ़ि आइल मोती सगड़ की घाटि ।
सुन रजा बमरिया अब बीर मान बाति हमार ।
राइ से सादी जोकरब,
सुहवल राइ से होइ बियाह ।
तोहरा जेवने जवन मन भावे सर भर तनिको जनि राख उठाइ ।
निहिचे, अब ए पंचे सुनल बेयान, एइजा,
एतना बेयान जब लिख के देवी,

आजु दुरुगा घींचे लागलि फोटरवा भइया मंड़वे के,
तनी पाठा देखि लेब जा नयने रे पसारि ।

गद्य : अब भवानी फोटर उतरली । अब जगदम्मा मंजरी का रोविर केकोहबर पोता दीहली ।

हारे मुंडवा के कलशा न गइल रे घराइ, उनका सोनवा के छतिया धरेलो पतीयाम ।
हारे लेके भइया सोनावर सुहवलिय पानि, जहिया जब छतिया के पोढ़ा गड़वाइ के ।
जंघिया के हरीशी देली न तनवाइ, घइके झोंटा न सतिया के,
आरे सतिया के खाड़ा जो माड़ो में ललकार, सतीया झटेरवा देली न पुरजा में ।

गद्य : आजु पंचे एक ओर फोटर भवानी सती के घींच घालताड़ी पुरुजा मे । जेकर लम्मी केश इसतिरी के उ केश लोटात मीरुतामे बाइ । दग दग जरे पालता, महुआ उलटे रहल माह लिलार । उग रहनि बेटी बमरा के जेकर सती मदइनी नांव । जेतना रोब सती के, भवानी खींच ले ल पुरजा में बाइ । अब पंचे एक ओर खींचे लागल फोटर लोरिक के, सुनल ऽ ओही सोना मुहवली पालि । जेवनी बेर उतरि गइल सांचा बीर के, जेकर बंका लोरिक ह नांव, ओही में खाड़ा भइल बीर बघेला ओहि मोता सगड़ की घाट, जाके पकड़ि लिहल झोंटा ।

आजु लोरिक धइ लिहलनि ना, झोंटवा भइया सतीया के ।
ओहिगो बामर तहरी बेटी सेइ ना आ करबो रे बियाह ।
अब दुरुगा माहुरेइ के ए गंछिया मइया डालि बा दे ले,
पतिया उ चंपतति सगड़वे पर न बाइ ।
आ हा ऽ हा हा

गद्य : आजु पंचे जाही दिन के बाते, आगे सुनी समे के हाल, जेवनी बेरि लिखि के पाती भवानी चंपति के बोलति बीर के बाइ । कहे जे बेटा मोर बीर लोरिक, दूलर मान बाति हमारि, अब ले के पाती धरा द केहु धावन ले के चलि जाऊ सोना सुहवली पालि । रोवे बेटा बघिनि के बीर के बंका लोरिक ह नांव ।
कहत बाजे ए देबी जेकर आन्हावाइना पनिया बा दादा ए लिखल ।
उ के ले पवरेइ सोनवे सुहवली इ दहवा पालि ।

गद्य : बीर अरज लगावताड़ें जे अन्हे पाती जे नइखे लिखत इ भवानी, उ के बीर अइसन बा जे ले के उ चलि जाइ मुहवलि बामर का दुआर पर । अब बिगड़े माइ जगदम्मा जेकर देवो अपरबल नांव, कहे जे बजर परो ए बेटा, ओंइड़े जइत दबाइ । आरे अउरी केहू पाती ले के ना जाइ, गंगिया काहे ना जाइ, बोलाव गंगा नाऊ के ।
आ हां हां हां ऽ

जयमीत गांगी नाऊ का समरी के पास पत्र ले जाना और खिड़की से पत्र फेंकना

पंचे जाहिय दिननवा करि जो बातें, अंगवा सुन ब समरवे के न हालि।
तनि अब सुनऽ खभाइन सगड़ा के, ओहिय मोतीय सगड़वे की न घाट।
लोरिका गंगिया न गंगया हुतिया लावल,
लोरिका गंगिये न गंगिया हुति लावल, एहिया सोनवा सुहवली देहवा पालि।
इहे जब घउवे गंगिया न अलवाबेल्लहा, बोरवा बइठल सगड़वे पर न बाइ।
जहिया सोहरी के माथावा जो ओनावे, ओहिया मोतिया सगड़वे को न घाट।
इहे जब उठल बा हाथवा लोरिके के, ओहिया मोतीये सगड़वे की न घाट।
कहुवे सूनवे न पाठवा रे बघेला, आजु सोनवा सुहवलो देहवा पालि।
गंगिया जवमा दिनन के बानी पलले, तवनि घरोय गइल बा नियराइ।
आजु इहे थाम्ह पातीय ना सुहवलि के,
आजु इहे थाम्ह पाती न मुहवलि के जइबे सोनवा सुहवली देहवा पालि।
गंगिया देखे पातीय जो अलबेल्हा, कुदि के गिरल ऽ धरतिये में न बाइ।
बबुआ हाथवा गोड़ त लागऽ पटके, ओहि आजु मोतीय सगड़वे की न घाट।
तबलक झरटल माइ होजगदम्मा, गंगिया के हाथवा के लेलहु उठाइ,
जहिया वइ घइ न दांतावा ए छोड़ावे, चिरुवन पनिया पीयलवे भइया बाइ।
जब इहु गंगिया रोवल बा कोलबा मे, देबिया पोंछत अंसूइये ले न बाइ।
कछुए सुनवे गारोय न अलबेला, बाचावा मनवे न बतिया ए हमार।
कहु तार जारवा से जुड़िया आइ रे गइल, कोय तोर धमका के बथुए न कपार।
कोय तोर आवे मोरिगया गउरा में, मोरगी झोंकले सागाड़वा पर न बाइ।
गंगिया सुसुकि सुसुकि पंचे बोलल, ओहिय मोताय सगड़वा की न घाट।
कहुए भइया न मोरवा जगदम्मा, जीउवा तोहरे धरम काबाड़न पालि।
हमरा जाड़वा जुड़ीयत नइखे आइल, नाहिय धमकु के बथुए न कपार।
हमारा कबहीं मोरीगया नइखे आइल,
हमरा कबही मोरिगिया नइखे आइल। एहि आजु सोनवा सगड़वा के घाट।
आजु इहे मइया न मोरवा जगदम्मा, सुहवलि मनबू न बतिया रे हमारि।
कहतिया जे गउरा हमार बियहोय संकेतवा में परि बा गइल,
इ सुहवलि में अब नाचत बाड़ीत ना कालवा ए भइया हमार,
हमरा लइकन का आ मुंहवाइना आहारवा नाहीं ए ददे लागी,
आजु बिहड़ा परी गइलन ना बाचावाइ रे हमार।
मइया ओइसे गोति दीहलसि गरमिया हमरी देहिया में।
आ हमरा दांतो लगल ऽ सागाड़वा पर न बाइ।

हँसे माई भवानी, देवे लागलि जबाव,
बाउर संगी बउरइले, की तोर माना परल गियान,
जेकर दुरुगा आइल बा संगी, सेकर कइसे होइ अकाज ।
थाम्ह पाती सुहवलि में, चल तोहके सुहवलि चलीं लीआइ ।
जे तिरछी आंगुर देखा देइ ओहि सोना सुहवली पालि,
लागी लोहा की लउंआ, ही का बदि जाइ तरवारि,
तोरे जोयर की कारन रोधिर नदी बहि जाइ ।
ए पंचे देवी नाउ के अडर देताड़ी जे हाइ लालन, जेकर दुरुगे संगी,
लेकर अकाज कइसे होइ ।
पाती थाम्ह हमहू चलबि,
ओहि सोना सुहवली पालि ।
जे तोहके तिरछी आंगुर देखा दी गली म आहि सुहवलि केरि बजारि,
तोरे जोव की कारन लाइब लोहा के लउंजा,
हींका बढ़ चली तरवार,
तोरे जीयर की कारन केतने रानी के सेनुर घो देबि,
खांड़ मुड़नि की नाई ।
हारे तब वाटे उठल बाटे नाउ अलबेला, जेकर आजु फुलेन गेना न परल नांव,
जहिया दादा चले लागल जब ए पर्यतरा, ओहिय मइया मोतीय सगड़कीय घाट ।
कहुए जे माइए न मोर जगदम्मा, अब जीव तहरे धरमकर पालि,
आजु जोए परसनि हइ रे भवाना, अब केहू काइन करी रे कोहनाइ ।
पंचे आजु रोस से न बीरवा उठावल, अब बीरा दंतय में लेलहू लगाइ ।
गंगिया जो थामे ना पाती रे सगड़ा पर, दुरुगा जो संगवा न गइलां रे लीआइ ।
सुनली जे आंगा आंगा मइया जगदम्मा, पाछावा जब चलहे ले गांगी हो लेलकार ।
तनीय मइया सुनि ल खेला न दुरुगा के, देवी जब पहुँचलि सुहबली में बाइ ।
सभकीय आंखि पर अन्हवट दइ देलें, अन्हवट देलें न झाड़ीन ललकार ।
केहु नाहि गंगिया के बाटे भइया देखत, ओहिय नगर सोना रे सुहवलिया पालि ।
अब देवी पतरी गली बा धइ लेले, चललि बाड़ी सोनबा न सुहवलियन पालि ।
सुनली जे चलल जब ए गइली चलावल, ओहीं रस बमरा के पवन रे दुआर ।
जेकर भइया संखवे मोरवा करहल खम्मा, उतरे जो दखिने बनलि बे डंड़सारि ।
आंगा भइया छोटे रहल घर पोतरी के, बीरवाके लगल कचहरी न बा ।
सुनली जे उंचवे गादी बा बमरे के, नीचवा जो धरम रूहल बा दरबार ।
अब भइया बाये न मंतारी बाड़न बइठल, दाहिने जो महाधा न ए रइया रे देवान ।

भइया आजु काटल बा झरोखा बंगला में, ओहिय सुन ऽ मोतीय सगड़कीय घाटि ।
एने अब हंसाल बाटे माइ जगदम्मा, धावन आजु मानि जइबे बतिया हमार ।
अब बेटा बीगि द पाती न जंगला में, पाती अब जंगला बोगन ऽ झटकारि ।
अब देबी एतना कहाल बा गंगिया से, अब भइया सगड़कीय घाट ।
गंगीया जो बीगेला पाती न जंगला में,
गांगी जीव ले के सागड़ के जब चलल ह पराइ ।

गद्य : ए पंचे, जब भवानी पाती ले के झरोखा में बीगली त उ पाती कहांगीरतियाटे, आत जाइके ओहि कचहरी की दरबार में, कचहरी की दरबार में गीरल बाटे, बाइ जब यांगी पराइ के जब सागड़ पर चलि आइल, लोरिक जब पुछता, त उ देखावे, भाइ जल पीयाव तब पूछ । जब लोटा के जल लेके धावल हवन लोरक । आगल जब गंगिया के पोयवलन त रागिया का अरज लगावता । कहत बा जे ठाकुर मोर भइया राव अब बीर मान बात हमार । अब हमके जनि भेजिह ओही सोना मुहवली पाइ । आजु कठिन कीला हम देखली ह वमराक । तरवा में सखि गइल जीव हमार । ओकरा अइसन लागल बाटे कचहरी उ रोब कहे जोग ना बाइ । हँसे बीर बघेला पाठा बान्हि देला ललकार । सुन सुन ए गांगी मनब बाति हमार, बतुआ बइठ रहबे सागड़ पर अब तनी लोहा क देखि ल ऽ खेलवाड़, ए पंचे अब इह भवानी के सुन बेयान पाती के, अब गागी एइजा ठीक हो गइल ।

तब तुआ लिइ कइ ना आ पतीया हो न दरसवले,
अन्हवट आजू छोड़ दाहती ना मुहवाल न बेरि बाजारि ।

भोमली का बान टूटने का संकेत तथा सतिया के विवाह के प्रस्ताव का पत्र पाकर बमरी क्रुद्ध

गद्य : बामर जब देखताटे— ओठ के बोलता ह मंतीरी— इह देख जे कइसत पाती इ आइल बा, ए पाती के बाँच । ए पंचे, जेंव पाती जब उठावताड़ स त उपाती कइसन लउकातिया, जे खूब पीयरो के रंग । देखे पाती पियरी के बमरा, जार के भसम होइ जाइ । एड़ी आगि लागि गइल, लहर सिरकी लागि गइला बुमियाइ, लाल-लाल बनल बाटे बरौनी जेकर मंहुवा उलटि गइल लीलार । कहे जे बायें के सुनल मंतीरी दहिने महथाराज देवान, रोज रोज जब बाजा बाजत रहल ह त कहत रहल हउव जा जे केवनो देस के हउवे सूबा लाभा जा ताटे, अब तोहसे पूछतानी इत पाती आ गइल हमरे दुआर पर, आ पीयरो खूंट रंगलि बा ।

हारे इत सगुनिय पतीया आइलि हो सुहवलि में,
इत अब सगुनीय पतिया आइलि हो सुहवलि में ।

चली आइल सोना रे सुहवलीय पार, अब भइया थामि लेला पतिया बर्मारिया ।
अब सुन सोना रे सुहवलिय पारि ।
जब बीर काटे न पाती रे कुलुकीके, अब बांचे आंकवे न आंक बोलिमाइ ।
अब नीचे अगल बगल सोरनामा, जाके भइया परल सलमिये न बाइ,
ओरंगा पर लिखलि बाटे नाव सुहअनिके,
ओही नगर सोना सोना रे सुहवलिय पालि ।

गद्य : का लिखल बा—लिखल बा जे उत्तर बहल मय देहवा दखिन गंगा दरेरे काछ, बीचे झील सरजू के जाके बलिया मिलल मोहान, बलिया भटपुर बसे परगना, बिहियांपुर डंड़ार, ऊँचे चउरि बरम्हाइन, नीचे गजन गउर गढ़पाल, छोटे टोला गढ़ गउरा, तिरपन लागे बाजार, उत्तर टोल बरह्मइया दखिन झारि बसे कोइरान, पंछी घर जोलहन के मंगल बसल बाड़े पैठान, सोरह स घर यदुवंसी, पुरबे टोला घर आहरन के, सोरह से घर जदुबंसी, झारि के बसल बाड़ी अहिरान । ओइजा खेतीबारी ना होले, नाहि झुमरि चले कुदारि, घर घर खनल अखाड़ा, दुवरा परल दोहरिये माल । हंसती होखन दून जोड़ी बीर के सावर-लोरिक ह नांव । संवरू वर बनि अइल, लोरिक करे आइल बरियात, बावन बुरुज के तमू, बावन मींटा दोहल गड़वाइ, रेसम सूत के डोरी, आंगा पियरी होलल कनात । एकएक मर्द जोधा, तमू में बहठ गइल ऽ भुजा फुलाइ, बामर उखरि गइल सान भोमला के, उ सान बोगि दिहल सुरहन में बाइ । अब जो राइ से सादी करब, त सुहवल राइ से हाइ बियाह, इ जनि जान ऽ जे अबरे आइत बीर बघेला सुहवलि करे चोरउरी बाइ । कालिह बबुआ पूरबे लागी रंग लाही, पछा होइलागी उजियार । कालिह परी भारि सिवाने । पांजा हेलि चली तरवारि, एहि लोहन परी नगर होंट सुहबलि धान दोहल ना जाइ, आंगा पाती उभार ऽ आगा पाती उभार, जवान फोटर उतारता ।

ए पंचे, पाती जब बांचि के आंगा जब पान्ना उभार ताऽन, त देखताड़न जे भोमला के रोंघिर स कोहवर, आ मुड के कलसा, सांचा मुड़ के रहल भोमला के,
देखत ताड़न त कहताड़न जेहाइ दादा,
फेरि देखतारन त जे ए बीर छाती के पीढ़ा एने सभे किछु दहि सानक जातिया,
जब जांघ के जवन हरीश गाड़ल बा ।
आ जब बीर ऊपर जब उठाववाढ़े मउर, त ओही में लड़िकी सतिया ठाढ़ ।
आजु लोरिका भइले बाटे न, झोंटवा सांचो सुहवलि में,
बीरवा का दांतवा लागल न लेलकार ।
अब बीर गिरिये परल बाड़न धरती म,

अब सुहवलि हलचल भइल न बरियारि,
एओ बमरा बचले बाटे ना पतिया दादा सुहवलि में,
ओ बीर का दांता लगलेइ कचहरी में बबुआ बाइ।
केहू आजु दवरि दवरि ना बहियाँ जब लागल उठावे,
केहू पंखादेत बाड़न ना बीरवाहो लेलएकार।
केहू अब चिरुअन ना जलवा हो भइया पीयावे,
ओहिय नगर मोतीय सागाड़वा की दहे ना घाट।
अब पंचे बमराइ के गरमी बा चढ़ि ना गइल।
सुहवलि लड़िकीन के सुन एइजा खेलवाड़।

गद्य : अब पंचे जेबनो घरी बामरि के गरमी जब छा गइलि ह, आ दांत लाग गइल ह त हलचल न सुहवलि में मचि गइलिह। अब तनो सुनल खेला तिरियन के। छतीस बरन के बेटो सुहवलि गइल बाड़ी बिटुराइ। कह स जे सुनले ए सखो मनबे बाति हमार। हम राति भर न आभा देखले हवों जे सतीया के मांड़ो में खूब मंगल गवली हां जा।

केवनो कहति बाजे हमरो आजु दहिनोय अलंगिया बाटे रतिये ले फरकति,
बायें आंखि आगम बुझाइनों सखो न बाइ।
आजु बुला आइ गइलनि ना आ बरवा देखबे सतिया के।
एहो आजू मोतीय सगड़वा को न घाटि,
आजु एनिया खुलि गइलि ना ताड़ियाइ ए रघुबर क,
सतिया के निहिचय न होइहन रे बियाह।
ए सखो अंगवा होइ जाइना सदिया उ सतीया के,
आ पछिली लगन में हमनों के होइ रे बियाह।
आ हा हा हा

गद्य : आजु पंचे मचि गइल टल चल सुहवलि में जा तिरियन का परिगइल धियान, जो सखो धीरजा धरि के रहे क, निहचे होइ सादी सखिया के दूसरी लगन में हमनों के होइ बियाह।

आजू पंचे रोवे लागल ना आ राजावा न ओइजाबमरिया, अहू मंतिरो
लोग से पूछे लागल भेदवा ए लागाए।

गद्य : का पूछे, का पूछे मंतोरी—पंचे। मंतोरी पूछे। पूछलन जब मंतोरी से जे हका हालि ह, के चुके दहो-गुर खा आइल, के हमार तिलक आइल चढ़ाइ, के खोजल दुलहा लड़िकी के, के अगुवा बनके सुहवल आइल लिआइ, पहिले त एहि के पाता

समावे के बा, उ बीर कहवाड़े बामर जे बीर के दोष कम बा। ढेर दोष अगुआके बा। काहें जे हमार अगुआइ कइके लेआइल बा सुहवलि में। बायें के बोले मंतीरी, दहिने महथा राज देवान ठाकुर मोर बड़िआरा ह बीर मान बाति हमारि, केकर सुहवलि काल गरेसल' केकर मउअति गइल नियराइ, के दही चीनी चाटे गइ रहल ह, ओहि गजन गउर गढ़ पालि आजु कहवानो रहुआ से तनी मान जाइं बाति हमार। काहें जे हमनी का सुनले बानी जा : जेवना अजइया (भीमला) झींगुरी मरले रहल, रहल, आ भाटी में गड़ि गइल रहल बा ओकर धड़ टांगि के आइल सुहवलि में मखुआ कीहें, त छव महिना ओकरी देह पर लोथा चलल, आ सतवें महिने में हलुआ चाटे लागल। अब सतवें महिना में हलुआ चाटे लागल। त बीर उठि के टहरे लागल। टहरे लागल स उहे मखुआ से अउर मंगलस। ए ठाकुर बो कहितीं त हम सादी क देतीए बीर के। त रउआं त ठीक उरज कइलीं, बाइ हमनी का सोचलीं जाजे मारल मर्द बाटे ए ठाकुर, बाइ हमनी का समुझवले हइंजा हमनो का आपन दोस कहवानी जा, राउर दोष नइखे। बाइ इ हाल ना जनली जा जे अइसन सनक के इ काम करी। हमनी का कहलीं जा जे बीर जब मारि गइल, शान गोरि परल, त अगर जो हीजड़ा के सदियों हो जाइ त एहमें कवनो फरक नइखे। आ नाउ सुअमर छुटो। त रउंआ दे दीहलीं अउर मखुआ के उहे न सादी क दीहलस। बाकी जब फानल रहल डोला दादा सागड़ पर। आ कुलिह तिरिया रहली स विटुराइ, ओही में राउर बेटी गइल जेकर सती—मदइनी नांव। आजु देखे पाजी अजइया छाती मार दीहलस सरिहाइ, पूछे लागल बीजासे ओही मोती सगड़ की घाट। का पूछे जे हे तिरिया वहरी माना परो डंड़ो के, हइ तिकव नयन पसारि, इ देख जे हइ कंगला के बेटी, हवी की कंगला के ले ले बाटे अवतार, की नीचे बेवा होगइल एकरी मांगे सेनुर हम नइखी देखत, एहि मोतीसगढ़ की घाट। बीगरल रानी अलबेला जेकर सती मदइनी नाव। लागलि आगि ठावे आगि बमकल करेजा बाइ। मन करे जे ताकि दीं नजर सार पापी (साढ़ेसती) के, पापी जरि के ठांवे खतम होइ जाइ। चिल्हिकलि बेटी मखुआ के, सतीया का गीरलि चरन पर जाइ। त चरन पर मोरि परलि ठाकुर त उ बीजा जाइके कहवियाटे, जे हाइ सखी गाँव भर का नाता गोतासे इ पाहुन लागिहन तोहार, आज जो ताकि देबू हमरी पती पर त जरि हो जइहन कइलास, आजु हम हो जाइब बेवा। एहि सुहवलि केर बंजारि। बहिनि मोरि अलबेला मान ऽ बाति हमारि। ताकि बेबू सुहवली में, पती जरि अइहें हमार ओइजा हंसि देले ह सतिया ओही मोतीसगढ़ की घाट, हंसि जब दीहलसि, त कहतिया बीजा जे देख अइसन बाति तू कहल हउव इ बाति कहें केहु नाहीं, कंगला के बेटी ना ह, आ ना कंगला घरे

ले ले बाटे अवतार। इहे बेटी बामरि केह ऽ, सखी लागले हमार, करे आइल बा भेंट सागर पर एही मोतीसगढ़ की घाट इ सखी हमारि ह। आ एकरे जीव को कारन देख हमनी छतीस बरन सुहवल में परल बानी जा बार कुवांर। छत्तीस बरना का बेटी एही स्ती कारन हमनी का परल बानी जा बार कुवांर। उहवे हंसल हवे अजइया जेकर बलो अजइया नांव। का कहले ह

कहलसि जे सखी धीरिजा इ धरइजा ए सुहवलि में,
झींगुरिय के एड़वा दही-चीनी न सुहवलि में भइल हमार।
एहिय बारी खोजियदेइबि न…बरवा सांचो सतिया के,
आ बामरा के निहिचे ना खोजबि ए दामाद।
एही बेरी मीतवाइ के ए करबि हम अगुआइ।
आ बोरवन के सुहवलि मेंअइबो ए लिआइ।
ए सखिया निहचे होइ जाइ ना सदिया देखब सतीया के।
पाछावाइ तोहनो के होइ हन ए बियाह।
ओइजा आजे हंसे लागलि ना सतिया देखब जिरहुल पर।
आ जेवन ओकर पाहुन नाता भइलनिरे काहाइ।
सती जानति बा जे, करति बाड़निना खिसवई आलवाबेला,
अब रानी हंसले सुरहनि में ना बाइ।
उहे घोबिया खोजि दोहलसि ना बारावा हो सतियाके।
उहे तोहार दूलहा कइलेइ बा तइयार।
उहे ठाकुर तोहरोइ दामादावा बा लेइ के आइल,
उहे अगुआ बइठल सगड़वे पर हो बाइ।

अजई के ससुर मखू का बमरी के दरबार में बुलाया जाना

गद्य : ए पंचे जब बयान जब एतना हो ताटे, त बामरि कहताटे जे ए भइया अइसन उतजोग लगाव जा जे अगुआ के केहू गोने बोला लिहल जाउ। हम बीर के केवन दोस देइ। खास हमार बादो अगुआ बा। ना उ अगुआइ करती ना इ बीर सान उखारित। अब त अगुआ के कवनो उपाइ लगाव जा। त कहल लो जे ठाकुर मोर बरिआरा, अब बीर मान बांति हमार। अपनी मउअत के उ जानता। दूसरा के बोलवला से हीरिगिस ना आई, अब इ दाब मंखु पर चढ़ावल जाउ। उहे अपनी दामादके बोलइ हें। ए पंचे छुटल स पुरुष।

अरे मखुआ सउनत रहल ना, अ लदिया भइया दुअरे पर,
तबलक तिलांगा जुमल कचरिये में त बाइ।

पद्य : डांटि डांटि पियादा बोलस रे मखुआ चलु तोके राजा बोलाव ताड़न। उठि गइल
मखुआ कहे जे हाई भगवान,
कहत बा जेकर फुटि जाला कारामवा देख मीरुता में,
इ कुकुर लोग से मोरे जो होला इ न मुलुरेकाति।

गद्य : कहत बाड़ जे आहि हो दादा, आरे जेकर अभाग घुमि गईल सेकर तोहन लोग दरसन देल जा ए दादा। हम केकर बीगारि कइले बानी। कहलस जे बोल जनि जल्दी चले के परी, आ कल्हिये ले हमनी का हलचल में परल बानी जा। आ तू लूगा तोहरा सोहाता। तहार दामाद सतीया के बर न खोजि के ले आइल न बाटे। आ दांव लागल बा ठाकुर का हमनी का हलचल मचल बा रोवन-पीटन परल बा आ तू लूगा सउन ताड़। त उ का कहता—

कहत बा जे ए बियहि तोहके बेरियाइ की बेरिया हो,
बुजरो बरिजलों नाहीं आजु मानलि हउ कहलू रे हमार।
आजु बरबस कइ दीहलू ना आ सदिया बुजरो बीजावा के।
इ मुरहा घीव का भंड में, मुंहवा हमरा दीहलनि ए लागाइ।
आजु एकरि चमकि गइल ना मानवा बाटे सुहवलि में,
चलिए गइल गजने गउरवे गढ़े पालि।
हे बियही आजु हम कहांले कहीं पंवारा,
आरे अब बिपती सुन खेलवाड़, बेरिया की बेरिया बरिजलीं,
सुहवलि में नाहीं मनलू बतिया हमारि, खोजि दीहल सि बर कीलवा में,
अगुआ उ बनिके आइल दादा बाड़, पतिया लिखि के बाटे भेजले।
एही दह सोना रे सुहवलोय पालि, उखड़ि गइल सान भोमला के।
अब सान सुन हर बोगले बा जय जयकार, आइल बाटे पाती सुहवलि में।
अब दिन परल पुरुजवा में बाड़, हो गइलि अडर रजवा के।

गद्य : मखुवा के ध ऽ के अब आव जा लियाइ। अपनी इस्तोरी से रोइ के कहता ओकर इस्तोरी जब निकड़तियाटे, कहति बा जे का पता। आत अब पती के जनि पूछ, आपन मांग धो घाल। एहि खातिर तोहके बरिजत रहलीं, अब रणापा सुहवलि में खेव। आजु हमार पुजि गइल काल। अग हमके बोलाहट कचहरी में भइल बा। अब निहचे बमरा हमार उलुटो मुसुक चढ़ाई मुंह में गोबर देई ठुंसवाइ। कांचे कइनि कटवा के देहि के बोकला देइ छोड़वाइ। नोहन में ठोक देई खपचारी, मंहुवा टेकुरी देई गड़वाई, आंगा पाछा एड़ दवा के धरती पर नीचे देइ ढहवाइ। आधा घर राखि देई दोगही में, आधा धामा देई टनवाइ। छतीस हाथ के भाला हमरी छाती…।

त ए बुजरो अपना घोई घाल न मंगिया दादा सुहवलि में,
अब एइंआ पुजि गइलनि ना, कालावाइरे हमारि ।

अपनी पत्नी के साथ मखुवा का बमारी के दरबार में आना

गद्य : जरे नारि मखुवा के तड़-तड़ देतिया जवाब, कहे जे सइंया मुरति नारायन, घन हम सेनुर का आगा मोआर, एके एड़ मरलस औंगुरिया छव महिना डिगरू हुन्आ गुर चटलन, एहि लेके सोना सुहवली पालि । उ मारि उनकर बिसरि गइलि ह, जे अगुवाइ कइके आइल बाड़न मोतीसगड़ की घाट । चल तूहूँ चल हमहू चली ओहि राजा का पवन दुआर । चल हमहूँ चलतानी आजु हमारी जीव का काल हो गइल न । लड़िकी के सादी हमरी काल हो गइल । काल हो गइल, अस बा ए पंचे, आहि जाले मखुआ चलल बाटे कचहरी । आ संगे चले नारि ददा मखुआ के, ओहि चलल बाटे बामरि का पवन दुआर ।

हारे सुनोल ऽ जे आंगा चलल बाटे मखुआ,
पांछवा अब तोरिया दववले न बाइ,
अब पंचे घइले जो डगरिया चलि गइल,
राजा का जब लगलू कचहरी न बाइ,
जहिया जब ढुकिये गइल बांगला में,
अब नारी संगवा ढुकेले लेलकार,
आजु भइया बोलल बाटे राजावा बघेला,
हाहो माखु मानि जइब बतिया हमार ।
तुहीं बन खनवा पर बन सुहवलि में,
तहके जेल खानावा देइ न ढहवाइ,
जोइय भइया अपने कुसलिया जो चाह,
चलिय जइब मोतीय सगड़ कीय घाट,
जाके अपना दमदे के संगवा लागाव,
लेइ के तू सुहवलि में आव होलिआइ,
तवे बबुआ परी न कुशलि अलबेला,
बीचे कुशलि परहुल जोग नाहीं बाइ ।
तब एने बोललि बाटे नारी मखुआ के,
तब एने बोललि बाटे नारीमखुआ के ।
जेकरि आजु परली मखुव बाटे नाव,
आजु रानी गारावा मेंकफन झुलावे ।
आंचर भइया डलले कचहरी में बाइ ।
कहे के जे ठाकुर मोर सुनहो बरियरा,

अब बीर मनबू तू बतिया हमार ।
आ हां हां हां हां
आजु बाकी हीनू करि गंगा तुरुक करि गोरि,
भलि कामिनि संगे छोडेलूय अगोर ।
अब देवी कहां गीति बानी गावत,
कहां आजु दीले परल बिसभोर ।
बाकी आजु जेवनीय दिनकर पुजनीय,
आरे देवी तेवर परी हो गइला बा नियराइ,
अब देबी लपली करजिया बाड़ी हो भीरुता में ।
अब देबी रन में होख न तइयार,
अब पंचे एहु कर छोढ़ि के पंवारा ।
अंगावा मो भजिये देवीये कर नांव,
अब जाग भागिये न बेरि हो भवानी ।
जूझि बेरी जाग दुरुग मुनी माइ,
आजु हमारि गीतिया बेरी न सुरसती ।
देवी अब जीभा होख न तइयार ।
आजु देवी बइठि गइल बाटे पंचन के मेंड़रि,
हमरा लेखे छोट बड़ एके हउवन समान ।
सब मीलि हुकुम लगावल हमारी बूते खेवल ना जाइ ।
तोहरे बले भरोसे अघ जल में परि गइल डेंगी हमारि ।
चाहे देबी खेइ देबु ना आ डेंगया हमार भीरुता में,
चाहे देबी बोरि देबू डेंगिया रे हमार ।
आजु देवी देह के दीमाग दूनियां में—
हमाराइ तोहरे चरन के बलिहार,
आजु देबी तोहरी चरन के बलिहार ।
बाकी आजु परिगइल देहिया अथेया,
अब देबी केवना ए दीनन के अइबू काम ।
आरे पंचे एक ए समइया लोहा ह जगदम्मा,
कानवा के सुनिलि गीति बाटें ने गवाइ ।
आजु जब एने बइठलि बा मेंड़रि वंचवन के,
छोटे बड़ एक सब बाड़नि रे समान ।

: आजु देबी एक समे के लोहा कान के भले सुनल गीति गवाइ, आंखो देखल न बाटे, कान के सुनल भले गीति गवाइ । सुनलीं जे खइलू पूजा ददा सुरुआं के, देस

में गइले बाड़ू तरवार, जेवना, कोना लोह लागल, ओने घूमल उखारि मोनरि की धार।

गायक का आत्म-कथन

ए देबी रनवा में जइसे राखि दीहलू ना आ पनिया दादा सुघराके,
आ दूनियां में बाजि न गइलि बा तरुआरि।
ओंगो देबी आजु धइलेबू ना, आ संगवा हमारि जगवादम्मा।
सभवा में बइठि गइलि देहिया रे हमार।
हाहो देबी एगु ड़ोइ आछरिया जो मोरि टुटि ना जाई।
कल्हिय दूनिया मेहना मारियन बरिये आरि।
मीरुवा में फुहरोये ना आ टेठवा लो जाके उड़ाइ।
आ लरिका हमके होलरो में देइ ली हुलवाई।
कहि हसन जे इनिका गवहुअ के ढंगवा ना दादा ए रहल।
आ साभावा में बइठि गइलन माथावा रे उधारि।
ए देबी ज दिन धइले बाड़ू ना आ संगवा हमारि जगवादम्मा,
आ दूनिया में गावत बानी गानावा रे तोहार।
जहिया देबी छोड़ि देबू ना संगवा हमारि जगवादम्मा,
आ दूनिया में खतम होइ गानावा रे हमार,
आजु हर घरी ध्यानवाइ में भजलीं हो जगवादाम्मा।
बाकी आजु सुनि लेबू बतिया रे हमारि।
आजु देबी गावलि गीति छूटिगइल, भीरुता में खांखरहो गइल बाया हमार।
त ए देबी हमार बनलेइ पर आ सगरे बा होतवा रे मीलल,
बीगरले केहू नाहीं मिलल हितवा लेलकारि।
हा होदेबी हमारि बोगड़ि गइल ना दिनवा सांचो जगवादम्मा,
काहे मोहनी छोडि देलू संगवा रे हमार।

ए पंचे, अब तनो सुनलीं खेला भवानी के
अब जागलि भागिये न देरी रे भवनोय,
आरे जुझि बेरी सिरवा दुरुय मुनि माइ, गीतिया बेरी न सुरसतिय।
आरे साचों जोभा एहोली न तइयार, कहलो जे गाव गाव बबुआ अलबेला।
तनी आजु सुनि लेइ कानावा लगाइ, एगुड़ अछरिया भूली हो मीरुता में।
आरे दू दू गरहि गरहि मेराइ देबि न.इ,
जनलू बा हालि लोहवा के,

लोहवा में गलिलि बाटे देहिया रे हमारि,
पंचे, जब जागे ए माई हो जगदम्मा,
सभवा में काई रे करी रे कोहनाइ ।
आ हां हां हां
आजु बोले नारि मखुआके, लेके ओहि भइया रजा का पवन दुआर ।
कहे जे ठाकुर मोर बरिअरा अब हमरो लागतवाड़ मोजार ।

गद्य : आजु ओ बजर परो डिगरू पर, औंइड़े दबाइ । रउआं के हमारा दूख लागल बा । रउआं ले हमरा दूख लागल बा, काहें इ आपन गति देखलन जे छव महिना हलुआ गुर चट लानि । एक एंड का लगने । आ उहे खाइके डिगर जो राउर दमाद खोजि के ले आइल बाड़न त हमहू कहतानी ठाकुर दूइ घरी खातीर हमरी पत्नी के, रउंआ अडर दे देईं हम भेज देतानी सागड़ पर, अगर जो जूझ जइहन न त उनुका नियर हमरा लड़िकी के बहुत दमाद मीली ।

बाकी ठाकुर देइ देब ना आ छुटिया, देख सुहवलि ।
सागाड़ा पर निहचे जइहन सेनूरे रे हमार ।

मखू की मुसीबत अपनी पत्नी से शिकायत

गद्य : रजा का कहताड़न, जे देखू दूइ घरी के कवन चलाओ, दू चार दिन के हम छुट्टी देतानो, बाइ लिआ अइहन । कहलन जे, हं लिआ अइहन, कहत बांड़न राजा जे अच्छा जो । ए पंचे, जब मखुआ लेके बहरियाइल, आ गलो में आइल त कहलसि जे ए बुजरो आ दिन ध दिहलू खंओ नियर आ उ आई । आइ ना, उ अपनी गति के जानता । भलुक ओहो घरो बुरा भला हो गइल रहीत । त हमारा तनिको अनेसा ना रहल ह ।

बाकी आज मोर घइ दोहलसि ना आ दिनबा दादा सुहवलि में ।
हलचल में डाली दिहलू जानावारे हमारि ।
हँसे नारि मखुआ के सइया मान बात हमारि,
आजु तोहके तिरिया चरितर पढावतानी ।
हारे तिरिया के खेलवा हउवे रे बरियार,
तिरिया चरितर पढाइबि सुहवलि में,
आ चलि जइब सोनवा सुहवलिय पालि,
ओहो थानावा में ओहो डिगर के बझाइ के,
लेइ आव सोना ए सुहवलिय पालि,
जोइ आजु जुझिये जइहन सुरहनि में,
आपन काल्हि दूसरे जो खोजे के दामाद ।

गद्य : मखुआ कहताजे का कहतारे—उहंवा हमार कम आमदनी बा। उ आत ना सकी। कहतिया, देख कल्हिये के पाती आइल हउए, इहरि एइजा घर ऽ, आ चलि जा सागड़ पर, आ जइके कहि ह जे ओहो····आजु हमार इसतोरी रोवतिया—

जे तवन पाहुन आजु सुखली भउरिया खातऽबा सुरहन में,
आ एही नगर सोनावा सुहवली दह ए पारि।

गद्य : जे हमारि नारि बारह बीजन बना के, आ सोरह कइले बाटे परकार, बबुआ बिधी बोधी के रसोई, कइले बा सोना सुहवली पालि, डाइनि के बा दामाद ह दुल्हम, हमार दामाद चलि आइल बा मोती सगड़ की घाटि, कहि ह जे बबुआ जेवन उ आइ के खा लेइ, आचलि जइहुन सोना सुहवली पालि। ना त इहे बबुआ हउवन जे ओतना हम सेवा कइलीं हाँ, आजु कइसे लालन सुखलीभउरी चबात होइहन।

ए सइंया अतना रोइ रोइ ना····बतिया बबुआ जाइके कह,
उ मायावा मेंफंसि जइहन धोबिया लेलएकार।

मक्खू मोती सगड़ पर युवकों को देखकर चकित

गद्य : कहत बाजे अच्छा कहत बाड़ीस बाइ जातानी - हमरा कम आमदनी ह बड़ा उ छनिकी बा, अब ए पंचे ओही जगह से धोबिन चलि जातिया अपनी घर के आ मखुआ चलल सुरहनि के, जेवना समे में चल ल बाटे, आ लोरिक बांड़े से हर घरी सागड़ पर टहरसु, सब बीर तमू में रहेल, बाइ उ बीर व्याकुल होके हर घरी सागड़ पर टहरे। ए पंचे, जेवन मखुआ सुरहनि में हेठिआता तेंव परि गइल नजर लोरिक के।

आरे देखत बाटे कीछु दूर चलत बा दुलुकिया,
आरे कीछु दूर छोड़िये देले बा चउपाल,
देखले बा बीरवा बघेला,
जेकर आजु बंका ए लोरिक परल नांव,
चलल जब गइल ए चलावल,
अब बीर तमुआ में गइल रे समाई,
कहेला जा मीतवा न मोरवा बघेला।
सगड़ा पर उठि अब मीता रे हमार,
देखु तोर चिन्हल बाटे लोग सुहवलि के।
एही दादा सोना रे सुहवलीय पारि,

टेखु केहू राजा के धावनि बाटे आवत ।
केहू बूला कड़े खातीर आवत बाइ,
मीतातनी एकर अब भेदवा लगाइ द ।
अब बीर चलल सगड़वा पर बाइ,
एने जब उठि गइल पाठाए अजइया ।
चली गइल मोतीये सगड़कीय घाट,
अब बीर लेइ के ओसरिये लगाव ।
अब ताकल सोना रे सुहवलिय पालि,
ओने अब हंसल बाटे वीरवा बघेला ।
जेकर आजू बलीय अजइया वा नांव,
कहत बाटे सुनि लेवे मीतारे बघेला ।
अब बीर मानि जइबे बतिया हमार,
नाहीं केहू हउवे नेवतरीसुरुआं के ।
नाहीं केहू धावन राजा के आवत बाइ,
इहे हमार ससुर आवत बाड़न मखुआ ।
इहे अब आवत सुरहनि में बाइ,
कीछु बुला बमरा बा दावावा चढ़वले ।
तबे ससुर दुलकति आवत सुरहनि में बा,
हमरा के तानी के दुपटवा सुते देव ।
एही आजु मोतीये सगड़कीय धाटि,
उहे आजु दवरि दवरि तमुआ निहरि हं ।
नाहीं आजु लउकी जो बाया रे हमार,
जोइ मीता हमरा के पूछे लागे मखुआ ।

गद्य : कहि ह जे हम उ धोबी नइखे आइल । भइया हम जानतानी ए हालि के, पूछस केतनो पोल्हा के भइया, बतइह जनि । अब त हम तानि के दूपटा सूतबे करबि। हो न हो कीछु दाब लगवले बा तवे इ दुलुकत आवता, आ जेवन सुहवलि में दामाद के सेवा होला, तेवन हमारि सरिरिये जानतिया । ए पंचे, कहिले अजइया बा से तानि के दूपटा सुति रहल । तानि के जब दुपटासुति रहल बाटे, एहि बीच में मखू चललि गइल चलावल । आधा गइल सुरहनि में बाइ, आजु बबुआ जब ऊपर मांथ उठावे । तनी देबी के खेला सुन ऽ बरिआर ।

अरे जेकर नोचवा रेसमीय ना आ सूतवा के बा लागलि ए डोरी,
ऊपरा बबुआ पीयरइ ना आ झुलति बाड़ी कानाति,

जेकरा अगल बगल सोनवन के''''झबिया बारे तमुए पर,
आ मोतिअन के हलरिय ना देले बाड़न लगए बाइ।
जेवन बीर के सोने केइ बुरुजिया आ सरगेइ में,
उहे आजू नचतूअ आकासावा में दादा न बाइ।
आजु ओनिया देखि लीहलसि न धोबिया जो आलावाबेला,
आपना उ मानाबाइ में करुए हो बिचार।

गद्य : का विचार करताटे, उहवाँ अब विचार कर ताटे, आहा हाइ भगवान हम नाम सुनले रहली हं बाकी अइसन तमून केहू के आइल, ना होइ, तमू बहुत अइलंस, बाइ चारु ओरि तमू का पनी बाटे घरावल, मोती झालरि दीहल बाटे लगवाइ। ऊपर उडे पतंगा अलबेल्हा, सोन के पनी घरावल बाइ। इत जेतना उमड़ल होइ घन बामर का, ओतना ए बीर का लागल तमू पर बाइ परसन रहली भवानी, बइठल रहलि मोतीसगड़ की घाटि। आ एही में मखुआ चलल बाटे चलावल आ जुमि गइल मोतीमगड़ की घाटि। सभ के एक रंग के देवी रहल बनवले। एगही का जना जे बूने ले ले बाटे अवतार। केवनो के आंगे पाछे जनमु ना जानाला, कुल्हि जना जे एके गरभे से ले ले हवंस अवतार। आजु पंचे जेवन दिन से मेला, आँगे सुन समर के हालि, जुमे मखु अलबेला, चढ़ि गइल भीटा पर बा, जनाके देखे रोब मरदन के, धड़के बांतन अंगिछाइ ?

ए पंचे तिकव ता तमू में, एगुडो बूढ़ ठुढ न रहलं, खाली नीरगोंछिया। खाली बाड़ निरगोंछिया, आ तमू मे बइठल बाड़ें, भुजा फुला फुलाइ। ए तमू ले जब ओ तमूमे जाता, त अब ओहू जा चरितर कहलस जे ओ इ त जनाता जे उ मरदा एहू में बाड़न।

आजु दुरुगा डालि दीहलसि देह बेकलवा देखब मखुआ के,
आ मखुआ छतिया मरत सगड़वे पर न बाइ।

गद्य : ए पंचे, अब अतना बिछिपित होके घुमे लागल, आ कोनाकोना निहारे, सगरे तमू जब घुमि आइल, सगरे तमू घुमि आइल, सभ एक रंग के ओइमें एगुड़ो बूढ ना लउकल, आ ना एगुड़ो मरद गोंछिवाल, खाली मरद निरगोंछिया, आ बइठल बाड़ें भुजा फुला फुलाइ, आ जब देखे रोब दुलहा के धइके दांतन आँगुर चबाइ।

ऊंचे गादी लागल रहल धरमी के :—
आरे नीचवा उ लागल बीर कर बाइ,
सुनिल पंवरवा साँचो रे दुलहा के,
ओही मइया मोतीय सगड़कीय घाट,
एने जब सोचे लागल बीर जब मखुआ।

अपना जो मनवा में करे रे बिचार,
कहे ला जे आहा मोर दइब जो नारायन।
काइय बिधि उगिलि देल करतारि,
धनि गननवा बनल बा सतिया के।
आपन पती पवले बा गंगारे नहाइ,
जेवनी सुरतिया लउकलि हो सतिया के,
ओइसन रोब लउकल दुलहवाके बा,
बाकी आजु बेकल में रहल बा मखुआ,
घुमि घुमि देखले तमूइया में बाइ,
कतेए नाहिय जब लउकल पाठा अजई।
आ लोरिका उ गइल कगरिये में न बाइ।

लोरिक और मक्खू की भेंट
बाद में अजयी से भी भेंट होने पर लड़कियों का कुशल पूछना

गद्य : लोरिक बाड़े पंचे त ओहि सागर पर टहरतांड़, जब उहाँ मखुआ जुमतारे, तब पुछताड़ें जे ए भइया कहाँ तोहार घरह त कहताजे आत ए बाबू मखू हमार नांव ह, हम सुहवलि के हवीं, अच्छा सुहवलि के ह उ व त का चाह तार, आत ए हमार लड़िकि जवन रहल अजइ हमार दामाद हउवन। त सुनली ह जे अहिर के बराति आइल ए नीया, आ मोती हउवन, त ओहीं से अइलींहं ए बबुआ। हमार इस्तीरी बा से बीजे-बाना के धइले बा। आ ओही से अइली हंजे तनी बबुआ के खियावे के ले जइतीं। त उ कहतांड़ें देख-घुमल ह बाड़न, एमें। आत ना। कहतारन जे मालूम हमरा ना।
तबलक मखुआ मारि दीहलसि ना आ छतिया सांचों आपन अलबेला,
आरे रोइ के बुढवा गीरलेइ, धरतिया में पंचे न बाई।
आजु जो मोर जियत रहितन ना आ पाहुन जो दादा अजइया,
लोरिक काउ निहिचेइ ना अइतनि ए बरिये याति।
ईत मोर लड़िकीय बेवाई नारे होइ ना गइली,
अब बुड़वा रोवे लागल ना ऽ जारवाइ रे बेजार।

गद्य : घ ऽ इ घ ऽ इ लोरिक चुप करावसु। अउरी बुढ़ रोवल बा बेहवास। आजु हमार लड़िकी संकेता परि गइली ए बाबू। आजु विहड़ा में परि गइलीस लाड़की हमारि। आजु बेवा लो हो गइल, जो लोके केइसे किरियावा लागी पार। तब कहतारन जे—चुप होखु बूढ़वा, चुप होखु, तबो मानेना, तबो रोवते बा। उहे

धइके बरिआइन मुंह मुंद के, अंगुरी के सान से देखवल स। जे रोव जनि, उहे, जब अंगुरी के सान से देखा दीहलन, खट देने उठि गइल मखुवा आरे कले कले चलि गइल भइया तमू में गइल बाटे समाइ। आ कल से जब दुपटा उतार ता, मुंह के त, अजइ टकर टकर तिकव ता। त बुढ़वा ठाढा भइल बाटे, तनी चिन्हीं त पंचे, जवनी समे मेंले के मखुआ जब लूगा टरलसि। त उ टकर टकर ताकता उ मखुआ। टकर टकर अजइया ताके आ मखु के मुह निहारे, त मखू सोंचतांड़े, आरे चिन्हत नइख पवलगी कर। उ पवलगी जब ना कइलस अजइया, त कहतांड़ का।

जे ए बबुआ तनी कही देब कुसलिया हमरी लड़िकिनि के,
कइसे बेटी बाड़ी गजनेइ गउरवे न गढ़ ए पालि।
धोबिया कहत बा जे ए बाबा अब केवन कहीं कुसल की तोहारि लड़िकीनि के।
दूनो गउरा मरि गइली स धोयवाइ रे तोहारि।

अजयी का मक्खू को असत्य समाचार देना
कि उसकी दो लड़कियां विजवा सरासरि मर चुकी हैं

आ हां हां हां

गद्य : ए पंचे, जेवनी बेर अजइ जब कहताटे, जे दूनो लड़िकी बाबा तोहार। मरि गइली स, त, जेतना वीर गउरा के सब चीहा के ताके लागल। ए भाइ इका, मीतवा के त दूनो जीयतारी स त इत बुढ़वा से कहता जे मू गइली स। अब रोइ का कहलेस बुढ़ मखुआ जे अच्छा ए बघुआ हमारि बेटी मरि गइली स, त तनी समोचार ना दीहल ऽ बेमार बाड़ी स, कहलस जे आरे बाबा, उ बेमारी कहां ले कहीं। एगो कहतानी बेमारी जेठकी के, खाइ पी के अनने से रहलि, दुअरा हम बइठले रहलीं। त उ बेमार ओमार ना परलि, पटके बेमारी में मरि गइलि, एहींगो बइठल। मरि जब गइलि बाबा, त अब काकरी, जाइके तोरे परवाहि ओरवाहि करे आवतानी, आवतानी जे पानी ओनी छुवतानी, तेथू का आंगन में, तेंव झटके में छोटकियो मरि गइलि।

त ए बाबा जेठकी तोहारि पटकेइ बेमरिया में बा मरीन गइल,
आ छोटकी झटकीय मरलि ना हो लेलकार।
ए बाबा हम कइसे भेजी ना आ भेटिया दादा ए करेके,
उ दूनो लड़की पटके झटका मरली रे तोहारि।

गद्य : मखुआ कहता जे अच्छा उत पटका में एगो झटका में मरी गइलि, त ए बबुआ जहिया काम रहल, तहिया काहें ना बोलवलऽ। हें एइ देख, काम रहल त काहें

ना नेवता दीहल । लालच बस हितइ न चलावल आले, उ दूइ तहरा लड़िकी ले पूँजी रहल, आ दूनों जानी के हम लिआ गइलीं, आजु जो तीसरो रहित त हम भेजितीं, जेबाबा के तनी भेजब त लालच से बियाह क दीहन ।

त ए बाबा तोहार दूनो इ ना ऽ लड़िकिया हम अब लेइ न गइलीं,
आके थे काहे के नेवता देइय न भेजेवाइ ।

गद्य : एने झंख स बीर बघेला, तमू बइठल बाड़े माथ उठाइ उठाइ । कहे लो जे इत खूब ससुरे दामाद का जमता । बुढ़वा कहता जे ए बबुआ मू गइली स । त तोहरा के हम कहतानी जे तोहरा के दोसरी ठागो ना अगुआइ करे के रहल ह, हमरे कीहें करे से रहल ह । त कहलस जे ए बाबा हम अब तोहू से कहतानी ।
आं हां ऽ हां ऽ
आजु मखू जो एतना बाति हुउवं बतियवले,
तब धोबी गरजि के बोलता मोती सगड़ की घाट ।

मक्खू को अजयी का संदेश—सतिया का विवाह होकर रहेगा

गद्य : कहत बा जे सुनलेब ए ससुर मखू, मनब बाति हमार, आजु हम भरसक ना कइली ह अगुआइ, देख चिटुकी लगावत में भउरी हमारि जरि जातियेटे । एइजा के त हालि हमहू जनते रहली हं, बाकी एही से कहली ह अगुवाइ सुहवलि में, जे आंगे जो सती के सादी जो होजाइ, त ए बेरी हमहू दू चार जानी के हकन लिआ जाइव ।

ए बाबा सुहवलि में कनियाइ सा हतिया बाड़ी दूनिया ले,
ओही खातीर बीरवा के अइलीं हो लिआ ऽ इ ।

गद्य-पद्य : आंगे होइ सादी सती के, दू—चार जानी के हमनो जाइब लिआइ । एतना जब कहत बाटे अजइया, मखू ए भइया रोइ के कहल सुरुवां से बाइ । कहत बाजे अच्छा बबुआ, हमारि बियही सांझे पाती गउए, आ सुनुए तब से रोवतिया, आ उठी के रचि के जेवन बनवले बाइ, रचि के जेवन बनवल स आ बिधि बिधी, रसोइ रचि के कइले बाटे परकारि ।
कहतिया ए बबुआ जे हमके तिरिया भेजि ये देलेइ बाइ सगड़े ऽ ऽ ले,
आ सुहवलि में रोवति रहलि नारीय रे हमारि,
कहति वा जे दामाद मोर सुखलीय, भउरिया हो दादा चाबाल ऽ,
आजु उहे आइल होइहनि ना बरेयाति ।
त धोबी का कहता पंचे

कहत बा जे ए ससुर हमार खंसी नियरना दिनवा तू ससुर घइके,
हमरा गर में जाई रोटी दे ब ना बान्हवाइ ।
हम नाहीं खाइबि जेवानवा ना सुहवलि में,
सुहवलि के जनलू बा हलिया रे हमारि ।
जेवनि तोहारि रीन्हलि बाड़ीइ रसोइया उ सुहवलि में,
सागाड़ा पर जानतियाड़ी न हीयवा रे हमारि ।
हम नाहीं जाइ न भइया ए सुहवलि में,
बीरवन के सगड़े इ दीह जा भेजावाइ ।
मखुआ रोवे लागल ।
कहलस जे हाइ ए बबुआ ।
आरे डाइनि के दामाद ह दादा दुल्हम हमके रहे ना देइ ।
उ रोइ रोइ मखुआ कहे लागल,
ए मइया आ लोरिक का बुतन नाहीं आड़ाइ,
चलल अइले चलावल बीर जब तमू में गइल समाइ ।
कहेजे मीता मोरि अजई,
अब गुरु मान ऽ बाति हमारि,
एतना जब सासु के मन बा लागल,
आ बाबा बुढउ रोवत बाड़े मोती सगड़ की घाटि,
अब भइया तोहरा हकने जाये के परी सुहवलि में,
एहि सोना सुहवलि पालि ।
त धोबिया कहत वा जे ए मीतवातोर सुहवलि के,
ए हलिया सांचो नइखे रे जानलि ।
सुहवलि के जानलि बाड़ी न ऽ ऽ हलिया रे मीता ऽ हमारि ।
इ ससुर इहे राजावाइ न आ दबवा बाटे इनिके चढ़वले ।
तबे ससुर अइलनि सुरहनि का आ निकलठेह रे आ ऽ रा ऽ र,
आजू हमके मायावाहना आ फंसवा में बा ससुरा रे डालत,
सुहवलि के जानलि हउवे हलिआ आ ऽ रे हमारि ।

गद्य : सुहवलि में जेवन दामाद के सेवा होला, तेवन हमारि हीया जाने ले । मीता, आजु ससुर इ बीजे नइखनि कइले । खंसो नियर हमरा गरदनि में जाइ-रोटी बान्हि के आ दिन घ केहमके देबे जइहं बलदान । मीता जाये दबात जहनम, ए लगना परे जोग ना बाइ, बइठ रह सागड़ पर, सान गड़ रहो मोती सगड़ की घाट, जो कोई होइ बीर लड़वइया, लड़ने में चलि आइ मोतीसगड़ की घाट,

एही जा पाठा देखि ह, बाकी जनि भेज सोना सुहवली पालि। भइया चलि जाइ सुहवलि में बीहड़ा माटी परी हमार, छुटि जाइ संग अलबेल्हा, ना भेंट होइ सोना सुहवली पालि।
मखुआ कहत बा जे आजु अजर परो ना बियही दादा सु ऽ ऽ हवलि में,
हामारा के भेजले सगड़वे पार ना बाइ।
हारे बबुआ उह केवनि हउवे ना दागावा कइलसि बियही मोरि,
काहे खातीर देहिया अब पइछाइ ना आ दीहल ऽ रे इ लागाइ।

अजयी द्वारा लोरिक को सुहवल में अपनी पिटाई का हाल बताया जाना—

गद्य : लोरिक से मखुआ पूछताटे—ए बबुआ तनी पूछ। का हमारि इसतीरी इनिका के सा मनले ह। साफे बयान बता देसु आ तनिको तरपट हबे हम चलि जाइब। आज बलाबली न हमरी बियही के लछना लगावताड़ा ऽ, बोले बीर बघेला वीर के वंका लोरिक ह नांव—कहे जे मीता मोरि अलबेल्हा मनबे बात हमारि, आरे भइया इहो कहतानी जे झूठ बाति बतियइब, मरब केर कपिला गाइ, कह खेला ददा मुहवलां के, कइसन खेला भइल जेवनी बेरि बियही से कइले हउव बियाह। कहता अजइया जे भाइ। अइसन तू किरिया खिया दीहल ह। बाकी अब कहब साफे, ठीक ह, हमार सान जेवनी बेर चढ़ि गइल बा बल, गउरा में, आ चउदह टोला तहन लो नियर मर्द के लड़ाइँ। आ हमार मेहनत ना पुरा भइल त एही सुहवलि में गंगनी खेले हम आइल रहली। त देखु मीतवा सात दिन गंगनी खेलवलीं मय नवहन के पानी धललीं बिगारि। आ जवनी बेरि सबकी सिर पर छप गइल जेवानी, जब चढ़ल गुडुगुड़ी बाइ।

जब सातावा दिन नाहीं आइल लो बाजि गइलि ताड़ी हमारि, बाजलि ताड़ी सुरहनि में सुहवल गाँव गइल गरगराइ। ताड़ी गरगरहट राजा दुअरा गइल सुनाइ, सुनले रजा वमरिया उठि गइल ललकार। बांये के सुनल मंतीरी, दहिने महथा राज देवान, इत बादरि बुनी नइखे लउकत, काहें सुहवलि बाटे गरगराइ। मंतीरी लो कहि देउ जे ए ठाकुर बादरि नाह, एगो पंछी देश, पछीं ओतर काबुल देस पंजाब, एगो आइल बा पछिम के जाति के धोबी, रात दिन अइले भइल सुरहनि में, गंगनी खेलावत हो गइल मय नवहन के पानी बिगारि धलले बा, आ सब मरदनि की सीर पर छपि गइल जेवानी, पर चढ़ल गुडुगुड़ी बा। त काह।

तब एनिया रोवल हउवे ना आ राजवा मीत लागल बमरिया,
ओहि सुहवलि केर बजारि, कहे जे बजर परो गज भीमला पर,

आरे झींगुरी पर गिरि परित गजबवा के धाइ,
आरे इनिका नियर गंगनी केहू ना दादा बेलल ।
इनकर जोड़ बसुधा में नाइ रे बताइ,
आरे भीमला खोजे गइलन जोड़ दूनिया में ।
बटुरिय कांड़िय घललनि रे सवंसार, नाहिय जोड़ी त इनकर लागल,
चलि अइल न सोना रे सुहवलिय पाल,
छतीसे ना हाथवा के भाला, सान हम सगरे देइन गड़वाइ,
सतिया जीयरवा की कारन ।
आ छतीस जाति के बेटी छेंकि दिहली बरिओ रे कुवांरि ।

गद्य : ए मीता । आ गइलि बाति बीर का तब हम कहतानो ओ सेवा के हालि । काहें जे जब बीर रोवे लागल, कहलस जे बेटा जनम ना लिहल लो गदहा ले लिहल अवतार । ए केवना कोंन में गउरा छुटि गइल बा जे जहाँ सीरजल मरद के सानि । आज मरद के—कहां ले कहीं बरनिका, हमरो किछु परताटे विश्वास, इजाति के धोबी जे बाइ त जरूर इ लुगे के धोवाइ करत होइ। त जब लुगा के धोवाइ करत होइ त ओकर ठाकुर कइसन होइ । रोवे लागल बमरिया तब ए मीता । मंतीरो लो कहल जे रोव जनि अभी, भेज द पाती लिखके बबुरी बन । जहाँ बीर लड़त झींगुरिया बाइ । सुनी, बेरु पठा जो झींगुरी त चढ़िके आइ मोतीसगड़ की घाट । उहै मारी बीर गंगनी में एहि मोतीसगड़ की घाट । दाऊ ठाकुर बउरइल, की तोहार माना परल गियान ।

अजयी का लोरिक को झिंगुरी से गंगनी में भिड़ंत और पराजय की बात बताना

तब मीता सुनि ले बयानवा सांचो न सुहवलि के,
अब तोह से साचें ए देइ न बतलाइ,
आजु भइया तनिको झूठत नाइ कहब,
नाइं तमिको रखबो मनो में रे छिपाइ ।
अब तनी सुनि लेबे हालि सुहवलि के,
अब पाती लिखले बमरिया रे बाइ ।
लिखि देला पतिया सांचो रे अलबेल्हा,
अब भेंजल गेरुआ नगरि रे पहार ।
आजु मीता सहकल बहकल बाड़ा रे बाउर,
झुलनिय हो जाले जियरवा के काल ।
सहकल मानावा रहलि रे सुहवलि में,

एहिय मीता मोतीय सगड़कीय घाट ।
सभका उ दूसरो रोजगार दादा रहल,
हमर भउरी लागतु भींटा पर ददे बाइ ।
लागे ए भउरिया एही न भींटवा पर ।
रचिया के कइले हवीं न बिसराम,
दिन भर मेहनत जमें न सगड़े पर ।
आजू मीता सोना रे सुहवलिय पालि,
केहूहमार चिन्ह लो त लोग नाइ रहल ।
जे केहू हमरी लगिया वइठने न बाइ,
जवनी बेर चभकल मन सुहवल में ।
हारे तड़िया साचो हमारि बाजति रहलि न ऽ संझिया ए मीता बिहान ।

गद्य : लिखे पाती बनरिया, आजु भेज दीहल बबुरी बन पर । अब उ धावन दिन राति ह धावल, नात कते पंयड़े कइल मोकाम ऽ लिखल पाती अलबेल्हा, नियरा दिहलसि गेरुआ करी पहार । ओने झींगुर कसले रहल लंगोटा, एहिमे बन्हले रहल माल बरम के गांठ, घींचले रहल पेटी अजगर के जेइमें गोला जुमुस ना खाइ, उ बीर गरदनि ले गरदा रहल चढ़वले, कोछु दूर; कोठन ले ले रहल मेराइ । ए भइया अच्छी तरह मेहनत जमवले रहल ओही बीच में पाती हमार चलि गइल बबुरी पुर पालि, सोहरि के मांथ धावन असीसलस, त कहलन जे बबुआ तनि कहु कुसल के, केइसे सुहवलि बा, त उ चतुर जाति बा नाऊ के, कहलसि जे हम कुसल कहे लागबि त हम त भूला जाइबि । जेतना कुसलि बा एहि पातीमें बा ।

हे मीता, आपना हाथ के जब पाती, धावन जब ले के ओ बीर झीगुरो के हाथे दीहल धराइ, झींगुरी काटे पाती कुल्फी के, बांचे आंख आंख मिड़ुराइ । अगल बगल सीरनामा बीच में, दगल सलामी बा उहे पाती रहल पंचे, अनगुतहा, बाबा जवन भवानी वाली पाती रहुए उहै लिखल पाती अब जातिया सुरहन में आजु हम कहतानो मीता इ पाता जवन भेजले रहल ह, तेवने पाती गई रहलि, आ ओही पाती का बदला इहे अब पाती तू भेजल ह । बमरिया लिखले रहल, जे—उत्तर बहल मय देवहा, दखिन गंगा दरे ललकार, बीचे झोल बहल सरजू के, जाके मीलल बलिया मोहान, बलिया भटपुर बसे परगना, बीहियापुर डंड़ार, ऊँचे चउर बरम्हाइनि, नीचे गजन गउर गढ़ पालि, छोटे टोला गढ़ गउरा, गली तीरपन लगे बजारि, उत्तर टोल बम्हनइया, दखिन झारि बसे कोइरान,

पंच्छो घर जोलहृन के मंगल बसल बाड़े पैठान, सोरह स घर जदुवंसी झारि के बस रहलि अहिरान, ओइजाखेतीबारी ना होले, झूमरि चले कुदारि, घर घर खनल आखाड़ा, दुअरा परल दोहरिये माल, हंस हंसिनि दुइ जोड़ी बीर के सांवर लोरिक ह नांव। लोहन करी कमाई, बेकति गउरा खातारी एकजे राज, एतना पाती बमरिया लिख के मीतवा भेज दीहलसि ओही कीला ऽ गेरुआ करो पहाड़।

गद्य : हा जेवनी बेरि पाठा बांचे पाती अलबेल्हा आगि ओकरी लागि गइल बदन में बाइ, कहे हा हा भगवान खुलि गइल ताड़ी रघुबर के, जोड़ी आ गइल मोती सगड़ की घाटि, चल मन के पुज मनोहर, पेट के ललसा जाइ बुता, हमरो ललसे रहल।

हारे मीता तनो सुनिले बयान सुहवलि के,
तनी मीता सुनिल बेयान सुहवलि के,
एही आजु सोनारे सुहवलिय पारि।
पंचे अब काहवां ले कहीं पवांरा,
इय गीति डुबली पंवरवे में बाड़।
वाकी आजु लेके बाटे पतिया लिखाते,
ओही से अब क--हत न बानी न खरादि।
तनी अब सुनि ल बयान अजई के,
जेवनी बेर करत मीता से ओइजा बाई।
जब मीता बचलसि पाती अलबेल्हा,
अब बीर के परल झींगुरिया बा नांव,
उ अ बीर हरगे भूइं तारे, ऊपर दादा फरके दबवले बा पाड,
जहिया चलल बाटे बीर अलबेल्हा, जुमि गइल सोनारे सुहवलीय पालि,
हा हो बाबू दूइय पहर दिन रहल, पाठा जब जुमन झिंगुरिया न बाइ।
तब भइया गलबल गलगल गल्ल गलहटि, अब हाला उठल सुहवली में बाइ।

गद्य : इटावा पर बइठल रहली सागड पर, एहि दाइा मोतिये सगड़कीय घाट कहे मीता जव जवनी धरी झिंगुरी जूमन्न। ओ समे में अदिमी पूरा टांठ बोलल। त आइके पुछलस बामरि से, त बामरि रोइके कहलन जे आ हा ए बेटा। अब बेटा जनम ना लिहल, गदहा ले ल बाड़ अवतार, एगो जाति के धोबी चलि आइल बा। ए सुरहनि में नछतरि केइ देले बा। आ आजु बीर जो धइके डहरि चलि जाइ अपना नगर केकरी पगान, त कही जे बेटी चोदी बमरा के, मुंह में डाल देइं तरवारि, एगुड़ो बेटा नइखे खियवले, कुल गदहे ले ले बाड़ स अवतार।

त ए बेटा आजु तोर डुबि गइल ना आ आसानवा दादा सु ऽ हु वलि में,
आधोबो आजू गंगनिय में दोहलसि रे · खेलाइ ।
कहुए झींगुरी गउरा केवनाइ आनालावा में बा छुटि रे गइल,
जे कीलवा में रइल गउरवे गढ़े पालि ।

गद्य : अनला में छुटि गइल आ, उहे गउरा आजु चढ़ि आइल बा सुरहन में, अजई कहता जे काका धीरजा धर । आज त पते चलि जाइ । आज उनका हमरा पता चलि जाइ । त ए मीतवा कहां ले कही बरनि के सोभा कहे जोग ना बाइ, जेतना नवहा रहल स मुहवलि में, सम के दादा झींगुरी संग में लिहल लगाइ, छव घरी दिन रहल अलबेल्हा, अबहीं एही मोतीसगढ़ की घाट । तबलक जेतना मरद करधनियां, रहलनि सोना सुहवली पाल, सब बीर के संगे लगा के, आंगा आँगा चलल हु मोतीसगड़ की घाटि । जब देखलीं बीर अलबेल्हा फरकल मन हमार, कहलीं जे आहा दइब नारायन अब विधि उगील देल करतार, आजु मीलो जोड़ी मुरहनि मे, एहि मोती सगड़ की घाट ।

आरे ओनिया चलल बाटे झूआ मेलवा देखवे झींगुरी के,
सुरहनि में मीतवा उठि गइलि ना आ बायावा रे सुधर हमार ।
ए मीता, उलटे कसे लंगोटा -- हारे ऊपर वान्ही माल ए बरनि करी गांठ ।
जहिया मीता रचिय के पेटिया चढ़वलीय ।
ऊपर काछा माल ए बरनि करी गांऽठ,
अब मीता हाथावा के जंघिया उठाइ के आपन सांचों,
जंघिया जब लीहली रे चढाइ ।
तबलक लामा कर बीरवा बघेला,
गंगनी जो साचों लोग ले ला न नियराइ ।
आजुअ मीता धरती जब एड़ा बा दबवली,
अब फानि गइली बेयालीसे न हाथ ।
जब जाके गंगनीय डंड़िया ठाड़ा भइलीं,
अब हम खेले के भइलीं न तइयार ।
तबलक जुमि गइल गोल झिंगुरी के,
तबलक गोलवा जुमल बा झींगुरी के,
अब बीर खाड़ा ए गंगनिया पर बाइ,
तब पाछे बोलल बाटे पाठा अलबेला,
जेकर आजु बलीया झींगुरिया बा नांव ।
कहत बा जे सुनि लेब नवहा सुहवलि ले,

अब बाबू मनब जा बतिया हमार ।
आधा ए मारादवा मोहीय गंगनी जइब,
जहां बीर ठड़ा ए गंगनीय पर बाइ ।
आधा भइयाहमरी गंगनि ठटि जइब,
एहिय नगर मोतीय सगड़ कीय घाट ।
आजु निहिचे होखि जाइ खेलि अलबेल्हा,
एहिय कीला मीतीये सगड़कीये घाट ।
जेके साचो रामा ए दीहनि सेह लेइ,
मीतवा उ लेइ लेइ हाथवा पसारि ।
एने हमरो सहकल मन रहल बहकल,
बल हमरा भुजा में रहल तइयार ।
हा हो मीता तनिको अदब नाहि लागे, नाहि लागे,
नाहि तनिको हीलति रहलि जंघिया हमार ।
तनिय मीता सुनि लेबे हालि गंगनीके,
एहिय आजु मोतोये सगड़कीये घाट ।
जेवनी बेरि जुमि गइल पाठा ए झींगुरिया,
अब बीर गंगनी भइल बा तइयार ।
आधा नवहा हमरी डंड़िया पर चलि आइलं,
आधा ओने टिकल झींगुरिया कीहें बाइ ।
दूनो जब दलवा न हो गइल बराबर,
हाहो मीता मोतीय सगड़ की ये घाट ।
आ पाठा जहिया जब गरदनि जो माटिय उठवली,
तहियां जब मरदनि ले जो माटिय उठवली ।
आपन गरदा गरदनि पर जब लेइ ला चढ़ाइ ।
कीछु धोरी कोठवा में लगली जो मेल्हे,
कीछु अपना भुजवापर लेइ ला चढ़ाइ ।
अब मीता उठकि जो घींचली बइठकी,
बदन मोर चढ़ि के भइल लेलकार ।
हा हो बाबू चड़ि गइल बल भुजा पर,
अब बुला भुजवे मेंनाहीं रे अड़ाइ ।

गद्य : ए पंचे, अजइ बेयान कइ रहल बाड़ें जे मीता जब इ कहल हउवन जे हमार कवनि इस्तीरी कमीं कइले बा, त एइजा दामाद के तनी सुनिल खेला भइया,

जब गंगनी पर, हम जब बल जब हमरी भुजा में हो गइल, आ झींगुरी जब ठाड़ा रहल गंगनी पर।

त ऽ मीतवा हमारि बाजि गइलि ना
आ ताड़ावा देखबे राना ऽ वा ऽ में
आ चक्कर ओही गंगनी में दीहनी ए ऽ ला ऽ गाइ,
जाइ के मीता जब दीहलीं टाड़ गंगनी में,
आरे ओही मोतीये-सगड़ कीये घाटि,
सुनि ले बयनवा साचो रे अलबेल्हा।
हा हो मीता मानि जइबे बतिया हमारि,
जब मोरी गंगनी में ताड़ बाजि गइलं।
तब बीर चलल झींगुरिया रे बाइ,
जइसे उ बाघवा धावेला का बटइय पर।
गंगनी में बान्हिये देले वा लेलकार,
हमरो उ बढ़ल रहल सान देहिया में।
अब बल भुजावा रहल तइयार,
हमरो इ ताड़ावा छुटल बा एनिया से,
उअ ताड़ दबले झीगुरिया रे बाइ,
दूनों ए बीर कर भेंट होइ गइलं····,
थाप जो सोना धपल लेलकार,
अगिलाइ ठास हमार लागि गइलं,
अब बीर लाभा गइलं रे झलमां,
ढीलि गइल देहिया साचोर रे झींगुरी के।
अब बीर झोंकल बगलवे पर बाइ, ऽ

झिंगुरी से अपनी लड़ाई की बात अजयी द्वारा लोरिक को बताया जाना

गद्य : हाँ ऽ हाँ ऽऽ आजु जब बोले पठा अजइया, मीतामानिजा बाति हमारि। जेवनी बेरी परि गइल सान गंगनी में, जब ताड़ दीहलीं बजाइ जइसे बाघ घरे बटई पर, अब वीर बान्ह देला लेलकार, बेटा, भइया, मीता हमरो ताड़ बाजि गइल, दूनो बीर चक्कर छोड़ि के चलल पयंतरा पर।

आजु मीतवा बाजि गइल ना आ चोटवा देखबे मरदन के,
झींगुरी के बहियाँ लरझति गंगनिया में मीतवा ऽ बाइ।
लरझलि देहि गंगनी में आरे झूकि गइलउ बदनिया रे बाइ,

अब बीर ठेहुने पर जाके रोकि गइलं।
ओहि कीला सोनारे सुहवलीय पालि,
धरती ले एड़वा दबवली अलबेला।
अब बीर के फानिय गइलीं रे ललकार,
चढ़िय गइनी न साचों अपनीय गंगनी पर।
सुहवलि में सुनो ले बे मीता रे हमार,
सहकल मानवा साचो न अलबेला।
अब मेहनत करे लगली न लेलकारि,
उअ बीर निचवा मउर गाड़ि दीहल।
फेरु जाके गंगनी भइल बा तइयार।

गद्य : गंगनी जब तेयार भइल बा मीता। तब नवहा दू-चार गो गंगनी खेललंस दू-चारि हाथ। फेरु मन हमार चमकल।
बाकी मीतवा झींगुरा कइ दीहलनि ना आ दागवा देखबे गंगनी में,
आजु अ सुहवलि अवघड़ सुमिरलनि सांचो लेला ना कारि।

गद्य : आ पले भर सुमीरे। आ हम गंगनी पर खेले के चढ़ि गइलीं, अब जब ताल दीह ली वजाइ। ओने छुटल जोड़ झींगुरी के, एने छुटल जोड़ हमार, दूनों बीर जब चललों जा कड़कड़ाइ के, तवलक अवघड़ हमार घ लिहलस गड़ आके।
आरे मीतावा हमारि घींचि लिहलनि न,
आ गोड़वा देखे सुरहनि में।
गंगनी में गीरि परलि न मटिया रे मीता हमार।
अब झीगुरी पंचवेइ परोसावा वाटे कुदि न गइल।
उपरा एड़वां मारिये ना आ दीहलसि जव सभ बे साइ।
आजु मीतवा पड़कि गइलन हाड़वा हमरी पजरी के,
आजु अ गरमी छवलसि ब ऽ दनियों में लेला ऽ एकार।
ए मीतवा आजु लागि गइल ना, दांतावा दादा सुरहन में,
हमरा अब देह केइ खबरिया ना ददे रे बाइ।
सभ मीतवा जय जय ना ऽ आ बोले लागल सागड़ा पर,
अब जीति झिगुरिय के ए गइलीय हो ऽ लिखाइ।
सभे हमके छोड़ि दीहलसि ना आ लोगवा दादा सागड़ा पर,
ए मीतवा ओइजा केहू अ नाहीं ना हीतवा ए रहल हमार।
जाइ के मखू का दुआर पर कह ऽ, त इनिकर नारि कहलसि, आहा हा ह जाति लरिके न टांगि ना ले आव। ठीक में टांगि के ले गइल, एइमे हरज

ना। ठीक में टांगि के ले गइल आ दूनो इस्तीरी जवन बियहि के ले गइल बानी उहो रहली स। हाइ मीता अब हमरो देह पर लागल लोथा।

सात दिन तक मेरे सीने में घाव कड़कता रहा,
अजयी का कथन

आरे सात दिन कड़कति रहलि न ऽ घइया हमरी सीना ऽ वा ऽ में,
नाहिय मीतवा खुलति रहलि ना आ अंखियां ए साँचो हमार।
हाइमीता सात दिन कहताड़े, एमे झूठ नाहीं,
हमरी देह पर लोथा चले।
बाइ हमारि आँखि ना उठें।
काहें जे जब नयन उठे के मन करे तब हाड़ कड़के लागे।
त ए मीतावा हमारि सात दिन ना लोथवा घुमल देहिया में,
आठवा दिन खुलि गइल अंखिया रे हमार।
आंखि जब खुलि गइल त ए मीता अब कहतानी तोहरा से,
तब उ बोललि जवन इनकार नारि बा।
कहतिया जे ए बेटी तनी धोरे बचा के हलुआ बना ले आव।
आ पतरे, आ खुब्र ठिकाने से अब तनी बचा के चटावल जाअ।
आरे जेवनि हमारि जेठकीय नाहि अलबेल्हा ऽ
आ जेवना के दुधिला पुर गइलीं रे लिआइ।
उहे जब उठिय गइलि बे सुहवलि में,
घुरुला जो हाथवा के ले ले ह अलगाइ।
चलि गइलि गउवां ले घीव कीनि ले वे उअ लेइआइलि सुहवलि में बाइ।
मीतवा जो चिरुअन घीव हउए ठेल ले,
आ ओपर जाकर देले ए पीसनवे के बाइ।
उहे जब पतरे हलुआवा बनावल,
ओही जाके सोना रे सुहवलीय पालि।
आरे मीताजब पतरे हलुववा बनावल,
जेवनि ए घरिय नारियन बाटे रे गहाइ।
उहै जब लेइके हलुआवा बा जूमल,
अपना जो दुतुए माता के जब बाइ।
तब इहे बोललि हवे नारिय मखुअ के,
आ लड़िकी आजु मानि जइबे बतिया हमारि।

तेहीं हलुआ चटा दे। अब एमें सक बा, लजो जनि, चटाउ।
त ए मीतवा उहे अंगुरिय पर हलुवा लागलि रनिया चाटावे।
अब हम चाटे लगलीं न मानावा रे लागाइ।
केतना दिन हलुआ चटले हउवे सुहवलि में, आत सात महिना।
आरे मीतवा जब अच्छी तरे ना आ हलुवा चटलीं सुहवलि में,
तब सुहवलि उठी गइलि बायऽवा रे हमारि।
आ अब हम टहरे लगलीं। टहरे लगलीं जब सुहबलि में,
त ए मीतवा इ हम हकन कहब जे एतना सेवा कइले बा।
त लोरिक कहता जे आजु बजर परोना आ।
मीतवा देखबे आलावा बेला।
तोहरा पर अब गीरि परी गजबवे की ना धारि।
जेकरि सासु एतनाइ न सुखवा बा तोहके ए देले।
जवनि बेर बिगड़ल रहल दिनवा ए तोहार।

लोरिक के आग्रह पर अजयी का सुहवल में जाना

गद्य : कहताटे अब बाइ से लोरिक बांड़ से झटकारि के बाहिं वीर के उठा दीहलं। कहलन जे देख बाति जनि बतियाव। काहें, हा हा हा, धनि ओ इस्तीरी के कहे के, आ धन ओ सासु के कहे के, जे आजु तोहार केहू दूनिया में हीत नारहल। हाइ मीता। आजु तोहार दुनियां में केहू हित ना रहल हा। आ इहे इहे इस्तीरी पति पलना कइले ह। अब त हमरा के ठीक जनाता जे, इहे काल्हि पाती गइलि ह, त इ रानो जनलसि ह। हकन बारह बीजन बाटे बनवले, सोरह करतियाटे परकार, बीघो, बीघी के रसोई भीता कइले बाटे तइयार। अब हकन जाये के परी, सुहवलि में तोहरा सोना सुहवली पालि।

त आजु एने रोवे लागल ना ऽ पाठावा ए ददेउ अजइया।
आजू मीतवा बिछुडति बाउ जोड़िया रे दादा हमारि।
आजु मीतवा जाये के बटला बाटे सुहवलि में।
उअ बमरा नाहीं छोड़ी ना जीउआ रे मीता हमार।
आजु अ मीतउ उ बिछुड़ति बाड़ी मीतइया हमारि दूनियां में।
सुहवलि में जानलि बाटे हलिया रे हमार।

गद्य-पद्य : बिगरल पाठा अलबेल्हा, जेकर बंका लोरिक ह नांव, कहे बजर परो ए मीता, कते ओइड़े जइते दबाइ, आरे ओ भरम के छोड़ि द, चलि जा सोना सुहवलो पालि, खइह बीजन ददा ससुर की दुआर पर, ओही परी घुमि के चलि जइहै ओही बामरि का पवन दुआर। जाइके कहि दीहै, जे अरे ससुर नेवहन

लकड़ी नइख भेंजत । अबे सागड़ पर अइगा दीहल चलाइ, सात दिन सागड़ पर
टीकले बराति हो गइल, दादा, ओहि सोना सुहवली पालि, ए मीतवा
त जेके तोहके सुहवल तीरीछोइ अंगुरिया जोऊ ताकि न दीहनि,
हमरा के चिल्हिकि के तूं खबरे दीहेइ न जनेवाइ ।

गद्य : आए मीता । आजु तोहसे कहतानी, गउरा लड़ावत रहल, उ खेला के जनि जान, अब तोरे जीयर की कारन हम हकन सुहवलि में डालि देइब हड़वारि । बाइ जाये के परी हकन । अजइया कहता जे जाये के परी, आ त हं । कहता जे अच्छा जाये के परी, त हमहूं कहतानी लोरिक लंगोटा कसि ल । का जाने हम चिल्हिकलीं ओने, लंगोटवे कसत रहि गइल, तले त हमे खतमे कइ दिहें ।

आरे पंचे अब जाहिय दिननवा के बाटे,
तनी अब धोबी के सुनजा खेलवाड़,
तहिया आजु धोबिया बोले का अलबेला,
हाहो मीता मानि जइब बतिया हमारि ।
अब भइया उलटा तू काछा ए चढ़ाव,
ऊपर बान्ह माल ए बरन करी गांठ ।
तनी दूलर बान्हि देब पेटी अलबेल्हा,
जेइ पर साचो गोलावा जुमुस नाडखाइ,
अपनीय छाती पर बान्हि द लोहताइ,
बरछीय दू दू ए दोबर होइजाइ ।
हाहो मीता भंइसा नसूर कर पांजरि अपना तू हीकवा देब न लटकाइ ।
जेवन तोहार हंसवा हंसोनि दूनो जोटी,
ओढ़ना तूं डालिय देब न पीटवाइ ।
आहो मीता बांये न ओड़न नैपाली,
दहिने डाल ऽ खांसड़ बिजुलिये के खांड़ ।
हाहो मीता छपन छुड़ी न बगले में,
अपना जो दोहरी चापो रे हथियार ।
नोचा उपर धींचे दैबे पागवा गुलाबी,
अब बान्ह जिरा ए अलग फहराइ ।
अब मीता ओड़िय न गजब के जूता,
फीतावा पर मोजावा जो लेब ना चढ़ाइ
तबे हम धरबि न डहरि सुहवलि के,
अब जाइबि सोना रे सुहवलीय पालि ।

भइया एंगो नाइये जाइबि सुहवलि में,
धोती पहिनति में मारि घलिहनिस जान हमार।

लोरिक की वेशभूषा

गद्य-पद्य : कहता जे भइया। हमार मन त नइखेकरत, बाइ भेटों ना होइ। बाइ हिम्मत बाजे, अच्छा तनी तोहरो प्रभुताइ देखिलेइ। आजु पंचे तनी सुनि ल बेयान धोबी के। अब निहिचे जाइ सोना सुहवली पाल। अब लोरिक जब उल्टा काछा लागल चढ़ावे, ऊपर माल बरिन के गांठ, बान्हे पेटी अजगर के जेइमे गोला जुमुस ना खाइ, अब बीर जेवनी बेरि अपनी छातो देले बाटे लटकाइ, हंस हंसीनि के जगड़ा बीर बान्हि देला पीछुआरि, आरे जवनी बेर कसले रहल जामा लोहवन के, आ सीना पर बरछी, दू दू दोबर होइ जाइ। ऊपर बान्हे पाग गुलाबी, जिम अलंग फहराइ, अलीगंज के जुता, पाठा मोजा ले ला लागाइ, घोचे पाग गुलाबी. जेहि पराजिरा अलग फहराइ, अलीगंज के जूता गोड़ में मोजा ले ला लगाइ। बोले लागल अजइया—चल ए ससुर, मखू के कहता जे चल तनी देखी तोहरो रमोइ अरुआतियादे। आ हर धरी कहे जे मीता सजग रहि हे। हमार—हीया नइखे करत। बाई आजु मीता हमार दाग लगा दीहल। बाइ हम जानतानी जे इ ससुरा खंसी अस दिन धइके, भखु इहे दाब लगल बा, इहे आइल बा ले जाये के हमके बलदान देबे के ए मीता। कहता जे जा जा मीता तनिको जनि अदब मान।

त ए पंचे धोबिया के जाइये के हे मानवा नाहि दूलर ए करे।
लोरिक बरबस भेजतेइ सु सुहवलिय में ददे ना बाइ।
चलल गइल चलावल—आ जब गोइंड़ा ले ले हउवे नियराइ,
त ए पंचे पछिम टोला घर रहल मखुआ के,
आ दखिन टोला बनल रजा के बाइ,
अब ओहो जाले डहरि धइ के आइल,
आ अब दखिन कोन के चल ता।
त ओकर बाहि घ लिहलस।
कहता जे आरे ओने कहां हो।
तहार ओ घरी घर रहल है ने,
आ अब कहां होने ले जाताड़।
आ त देख बबुआ उ डीह ना सहत रहल ह।
आपन डीह छोड़ि के इ राजा के पिछुवरा न घर उठवले बानी।

अगुवाई तुम्हारे जीव के लिए काल— अजयी को मखुवा का कथन—
ससुर को बीर की चुनौती—

त कहल स जे हं हं हं हं ससुर ढेर लोग लइका न तोहरा बढ़ल बा ओइजा।
जे डीह ना सहत रहल ह।
देख, लाफ बताव ना त काटब मांथ तोहार अब हो कहतानी।
अब बोले लागल जब मखुआ देवे लागल जबाब,
कहता जे ए बचवा त सुन, अब हम साफे बतावतानी।
तू हाल जनते रहल ह त काहे के अगुआइ कइल ह।
गरजे लागल बीर धोबी अपना फेरे मोंछि पर ताव।
कहे जे सुनलेव ए बाबा मनब बाति हमार,
ओतने जनिजान जे अबर बाटे हमरा भइल।
एइजा ले गइली हउवी त सुबि साधि के पीय ली हं दूध बना के।
कबुजा गइल मोटाइ ए बेरी बमरा के बेटा से देखा देखी हो जाइ।
मारब बान अलबेला उ बीर खंडे खंडा उड़ि जाइ।
तर उपर लागल निहरे मखुआ, कहता जे ए दादा।
इहे न हउवन जे एक एंड़ के मरला से मुंहे माटी ले ले रहल।
इ त बाड़ा लेलकारा बहसी।
कहल जे ए बबुआ सुन बात के मान ऽ।
इ अगुआइ तहरा के जोव के काल होइ।
अ जवनी बेरि डांटे पाठा अजइया ले के सोना सुहवली पालि।
कहे जे बेटी चोदी ए मखु तोहरी मूंह मे दाबि देइ तरवारि।
अइसन बाति जनि बतियाव,
एही सोना सुहवली पालि।
आरे झींगुरी के कवन चलाओ,
भीमली के मारि घालब डांड़ चढ़ा चढ़ा।
पियले बानी दुध बनाके,
गउरा कबुआ गइल बाटे मोटाइ।
सतहसर ददा के बामर हमरी भुजा भइल बाटे तइयार,
झींगुरी केवन गनती में हउवन र ऽ सीराज मीराज केवनी गनती में हउवन।
आरे एही बेरि मारि देइब बान अलबेला,
भीमली खंडे खंडा उड़ि जाइ।
सनकल बेटा ददा पींजला के अब बुढ़ से बन्हले बाटे लेलकार।

बुढ़वा कहे जे हाइ भगवान ।
कहता जे ए बबुआ त इहो कहि देतानी ओ के बमरा के बेटा ए घरी नइख स,
कवनों एगो कुशलवे मउगा बा,
काहे जे झींगुरी बाड़े से गेडुरी पर बाड़ें,
सीराज वाड़ें से बबुरिन बन में गाइ चराबतारें,
दसवंता-भगवंता जवन पाठा बाड़न स,
तवन उ बीर लड़त लो बा मेलन-ठेलन की बाइ ।
बिहल पाठा झींगुरिया बिहल पठा भीमलिया जे बीर लड़ने में अगम अपार,
आरे आपन गवन गइल बाटे करावे बबुआ फुलहनि केरि बजारि ।
अउरीइय भइया चभकिराइल ना आ मनवा देखब धोबिया के,
कहत बा ससुरुअ जाइब बमरे का पवने रे दुआर ।

गद्य : अब जब बोलवले बाड़न त जाइब जरूर । आ एह हम घरी गनती मर्द लोके राखे देइबि बाबा जाइके अच्छी तरे नु पीयलीं, एही लो खातोर पीयलीं हं दूध बयननके । अब बल हमरा सीमा में हो गइल तइयार । त कँहता जे जाए बाबू, त कहता जे जाय ए बाबू, एहींगों जाइँ । त कहत बा जे का, कहलस से जे नाइ तूं कुल्हि हालजान ताड़, आ सुहवलि हमरो कांड़लि बा, बताव केवनी केवनी ठगो जोखम बाटे, जोखम के बताव । मबुआ कहता जे एकर हालि नइखीं जानत । कहलस जे नइख जानत, आ त ना, कहलस जे हट ।

जेंव धोबिया रसरिय बाट आंगवा चललि सुहवलि में,
तबलक सखियन के परल झुमेलवा भइया रे बाइ ।
आजुय रनिया रोकि दीहलो ना आंगावा भइया धोबीया के,
हा हो पाहुन मानिजइब बतिया रे हमार ।

भीमलिया का बध करूंगा, अजयी की चुनौती

गद्य : कहत बाटे जे हे पाहुन आजु हमनी के त हालत गुजरती बा, तोहरी जीव की कारन सुहवलि में बड़ बड़ रचलि बाटे उपाइ । फिरि के चलि जा ना त बेवा हो जाइ सखी हमारि । जरे बदन अजइ के, अंगिया जरे लागल अंगार । कहे जे सुन लेबे के ए तीरिया मनबे बाति हमारि । आरे उ भरम जनि जानू जे झींगुरी मरल एड़ से आ हमारि धरि माटी में गड़ि गइल । हम उहे बीर नइखीं रे आ देखि के सोना सुहवली पालि । बढ़ि गइल बल करेजा, अब बल सीमा में नइखे अमात । एही बेरि न मारब बेटा बमरा के जेकर गजे भीमलिया नांव, एतना जब बीर कहे लड़वइया भइया आ लेके ओही सोना सुहवली पालि ।

झंख स नारि अलबेल्हा लड़िकी ऊपर मांथ उठवले लो बाइ। कहे जे दादा बढ़ि गइल बल बा पाहुन, कहलस जे ठीक बढ़ि गइल बा, मारब बेटा बमरा के, हंकन सती के होइ बियाह, कहली स जे अच्छा आंगा जा ताड़ तब हमनी का कहतानी जा सजग से जइह।

हारे, एने अब पतरी गली बा सुहवलि के,
आरे चलि गइल सोनइये न बाइ।
जब अब कीछु दुर डगरिया घ के जइह,
तहां चवमुखिया बगलिया न बाइ।
ओही जागो बटुरी न दल बाटे टीकल,
अब बीर तेगावा बाड़ें रे तइयार।
ओही चवमुखी गलि बा सजग बबुआ जइह,
ओइजा बीर टीकल बाड़ न लेलकार।
सभ अब जोहत बाटे माटी अलबेला,
एहिय पड़े धोबिया अइहन ना लेलकार।
एके हाला मारे के न लात ललकारि के,
उअ बीर ठांवे न खतम होइ जाइ।
ओकरा आंगा तनिको त लोहा त दादा नइखे,
बमरा के बनल ए वंगलवा जो बाइ।

गद्य : तिरिया कहली स जे चउमुखी गली पर सम्हर के जइह, ओहिजा दूनो बगल बीर तैयार बाड़ें से, तोहरी हांकित के।

आजू तिरिया देइ दीहली ना आ भेदवा भइया धोबिया के····,
आज धोबी चलल सुरहनि ले नाबाइ,
जहिया धोबिया पतरेह ना गलिया पंचे घइबा ले ले।
अब चलल सोनावा सुहवली दहावा पा लि,
तहिया बीर सनमुख नागलिया बाटे···नियरवले,
तनीय पंचे धोबिय के देख जा खेलावाड़।

सुहवल के बीरों का तलवार फेंककर अजयी के पैर पर गिरना।

गद्य-पद्य : आजु जवनी बेर हाथ में तेगा उठावल, अब बीर के गुप्तो रहक हथियार, एगो हाथन में ढाल दबावे ओड़न बाटे लेलकार, अब बीर झुमि के पग दबावे, आरे चउमुखी गली दबवले बाइ। तबलक जेतना मरद अलबेल्हा अब बीर बान लो छोड़ि देला लेलकार, धोबिया धरती एड़ दबावल ऊपर कूदल बेयालीस हाथ,

फानि गइल भइया गली में चलि गइल ओही पंजर जब बाड़। लरजि के पाठा लटे अजइया आपन तेगा बीग ताटे झटकारि। तेगा सत सत हाथ लागल बढ़े। अब बीर चलल बाड़े के लेलकारि, जेतना बीर करघनियां घेना घइके बीर का गिरल चलल तरवारि।

गद्य : जब धोबी ले के चोट चलावे के बीर अब चलल, त जेतना सुहवलि के बीर लो बाड़, ते आपन तेगा लोबिग के, आ पाहुन पाहुन कइके लो गोड़ पर लो गिरल। हंसि के बोलता—कहता जे आहा हा, गिरल मर्द मरले पर लाछना लागेला। बाड़ अब उठि जा जा, बाड़ इ बताव जा तोहने ले मर्द बाटे, कहलन स जे बस एतने ले पुंजी, आंगा ठीक बा। कहलेस जे आच्छा हम छोड देबि, आ हमार कोहना के कोछु करबो ना करब जा। ओ बारी के त कुल जाना धुनल घानल हउव जा। उत मन परते होइ तोहन लोके जे जेवइनिया छाप रहल देहिया पर, उहे न हम हइं। बाड़ अब उहे रोस नइखे जे झींगुरी मारि दीहल एंड़ा से हम गड़ि गइलों। आरे जाइके पीयलीं ह अहिर के दूध के बाना, भुजा गइल बाटे मोटाइ, सत सत हथाके बाला अब सीना भइल तइयारि, एही बेरि झींगुरी के कवन चलाओ ··, आ मारब दान लेलकारि के····आ जेवनी बेर दादा, जेवनी पर एक एक मर्द बघेला, दूजे बाड़े दइब के लाल, जेवनी बेरि मारब बेटा वमरा के—जेकर गजे भीमलिया नाव, उनकर हडी हडी छितराइल, एहि अनला में देइब छितराइ। महमुली हमरा बल बढ़ल बा। कहस जे हां मीता ठीक तोहरा बल होइ दादा, बढ़ल।

अब पंचे सहकल बहकल बाड़ा बाउर,
आंगा अब झुलनी जियर के होइ काल,
अब सुन चमकल मन धोबिया के,
अब चलल वमरा के पवन रे दुआर,
जाके भइया सोहरी के माथावा ओनावे,
उहे आजे डांटत कचहरी में बाड़।
ससुर आजु हमरो लेबन पवलगी,
एहिय दादा सोना रे सुहवलिय पार,
उहे जब डांटि के बोले ला बीर बघेला,
अब बामरि मानि जइब बतिया हमरि।

वमरी को अजयी द्वारा डांटा जाना—

युद्ध करके हम सतिया को ले जायेंगे

गद्य : हम पूछतानी वामरि। आ ए ससुर कइ दिन हमार बराति टीकले भइल ठाकुर

के । आजु ना तूं नेवहुन लकड़ी नइख भेजावन, ना अइगा दाहल भेजवाइ, ना हमरी बरात के दुआर पुजा तू ले ताड । एहि सोना सुहवली पालि । कहत ह कहां तोहार बेटा बाड़न झीगुरी । कहाँ भीमला बाड़े पहलवान, कहाँ बाड़े दसई बीर भगवंता कहाँ सीराज बाडें । आजु आ जासु समर में रन में, लड़िके जीति के हकन सती के ले जाइब । अब त भइया बमरिया के तरवन जीभ सटे लागल । लागल गरजे कहत बा जे एनी बेरी सबके हम साफ कके, आ तोहरी लड़िकी के ले जाइबि । सुति के हाथ जोड़ि के कहत बा जे हं बबुआ । ठीक बल बा, काहेके हमरा बेटन के मरब, काहे के हमार गढ़ उजरब । आजु बाचा कहतानी जे हमार बेटा भीमला सातगो बरहा तोड़ देला उहे बरहा तोड़ द ऽ । हम बेटी के संगे लगादेइं ।

अब धोबिया के सहकल ना बहकल बाड़ा ए भइल ए बाउर,
उ सांचो झुलनीय हो जालो जियरवे के ना काल ।

गद्य : अब धोबिया जानता जे सांचो हम जीति लेंब । कहत वा जे चलआत चल । एने मंतीरी के कहि दीहल, जे ठीक कर । हमार तवन बाराहा बनावसु आ चमउधा । ए पंचे, सग में बमरिया लगा के अपना बखरी मे गइल बा ।
आरे भइया अब देले बाराहवा बाटे ना अलबेल्हा ।

आरे जेवन बरहा बनल पेटाड़िया के बा,
पेटढ़ी के बारहा देइ देला ।
आ दूगो पाठा रखले सगे मे लेलकार,
बबुआइ पहिलो बारहवा तोड़ि द ऽ अलवेला ।
बाकी आपन दूगो भुजा दे ब बन्हवाऽ ।

सतिया को प्राप्त करने के लिए बमरी की रस्सियों को अजयी द्वारा तोडा जाना —
अन्तिम बरहा तोड़ने में असमर्थ होने पर पिटाई

गद्य : ए पंचे बोलता बमरा, आ तुरन्ते आपन बांहि एगो क दीहलसि अजइया । कहता जे बान्ह एकर केवनो हरज नइखे । अब पंचे, जेवनी बेरि पेटाढ़ी के बरहा घींचि घींचि बीर लो चढ़ावे, आ बान्हि के लो ठीक करताड़ जे बमरिया बोल ताटे मूसरी जव कड़ा कइ देता, त हं हाड़ पर बान्ह । कहे जे बजर परो ए बामरि ओइड़े जइत दबाइ, एही ।
कइलस जे हं । अलत वाह, दाठा, ठीक बल बा । त सात गो वरहा न बेटा तोरे ला । कहलन जेआठ गो तोरवा लऽ । अब कते भाग तानी । तब बोलताटे बम-

रिया जे भइया मुंज के बरहा ले आव स। अं पंचे, जेवनी बेरि चलल गइल जब मूंजि के बरहा ले अइलं स। आ अजइया जब अपने मुसुक देला चढ़ाइ। जब बीर घींचि के जब मुसुक बान्हे लगलंस, अब बान्हि दिहलंस मिरुत मंडल संवसार। बान्हि के जब ठीक भइलं स त बोले रजा बमरिया, हां सुरुआ छोड़ि द अब बीर जे ऊपर के बाँहि झटकारे बारहा सीर की टुका होइ जाइ।

बढ़ल बल धोबिया के अब सम्हले जोगि ना बाइ। कहे बेटी चोदी ए बामरि तोहरी मुंह में दाबि देइ तरवारि, का पारा पारी बरहा बन्हववले बाड़, एके हाला सातो वंहवा द। जब वल लगावतानी बरहा, नस सोझहोई जाता भड़ भड़ कुल्हि लो छितरा जाता, त पारा-पारी देरी होइ। कहत बाड़े ना बबुआ इ ना करब। हमार बेटा परे पारी बरहा तोरे ला। कहता जे हमार त मन कइलस ह जे एके हाला खींचवा दीं। कुल्हि तोड़ देइब हम। त उ कहतारे जे नाइ हमार बेटा परे-पारी तोरले बाड़े एक हाला तोरले रहिते त हम तोरवा देतीं।

सुनींलं जे एने पटुआइ बाड़राहवा रहलि खुंटीयन में,
उहै बारहा हुकुमेइ ना ऽ दीहलनि ए ददे लागाऽ,
ए बबुआ तू अब हटी जइब ना ऽ सांचो ना हो आंगावासे,
ओनिया तनीं सुती रह ना ऽ आ गोड़ावा ए पासारि,
तनीं अब सुनी लेब बायानवा देख धोबिया के,
आपन भुजा अपनेइ न देले वा ए भइया चाढ़ाइ,

गद्य : लेके पटुआ के बाराह जव अच्छी तरे खिचि के चढ़ाव संआ चढ़ा के जब बीर बान्ह द स। त बोले बमरिया जे तोड़, बस एके हाला लेके नीचे कइके आऊ पर जब कइके बांहि नाचावे त उ बारहा खंडे-खंड़ा उड़ि जास, त फेरु डांटि के बोल ताटे अजइया। ससुर बामरि मान बाति हमार जल्दी हाली हाली बारहा बन्हवाव अब भइया जब उठलबांउ स पाठा त उठवलेस बाराहा सनके जब बाराहा ले अइलं स। आ लागल जब मुसुक बान्हाये धोबिया के, बान्हि के खूब रचि के जब ठीक भइल तफेर बोले बमरिना बाह पाठा। अं बिगरे मन धोबी के ऊपर भुजा बीग ताटे झटकारि। तनिको देरी ना लागे बाराहा गुद गुद लोग उड़ि जाइ। तब कहताटे अब का होइ बन्हवाव जल्दी।

अब ए पंचे इहे नरियर के बाराह रहल बोलल जे ले आव स चढावत बारहा ऊ। जब अब बीर उहे ले के बारहा जब चढ़वलंस, आ लेके धोबिया आपन भुजा बान्हावत बा खुब ढोल क दे, उ अच्छी तरे चउरि के आ चाढ़ाव सं बाराहा। आ ए भइया जब बोले बमरिया तब भइया ले के भुजा जह झटकारे त बाराहा

खंडेखंड़ा होइ जाइ। तब कहता जे का कहीं बामरि तोहार बेटी चोदो, हरघरी, कहता जे एके हाला ना कुल्हि अझुरा द। तोड़ि देईं सती के लियाजाइँ। कहलस जे ना ऽ बबुवा अब त का अऊँ जाइल बाड़। दूइये बारहा तोड़े के बा।

अं हां हां हां हं ऽ ऽ ऽ ऽ
तनी अब सुनि ल बयानवा बमरे के,
पीयदवा गइले चमरने की ओर बाइ ,
इहै अब बनत बा बारहा जो चमउधा,
एनिया बनल बा बारहा जो चमउधा।
चमरा भांजि के कर स तइयार,
एनिया लेइ के न बाटे भूलववले।
बाराहा चढ़ल केतकिये के न बाइ,
जब इहे केतकी बाराहवा जो बान्हाला।
बीर जब मुसकइ न दोहल जो चढ़ाइ,
जाहिया लेइके न बोलुवे जब बामर,
बारहा तोरि देले बा झटकारि।

गद्य : बारहा जब तोरत बाटे, आ गारी जब दे ताटे, कहलस जे भइया चमार जे बांड़ स से सेंगरन पर उ बाराहा ले के ऽ। हंस के बामरि बोलल जीय जीय हो पाठा, जीय लड़वइया सेर जवान, इहे बारहा जो तोड़ देब त सती के संगे देइब लागाइ। कहत बा जे कीछु हरज नाहीं, चढवाव। इनिका नियर बाराहा हम खंड़े खंड़ा उधि-याइ देबि। त कहत बा जे त अपन चढ़ाव मुसुक। चरि चरि गो चमार लरका दीहलसि जे चाम के हालि तोहने का जनब स। खुब बरहा चढ़ावस इनिकी बदनि पर। तनिक दाब धोबिया का न रहल। जब ए भइया चमार जब ले के चमउधा बारहा आ बीर का भुजा में लपेट स त का कर स, जे एक भांवरि जब हइंचि के आले जा गांठि दे द स। फेरु जब दूसरा भांवरि घुमाव स, आ भुजा एक दा ढोल क देले रहलं स, दूसरा भांवरि जब घुमाव स, त फेरु लेजा के गाँठ द स।

सुनिलं जे तीनि सइ ना आ साठिये गो भांवरि बा घुमल।
तीनि सइ साठी चमरा गीरहिय बान्हइस ए लेलएकार।
अब बीर के पड़के लागल ना ह जीतवा भइया अंगवे ना में।
उ दूनो आजु चोट बाड़न स साचोंइ न तड़तेड़ात।

चमड़े का बरहा अजयी से न टूटना—

स्त्रियों द्वारा मूसल की मार—

गद्य : अच्छी तरे चमउधा बारहा जब ए पंचे, जब कसि के चढ़वलं स, तेवनी घरी बीर के सीना चरचर करता। लेइ के जब बारहा चढ़वल स त पंचे बोलल बमरिया जे—बाहु पाठा तोड़ि द बारहा। उहे आंगा पाछा गोड़ लगाइ के, आ बीर जेंव बीगता बारहा झटकार ता तेवं दूनों पड़ पड़ पंखा ऽ

आरे आजु इहे चिल्हिकोय के गीरि जब परल अजइया,
आ लोरिक उहे घवले सगड़वे पर ना ऽ बा ऽ इ,
आजु एनिया बोलल बाटे ना राजावाइ रे बमरिया।
आ पतोही मनबूस ऽ बतिया रे हा ऽ मार।

गद्य : अब का देखलू स आरे केवनो मार स मूसर से,आ केवनो पीढ़न कपार फोर स, आ केवनो लोरहा ले के इनिकर घुर द स आँखि।

आरे तनीय सुन ए पंचे न खेलवाड़,
जइसे अब गोधन कुटलनि गलिया में,
ओइसे धोबी गोधनन बाटे रे कुटासु,
परि गइल मारिया सांचों न अलबेला।
आरे लेके लोरहवन से फोरें जव लगलीं रे कपार,
बाकी आजु पहुँचलि माइय जगदम्मा।
आरे जाके पटे गिरल ऊ बदनिया पर बाइ।
चले जब मुसरवा सांचो न देहिया,
आरे देबी अब चोटवाइं अंगवे य न बाइ।
ओने अब धावल बाटे बीरवा बघेला,
अब घुमें सोना रे सुहवलिय पालि।
चारु ओर सुहवलि में लागलि भुइया घुमें,
कते ना ए पातवा लागल बा ठेकान।
चललि जब गइले जो बाड़न ए चलावल,
अब बीर पहुँचल रजे गली में बाइ।
तिरिया जो मार स मूसर अलबेला,
साइ साइ करत बगलिये में बा।
सांय सांय बीर बाटे कहरत,
अब बीर एड़वा जो देला हो दबाइ।
दाबि देला एड़ धरती में,

उपरा जो कुदल बेयालीसे न हाथ ।
तबलक चिल्हिकल बेटी न बमरा के,
जेकर आजु सतिया भदइनी बा नाँव ।
कहलस जे भाग स न भउजी अलबेला,
आंगना में घटिहा अब गइल रे समाइ ।

गद्य : सती बोललि जे जल्दी छोड़ि के हे भउजी भाग जा कुदि गइल—घटिहा । अब अब ईजत बांचे जोग ना बाइ । जेतना रहली रानी अलबेल्हा, भड़ भड़ बखरी में लो गइल समाइ, जाके लो डाँडा दे दीहल । आ बीर जब पहुँचल अजइया कीहेंबाइ ।

हाँ ऽ हाँ ऽ हाँ
आरे जेवनी बेरि एनिया रोवे लागल ना,
आ पाठात्रा भइया बीर ऽ वा लोरिक ।
धोबिया के गतर गतर फुटल रहल महवे रे कापार,
आरे ओकरा बाजल रहल मूसरवा भइया पीठिया पर,
आ देहिया के तनिको गमियत नाहि रे बाइ ।

लोरिक अजयी का बरहा खोलने में असमर्थ—
सती की उलाहना देना

गद्य : लोरिक जब जुमल हवन त बेखबरि । अब बीर के सुधि नइखे, किछु कीछु बोलसु । रोइ रोइ जब बारहा खोलसु, त उ बारहा खुलले ना खुले ।
कहत बा जे ए भउजी तूं आच्छाइ त कामवा नइखू मुहवलि में कइले ।
अब माहुर बोया अंगनेइ में गइलि न ए बाटे बोवाइ ।
जइसे मीता खातिरि अहकति बाड़ीं ना देहिया हमारि सुहवलि में ।
तू भइयन खातीर अहकबू सोनावाइ सुहवली हो दहवा पालि ।

लोरिक का तेग से अजयी का बरहा काट देना

गद्य : लोरिक पंचे रोइ रोइ खोलसु । आ हरघरी कहसु जे भउजी जइसे हम रोव तानीं सुहवलि में ओहो गों तू हूँ अहकबू भाइन खातीर । उ बारहा जब कतनो खोले नाखुले कमर ले तेगा काढ़ि के आ लेके काटारी से भइया काटि देले बा बारहा के बान्ह । काटि देला बारहा के बीर अलबेला अब बीर के पंखा धइके बिटोरत बाइ । जेनिये बिटोरे ओनिये लरकि जाइ ।
जइसे एक बेर लछुमनि सकतिया आइल रहलि लंकावा में,
आरे जाहां बीर जुमल हलुमाने न जो न बाइ ।

ओइसे आजुइय धोबियाइ सकतिया पंचे रहलि ए लागल ।
आ लोरिक रोइ रोइ धोबिय के उठवते ले न बाइ ।

गद्य : अब बीर बिटोरि के उठावे, देहि झुकि जाइ एने ओने अच्छी तरे अंकवारी बान्ही के पाठा, अब बीर गरदनि ले ला लगाइ । जइसे हलुमान जी चलल हउवन लंका पर आ जाहांवे बेसुन बइठल रहले भगवान ।

हारे ओगों लोरिका जो ले ले बाटे माटी धोबिया के,
अब साचों सानावा के ले ले बा उठाइ ।
अब जइसे लछुमन के न महाबीर जी,
अब जाहां बेसुन बइठल बाड़ें ए भगवान ।
ओगों अब लोरिका जो बीर के उठावल,
आ ले के चलल संवरू कगरिया जो बाइ ।
अब भइया अच्छो तरे धोबी बा पीटाइल,
लेके बीर चलल सगड़वा पर बाइ ।
जहिया जो देखलनि पाठा अलबेला,
जेकर आजु माले ए संवरू परल नांव ।
धोबिया के मुंड़िया एने बालरकि गइल,
एने अब खेलत ढिलरुए न बाइ ।
अब भइया अगिया लागल बा धरमी के,
अब बीर कुदल बेयालीसे रे हाथ ।

संवरू का लोरिक को फटकारना

गद्य : अब दूलहा बनके बइठल रहले । आ धोबी के पंचे देखत बा घाव आ बीर फानि गइले । का फानि गइले । कहले आरे बजरपरो ए लोरिक तूहं बीर जइत ओहिड़े दबाइ, जाये के धोबी का मन ना कइल बरबस भेजल सोना सुहवली पालि, आजु बढ़ि बढ़ि पंहनि पुंवइल । गउरा मरल बढ़हुरे गाल, बेरि बेरि बरिजली नाहिं मनल कहलि हमार, आजु मोतीहमार धोबी के बाड़ ऽ पीटवले फाटि गइल छाती हमार ।

सुनील ऽ जे एनिया संवरू बंसवेइ ना ऽ बरइठ के अबुआ रे घेना,
आजु घींचि ले ला हिय प ऽ पालकिया में अपना रे बाइ ।
अब भइया उठि गइल ना आ सानाबा देखब सांवरू के ।
लहरि उनकरि फुटलू अ बदनिया में ददे रे बाइ ।

बमरी का किला ध्वस्त करने के लिए संवरू का बान उठाना
लोरिक द्वारा उनको रोका जाना

गद्यपद्य- : ए पंचे, जेवनी घरी संवरू बांस बरइठ के धेना, जब पलकी में घींचले हउवन ओ घरी सोझे मुरुछा आ गइल बा लोरिक का, आ लछना लाग गइल बा, नीचे मउर गाड़ि दीहलं धोबी के आ अब बांड़े से धरमी बांस बरइठ के धेना उठाके, अब काछा कसि लीहलन । बांये बरइठ के धेना बांड़े लेके उठवले भइया मीरुत मंड़ल सवंसार । पांच गो बान बीसम्हर बान बरम्हा देले रहलनि बरदान उ बीर लेके बान बाड़े उठवले सोना सुहवली पालि ।

लागल घाव भोइंबां ? आरे लागल रहल बान धोबिया का लोरिका का संवरू का, कुआं ना लउकत रहल इनार । ओ बेरी मन कइलन ले काढ़ी बान बिसम्भर बान फनी देइं ठहराइ, आ एने छोड़ी बान अलबेल्हा, लेके, सोना सुहवली पालि, एही बेर उड़िजाव कीला अब बमरा के ले के मीरुतमंडल संवसार । अच्छी तेर की डोर ले के धरमी अब भइया उठि गइल मोती सगड़ की घाट, चिल्हिकल बेटा रानी के, बीर के बंका लोरिक ह नांव । कहे संवरू ददा अलबेल्हा अब बीर मान बाति हमार । छोड़ि देब बान मीरुता में सुरहनि गांव उड़ि जरि जाई, मीरुत मंडल संवसार,

हमार जोयल होइ अकारथ जीनिगी परि जाइ कुकुर सीयार, भइया मोर अलबेला, अब बीर मान बाति हमार । बइठ रह सागड़ पर एही मोती सगड़ की घाटि, देख खेला अलबेला, आ एही मोती सगड़ की घाट । आजु जो भइया जीयते बान चलइब, हम परिजाइब नरक की घाटि । लोरिक जा के रोंदने कइले हवं, जब बीर कीरोध में ले के भइया आ बान पर जब गोसा चढ़वलसि । जाके लोरिक त्राहि त्राहि डेंकर ल ह । कहलं जे भइया बुड़ि गइल नांव हमार, आ हम नरक कुंड में परि गइलीं ।

आजु तूं दूलहा बनि के अइल ह हम तोहार करे अइलीं बरियाति । मीता पीटाइल त सेवा हाड़ कर जा हम ना जनलीं जे इ हालि करी ससुरा धोखा के । बाकी अब कहतानी हम, लड़िका कहताटे जे बान उतारि द । तबलक लड़िझलि माइ भवानी, जुमि गइल मोती सगड़ की घाट ।

आरे जाइके धरे बान धरमी के । आ फन्नी पर बान चढ़वले बाड़ ।
कहे जे हं, हाइ धरमी, आरे बुड़ि त गइल दूनिया में,
बुड़ि गइल, बुड़ि गइल, दादा सुहवलि में,
दूलहा होइके तू बर दादा सादी ना संकारत रहल,
आ घेना उठालिहल लड़े खातीर ।

अब भइया पानवा लगल पन चूना, आरे बाति घसल करेजवा में बा।
अब बीर रोइ के घेनुहिया धइ दीहलन।
आरे लेके सोना रे सुहवलिय पालि, लेइ लेइ गोदिया में रोवल।
आरे देबी रोवत धोबिया के न बाइ, भइया न मोरि रे भवानीय,
अब जीव तोहरे धरम कर पालि,
आजु आजु धोबिया भाइ मोर पीटइलं।
सुहवलि में फाटि गइल छाती रे हमार,
हंसै जब लागली माइ हो जगदम्मा,
हा हो धरमी मानि जइब बतिया हमार, बइठल रह सुहवल में,
अब दूलर देखिय लेब न खेलबाड़,
भारत तैयारी अब भइलि अलबेला।
एही बेरी कुआंवा अब छेंकब रे इनार।

गद्य-पद्य : माइ धरमी के समझा के, ए पंचे धरमीके अब चैन नापरे, खाली बीर के ले के गोदी में आ अउरी बीर सेवा लो करता, आउ रोवता। अब पंचे भवानी अडर लगवली जे हे लोरिक हम त बीर बरजले हउवीं।

प्रथमें तूं ना मानल हउब। बाइ हइ गुरिया गुर देलि ले ल। गुरिया गुरदेलि ले के काहां चलि जा, आत सुरहनि में चलि जा। जवनि इस्तीरी पानी भरति होखे ओकर घड़ा फोर द। आ जवनी बेरि देबी बान्हि देली लेलकार, आ गुरिया गुर देलि देले रहली धराइ।

अब बीर उल्टा कसले रहल लंगोटा, ऊपर माल बरन के गांठ, दाबे एंड़ धरती कुदि गइल बेयालीस हाथ, जाहां सोरह से रहली पन भरिन, भइया अंग पर अंग रहत छिलात। जुमि गइल अलबेल्हा बीर के बंका लोरिकहं नांव। केहू मांथ पर बाटे उठवले, केहू घरिला भरि के रहल तइयार। एही में जुमल बेटा राणीं के बीर के बंका लोरिक ह नांव।

मारे तीर अलबेल्हा, गुरदेलि मारत घरिला पर बाइ। सीरि के फूटे लागल जब घरिला, साड़ी भीजे रानिन के बाइ, फोरे लागल जब घइला अलबेल्हा ओहि ले के मोती सगड़ की घाट। जेतना रहल घइला सुहवलि के, बट्ठुरी फोर देले बाटे लेलकार। तिरियन के भींजे चोली मखमल के, छिटि भींजल दखिनही बाइ, रानी छोड़ि-छोड़ि घइला अब भगली स....।

आरे जाके होइ गइल ना आ हुलवा दादा सुहवलि में।
ओहि बदअमली कइलीय ना ओहि सोनभदर की बाटे रे घाटि।

बमरी द्वारा झिंगुरी को पत्र लिखना

गद्य-पद्य : का हाला गइल । जब ईजति केहू के नइखे रहि गइल ए बामरि । ऊ जेतना पन भरिन लो गइ रहल ह । ओलो के करम बाकी नइखे । अब अखीरी हो गइल । बामरि कहताजे एतना दीदा हो गइल, आरे अब दीदा र्जान पूँछो । सोरह सह पन भरिन के घइला न फोरि दीहलसि । आ का जाने ईजति लिहलस, आकी ईजत छोड़ले बा । एकर हालि केहू जन तो नइखे । लागलि आगि बमरा के भइया बदनि मय देहि गइल छितराइ । जेवन लिखल पाती रहल सगड़ा पर के उहे धइल बंगला में बाइ । उहे पाती बांटे उठवले बमरिया, उहे पाती उठवले बाटे बमरिया, आ सुनी लऽजा भइया उ धरा दिहलसि लेके दादा धावन के ।

कहलसि जे भइया छोड़ि द सुहवलि । दवरऽ झींगुरी की हें । अइसन अनट कइके बबुरीबन टीकल केहू, आ केहू गेरुआ पर गइल, आ केहू मेलन ठेलन की बागे गइल, आ भीमला ससुरार करे गइल, इ नइखे जानात जे उ कहिया ले लवटी आ, एने भारथ गरुहुआ गइल । हं जेवनी बेर उ ले ले बाटे भइया अलबेल्हा जेकर परल बाटे फुलेना ह नांव । सुनीले जा जे हरगे हरग धाले भूत पर गे, परग घाले ठाल, दादा दिन रात में धावल । ना कते पयंड़ा में करल मोकाम, पूरबे लोही लाग गइल, पंछी होखे लागल उजियार, कउआ टेरि उठावल, भोरे भोरे जो होखे लागल बिहान । आरे जूमि गइल बोर बाटे दादा उ बघेला, आ एने उ लंगोटा कस के मेहनत जमवले बाइ ।

जाइके हाथ जोड़ के खाड़ा हो गइल जे ठाकुर मोर बरिआरा जीव तोहरे धरम के पालि । अब देखलनि झींगुरी त बाड़ः आसीस क देले बा । पूछ तारन झींगुरी जे ए भइया कहु का समाचार सुहवलि के, केइसन कुसलि बा । आ केहरो काका बामरि बाड़न आ केइसे हमार बहिन सती बा । उ कहत जो जे इ कुल हम ना जानी लं, । जेतना तोहार कुशल बा एहि पुरजा पर लिखल बा । अपना हाथ के पुरुजा, जब भइया, झींगुरी का हाथे दीहल धराइ ।

झींगुरी बांचे, अगल बगल सीरनामा, बीचे दगल सलामी बा, ओरंगा पर लिखल नांव अहीर के, गजन गउर फुलहालि । लिखल बा जे बलिया भाटपुर बसे परगना, बिहियापुर डंडार, ऊँचे चउर बरम्हाइनि, नीचे गउरगढ़ पालि । छोटे त लागल गढ़ गउरा गली तीरपन लागे बजारि, उतर टोल बम्हनइया, दखिन झारि बसे कोइरान, पंछो घर जोलहन के, झारि के बसल बाड़े पैठान ।

पूरबे टोला घर अहीरन के, ले के गजन गउर गढ़ पालि। सोरह स घर जदुवंसी, झारि के बसल बाड़ी अहिरान। घर-घर खनल आखाड़ा दुआरा परल दोहरिया माल। हंस हसिन दुइ जोड़ी बीर के सांवर-लोरिक ह नांव। संवरु बर बनल, लोरिक करे आइल बरिआति। हे बामरि, राइ से सादी जो करब त सुहवलि राइ से होइ बियाह।

इ जनि जान जे एहवरे आइल बीर गउरा के करत चीरउरी बाइ। कालिह पूरबे लगी रल लोही, पच्छी होखे लागी उजियार, कउआ टेरि उठाइ, भोरे भोरे होखे लागी उजिवार, कउआ टेरि उठाइ, भोरे भोरे होखे लागी बिहान, जवनी बेरि फाटि जाइ पह सुहवलि में, एहि सोना सुहवली पालि, परी मारि सोवानें, आंगा हेलि चली तरवारि। दूसर जब पाना उघार तांड़। एने का बा, माहुर के गांछि, जब भइया आंगा लेके अब तसप तसप ? भीड़ाव ताड़ें। त रोधिर के कोहबर पोतल बा।

आरे छतिया के पीढ़वा दोहल बा गड़वाइ,
आरे भइया मुंड के काला सावा उलझल न भीमला के।
आरे देबी आजु भेजले फोटरवा के बाइ।
जब पतिया में लजकल बाटे पीड़ भीमला के।
आरे बीर पतर देखले बा नयन रे पसारि,
आंगावा नजरिया बढावल अलबेला।
जंधिया के हरीसी दिहलबा टंगवाइ।
अब बीर के उपरा जो मांथ उठि गइलं।
ओही मे उ सतीया अब बहिनि ठाड़ा बाइ।
बहिनि खाड़ाइ मोर रहलि अलबेला।
ओकरा ही पंजरा लोरिका बलवाइ।
उअ बीर धइले बाटे झोंटा मउरीय के।
ओहि य अब धींचल फोटरवा में बाइ।
बमे जब झींगुरी देखेला झोटा न सतिया के।
अब लोटि गइल धरतिया पर बा।
कहत बाटे जे इ अहीर हमारि लूटि लिहलसि ई ऽ
ई ऽ ऽ जतिया दादा सुरहनि में।
बुला बहिन के ऊ सगड़ेइ पर,
आरे दिहलसि ना ठिठिये राइ।

गद्य : कहतबा जे अब हमार इजती का बाकी बा, बाइ आच्छा चल एहि बेरि उनह

के काल पुजि गइल बा। अब पंचे कीरोध ले के अब चलल झींगुरिया आ एने बहिन के देखतें बाटे। जवनी बेर उलटा काछा रहल चढवले, उपर माल बरन के गाँठ, साति हाथ के डेंग रहल, झींगुरी के, उ डेंग जब गरदनि ले ले हउवे लगाइ। हीलि के पाग उठावे जइसे ईनर आखाड़ा जाइ, धरे डहरि गेरुआ पर चलस सुहवलि केरि बाजारि। लम्मल रहलो गाइ सीराज के ओहि बबुरी बन पहाड़।

सीराजावा कान्ह पर लाठी बा धइले ले के गाइ बबुरी चरावत बाइ। घुमि गइल मुछुक अलबेल्हा के, ओहि तिकवत दादा कीला में बाइ। देखल बाटे जे दादा छतीस हाथ के ठेंगा भाई झींगुरिया कान्हे ले ला लगाइ। दादा केकर काल गरेसल केकर मउअत गइल नियराइ, केकरा पर डेंग उठि गइल, एहि मीरुत मंडल संवसार। एतना बीर जो देखे बवेला जेकर बली सीराजावा नांव। चलल आइल चलावल, आंगा जुमल बाटे लेलकार कहे जे भइया मोर बीर अलबेल्हा मान बाति हमार। सीराज पुछतांड़ जे ए भइया केकर काल गरेसलस, केकर मउअत घुमि गइल, आ केकरा पर तहारमाला उठि गइल केकरा पर डेंग उठि गइल। बोलताटे झीगुरिया जे देखू त भइया अइसन केहु के दीदा ना भइल सुहवलि में कइले होड, हइ तनी देखु ना खेला पाती में।

एगो फोटर भीमला क मुंड के धइल बा, जांघ के हरी ठीके बा आ ओही में हमरी बहिनियों के फोटो घीचि दीहल बा। आ ओही में जो बीर के फोटा बाटे आ उ झोंटा ध ले ले बा, गउरा के। हं, हं, हं, कहताका सीराजावा जे ए भइया झींगुरी अब का कहीं हम डरन ना कहत रहली हं भइया, हमार एक बेर गाइ भूलाइल रहली स, त एही बोहा में जाइके मीलली स। आ सचकी कहत एही डर के मारे ना कहत रहली हं। दूगो नाइ ओही बारी के हम देले हवीं बरइछा में।

ओही बेरी दूइ गाइ हम गइया छोड़ि दीहलीं। आ काहें जे अइसन सुन्दर बर किछु खोजे ना भेंटाइ। आ ओइसन धन झींगुरी तोहरा तनिको पसंगों में नइखे, काहें जे ओकर देखलीं चउदह कोस दह चाकर।

आरे जइ में सोरहन कोसवा लामान,
आरी पास खारह्वा जमल बा भइया मुदुमुर।
बीचवा में पंवड़ी जामलि वे झीनहारि,
जेइमें अब घुमति बाड़ी गइया सुधरा के।
दुगीया के सीरजल रे पलइया ले बाइ,
आजु जब झरत रहल रोब गइयन के,

उअ जलसा देखेव जोगइ दादा बाई,
ओइजा जो झुमिअ गइली मो बोहवा में।
जेवनि आजू बहक रहली गइया रे हमार,
आजु मीता सान फेड़ पीपर पर बाटे लागल।
सातू फेड़ पकड़ी लगवले ओइजा बाइ,
सातइ फेड़वा लागल ह बर ऽ वा के,
झुमि के अब बनल हरसकरीं रे बाइ,
आजु ओइजा बनलि बा आरारी सुघरा के।
जेकर लयरु बान्हल अड़रिया में बाइ,
पंजरे मंदिलवा रहल रे संकर के।
पाँजरे पर गइयन के रहल रे आड़ार,
बीचवा जो खनल आखाड़ा पाठ ऽ वा।
जेकर दादा बानिये सवरुअ हवे नांव।

सती का विवाह श्रेयस्कर भाई सिराज के यह कहने पर झिंगुरी क्रुद्ध

गद्य : ए पंचे, सीराज जब अपने माइ से कहतांड़ जे एतना दिन झूठना कहलींह भइया। आजु तोहरा से साफ कहतानी हमनी के कुल्ह जना मिल के काका से कीछु मीनती करीं जा। काहे जे देख आजु सादी बहिन के क दें तानि जा कि ना दूनो सान हमनी के बन रहता। का जाने के दाबि के बड़िआरा जो चढ़ी, त जो लिखिके पाती भेज देब जा गउरा में। आरे बुरबक ते नाहीं, अदीमी के केवन चलाओ दू घरी करव जा इनसे मारि।

बाकी भइया बेरियाइ की ऽ ऽ बेरिया बेनावाइ नाइ दादा इ खाइ।
इ अहीर कइसन जोग सरउंज बोह में अइलनए लिआइ।
जरे बदनि झींगुरी के, लहरि उठि गइल धरती में बाइ।
लाल लाल भइल बरवनी, नयना रोघिर भइल समान।
कहे खबरदाए ए सीराज बोल जनि नात मुह में दाबि देइब भाला लेलकारि।
आरे दूइ आजु अहीर सरहल गउरा के,
जेवना में जरि गइल बदनिया हमार।
एही बेरी सहकल बहकल बाटे बाउर,
झुलनिया कऽ देइब जीयराऽ कर काल।
एही बेरी मारव बेटा न खोइलनि के,
उनकर बारल दीयावा मो देइब रे बुताइ।

आजु भइया एहिय क कइल रसरयना,
सीराजावा के देले बाटे म झटकारि ।

गद्य : सीराजावा कहताजे आच्छा आज मानत नइखऽ, बाड़ एइजा पुवा व ताड़, आ चलि जइब सागड़ पर त तहार गंड़िये फाटि जाइ हम जानतानी । जरूर कइके हेइजा पुँवात जा ताड़, ओइजा कुल्हितहार गलसटका बटुरी तोहार खतम हो जाइ । आ झरि जाइ फूला तोहार । ए पंचे जब एतना बेयान कइके आ सीराजवा गोरू में चलि गइल, अब झींगुरी त कीरोध की आगि में बाड़ । उनके कुआँ नाहीं लउकत रहल ईनार । मुनी ले जे धरती एंड़ दाबा वे, ऊपर कुदल बेयालीस हाथ ।

आरे एके घरी के बेलम ना बीतल, चलि गइल सोना सुहवली पालि । जेवनी बेर जुमल बेटा बमरा के जेकर गजे झींगुरिया नांव । छत्तीस बरन के बेटी भइया चिल्हिके लगली सोना सुहवली पालि । का चिल्हि कं स, हाइ सखी, जब नजरि से लउकेल्सं त हमनी के आगि बरिसे । इ कहिया बामरि के बेटा जुझि हं स जे सुहवल्हि में हमनी के होइ बियाह । कहताड़ी से देखु सखी अउंजइला से ना बनी अब इन्हनी के नियरा गइल बा । ओने गड़ि गइल बा सान मरद के ओही मोतीसगढ़ की घाटि । आ पाहुन अगुआइ कइके लिआ आइल बाँड़, न अजई पाहुँन ।

ए बेरी निहचे सती के सादी होइ हमनी के होइ बियाह, इ बतियाव सं गली में तिरिया । लागलि कचहरी अब अलबेल्हा, लेके कीला कुसुमापुर बजारि जेवनी बेर ऊँचे गादी लाग रहल बामर के घर भर रूहल बाटे दरबार झींगुरी सोहर के मांथा ओनाय ओहीं सोना सुहवली पालि जेवनी बेर सोहारि के माथ ओनावे, भइया सोना सुहवली पालि । मुनल बेयान सुरुआं के । आ गारी देत बमरिया बा । अहां हाँ ऽ हाइ बेटा आरे बेटा ना भइलऽ गदहा भइलऽ सान । तोहन लो के कुल्हि लाड़ें में मिलि गइल ।

आइ के ए गुड़ो गउरा के हमार एगो करम नइखे रखले, कुल्हि हालत क दीहलसि । आ तोहन लो बले चांडत रहल हा जा । नीचे मउरि गाड़ि के रोइ के हटि गइल, झींगुरिया । हटि के जाइके पंचे अब उल्टा काछा लागल चढ़ावे ।

झिंगुरी की वेशभूषा भी लोरिक की ही भाँति थी

हाँ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ
झींगुरी उल्टा जो काछावा ए चढ़ावे,
बन्हुए मलवा बारनवा के गाँठ ।

जहिये अलीए न गांजावा कर जो जूता,
पाठाइ गोड़ावा में लिहुए न लगाइ ।
जहिया छतिया बान्हत बा लोहवा ताइ,
जेइ पर बरछी दोबर ना होइन जाइ ।
उपरा घींचलसि ना पागावा जो गुलाबी,
जेइ पर जीरावा लवंगि न फहराइ ।
आ जेवनी बेरि छतीस गज के भाला,
ए पंचे गरदनि बीर ले ले हउवे लटकाइ ।
सुनिल बेयान ओही मुरुवाँ के,
ओही मोती सगड़ की घाट ।
हां आं अहां आं आं ऽ ऽ ऽ ।
पंचे आजु जहिये दिनन करि त्राते,
तनी अब सुनी ए समय कर हाल,
तनी अब सुनिली पंवारा अलबेल्हा,
जेवन लड़वइया न सेरवा रे जवान ।
आज पंचे, उठे बेटा बमरा के जेकर गजे झींगुरिया नांव ।
हीलि के पग दबावे जइसें इनर अखाड़ा जाइ ।
चलल गइल बामर जुमल कचहरी बा,
ऊँचे पीढ़ा घइल लोहन के, तनी सुन लेब खेलवाड़ ।
तहिया बीर जब चलल गइल चलावल,
ए लावल बीरा ले ला उठाइ ।
जब पाठा लेके दांत में बीरा दबावल,
आ ले के चलल सोना सुहवली पालि ।
हारे जहिया भइया छोड़ि देला घर सुहवलि के,
अब कीला सुरहनि बइठल बा हेठिआई ।
देइया जब हरगे हरग भूई तोरे,
आंगावा जो परगे दबवले बा फालि ।
तब इहे बोलल बाटे पाठा बीर लोरिक,
हा हो मीता मानि जइबे बतिया हमार ।
तनिय मीता उठि के ताक न सुहवलि में,
केइ बीर लड़े के आवत बा ललकार ।

झिंगुरी का आगमन देखकर अजयी भयभीत

गद्य-पद्य अब जब झींगुरी आवताड़े,
आ जब ए पंचे धोबी उठि के ताकताटे ।
चिन्हि गइल कहुता जे हाइ मीता,
चढ़ि गइल गुड़गुड़ी सीने पर ।
हारे धमके लागल बात कपार,
हारे देहि में दल की समा गइल दादा ।
हमरी देह पर ओढ़ना देब ओढ़ाइ ।
चलल बा बेटा बमरा के जेकर गजे झींगुरिया नांव,
अब भइया रोइ के अजइ कहलं,
जे जल्दी मीतवा आ जर हमरा आ गइल, ओढ़ना ओढ़ाव ।
अब पंचे उठे बीर बघेला बीरके बंका लोरिक ह नांव,
जेतना ओढ़ना मरदन के आ बीर का दाबत बदन पर बाइ ।
अउरी देह हीलावे दल की देले हुउए समवाइ ।
अब जेवनी बेरि ए पंचे जेतना बरघन करी कन्हेली,
अब बीर ओही बीर पर देले गंजवाइ ।
तब धोबिया के देहि पटाइल ।
आँ हाँ, हाँ,
पंचे जहिये दिननवा कर जो आते, आंगवा सुनि समर के खेलवाड़ ।
जहिया उठल बा सानवा झींगुरी के,
धोबिया सुतल जाठिय न नियर बा ।
जहिया आधवा सुरहनि चलि आ गइल,
आ रोबवा देखत बा तमुए ए ललकार ।

गद्य : ए पंचे, बीर जब आधा मे गइल, आ मउर जब उठि गइल, देखे रोब तमू के, तनी खेला सुन ले ब बरियार । जेतने सांचो सुन्दर तमू अहीर के रहल, आ दूसरे भवानी के माया जे ले के मय इनरासन के, माया आ देबी बइठि गइल तमू में बाइ ।
आजु जब देखे लागल तमुइआ जब रे पाला झींगुरिया ।
छाती आजू मरले सुरहनि में न बाइ ।

गद्य : का सोचे । हाइ भगवान, जेतना हमरा धन सुहवलि में ओड़ो होइ । ओतना ए बींर के तमू में लागल बा, जेकर अइसन सुन्दर तमू उ कइसन जो बीर बइठल बा मोती सगड़ की घाटि । झींगुरी के मइ में सोच हो गइल ।

अब बीर होलि हीलि पग दबावे, जइसे इनर अखाड़ा जाइ। चलल गइल चलावल पाठा भींटा चढ़ि गइल ललकार। जइसे बइठल मोफिल अलबेला, ओहिंगो बीर लो बइठल रहल भुजा फुला फुलाइ। अब जब झींगुरिया जुमल ह, आ लागल जब बीरन के तजबीज करे। चारु ओर तीकइ आइल, बुढ़ ओमे नइख स लउकत। आ ना एगुड़ो मरद गोंछियो वाला बा। का ओके लउके, जे खाली मर्द निरगोंछिया बा। आ पाठा झारि के आइल बाड़े बरियाति। अइसन परहनि, अइसन गरहनि हम ना देखली एहि मीरुत मंड़ल संयसार। काहें जे कुल्हि एक रंग के, कुल्हि एक सांचा के, एक सांचा के, आ एगही का बुन्न से ए कुल्ही बीरन के अवतार, आ एके नखतरि में, हाइ भगवान। इ बीर जनम ले ले होइइन ना। आहा हा धनि पानी ए गउरा के कहे के, ओइजा तो हटि के पंचे, आ जब दुसरा तमू से जा तारन ऽ ओहू में उहे हालि।

अब ओके का मालूम देता, जे ओहू में के बीरवा एहू तमूइया में आ गइलं स। अब जब पंचे ओ तमूं के छोड़ि के आ बीर जब गइल दूसरा तमू में बाई।

संवरू को देखकर झिगुरी विस्मित—
सतिया का विवाह कर देने के लिए मन में लालसा—

आरे ऊंचवे उ गादिया लागलि बा संवरू के,
उंचवे उ लगलू गादिय संवरू के,
अब ककन बान्हल हाथ में बाइ।
अब भइया माथावा पर रंगलि बा गुलावी,
गारवा में जब रे मुखुति कर हार।
आरे पंचे सेसवा न नाग के दुआली।
नीचे बीर का झूललि गरदनी में बाइ।
अब जब देखत बाटे रोब अब झींगुरी,
अब ठाड़े सांचो ए गइल बा कठुआइ।
कहे लो जे बाबा मोरे दईब नारायन,
काइ विधि उगीली देल न करेतारि।
आजु मोर भइया न बरिजलि सीराजवा,
तेवन परि गइल कपार हो रे बाइ।

गद्य : बीर का सोच हो गइल आ कहताड़न, अब कपारे परि गइल। आ एही में ए भाई अब काका कहल करित आपन, आ मीनती जो हमार मानीत, अब त हमार मन करता लवटि चलीं, चलि के काका के समुझाइ के आ इ सादी करे

जोग बाइ। जइसन हमार बहिन सती आ ओही रोब के इ बीर आ गइल दूलहो। बाइ काका जो कहल के देइत आपन, मीनतो मानित हमार, त चलि के आ बारह सइ मोहर एका बारी बोसा मोहर कालदार, बीसा से लेके असरफी कंचन थार देइं भरवाइ। नाउ-बारी संगे लगाइं, पांचमो बीपर लेइं लागाइं, आरे संग में भाइ संगे लगा के, काका के बामर के ले ले चढ़ि आइं मोती सगड़ की घाट। काका के बामर के ले के चढ़ि आइं मोती सगड़ की घाट। दही गुर के तिलक संवरू का दे देइं मांह लिलार।

आरे चलि के बहिन का अब लागे लागो हा,
हरदिया दादा सुह ऽ वलि में।
आ इ संवरू का हरदी मोतिये सागड़वे की न घाटि।

गद्य-पद्य : अब कहदीं जा सादी सतिया के, मीठाइ चलो गउरा केर बजारि।
एक बेर दइब गुनल जो रखिहन बिधना पुजइहन आस।
का जाने परि जाइ मारि सीबाने, पांजा हेलि चलो तरवारि।
लिखि के पाती भेज देइब गजन गउर गढ़ पालि।
जेवनी बेरि सार पाहन जो होइ, बाटुर त दू घरी करब दइब से मारि।
ए पंचे, बीर सोंडि के आ अब कहता जे आंगा बढ़े जोग नइखे।
अब चलि के कके के समुझावे जोग बा।
ओही जाले पंचे झींगुरिया हटि के,
आ चलि गइल उत्तर भींटा पर जाहां बजनिया बांड़ स।
तनी ओइजा डांटि के बोल ताटे।
डांटि के ओइजा झींगुरी बोलल हउवन।
कहलस जे सुन सुन बजनिया सरउ मान जा बाति हमार।
आजु पूछतानी तहन लो से आजु भइया सोना सुहवलि पालि।
इ कह, ऽ केकरा जांघी केरि बरि आई सुरहनि में ताल देले बाड़ जा बजाइ।
केकरी लोहन करी बरिआइ के एहि जा आइल बाड़ जा मोती सगड़ की बाट।
हं भइया, उनकर दूनो छरकस भइया बीर लड़वइया,
जेकर बजनिया टीक रहल स मोती सगड़ की घाट।
कहस बेटो चोदीं बमरा के, ससुर के मुंह में डाल देबि तरवारि।
सात दिन बराति भइल टीकले एहि मोती सगड़ की घाटि।
केवना घमंड मेंससुर बाड़न जे नेवहन नइखन लड़की भेजावत,
ना अइगा देले बांड़ भेजवाइ, न करतारं सादी संवरू के,
एहि मोती सगड़ की घाटि।

काल्हि लाइबि लाढ़ि कलंउजा हीका बहि चली तरवारि ।
ठाकुर बइठ रही अलबेला, एही कीला मोती सगड़ की घाट ।
गाहबि तेगा अलबेला एहि मोती सगड़ की घाट ।
भीमला-मुंड कलसा धराइब जा हमनी का,
रोधिर कोहबर देइब जा पोताइ,
छाती पीढ़ा गड़ा के, जांघ के हरी देइब टंगवाइ,
धरब झोंटा सती के सोहवलि निहचे होइ बियाह ।
एतना ललकारा बजनिया बन्हलंस, झिंगुरी का तरवे जीभ सटि जाइ ।
बजनिया जब एतना ललकार बन्हलं स,
त ए भइया उनकर जीभ सटे लागल ।
कहलन जे हइ देख भाइ, इत लोहा के गाजर-मूरई बनवले बांड़ स ।
जे जेकर नरम जाति ह बजनियन के,
जब उनका बोलहू लायक नइखे ।
बोल त इ तनिको मान ना सकि हं स ।
एतना बयान कइके अब झींगुरी हेठि आ गइलं ।
हेठिआइ के अब पंचे घुमि के आ जब चलल बा सुहवल में,
त चलल आइल चलावल
अं हं हं ऽ हं ।"
झींगुरी होलि न पगुआ लागल डाले,
जइसे हमरे आखाड़ावा के न जाइ ।
पहुँचे धइल डहरिया अलवाबेला जुमलन सोनावा सुहवली दइया पालि,
ओनिया बमरा के लागलु बा कचहरी,
झींगुरी सोंहरि के दगलस रे सलाम ।
उठि गइल हाथ भइया बामरि के, देबे जे लगलं इसरबाद ।
हां हां हां ऽ ।
आजु पंचे सोहरि के मांथ ओनावल, बामरि बेरव अशीशत बाइ,
कहे ले जीय जीय हो बेटा जीय लाख बरिस अब खांड़,
गंगा जमुनजल बरतो आयु तोहार ।
आखी अमरहोइ जीय, जुग जुग चलो नांव तोहार ।
बेटा कह कुसल मुहवलि के, ए ओहि मोती सगड़ की घाट ।

गद्य-पद्य : इकह लोहा के दाव लाग गइल अहीर के,
भाग गइल गउरा केरि बजार ।

आ की ओकरा लोहा के तोहरा दाब लाग गइल ।
जे बेटा तू घूमि के अइलऽ सोना सुहवली पालि ।
आजु पंचे, सुनल ऽ बयान दादा बामरि के,
झींगुरी गइल बाटे ओही कचहरी में जुमल बा,
त झींगुरी कहताड़े जे नाहीं काका,
हमरा लोहा के तनिकोदाब नइखे ओबीर का लागल,
ना गइल बा सोना सुहवली पालि ।
अब ही ओकरा लोहा के हमरा तनिको दाब नइखे लागल,
बाइ ए काका कहां के रोब बरानी, उ देखला से फाटि गइल छाती हमार ।
आजु हमका कहीं ओ बीर के रोब के,
जेतना साचो तोहार धन उमड़ल बा सुहवलि में,
ओतना उ बीर तमू में लगा घलले बा । अधिका बयान का कहीं,
तमू में लगा घलले बा । आ जब आंगा बढ़ि के जब गइली हं,
अब मरदनके राव जब देखतानी,
हाइ, हाइ, हाइ रे पानी गउरा के, धनि पानी कहे के गउरा के,
जहां सीरजे मरद के खानि,
जनाता जे राम-लछन के जोड़ी, की पंडन में अधियार ।
अदीमी हो के कइसन आइल, केहू देवता बइठल सागड़ पर बाइ ।
ओतना बात काका रोब झर रहल बा ।
आंगा जो बढ़ि के गइली हं त ऊंचे गादी लागल बाटे दुलहा के,
नीचे एगो सुन्दर बइठल बाटे पहलवान ।
दगदग जरे पलीता, महुआ उलटल मांह लिलार ।
काका मोरि अलबेल्हा, आंगा दूलहा सुन ऽ बयान ।
काहांले दूलहा बरानी । ओ छबि के केहू नाइ,
दूनिया ले ले बाटे अवतार,
जइसन बहिनि हमार सती उगलि बाटे,

पद्य : सुहवलि में, आजु ओइसन पाहुन उग गइल मोती सगड़ की घाटि । कहत बा जे काका कहल करब तू एइजा आपन, आरे थोरे लागलि बा अरजिया हमारि, लागलि बा अरजिया सुहवलि में । आरे काकां हमरो तूसुनलेब बेयान, दसो जब जोरि के नाहारना, जब बीर कका के जो मोनती ए करत बा बड़िआर ।

झिंगुरी द्वारा सतिया के विवाह के प्रस्ताव पर बमरी का क्रुद्ध होकर उसे कायर और गदहा कहना

गद्य-पद्य : का क रता । कहतबा जे हे काका, अब अपनी दोल के का कहीं,
हम एहीं से ना सागड़ पर की कोछु झगड़ों नइखे भइल,
आ ना कवनों करचो उठल बा,
आजु हमरा मन में लालसा लागल की चलि के काका से समझाइ के,
आ ए काका कहल कर तू आपन बाकी थोरे मोनती मान हमार ।
आरे पाँच गो ब्राम्हन ले ल, आ पाँच गो धावन लेब लगाइ,
आ लेल भाइ वंधु के एही सोना सुहवली पालि ।
मोती ले के थार भराव ऽ मोतीन धार भराव ।
आ ले के चल सोना सुहवली पालि ।
बावन सब हरे एकहरी, बीसा मोहर कलदार,
बीसा के देइं असरफी, कंचनथार देइ भरवाइं,
ले के तिलक चढ़ाइं, बीर के मोती सगड़ की घाट,
दही-गुर के तिलक उनका दे दी मांह लिलार,
सती का लागो हरदी सुहवलि में, संवरू का मोती सगड़ की घाट ।
काका राइ से सादी क दीं जा,
राइ से सुहवलि देइं बियाह एतना सुने बमरिया ।
अब बीर कुदल बेयालीस हाथ ।
लाल हो गइल बखनी, उलट गइल रतनार ।
कहे जे बजर परो झींगुरिया, ओइंड़ जइत दबाइ ।
बेटा जनम ना लिहल ऽ, गदहा ले ले बाड़ अवतार ।
छतीस बरन के बेटी छेंकि दीहली बारि-कुंवार । देखल बीर गउरा के,
फाटि गइल गांड़ि तोहार, आंखो का अन्ह हो जइब,
तहरे गोरी क दइब के धार, जब जब नजर पर परल, फाटलि छाती हमार ।
बेटा जनम ना लिहल, गदहा ले ले बाड़ी अवतार,
बीगरल रजा बमरिया, ओहि सोना सुहवली पालि ।
आजु झींगुरो नीचे एंड़ गाड़ि देलं,
आ मउरी हटि गइल बंगला में बाइ ।
ए पंचे, बमरिया जब अपनी बेटा के गारी देबे लागल ।
लागल जब धीर कारे त झींगुरी मुड़ी गाड़ि के अब दोसरी देवढी चलि गइलं ।
आ हाँ हाँ हाँ ।

आजु भइया रोवे लागल झींगुरिया, ओही मोती सगड़ की घाटि ।
आजु ओही सोना सुहवली पालि ।
अब बीर रोदन कइके बोलल, आ जाइके बोलत कचहरी में बाइ ।
का बोलल हउवन ।
कहत बा जे ए पंचे झींगुरी से करे परन अ भेंटिया होखे सुहवलि में,
से आजु हमसे मीलिलेउ सोनवेइ हो दाहवा पालि ।
अब हम लड़े चललीं ना दादा मोरे सुरहनि में ।
अब सुरहनि भेंटिया होहु अ जोगिय त नाहीं न बाइ ।

गद्य : जरि गइल राजा बमरिया, अपना एड़ी दरे अंगार, कहे केतनो बिलिख, हमरी हीया में नइख आवत । जब जुझि जइबऽ जाके सुरहनि में तब हम जानब जीय ता बेटा हमार । एकर हरखो (बिसमाद) हमरा तनिको नइखे ।
तब एने घुमल बा बेटा न बमरा के,
आरे जेकर भइया बलिय झींगुरिया बा नांव ।
अब धइले बा डहरि सुरहनि के,
आरे सांचो पाठा ए गइल बा हेठिआइ,
अगिया लगलि बाटे जब अब देहिया में,
आरे नाहिय कुआंवा न लउके रे इनार ।
चलल जब आइल बा चलावल ।

गाना चलाने का उल्लेख

आरे तनी बाबा एइजा गाना ऽ ना देव हो बढ़ाइ ।
हाँ हाँ ऽ ऽ ।
आरे कहलीं जे जहिये दिनन कर बाते,
तनी अब सुन ए समर कर हाल ।
जब भइया जुमल बा बेटा न बमरा के,
जेकर आजु गजवे झींगुरिया ह नांव ।

गद्य : चलल गइल चलावल, अब बीर गरजे लागल मोती सगड़ की घाट । कहे जे हे भइया जो कोइ होखे बीर लड़कइया लेके सुरहनि चल हेठवाइ । तहिया आरे भइया उठल बेटा नोनवा के । जेकर बीरे बंठा ह नांव । उलटा काटा लागल चढ़ावे, ऊपर माल बरन के गांठ, बान्हे पेटी अजगर के जेइमें गोला जुमुसना खाइ । अब बीर छाती दाबे लोहताइ बरछी दू दोबर हो जाइ । पींचे पान

गुलाबी जाइफर जीरा अलंग फहराइ । अलीगंज के जूता अब बीर मोजा ले ला चढ़ाइ । हाथ के भइया ले के घेना कुदि गइल सुरहन में बाइ ।
पंचे, पहिला चोट में उठि गइल बांठा । उठिके आ कुदि के चल गइल सुरहन में, जहां झींगुरी खाड़ा रहल पहलवान, हंसे लागल झींगुरिया तड़ तड़ देबे लागल जवाब । कहत बा जे का भइया टिलिनियर अउंजइब जा का । टीली नियर अउंजइल जा । जरे बदन बंठवा के, एंड़िया जरे लागल अंगार । कहत बा जे सुनले झीगुरी मनब बात हमारि । आजु हम तहार देखे सान अइलीं आ अहीर के करे आइल बानी बरियाति । एही बेर तहार सान, बिगारि के छोड़ब । उ बीर हमके जा ऽ न ।

अब एने हंसेला बेटा रे बमरा के,
जेवना के गाजवा झींगुरिया ह नांव ।
कहत बाटे सुनि लेब बीर गउरा के,
अब एइजा मानि जइब बतिया हमार ।
कह भइया गंगनी मो खेलिया खेलाइ,
कीय आजु लोहावा मो देह रे लगाइ ।
हमार आजु दूइ गो लोहा सुहवलि में,
एकर अब भेदवा देबए बतलाइ ।

बांठा और झिंगुरी में गंगनी की बदी

गद्य : कहताटे जे गंगनी खेलब, आकी लोहा लेब । बंठवा सोचता जे लोहा त रोज गउरा खेलले बानी । आ तोहसे खेलब गंगनिये जरूर । जब गंगनी के नांव ल स तगज में छाती झींगुरी के ना आड़ाइ । ओकर हालि जान रहल गंगनी के । आ लोहा के न जान रहल खेलवाड़ । स हंसल बा बीर बघेला जेकर बली झींगुरिया नांव । कहे भइया घ द सोला मांथ के, आ तेगा घइ देब हथियार । मचे गंगनी सुरहनि में एहि मोती सगड़ की घाट ।

हाँ ऽ हाँ,
आरे बंसवा सेलहा धरत बा धरती में,
जामवा बीगिय देले बा लेलकार ।
जहिया बीगुए माटेइन सुरहनि में,
ओहि आजु मोतीये सगड़वा की न घाट,
अपनाइ तेगावा धरत बा सुरहनि में,
बीर जब कसले लगोंटवा जेवन बाइ ।

जहिया धरती में गरदा बा उठवले,
बीरवा गरदनि में देले बा लागाइ,
जब इहे दूनोइ ना बीरवा ए पयेंतरा।
बीर जब झोंकल मोरुतावे में न बाइ।
तबलक बाजल चोटिया बंठवा के,
चोटिया सच हूँ जो दिहलसि ना बजाई।
अब बीर लेइ के गंगनिया बा पढ़ावत,
जोहिये मोतीये सगड़वा की न घाट,
तबलक गरजल बेटाइ न बमरा का,
उपरा पांच रे परोस कुदि ना जाइ।
जहिया मरुए न एंड़वा बांठवा के,
भर देने माटी जो लिहलसि रे उठाइ।

गद्य : ए पंचे, दूइयो डेग ना गइल बांठा। जब एड़ मारि दीहलन आ बांठा भरि मुँह माटी उठा लिहलन। अब बीर मन कहल जेकाटि दीं इनकी बदनि के, त ओहजा रोवे लागल न बांठवा। कहताटे जे सुन सुन ए झींगुरी मान बाति हमार। आरे दादा तहार पवनी जाति हम इइं हों, आ जादिन में हइं चमार, आजु जो हमार जीयत तन छोड़ि देब आ अब हम मरदनि ले के चलि जाइब गजन गउरगढ़ पालि। ठाढ़े कठुआ गइल झींगुरिया, हाइ भगवान बिगड़ि गइल सगुन हमार। अब झींगुरी का सोच होता जे हमार सगुन यिगऽड़ि गइल। नी नीच जाति चमारे से भेंट तइल। आ उ कहा ता जे अच्छा भाग।

अब जब निहुरि के भागल बाटे बीर बांठा ? जल्दी रसी काटु मीतवा। बीगड़ल मन लोरिक के ओहि मोती सगड़ की घाटि। कहे जे काटि देइब मुड़ी अलबेलहा ले के, भागे के गांव जो लेब एहि मोती सगड़ की घाटि। फेरू गरजे पाठा झींगुरिया ओहि बोती सगड़ की घाट, जो कोइ बीर होखे लड़वइया लड़ने में बांझ जुलाल। लड़ि लेउ सुरहने में एहि मोती सगड़ की घाटि। उठल बेटा मकरा के जेकर बली देवसिया नाव उल्टा कसे लंगोटा ऊपर माल बरन के गांठ, घींचले रहल पेटी अजगर के जेइमें, जुमुस न खाइ। भंइसा सुर के पांजड़ अंग में देले रहल अंड़साइ। जेबनी बेर हाथ कें धेना उठावल अब बीर कुदल बेयालीस हाथ। आ अब त जान जे उ भाग चलल। बंठा गिर परल आ घवाह हो गइल रहल। जब घाही हो गइल। आ बंठा जब गिरि परल। आ देवसी रन में लड़े के हो गइलन तइयार। हंसि के बोलता झींगुरिया जे ए भइया जवन बीर

आइल बाड़न, तवन के पाता चलि गइल। बाइ, ईकहृ गंगनी खेलब आ की लोहा जुझ गइल।

ए लोग के अभाग घुमि जाता ए पंचे, कहे लो जे गंगनिये खेलब। गंगनी के हालि झिंगुरिया का अच्छी तरे जानल रहल। खूब पीय रहल। ए लोके हालि तनिको ना जानल रहल। बाकी लोके ललसा गंगनिये पर लागे। कहलस जे अच्छा उतरि आव। अब देवसी बांड़ से देहि के समगीरीही काढ़ि के धइ दे तारे।

अब बीर गरदन पर गरदा चढ़ा के दूनीं बीर घुमल पयंतरा बा। तबलक देवसी मारे चोटी झींगुरी के, दंगल देला पराइ। कुरचे पाठा झींगुरिया अब बीर पांच परोस कुदि जाइ। मारे एड़ा जेवनी बेरि मरदनि के, मरि मुँह माटी लो लेइ उठाइ। उहाँ रोवलन जे हाइ ए दादा हाइ ए झींगुरी आरे हमार पवनी जाति ह दादा जातिन में हइं दुबाय तब जरल बाटे झींगुरिया, एड़िया दरे लागल अंकार, कहे जे आला दइब नरायन का विधि उगील देल करतारि, त हमार काका जो कहल कइले रहित आपन, आ मीनती मानल रहोत हमार। आरे इत कुल्हि नीचे जाति के ले के चढ़ल बा, दादा सोना सुहवली पालि। इत बुला अहीर गउरा के हउवे कुजतिहा। इ हे खाली चमरे-दूसधा-धोबी त एकर कुल संगी बाड़न स। सोच ओइजा झींगुरा के होता जे ई त बुला कुल्हि लेहड़न नीचे जाति से एकरा संग बा। कहत बा जे उठ भाग। चललन देवसी जा के गिरि परलं अपना तमू में।

गद्य-पद्य : फेरु गरज ताटे झींगुरिया।

जे ए भइया, जे मरद लड़वइया होखे से अब तैयार होख जा लड़ने के।
सुनलीं, जे उठल बा धाजा राउत कर बेटा जेकर काना सीवाधरा नांव,
धरती एंड़ दबाओ अब फानि गइल बेयालीस हाथ।
जेवनीबेरि ले ले बा घेना अलबेला सोभा कहे जोग ना बाइ।
जहिया झूमि गइल बा सुरहन में।
अब बीर भइल बराबर ठाढ़।
बोलल बेटा बमरा के जेकर गजे झींगुरिया नाव।
कहे जे सुन ल पाठा लड़वइया,
अब बीर मानऽ बाति हमार।
दूइ गो लोहाहउवे कीला में।
तोहके वादी देइँ बताइं।
कह गंगनी बदी खेलाइ की तूं हमके लोहा देब लगाइ।

बोलाताटे सीवाधरा जे भइया हमके तू लोहा लगाव, लोहे लगाव ।
तब त सुरुआं के सकर पकर सरीर डोले लागल ।
कहता जे अच्छा अब ले लोहा लागो ।
आजु पंचे जेनन घाजा राउत कर वेटा जेकर बली सीवाधरा नांव ।
उलटे काछा रहल चढ़वले ।
लड़ने में बांक जुझारु, हाथ के तेगा ले ले बाटे ।
आ ओहि कीला सुरहन केरि बाजारि आ ऊठल ।
पाठा झींगुरिया आ लोरिक घइले बाटे,
डोरी दादा तमू के तिकवता नयन पसारि एक ओर,
आ घुमे लागल पाठा वघेला जेकर बली झींगुरिया नांव ।
एक ओर घुमि गइल बा रूम पर भइया सीवधर ओहि मोतीसगड़ की घाट ।
दूनो बीर जललं स त बोलता झींगुरिया--छोड़ ।
छोड़ हाथ लेलकार के ।
ऊ कहत बा जे नाहीं । आंगे चोट ना छोड़ड,
ना पाछे तनिको राखऽ उठाइ ।
ओ बारी भइया झारि के झींगुरी बायें डेग लरकावल,
दहिने खइंच के मारल लुआल । खेलल बीर वघेला ।
ऊपर कुदल बेयालीस हाथ ।
खाली चोट झींगुरी के चलि गइल भइया ओही मोतीसगड़ की घाट ।
जब खाली चलि गइल, फेरु बीर पयंतरा घुमे लागल ।
आ लागल तजवीज कइले, कहलसि जे ओहो हो पहिला दाव हमार कटि गइल ।
काहें कटि गइल दहिने से देखइतीं आ जायें मरि तीं त इ ला के देइत ।
इनकर बायें आँखि कानि बा ।
बीर जब तब तजबीज कइके । आ रूमि के पयंतरा चलल बा ।
जवनी बेरि चले लागल पयंतरा भइया देहि के डोले कोंहार के चाक ।
ओ बारी झींगुरिया दहिने डेग बाटे लरकावत बायें खंइचि के करताटे उ वार ।
आजु भइया कानी आँखि जब पलखत परि जातिया आ,
डेंगा बीर का लागल अधेड़े बा,
गिर परल पाठा लड़वइया जेकर दादा परल सीवाधरा नांव ।
आ गीरल आ माटी उठा लेता आ कहता जे भइया,
अब जो चोट छोड़ब त कुल में हाड़ परि जाइ भइया ।
अहीर जाति हम हइं । सुहवलि करे आइल बानी बरियाति ।
तब ए पंचे, डेग के बिटोर लिहलसि ।

डेग के जब बिटोर लिहलसि आ अब बा से सीवघर जाके गीर पर ल तमू में।
तीन बीर लड़ल हउवन पंचे। सभ बीर गइले मर रहल।
अब जाइके ओइजा। जाइके जब झींगुरी गरजे लागल।"
कहे ला जे बहिनि जो चोदबि तोहार लोरिक,
तोहरा न मुंह में दाब बि तर वारि।
सरउ एगुड़ो मरद ना लेइ अइलऽ,
सरउ एगुड़ो मरद ना लेइ अइलऽ।
कुल्ही बीर गदहे न ले आइल रे लिआइ।
तब एने सनकल बेटा बा खोइलनि के।
बीर कर बंका ए लोरिक परल नांव,
अब बीर उलटा न काछा जब मारे, ऊपर देला माल ए बरनि करि गांठ।
जहिया बाबू घींचे जो पेटी न अजगर के,
जइमे साचो गोलवा जुमुस वाटे खाइ।
अब बीर भइंगा न सुर कर माँजर अपनी छाती देले हउवे लटकाइ।
हुंस हसीन के जोड़ा जब बीर बीग देला पीछवाड़,
ऊपर घीचे पाग गुलाबी, जेहि पर जीला अलंग फहराई।
अलीगंज के जुता पाठा गोड़ मोजाभें लेला लगाइ,
जहिय वायें ओढ़ल नेपाली दहिने खंसे बिजलि के खांड़।
छपन छुड़ी बगल में बीर का लिगी हीले लागलतरवार,
जेवनी बेर उठल बघेला आ बोलि के संवरू उठि गइल ललकार।
आरे संवरू अब घइ दीहलनि ना ऽ बहियां सुनव लोरिका के।
भींटवा पर रोवे लगलनि न ऽ जारवा जो भइया बेजार।

गद्य : का रोव ताड़न-हाइ भइया आजु हमारि जोड़ी बिछुड़ जाई। गाड़ल तमू उखार ऽ भलू चलि चलीं गजन गउर गढ़ पालि। रोवे बेटा बरती के देवकी नन्नन राजकुमार, हाइ संवरु दादा, अ न के खइलीं किरिया, जल के मंदिल बोलीं हराम, बीचे पानी पी घालब मारबि कैर कपिला गाइ। जब लक ना मारब बेटा बमरा के जेकर गजे भीमलिया नांव। मुंड के कलसा घराइब, रोधिर कोहबर देइब पोताइ। छाती पीढ़ा गड़वा के, जांघ के हरी देइब टंगवाइ। घरब झोंटा मउरी के भइया तोहार करब वियाह। भउजी खोइंछा के चाउर गउरा होए पंथ हार। हाइ हो भइया।
तब भइया डांटे माइ भवानी जेकर देबी अपरबल नांव।
घइके बांह सुरुआ के आ घरमी के देले हउवे बइठाइ।

आं ऽ हां हां हां
आजु जब पहुँचे माइ भवानी जेकर देबी अपरबल नांव,
सुनिलं जे घइके बाँहि घरमी के आ बइठा देले मोढ़ा पर बाइ।
बइठ रहु तू बेटा आ हमार देखत रहु खेलवाड़।
आं ऽ हां हां हां
एनिया चलल बेटाइ न रणीया के,
जेकर बंका लोरिक वे परल नांव।
अबहीं बारहे बरिस के बाड़ें गभड़ू,
सीरवा सोभुए लबुजवे केन बार।
एनिया रोवलो स लरिकी सुहवलि के,
सुहवलि मांथवा न दीहलो स ओनाह।
कहली सखिया न मोरवा अलवावेला,
अब एइजा फाटतिया छतिया रे हमारि।

गद्य : काहें खातीर। कहस जे आहा हा, अब हीं बीर इ बारी उमीर के लफुआ, सीरे सोमे लबूज के बार। लरबर धोती पहिर ले, डांड़े लचताटे करिहाब। गरूह लोहा झींगुरी के ए बाचा के बूतन नाहीं आड़ाइ। अब बीर जब हीलि के पाग उठावल, अब जुमि गइल झींगुरी कगरी में बाइ। दूनों बीर का कड़खा होखे लागल, ओहि मोती सगड़ की घाटि। छतीस बरन के बेटी पंचे सुरुज के आंगे दोहली बीनाइ। का बिनव स।

आरे जब आदिते न नाधावा गोसाइं,
अब रउआ बानिए बघिनि कर लाल, जीओ बेटा आ, बघनिय के।
हारे ले के सोना रे सुहवलिय पालि,
जोइ जुझी न बेटा रे बमरा के।
तोहरा के देइब जा दूघउले के धारि,
अब बीर चले लोग लागल जो पयंतरा।
रानी लोग अंचरे बीगवले ना बाइ।

लोरिक और झिंगुरी में लड़ाई की तंयारी,

छत्तीस वर्ण की कन्याओं का अहीर बीर के लिए सूर्य नारायण से प्रार्थना

गद्य-पद्य : पंचे ! जवनी बेरि झींगुरी का आ लोरिक का लड़े के तैयारी भइलि ह,
छतीस बरन के बेटी आंचर खोलि के,
आ सुरुज नारायन के कहतारी बिसकाह डालें स।

का हाल स, आहा हा जीओ बेटा बघिनि के,
लेके मोती सगड़ की घाटि।
सुरुज बाबा जुझी बेटा बमरा के।
तहके जरूर देइब जा दूध के धार।
रानी करतियाड़ी भखवती ओहि सोना सुहवली पालि।
बोले लागल झींगुरिया देबे लागल जबाब।
सुन पठा बघेला अब बीर मानऽ बाति हमार।
हमार दूइ लोहा ह। गंगनी खेलाइँ आकी लोहा देइं लगाइ।
हंसे बेटा बरती के देवकीनन राजकुमार।
कहे जे सुनल पाठा झींगुरिया मानऽ बाति हमारि।
आ तोहरा जेवने मन करे आ तोहरा जेवने दिल में भासे उहे हम कर सकी लां।
कहलसि जेकरि सकब, आ त हं।
तोहरी दिल के हम पूंछ तानी, चाहे हमके गंगनी में अजमा ल,
आ चाहे लोहनि में अजमा ल।
उ बीर तू जनि जान जे चली अइलीं सोना सुहवली पालि।
लरिका लरिका तू जसि जान भइया,
भीतर गढ़ल पुरनिया के हाड़।
जवनी बेर लोहा में लोहा भीड़ाइबि तेगा दू दू खांड़ा होइ जाइ।
जो अँग में अँग दबाइव तोहरा तोरब पांजर के हाड़।
इ लोरिक कहले ह। उ बीर तू जनि जान ऽ।
आ आजु हम चलि आइल यानी मोतीसगड़ की घाट।
तोहरा जेवने मन केरे झींगुरी,
ओहि लोहा के कइ देब तइयार।
झींगुरी कहता जे चढ़ि आव गँगनी पर,
त कहता जे ठीक बा।
पंचे, आपन तेगा ध देले ह।
तेगा बोर ध देले ह।
देहि करी समगीरीहो काढ़ि के धरताटे मोतीसगड़ की घाटि।
अब बीर माटी धुरि उठावे ले के मोतीसगड़ की घाटि।
बारह बरीस के गभड़ू सीरे सोभे नबूज के बार।
लरबर धोती पहीरे, डाडे हीलत रहल करिहाव।
आंखि मुंह बा दुरहुर मुख में सोभे दूधा के दांत।

बइठलि माइ भवानी सागड़ देखतिया आसन दबाइ ।
ओं हां हां हों
एनिया देबिया बान्हति बा लेलकारा,
बेटाइ मनबे न बतिया रे हमारि ।
तोर अब देखबो गंगनिया सुरहनि मे,
बेटा लड़ने में बंकावा रे जुझारि ।
देबिया देति बाइ ललकरवा सगड़े पर,
लोरिका के मनवा दूना होइ न जाइ ।

गद्य-पद्य : जाहि दिन पंचे, एक ओर घुमे लागल पयंतरा,
एक ओर झींगुरी घुमल बाड़े पहलवान ।
आजु भइया गरदा उठि गइल सुरहनि में,
ऊपर परदा गइल छवाइ ।
उठि गइल झक्कड़ जो मीरुता में,
दूनों बीर भइल हउवें तइयार ।
सुरहन में उ आर पार ना लउके, ओहि मोती सगड़ की घाट ।
बाजे चोटी अलवेला जेकर भइया बीर लोरिक ह नांव ।
जहिया लेके गंगनी पढ़ावल, ओहि मोती सगड़ की घाट !
केतनो बीर कुलांचल उ बीर फांने बेयालीस हांथ ।
परिगइल ललकारा ओहि मोतीसगड़ की घाट ।
अब बीर चलल गइल चलावल दूइ बीगहा बीच परि जाइ ।
लोरिका मारे ठाकुड़ी पर दूइ खंड़ा उड़ि जाइ ।
तोरि दीहलसि उढ़ी, हंसताटे जा ।
कहता जे आजु बहिनि चोदो न बीरवा आलवाबेल्हा,
तोहरी माइ के मुंह में डालबि ना तारेवारि ।
एही आजु गंगनीय में मानावा तोर बा सहकिरे गइल,
सुरहनि में तोरि दीहलीं न उढ़ियोरे तोहार ।

लोरिक द्वारा झिंगुरी की गर्दन काटा जाना,
दुर्गा की सहायता

गद्य : कहत बा जे आच्छा चल अब हम पढ़ावतानी । कहलसि जे चल ऽ । झींगुरी कहतारन जे अच्छा हमार गंगनी तोड़ दीहल न, त चल हम पढ़ावतानी, हमके धर । कहंलन जे चल । फेर बीर काहां गइल पंचे, आत ओहि सागड़ की जरी ।

जरी जब बीर सागड़ का जाताडें। अब भइया जवनी बेर हाथ के गरदा लेके झींगुरी आ गरदन पर गरद चढ़ावत बाइ। अब बीर चले लागल पंयतरा, जइसे डोले लागल कोहांर के चाक। मारे चोट लरिका पर आ चोटी बाजि गइल हाथन में बाइ।

अब जवनी बेर झींगुरी डांड़ हउवन चढ़वले। अब बीर फानल बेयालीस हाथ। संगे माइ जगदम्मा बीर के बीगत बेयालीस हाथ। ओही जाले बीर हउवे कुलाचल, झींगुरी की एंड़ मारत हउवे सरिहाइ, गीरि परल पाठा झींगुरिया। तबलक अजइया बान्ह देला ललकार। आरे मीतवा दबले रहु काटे दे मुड़ी सरउ के, एहि मोतीसगड़ की घाट, रोवे लागल झींगुरिया बीर एड़े दबवले बाइ। कहे जे सुनऽ बीर अलबेला। मान बाति हमार। तनिकी भर छोड़ि द हमरा के, मारल मर्द ललकारा बन्हल स, फाटि गइल छाती हमारि। ओहि जाले फेरु धोबिया भाग के तमू में गिरि परल। उ बा से एड़ दबवले बा। रोइ के कहता जे झींगुरिया हे बीर आजु हमार जीयत दम के छोड़ि द। दइब गुनन के रखियन बिधना पुजइयन आस।

हाइ बीर जब होइ सादी हमरी बहिन के त परिछब लावा तोहार। जरे माइ भवानी जेकर देबी अपरबल नांव, हाथ के तेगा धरवली सुरहन केरि बजारि, बेटा मोर बघेला अब बीर मान कहल हमारि, छोड़ि देब झींगुरी के चलि जाइ सोना सुहवली पालि। जेवनी बेर चढ़ी बेटा बम्मरा के, जेकर गजे भीमलिया नांव। लागी लोहा सीना में, पांजा गहे लागे तरवारि, केने तू लोह जीतइब मीरुत मंडल संवसार, बेटा काट ले मुंड मरद के, एहि मोतीसगड़ की घाट। तवन बीर कमर ले तेगा बा कढ़ले। अ बीर मारत गरदनि में बाइ। मारे तेगा गरदनि में मुंड लामा गइल बीगाइ। धइके मुंड बीर लोरिक अब बीगे सोना सुहवलि पालि।

जइसे लरिका गेना लो बीगे, लेके खेलि होत मीरुत में बाइ। ओगों लोरिक धइके मुंड ह बीगले, बामरि के लागल कचहरी बाइ। जाके पंचे गीरि परल मुंड ददा झींगुरी के, आ हाइ सुहवलि रोवे लागल। मुंड जब बामरि की कचहरी में गीरल ह। आ जब रोवे लागल त बमरिया हंसे। हें, कहें जे बांये के सुनल मंतीरी दहिने महथा राज देवान, झींगुरी का मुअला के तनिको अनेसा नइखे। भले बुझि गइलन। बाइ आजु हम केकर देस में ससुर कहाइ, आ केकर हमार बेटा सीराज सार जइहें कहाइ।

झींगुरी की मृत्यु पर बामरि का रुदन

आऽ हां हां हां ऽ ऽ ऽ

तहिया हंसे जे राजावा लागल बामरि,
गउंआ रोवत कीला में ए लेलकार।
कहल लो जे कठिनी छातीय बा बमरा के,
एकरा तनिको नीर न आइल बाइ।
पंचे अब कहवां ले कहीं आजु पवंरा,
झींगुरी खतमें गाना न होइ न जाइ।
एनिया झींगुरी गाना न गइल खतम,
खातमा लोहा बजइया होइ न जाइ।
पंचे दुइया लोहा न खतम भइल,
आंगावा चारि गो लोहा न अबहीं बाइ।

गायक का आत्म कथन —

बाकी मोर गारवा संग छौड़ि बा देले,
अंगवा बढ़तु ना गीतिया ना हमार।
पंचे एइजा लेइके न गानावा बन अब करऽ,
एहि जाग रहि जाइ न गीतियारे हमार।
हां हाँ हाँ ऽऽ ऽ।
पंचे अब जाहिय दिनन कर बाते, आंगा आजु भजी देबींय करनांव।
सुनिलं पंवरवा तूं अलबेल्हा के अब लड़वइया जो सेर रे जवान।
आजु जा ग भागि बेरी भगवती जुझि बेरी दुरुग मुनि माइ,
गीति बेरी सुरसती जोभा होइ जइबू तइयार।
बइठल मेड़रि पंचन के, छोट बड़ि एक बाडें समान।
अब मोलि हुकुम लगावल हमरी बुते गवल न जाइ।
तोहरे बले भरोसे अधजल में परि गइल डेंगी हमारि।
चाहे देबी हमारि खेइयेइ के ऽ पारावा ए देबी लगाव,
चाहे अधजल बोरि देबू ना ऽ
ए भइया ऽ डेंगिया ए भइया हमार ऽ।
आजु देबी देह के दिमागवा भइल दूनिया में,
हमारा इ तोहरी चरन के ए बलि ए हारि।
आजु देबी जवना दिन के पुजलीं,
आरे हरघरी मजिलें जो नइयां ए तोहार,
जवना दिननवा के बाते।

आरे देघीं अब धरीये गइलि न नियराइ,
केवने भइलि देरी अब मीरुता में,
आ नाहि आजु परसनि न देबिया रे हमारि।
आजु सुनलीं जे खइलू पूजा सुरुआं के,
देस में गहले बाड़ू तरवारि जेवना कोना लोह लागल,
ओने घुमल बाया तोहारि।

गायक का आत्मकथन—

आजु देबी ओही बले भरोसे, सभा में बइठ गइलीं माथ उघारि।
आंखी देखल ना बाटे कान के सुनल गवाइ।
त ए देबी हमारि एगुड़ोइ आ ऽअछरिया जो न टुटिये जाइ।
काल्हि दूनिया मेहनाइ मारिय न बरिआरि।
कहि लो जे जेकरा गवहू, ढंगवात नाइ ए रहें।
सभवा में बइठि गइलनि ना माथावाइ बे उघारि।
ए देबी हमार पुजलेइ धीरीकवा अब होइ ना गयल।
आ देसवा में बिगरि गइल हो मारे जाद।
अब पंचे जागे भागी बेरी भवानी,
आरे सीरवापर बइठल ए दुरुग मुनि माइ।
गीतीया बेरी य जब सांचो सुरसती,
अब देबी जीभावा होली रे तइयार,
कहली जे गाव गाव बबुआ अलबेला।
तनी खब सुनि लेइं कानावा लगाइ।
आजु त एगुड़ो अछरिया भुलि जइहन, दू दू अब गरी गर मेराइ देइब लाइ।
जइसे आजु कहि द कीरीति मरदन के,
देसवा में बाजिय गइल तरवारि।
अब पंचे परसनि होली जागादाम्मा, अब केहू काइ रे करी न कोहनाइ।
अब तनी सुनि ल गाना न सुहवलि के,
ओहि आजु मोतीये सगड़वा की घाटि।

गद्य : अब पंचे, जहिया मुंड जब बीर बोगि दीहलसि सुहवलि में, आ हाइ हाइ सुहवल करे लागल। बाकी हंसे राजा बमरिया अपना फेरे मोंछि पर ताव। कहे जे बायें के सुनल मंतीरी दहिने महथा राज देवान। बेटा मुअल तनिको नइखे अवहत एहि मोती सगड़ की घाट। बाकी हम केकर ससुर कहाइब। भीमला केकर सार जाइ कहाइ।

आजु एनिया अजब बाटे न राजाबा ए भइया बमरिया ।
ओकरा नीर ना आइल नयनवे से ना बाइ ।

बामरि के पुत्र भीमली को पत्र लिखकर फुलहरि से बुलाना—

गद्य : बायें के मंतीरी लो बोले, दहिने महथा राज देवान । का लो कहे । जे ठाकुर अब लिखि दीं पाती सुहवलि में । आ अब पाती चलि जाउ फुलहर केरि बजारि । भीमल गवन करावे गइल बा । आजु पंचे अव पाठा गइल रहल फुलहरि में, आपन फुलहरि करे गइ रहलं ससुरारि । एइमें जुझि गइल बेटा बमरा के जेकर गजे भीमलिया नांव । लेके पाती लिखाता, ओहि सोना सुहवली पालि । केवन पाती, आ त जेबन सागड़ ले पाती आइ रहल सुहवलि में ।
ओहि पर आजु भीमलाइ के ए पतिया ए रजउ लिखाला ।
बामरि रोइ के लिखतेइ पुरुजवा में दइया रे बाइ ।

गद्य : कहे, जे बेटा मोरि अलबेल्हा । आ भीमला मनब ऽ बाति हमारि, कहलस जे मथवा मथीं पीरीथिमी, दुनिया कंड़ली पाहि लगाइ । केहू बीर ना जामल दू घरी बल से देइ बेलमाइ । आजु बेटा छोड़ि दीहली परम सुहवलि में एहि मोती सगड़ की घाटि । गउरा केवना अनला में बसि गइल । जहां सीरजे मरद के खानि । डग डग डगा दीयवलसि, लकड़ी फेरलस माँहि जुझारि, गाड़ल सान तोहारि ए पट्ठा, बीगि दीहलसि मोतीसगड़ की घाट । बावन बुरुज के तमू बावन भींटा देले बाटे गड़वाइ । रेसम सूत के डोरी, आंगा पीयरी झूले कनाति, चारी पास गुबुद का बीच में हंड़िया जरे गीलास । तेगन लाग गइल बगइचा, बरछी माड़ो गइल छवाइ । ढाल के लाग गइल ओसारी, एहि मोतीसगड़ की घाट ।

आजु बेटा बाजि गइल ना आ डांकावा बाटे मरदा के,
सुहवलि में हलचल न दीहलसि ए मचाइ ।
जेवन आजु सोरह सइ ना ऽ रनिया रहली पानवा भरे,
आ घरीला मारि के फोरले सगड़वा पर न बाइ ।
रनियन के भींजि गइल न आ लुगावा देखब देहिया के,
इजति एगुड़ो बांचलू सुहवली नाहि रे बाइ ।

गद्य--पद्य : ए पंचे, फेर बीर का रोइ के लिखता कि—
जब जाही दिन कं बाते, पंचे सुन समर के हाल,
सुन पंवारा अलबेल्हा के लड़वइया सेर जवान ।
जहिया लिखे पाती बमरिया ले के सोना सुहवली पालि,
कहें जे बेटा मोर गज भीमला मनबे बाति हमार ।

गढ़ि गइल सान मरद के ओहि मोती सगड़ की घाटि ।
आजु दादा बड़ि बड़ि नंगन बीर कइल स एहि सोनासुहवली पालि ।
लिखि के पाती भेज दीह्लीं चलि गइल बबुरी बन पहाड़ ।
सुने बेटा बघेला जेकर बली झींगुरिया नांव ।
बरती एंड दबावल, चढ़ि आइल मोतीसगड़ की घाट ।
हाइ बेटा ! हाइ लालन !
एक एक बीर अजोधा टीक रहलं मोती सगड़ की घाट ।
सुनल भारथ अब सुहवलि के, एहि सोना सुहवली पालि ।
आजु बेटा आजु जूझि गइलि तोरि जोड़िया दादा सुहवलि में,
आजु झींगरी जुझि गइलनि ना ऽ आ जोड़िया हो बेटा तोहारि ।
आजुअ, बाकी धनि धनि ना ऽ आ बीरवा कहीं गउरा के ।
जेवन डेरा डललेइय सागाड़ावा पर सांचो ना बाइ ।
आजू एतना लिखि दिहलनि ना पतिया पंचे अलवाबेल्हा ।
आ पाती आजु चपततु सुहवलि में दादा रे बाइ ।

गद्य : पाती जब चपति के आ धावनि का हाथे अब तीर घरावतांड़* जे भइया, । पाती ले के तनी चलि जा फुलहरि में । आ लेके फुलहरि केरि बाजारि । जेवनी बेर अपना हाथ करी जब पाती ए पंचे कहि देतानी अबे, उ पाती केवनी रहल जेवनी बेरि सगड़ ले लिखके भवानी भेजले रहली । ओही पाती भर बीर के नांव ओरिंगे पर लिखा गइल ।

आरे भइया जब चले जो नाउन फुलगेना,
आरे चलल सोना रे सुहवलिय पालि,
किछु दूर चले ए दुलुकिया ।
किछु दूर चले ए कुकुर कर चालि,
अब भइया छोड़ि दीहलसि गउआंगढ़ सुहवलि ।
अब चलल फुलहरि केरि न बाजारि,
तनी अब सुनि लऽ बयान मरदा के !
अब कीला फुलहरि केरि न बजारि,
एने जब गंगीया धावल धुपल जाला ।
आंगवांजो सुन जा भीमलिया के हाल,
भीमली के भूंज रहल थाह अलबेला ।

गद्य-पद्य : आजु ऊंचे हाथा पर बीर बा बइठल,
जेकर मुंगदर झूलति गरदनि में बाइ ।

आ संग में बियही के उ डोला रहलन फनवले,
आवत बांड़े सोना सुहवली पालि, बीच जंगल में भेंट हो गइल ।
आजु बाबू हो गइल भेंट मरद से बीच जंगल में ।
सोहरि के माथ ओनावे फुलगेना,
ओने भीमला आसीसत बाड़ ।
का असीसे—जे जीय जीय ए पवनी,
जीय लाख बरिस अब खाँड़ ।
गंगा-जमुन जल बढ़ो । बढ़तो आयु तोहार,
आंखी अमर होइ जीय ।
जुग जुग चली नाव तोहार,
तनी कह कुसल सुहवलि के ओहि सोना सुहवली पालि ।
कइसे काका बाड़ें बमरिया,
कइसे बहिन बा सती हमारि ।
कइसे बसलि बा नवगढ, एकर पाता देब लगाड,
चतुर जाति नाउ के तोड़ि के देबे लागल जवाब,
ठाकुर आ मुंहना जवाब तवन कहबि हमसे बहुत जाइ भुलाई,
जेतना कुसलि बाटे सुहवलि के एहि लिखल पतीरका बाइ ।
ऊपर हाथ बढ़वलसि, ले के मीरुत मंडल सवसाँर,
अब बीर देला अंकुसा हटा के ।
ओहि सुन बन में भइया, अब गाठा नीचे मउर देले हउए पटकले,
धरती में मांथ जब देले हउए ओनाइ ।
उतरि गइल बेटा बमरा के जेकर गजे भीमलिया नाँव ।

गद्य : ए पंचे, जंगल में उतरि के, अपना हाथ के पाती, बीर के जब दे दे लेहु गांगी, त पंजरे डोला बियही के धरवा दीहलसि । बियही के डोला धरवा दिहलसि । अब बइठि के जब काटे पाती कुल्फी के बांचे आंखि आंखि बिलगाइ । का लिखल बा-लिखल बा, जे उतर बहल मय देवहा, दखिन दरेरे गंगा काटि, बीचे झील सरजू के जाके बलिधा मीमल मोहान, बलिया भाटपुर बसे परगना, बिहियापुर डंड़ार, ऊँचे चउर बरम्हाइनि, नीचे गजन गउर गढ़पालि । छोटे टोला गढ़ गउरा, गली तीरपन लागे बाजारि, उत्तर टोल बभनइया, दखिन झारि बसे कोइरान, पछिम घर जोलहन के मंगल बसल बाड़े पेठान, पूरबे टोला घर अहिरन के ओहि गजन गउर गढ़ पालि । सोरह स घर जदुवंसी, झारि के बसल

बाड़ी अहिरान, खेती बारी न होले, नाइ झुमरि चले कुदारि, पर घरखनल आखाड़ा दुअरा परल दोहरिए माल। हंस हंसिन दुन जोड़ी बीर के सांवर-लोरिक ह नांव। लहुर भाइ संवरू के बीर के बंका लोरिक ह नांव। संवरू बर बनि आइल! लोरिक करे आइल बरियाति।

हारे बीरवा जो करे ना आइल बा बरियाति,
अब भइया गड़ल जो भालावा उपरलस।
आरे सान तोहार बीगले सगड़वे पर बाइ,
बीगि देब सान अलबेल्हा ।
अब टीकल मोतीये सगड़ कीय घाट,
बावन बुरुजवा करिय दादा तमू ।

गद्य : आजु बावन बुरुज के तमू बावन भींटा देले बाड़ें गड़वाइ। रेसम सूत के डोरी आँगा पीयरी झूले कनात, आरी पास कुमुकमा बीच में हंड़िया जरे गिलास, तेगन लागल बगइचो, बरछी माड़ो देला छवाइ। ढालि के लरक गइल ओसारी, ले के भइया मोती सगड़ की घाट। एतना पाती जब लिखता, बाँचता ओसारी, त फेरु पाती आँगा बढ़ावता, त का देख ता ए बंचे भवानी के फोटो ह।

देखत बा जे इ त हमरी रोधिरइय के....,
आ कोहबरि बा दादा पोताइल।
आजु अ मुंडवा कलसेइ दीहल बाटे धर ए बाइ।

भोमलिया की पत्नी फुलकुंवरि का रूदन—
पति लोरिक से युद्ध के लिए उद्यत

गद्य : आजु भइया छाती के पीढ़ा गड़ावल, आ सान बीर के धइल पुरजा में बाइ। अब जब नीचे पाती ह बांचत, सुनल मीरुत मंडल संवसार। जब जांघि के हरीस रहल गड़ावल, उ बीर मउर देला उठाइ। त ओही में लड़ा बहिन ह सती।

सुनी लां जे उरनिया खाड़ा जब पुरुजवे पर ए....बाड़ी
एक ओर संचा उठले लोरिकवे के न बाइ।
आजू लोरिक हंसि हंसि न झोंटावा धइलसि फोटरे में,
ए बामरि तोहरिय लड़िकीय के, एहिंगो ना होइ ना बियाह।
अब बीर खुनुसीन बा माहुरवा बा भइना गइल।
देहिया ओकरि सनकलि जांगालवा मे बाटे ना आजु।

फुलकुंवरी आजु मारि दीहलसि ना छतिया जो भइया अलबेला,
डोलावा में रोवे लागलि ना आ जारावा रे बेजार,
कहति आ जे सइंया के करिय ना नइया तू बाड़ ए ले ले,
सुनला पर फाटि गइलि ना छतियाइ रे हमार,
तनी हमके बांचि बांचि ना लगिया तू देखाए लाव,
एहीय मन मीरुतेइय मंडलवा हो सब ए सांर।

गद्य : फुल कु वरी रानी बोले जे हाइ पती। केकर नाव तू लीहल एहि ले के सोना सुहवली पालि। तनी हमके नीके वांचि के सुना द ऽ। एही मिरुत मंड़ल संवसार।

हां ऽ ऽ आं ऽ ऽ आं।
आजु बोले बेटी फुलहरि के जेकर फुलेकु वरि ह नांव,
कहे जे सइयां मूरति नारायण घनि सेनुरके लागताड़ मोआर।
केवना बीर के नांव तू लेल, हमरा काने देब सरेखा डालि।
डांटि के बोलत बाटे भीमलिया तिरिया मनबे बाति हमार।
देखु तोहके बांचि के हम सुनावतानी।
पाती आइल बीर के बाइ।
बांच ताड़न, आउ परदा मार दीहलस।
कहतवाड़ें जे उतर बहे मय देवहा, दखिन गंगा दरे लेलकार,
वोचे झील सरजू के जाके बलिया मिलल मोहान।
बलिया भांटपुर बसल परगना, बिहियापुर डंड़ार।
ऊंचे चउर बरम्हाइनि, नीचे गजन गउर गढ़ पालि।
छोटे टोला गढ़ गउरा, गली तीरपन लगलि बाजारि।
उत्तर टोल बमनइया दखिन झारि बसे कोइरान,
पछिम घर जोहलन के, मंगल बसल बाड़े पैठान,
पुरबे टोला घर अहीरन के गजन गउर फुलहाल।
सोरह स घर जदुवंसी झारि के बसल बाडी अहिरान।
ओइंजा खेती बारी ना होले, नाही झुमरि चले कुदारि।
घर घर खनल अखाड़ा दुअरा परल दोहरिए माल।
हंस हंसनि दुइ जोड़ी बीर के सांवर लोरिक ह नांव।
लोहा करी कमाई, गउरा भोगे एकउंझे राज।
संवरू बर बनिआइल लोरिक करे आइल बाड़े बरियाति।
आजु रनिया मारि दीहलसि ना आ छतिया पंचे सांचो अधेड़ा।

डोलवा में रोवे लागलि ना जारावाहो ददे बेजार।
सइयां हमरो लिखनिय में अगिया हो लागि बा गइल।
आ देसवा में जरि गइल कारामावा ए हमार।
आ हां हां।

गद्य पद्य : आजु रोवे फुलहरि के, जेकर फुल कुंवरिये नांव,
कहे जे सइयां मूरति नारायन धनि सेनुर के लागताड़ मोआर।
केवन दोस हम देंइ सुघरा के, जेवन बीर गजन गउर गढ़ पालि।
आजु सती ननद जामल सतुर ले ली अवतार।
कहतिया जे ए सइयां तू ले ले बाड़ ना आ नइंया देखब मारदा के,
ओ घरीय इनरापुर रहलिय ना परीया हम लेला ए कार।
जाहां उ लिखऽति रहलि लिखनिया देखब सुघरा के····,
उहवां सइंया निहचे रहलि बायवा रे हमारि।

गद्य-पद्य : देख, एकरी नियर बीर बघेला, अब बीर ले ले बाटे अवतार।
बाकी अइनडाइन ना पुजी ना पुजे भूत बेताल,
पुजे बहिनि ईनर के, मीरुत मंडल सवंसार।
खने रही मीरुता में, खने इनरपुर बजारि।
आजु लिखाति रहल लिखनी, सइयां ओहि ईनरका पवन दुआर।
देखले हवीं न अमर ह लिखल, बाई बल में अपार।
अगम हउवे बाइ लिखले ह जे बाबा आइन डाइन ना पुंजी ना पुंजी भूत चंडाल।
पुंजी बहिन बरम्हा के जेकर देवी अपरबल नांव।
त ए सइंया, हमरी सतीयाइ बा····दियावा अब होइ रे गइल।
आजु हमरी पीठियाइ ले दरलसि रे आंगार।
सइयां तू जाये देव ना बतिया तू दादा जहनम।
आपन हाथ फुलहरि देबइना ए लवटाइ।

गद्य : रोइ के कहतिया जे है पती लेइ के हाथा पाछा लवटाव, आ ले चलीं तोहके फुलहरि केरि बाजारि। ऊंचे गादी लागाइबि नीचे धरम रही दरबार, आजु जनि चल सुहवलि में, सुहवलि लउकलि करुवासन बाइ। एतना जब बाति कहताटे ए पंचे, त तनी सुनली सुरुवां के नांव।
कहता जे ए रनिया तूं बेरी बेरी ना ऽ मारदा तू बाड़ सरहले।
देखलीं आजु इन्दरजीय का पवने रे दुआर।

छत्तीस जाति की कन्याएँ अविवाहित ब्रामरि के पाप से भिमली पराजित होगा—पत्नी फुलहरि का कथन

गद्य-पद्य : आजु हमार लिखल लिखनी बाटे इनरासन,
ओहि बरम्हे का पवन दुआर, मरले नाहीं मराइबि ना जरले होइब जर-छार,
ना पानी में बोरला से नाव हमार डुबी ले के मीरुत मंड़ल सवंसार।
बइठ के जनम लिखवलीं बरम्हे का पवन दुआर,
सात हाथा के पावर अपना भुजे ले ले हवीं बरदान।
सात हाथा के पावर, हमरा भुजा होलातइयार,
आजु कही लंऽ बियही ले के सोना सुहवली पालि।
भइल जनम सुहवलि में, लेके सोना सुहवली पाल।
बढ़ि गइल बल भुजा में अब बल भुजा नाहीं आड़ाइ।
महना मथी पीरोथिमी, दुनियां करेली पाहि लगाइ।
केहू बीर ना जामल जे हमरा होइ समर पर ठाढ़।
चलल अइली चलाबल जुमि गइली सोना सुहवली पालि।
छतीस हाथ के भाला सुहवलि गाड़ि दीहली पानी छुवाउ।
छतीस हाथ के भाला पानी छुवाउ में गाड़ि दीहलीं।
तू उहें गउरा के डीगर सरहलू जवना में जरि गइल देहि हमार।
आजु रोये रानी फुलहरि के, जेकर फुले कुंवरी ह नांव।
कहे जे सइंया मूरति नारायन, धनि सेनुर के लागताड़ मोवार।
आइके देखिलऽ आइके देखिलऽ, हमरी आंचर पर,
ओकर लिखनी लिखल मेटात ना बाइ।
कहे ले जे सइंया न मुरति नारायन, अब धन सेनुरे के लागल मोआर,
तूं ही आजु कइल जो अमड़ि दूनियां में,
पापावा तू कइले न बाड़ अधिकाइ।
एगो आजु सतीया न जीव कर कारन,
छतीस जाति के बेटी छेंकि देल बरिए कुवांर।
केतने जब बारह बरिस कर कन्हा, केतने आ सोरह बरिस कर नारि।
केतने के तीनी तीन पन बीति गइले, अब पन चउथा गइल बा नियराइ।
रनियन के हाड़ावान मांसु छोड़ि देला,
सुहवलि में ओनही गइलि करियाव।
हा हो सइयां पाकि गइल बार रनियन के,
मुखवा में खोजले त दांत नहिंबा।

उन्हनि की मंगिया सेनुर नाइ परल, एहि आजु मीरुत मंड़ल सवंसार।
आजु जब रोइ रोइ रानी अलबेला,
कोनवा में कुहुँकि के रोवेले बिलाय।
जइसे अब बानावा में विलिखे सियारिन,
रानी लोग बिलिखल सुहवलि में बाइ।

गद्य-पद्य : कहतिया रानी, जे जइसे आज तहरी पती हमहू कहि रहल बानी,
जे जेवन तू करतब कइले बाड़ तवन,
का करतब कइले बाड़, जे पाप, पाप, कइले बाड़।
अब दुख जब इस्तीररे से ना आड़ाइल त सइंया,
उ इस्तीरी पूरबे लोही जो लागल,
पंछी होखे लागल उजियार, कउवा टेरि उठव-ल स,
भोरे भोरे हो गइल बिहान,
उठि गइली बेटी सुहवलि के, ओहि सोना सुहवली पालि।
कवनो कान्ह पर धोती धरे, हाथ के लोटिया लिहली उठाइ,
कांखी के मीरोग-छाला दबा के चढ़ि गइली मोतीसगड़ की घाट।
आजु सइंया खटके, खटके भला रानिन के,
आरे जब देवता पर धइली रे धीयान,
खोलीं के आंचारवा डालँ स सुरुजे पर।
हाहो बाबा मानि जइबऽ बतिया हमार।
आजु इहे उलटा न बसि गइल पीरोथिमी।
कीय दादा भसि ए जाइत रे सवंसार, ए गुड़ोइ मरद के बुन नाइ जमल।
हा हा बुला गदहे ले ल न स अवतार,
आजु तनी सुनलेब बेयान अलबेला,
सइंया तू मान जइब बतिया हमार,
आजु तनी देखि ल खेला तू इनरासन।
देहिया में पाप ए गइल ह वढ़ियाइ।

गद्य : ए पती, हमरी कहल के मान जा, ठीक तू बीर बलवन्ही रहल ह। आ ओ समे में बीर केहू ना रहल ह। बाइ जेवनी घरी तिरियन के छेंकि दीहल, आ तिरिया जब ले के माला खटकावे लगली स। त डगमग होलि गइल पीरीथिमी, ऊपर ही ले लागल कैलास। जेतना देवता मीरुता के बेकल में परि के इन्दरपुर गइलं पराइ। इन्दरपुर मचि गइल हलचल ओहि बरम्हा का पवन दुआर। कवन तपेसरी उलटा तप क दीहल की पाप क दीहल अधिका। होलि गइल पीरीथमी

डोले लागल सवंसार। अब कवनी अधरम की मारे भठतारे सवंसार, बरम्हा बेसुन बेकल हो गइले। बेसुन बेकल होइले वृजराज। आजु सइंया तोहरे जरि की कारन ह बीर लेले हउवे अवतार।

त ए सइंया आजु उहे पहिलइ आ अइगवा परल सुहवलि में।
एहिय खातीर बीर केइभइल हउवे अवएतार।
सइयां साचो छोड़ि देब ना आ आसानवा साचो जिरहुलि के।
आपन हाथा फुलहरी में देबू त लवटाइ।
ए पंचे, एनिया रोइ रोइ ना दूखवा हो रनिया कहे,
अउरी अब भीमला गइल बा आ बउएराइ।

गद्य-पद्य : का डांटि के बोलता,—कहे जे देख कहंरिया,
बेसा चिन्ही देवता संकर बेसा हउवे कुल परिवार,
आजु भागे भागे जो नांव ले ले, मीरुता मे जरि जाला देहि हमार,
एहि जाले डंड़ी उठाव स, ले चल स सोना सुहवली पालि,
बहरे बाहर भारी बेटा खोइलनि के, ओहि मोती सगड़ की घाट,
पाछे बियही उतारब एहि सोना सुहवली पालि।
बीर कहले हउवन डोला उठावस ए इस्तीरी के,
आ ले के चल जा सुहवलि में, हम सागड़ पर जाइं।
बहरे बाहर बीर के मारि के त तब बियही के डोला उतारब!
हाँ ऽ हाँ हाँ
पहुँचे उठल जो डोला :निया के,
एनिया उठलि डोला जो रनिया के,
रनिया रोवलि बिपतही भइया बा:,
एनिया बिलिखे ना रानी फुलहरि के।
रनिया रोइ रोइ न करतू बा निघान।
इहे आजु तिरिया न करिया जोरावइ,
देवता मोहल मंडपवा में न बाइ।
वन में गइया ए तृनवा लो तियागल,
बाछावा छीर पियत त नाही बाइ,
रनिया छोड़लसि जो रनिया जो बिपतहो,
डोलवा बरबस जो लिहलस उठाइ।
इहे जो उठल डोला न रनिया के,
चललनि फुलहरि जे केरिया न बजारि।

इहे जब बइठे न हाथा मकुना पर,
जेकरा गजवे भीमलिया परल नांव ।
जहिया दीहलसि अंकुस न हाथावा के,
हाथावा गरजल जंगलवा में न बा ।
तहिया गरजल हाथाइ न अलबेला,
सागड़ सबद जो गइल न सुनाइ ।
इहे जब थर थर न कांपल बा अजइया,
मीतवा जरे चढ़ल बा लेलकार ।

गद्य-पद्य : आजु पंचे जेतना ओढ़ना रहल दादा मरदन के,
लोरिक धोबी का देहि पर गांजत बाइ ।
कहे मीतवा चढ़ि गइल जर गुड़गुड़ी,
सीरे धमक के बथता कपार ।
एक ओर कहरें लागल पाठा अजइया, एक ओर पाठवा कहंरत तमू में बाइ ।
एक ओर कहरें धाजा राउत करबेटा, जेकर बली सीवाधरा नांव ।
कहरें लागल भइया बीर देवसीया,
उ सागड़ पर कान दीहल ना जाइ ।
आरे लोरिका एनिया धइ धइ ना चुपवा जब लागल करावे ।
उ कहंरला का मारे कनवेइ दीहल त ए नाहि ना बाइ ।
आजु एनिया चलल बाटे ना हाथावाभइया भीमला के,
जेकर मुगदर टाने लेइ ना आ पीठिया पर हो बांइ ।
आजू उहे हुंकले रइल ना आ हाथावा भइया बानावा में,
अब हाथा चललेइ सागाड़ावे पर भइया बाइ,
तनिय बबुआ चढे देब ना तमुखुआ देख बुटवलि के ।
जेवना में चिलमी जहाना बे ना हउवे रे बाद,
आजु हमरा गर पर ठन्ढाइ बा मारि ना देले ।
इ लोहरवा पर आइ गइल ना गानावा रे हमार ।

भिमली और लोरिक के युद्ध की तंयारी

हाँ, हाँ, हाँ ऽ
गद्य-गद्य : आजु पंचे, चले हाथा भीमला के, ओहि मोती सगड़ की घाट,
जेतना बीर अलबेल्हा लड़ने में बांक जुझार ।
मचि गइल हाला अब सागड़ पर मोती सगड़ की घाट ।

आवत आ बेटा बमरा के जेकर गजे भीमलिया नांव ।
ऊँचे गादी लाग रहल धरमी के,
दुलहा बइठल बांड़े भुजा फूला फुलाइ ।
अब चले हाथा भीमला के, आ चलल सोना सुहवली पालि ।
आजु भीमला देखत बाटे ना आ रोववा भइया तमूए के ऽ
आधावा उ सुरहनि में करुए रे बिचार ।

गद्य : ए पंचे, सब बीर जाइके मोहि जाइ । बाकी जागलि रहली भवानी, जेकर देबी अपरबल नाव । जेतना माया इनरासन भवानी ले के बइठल तमू में बाइ । देखे रोब भीमलिया अपना मन में करे बिचार । कहे जे आहा दइब नारायन का विधि उगील देल करतार, जेतना धन सुहवल हमरा उमड़ल होइऽ ओतना बीर का लागल तमू में बाइ । जेकर अइसन सुन्दर बा तमू, ओ कइसन बीर लो बइठल होइ मोती सगड़ की घाट ।

आ हाँ हाँ ऽ ऽ ऽ
एनिया सोचे बेटाइ न बमरा के, जेकरा गजवे भीमलिया भइया नांव ।
एनुवे हंकुए हाथाइ न अलवाबेला, चढ़बे मोतीये सगड़वा की न घाट ।
तनि अब सुनऽल बयाल न भीमला के, ओहिये मोतीये सगढ़वा की न घाट ।
जहिया कसुवे हाथाइ न अलवाबेल्हा, जूमलनि मोतिये सगड़वा की न घाट,
जब इहे बाजल घंटा न हथावा के ।
कुल्ही बीर मोटरी नियर गइल लो बिटुराइ ।

गद्य : बाकी जगलि रहलि माई भवानी, जेकर देबी अपरबल नांव, जेवन बीर बइठल बांड़े, उ बीर बइठल बाड़े भुजा फुलाइ फुलाइ । जेकरि आंखि मुंह बा ढुरहुर, मुंख में बीर के सोभे दूधा के दांत, देखे रोब लोरिक के, अब बीर दांतन आंगुर चबाइ ।

कहेला जे आहा मोरे दइब नरायन,
आरे काहि विधि उगिलि देल रे करतार, धनि धनि पानी गउरा के,
जहाँ बीर सीरीजे मरद कर खानि,
आजु लोहावा काबिज बाकी नइखे ।
चलि आइल मोती सगड़ कीय घाट,
जेकर नेतरन में छावलि बा बरवनी ।
मुखवा ले अतरे न चलेला ना गुलाब,
देखत बाड़ ए लोरिक के अ बीरवा ओहि हथवे पर जात बा मुरुएझाइ ।

गद्य : अब बीर जब देखताटे रोब लोरिक के, आ ऊपर जब नजरि जात दूलहा के,

तइ कहता धनि भगवान। रचि दीहलन जोड़ी, रचि दीहलन जोड़ी सतिया के। इ रोब कहे जोग ना बाइ। आँगा ले जब बीर हाथा बढ़ावे, अब भइया कुल्हि जब घुमत तमू में बाइ, ओके कइसन जनाइ। आ त बुझाता जे एकही बुनसे मरद से। एकही रानी का गरभ में कुल्हि बीर ले ले बाड़े अवतार, ओइमे एगुड़ो बुढ़ ना लउके ना एगुड़ो मरद गोंछिवाल, खाली मरद निरगोछिया, तमू में बइठल बा भुजा-फुला फुला। देखे बेटा बमरा के, जेकर गजे भीमलिया नांव, छाती मारे गदेला, धइके पाहुँच बाटे सम्हार। कहत बा जे हाइ गरहन, हाइ गढ़न ए गउरा के कहे के, जे जाहां सीरजल मरद के खानि, एके पख में कुल्हि अवतार लिहलं स, आ एगही रानी के तन से, एइमें छोट-बड़ एगुड़ो नइखस।

आजु दुरुगा करतियाड़ी ना आ खेलवा साचो सगड़े पर।
भीमला के घड़बड़ घड़बड़ जीउवा बाटे घड़बड़ात।
कहत बा जे धनि धनि ना पनिया साचो गउरा में,
सांचवा में बईठि बइठि ना ढरलनि ए सोनार,
इन्हनि के माइ भादो केइय ना हीलिया बा उ रनिया जगवले।
माघावा के जड़िया इना घललीस बुला बाचाइ।

गद्य-पद्य : आजु ले के माघ के जाड़ि बचवली, भादों के जाड़ि देले हई बचाइ।
रानी जेठ के धूप बचा के केवना अनला कइले बाड़ी तइयार।
आजु केवनी फाहा सुतावल, बीरन के अंग तनिको टेढ़ो ना बा।
धनि पानी गउरा के जहाँ सीरजे मरद के खानि।
आजु हा भगवान, आं बारी घुमें में गउरा केवनी कोर में छुटि गइल।
ओ बारी जेवनी बेर महना मंथी पीरीथमी बंटुरी हींड़ि घललीं सवंसार,
अंगुरे आँगुर काढ़ीं पीरीथीमी, दुनियां घुमलीं पाछि लगाइ,
गउरा नगर हम ना देखलीं, जे कइसन बसल गउरा बाइ।
अब भइया सोचत बाड़ें बीरवा बघेला,
आ नाहि अब बोलत केहु से अब हीं बा।
जहिया जब घुमि घुमि वरतिया बा देखत,
ओहि आजु मोतीये सगड़कीये घाट।
एक ओर डेरवा परल बा सुरुंआ के,
खाली लोग टीकल बजनिया न बाइ।

गद्य : अब वीर घुमा के हाथा। कहलन जे भइया, के मालिक तमु के बाटे। केहू मालिक तमू के बाटे ?

छरके बीर बघेला बीर के बंका लोरिक ह नांव कहे जे हं हं हमहीं मालिक बानी।
अब बीर बारह बरीस के गभड्ड आ छरक गइल मोती सगड़ की घाट।
कहलसि जे हमहीं मालिक हवीं।
कहलन जे इ तहसे पुछतानी,
जे केकरा बले भरोसे सागड़ पर तमू गड़वा दीहल।
कहत बा जे देख, संवरू पुनी परतापे मांथ पर मउर गइल बन्हाइ,
संवरू पुनी परतापे सागड़ पर गीरि गइल डेरा हमार।
हमरे लोहा करी बरियाइ सान गड़ि गइल मीरुता में बाइ।
कहता जा जे हमरे प्रभुता से।
डाँटि के लडिका जब बोले।
आ बीर हंसत भीमलिया बाइ।
कहे जे आहा हा जूटि गइल काल कपारे,
मउअति बीर का हीले लागलि माह लीलार।
अबहीं बारी उमिर के लफुंआ सीरे सोभे नवुज के बाल।
अइसन बात जा बोलत,
जे बाति लागत बदन में बाइ।
कहत बा भीमला जे ए बबुआ जेकर लंगरे इ ना ऽ लुझवा,
साचों जूझि बा गइल, सेकरि माइ झांकति होइंहनि ना कुआवां ए बबुआ इनार।
गद्य-पद्य : अनट त तू ठीक बहुत कइले बाड़।
बाइ बबुआ जेकर लांगर लुझजुझि जाला, ओकर माइ झांके ले कुंवां इनार।
जेकर हइसन लालन जो मरि जइब उ गउरा कइसे जोही माता तोहार।
आजु हम कहीं तहरा से,
बबुआ मानऽ बाति हमार।
गाड़ल तमू उखार ऽ चलि जा गजन गउर गढ़ पालि।
जरे बीर बघेला एड़िया दरे लागल अंगार,
कहतबा जे ए भइया ए बीर, अब कहतानी तोहरा से,
हर घरी लरिका लरिका तू जनि कह।
लरिका लरिका तू जनि कह भीतर गढ़ल पुरनिया के हाड़।
जहिया लोहा में लोहा भीड़ाइबि तेगा दू दू खंड़ा होइ जाइ।
मेखड़ा झूले लागी रमे में, गोड़ के पनही टुके टुके उड़ि जाइ।
जे अंग अंग में मेराइब ओकरा तोरब पंजर के ड़ाढि।

घइले डहरि चलि जइब, चलि जा सोना सुहवली पालि।
आपन पिता समझाद एहि मोती सगड़ की घाट।
आज भइया, आज कहतानी बीर,
हम कहतानी तोहरा से, हइ सुन ल अरजि हमार।
चलल जइब चलावल, चलि जा सोना सुहवली पालि,
बारह स मोहरि एकबरी, बीसा मोहरि कलदार,
बीसा सगें के असरफी, कंचर थार लेब भरवाइ,
नाऊ-बारी संगे लगाव ऽ बाबा बोपर लेब लगाइ,
पाँच गो भाइ संगे लगा के, चलि जा मोतीसगड़ की घाट,
दही गुर के तिलक संवरू का देद माह लिलार।
सती का लागो हरदी सुहवलि में,
भइया का मोती सगड़ की घाट।
राइ से सादी जो करव, राइ से करब बियाह।
ना हम करीं बरिआई, चढ़लीं सोना सुहवली पालि,
एहि बेरी, बेरी बेरी के सहकल सुरहन हो गइल भेंट दीदार,
मन के तोहरो पूजी मनोहर, पेट के लालसा घालब बुताइ,
दइब देइ जस लेइ सुरहनि में लेई हाथ पसार।
एही सतीजियार के कारन सुहवलि डालि के जाइबि हड़वार।

आँ हां ऽ हाँ।
आजु बोले बेटा बरती के देवकी नन्दन राजकुमार।
कहे जे सुन लेब ए बीर अब मान बाति हमार।

गद्य : आपन तिरिया उतारि के आव, तब लोहा लागो मोतीसगड़ की घाट। काहे जो दइब गुनल जो रखिहन बिधना पुजइहन आस, अगर जो जूझ जइब सुरहन में, उ डोला में रहि जाइ रानी तोहारि।

पंचे, आजु जहिये दिननवाके बातें, तनी अब सुन ए समर कर हाल।
जेंव अब घुमल बा हाथा न सुरुजा के,
अब जव उतरे भींटा पर चलि जाइ।

गद्य-पद्य : आजु घुमें हाथा अलबेल्हा, उतर भींटा दबवले जाइ।
जाहां गीरल डेरा बजनियन के, तड़पि के बोलल भीमलियाबा।
कहे, हे बजनिया ई पूछवानी जे केकरा जांघि करी बरिआइ,
सागड़ पर लकड़ी दीहलऽ बजाइ।
सरहंग बजनिया गउरा के भइया उठि गइल स अउंजाइ।

कह स जे संवरू पुनि परतापे आ किला में धाजा गइल गाड़ाइ,
लोरिक करी बरिआइ हमनी के डागा बाजत बा जुझार ।
आजु बाकी काल्हि पुरबे लागी रन लोही, पच्छीं होखे लागी उजियार,
बाजी बावन स जोड़ी नगारा, तोरपन सइ करनाल,
बीसास तुरही बाजी सींगा करी गुहारि गुहारि ।
बाजी बाजा दलगंजन धरती उठी अंतहकाल,
परी मारि सीवाने, पांजा हेलि चली तरवारि,
सती जीयार का कारन सुहवलि परि जाइ हड़वारि ।
सोचता भीमलिया जे हइदेख दादा ।
इ नरम जाति बजनियन के ह, आ इहनो के तनिको अदबे नइखे ।
त साचो लोहा के गड़ाइ होतिया,
आ लोहा के गउरा बाटे रोजिगार ।
बाइ इआन करे लायक नइखे, ओइजा न हाथा जब लटकावातिया,
आ पंचे तनी सुनल बयान भवानी के जवनी बइठ रहली मोती सगड़. की धाट ।
जे बीर के हाथा लवटल ह से भवानी बाघ सिंह के डंवरू,
रथि जब जोति देली बेरुन कुबेर ।
अब देबी छोड़ि देली संग-दूलर के,
बा मेल्हि—गइली इनरका पवन दुआर ।
हं ऽ । आ हाँ ऽ हाँ ।
एनिया घुमुवे बेटाइ न बगाा के,
जेकरे गजबे भीमलिया भइया नांव,
दुरुगा चढ़िय गइली न इनरासन,
ओहि आजु बरम्हे का पवने न दुआरि ।
एनिया होत बाटे ना गठ-बन्हन,
आ उहे भीमला जुमल सुहवली में न बाइ ।

गद्य : जे मकुना ले उतरि के आ रानी के डोला छिप रहल, आ अब पंचे जाके गठ-बन्हन होता । बीर जब अपनी रानी के उतार ताड़ें । तलक भवानी अरदास दागि दीहलस ।

गद्य : कहति बा जे ए भइया अब फारि देब लिखनिया देखब बरम्हा के, जे इहे दिन कें बाते आंगे सुनी समय के हाल, सुनी पंवारा अलबेल्हन के लड़वइया सेर जवान, जेंव भीमला आपन तिरिया लागल उतारे । तबलक देबी बोलतिया

भाइन का पवन दुआर, कहे जे भइया मोरि अलबेला अब बीर मान बाति हमार, लाग गइल कारज मीरुता में, भीमला गइल मोतीसगढ़ की घाट। लड़िका बाटे हाथा घुमवले, घुमि के गइल हाथा सुहवलि में बाइ। फारि द लिखनी इनरासन, एहि इनरपुर बजारि। आजु पंचे, जेवनी धरी भवानी जाइके, माइन के अरज लगावताड़ी ओ समे में बीर इस्तीरी के ले के अपना डोला उतारि के, आ कोहबर में देले हउवे बइठाइ। कोहबरि में बइठावतियाड़ी आ भवानी बोलतियाड़ी जे भइया फारि द लिखनी सुरुआं के। बेटा हमार गइल बाटे सुरहन में, आ भीमला लवटि गइल बा सोना सुहवली पालि। अबको लवटी बीर बघेला, आ चढ़ि के आइ सोना सुहवली पालि।

आ हां हां—
आजु पंचे जाही दिन के बाते, तनी सुन समर के हालि,
अब भवानी लेके बरम्हा अमर उठवलं।
लिखनी उठलि इनरपुर पालि, रोवे अमर भीमला के।
कहत बा जे ए बाबा जेवना हथवेइ से,
गंछिया साचो रोपि ना दिहल।
ओहिय हाथे टांगावाइ लिहल रे उठाइ।

गद्य : जो हमार कटही के रहल, त काहे के लिखके पूरन कइल। हंस के बोलताड़े बिधि बरम्हा ओहि इन्दरका पवन दुआर। सुन लिखनी भीमला के। अब वीर मान बाति हमार। इना तोहके भेजलीं जे जाइके करीह अनरथ बसुधा में, पाप कइ दीह बरियार। कइ दीहलऽ पाप सुहवली में। धरती बुतन नाही आड़ाइ। हीलि गइलि पोरीथमी उपर हीलि गइल कैलास। विधि बरम्हा के लिखनी, तहियें तोहार गइलि हउ ए निगराइ। अनरथ कर दोहल। पाप हो गइल। अधरम से मउअत घटे ले आ बढ़े ले, बहुत तूं पाप क दीहल, उ हे चर दे ने ले के फार दोहलन।

आ ओही समे आजु पुरियाइ गइलि बा भइया नलिया के,
आ टूंगे खातीर सुहवलि न केरिया रे बजारि।
आरे रनिया के माहुर भइलि ना आ पुरिया दादा सुहवलि में।
आ जहर ओके लउकले पुड़ियवे ले न बाइ।

गद्य : रानी बोलस, जे अरे पुर टुंगि ल ऽ। आ ओकरी नींद जारी करे। ए भइया आजु रोवे बेटी फुलहरि के, जेकर फुलेकुंवरिये नांव। रानी लो कहे, जे सुन टुंगि ल पुरी, आ ओही में कहंस जे आरे दादा इ काहां ले बेसा ले आइल ह भीमलिया। इ त आवते मे पह्ड़क पसरलस।

आरे बूजरी आवतेइ झागाड़ावा लाइ घारावा में ।
इ पुरी टुंगति नाहीं सुहवली में हो बाइ ।

गद्य : ए पंचे जब, एतना कान से सुनतिया रानी। कहे जे हा हा अब रानी बड़ी हिम्मत बान्हि के पंचे, आ रस से तनिकी भर पुरी टुंग लिहलस। संगे लेले हउवे रसियाव, रानी जब दांत में ले गइलि बा भइया पुड़ी उ पुड़ी लउकेना ।

आजु रनिया हुलुकि हुलुकि न रोवलि हउए बखरी में,
सुहवलि में फाटि गइलि छतिया रे हमारि ।
सुहवलि केहूए मरमिया ददे न जाने,
समवों के बेसवा बनवतो लोग ए बाइ ।
अब त बाबा हद हो गइल ।
आ हा ऽ हा ऽ हा ।
आजु पंचे जाही दिन के बाते,
तनी सुहवलि के सुनिलेब बयान ।
जब पाठा आपन हाथा उतारि,
के आ जब ले आइल दुआर बाइ ।

गद्य : हाथा के बीर जब आंकुस देके, आ उतरि गइल दुआर पर बा पंचे, दुआर पर जब उतरि गइल ह त बइठि गइल अपना बंगला में। आ नाऊ के भेजि दीहलसि पंडित का पवन दुआर। हे भइया नाउ ब्राम्हन लो के जे विदमान होखे ओके ले आव हमरी देवढ़ी पर ।

ए पंचे, एने जो धावनि, जो जातिया बाम्हन लोके दुआर पर, दुरुगा ले ले रहलि पोथी इनरसनी । मेल्हति आइल भइयन का पवन दुआर। कांखी तर पोथी दबा के देबी रंधि नाधि के ओल्ही अइलि मोती सगड़ की घाट। अब भइया रहल बेटा बमरा के जेकर गजे भीमलिया नाव। बइठ रहल बंगला में हाथा झूमत दुआर पर बाइ। भेजे धावनि अलबेला ओहि पंडितन का पवन दुआर।

आजु पंचे जाइके धावन कहताड़ स जे आजु ठाकुर गवन करा के लवटल बाटे, आ तोहन लोके बोलावताटे दुआर पर पंडित। जे विदमान होखे गुन में आगर साइत सोचत होखे, ओके ठाकुर बोलवलं हं। अं जब सुनले लो बाटे पडित भइया ले के ओही सोना सुहवली पालि। दू चार जाना संगे लो चलल ह। आ कांखी तर पोथी लो ले हउवे दाबाइ। चलल लोग आइल चलावल, आ जुमि लो गइल सोना सुहवली पालि। बइठे पाठा भीमलिया ले के गज में छाती नाहीं आमाइ। जाके चरने में सीर नवावल ओहि देवता लोग असीसत बाइ। कहे जे जीय जीय

हो बबुआ। जीय लाख बरिस अब खांड़। गंगा जमुना जल बढ़ो आइ से बढ़तो आयु तोहार, केवन कारन लाग गइल जे हमनी के ले ले बाड़ बोलाइ। कह तारन बीर जे हे बाबा। तनी बइठि जाइं सभे, रेसम सूत के खटिया पर। आजु अपने बीर उतरि के बाबा बीपर लो के पलंग पर बइठा देले हउवन।

पंचे ले के ओहि सोना सुहवली पालि। अपने मोढ़ा लगा के बीर जब बइठ गइल कहता जे बाबा मानऽ बाति हमार। आजु हय सगुन खातीर रउवां के बोलवले बानी, पोथी खोलीं जे केवनी घरी हमार साइत बाटे लड़े के ओ बीर ओ मोती सगड़ की घाट। पंचे एनियों देबी पोथी बाड़ी उभरले, जहाँ बीर बइठल लोरिक के बाइ। दूनों सगुन भइया संगही उचरल सगुन जब सुहवलि में का उचरल। कहल लो जे हे बीर तोहार सादी बाटे साइत जे आधी रात मरामरि जो राति टुटति रही निचलहा, जो लागि जाइ लोहा सुरहनि में, ओहि मोती सगड़ की घाट। जुझी घेटा बाघिनि के, सुरहन जीति निकलत बाइ। देबी कहति ह हाइ बेटा।

हे बेटा। आजु तोहसे कहतानी जे बीर जो चलि आवे सागड़ पर केतनो गरजे रात में उठि ह जनि। दाबि के बोले बीर लोरिक कहे हा भाई आजु इहै सिखाव ताड़ू। बीर जब आइके हांके लागी आ हम सुति रहब त हमार जनम बिगड़ि जाइ। जो परि जनम हमार बिगड़ि जाइ। पड़ि जाइ नाउ भगुआ। पड़ि जाइ कुंभि नरक की गाड़ि। आ जियत दम रही, हड्डी में लोटत रही बाया हमार। जेंव आइके बीर सान देखइ हं लड़े खातीर निहचे हो जाइब तइयार। देबी लागलि मोह-हाथ टांगे, कहलसि जे आच्छा ठीक बा। मनब ना बाकी आ त ना, मान ना सकबि पंचे फेरु जब बाभन ओने सगुन बा लो देखत जे भीमला बाकी पूरबे जे लोहीं लागि जाइ, पंछी हो जाइ उजियार। कउवा टेरि उठाइ, भोरे भोरे हो जाई बिहान, लागी लोहा सीवाने, पाँजा हेलि चली तरवारि, जुझि जइब सुरहन में, जस लिखत अहीर के बाइ।

पंचे उहै सगुन लड़िका के देखावतिया जे देखावतिया :जे देख, अब तू मानत नइख, हइ दिन में जो लोहा लागी तबे जीत ब। राति में लोहा जो लागी, राति मे जो लोहा लागी त ई तोहारि बा, जीती हारि बा बेटा, ओ बीर के जीति लिखलि बा। कहत बा जे भइया मोर भवानी जो तोहरा धरम का पालि। जीयला के ललसा नइखे, ना मुअला के बनल बाटे पछताव, जेवनी घरी बीर चलल अइहें चलावल मोती सगड़ की घाट। जेवनी बेरि हमरी काने मनक परि जाइ, हांके लगि हं मोती सगड़ की घाट, मले मटिया अवघट में डुबि जाइ एहि मीरुत मंडल संवसार, जो सुति रहब मीरुता में इनरपूर परि जइब नरक के कुण्ड लेलकार। केतनो भवानी समझवले हवी।

ए पंचे बीर माने ना। बाकी अब सुनि ली खेला सुहवलि के। अब त सगुन परि न गइल। साईत परि गइंलि, आ अब भीमला भरि दिन पंचे हाथा के बान्हि दे ले ह दुअरा पर। अपने बइठि गइल ह कीला में आसन दबाइ। बाकी जब डुबि गइल डंफ सुरुज के घर, घर दीया होखे लागल लेसान। ए भइया घर घर जो बिजन बने लागल, बने लागल जेवनार, जेवनी बेर सब पंच खाइ के उठल हउवे, सुख के नीनि, आ बीर उ कुंहरत बंगला में बाइ। उठ उठ जाइ के निहारे। जब भइया चारि घरि राति के, जब पंचया में चललि बा, तब बीर उठि के आपन हाथा कसे लागल।

अस्सी मन का मुगदर लेकर
हाथी पर सवार होकर मिमली का युद्ध करने जाना

अं जवनी बेरि उठल बेटा बमरा के, जेकर गजे भीमलिया नांव,
कसे लागल जे मकुना भइया सोना सुहवली पालि।
अब बीर जब कसि के हाथा तेयार ह कइले।
आ अस्सी मन के मुगदर बीर का हाथा गरदन देला झुलाइ।
अपने पाठा जब लागल कसे लंगोटा,
ऊपर माल बरन के गाँठ।
बान्हे पेटी अजगर के जेइमें गोला ज्रुमुस ना खाइ।
भइंसासुर के पांजरि बीर के छाती देले रहल लटकाइ।
आ जवनी बेरि बान्हे पाग गुलाबी,
जेंहि पर जिला अलंग फहरांइ।
अली गंज के जूता गोड़ क मोजा दीयवजे बाइ
अब बीर गोड़ में मोजा लगावल ओहि सुहवलि केरि बजारि।
बान्हे पाग गुलाबी जेहि पर जिला अलंग फहराइ।
ए पंचे, अब त राति जान जे चललि केतना,
आ त पाँच ले छव हो गइल।
त अब बीर उठि के हाथा के आ हाथ पर असवार भइल ह।
आ जेंव देता आंकुस हाथा गुरज के उठि गइल।
बाको ओने सुनिलीं खेला सुहवलि के,
इस्तोरिन के ओ बीर के इस्तीरीन के।
चार सादो भइ रहल ओ बीर के,

पंचवे आइल फुलकुंवरी नांव
उ से रानी बा फुलकुंवरी, जेवन रोवे।
आई चारि जानी लो बा, चारि जानी,
बा लो त ए भइया खूब उमिरल।
बारे बारे मोती हीरा जर स माँह लिलार, सोन के अरसी बनल,
सोन के तार घींचवले बाइ।
सोनन करी छबिया रानी के डोलल सीरहाने बाइ।
जवनी बेरि बइठि के अवरन कइके भइया,
आ लुगा पेन्हि के आ बइठि के दीपक बारि के,
आ कहतियारी स जे आजु पग पुजे के परी।
हमरी पति के, लड़े जइहें।
आजु फुलकुंवरी भइया कुंहुकिया कुंहुकि के रनिया न ए रोवे।
कोनावा में मुंड़ियाइ ना दीहलसि रे लगाइ।

गद्य : पंचे, बिधि बरम्हा के लिखनी, सुजनी गइलि हउवे नियराइ। अब हाथा बीर जब हांक ताड़न, त ले गइलि आपन फाटक पर बाइ। बोलता जे हे लउंड़ी अब तिरियन के दे दे खबर आइ के हमरी पग के पुज दं स। पंचे सुन ल गाना सुहवलि के, सुन ल गाना सुहवलिके, एहि ले के सोना सुहवलि पालि। जेवनी बेरि जुमल हाथा भीमला के, चलि गइल अपना पवन दुआर। डाले अडर तिरियन के जे पुज द जा पग ललकार। त भइया चारि गो रहली स, अंग में गहना मरि के तेयार लो रहल। आ अबकी धइके तीलि अछत अब चाउर, गुर धइल बगल में बा। धइल रहल दही गाइ के। ओहि सोना सुहवली पालि। जब बीर के आवाज लो परल त, आजु जेठकी हाथ के आरती उठावल।

आरे उठि गइल सोना रे सुहवलिय पालि,
चारि गो जो नरिया बाड़ी स भीमला के।
आरे चारु आजु जुमली बाड़ी न ललइकार,
उतरे हाथाई बइठल बा बीर ले ला।

भिमली की पत्नी की व्यथा

गद्य-पद्य : उतरे हाथ पर बइठल बाटे।
आ बीर जब हाथी के आंकुस देला दबाइ।
हाथा जब पटके म ऽ उर धरती में।

अब सिर पंचे धरती देला नवाइ ।
अब जो जुमली स नारि भीमला के,
अब रानी तिलि अछत जब चाउर ले के,
आ दही गुर के बुन्दा हाथा के लिलार पर देइ के,
अब रानी पुजे लगली स ।
आजु भइया पुजे लगली स हाथा भीमला के,
सुनल ऽ सोना सुहवली पालि ।
आ जेवनी बेरि रानी जब पुजि के हाथा आ बीर के धेना पुजत मुगदर के बा ।
पती हमार लड़ने खातीर जा ताड़ं एहि मोती सगड़ की घाट ।
तिरियन के दुना मन होला ।
आजु जेवना दिन के बाते, पंचे सुन समर के हालि ।
आजु बीगरि गइल दिन मीरुता में, इ फँसि गइल गला हमार ।
बटुरी गीति हमार बेकार होतिया,
पंचे बाकी काइ लगला से ठेलि के ले चल तानी ।
आजु जेवन बीर सजेला आंगे सुनी लगन के हालि ।
जब इस्तीरी हाथा पुजि दीहलों स आ हटि गइल लो त भीमला बोलता ।
जे हे बियही, इ तोहसे पूछ तानी चारिगो तोहनी का आइल बाड़ू,
चलि के तनी पाँव पुजि दे ।
जवन होइ तवन होइबे करी । सोचतिया रानी,
सोचे रानी फुल कुंवरी अपना मन में करे बिचार,
हा हो दइब नारायन का विधि उगील दीहलऽ करतारि ।
बिधि बरम्हा के लेखनी बीचे मेटे जोग ना बाइ ।
ना पग पुजे जाइब त अकलंकी हो जाइ बया हमारि ।
रोइ के उठलि ह रानी भइया सोना सुहवली पालि ।
उठे रानी फुलहरि के, आजु बबुआ सोना सुहवली पालि,
जब खाड़ा भइलि, आ लागलि आपन अभग्न खोल के धरे ।
जेतना पंचे अभरन पहिरले रहलि, से मये अभरन धरतिये, धरतिये ।
कान्हे छीर दखिनहो, पंछी लागल हटे हजार ।
जेवनी बेर पेन्हले रहलि चोली मखमल के ।
जेवना में झुरझुर लागलि बयारि ।
रानी बीगि देले ह चोली, साड़ी खोलति दखिनही बाइ ।
पंचे जब साड़ी रानी खोलि, के केङा बनि के चललि ह ।

अब पंचे, सुनल बयान रानी के।
अब आपन छोड़े छींटि दखिनही,
आ खोलि के आ ले के रानी बदलति लूगा के बा।
कइसन लूगा पहिरतिया। आ त एकदम पुरान।
आजु रानी तन में लुगरी हुंउवे पहिर ले, ओहि सोना सुहवली पालि।
आजु भइया जवनि बेरि काढे झूला अलबेल्हा, जेकर फाटाहा निकले रहल ऽ
आजु रानी देहि के ओहिरन बाटे खोलि दीहली स।
कैंगो चललि, पंचे आपन बढ़ुरी रूप के हीन कइके,
हीन कइके आ उ
चार नारि भोमला के हंस स,
जे ए दुनिया के अन्दर अइसन पागलि बाटे इ बुजरी,
इ त जेवना ढंग के बनलि, जे भगवाने पार लगाइ।
हंसत लो जाइ, आ उ रानी, पंचे जब हाथ के अरती उठवलसि,
आरे रनिया रनिया उ झूंकति बगलिया में बाइ,
तनि के भंवरवा बा चलति वाड़ी रानी,
जइसे रानी घटिया नहाये लोग जाइ,
ओंगो रनिया झूकि झूकि गोड़वे दबावलि,
तनवा पर झूललि लूगरिया रे बाइ।
अब रानी चललि जब गइल चलावलि।
आरे झोंकतू अ चलली बाटे न लेलकार,
अब रानी चलिय गइलि वे कीलवा में।
जहां हाथा मउर लगवले न बाइ,
जुमि गइलि नइया सांचो रे भोमला के,
जेकर भइया फुलवे कूंवरियेइ नांव,
अब रानी चललि हो गइलि जब चलावल।
आरे नीचवा जो माथवा देले बा लटकाइ,
उ हे जब तीलिअ अइस भइया चाउर,
आरे दही हाथवा का देइ दीहलसि मंहवा लिलार,
पुजे लागल हाथावा सांचो न अलबेला।
आरे रानी अब पुजि के भइलि रे तइयार,
जेवनी रनिया अब हूटे के बा कहति।
भीमला उ हंसे हाथा पर लेलकार।

सती शत्रु है – मिमली की पत्नी का रुदन करते हुए कहना

गद्य : बीर हंसता । हाइ बियही, हाँ हाँ इका कइलू । आजु का कइलू, एहि ढंग से हाथा पुजाला । कहतिया जे सइंया मूरति नारायन, हाइ धन सेनुर के लागे ल मोआर, जाजु कहतानी तोहरा से सइंया मान बाति हमार। तोंहरा ठट्टी भर जीयतिया सुहवलि में, बेवा हो गइल बानी हाइ पती । ठट्टी अब हीं जी रहलि बा तोहार, हम बेवा उहै पुरी टंगुवे तबे हो गवीं । आजु रानी रोइ रोइ भइया, बिलाप कइ फइ कहतिया– हाई पती । हाई पती ।

बेरि का बेरि बरिजलीं सुहवलि ना मनल कहलि हमार ।
सती जनम ना जामलि, सतुर ले ले बाटे अवतार ।
आजु ना इ जामलि रहिती सुहवलि में,
ना इ लोंचि उमीरि में होइति हालि हमारि ।
ए पंचे अब रोबे, रोवे नारि भीमला के,
अब चारि जानी धइके कठुआइल लो बा ।
का कहले ह, कहत बा जे ए पती,
आजु हम केवन ए बीर के दोस दीं ।
बेरि बेरि तोहके पयणा समुझावत रहुँई ले सइयां जाये द बात जहनम,
जनि चल सोना मुहवली पालि, फेर द हाथा मीरुता में ।
चल फुलहरि केंार बजारि,
तहार ऊंचे गादी लगवाइब धरम देखत रहीह अनियाय,
मुहवलि जनि लवट करुआम्न सुहवलि में जाये जोग ना बाइ ।
तव कहुअ जे बेसा कीनी बेसा तोर बेसा हउवे कुल परिवार ।
आजु हमके गारीं दे के बरबस डोला देले उठवाइ ।
सइयां विधि बरम्हा के लिखनी सुजनी सांचो गइलि नियराइ ।
जहिया भइल जनम इनरासन, ओइजा रहलि बाया हमारि ।
ओइजा देखलीं बल सुरुआं के ।
नाहि मऽनल कहलि हमार ।
आइन डाइन ना पूजे, ना पूजे भूत चंडाल ।
पूजे बहिन बरम्हा के जेकर देवी अपरवल नांव ।
तोहरा नियर हमरीन के केतने गांफि घालीं निकालि ।
ओही घरी बरिजत रहलीं तोहरा के ।
बाइ अब सइंया हम कहतानी ।
आ सिखवतानी जे अब रहे जोग नइखे । जइसे तू लड़े के कहताड़ ।

त ओकरा ले अधिका हम लेलकार बान्ह तानी ।
हांकि द हाथा अलबेल्हा, आ मोती सगड़ की घाटि,
गरजे लागल सुरहनि ओहिं मोती सगड़ की घाट ।
सइंया मूरति नारायन, धनि सेनुर लागल मोआर ।
कहत बानी मोरुता में भारत देले जाइ गढुआइ ।
लागी लोहा के लउजा हीका बहे लागी तरवारि ।
देखि लिह अलबेल्हा के, जब लड़ी मोती सगड़ की घाट ।
जवना सान में चलल बाड़ु,
सगुन सोचि के आ ओहिसान में आदि भवानी बइठलि बाड़ी ।
तू अपना सान में भूलल बाड़ ऽ । आ छइ खुखसत लोग बा ।
त इहो कहि दे तानी पती,
जहिया जुझतारऽ सुरहन में, त सुरहनि में जुमतिया बाया हमारि ।
अगर जो न पती के ले के सती भइलीं ।
नाहीं, पती के ले के सती होईबि,
तबे बाचीं धरम हमार । रणापा खेइके ना हम झुलनी के देखइब बया ।
तब ले रानी लो हंसताटे, घुमि के सब मेंहना देले बाटे उजियाइ ।
सइंया चढ़ि जा लड़ने के, आ अब पाछा एड़ जनि देखइह ।
नात परि जइब कुंभ नरक को गाडि ।
सइयाँ अगीली धार पर जूझब, तोहार बनलरही कइलान ।
हमरो बनी जनम मीरुता में, तरि जाइ सवंसार ।
भइया, कहत बानी हे पती ।
खबरदार से जइह, लड़े खातिर, जे में जे आँगा सिर ढरके ।
पाछा जनि गीरे सिर तोहार ।
पंचे, रानी अपनी पती के समझाव ताड़ी ।
आ उ बीर धीयान होके सोचता कहतबाड़ें भीमला जे का अडर होता ।
कहतिया जे अब का अडर होता ।
अब उर अडर न होइ जे चल फुलहरि ।
आ रहि आ सुहवलि देख, अब हमार मन के पुछताड़ त हाँक हाथा अलबेल्हा,
चलि जा मोती सगड़ की घाट ।
ज दिन जियति रही दम सुरहनि में,
त दिन सुहवलि मेंरही बया हमारि ।
जहिया जूझि जइब सुरहनि में ओहजा जुमीबाया हमारि ।
लेके सती होखबि ओहि ले के मोती सगड़ की घाट ।



अब हम रहे के ना कहब ए मुंह से ।
भीमला कहता जाइँ, हाँ कि द हाथा के ।
अब पंचे सुन ल हालि सुहवलि के ओहि सोना सुहवलि पालि ।
बइं बइं हालि फुलकुंवरी बटुरी कहि के दे ले सुनाइ ।
सइयां सान से जीय ठठरी में, ठठरी में जीयता देहि तोहार ।
कल्हिय हम बेबा हो गइलीं जेवन टुंगी पूरठ रहलीं रसिआव ।
आ तोहके डहरो में समुझवलीं जनि जा, तू अमरमें जनि भूल,
अमर लिखा आइल दूनिया,
बाकी उ आइन डाइन ना पुजे, दादा ना पुजे भूत बेताल ।
लिखलि कलम रहल इनरासन आ ओहिजा हे पती हम देखले हइँ नयन पसारि ।
आजु उहे बीर ना मानल चढ़ि आइल सोना-सुहवलि पालि,
ओ बीर के हम केवन दोस देइं,
आ हमरो आगि लागल करम में बाइ ।
आजु सती ननद ना जमली, सतुर ले ले रहिती अवतार ।
पहिला बीजनि ओकर परि गइल सुहवलि में,
अव ही केतने रानिन के सेनुर उ बीर धोइ खाँड़ मुँड़नि के धार ।
स्त्री बयान कइलसि जे पहिला चरन में,
हमरा सुहवलि इ बीर जूमल आ हे पती केहू के सान ना रहे देइ ।
आ अब एतना कहिके अपनी पती के आ भीमला जब पंचे देला आँकुस हाथा के,
हाथा जब भउर देले हउवे उठाइ ।
अस्सी मन के मुंगदर, अब झुलत गरदनि में बाइ ।
अब बीर बइठि गइल हउदा पर ।
ओहि ले के सोना सुहवलो पालि ।
हाँके हाथा अलबेला बीर चलल सागड़ के बाइ ।
अधी रात भराभर राति जब टुटताटे निचलहा ।
चले हाथा भीमला के, देबी पहुँचलि तमू में बाइ ।
दूनो हाथ के कंस दबाके आ लरिका के नीनि लगवले कठिन जे बाइ ।

भिमली का हाथो पर सवार होकर आना
लोरिक से युद्ध, दुर्गा द्वारा अहीर को सहायता दिया जाना

पंचे, भवानी बीर के कान दबाइ के,
आ जम्हू ले के, जे टुटे नीनि इनिकरि जनि ।

दाबि देले बा भवानी ।
ओहि समे में जूमल बेटा बमरा के, जेकर गजे भीमलिया नांव ।
भीमला करी गरजले डांड के गेरुवा कार पहार,
कहे जे सुन बीर लड़वइया, सरउ मान बाति हमार ।
आइल हाथा अलबेल्हा, आ लडे के जल्दी होखऽ तइयार,
कस देब लंगोटा चल चलीं, सुरहन जइब ।
हेठिआइ मन के पुजो मनोहर ।
पेट के ललसा जाइ बुताइ ।
जेतना बीर करधनिया सब पसरले बा से बिटुराये लागल ।
अब पंचे मर्द अब गरज बान्हे,
तब बीरन के हलख सुखि जाइ ।
आ भवानी बीर के ले के कान दबाइ के,
आ देबी बईठि गइलि मस्तक पर ।
अब भइया भरि राति भीमला गरजल ह,
ओहि मोती सगड़ की घाटि ।
पूरुबे लागल रन लोही,
पंछी होखे लागल उजियार,
कउवा टेरि उठावे, भोरे भोरे होखे लागल बिहान ।
गरजे बेटा बमरा के गारी देले लोरिका के बाइ ।
कहे जे बहिन चोदी, बीर लोरिक,
तहरी फारी माइ के गाल ।
सरऊ बड बड़ पइन पुअइल मरल बड़वरे गाल ।
देबी ढील हाथ बा कइले, ओहि मोती सगड़ की घाट ।
सुने बीर बघेला बीर के बंका लोरिक ह नांव ।
उछड़े बीर अलबेल्हा, तमूमें पाव पसर कुदि जाइ,
भला भला रे मनबे बाति हमार ।
अब लड़े के हम तेयार हो सीखब,
काहें कहल ह जे आइल ह जे आइन हइं सांझे के,
आ एकर मरम तू जनि मानऽ ।
अब हमरा तोहरा बिधि बरम्हा के,
लिखनी सुजनो गइल बाटे नियराइ ।
तनी कसे देबऽ लंगोटा ।

देहि के समगीरिही लेइं सड़ंसाइ । लड़े के करी तैयारी,
भइया एहि मोती सगड़ की घाटि ।
मन के पुजे देइ मनोहर, पेट के ललसा देइं बुताइ,
देइ दिहन से लेइ सुहवलि लेइ हाथ पसारि ।
आज एतना कहि के बीर जब उठि गइल,

लोरिक की वेशभूषा

आ अब कहता जे हाथा वेलमा द ।
अब लोरिक पंचे ओइंजा अब बीर उल्टा कछा लागल चढ़ावे ।
ऊपर माल बरन के गाँठ,
घींचे पेटी अजगर के जेइमें गोला जुमुस ना खाइ ।
भंइसासुर के पांजरि अब बीर छाती देला लटकाइ ।
हंस हंसिन के जोड़ा दूनो परि गइल पीछ वाड़,
भंइसासुर के पांजरि अपना हीका दबवले बाइ ।
गोली के केवन चलावों, बरछी दू दू दोबर होइ जाइ ।
घींचे पाग गुलाबी, जेइ पर अलंग फहराइ ।
अलीगंज के जूता गोड में मोजा लेला लगाइ ।
बायें ओड़न नेपाली, दहिने खंसलि बिजुल के खांड़,
छपन छुडी बगल में बीर के लिगी झूले लागल तरवारि ।
उठे बीर बघेला एहि मोतीसगढ़ की घाट,
बारह बरिस के गभडू अन्न बीर सोरह बरीस पहलवान ।
जबहीं पातरि पातरि बा पीडुरी, उनरी बरनि करी हाव ।
उठे बीर बघेला, तमूले गइल बाटे अहिरियाव ।

सुहवलि की अविवाहित कन्याओं की मनौती
लोरिक की विजय की कामना

छत्रीस बरन के बेटी सुहवलि ताक स ओसरी लगालगाइ ।
आहि दादा जब देख स ओ दूलर के रानी छाती मारे गदेला,
धरती गीरि परली अललाइ ।
खोलि के आंचर बिनवली, बाबा सुरुजे करे लगली धिस्कार ।
जब बाल रूप देखली स त हाइ हाइ करके छत्तीस बरन के बेटी,
ए पंचे आंचर खोलि के पचे सुरुज पर मस्कार दीहलीस ।
कहली स जे हाइ सखी,

हां, हां, हां, ऽ ऽ ऽ
आजु जेकर लंगरलूल मरि जाला ओकर माई झांके ले कुआ इनार,
अब हउ बाघ का आंगा इ लाल लड़े जोग बा बटुरी।
हां हां अभागिन घुमि गइल,
अभाव घुमि गइल खोइलनि के।
जेकरा कोखी ले ले बाड़ें अवतार।
अब पंचे अब बीर जब लड़े चलल,
हा त छतीस बरनि के इस्तीरी आंचर बिनय के का लो कहता।
कहं स धनि आदित नाथ गोसाईं,
रउंवा हई बभन के लालऽ
बारह कऽला होके उगलीं, सोरह कर तानी बिसराम।
हमनी के दुख ना बूझलीं एहि मोती सगड़ के घाट।
बाड़ आजु करतानी जा भखउती मन तन से,
सुरुज बाबा एही मीरुत मण्डल संवसार।
निकड़ल बेटा-बाघिनि के, अबहीं निपटे बाड़े नादान।
हो गइल भेंट सुरहन में, जेकर गजे भीमलिया नांव,
बाकी बाबा जब जूझी बेटा बमरा के तोहके देइब जा दूध के धार।
पंचे जेतना बेटी सुहवली के रहली स।
उ भखउती कइ लो रहल बा बीर लड़े के उठि गइल।
आज हंसे लागल भीमला जेवनी बेर देबे लागल जवाब,
कहे जे सुनल भाई। काल तहार पुजि गइल।
का लड़ल रहल काल्हि। कहलीं जे उखारि के चलि जइह,
हमार तोहरा मोह नइखे लागल।
बाइ मोह केकर लागति त तोहरी माता के।
काहें जे जुझि जइब, हउ रानी जब अहके लागी,
त हमरा पाप होइ ए दादा।
त कहता जे सुन सुन ए भीमली मान बाति हमार।
आजु पंचे जेवनो बेरि दूनों वीर हेठिया गइलें,
ओहि मोती सगड़ की घाट।
आजु देखे बीर बघेला। संवरू ताकता नयन पसार।
आहा हां आजु हमार जोड़ी लड़ेके ऽ ऽ

आजु माथे गउर बान्हि के दुलहा बइठा दीहलं,
आ अपने लड़े के हो गइले तइयार।
बीरन का बातचीत होतिया कहताड़ें,
जे देख लोरिक तहरा तनिको हमरा माया नइखे।
हर घरी कहतानी जे गाड़ल तमू उखारि द।
त उलटे बोलताड़ बाड़ तोहार मोह हमरा नइखे लागल,
बाड़ मोहतहरी माता के लागतियाटे ,
का लागतियाटे, जे जेवनी बेरी जुझि जइब सुरहनि में,
आ गउरा अहके लागी माइ तोहार।
त कहता जे आहा त सुनल हमरो,
ए भीमल तोहार मोह नइखे लागल बाड़।
मोह लगतिया हमार मुहवलि में सामु के,
जेवनी बेरि जुझि जो जइब सुरहनि में।
आ सती के दुअरा लेइबि बइठाइ।
रोइ रोइ तहार माता कहे लागी।
जे हाइ त बबुआ आजु हमरा बेटन के मारि के।
आ बेटी के ले चलल सोना मुहवलि पालि ।
तहिया भीमला फाड़ि जाइ छाती ।
जरे बदन भीमला के, एड़िया दरे लागल अंगार,
कहे जे बजर परो ए लइका तहरा पर गीरो गजब के धार।
हर घरी तू सरंहगिये बा। बातयात ताड़।
सजग होख तू लड़े के। लड़ने के सजग होख।
छरके बेटा बघिनि के बीर के बंका लोरिक ह नांव।
अब दूनो बीर भइया गांग पर लड़ने के तेयारी लो करता।
हाथा खाड़ा हो गइल बगल पर, भीमला भुंगदर ले ला उठाइ।
आजु भइया उठि गइल सान मरदन के,
देखि लऽ मोती सगड़ की घाट।

भिमली और लोरिक दो वीरों का पयंतरा, दुर्गा अहीर के पक्ष में

पंचे, गायन लो गावे ला बाइसुनल जा हमार बयान।
जेवनी बेरि भवानी के मुंगदर उठल,
तवनी बेरि भवानी के का सोच भइल।

जे एहि बीर ले बीर बाटे, लड़वइया एहि बीर ले बीर बा ।
अगर जो आजु आजमावत नइखीं त काल्हु जे बराति करे आइल बा ।
उ बहकत जाइ जे हमहू लड़ रहितीं भीमला से ।
पंचे, सुनल बात भवानी के । चढ़ल रहली स कूर खेत मैदान ।
सोच के जगदम्बा, बीर के संगे रहली तइयार ।
जेवनी बेरि बिगड़े बेटा बमरा के जेकर गजे भीमलिया नांव ।
अस्सी मन के मुंगदर, पाठा हाथे ले ला उठाइ ।
मारे मुगदर धरती में, धरती दूइ खंड़ा होइ जाइ ।
आजु पंचे, सुन ल सान सुरुआं के ।
दुनो बीर झुमल पयंतरा बाइ,
एक ओर घुमे बेटा दादा खोइलनि के देबकी नन्दन राजकुमार ।
एक ओर झुमे ला वेटा बमरा के जेकर गजे भीमलिया नांव ।
हँसे बेटा राणी के सिहिनि पीयलस दूध अननाई ।
कहे जे जीय जीय ए पाठा अब बीर लड़ने में बा जुझारु ।
आंगे पाछे तू लोहा छोड़,
पाछे कांचा सहि ह तू लोहा हमार ।
लोरिक रन में का कहले ह,
कहत बाटे जे देख हम ठाईब (कठइत) कुल के देवकी ननन हइं ।
(कठइत) ठाइब कुल के ननन हइं, हमरा खनदान आंगे बान ना छोड़े ।
ना पाछे तनिको राखब उठाइ ।
छोड़ द बान तूपाका आ अवसरी आइत सहिह कांचा बान हमार ।
अब बीर बान्हे ले-लकारा अब बीर लड़ने में बा जुझारु ।
हंसि हंसि बाति करे बघेला ओही मोती सगड़ की घाट ।
मोहित होख स नारि सुहवलि के,
ओहि किला सोना सुहवली पालि ।
झंखे बेटी बमरा के रानी बइठलि अटारी बाइ ।
आजु भइया सुन ल ऽ खेला सुहवलि के,
ओहि मोती सगड़ की घाट ।
तहिया बोले बीर भीमला जेकर परल भीमलिया नांव ।
आरे तोके हम रहे देइब हो, जे फेरु तोहार अवसर जूमती रही ।
आरे एहि बेरि मारि देबि मुंगदर,
जे तहार हड्डी हड्डी धुनि के आ पिरिथिमी का अन्दर धंसि जइहं ।

अब बीर सान लगाइ के भीमला, पांच कोसा बहकि जाइ ।
अब बीर के परि गइल ललकारा,
वाको सिरे माई भवानी बइठ रहली सोना सुहवली पालि ।
जब उठल मुंगदर दादा भीमला के,
सान डरे जोग ना बाइ, मारे मुंगदर जब भीमला देबी तानति ठठोरी से बाइ ।
बाइ ज बेरि देबी तनसु त बेरि लोरिक धरती में ढुके लगलन ।

भिमली का मुंगदर प्रहार
लोरिक धरती में प्रविष्ट संवरू क्रुद्ध, युद्ध के लिए तैयार

पंचे, जब बीर आइ कुलांचि के जब देके दुखरा मुंगरा पर मारत ।
बीर के सीना गइल समाइ ।
आजु देखि ल पंचे देबी करी करतीनी, ओहि किला सोना सुहवली पालि ।
जाहि दिन फेरु बीर पांच कदम हटि गइल, मुंगदर जब मार ताटे लेलकारि,
अब बीर धंसि गइले पिरीथा में ।
पंचे आदि शक्ति भवानी मुगदर भीमला मरले ह,
ओहर धरी पीरीथमी का अन्दर धंस गइली ।
सुन बबुआ, आजु जेवन बीर संगेला बघेला,
आंगे सुन लगन के हाल, जेवनी बेरि भीमला धरती एड़ दबावल,
भइया चढि गइल मोती सगड़ को घाटि ।
गरजे लागल सुहवलि में ओहि मोती सगड़ को घाटि ।
का कहे, जे सुन मरद अलबल्हा गउरा के मान जा बाति हमार ।
इ कह एहि ले मरदुमि बा कि दूसरो तमू में बा ।
धोबिया कहता जे ना दादा एहि ले मरद मरदुमी, दूसर नइखे ।
जरे बदनि दादा संवरू के उठि गइले सोना सुहवली पालि ।
कहल जे बजर परो अजइया ओहड़े जइत दबाइ ।
अब ही जीयते बानी सुहवलि में, तू निमरददीहले मरद के ।
ए पंचे, ओह धरी बीर घरमो का आगि लागि गइल ।
कहत बांड़ जे हाइ धोबी ।
अबहीं जीय ते बानी, आ तू सुहवलि के निमर्द क दीहल तमू के हमरी ।
अब पंचे, संवरु का भाइ जुझल बाड़े देखले ।
अब कीरोध बुतो नाही अड़ाइ ।
एड़ी आगि लागि गइल ।

लहरि चीरुकी गइल बुमुआइ ।
लाल लाल भइल बरवनी नयन रोधिर भइल समान,
अब पाठा उठि गइले सुहवलि में ओहि मोती सगड़ की घाट ।
उलटा काछा चढ़ावल ऊपर माल बरनके गांठ,
बान्हे पेटी अजगर के जेइमे गोला जुमुस ना खाइ ।
चले सान मरद के ओहि मोती सगड़ की घाट ।
हंस हंसिन के झगरा दूनो परि गइल बीचबान,
शेष नाग करी दुआलो, बीर मरदनि देले हउए लटकाइ ।
आजु बाइ सुनलीं बयान संवरूके ओही मोती सगड़ की घाट ।
जेवनी बेरि शेष नाग करी दुआली, बीर गरदनि देले हउवन लटकाइ ।
घींचे सेल्हा अजगर के जेइ पर जिला अलंग फहराइ ।
अब बीर गोड़ में मोजा नाही लगवल,
सातू दरे के रहल सरउत बोह मझारि ।
पंचे, सुनल बीर के बयान सुहवलि के, ओहि मोती सगड़ की घाट ।
जुझल रहल भाई बवेला ।
अब वीर का अगिनि फुंकतारन ।
ओ वेरि का करतांड़े ।
जब पचे बांस मड़ित के घेना जब उठा ले ताड़ें अब सभतर तीर उठि गइल ।
बाइ कीरोध की मारे धरमों, पाप आ पुनि अब नइखन समुझत ।
जेतनी बेरि ले लन बान बिसम्भर बान बरम्हा देले बाड़े बरदान ।
एहि बेरि छोड़ि दी बाण सुहवलि में,
एहि सोना सुहवली पालि ।
गुद गुद उघियाइं जेसमें सुहवलि जाइ उधियाइ ।
एहि बेरी खतम करी दीया बरमा के, ले के सोना सुहवली पालि ।
भाइ त हमार जुझि गइल, जोड़ी त अब नाहिये मोली ।
बाइ जेइसे हमार जोड़ी बिछुड़ गइल बा एहि बेरि छोड़ब बान बिसम्भर ।
जेवन बान बरम्हा देले बाड़ें बरदान ।
चौदह कोस में बने बनडाढा रूखा बरिसे लागी परान ।
अदीमी केवन चलाओ केतने गउ होइ हें हरान ।
सुनी लं जे धरमी जहिया भइयाइ जुझलका देखलनि अँखिया से,
साचों उनके नाहि लउके न कुंवाआइ रे इनार ।

गद्य : जब बीर हृटि के धेना ले के । आ बान बिसम्हर बगल तर दाबि के, जेंव

आंगा फानि जा तारन । सेंव लोरिका रोवे लागल । कहलस जे हाइ, भवानी हमके लेके ढंकधू दादा आजु जो छोड़ि दी भाई अलबेला बान में कोइला जाइ बोआइ । डुबि जाइ नांव दूनिया में, हम परब कुंभ नरक की गाढ़ि । संवरु दादा वर बनि के आइल बाडे, हम सुहवलि करे आइं बरियाति । जियते बानी मीरुता में, भाई छोड़ी बान हमार । रोवे बेटा बधिनि के बीर के बंका लोरिक ह नांव । जेवनी बेरि रहलि माइ जगदम्बा ।

बीर सागड़ लड़ने भइल बाड़े तइयार । जेंव लरिका के ले के ऊपर भइल बाड़ी । कूदे पाठा बीर लोरिक कुदि गइल बेयालीस हाथ । दांते धरे धेना भइया के, ओहि मोती सगड़ की घाटि । माइ मोरि अलबेल्हा अब बीर मान बाति हमार । जियते बानी मीरुता में, धेना ले ले हउवं उठाइ । देस में नाम हमार डुबलि । इजति बीगरि गइलि मरदाहि । आजु दादा दूलहा बनि के अइलऽ । हम सुहवलि करे अइलीं बरियाति ।

आजु जो हमरी जीनिगी में लोहा चलइब भइया परब कुँभ नरक की गाढ़ि । मांथ धइके बीर रोवल ह । अब बाड़े सुनले भाइ । छोड़ि द हमरा के, उ कहता ना भइया हमरी जिनिगी मे लोहा जो लगइब त डुबि जाई, देबी पहुँचि गइली हा हाहाइ सवरुं इ का कइल हो । एतने में घड़बड़ा गइल । एतने में सुरहनि में उठि गइल धेनातोहार, आइल बाड़ ससुरारी एहि मोती सगड़ की घाटि । थाहे के रहलीं बल बराति के, तलक सुरहनि में उठि गइल धे ना तोहार । जेकर दुरुगे अस बा सगी । हाँ हाँ आजु हमरा बेटा के कइसे होइ अकाज । धीरजा धइके संवरु बइठ ओही मोती सगड़ की घाट । देख लोहा लड़िका के, एहि सुरहनि चली कटार । ए पंचे भवानी बांह धइके आ बीर के बइठा दीहली कुरसी पर ले जाइके ।

आजु पंचे, जाही दिन के बाते, आंगे सुन समर के हालि,
कठिन लोहा हउवे भीमला के, ओहि मोती सगड़ की घाट ।
पंचे गर छोड़ दीहलसि कीला मे, जाति कहला से बाटे कहति ।
केहू के दिल मे दाना ना धंसे ले के मीरुत मंडल, सवंसार ।
नात जेवनी बेर उठल बान ददा सवरुं के ।
झर झर रोवत नयन से बा ।

गायक का आत्म कथन

आरे बाकी आजु बिगरि गइल गाला अलबेल्हा ।
सुहवलि में बिगड़लि गीति रे हमारि ।
बिगड़ि गइल लोहा पाठावा के ।

जेकरि आजु गजवे भीमलिया बा नांव, सुनिय लेब जा सुरहनि में।
अब बीर लोरिके लड़े न पहलवान, धरमी के बाड़न बइठवले।
आ लोरिका अब सुरहनि में गइल बा हेठिआइ।

लोरिक को प्रकट देखकर भिमली चिंतित, दोनों युद्ध के लिए तैयार

गद्य : जाइके हंसि के बोल ताटे। आ संवरु का मुंह पर ते ऐ पंचे फेंफरी छावतिया त का छावतिया जे हइ देख। अइसन खेला हम ना देखलीं, जे मारि दीहलीं बीर नापाता हो गइल। न पाता हो गइल, आ उहे बीर फेरु लड़ने के हो गइल तइयार। इ त हमके बेरि-बेरि बियही बरिजल बने में, तेवन परि गइल कपारे बा, बाकी अब हम पाछा एड़ देखाइबि परि जाइब कुंभ नरक के गाड़ि। साचो हमार घटि गइल अमर जानात। ठट्टि लड़ आइल हमार।

जाहि दिन हंसि के बोले बघेला, ओहि ले के मोती सगड़ की घाट। सुन पाठा अलबेल्हा, अब बीर मान बाति हमार अब की अवसर जे आई, त नाही लोरिक छोड़ब जीव तोहार। हंसे बेटा बरती के देवकी नन्नन राजकुमार, कहे जे सुन बीर पाठा गज भीमिला मान बाति हमार, ओसर आगइल दोसरि, जइसे गोंड़ के घरे धनहरि जाली बिदुराइ। दूसर ओसरि घर तिरिया, दूसर जो दाना देली लागाइ, परे ले मारि ढबिला के, ओहजा सोभा कहे जोग ना बाइ। ओइजा के ओसरि पाठा टरि के, जब पनघटा पर पनि-भरिन जाली हेठिआइ, ओइजा दूसरा अवसर तिरिया, दूसर घड़ा देली लटकाइ। त ओइजा परे ले मारि डोरिया, ओइसे आगइलि ओसरि हमारि। पका लोहा लगवली, कंचा सहिल चोटी हमार। बोले पाठा बिसबंडा तड़तड़ देवे लागल जबाब।

कहे जे सुन ले पाठा अलबेला, अब बीर मान बाति हमार। एक हाथ के कवन चलाओं, सात हाथ के छुटी देतानी, तहरी माइ के जियले होखो धोर-कार। आजु सात हाथ के छुटी देतानी खरभर तनिको जनि राख उठाइ। उहो मरम जनि जान बीर लड़े के भइल बानी तइयार। कहत बा जे आच्छा ठीक रह।
अब पंचे, दूनों बीर जेवनी बेरि मयदान ध के जइसे भइंसा मानिआल स। ओंगों दूइ बिगहा में चक्कर बीर बान्हे लगलं स। लेइ के जब दूनों वीर लड़वइया भइया चक्कर देले हउवन लगाइ। उड़ि गइल गारदा अब धरती में, ऊपर परदा गइल दोयाइ। उगि गइल अन्हरिया बबुआ सुरहनि केरि बजारि। तड़पे राणी के, बीर कुदल बेयालीस हाथ। मारे तेगा हाथा की गरदनि में, हाथा दूइ खंडा होइ जाइ।

पंचे, अब बीर पयंतरा पर रुमि के घुमि के आ ऊपर देखि के भवानी के आ जाइ के काटि दीहलनि मस्तक उनकी हाथ के। गीर परल, आ हंसि के हुटि गइल, आ जब गरदा मेटाइल, त का कहले ह। हाइ ए भइया, गज भीमला देख घुमि के टीकइल तहार हाथा गीर परल रन में। रन में गीर परल, जेवन हाथा हउवे तोहार। बिगड़े मन भीमला के, एड़िया दाबे लागल अंगार।
कहे जे सुन सुन ए लोरिक मनब बाति हमार। एगो टट्टूजो मारि दीहल। पाछा मऊर देइं ठीकाइ। कवनो सान त मरले नइख। जे आजु हमरी मउर केकह ताड़ जे पाछा हम घुमादऽ। देखि ल, मरल टट्टू हाथा। सोझा हमरा तोहरा कहाँ परि गइल बा, उ ना हउवों जे पाछा मउरि देइब देखाइ। लड़ब अगिले सान पर।

लोरिक द्वारा भिमली की गर्दन काटा जाना

आ हां ऽ हां।
एनिया घुमुवे माइ न जगदम्मा, लोरिका लड़ने रहल न तइयार,
एक ओर लड़ने में बीरवा गाजा भीमला,
ओहि जब मोतीये सगड़वा की न घाट।
जहि में बोललि बा मइयारे भवानी,
लालन मनबे न बतिया रे हमार।
जब इहे कटिहें न मुंड़वा भीमला के,
जब इहे कटि हें न मुंडवा भोमला के, (पुन०)
पूरा अब साचो रहिह न खबरदार !
ना त जो भेटिया होइ न रनवा में,
नाहिय अब बांचीय न जानवा रे तोहार।
एकर अब लिखल बा बरवा इनरासन, भइया देले बाड़नि ना बरदान।
बीरवा देइय मुंड़े के अब न लड़े,
जेकर साबित ना लठिया चलि रे जाइ।
जोइ अब बीचवा न भेंटवा होइ न जाइ,
नाहिय अब बाचिय न बयवा रे तोहार।
पंचे सुनल न गाना न सुहवलि के,
सागड़ जब भीमला के सुन हो बयान।

गद्य : देवी रन पर घुमाव ताड़ी, अ कहतारी बेटा बहुत खबरदार से। उ ठीक हम फरवा दीहलीं, बाइ इ बीज बुताये मान के ना ह। एइसे पलखत जनि परीह।

बोले बेटा बघिनि के, बीर के बंका लोरिक नांव । भइया मोर भवानी जी, तोहरे धरमका-पालि । तोहरे सरन में बानी । जेतने कहबू ओतने करब । बाकी माता मान जा बाति हमार । जहिया आजु धरती में बीर बान बाटे दबवले, बान जब कोहां नियर अललाइ । बान करी जब तड़तड़हटि, अब मोरुता जइसे भादों देव ओनवल बाइ, आजु ले के तेगा बाटे चमकवले । चमके तेगा सिरोही, जइसे भादो बिजली चमकलि बा, जब उठलि चमचमहटि भइया सुहवलि में, सभ की आंखी परदा गइल दीयाइ ।

अब बीर धरती एंड दबवलं, ऊपर फानल बेयालीस हाथ । काटे गरदनि ददा सुरुआं के, तेगा पानी रउस बहि जाइ, चोकरे पाठा अलबेला, जेकर बली भीमलिया नांव, संगे ले के भागलि भवानी, सुरहनि गली क राह धराइ, अब देबी के नियराव ताड़ें, देबी के सुन लेब खेलवाड़ । देबी थोरे दूर का गइले पथल के ढोका भ गइली भवानी, लड़िका आंगा पराइल बाइ । जाके लागी ठोकर दादा पथलके, माटी गिरल भीमलिया के बा । मुंह जब भइया गीरि परल, त देवी हंसि के कहली जे बीगि देब ए मुंड़ के ।

ए पंचे, जइसे झींगुरी के मुंड़ बीगले रहलन लोरिक, अब उहे मुंड ले के आ बीर बीगता सुहवलि में । झींगुरी के मुंड कचहरी गीर रहल, आ इ जब मुंड़ बीगले ह बीर त जाइके गीरल हउवे बामरि बो का पवन दुआर । नाचे मुंड़ी भीमला के भइया सोना सुहवली पालि । रानी छाती मारे गदेला रोवे पुरिद कवल बिहराइ । हा हो लालन, हाइ लालन, हाई बेटी सती, आजु हमार लाल, उगलि अन्हरिया, सुरहनि में जूझि गइल बेटा हमार । हंसे लागलि जब रानी फुलकुंवरी देबे लागलि जवाब ।

हां हो मइया, हा हो मइया, इका रोवताड़ लेके सोना सुहवली पालि । तहिया ना रोव लू, जे छतिस हाथ के भाला सुरहन देले रहतऽ गड़वाइ । छतीस जाति के बेटी सुहवलि छेंकि दीहलू बारि कुंवारि । अब हाइ का कइलू, ले के सोना सुहवली पालि । उठलि बेटी फुलहरि के जेकर फुले कुंवरिये नांव, जहिये बायें परद मारि देले, दहिने मारि दीहल ओलबाइ, छोड़ि देले, सुहवलि, रानी सुहवलि गइलि हेठिआइ । ले के पती के सती होइ, लेके सोना सुहवली पालि । सुन बयान फुलकुंवरी के, भइया सोना सुहवली पालि । चललि गइल चलावल, जूमि जब गइलि किला में बाइ । हाथ के मुंड बीराजे, चलि गइल मोतीसगड़ की घाट । बीर मारि के बइठल बाड़ें, तहां चलि गइल ।

जब जाके पंचे सुरहनि में सागड़ की नीचा घूमलि त लाथि ना जब पवलसि । त सागड़ पर चढ़ि गइलि ।

कहति बा जे ए बीर,
आजु केवन देइ ना आ दोसवा तोरि आजु सुरहनि में,
कुल्हिय दोषवा लिखलिइ, लिखनिया में ना हमरा रे बाइ।
कहत बा जे बबुआ आंजुअ पवले बानीय ना मुंड़वा हमरे सुहवलि में।
कहां सइयां के परलि बाड़ी ना लथिया रे हमारि।

गद्य : ए पंचे, रानी रोइ रोइ बिलाप करतियाटे जे हे बीर, मुंड पवलीं हम पती के, अपना घर नइखीं पावत। तनी हमके देखा द जे पती के ले जाके हम दगध दीयवांइ। रोइ के हाथ जोरि के बोलतियाटे। संवरू कहलन जे ओ हो हो। कहलन जे भाई मोर बीर लोरिक, मान बाति हमार, धनि तिरिया बा रानी। जवनि चलि आइल पतिबरता मोती सगड़ की घाटि। आजु भइया आजु भइया, हमरे सादी का ए इस्तीरी के भकती दीहल ऽ बिगाड़ि।

सुनीलं जे संवरू का झर झर ना, नीरवा बबुआ लागल ए ढहे।
रनिया बिलापवा करति बा आ बरियारि।
कहति बा जे बबुआ तनि सुधराइ के लथिया तूं दादा देखाव,
फेरु से रनिया देखले, फाटतियाड़ी ना छतिया रे हमारि।
सुनी लं जे उठि गइल ना पाठावा ह बीरवा लोरिक।
फुलकुंवरि के सांगावा में लिहलन ए लागाइ।
आंगावा उ गीरलि रहलि ना लथिया भइल बनवा में,
आ ओहि जागो जब लोरिके ना गइलनि रे लिआइ।

गद्य : ले जाके, कहलन जे देखु तोहरि पति के इहे लाथि ह। त रोइ के कहतिया ए सुघर तहार, दोष तनिको ना ह। कुल्हि दोस हमरी लिखनी में ह। अब एइजा थोरे झूरी बिटोरल जा, आ पति के हमरा चढ़ाइ के चिर पर चढ़ाइ द। हमरी के ले के चिर पर चढ़ा द। अकसरे आइल बा बाया हमार। ए पंचे अब सुन हाल फुल कुंवरी के बन में सती होखी एहि के मीरुत मंड़ल सवंसार। अब जेवन बीर मारल, ओही बीर से झुरी बिटुरवावतिया, आ अपने बिनतिया। ले के चनन काठ के लकड़ी आ तोरि तोरि आ दूनो जना दूनो बेकती आ ले आके चिता सजववलसि।

आ चिता सजवा के, आ कहतिया जे हे बीर, एक ओर तू धर आ एक ओर हम धरीं। हाय हमरा पती के, आजु हमरी पती के, टांगि के ले के चीर पर चढाव। आजु भइया लोरिक बीर का नीर चलि आइल। कहलन जे आच्छा जेवन जेवन कहबे तेवन तेवन करब दादा। हमार एइजा कवन दोष बा। ना ना तोहार

तनिक दोस ना ह। दोस तहार तनिक नाह (पुनः) इ हमरा मन के सहकल, आ मन के बउरइला से, आजु इ गति होतिया सुहवलि में।
बल जब उनुका रहल त पीरीथबी कांड़त रहिते, काहे के छतिस बरन के बेटी छेंकलन। आजु जो सतीया के छेकलें रहितन, त एतना हमार बिपत न होइत। आजु हम बिपल हो गइल। बाकी अब कहतिया रोइ के जे आजु हम घरि के घर तानी ए बबुआ एक ओर घर घरि के।

बीमली की पत्नी फुलकुंवरि का पति के शव के साथ सती होना

आरे एक ओरि फुल कुंवरि बा लथिया उठवले,
एक ओर लोरिक जो देलन रे उठाइ।
अब पंचे ऊपरा के लथिया उठाइ के,
आरे रानिया जो चीर पर देतुबा सुतवाइ।
कहति बा ले बबुआ ना मोर अलबेल्हा,
हा हो सुघर मानि जइब बतिया हमारि।
तनी अब अगिया के सुरहनि में,
चीरोया के अगिया न देइं जा लगाइ।
पंचे अब देखि ल खेला न रनिये के,
जेकरीय फुलवे कूंवरो परल नांव।
बीरवा के अगिया के भेजे सगड़े पर,
अबहींय दुइये रसरीया न जाइ।
तलक सती फानि के चढ़लि बा, चितवा पर,
तलक सतो फानि के चढ़लि बे चितवा पर (पुन०) जेकरिय फुलवे कुंवरिया नांव।
ओने भइया फुटि गइलि आगि अंगुठा में,
अब लहरि बन्हले बवंडर न बाइ।
अब भइया जरे लागल बीर सुरुआं के, अब बीर घुमले, बाड़न न लेलकार ऽ
इ त दादा बनवा में धुआं उठि गइलं, एहि आजि मीरुत मड़ल संबसार।
तब लक लोरिक धावत बाडं न पंजरे में,
तलक रानी जरि के खंगर न होइ जाइ।

गद्य : पंचे सती लेके, इस्तोरी ओइजा सती हो गइल। अब बीर अइहं सागड़ के।

हां हां हां।
आजु पंचे बन में सती जब होगइलि ह रानी,
आ लेके मीरुत मड़ल संवसार।

बीर जब घुमि के आइल बाड़ें सागड़ पर,
आ लेके मोती सगड़ की घाटि ।
अब तनी बयान सुहवलि के, जेका का होता ।

गद्य : जाहि दिन सनके राजा बमरिया एड़िया दगे लागल अंगार, कहे जे सुन ले बेटा कुसेला मनबे बाति हमार। बबुरी बन पर बा झींगुरी, दसवता भंगवता मेलनि ठेलनि की बागि। कीछु जो बेटा कुफुति होखे। बीर के देबे बोलवाइ ।

कहत बा जे मोरा केवनो नइखे ना आ कामवा दादा सुहवलि में,
ह मउगा एक ठिनि धोतियइ पहिरले रे भइया रे बाइ ।

बमरी का सिराजवा को बबुरी वन में पत्र लिखकर बुलाना—
लोरिक के साथ उसका युद्ध

गद्य-पद्य : कहत बा जे देख, हम का लड़े जाइब ।
कुल कइल तू नइख जा सकत ।
आजु भइया ले के अंगुरी लागल देखावे बामरि के,
कहत बा जे आजु बेटी रखले रहल बारि कुवांरि ।
आंगही बियहि देले रहित त आजु ना न इ बिपल राज होइत ।
जरे बदन बामर के एड़िया दरे लागल अंगार,
कहे जे भाग पागल, भाग पांछा, हटु जो ।
कुसलवा चलि गइल। पंचे, जवना दिन के बाते, आंगे सुन समर के हालि ।
बांये बइठल बा मंतीरी दहिने महथा राज देवान ।
बामरि का कहताटे, जे देख अब हमरा त पथल हो गइल सरीर ।
आजु हमके अब इ कह, हम देस में केकर ससुर कहाइब,
आ केकर सीराज सार जइहें कहाइ ।
लिख पाती भेजि दीं बबुरी बन पहार ।
आजु भइया जेवन दिनसे मेला आंगे सुन लरनि के हालि,
सुन बयान मरदनि के, ओहि किला दादा सोना सुहवली पालि ।
लिखल बा जे हे पाठा, हे सीराज जुझि गइल पाठा झिगुरिया,
ऐहि मोती सगड़ की घाटि,
जुझि गइल पाठा बघेला, जेकर दादा गजे भीमलिया नांव ।
अहिर पीठी अंगार बा दरब कुंआ छेंकले इनरके बाइ ।
आजु बेटा जीयल धीरिक होगइल, तोहरी जिनिगी कुकुर-जीयो सीयार ।

खइह् बेला बबुरी पर अंचव मोती सगड़ की घाट ।
पंचे, जब सुनले पाठा सीराजवा, पाती ले के धावल चलल बबुरी बनबाइ ।
चलल गइल चलावल पतिया काटलि बा आंक आंक बिलगाइ ।
अपना हाथ के पातो बीर जब धरावताटे केकरा हाथे ।
आत सीराज का हाथे ।
सीराज कहतारन जे आरे भइया एंगो काहें नइख ऽ कुशल कहत,
जे नाहिं भूला न जाइ ।
जेतना कुसल बा एहि पाती में ।
सीराजवा जे भइया काटे पाती कुलफी के बांचे आँक आँक बिलगाइ ।
आँगा जब दूनो भाइ जब जुझल देखता,
बीर का लाग गइल दाँत कीला में बाइ ।
कहलन जे आहा हा आजु हमार बलवन्नी भाई जुझि गइल लो,
ओहि मोती सगड़ की घाटि ।
अब हमार जियल धीरिक हो गइल ।
हमरी जीनिगी जियो कुकुर सियार ।
आजु रोइ के उठल हउवे भइया सीराजवा ।
आ ले लतहियन के रहल चरवाह ।
जवनी बेर उलटा काछा लागल चढ़ावे, ऊपर माल बरन के गांठ ।
घींचे पेटी अजगर के जेइमे गोला जुमुस न खाइ ।
लड़े के सान हो गइलं, ओहि बबुरी बन पहाड़ ।
छोड़ि देला भाइ अलबेला, अब लड़ने के करत तेयारी बाइ ।
अब कहता जे एइजा त भाइ हमार अधिका लो कइले ह,
हमरी बात के मानल नाहिं ।
आ काका त जवन चहलन तवन कऽ दिहलन ।
नात हमत कहली-परथ में झींगुरिया से जे देखु ।
हमार गाइ बहक रहली स त खोजत खोजत हम चलि गइलीं ।
आ अहीर के जलसा देखले हइं ।
चलि के बाबू के समझाइं जा, पिता के समझाइं जा ।
आ कुल्हि जाना समझाइं जा, आ समझाइ के हे भइया चल चलीं जा ।
आजु तोहरे से कहतानी दूगो गाइ हम ओ अहीर के हम बरछा में दे आइल हईं ।
ओही जगह, जे का जाने काका जो पलटि जइहन त,
इ बरइछा देले रहब त आइ के तिलक चढ़इब ।

गउरा साजि चली बरियाति ।
गीरी डेरा सुहवलि में, मोती सगड़ की घाटि ।
राइ से सादी होइ सुहवलि राइ से होइ बियाह ।
परी मारि सीवाने, तबे भारत जाइ गरुहआइ ।
लिखि के पाती भेज देई ओहि गजन गाउर गढ़ पालि ।
सार पाहुन होइ बादुर, ले के मीरुत मंडल सवंसार ।
आदिमी कवन चलाओं दू इ घरी करब दइबसे मारि ।
सीराजवा कहता जे हामर सोचल ना न रहल ।
आ अब त हमरा जियले धीरीक न बाइ ।
रन में जीयलो घीरीक बा ।
आ अब त हगनी के मरे के केंगो बा,
जे जइसे दीया के टेमी पर जाइके फतींगी अझुराली ।
उहे बीर जब रहि गइल बानी जा ।
प्रानी बीर दूनो भाइ हमार जुझि गइलं स ।
आ अब हमनी की मउअत होलता मांह लीलार, अब रहल धीरकार वा,
जीव देइ के सीराजवा चलल ह भइया ।
अ बीर चलल आइल चलावन, हाथ के सान ले ले रहल उठाइ,
हाथ के तेगा रहल उठवले आ,
लड़ने खातीर चलि आइल बा मोती सगड़ की घाट ।
जब चलल आइल भइया जुमि गइल सुरहनि में बाइ ।
सुरवलि ना कहले ह भेंटउ काका से ।
काहें, आ कोरोध की मारे अब हम भेंट केकरा से करीं,
माइ त हमार मरी गइल, आ बाप मूं इइसे ह ।
अब त जाइब त मेहना मरिहन ।
तेवना के संती लवटि चली सुरहनि में ।
इनकर हीया बुता जाउ, सती के रखले रहसुवार कुआंर ।
आजु एतना बात जब सुनि के पाठा,
आजुभइया सीराजवा चलि गइल मोती सगड़ की घाटि ।
गरजे बीर बघेला ओहि मोती सगड़ की घाटि ।
भइया जो कोई होखे लड़वइया से रन में लड़े होखो तइयार ।
गरजे मरद सीराजवा भइया, लोरिक उठि गइले पहलवान ।
आजु भइया कछे रहल चढ़वले, माल बरन के गांठ, बाये ।

ओढ़न नेपाली, छीलल दहिने खंसलि बिजुलि के खांड़ ।
छपन छुरी बगल में बीर का लिगी झूले तरवारि ।
ऊपर बन्हले पाग गुलाबी जेइ पर जिला अलंग फहराइ ।
अलीगंज के जुता गोड़ में मोजा लेला चढ़ाइ ।
दाबे एड़ धरती में बीर अब कुदि गइल बेयालीस हाथ ।
बीर चढ़ि गइल कहलसि जे ए भइया सीराज ।
कहता जे ए भइया अब तोहसे पुछतानी,
जे छोड़ऽ बान के लोरिक जाते कहले ह ।
सीराज कहतारन जे नाहीं, तूं हाथ छोड़,
त कहलस जे नाही हमरा छोड़े में हरज ना,

"पहले हम हमला नहीं करते"
लोरिक का कथन

बाइ कहतानी, कठइत कुल के नन्दन आ एही कोखीं ले लीं अवतार,
हमरी खनदान के रीति चलि आवतीया,
आंगे केहूँ पर बाण हम दुस्मन पर ना छोड़लीं ।
ना पाछे सरभर राखब उठाइ ।
आंगे भइया हम बान दुस्मन पर ना छोड़ि सकब ।
बाइजो हमार सरीर बचि जाइ त, पाछे कांचा सहिके उठाइबि ।
सीराजवा कहता जे अच्छा ।
अब भइया जेवनी बेर चले लागल पंयतरा,
ले के भइया ह कीला ओहि मोती सगड़ की घाट ।
एक ओर झुमे लागल सीराजवा कान्ह पर डेम लगवले बाइ ।
जेवनी बेर मइया लड़िका संगे होखे लगलि खेलि अल्बेल्हा ।
जेवन बीर लड़ने में बीर सीराजावा रहल बांक जुझार ।
बांये चेट देखा दे, दहिने करे घींचि के उवार ।
खेलल बेटा बधिनि के बीर पांच हाथ उड़ि जाइ ।
दहिने चेट देखावे, बायें घींचि के करे उबार,
त बीर बायें से उठके चलि जाय दहिने ।
आरे भइया मचलिय खेलि लोहवा के,
तनी अब सुन ए सीराजवा के हालि,
उहे बीर चारि हाथ डेंगवा चलावल,

तव अब बोलल बा बघिनिये के लाल ।

गद्य : कहत बा जे भइया बस कर अब ओसरि हमारि आइ गइल, चोट के सह ऽ बोले पाठा सीराजवा, तोड़ तोड़ देबे लागल जबाब । कहे, सुन पाठा अलबेल्हा, अब बीर मानऽ बाति हमार । एकर हरसि जनि मान, ना सुहवलि तनिको बाटे बिसवास । आपन बान तू छोड़, मीरुता छोड़ देब ऽ ललकार । जीयत दम जो बांची हड्डी लोटत रही परान, अबकी अवसर आ जाई, धरब भुजा मीरुता में, बीगब गेरुआ करी पहार जेवनी बेरि चुरे चुरे उड़ि जइब, मीरुत मड़ल सवंसार । हंसे बेटा बरती के देवकी ननन राजकुमार सुनले पठा अलबेल्हा, अब बीर मनबे बारि हमार, अइसन बारि ना बरल कबही ले के मीरुत मंडल सवंसार । अब बयान कहिके आ लोरिक पांच कदम हटि गइल । कहत बाजे हे पाठा, खबरदार रंग में रह ऽ ।

अब भइया छुटे चलल बानवा हमार, लप-लप बान लटकावे ।
अब बीर के लचकत कमानवा रे बाइ,
अब जाइ कर बान भइया हमार अलबेला ।
लड़ने में चट चुटल धनवा हमार,
धेनवा छुटीय साचो अब मीरुता में, रन में तू बहुत रहिह ए खबरदार ।

लोरिक की तलवार से सिरजवा की गर्दन कटी

गद्य : बीर के धेना देखा के, अब पाठा जब बान पटकात बान धरती में, बान करी तड़तड़हटि, दूनिया कान दीहल ना जाइ । धड़के लागल छाती सीराजवा के, ओहि मोती सगड़ की घाट । अब बीर जब ऊपर धेना बाड़े झटकरले, ले के मीरुत मंडल सवंसार, ऊपर पंचे ठनकलि बा डोरी के, घुघुर बाजि गइलि तयतारि, तेगा करी रोसनई, चमचमहटि छावल दूनिया में बाइ । तेगा करी चमचम हटिनना उ सुहवलि लउक ताटे आरे पार । छरकल बीर बघेला, गरदनि तेगा मारे सरिहारि । तेगा जब गरदनि पर हउवे दगवले, पानी रउस बहि जाइ । जुझि गइल बेटा बमरा के जेकर लिहल सीराजवा नांव ।

आरे जेकर मुड़वा बीगल सुहवलि में,
मुंड गइल बमरे का पवन रे दुआर,
इहे अब हाइ हाइ सुहवलि लागल करे,
ओहिय दादा मोतीय सगड़कीय घाट ।
एने अब देखति बा बेटीय न बमरा के,
मुड़िया आपन पटकति अटरिये पर बाइ ।

आजु सतिया भइया सोढ़ी घईना ऽ
आ सोनवा बाटे रनिया दाबावति ।
घइके गेरुइ सुहवलि में, लिहलीं हम ए अवतार ।
आजु हम केतनइ उपइया बानी दादा लगवले,
एगुड़ो उ नाही लागन ना अरजिये रे हमार ।
आजुअ हमार टुटि गइल ना नातवा भइयन से ।
अबही तीनिगो बाड़न स ना भइयो रे हमार ।
बाकी आजु बाउर बाटे न काकवा उ दुअरा पर ।
इ सदिया आजु देखलि मोरि लिखनिया ऽ दादा रे बाइ ।
बरम्हा हमारि पाछावा इ टंकिया जो मारी ना दीहलनि ।
सुहवलि में ना जानल बीरीतिया रे हमारि ।
आजु सतिया कुहुकिय कुहुकिय के रनिया जो रीवे ।
एने मारी रोवतू सीरजवे के हो बाइ ।
ए बाबा आजू एहि जागो न ऽ गानावा हमारि रहि ना जाइ ।
काल्हि गीति सागड़ पर न देइबि यों भेजे वाइ ।
आ हाँ ऽ हाँ ऽ हाँ
बाकी आजु जाहिये दिनन कर बाते,
आरे आंगा तनी सुनिये लेइ न खेलवाड़ ।
आजु हीनू करि गंगा तुरुक करी गोरि,
भलि कामिनि संगे छोड़लूय मोरि ।
आजु देबी कहां गीति बानी गावत कहां आजु दीलें परल बिसभोर,
अब देबी जवना न दिनकर पुजनीय,
तेवन आंगा घरी गइलि हो नियराइ ।
अब पंचे एहू कर छोड़ि के पवांरा, आंगा आजु भजि ल देबीय कर नांव ।
आरे जाग भागि बेरी भवानी, जुझि बेरि दुरुग मुनि माइ,
आजु गीति बेरी सुरसती, हमरा जीभा होख तइयार ।
बइठल मेड़रि सब पंचन के, छोट बड़ सब एक समान ।
सब मीलि हुकुम लगावल, हमरी बुते गवल ना जाइ ।
आरे देबीय हमारि तहरिये ना ऽ बालऽवा ऐ भइया भरोसे ।
अधजल में परि गइल ना ऽ डोंगवाइ रे माई हमारि ।
चाहे देबी खेइअइ के ऽ आ पारावा हमारि देबी लागाव ।
चाहे अधजल बोरि देबू ना ऽ मादिया रे हमारि ।

आजु देबी देह के दीमाग दूनिया के—
हमराइ तोहरी चरनि के बलिहारि, तोहरे मो बलवा भरोसे,
मेंड़रि में बइठि लीं माथावा उघारि,
एक ए समइया लोहा न दादा हउवन ।
कानवा के सुनलि भले गीति रे गवाइ,
अंखिया देखल बाहउवे न जगदम्मा ।
आरे लेके मीरुता मंड़ल सवंसार, तोहरे मो बलवा भरोसे,
आ रानावा मेंइ बइठि गइली ना माथावा हो उघारि ।
आजु जइसे खइलू पुजा सुरवन के देस में देबी गइले बाडू तरवारि,
जेवना कोना लोह लागल, ओने घुमलि बाया हमारि,
जइसे भारथ में रखलू सुरुआं के,
आ साभा में राखि द पानी हमार ।
आँ हाँ हाँ ऽ ऽ ऽ
पंचे जहिय दिननवा करि जो बाते,
आंगावा सुनिय देबीय के मोरा हालि ।
आजु मोर भागिये न बेरिया जो भवानी,
जूझि बेरि सिरवा दुरुगवे मुभि मोर माइ ।
बाकी आजु गीतीया बेरिय हम सुखा सती,
हमरा जीभवा होलीय न तइयार ।
आजु मोर जागलिय माइय हो जगदम्मा,
केहू मोर कऽईया करी न कोहनाइ ।
पंचे जे एहुइ ले लभिया जो नेवारे,
आगावा भजिलीं देबीय के पंचे नांव ।
जहिया जगली न मइया जगवादम्मा,
आ देबिया मोर सीर पर रहेला ना तइयार ।
आरे कहे जे गाव गाव ए बबुआ तनी सुनलीं कान लगाइ,
एगुड़ो अछर भूलि जाइ, दू दू गढ़ी गढ़ी मेहा देवि लाइ,
कहि द कीरीति मरदानन के जेकरी देसे बाजि गइल तरवारि ।
आजु बेटा जेवना कोन में लोहा लागल, ओने झुमलि बाया हमार ।
हाँ हां ऽ हाँ ऽ ऽ
एनिया जागलि माइ न जागदम्मा, रन में साचो भइली न तइयार ।
पंचे, जोभवा बइठलि बा सुरवासती, देबिया जीभवा सुरसतिये बाड़ी माइ ।

तनी अब सुन गाना ना मरदन के,
ओहि आजु मोतीय सगड़वा की न घाटि ।
जहिया बोलूवे न राजावा ए बमरिया आ मंतोरी मनब जा बतिया रे हमार।

दसवंत की लड़ाई की भूमिका भाई भंगवता भी युद्ध में

गद्य : ए पंचे, सगरे सुहवलि रोवे । आ ओकर पथल अइसन करेजा बाटे, हरधरी उहे कहे । मंतोरी अब लिखि द पाती सुहवलि ले, आ भेजि दी बबुरीबन पहाड़, जहाँ बेटा बाटे दसवंता-भंगवता मेलन ठेलन के घाट । अब जीयते में केकर ससुर कहाइब, केकर भंगवता-दसवंता सार जइहन सकहाइ।

आजु पंचे, कठिनि हुउवे ना आ छतिया देखब बाम ऽ रा के,
ओही नगर सोनवा सुहवली ऽ दह ए पालि ।

गद्य : अब भइया लिखलि पाती रहलि कुसेला के, लिखलि पाती रहलि कीला में, पाती धावन हाथे द स धराइ । धावनि छोड़ि के गांव गढ़ सुहवलि के, अब बीर चललन मेलन ठेलनि की बाग ।

सुनीं लं जे जहिया जुमि गइल बा आ पतिया भइया सुहवलि के ।
बीर आजु लड़ने में बाँकवा रे जुझापि

गद्य : जाइ के सोहरि के माथ ओनावे, भइया नाउ, आ हाथ उठि गइल दसंवता के बाइ, लागलि इसरबाद देवे । कहे जे जीय ए धावन जीय लाख बरिस अब खाँड़, गंगा जमुन जल बढ़ो, बढ़तो आयु तोहारि । आँखी अमर होइ जाय, जुग जुग चलो नांव तोहारि । तनी भइया कह कुशल सुहवलि के, केइसे बसलि बा नगरि हमारि । कइसे हमार काका बाड़न, कइसे बहिन सती बाटे हमारि । धावनि कहता जे ए भइया बातरि कहे लागबि हमसे बहुत भुला जाइबि जेतना कुसल बाटे तेवन एहि पुरजा पर लिखलि बा ।

धावन या नाऊ मौखिक, मुँहजबानी कुछ नहीं कहना चाहते

हां हां हां हां ।
पंचे, सुनल बयान न कीलावा में ओहिया अब मेलन ठेलनवकी न बाई ।
जहिया आपना न हाथवा करि जो पाती,
बीर जो बीरवे के हाथवा देलन धाराइ ।
दसवंता कढुवे पातीय ना कुलुफी के,
बंचुए आंक आंक ना बिलि रे गाइ ।
आगावा लिखलू बा नइया अहिरा के,

ओहि आजु गजने गउरवा गढ़वा पालि ।
तहिया सांचे बिरवाजो बघेला,
जेकरा बनिये दसवंता पाल नांव ।
आंगवा लिखलि वा पतिया अलवावेल्हा,
जोड़िया बिछुड़लि ना बतिया रे सीराज ।
आजू मोर भइया सीराजवा जुझि ना गइलन,
भीमला जुझल सागाड़वा पर ना बाइ ।
आजु मोर जुझल न बीरवा अलबेल्हा,
जेकर बलिय झींगुरिया दादा नांव ।
अब बीर छतिया न मरल हो गदेला,
कीलवा रोवलन न जारावा रे बेजार ।
आजु मोर अइसन बीरवा जुझि न गइलन,
हमनी के जीयले धोरकवा भइया बाइ ।
चल अब लड़ीय चली जा सुरहनि में,
हमनो के कीछु अब बनो सुरएधाम ।
बाकीय धनि धनि पानीयन गउरा के,
बीर आजु टीकल सागाड़वा पर न बाइ ।
जब मोर अइसन न बीरवा मरि घलल,
हमनी का अब जीयले बाड़न हो घीरिकार ।

गद्य : ए पंचे दसवंता मंगव ता जब बीर के अपना भाइन के जुझल सुनले ह, त कहलसि जे अब हमनी में का घइल बा । हमनो के जीयल अब अकारथ बाटे चलि के हमनो का अब लड़िजा, जवन शक्ति बा तवन लड़े के ना त अब जूझ के फिरवले बा ।

हां हां ऽ हां ।
जहिया उठेइ ना बमरा के जेकर बलिया दसवंतो भइया नांव । (पुन)
दूनो अब भइया न बरिया बा लोग छोड़ल,
दूनो अब भइया ना बरिया बाड़न लोग छोड़ल ।
ओहि आजु मेलन खेलनवां के न बाग ।
दूनो बीर रोइ के धेनुहिया लो उठावल,
दूनो बीर रोइ के धेनुहिया लों उठावल ।
ओहि आजु किल्ला मेलनवा को भइया बामि ।
जहिया छोड़लन न बगिया अलबेल्हा,

बीरवा चलल सुहवली में न बाइ ।
आंगवा लिखनिया पितवा के,
बुढ़वा पूरा धीर करके ओइजा बा।

छंद भिन्न

दसवंता लेइके पुरुजवा भइया बांचे, ओनिया लिखलि बमरिया के न बाइ ।
दसवंत केकरा मो ससुरा ना कहाइब, केकर सारवा तू जइब ना कहाइ ।
बीर जब काका लिखनिया बाटे देखल,
भइया मनब न बतिया रे हमार ।
बहरे बाहर न लड़िये चल, एहि आजु मोतीये सगड़वा की न घाटि ।

गद्य : आजु भइया चले बोर दसवंता, लड़ने में भंगवता रहल तइयार, दूनो भाई जोर रे बाड़ें लगवलें, चढ़ि गइले ओहि मोती सगड़ की घाटि । बोले पठा दसवंता भंगवता मान बाति हमार । कहता चलि जा तनी एइजा से अब त हमार पारी अइगा बा लड़े के, हमार पारी अइगा बाटे लड़े के, आ तू भइया तनी चलि जा, तनो काका से भेंट क आव । अब हम भेंट का करीं, हमार त आ गइल बा महुरति, अब लड़ने के हम तइयार भइलीं । भंगवत कुहतारन जे हाइ भइया ।

आजु हमारि बिछुड़ि जइहनि ना आ जोड़िया भइया सुहवलि में ।
अबहीं आजु छोड़ावत बाड़ सांगवा रे हमार ।
कहत बा जे भइया अखोर हमरूय ना जोड़िया,
सांचो फूटि ना गइल,
ले के आजु मोतीये सगड़वे की ना घाटि ।
बोले बीर दसवंता भाइ मानि जो बाति हमारि,
एकर अब जियला के लालच जनि कर,
आरे नाहिय भइया भुवले बाड़े रे पछताथ,
आरे तनी सुनले बयान लड़ने के ।
अब बीर लड़ने में भइली जा तइयार,
आजु बेर ए लड़ी ना समरे पर ।
आरे आंगा गीरि परो रे हमार,
पाछवा जो धरिया गीरी हो धरती पर,
आरे परब जा ए कुंब-नरकीय गाड़ि,
अगोलिय धरिया जुझि जा अलबेला ।

हमनी के बनिये जाउ रे सुरधाम ।

गद्य : एकर हीनता भइया दसवंत जनि बियोग सुनावऽ आ ना बियोग में तू सामिल रहिह, बाकी भइया लड़े के बाटे हमरा के, आ तनी चलि जा सोना सुहवली पालि । आंगे लोहा लागी, पीछे लागी तोहार ।

आरे भंगवत के जायेकीय ना ऽ आ मानऽवा रहलि सुहवलि में,
आजु भइया दसवंता भेजले सुरहनि में ना बाइ ।

गद्य : आजु भइया सुरहनि में जब बीर के भेजि के, अपने दसवंता लड़ने में हो गइल तइयार, जाके गरजे लागल सागड़ पर, मोती सगड़ की घाट । आजु जो कोइ होखे बीर लड़वइया, आजु भइया लड़ने में बांक जुझार ।

आजु हंसे बेटा बरती के, बीर के बंका लोरिक ह नांव ।
कहतबा जे इय बीर झानावाइ न आइल बाड़न झोलिया बुतावे ।
केवनो वीर अब लड़नेइ के होख जा ना तइएयार ।

गद्य : लोरिक कहतारन जे ए भाई कोई दिन होखे, अब ही झोरिये बुतावे के बा, सुहवल में अइला जा बरांति करे, लड़ने के होखे त लड़ि जा जा । आजु भइया लाग गइल रहल दाव मरदन के, ओ मरदनि के जांघ हीलत कीला में बाइ, कह स जे ना भइया, हमनी के ई गह सुहवलि में ना लागो ।

अबहीं त उहे घाव हमनी का कड़कतिया छाती में,
आरे भइया जब नाहिय नाहिय न बीर कइलन,
नाहि केहू लड़ने भइल ह तइयार ।
अब एने उठल बा बेटा बघिनी के,
बीर कर बंका ए लोरिक पाल नांब ।
जेकरा जो बांये लवड़न ना अब्र पाले,
दहिने भइया खंसली बिजुली करिखांड़
जेकरा जो छपनछुड़ी न बगले में,
अब आंगा लिगिये झूले ले तरवारि ।
अब घोर बान्हि देला पाग नरमे के, जेइ पर जिरा अलंग कर बा ।
सुनली जे केइ के गोड़ावा में मोंजा ए लगावल,
अब बीर मोतीये सगड़कीय घाट ।
उ अ बीर लेइ लेइ चलल अलबेल्हा, हंसत चलल आ सुरहनि में बाइ ।
कहत बाटे सुनि जइबे पाठा अलबेला,
दसवंता अब मानि जइबे बतिया हमार ।
आजु भइया कहल करब तू दादे आपन,

एइआ आजु न मिनती न मनब हमार।
कहु जा जो कुल्हिय भइया बा जुझब सुहवलि में।
आजु भइया कुल्हि भाइ जूझि अइब जा रन में।
लेके मोती सगड़ की घाट।

गद्य : दइब सुनल जो रखिहं बिधना पुजइहन आस। का जाने होखी सादी सतिया के, के लावा परिछी के भइया। हम त कहतानी जे अनट जनि बेसाह जा आजु बोले पाठा दसवंता, जेकर बली भगत बा नांव। कहत बा दसवंता जे सुनल मरद पठा, अलबेला लड़ने में हउव हांक जुझार। जियला के ललसा नइखे ना मुअवला के बा पछताव। जुझले पर सती के मांड़ो छवाइ, जियत रही दम तलक ना घुमि के जाइबि सोना सुहवली पालि।

बाबा एने हंसे लागल बीरवा बघेला,
आरे बीर के बांका एं लोरिक परल नाँव।
कहे ला आहा मोरे दइब नारायन,
काइ विधि उगिलि देल हो करतारि।
दूलर अब छोड़ि द लेगा न अलबेला,
अब हम लड़ने भइलीं रे तइयार।
तब एने बोले लागल बीरवा दसंवता,
जेकर बलीय परल भगव-ते ह नांव।
आजु बोले पाठा दसवंता भइया मान बाति हमारि,
छोड़ बान तूं, कहता जे नाहि तू छोड़ हमना बान छोड़ीं।
हाँ हां ऽ
एनिया हटल बेटा न बमरा के,
जेकरी बलीय दसवंता भइया नांव।
हाथ के ले ले बा बानवा जो सरोही,
बानवा बनल बरइहि के भइया बाइ।
एगो आजु गोसवा धरतिया चांपे लागल,
एकरा खिलल आकासवा मे न बाइ।
जहिया लेइ के न तिरिया ब्राटे मारत,
बीर के घीचिये के मरलना निसान।
एनिया खेलल बा पाठावा आलवाबेला,
एने ओने देहिया जो देले ह झोंकाइ।
बीर के खालिय जो बानवा चलिबा गइल,
जानवा चरि चरि कटित होइ ना जाइ।

तब उहे हंसल बेटान बरती के,
भइया अब आगइल ओसरि हमार।

लोरिक और दसवंत का युद्ध

गद्य-पद्य : अब बान के छोड़ि जनि सकि ह, बाइदेख, तोहके बार बार कहतानी जे अब तहार जीयत दम ना बांची, ले के सुरहनि का निकट अरार, भइया आपन साधन घ द, आ चलि बा सोना सुहवली पालि : जरे बदन सुरुआं के, एड़िया दरे लागल अंगार, कहे जे सुन सुन ए लोरिक मनब बाति हमार, आरे बड़-बड़पइन पुआ तार मा ऽ र ता ऽ र बड़वरे गाल, अबकी पारी आइत हम नाइ सुरछोड़ब जीव तोहार। असल तू जानि जा फिर के हम जाये वाला ना हइं।

हां हां हां हां।
एनिया हंसलि बेटाइ न बरती के,
देवकी नन्नन के राजवा कुंवार।
अब बीर पांचे कदम बा हटि न गइल।
बीरवा बहुते रह न खबरदार।
तोहके बेरिया की बेरिया मो बरिजली,
सुहवलि मनल ना बतिया ना हमार।
अब बीर हटिया गइल बा लामावा के,
हाथ के बानवां जो ले ले ह उठाइ।
उहे जब पांचे कदम बा हटि ना गइल, लेइ के डलिया जो लड़ते भइयाबाइ।
जल्दी खबर न दारवा भइया रह, हाथ के ले कटरिया पाठा बाइ।
जहिया लेइ के न बानवा लचेकावल,
बाना ऽ वा एनिया ओनिया देले बा झटकाइ।

दसंवता की गर्दन सुहवलि में कटकर गिरी

बीर के खालीय नजरिया परिह गइल, तेगवा मरले गरदनि में न बाइ,
तेगवा पानिये राउस बा बहि न गइल, धरिया लोटलू दसवते के बा।
धरिया लोटे लागलि न अब, दसवंता के, मुंडवा बीगले सुहवली में न बाई।
जहिया बमरा के पटके पर बा ठरकल, एनिया रोवल बमरिया जब न बाइ।
आजु मोर बेटाइन मोरवा ए भंगवता, तोर अब जीयले भइल न धीरकार।

तोरे अब जोयते में ससुर लो कहाइल,
जियते सारावा जो जइब न कहाइ।
जाइ के जुझिय जइब जो सुरहनि में, जनबो जीयत बा पुतवारे हमार,
तहिया उठुवे न पाठा अलबेला, जेकर बलिय भंगवते परल नांव।
भंगवता कसले नरहलं एलंगोटा, जुमल मोतीय सगड़वा की न घाट।
जहिया गरजे न बीरवा जो भंगवता,
आरे बीर अब लड़ने में होख ब तइयेयार।

गद्य-पद्य : आजु भइया भरले भाईअलबेल्हा, आ मनमें मरदे गनती गइल कहाइ।
झटपट निकड़ि आव सुरहनि में, आजुदेखि ल खेला हमार।
एतना ताल जब देले हउवे भंगवता,
अब बीर ले दिन सोचोगइ रहल घराइ।
बाकी गरजे बीर भंगबता, पंचे मोती सगड़ की घाट।
हंसे बेटा बरती के देवकी नन्नन राज कुमार,
कहे जे आहा दइब नारायन का, विधि उगिल देल करतार।
पहिला चोट में लागलि दाब मरदनि के,
सम कर गांड़ि फाटि गइल मोती सगड़ की घाटि।
आजु हमरा लड़े में मन लागल सुरुआं से।
अब रसे नाहि लागे मानवा हमार,
आजु भइया कइसे लड़ी सुरहनि में,
आरे केहू बीर उठत सागाड़वा ना वाइ,
अब बीर मेल्हि मेल्हि पगु लागल दाबे।
जाके भइया सुरहनि गइल रे हेठिआइ,
कहतबाटे सुनि लेब बीरवा भंगवता।
आरे नाही भइया मनब जा बतिया हमार,
आरे निहिचे जहिया होइन सादी रे सतिया के।
आहो बीर किलवा में होइ रे बियाह,
केइ लउवा अब परिछी सतिया के।
आरे भइया आजु पुजि गइले कालावा तोहार,
एने अब गरजि के बोलल बा बघेला।
हा हा लोरिक मानि जइब बतिया हमार,
भागे ए भागे तू नइया बाड़ ले ले।
सुरहन में ना भागी बायवा रे हमार।

भगवंता का युद्ध —

लोरिक की तलवार से गर्दन कटी

गद्य : हं जरे बीर बघेला बीर के बंका लोरिक ना नांव। कहे जे सुन लेबे ए भगवंत मनबे बात हमार। आजु बड़ी पहर ले सरबरि होतिया, सुहवलि बहुत होतिया आकाज। भइया छोड़ दे बान सरोही, अंगई बान तोहार। हंस के बोले भंगवता, नाइ तू आ त नाही। हमारि इ खनदान ह सबकेहू बीर लड़ल बा, पाछे हमार बान छुटल बा।

सुनील ऽ जे दसवंता उहे लेइ लेइ ना आ मालावा भइया बांगे जो लागल।
अब बीर कांटि के जो निकलल बा, चारि हाथ बीरवा न बाडनि मरले।
तब इहे डांटे का बघिनि करलाल, ओसरीय आइए गइलि ब भइया दोसरि।
एइजा अब ओसरीव आगइलि हमार,
को त अब लोहावा बीगि के भागि जइब।
नात भइया नाइं बाचि दमिया तोहारि,
हंसे लागल पाठावा जो सांचो ए भगवता,
हा हो बीर मानि जइब बतिया हमारि,
भागे ए भागे इ रानवा में बाडे करत।
आ लोहावा में हमी हम बांकावा जुझार,
अबकी ओसरिया आइ जो सुरहनि में।
नाहीं बीर निहिचे छोड़ब जानवा तोहार,
लेइके जब बीरवा जो बाटे र जुझावल।
नाहीं बीर निहिचे छोड़ब जानवा तोहार,
लेइके जब बीरवा जो बाटे र जुझावल।
अब लोरिक पांच ए कदम हटि जाइ,
कमर ले बीरवा जब काढ़े ए कटारिय,
आरे बीर अब बेरो जो बेर चमकाइ,
आजु चले लागल रूमा पर पयंतरा।
आरे एने ओने देखलिय झोंकवत बाइ, ओ भइया लेइ केइ तेगा चमकावल।
अब घीर लड़ने भइल बा तइयार, मारे जो तेगा न गरदनि में,
उव तेगा पानी रउस बहि जाइं, गीरो परल मुंड़ सुरुआंके।
आ उ छोटका जुझल भइब वा ददे न बाइ।
आजु सतिया भइया रोइ केइ अ बंगलवा में बा उठि रे गइलि,
आजु अ हमरा मरलनि प पलुए के सुहवलि रे बाइ।

सती होने के लिए सतिया का अग्नि कुंड में प्रवेश करना

आजु अंगुवा भइल हउए आ जानामावा दादा भंगवत के,
इनही की पोठिआ सुहवलि में मोर हउवनि आवेतार।
ए पंचे आजु उठि गइल ना आ घीयवा देखब आ बीमरा के।
अगिनि जब कुंड में बइठलि बा अ लेलकार।
आजुआ रनिया सतवेइ पा के आ पूजवा रहलि सतिया के।
कुंडवा में अगिनिय ना दीहलसि ए,लागाइ।
आजु रनिया बीचावाइ ना कुंडवा में बइठि बा गइलि।
अगिय पंचे लगलू सुहवली में न बाइ,
जेंव सतिया अगिनीय ना कुंडवा में हउवे बइठलि।
आजु दूरुगा रोवे लगलि सागड़ मायावा रे ओनाइ।
कहति बा जे बेटा आजु लागि गइलि ना,
अगिया दादा सुहवलि में।
इ आगी बुतवलो से नाहीं रे बुताइ।
इत सतिया अगिनिय ला आ हुनवा में अब कुदि बा परलि।
आ अगिनि आजु ओइसनि बाड़नि ना आ बीरवा बेटा दूनिया में।
आ सतिया के कुंडवा में धलिहनि रे निकालि।
ए बेटा आजु तोहराइ के केवनो हो दादा चलावों।
ओइमें देवता के नाही लागल अकीली रे गियान।
सतिया धरमेइ एइजा के, अगिया साचो डालि बा देले।
उहे आजु बइठलि अगिनिये में ना बाइ।
ए पंचे तनी समझ लिह जा—
हाँ हाँ हाँ ऽ
आजु पंचे जाही दिन के बाते, सती के सुनल खेलवाड़।
आरे जहिया मउरी अहकि अहकि,
अगिनिया में, बा वइठि रे गइलि।
आपन धरमि अगियाइ ना आ देखे बा हो रनिया लागाइ।
कहति बा जे जइसे हमारि टुटि गइल ना
आ लालासावा दादा नइहर के।
ओइसे हम बीरउव के तोरबो ईरे दिमाग।
जे कइसे हमार कइ लिहन ना आ सदिया सांचो सुहवलि में।
आ सतिया आपन धरम के किला में उ कइले बा तइयार।

गद्य-पद्य : झंते माई भवानी, मउर पटके मोती सगड़ की घाट,
बेटा मोर बीर लोरिक गउरा ना मनऽल कहलि हमार।
अब बेटा लड़ने में पाहि लग गइल,
अइसन केहू धरमावतार नाले ले बाड़े अवतार ।
के अगिन कंड में काढी सती के,
कइसे बेटा सुहवलि होइ बियाह,
रोवे बेटा खोइलनि के छाती मार देला सरिहाइ ।
कहे जे माई मोर भवानी जी तोरे धरम का पालि,
अब कहीं तोहरा से माता, मनबू बाति हमार ।
जवनी घरी अनके हम किया खइनी ।
ता हम जनलीं जे ए मइया हम धइ लेइं डहरिया जाइबि सुहवलि में,
आ मरदन से उ लडे के सगड़वे पर न बाइ,
हम ना जनलीं जे अइसन बिपतिया बाटे सुहवलि में,
अब देवी नाहीं लागलि ना अकिलु रे हमारि,
अब दूलर रोइ रोइ ना दूखवा के लागलि ना कहे,
आ देबीय का नीरवा हलकत नयनवा से ना बाइ,
ए बबुआ एइंजा कठिनि हउवे बीदइया भइया सतीया के,
एहि आजु मोतीये सगड़वे की ना घाटि,
आजु ओनिया लागि गइल बा दाबावा भइया दुरगा के,
देबिया आजु अहकलि रहली न माधावा रे ओनाइ ।
कहति बा जे बेटा हम बेरिया की बेरिया मो रहलीं बरिजत,
आ सुहवलि में नाहि मनल बतिया रे हमार ।
जेंव तू हीं लिहुने न नइया बेटा सुहवलि के,
हमरा के टुटुवेइ पंजरिये के ना हाड़ ।
बाकी तोर खइले रहलीं पुजावा हम गउरा में ।
आ पुजा हमार हो गइल जियखे का न काल ।
अब बेटा कइसे उपइया हो लालन ए लागो,
कइसे अब सतीया के होइहन रे बियाह ।
एइजा आजु परि गइल ना कामवा हो ...वा से,
धरमें में ना लागे अकिलिया रे हमार ।

दुर्गा और लोरिक का रुदन—

सतिया जल मरने को तैयार

गद्य : आजु इहे सती अगीनिकुड में बइठति बाड़ी, आदि शक्ति भवानी सागड़ पर

रोवसु, जेतने उ रोवसु ओतने लोरिक। हर घरी लोरिक कहे जे भइया मोर भवानी जीव तहरे धरम का पालि, चाहे खेइके पार लगाव, चाहे सुरहनि में बोरि द माटी हमार। तब भइया उठलि माइ भवानी हाइ लालन मान जा बाति हमार। एगो तड़क लगावतानी जो लगि जाइ जाई सुहवलि में, जो फानि जाइ नांव हमार त, होई सादी सतीया के, ना ता कमे अमदनी बा सुहवलि में, सती के ना होई बियाह। अब धीरजा धर।

सतिया को आत्मदाह से विचलित करने के लिए दुर्गा द्वारा सागड़ पर भूत बेताल और मरही उत्पन्न करना

हां हां····।
तनी आजु सुनल गाना हो सुहवलि के,
तनी आजु सुनल न गाना न सुहवलि के,
आंगावा सतीया के सुनब ना बयान।
रनिया घरमे से बइठलि अगिनी में, लहरीय दू दू मंडल लपलपाइ।
तनी अब सुनिल खेलाइ न दुरुगा के ओहिजा मोतीये सागाड़वा की ना घाट।
हाँ दुरुगा बारहे स मरिह्या लागलि हांके,
आंगावा चउदह स भूतवा रे बेताल।
देबीया लेइ के चिल्हकवा लागलि करे,
जलदीय छंटवाइ न लगब जा गोहारि।
आजु मोर परुवे बिपतिया सुहवलि में,
बिपति काटला से नाहिय न कटाइ।
एहि में जेतना मरहीय न अलबाबेल्हा बान्हि के जुमलि न लेलकार।
एक ओर भूतवे मलेछवा लोग ह धावल,
दूनिया के भूते पहुँचल लो बएताल।
गद्य-पद्य : आजु ए बीचे बइठलि माई भवानी, रोवति बाड़ी मोती सगड़ की घाटि।
आजु बारह सइ मरी, चउदह सइ भूल जुमल बाड़े बेताल,
कइलन जे सुन माता, जगदम्मा, मान बाति हमार,
आजु केवन करनि के लगले, हमके सुहवलि कइले बाड़ पूकारि,
रोइ रोइ कहे भवानी मरही भूत बेताल मा ऽ न जा बाति हमार।
परि गइल बेड़ मुहवलि में, एहि सोना मुहवली पालि।
सती आपन सत सुमीरि के,
अगोनि कुंड में बइठि गइल लेलकार।

हा हो लालन आजु लागि गइल कारन मीरुतां में,
हमार कारज देब जा भुभुताइ ।
का भवानी अडर देताड़ी, जे इ कारज त अब भुभुते मान के नइखे ।
बाइ हमार अडर इहे बा जे सवा स इनार बा, आसावास कुवां सुहवलि में,
आ सावा सइ सागड़,
आजु हमार अडर होता जे, कुल्हि बे पानी के कुंआ आ सागड़ हो जाउ ।
तब कहल जे ना, इ हमनी से होइ ना सकी,
हाइ भवानी सावा सइ सागड़, सावास इनार,
सावा स सागड़ इ जल कहाँ पियब ।
आ कइसे हमनी का सुखइब जा ।
तब एनिया रोवे लागलि न मइया भइया जगवा ऽ दम्मा,
अब बंडासुर दइतेई के आ कइले बा देबी पुकार,
आजुअ भइया घावल हउवन ना आ बांडासुर आजु ए दइत ।
ऊ सूर आजु जूमल सागाडवा पर दइत रे बाइ ।

गद्य : आं गरजे लगल बांडासुर जब दइत, लेके ओही मोती सगड़ की घाट । कहे माइ भवानी केवन सकठ परल बरियार, काहें पुकार तूकइली हम अइलीं मीरुत मंडल सवंसार, रोइ रोइ कहे भवानी, दइत मान बाति हमार, लाग गइल कारज सुहवलि में, बेड़ा परि गइल माटी हमार, खेइ के पार लगाव, एहि मोती सगड़ की घाट । दइत जे भवानी कहताड़ी, जे आजु हमारअवघट माटी परि गइल बा । ओही अपनी दिन-राति के तोहके पुकरले बानी भइया ।

कहता जे कह । रोइ के भवानी कहताड़ी जे सती अगिन कुंड में बइठि गइलि बा, अकिलि हमार नइखे लागत । जांकी जइसे अगिनि कुंड में बइठलि बाड़ी, तोहिगों हमरो विचार बा जे सावा स ईनार, सावा स कुंआ, सावा स सागड़ के पानी बबुआ हम सुखा सटा देइं, सुखले धूरि उधियाइ । एइजा धरम के कारज आ गइल बा । धरम के काज आ गइल बा, इ सत टरे जोग ना बाइ । सुनल खेला भवानी के जेकर देबी अगरबल नांव । हंस दइत अलबेल्हा जेकर बांडासुर दइत ह नांव । कहलस जे मइया मोर भवानी, अब जीव तोहरे धरम का पालि सुन ल खेला मोर अलबेल्हा, एहि किला सोना सुहवली पालि । बरध पर सातू लादि द बरधनि निमक देबू लदवाइ, तनिका भर छांटि के फुहेरा देबू सातू के, आठे लगा के कनई बादुर सातू चाटि घालबि ।

दुर्गा के कहने पर बांड़ासुर दैत्य द्वारा मोती सगड़ का सारा जल सोख लेना-दुर्गा के प्रभाव से एक कोने का जल शेष रहा

एनिया सते न खेलवा कइले सतिया,
अपने बइठलि दीगलवा में न बाइ ।
एनिया दुरुगा रचनवा हइ जो रचले,
दइते होइए गइलन न तइएयार,
दुरुगा बान्हल सतूअवा बबुअवा अब ले ले,
ओही अब मोतीय सगड़वा की न घाट ।
जेहि में निमके के बुनवा हगि जो देले,
ओहि आजु मोतीय सागड़वा की न घाटि ।
उहे जब सुहवलि सागाड़वा छोड़ि बा देले,
जहांवा गीरा गीरल ए पाठा के बाइ ।
ओहि अब सागड़ा पानिय छोड़िय अब देले,
देबीया हेललू सुरहनी मे न बाइ ।
जहांवा तालावा पोखरवा मइया परे,
दुरुगा सतुआ छींटति बा लेलकार,
जब ऊपर सतुआके चलुए जो फुहेरा,
दइले ओठवा जो दीहलन न लगाइ ।
उहे जब कानो कांचे न पीहि घलल जलवा चटले कुंआके भइया बा ।
जब उहे घींचुवे न जालावा तालावा के,
जइ में सुरहनि कहवते बबुआ बाइ ।
उहै जब घुमि घुमि सागड़वा देबिया छींटल,
दइता वठलन ओटवा ए लगाइ ।
जहिया सावा सइ इनारवा घुमि बा गइल,
देबिया चटलसि ना ओठवा ए लगाइ ।
इहै आजु बटुरी सागाड़वा चाटि जो घलल,
बटुरी कुंववा न चटलेह ईनार ।
देबिया चलल जब गइली न चलावल,
सतिया पर न बाइ ।
सतोया के सहते इनार ह धरमवता,
ओहिजा जुमली दइत के लेलकार,
ओहि जा बोललि बा मइया रे भवानी,

दइत मनब न बतिया रे हमार ।

गद्य : का अरज लगवले हइ पंचे । अरज भवानी लगावतियाड़ी जे देखि ल बबुआ हे तिनि कोना जल घींचि ल, आएक कोना छोड़ि द । दइत बुड़ी हिलाव तारन ना, ओके हम ना जानी लां, हम जब ओठ लगावे पाइबि, त हम कुल्हि साफ घींचीलं । आधा हमरे से ना छुटी, बाइ जो तोहरा कारज हो खे त भवानी के जल अपना काम भर रोकि ल । ना त हमार जब ओठ लागी, हम ना कांनो आ कीच जानिला । देबी कहतिया जे हाइ ए बंडासूर दइत, न ओतना जल छोड़ब त हमार कारज ना होइ । कहताटे चाहे होखो, आ न होखो, तू रोक ।

आजु भइया सुनि लेब जा आ खेलावा आ साचो सुहवलि में,
सतिया खेल कइके बइठलि जब अगीनिये में ना बाइ ।
आजु देबिया बेड़ंइ ना आ होइके बा जालावा ए रोक,
आ तीनि कोना जलवा चाटि धलले दइतवेइ ले ना बाइ ।

दुर्गा द्वारा एक सोते का जल रोक लेना

गद्य : तीनि कोना जल अब खींचि घलर्लास, एक कोना जल भवानी पंचे, बेंड़ हो के रोक के रखलीं । हंसल बाड़े जब दइत । अब देबी का आडर होता । कहताड़े भइया हमार कारज हो गइल, अब तू धल अपनी रस्ता के ।

हां हां हाँ ऽ ऽ ऽ
एनिया देबिया चललि बा सगड़े पर,
दइते चलल बाड़नि ना कइलास ।
जवने आजु बांडासुर दइत बबुआ,
उहवां, जलवा चटले सुरहनीं के न बाइ ।
सतिया अगिनि न कुँडवा बाड़ि जो बइठलि,
आंगावा सुहवलि सुन जा खेलवाड़ ।
तनीं अब सुनल सादिय न सतिया के,
आ कीरिया भयल सगड़वे पर न बाइ ।

गद्य : जेवनी बेरि चललि गइल माइ भवानी, सेकर देबी अपरबल नांव चललि गइली चलावल, देबो जुमि गइल मोतीसगड़ की घाट । कहे जे बेटा मोर अलबेल्हा, अब बीर मान बाति हमार, सती खेला जमावलि ले के सोना सुहवली पालि । आहो लालन तोहके जोगी बनाइबि किला सुहवलि चलबि लिआइ, देइब पराव सागड़ पर लालन मोती सगड़ की घाट । होखो के खेला अलबेला ले के एहि मोती सगड़

की घाट, तनी देखीं धरम सतिया के, जेवन अगिनि चुंड बइठलि बाइ अतना कहतारी भवानी भइया सुनल खेला बरियार।

दुर्गा के आग्रह पर लोरिक का योगी बनना और किसी को जल न भरने देना

सुनीलं जे लोरिका के बऽ रहेइ बरिसवा बाटे जोगी बनवले,
आ एने मउजा लिलल गुना दीहले रे लगाइ।
देबीय हमार माया बाइ के, झूलवा बा भइया ए डालति,
आ गुदरी के धोकरी धरम के देली ए लागाइ।
देबी आज माथावाइ जो संरगिया बाटे बनवले।
सुघरा का गालावे धोकरिया में ना बाइ,
ओनिया के सेतवेइ न नागावा के भइया दुआली,
फनी उनुका गरदनि में देलीय न पहिराई।
माथावा पर तिलकेइ चानारमा देबिया डालि बा देले,
सचहूँ के जोगिया इ न दीहलीय रे बानाइ।
जोगिया के धइ लिहलीं न अ बहिया बबुआ सागाड़ा पर।
लेइ गइलि सुहवलि न केरिया रे बाजारि।
देबीया अब लेइ केइ न जगतिया पर बा भइया चढ़वले,
एके कोना जलावा बटुरवे ना हो बाइ।
कहे बेटा एहि जागो ना गोडवा तू हूँ अब ए लटकाव,
सागाढ़ा पर सरंगीय न दीहे ना हो लालन बाजाइ।
जोइय केहू भरे आवे जो पनिया साचोकुआंवा पर,
उनकर जल भरे जनि दीहे मोतिये सरउवे सुहवलि रे घाटि।
जे रोवे जे नानी बिना न हलक बा बबुआ झुराइल,
तू जोगिया आंगावा रोइ गेइ न करीह रे बयान।

गद्य : देबी कहतारी जे हाइ ललन, केहू जब जल भरे आवे, आ पानी ना भरे देब आ उ रोई लो जे हमनी के कंवल झुग गइल, आ पूछे जे केतना दिन से तहार पानी छुटल बा ए दादा। त सुहवलि में सात दिन से खेला होताटे, सात दिन खेली रहो।

कही लो जे सात दिन हमनी के पानी छुटला भइल, कहल लो आहिए दादा आरे तोहन लोके सात दिन में इ हालि भइल बा हमरा छव महिना जल छुटला भइल। जेवन जोगी ह बाया हमार, आजु हमारि परन ह जोगी के, जंगल छोड़ि

के हम अइलीं मुहवलि केरि बाजारि, हमरे पाप से देख जा सुहवलि के जल गइल झुराइ। जेतने हमार कंवल मुखल वा रानी, ओतने तहार दादा कुंआ इनार, सुख गइल, कुअन में छुटि गइल अधियाइ, जबलक सती ना पानी पियइहन, नाहीं मोर कंवल जाइ झुराइ, तबलक ना पनिहा होइ एहि सोना सुहवलि पालि।

आजु बाचावा हमार करत रह ना आ खेड़वा देखब इनरा पर,
हम पहरा देंइ मोतीये सागाड़वे न की घाटि,
ए पंचे, अबसुनि लेब ना धारमावा देखब मउरी के,
दूनो ओर खेलिया होति अब धरमवे के हो बाइ।
जे के भइया देइबेइ दीहनि न रे सुहवलि में,
उव पाठा लेइ लेब हाथावा रे पासारि
आजुअ बबुआ कठिनि हउए ना आ गानावा देखब सुहवलि के,
सतीया के ठठवे ना भइलनि रे बियाह।
आ हाँ हाँ हां।

गद्य : आजु पंचे, बीर जब जोगी बनि के जइठि गइल कुंआ पर, आ दुरुगा चलि गइली मोती सगड़ की घाट, बाकी देवी कइल चरितर, जाके सुरहन का निकट अरार।

आजु भइया पटके लागल ना आ लुहवा भइया जेठवा के,
तपधि उठलि सोनावाइ सुहवली हो दाहावा पारि।
रनिया लोग लेइ लेइ घरीलवा घुमली कुआंवा पर।
बटुरिय पोखरा खोजत चललीय ना, आ कुंआवा रे भइया इनार।
आजुअ सागाड़ा पर लागति रहलि ना आ डरिया भइया तिरियन के।
भींठावा पर बइठल घटीहवा रे ददे रे बाइ।
जो सखी आजु चलिये-चलबि जा हो सागाड़ा पर,
उ बदमाशवा नाहीं छोड़ी इजत् रे हमार।

गद्य : ए पंचे बेकल होके दस्तीरी मये कुंआ ईनार तीनिसइ साठि कुआं इनार कांड़ि अइली स-स पाहि लगाइ। कते जल ना भेंटाला ओहि मीरुत मंड़ल संवसार।

हां हाँ ऽ हाँ
एनिया परलि बिपतिया सुहवलि में,
सतीया बइठलि कुंडे में लेनकार,
एनिया दुरुगा खेला हो कइन देले,
बटुरिय कुआवां न सुखले रे इनार।

अब इहे गइल न जोगवा मरदनि के,
रनिया रोवति सुहवली लोग बाइ।

भिमला की पत्नी की सेविका का पानी भरने जाना और जगत पर एक योगी को देखना

गद्य : आजु पंचे, जब पीयासलि नारि भीमला के, ओकरा पानी बिना बुतल सहल ना जाइ। कहे जे सुनि लेबे ए लउंड़ी मनबे बाति हमारि। एकत बिपतलि दहि बाड़ी सुहवली में, दूसरे जल बीना डहत काया रे बाइ। आजु हइ लोटा डोरि तू ले जइबे, चलि जो सती इनार पर काहें जे सत के ह, का जाने ओमे जल होखे।

अब पंचे, तनी सुनिल बयान सुहवलि के
ओहि नगर सोनारे सुहवलिय पार।
जब भइया चललि आ लउंड़िया भीमला बांके,
अब डोरी हाथावा के ले ले बा उठाइ।
अब भइया लोटावा ले ले बा अलबेला,
जलभरे चललू सतीय कापन गाइ,
जेवन आजु सतीयाइ इनर बा धरमवता,
लंउड़ी जो जूझिये गइलि बे ललकार।
एगो अब जोगिया बइठल बा जगते पर,
आरे रानिया जो देखतिया नयन न पसारि।
लउंड़ी जो चललि जब गइलि हो चलावल,
जगतो पर चढ़िय गइलि बे लेलकार।
उहे जब फांसति बाटे डोरा दाबे लोटा,
लोटावे के फंसले कीला में लेलकार।
जब रानी चलली जले न भइया भरे,
हो इनरा सुखले न बाड़नि रे झझाइ।
थोर की भर जलवा रहल न अलबेला।
ओहि सोझा जोगिया बइठले न बाइ।

गद्य अब भइया लउंड़ी जब इनार में लोटा लटका के झंखतियाटे कहतिया जे हाइ भगवान, ओने जोगी बइठल बा ओहिजा जल बा थोरही बटले बाटे, त जाइं जाये द।
हां हां ऽऽ

गद्य-पद्य : आरे जब हीनु करि गंगा तुरुक करि गोरि,
अब देबी कहां गीतिबानी गावत कहाँ आजु दीलें परल बिसभोर,
अब देबी जेवना न दिनकर पुजनिया तेवन घरी गइलि नियराइ।
कहि द कीरीतियाइ अब कुआं पर,
आरे जोगियाइ बनि के बइठल बीर बाइ।
आरे लउंड़ी जो जलवा न भरे बाटे गइलि,
उहे चढ़ि गइलि जगतिये पर न बाइ।
आजु पंचे, जब लउंड़ी ले ले लटकावतिया लोटा डोरि से,
देखतिया त कुंआ में जले नाहीं।
थोड़े जल देखतिया त ओने जोगी बइठल।
लउड़ी कहतिया जे हाइ जोगी बाबा।
कहति बा जे ए बाचा तनी छोड़ि देब जागतिया सांचो इनरा के,
रानिय हमार पानी बिना न मुंअति बाड़ी लेलएकार,
आजु जोगिया ओनिया रोइ रोइ ना आ पुछत बाड़न लउंड़ी से,
कब दिन से तोरि रानी आजु पीयसलुअ ना,
सुहवलि में रनिया रे बाइ।

गद्य : केतना दिन जल छुटले भइल, तनी बता द लंउड़ी।
कहतिया लउंड़ी जे आजू छव दिन हो गइल हमरी रानी के जल पियले,
हलक गइल ह झुराइ।
तब हंसि के जोगी का कहताड़ें।
कहत बाड़ जे ए रनिया तोरि आजु छव दिन ना आ,
जलवा भइल सुहवलि में।
इ छ महिना जोगिया के बीतल जंगलवे में न बाइ।
जेतने मोर सूखत बाटे कंवलवा सुहवलि मे,
ओतने उ सुहवलि के कुआंवाइ रे झुराइ।
जब तक हठ सतीयाइना पानीया हो रानी पीय अइहन,
आ जोगिया के कंवले जो अइसन ए जुड़ाइ।
जहिया रनिया ठंढा होइ के बलवा देखबे जोगिया के,
तहिये आजु सुहवलि में होइ ना पनि ए हार।

गद्य · ना भरे देबि हम जल। लउंड़ी चलि जा रास्ता धइले। छव दिन में साहन लो के इ हाल बा। हमार छव महीना बीत गइल। हमरा के जल छुटले ओहि बन में। हमरा के जन सती पानी न पियइहन।

पंचे, जाही दिन के बाते आ लउंड़ी के सुन लेव खेलवाड़, जोगी ना जब जल भरे दिहलन, आ जोगी आपन बटुरी व्यवस्था बता दीहलन। लउंड़ी घुमि के चलि आइलि, कहां चलि आइल जाहाँ नारि भीमला के बइठलि बा ताहां। हा हा इ पूछतिया रानी जे हे लउंड़ी जल ले अइले ह, कहतिया जे ना। जल हम केइसे लिआइं। सती का इनार घर भेजु त उ तीन कोना कुआं सुखि गइल बा। तीनि कोना जल सुखि गइल ना। आ थोरे लक जल ओइये बाटे। आ ओही सोझा एगो जोगी बइठल बांड़े, हम जाइके कहली हं जे हे जोगी बाबा तनी जगत के छोड़ि दीं, जल भरे दीं, हमार रानी पियासलि बाड़ी। जोगी पूछ ताड़न जे हां कह केतता दिन से तोहार रानी पियासल बाड़ी। त कहलीं ह छव दिन से। जोगी विलाप क के कहल हं, आहा, हम दिन में तोहरी रानी के इ हालि बा।

बमरी की पुत्री सतिया का योगी के पास जाना

आरे हमार पानी छउवे म ऽ हिनवा छुटल मीरुता में।
आ जोगी अइलनि सोनावा सुहवली दह ए पालि।
तबलक हउ सतीयाइ ना आ पानीया पियाइ जोगिया के।
जोगिया के कले कले कवन रे जुड़ाइ।
जहिया आजु ठंढा होइ के ऽ बलवा देख जोगिया के,
तहिये रनिया सुहवलि में होइ ना धनिहाव।
आजु एनिया सोचतियाटे ना आ नारिया जल्दी भीमला के,
आ झारि के आजु उठतू बखरिया में ना बाइ।
अब रनिया रेसमिय के ए डोरिय वा भइया उठावत,
अब रुपवा धरति सतीय के न लेलएकार।
अब रनिया छोड़ि दीहलसि ना आ रूपवा ए पंचे विपतही।
चोलिय जो मखमल खएड़ा। के ले ले हउवे संड़
अब रनिया पेन्ही लिहलसि ना आ छिटिया हो सुघर दखिनही।
जइसन पंछी लागल बाड़नि ना छपा नोइ रे हजार।
आजुअ रनिया अंग मेइय ना गाहानावा नाहिय संड़खावे।
ओहिय नगर सोनावाइ सुहवली हो दाहावा पालि।
आजुअ रनिया झारि दीहलसि ना केसिया आपन आलावाबेला।
जेकरि केसिया लोटलुअ गरदनिय में भइया रे बाइ।
आजुअ रनिया धइ लिहलसि ना रूपवा देखब सतिया के,
अब चलीय मोतीयेइ सागाड़वा की बाटे रे घाट।

सतीया के टोवे चललि ना धरमवा भइया जोगिया के।
आ बुधिय करे चललुआ भीमलवे के भइया ए नारि।

गद्य : पंचे उठि गइलि जब रानी नारि भीमला के, कहतिया जे तनी देखी जे कइसन जोगी आइल बाड़न, आ कइसे उ चिन्हेलन। अब पंचे, जेतना रूप सती के बाटे आ धइके रानी करनि तैयारी बा। तले ओने धाबलि माइ जगदम्मा जवन रहली मोती सगड़ घाटि, चललि आइल चलावल पहुँच गइल इनार पर बा। हाइ लालन, हे बेटा, सुन अब कहतानी अब एइजा आवतिया नारि भीमला के, छोरे आवतिया बुधि तोहारि।

हारे बेटा जनि जालावा तू भरे दीह,
आरे रनिया के मेहना मार रे बरियार, खीलि जाउ बतिया का।
आरे आगे बदन जाइ से छितराइ,
बाचावा अब निघिचा लगनि बाटे आइल।
कीछु खेइ के लगवली बेड़ा पार,
सुनि ले खेला मोर अलबेला,
हाहो लालेन मान जइह बतिया हमारि,
रूपवा धइले बा सतिया के,
अब बेटा छरे अइली बुधिया तोहार,
जोइअ रानी छरि लेइ बुधि सुवलि में।
जालावा जो भरि लेइ लोटावा लागाइ,
नाहीं होइ सादी सतिया के,
सुहवलि में कोटनो जो करीव जा उपाइ।

गद्य : देबी कहतारी जे हाइ बेटा, इहे एगो आ॰के प्रन ठेक बाटे जो का जाने के एहि धरम मे जो हम जो झुकि जाइबत सती के हारिगिस वियाह होइ, आ बाही जो अबकी कतरीब तब सती के बियाह हो ना सकी। आजु बोले माइ जगदम्मा जेकर देवी अपरबल नाव, बहे जे सजग रह ए पाठा एकिला। आ कुआं पर बइठि गइल जोगी बनि के। आ हम जातानी मोती सगड़ की घाटि। जेंव तोहरा बरात के का जाने सतियो दुसरो दागा दीहल लगाइ।

आजु कुँआंवा पर बइठल रहलनि ना आ पुतवा मइया बुढ़िया के,
देबीय रहलिय मोतीयेइ सागाड़वा के एमइयाए घाटि।
ए गायन लोग कइसे होइ बिदइया सांचो सतीया के।
कइसे गायन सुहवलि मे कइल ऽ जा ददुव बियाह,
बाकी आजु गावत बानी ना ऽ गानावा हमरे कीलावा में,

जहाँ धर्मकंटवे इ ना होत बा तइनाया ऽ रि,
जेकरा भइया लागल होखे ना लालासवा बबुआ गायने के,
आजु पेंड़ा सुहवलि मेंदेबजा ए भइया लागाइ ।

आत्मकथा —

घारावा आजु भूसूर भूसूर ना जनि अब तू भूसुरइह ।
दंगल में अब परी गइलनि ना गानावाइरे हमार ।
ए बबुआ अब होखे चललि बिदइया भइया सतीया के,
गायन लोग मुरुचाइ ना घलब जा छोड़ाइ,
कइसे आजु करे ला जा बिदइया भइया सतिया के,
कइसे आजु कहवांइ ना कइलह जा भइया बेयान,
एइजा अब कंटी गइल बा भारावा हो भइया आलावाबेला,
एइजा गीती परलुअ धरगउर्ता फे पंजे न बाइ ।
अब हमार बड़न ना गानावा हो आलावाबेला,
एभावा में गायन जनि दीह जा दोसवा रे हमार,
अब पंचे गावत बानी ना गीतिया हमारि सागाड़ा पर,
अब बानी चललू भोमलिया के पचे ना त्राइ।
आजु रनिया छरे चललि ना बुधिया भइया जोगिया के,
ओहिया नगर सुहवलि ना केरिया हा बाजार ।

सिमला की पत्नी का सती रूप में पानी पिलाने जाना—
लोरिक द्वारा इन्कार किया जाना – असली सती के हाथ का पानी पीने का आग्रह

गद्य : आजु रानी मइया बात्रा परत बा देजे, दहिने बीगि दंले ओतवाइ । आजु रनिया हाथ के ले ले रेसम सूत के डोरी, आ रनिया आपन लोटा ले ले लगाइ । भरे चललि जल कुँआ पर जाहां जोगी बइठल बाइ ।

हाँ हाँ हां ऽ ऽ ऽ
तनि अब सुनिल बयान रनिया के,
रुपवा धइले सतीय के भइया बाइ ।
जहिया झोंके बदनिया कुआंवा पर,
जब उहे लेइ के रसरिया बाटे अब डालति,
ठक देने लोटा गइल ह ठकढकाइ ।
आजु उ सुखले लोटाइ बा ठरकि गइल,

रनिया घुंघटा मारति बा लेलकार ।
रनिया कोनावा में जल बा अब लेइ अब ले ले,
जहांवा जोगिया बइठल भइया बाइ ।

गद्य : कहतिया जे हां हे जोगी, बाबा, अब तनी हटि जा । जा रानी बाइ से अब घुसुकलि जातिया जोगो की कगरी । आ एऽ जेवनी बेरि तड़पे बीर बघेला, अरु सुन नारि भीमला के, मनबू बाति हमारि, सुतलु सेज सुरुआं का झुलनी के लुटवले हउ बहारि । पापिनि देहि जनि छुआ हइ चलि जां कुआं ले झटकारि ।

आरे बुजरो लेई लेइ सेनुर बा सुतलू गोदीया में,
पतिय संगे झूलनिय के लूटलू ए बुजरो बहारि ।
उ जोउहो जानि ना जोगिया देखबू आलावाबेला,
बनवा में तपेसरीय बचपन पर ना कइले हवी ले लेएकार ।
आजु निहचे करे अइलीं ना भेंटिया हम पंच ए व्रता से,
जेवनि सतीय सुहवलिय ले लेइ बाटे अवएतार ।
जबलक रनिया सतीयाइ ना पनिआ हो नाहिय पिय अइहन,
तबलक सुहवलि जलवइ होखे इ जोग नाइ ए बाइ ।
आरे रनिया उ लजने में काठावा होइबा गइल,
इत साचो जोगी अइले कुआं पर रे बाइ ।
अब रनिया रोवती न हो लवटलि बाड़ी हो सुहवलि में,
रानी आपन चलले दुअरवे पर आ बाइ,
ए बाबा आजु बन बढ़े देब न गानावा देखब आंगावा के,
थोरे फहि के पंचवन देबहो सुनाइ ।
आजु पंचे जाही दिन के बाते
आरे तनी रानी के सुन खेलवाड़,
जब लवटलि नारि भीमला के ।
अब चललि सोना रे सुहवलिय पालि,
अब सहीये के जोगिया आइलबा सुहवलि मे ।

गद्य: का कहे । हं, सही के जोगी आइल बाड़ें । एमे तनिको झूठ ना बाइ, बले हमनी का कहतानी जा जे अहीर सकठ डलले बा टोकल बा मोती सगड़ की घाटि । आजु भइया चले नारि भीमला के, चललि बा सोना सुहवलो पालि । चललि

गइल चलावल, जहाँ रानी बइठलि दादा बामरि बो बाइ। रोह रोइ दूख लागल कहे।

कहतिया जे ए भइया आजु परिगइलि बिपतिया सांचो देहिया पर,
सुहवलि में बेवा भइलि ना आ माटिया हो भइया हमारि।
अब हमार जल बिना ना आ छतिया फाटलि सुहवलि में।
लउंड़ीय भेजलीय सतीयेइ ना आ कुंआवा पर ए लेलकार।

गद्य : कहतिया जे हाँ माता - आपन जब हम लंउड़ी भेजलीं ह कुआं पर, जवनी सती के ईनार खनावल बाटे सत के, कहलीं हं जे ओ ईनार के जल नासुखल होइ जो लइंड़ी, जब पंचे लउंड़ी जल भरे जब गइलि ह। अपनी माता से कहतिया नारी भीमला के। भइया जे जब लउंड़ी भेजली हं आ जल के गइलि त उहो तीनिकोना इनार सुखि गइल बा। थोड़ा एक जल आइके ओ कुवां में बाटे।

अब ओही सोझा हे माता, हाइ माता, ओही सोझा एगो जोगी बइठल बा। ओ जोगी के का हाँ बयान होखो। बारी उमीर के लफुआ सीरे सोझे नबुज के बार, अबहीं लरबर धोती पहिरले, डांड़े हीलतिया रे करिहाव, आंखि मुँह बा दुरहुर, उ जोगी के आंखि मुँह बा दुरहुर, (पुन०) मुख में सोभे दूधा के दांत, लुटुर लुटुर करे चोरुकी, जोगी के नाते करियावा नाग, सेस नाग करी दुआली, ओ जोगी का परल गरदनि में बाइ। देले बाड़नि ददा भसमा लिलार पर, उ रोब हीलत बा माह लिलार, उ जोगी कहल हउवन कि क दिन के रानी तोर पियासलि बा। त लउंड़ी कहलस ह जे हमार छ दिन से रानी पियासल बाइ। त उ जोगी रोइ के कहलस ह, जे आहा हा त आरे तोहार छव दिन में रानी के करेजा फाट ता।

हमारा के छवइ महिनवा जलवा छुटल बानवा में,
हमरो पन राखे दीहनि ना आ भागेवान,

गद्य : जोगी बाबा का बन में प्रन भइल बा जे जबलक सती ना पानी पियहन। तलक हम ना पियब मीरुत मंड़ल संवसार। हाइ हाँ भइया उ जोगी कहलं जे हमरे कवल से, इ सुहवलि के पनिहाव सुखि गइल बा। जबलक सती नाहीं पिइहनि जल के, तवलक सुहवल में ना होइ पनिहाव। लउंड़ी जब आइके कहलसिह हे माता, हम कहलीं हं जे रहु जोगी के हम थाह तानी जे नकली जोगी हउवन की असली हउवन।

कहता जे ए भइया आजु हम धइ लिहलीं ना आ रूपवा देखब ननदी के,
आजु डोरी हाथावा के लिहली रे उठाइ,

जोगिया के थाहे चललू धरमवा देखबू कुआंवा पर,
रूप जब धइले ननदिये के न बाइ ।
आजुअ भइया आपनाइ घमंडवा में सतीया बनलीं ।
जोगिया धरम खोवे चललि सुरहनि का निकठ ए आरार ।
हा हो भइया सुनि लेबू न अ खेलवा देखबू कुंआवा पर,
जेवन सतीया के धरम के इनारवा बनल न बाइ ।
सचहूं जोगिया लेइ केइ न बइठल बाटे कुआंवा पर,
आगोड़ आपन कुएं में देलेइ बा लटेकाइ,
जाके हम फांसि केइ न लोटावा जब मइया ए छोड़ली,
लोटा जाइके लटकल सुधरवे सुखला रे बाइ ।
जब भइया माजि केइय घुंघुटवा लगलीं नीचवा ए ताके,
जोगिया की ओर थोड़को एक न जलवा रे बुझाइ ।
एहुं भइया रसे रसे ना गोड़वा लगलीं घुसुएकावे,
जे जोगी बाबा भरे देब जलवा लेलकार ।

गद्य : हाइ हो भइया, अइसन उ जोगिया बान मरलसि जे आजु हमारि बदनि गइलि कठुआइ, कहता जे हं हं आरे हउ नारि भीमला के न । सुहवलि में छरे अइलू बुधि हमारि, सुतलु सेज ददा सेनुर का झुलनी का लुटले बाडू बयारि, आजु हमारी धरम खोवे खातिर तू बनि के आइल बाडू एहि मोती सगड़ की घाटि । मइया हमार बटुरी परदा उ खेल उ जोगी जानता । जेवन बइठल कुआं पर बा ।

त मइया हमारि फाटतियाड़ी ना आ छतिया दादा सुह ऽ ऽ वलि में,
ह ननदि कहि द पनिया अब देति ना दादा पियाइ ।
हा रे सचहुँअ के मइया आइल बाटे ना आ जोगिया एहीय कुआंवा पर,
उ अ नाहिं हउवन बघिनिए के न लाल,
हा हो मइया जोगियेइ के सुखिय न गइलनि करेजा,
ओहिं से सुहवल सुखिये गइल हो पनिएहार ।

गद्य : कहतिया रानी जे हाइ माता ! जब सोचतिया नारि भीमला के, कहतिया रानी ए भइया बमार बो, अपना मन में करतिया विचार, जे सती त हमार पाहि लगाइ दीहली, देख भइया । हाय देबी, देखि ल खेला जगदम्मा के, जेवन जोगी बुनि के लड़िका के देले रहली बइठाइ । सती आपन सत सुमिर के धरम बान्हि के रानी बइठलि अगिनि में बाइ ।

अब भइया दूनो ए खेला न बाड़नि भइल,

अब भइया दूनो ए खेला न बाटे भइल, ओहि जाइके सुहवलि केरि न बाजारि,
सतीया अब आपना घमंड में बाड़ी बइठल,
सतीया आपना घमंड में बाड़ी बइठल।
आरे दुग्गा उछरे जो चलली धीयान,
धइके घरइया लगवल ऽ।
आरे जोगिया के साचो देली रे बइठाइ,
अब टीकि गइल मन रनिया का,
जेवनी आजु भीमला करी रे रनिवास,
रोइ रोइ कहलि बमरा बो से।
आरे रानी बिपति में बइटलू रे बाइ,
सुनुगे लागलि आगि देहिया में,
आगि ओकरी लगलू बदनिया में बाइ,
सतीया ननदि नाहीं ऽ
आजु इहे सतीया बेटी त नाइ जामल,
हमरा आजु गोंखुला के कइलिय हो उजारि।

सती का आत्मदाह के लिए कुंड में जाना

गद्य : अब लउकत बा पंचे। सुनल खेला सुहवलि के आजु भइया अतबल बीदा केहू केहू के ना रहल, जे ठठे में जाइके धइलेउ बांहि सतीया के बरबस डोला देउ बइठाइ। हां रहलि बेटी दादा बामरि के, जेकर सती मदइनी नांव। आजु भइया कइके खेला बइठलि बा कुंड में।

जे जइसे हमारि तोरले बाड़ो ना आ थेगवा देखब जागवादम्मा,
उनहू के घमण्ड तोरबि मोतीये सगड़वे की ना घाटि,
उहो देखो जे कइसे लुटि ले ली धरमवा देखब कुआंवा पर,
जोगिय बनि के बइठल वीरवा ह लेलकार।

गद्य : ए पंचे, जब नारि भीमला के कहताटे जे हाइ माता आखिरो त सती जइबे करीहं। बाइ बुझाता जे एक दम खउरा-खपटा लगा के जइहन, अब सती जीयर का कारन हाइ माता, हाइ माता, सुहवलि में परिगइल हड़वारि।

आत्म कथग तम्बाकू पीने का उल्लेख

तब एनिया उठि गइलि बा आ रनिया भइया बामरा के,
आजुअ रनिया लटवइ न दीहली ए भइया बाढ़ाइ,
ए बाबा एइजां बन होत बा आ गानावा बबुआ थोरही में,
अंगावा अंगावा गातिया के इ ना पार हो जो परी वियोग,

ए बाबा तनी रचिएइ के गीतिया हो पंचे बाढ़ाव ।
आपन गाना अंगवेइ कदीह न ए बाबा बाढाव ।
आपन गाना अंगवेइ के दोहन ए बाबा बाढ़ाव ।
तनिय अब पिये देब ना हमरा के बाबू तामाकू ।
आंगावा आजू लमहरिय रा ऽ मायने ह बरियार ।
आजु अ एइजा कठिन हउए ना खेलवा भइया सतीया के,
जेवना में उ रोइ रोइ ना करे के हो परी बिलाप ।
आजुअ बबुआ कठिनि हउवे बिदइया साचो सतिया के ।
नाहिय दवे उठवेइ में भइलनि हो बियाह ।

गद्य : कि पंचे, जेवना दिन के बाते आ सुनलो सोना सुहवली पालि । भवानी बइठल रहली जाके सागड़ पर, बीर के जोगी देले रहली बनाइ । बइठ रहलं भइया कुआं ओहि ले के सोना सुहवली पालि । जेवना दिन के बाते पंचे सुन समर के हाल ।

आजु जब उठि गइलि ना आ नारी हउए बमरा के,
आपन भवन छोड़ति मुहवलिय में रनिया रे बाइ ।
जाहि दिन रनिया सतीयाइ भवनवा में न बाड़ी ए पइठलि,
जाहां सतीया बइठलि बा ए कुडवा में लेलएकारि,
आजुअ मउरो लवले रहलो ना आ अमिया भइया सतवा के,
जेकरि लहरि लपटति बदनिये पर रनिया का बाइ ।
तबलक आजु अ जुमि गइलि ना आ नइया भइया बमरा के ।
सतीय आजु बइठलि कुड़नवे में न बाइ ।

आजु पंचे रानी पहुँचि गइलि हउवे अगिनि-कुड पर । त का कहतियाड़ी—
कहतिया जे ए बेटी आजु मोर आइल रा ऽ त्रिय देबे कुंडवा पर,
हा हो बेटी क देबू कहलकोरे हमारि ।
हारे अहीरा के आजु देत रहली जा दोसवा ओहो डिगरा के,
आ देबीया क देहिया अपइछा हमनो का दोहलीं जा लगाइ,
इ त दुरुगा केवनो डालि दोहलसि ना खेलवा दादा सुरहनि में,
जल हमरा सुखले नगरिया के रे बाइ ।

गद्य : का कहतिया रानो हाइ बेटी । हाइ सती । हाथ जोरि के कहतानी जे न ओ बीर के कि लाम बा आ ना भगवती के खेला बा । ई खेला हो गइल बा अच्छे तपेसरी जोगी जंगल के हउवन, अच्छे तपेसरी जोगी हउवन, जवन तपकरे बइठल मीरुवा में बाइ तबे.ले प्रन ठान दीहलन जे आजु बीचे हम जल ना पीयब ले के मीरुवय

मंडल संवसार । आ हाइ बेटो छ महीना बीर उ जंगल में कइले बाड़े तपेसा, पानो बिना हलक गइल झुरा । उनका धरम के जल पीहं बीचे के ह के जल पीये जोग ना बाइ । हाइ बेटो । आजु जोगी के कहां ले कहीं बरनिका, सुघर बइठल कुआं पर तोरा बाइ । उ जोगी बइठल कुआं पर बाइ, हाइ बेटी हमरी कहल के मान मीरुत मंड़ल संवसार । अइसन जोगी बा आइल बइठल बा मोती सगड़ को घाट ।

कहति बा जे ए रनिया तनी निकड़ीय न जइबू देखब कुइंवा से,
आ जोगिया के पनिया ते देबू रे पियाइ,
आजु रनिया जोगियाइ के कंवल जो एइजा ठंढइहनि,
सुहवलि में निहिचे होइयन जले बाइ ।
आजु हमारि बेटी लागतियाटे आरत्रिया देखबे सुहवलि में ।
जोगिया के पनिया तू देबू ना हो बेटी पियाइ ।

माँ के आग्रह से सती का कुंड में आत्मदाह करने जाना
और पानी खोलने के लिए योगी को पानी पिलाने के लिए जाना

गद्य : त पंचे, सती का कहतियाटे, हं माता ठीक कहताडू, बाइ अब हम तोहसे कहता नी तू खेला के नइखू जानत । खेला के जानलि बा हालि हमारि । तोरा घीयान में टीक गइल बा जे जोगी ह, असल न । बाइ हमरी हीया में तनिको ओ जोगी से छुआइ नइखे । उ जोगी नाह, जोगी नाह, उ माता हउवन पापी हमार ।

आजु हमार पाच योई भइयवा मरलसि सु ऽ ऽ ऽ हवलि में ।
जोगी बनिके खोवे आइल ना धरमे ए माइ हमारि ।
आजु हमारि लुटे आइल इजतिया सुनबे हमार ए मयना ।
उ घटिहवा जोगी बदि के बइठल न हमरा कुआंवा पर ए बाइ ।
आजु मयना तू जाये देबू ना बतिया तू दादा जहनम ।
उ जोगिया पहंड़क करतइ कुअंइवें पर मयना रे बाइ ।
हम नाही मरे जाइबि ना आ पनिया देखबे सगेड़ा पर,
उ जोगिया डिगराइ इजतिया न लूटे न रे अइलनि हमार ।
आजुअ माइ हमरीय का ऽ हनावा के तू मानि न जइबू ।
हम ना जाइब कुअएंइ पर बेरो ना ए लेलएकार ।
अब घटिहवा लूटे आइल धरमवा देखबे सागड़ा पर,
दुरुगा हमरिय पीठियाइ ले दरलोय रे अंगार,
का तोर माइ अँखियाइ में अन्हवट बा लागि ए गइल,
उहे आजु बदिये न हउवन ए तोहार ।

गद्य : पंचे, रानो कहताड़ी जे न 5 खूब चिन्हताड़ू तू जोगी के न। जोगी के तू चिन्हतियाड़ू। हमरे जामल आ हमके खेलावतियाड़ू। आजु हमके खेलावतियाड़ू। जेवना बेरि फाटि गइल छाती हमार। आजु दू जोगीं के जेवन असल जोगी ह तेवना के तू नकली बनावतियाड़ू, जे उ घटिहा ह। हाइ बेटी। हाइ बेटी। आजु तोहके कहतानी, आजु तोहके कहतानी, सुहवलि में मानि जा बाति हमार। का हमरा मुँह से अकट बकट निकड़बू, का हमरा मुँह स अकट बकट निकड़बू, आ तोहरा हमरा मोट का पैदा होई। रहनि से निकाड़ि के जाके ओगी के जलपिया द, एहि सोना सुहवली पालि, पनिहार होखो सुहवलि में, ढेर पखंड जनि कर लेके सोनासुहवली पालि।

आजु, अगिनी में आजु रोवे लागलि ना धीयवा साचो बामरा के,
जेवनिय के सतीया मदइनो लहउवं रे नांव,
माइय हम नाहींय जाइबि, ना आ जोगिया के पनिया पीयावे।
ना त ओइजा ना बांचिय इजतिया रे हमार।

जुलाहा ओर धुनिया का उल्लेख

गद्य : आजु पंचे सुनल बयान बामरि बो के। ओहि कोला सोना सुहवलि पालि। खुमुसिनि माहुरवा भ गइल ओहि ले के एड़ी दरे लागलि अंगार। का कहले ह।

कहत बा जे ए सतीया तोके जोलहइ धुनिया का नाहि बुजरी रे मिलल।
नाही सुहवलि कनुए मीललि ह कलेवार।
आजु जो तू लेइ केइ न उड़रू ज। बुजरो रे जइतू,
नाहींय हमरा गोखुला के होइतनि रे उजाड़।
आजु हमके खोरी खोरी न इहले बाड़ू सुहवलि में।
आ बुजरो बल पहड़क न दोहलू ए पासारि।
ए पंचे, ओहिजा टुटि गइल न मानावा देखबू सतीया के,
आ कुँइबा में रोवे लागलि न जारावा रे बेजारि।
कहति बा जे बजर परो ना मइया हो अलबाबेल्हा,
आ काकावा पर गोरिती गजबवे के ना धारि।
आपना बेटा कइ न घमंडवा में होइ ना गइलं।
भाला गइलन मोतिये सगड़वे को न घाटि।
एगो आजु हमरीय जियरवा के बुजरो ए कारन,
छतीस जाति के बेटी छेंकि दोहलो बरिओ रे कुँवारि।

आजुअ रनिया पापावाइ ब कइले बाड़ू सुहर्वाल में ।
हमरी देहिया लाछाना तू दोहलिस रे लागाइ ।

गद्य : ए पंचे, सती आहा हा अब ई जबान कहताड़ू माता, आजु हम जोलहा धुनिया ले के हम निकड़ि जाइं । कहलस जे हं । निकड़ि जइबू, आ कोदो न बरतियाड़ू, आजु हमरी धाव पर हाई सती । खेला नइखू करत कोदो दरि रहल बाड़ू ।

अग्नि कुंड से निकलकर बुढ़िया और कोढ़ रूप बनाकर सतिया का लोरिक को पानी पिलाने के लिए जाना जगदम्बा दुर्गा द्वारा लोरिक को सावधान किया जाना

ए पंचे, रनिया उहो छोड़ि देहलसिना, ना कुंडवा आपनि अगिनि के,
आजु रनिया निकड़लि सुरहनि के हो बाइ ।
तीनि पन के, तीनि पन के, हो गइल सती,
जेकर ओनहि गइल करिहाव,
पालि गइल बार लिलार के भइया,
मुंह में खोदले एको दांत ना बाइ ।
कोढ़िनि बनि के सतिया,
बल बल ओकरा अवाजि बदनि में देवे लागलि,
ए भइया, आपन रूप बदलले बाइ ।
आरे आगाड़ा ले धावलि बाटे ना आ भइया सुन जगवादम्मा,
देविय आजू पहुंचलि इनरवे पर न बाइ ।

गद्य : का पहुंचलि हई, कहतारी जे हे बेटा, आवतिया, आवतीया सती, आपन रूप खूब अरधंगी धइले बा, बेटा आजु जो सती से धीनइब, आजे जो सती से धीनइब, आ जल जो ना कुआ पर पियब ना सादी होइ ।

आरे बेटा आजु आवति बा बेटी हो बमरा के,
हा हो लालन आवति बा बेटी न बमरा के ।
जेवनि रूप धइले कोरिनिया के बाइ,
उहे रानी धइले बाटे रूप बुढ़िया के ।
आहो बेटा धइले बाटे बुढ़िया के, (पुन०)
कुबरा पर लोटावा देचे बा लटकाइ ।
हाहो लालन भरे आइ जल कुआवां पर, (पुन०)
हाहो लालन भरे आइ जल कुआवां पर,
एहिय बाबू मोतीय सगड़कीय घाट ।

जोइ आजु सतीया से बबुआ घीनइब,
जोइ आजु सतीया से बबुआ घीनइब । (पुन०)
नाहीं तोहरो संवरू के हो जाइ बियाह ।
अब हम जात ए बानी सगड़े पर तोहरा के ब ुत देइलं बतलाइ ।
इहे आजु आवति बा बेटी रे बमरा के, जेदना क मतिया मदइनो बे नाव ।
अब रानी नइके चललि वे अलबेला, कुववां पर गोटावा दे ह लटकाइ ।
एगो जब हथवा कुबर पर घइले ले,
रानी जब होलि होलि चलति भइयवा ।
आपना भइया दूनों ए नयनवा फोरि देले,
मलमल कोंचर मलमल व तू न बाइ ।
अब रानी रचि के न रूपवा बिगारल,
अब बुधी छ रे चलतू जोगी के भइया बाइ ।
आं हां ऽ हां हां

गद्य पद्य : आजु पंचे जाही दिन के बाते,
आ अब तनो सुन सती खेलवाड़,
छोड़ि देली गांव भइया सुहवलि के,
रानी सुरहनि गइलि हंठिआइ ।
आजु सतिया ध इ लिहलांस डगरिया भइया कुंअवा के ।
जेवन सत के खनले इनारवा आ भइया रे बाइ ।

गद्य : आजु रानी झुकि झुकि गोड़ लगावे, उनकरि देहि कांपलि पयंड़ा में बाइ । आ जो हाड़ मांसु छोड़ देले बाटे सुहवलि ओनइ गइल कारआव, रानी छोड़ गांव गढ़ सुहवलि, अब चललि अपना कुआ पर बाइ. देखत बाटे जागो बघेला, हंसत न मउर उठाइ ।

आरे भइया अब जोगिया सरंगि अब बजावल,
अब भइया जोगिया सरंगिया अब बजावल । (पुन०)
सरंगी में निकड़ल बतीस रंग राग,
अब भइया उठल बा गाना हो सरंगी में, (पुन०)
अब भइया उठल बा गाना ए सरंगी में, अब बोर सरंगी बजवते न बाइ ।
एही में अब जुमलि बा बेटी रे बमरा के,
जेवना के सतीया मदइनी बा नांव ।
अब रानी बनिके बीरघा न बाडी चलल,

अब रानी बनिके बीर घा न बाड़ी चलल
आपन नयन दूनो जब ले लेहू बसाय,
अब सती भच भच नयन जब भचभचावे परइ न कीचरहु लेल लेलकार।
जब भइया परइन कीचर लागल गोरे,
जेकरा अब आंखि पर बरोनी नाहीं बाइ।
अब रानी भलभल भवानी बाड़ो देले, जेकरा चुवत बदनिया में बा।
अब रानी पहुँची गइली न कुआंवा पर,
तनी आजु सती के सुन जा खेलवाड़।
अब रानी धइके जगतिया लागलि टोवे,
जोगीया उ हंसत कुआं पर भइया बाइ।
सतीया जो कले कले जगति हुउए टोवति,
आरे घुसुकति चढ़लू कुआं पर भइया बाइ।
अब रानी घुसुक क गइली कुआंवा पर,
अब लोटा फंसत फंसरिया में बाइ।
अब सतो फांसे जो लोटा रे रेसमी में,
अब लोटा फांसि के कइले बा तइयार।
अब रानी ठक ठक लोटा ठकठकावल, जेवनी बेर इनरे में देले लटकाइ।
अब रानी कले ए कले न बाड़ी चलल,
लोटा आजु घोंचतु कुँआ में बाड़ी जाइ।
तलक भइया हंसि के जोगीय बोली देले,
जोगीयाये देहिया गइलि बा नियराइ।

लोरिक द्वारा सतिया को भउजी कहा जाना, सतिया क्रुद्ध

गद्य पद्य : का कहले हृ जोगी—सतो बाड़ी से,

ए भइया जब कुंआ पर लोटा लेके आंगा बढ़तियाड़ी,
त उ का कहता वीर हां ह्वां आरे भउजी लाग हमार,
भउजी लाग हमार देबर लागी तोहार,
पानो देबू पीयाइ, कवल जाइ झुराइ, गउरा चलब लिआइ।
आरे सुनी लां जे सतीया आजु नाचिय के···लोटवा ना बोगिन ऽ देले,
आरे रनिया उ जगति ले गइलि हृ ढंगेराइ,
कहूल बा जे ए जोगिया,

हमार बुढ़ीं समे न आ भउजी तू पपिया बाड़ बानावतं ।
सुहवलि में बाम्हनि हउवे न सतीया रे पपिया हमार,
आजुज हमार लूटव बाड़ ना धरमवा तू रे आलावाखेला,
तोरा देहिया लाछानाइ ना लगल बाटे बांधि नारि,
सतीया आपन हाथ गोड़ न अ पटके लागलि जोगिया के,
जोगिय आजु हंसत बाटे ना मानावा होला गाइ ।

गद्य पद्य : कहत बा जे हाइ भउजी ।
हाथ गोड़ जनि पट क ऽ देख ऽ—आरे भगजो ला हमार,
देवर हवीं तोहार, पानी देबू पिजाइ कंवल जादू जुड़ाइ, गउरा चलब लिआइ ।
हे पंचे, सती जेतने पहंडक करतारी तेतने बीर अव रीझावे,
कहे जे ग हाथ पटकला से, आ ए कोढ़ी बनला से तोहके हो हरगिस ना छोड़ब,
आजु हमके छ महिना अन बिना बीति गइल,
पानी बिना हलक गइल झुराइ ।
सती खइली परल सुहवलि में, ले के सोना सुहवलीं पालि,
सुनले भउजी अन के खइली किरिया, जल के मदिल बोला हराम,
बीच पानी पी घालव, मारब केर कपिला गाइ,
कहली जे माख सान भीमला के चलि के सोना सुहवली पालि,
मुंड के कलसा धराइ ब रोधिर कोहवर देइब पोताइ,
छाती पीढ़ा गढ़ा के जांघ के हरीसि देईब टंगवाइ,
धरब झौंटा मउरी के, सुहवलि करब बियाह ।
आजु भउजी हम कहतानी, जइसन हमार दुरगति भइल बा ।
आ एतना हम जनितो जे फंजि हत सुहवलि में,
त हम अन के कोरीया ना खइले रहितो ।
आजु हमरा के छमहिना बीति गइल दुनिया का अन्दर ।
छब महिना बीति गइल, दुनिया का अन्दर,
आ ठटिन लोटताटे पारान, एक दिन हमके चैन न मिलल,
जे सागड़ पर बइठि जाइं आसन दावाइ ।
देखु भउजी आजु हमार भवानी चमक के पुजा खइली गउरा में ।
बाकी जब लिहलीं नांव सुहवलि के ।
देवी हमार गीरि परलि हइ अललाइ ।
कहतली जे हाइ लालन, आखइलीं पुजा गउरा में, हमरा हो गइल जियर के काल ।

जाये द बाति जहन्नम, सुहवलि जाये जोग ना बाड़,
हम रोइ-रोइ कहलीं भउजी तू का पहंड़क कइले बाड़ू,
का पहंडक कइले बाड़ू, इ बटुरी जानलि बा हालि हमार।

आरे भउजी लाग हमार, देवर लागीं तोहार,
भउजो लाग हमार, देवर लागीं तोहार,
पानी देबु पियाइ गउरा चलली लोआइ,
पानी देबू पियाइ गउरा चलली लोआइ।

गद्य : तब भइया झनक के सती उठतीया। अच्छा पिय पानो हम पियावतानी तोहके। सती जब भइया झारि के उठौल वा, आ लोटा डोरि जब फांसतियाटे त लद लद अब मरज गिरे लागल। लद-लद जब म वा ज गीरे लागल, कहतिया अच्छा छोड़ि द जगति के अब जल भरतानो पिय, जब तोहार भउजो लागबि, त पीय हमरा जलके, कहतिया जे हं हं हटि के लोरिक जगति के जाई के पंजरे पर आंजुरि मारि के बइठि गइल।

सतिया जाई के भरी दीहलसि ना हां लोटवा भइया कुववांव में,
जेकर मरज गोरतु ज मंहुए से न बाइ।
पंचे सतीया कइये बाटे ना आ खेलवा बबुआ सगड़े पर,
सनीय पंचे, सती के देखइ जा आ खेलावड़,

कोढ़ी सतिया का लोरिक को पानी पिलाना, मवाद देखकर अहीर बीर विचलित, मवाद का अमृत रूप में बदलना, जलपीकर योगी तृप्त

गद्य : बीरवा हो के, कोढ़ीनि होके, लोटा भरि के अब जल पियावे चललि ह।
बीर के (देहकंपावत) कहात बा जे ल जोगी —पोय।
लोरिक पंच जब हाथ के आंजुरि जब लगवले बाड़नि,
आ जब सतोया ठेलतिया भवमर्द लोटनि में।
त अब जे हमनी का देखे मे हउत्र दुनियाका,
बाकी सतीया इमीरोति घोरति ह लेलकार,
अब बोर पीये लगलनि ना जालावा देखब सतीया के,
पाठावा के होयवे ना गइलन रे जुड़ाइ,
आजु इहे हंसल हउव वा बीरावाहो दादा बघेला,
भउजी हमार कवल तु जुड़एवाइ,

सतिया का अपने असली रूप में आना और विवाह के लिए उद्यत होना

गद्य पद्य : बाकी कहतानी। अब कहतानी भउजी।

जइसे हमके जल पीयवलू, तइसे अब कहतानी, निहिवे भउजी लाम हमार।
देवर हवों तोहार, पानी दीहलू पीयाइ, कंवल गइल जुड़ाइ,
मउरा चलब लिआइ।
सती भइया खट देने आपन रूप बदल के,
खट दे कुआ पर रूप बदलि के जवन रूप भइले रहल सती के,
आपन बदलि के रूप धरतिया।
कहतिया हाइ बबुआ अब तोहँसे कहतानी कहा हमार सादी करब।
कहता जे भउजी हम त अन के खइले हउवों कीराया,
जल के मंदील बोली हराम।
इ परन ह जे भीमला के मुँड़ के कलसा धराइ,
रोधिर कोहबर देइं पोताइ,
तोहार घरी झोंटा सतो आ ताहके कोहबर म देइं बइठाइ।
सती कहतीया ठीक कहताड़ ठीक कहताड़ बबुआ,
बाइ देख हम त······················भइल तवन बहुत भइल।

आजु काया आजु को दो दरब 5 ना करब ना···चलति क दादा सुहवलि में,
सुहवलि मे अहकति बाड़ी भउजी रे हमारि।
हारे नेना हमारि डेंकरि डेंकरि न रोवति बाड़ी बखरी में।
दाद का आजु लउकल दुअरवे पर न बाइ।

गद्य : हम कहतानी जे बबुआ आजु हमार सादो ए जगह स जनि कर, ना त काका का सीना पर घाव हो जाई। बबुआ कोहबर तू पोते के कहताड़ आ जहिया भवानी लेके अइल तहिये के हमार कोहबर पोताइल बा भाई क जीन्दे पर, भाई के जीन्दे पर, भवानी रोधिर, क कोहबर पोति देल बाड़ी।

हारे बेटा हमार फोटर लेब रे मंगाइ,
धइल फोटरवा बाटे हो बंगला में।
जाहाँ आजु बापवा बइठल बे बाइ,
हमार आजु बनि गइल कोहबर मुहवलि में।
रोधिले से कोहबर पोताइल बबुआ बाइ,
उहे ए भड़उवा कोहबर तू लेइ लेब।

हमारा गउरा में चल लिआइ,
आजु बबुआ लागलि बाटे आगि सुहवलि में ।
एहि दादा सोना रे सुहवलिय पालि,
बबुआ तू लेइ के जोड़ी न हमके चल ।
सागड़ा पर होतुए बिदइया रे बाइ,
आजु हमार कुअएँ के हो जइहन बिदाई ।
हमरा के गउरा में चल रे लिआइ,
हमार आजु दस पांच लगनिया धई दीहा ।
गउरा में हरदी दीह रे लगवाइ,
आजु तूँ दे दोह नेवतवा कुसेल्हा के ।
जेवन आजु भाइये बाड़नि रे हमार,
आजु हमार लावा ए परिछे ना अइहन भइया ।
ओहि नगर गजन गउर गढ़ पालि,
एइजाइ सदिया जल्दी हो दादा क र ।
जेवन अब लागे ल देवरवा हमार,
पंचे अबु सुनि ल विदाई सतोया के ।
गायन लोग सुहवलि के करे रे बियाह,
आजु भइया कठिन खेला ह सतोया के ।
अपना भइया देवर के देले ह समुझाइ,
इत्तोया का कांटावा पर आन साधि गाड़ ।
हमके बबुआ गउरा के चल व लिआइ,
सतोया उ मत के जो डोलाह कइ देले ।
उ ज डोला सागड़ ए कइटो ह तइयार,
कुआंवा तैआरी जब कइले हउवे सतोया ।
डोलावा पर चढ़त धरमउती रे बाइ,
फलकोय रहली साँचो ते संवरु के,
चलन जेकर मोलल इनरसने के बाइ ।

सतिया का बिवाह सम्पन्न

गद्य : पंचे, सवंरू के पलकी इनरसनी भवानी जे के आइ रहली, ब्रह्मा जी चवंर देले रहलन । सती ओइजा का करतोया जे आपन सत सुमीर के आ डोला धरमवता तैयार कइलेह सागड़ पर । जा कहवियां जे है बबुआ अब कूंच के लकड़ी सापड़ पर बजा द । अब चल, हमके ले चल गजन गउर गढ़ पाल ।

त ए बबुआ जोहि जायो उठलि हुउवे न अ डंड़िया साचो कुआं ऽ वा पर,
सतीया के आजु भइलू रे बिदइया भइया रे बाड़,
एने दुलहा के उठि गइलि वा पा ऽ लकिया भइया सागाड़ा पर,
अब लकड़ी घुमि गइलि उड़सी लेलकार।
सुरहुनि में उड़सीय उड़सीय लकड़िया भइया बाजे ना लागलि।
सतीया के डोला चललि गजने गउरवे गाढ़े पालि,
थोरे बाबा कही देब ना ऽ गानावा हम न बानी ए गवले,
अगीलोय लगन सतीया के करवो रे बियाह।

गायक का आत्मकथन—गाना सुहवल से गउरा की ओर—
सतिया की डोली लोरिक के घर पहुँची

हां हां हां हां…

गद्य पद्य : अब चल हिनू करी गंगा तुरुक करी गोरि,
आरे भलो कामिनि संगे छोड़लू अमोरि।
कहि द कइसे होइ न सतीया के, कइसे उ गउरा में होइ रे बियाह,
हमार देवो गावल गाना हो छुटि गइल।
आरे दोबिधा में परि गइल मानावा हमार,
अब चल भागिये न वेरी हो भवानोय, जुझि बेरी पहुँच दुरुग मुनि माइ।
कइसे डोलावा तू ले के देवी गइलूअ।
आरे कइस अब सुहवलि में भइल वा बियाह।
गायन लोक सुहवली सादिये ददे कइल।
सम आजु सुहवलि में कइले ह बियाह।
अब देबी तोहरे न बालावा भरोसे,
मेंड़री में गानावा गाइं हो लेलकार।
आजु इहे सभ का घमंड देहिया के।
मोरा देवो तहरो के हउवे रे बलिहार।
अब आजु कइ द सादी न सतिया के,
आ बिधिया के कइसे हउरे रे बियाह।
अब देवो गानावा छुटल वा सुहवलि में।
अब गाना गउरा ए चली हो लेलकार।
अब पंचे, करि ल भजनिया देबिये के।
हर घरी कंठवे में राखी ल ऽ धियान।

अब हमार देबिया सादी न करे चलो हूँ ।
ओहि आजु सोना सुहवली गउरा रे पालि ।
आजु पंचे सुनिल ऽ बयान गउरा के,
आ डांड़ी जब चलि आइलि ह गजन गढ़ पालि ।
आजु भाइया धनि धनि भागि खोइलनि आ पतोहा मिललि बा गंगा नहाइ ।
आरे आजु छतीसेइ बरनवा खुशी भइल गउरा में,
हमनोय के पतो लोग आइल सुहवली ले न बाइ ।
चल स सखिया मंगियाइ सेनुरवा, हमनो का डालि न लेइँ ।
सुहवलि ले पलटि गइलनि पतियो रे हमार ।

गद्य पद्य : ए पंचे जेतना बीरन के नारि रहली स ।
जे बीर लो चढ़ाइ जे सोहवल के कइल रहल,
ताहिये ले आपन अभरन ध देल रहली स ।
जब रानिन का जब पतो लो लउकल त खुशी लो भइल बा ।
इस्तीरी आपन अमहन लो करे लागल आ सुहवलि (गउरा) मे
फेरु खुशी के बाजल हउवे बधाव ।
आरे बाकी पचे परोय लगनिया मुनहो सतीया के,
आरे बिपति परलू सुहवलो में बाइ ।
एहिय लगनिया सादी न सतिया के,
अब लगनि दूसरा मे गइलि ह पराइ ।
जब भइया दुसरो लगनिया परलि हो गउरा मे,
कले कले घड़या जो सुहवली में ठंढाइ ।
अब पंचे, कले कले बिनती ठंढाले सुहवलि में,
अब सबूर भइल बांड़ रे बरियार ।
अब भइया चलल बाटे सान कुरोल्हवा के,
आरे नाउ माउ साथे ए रहल ललकार ।
अब भइया टुटि गइल असरवा सांचो न बनरा के,
अब कुल्हि गतिया लिखलं रे भगवान ।
अब भइया चलल बा मायाइ ओइजा हो बमरा के,
बेटा आजु सुहवलि में जुझल लोग हमार ।
अखिरो आसारावा भइल बा अहिराके,
जेवन दामाद लड़िको के गइलन हो लिआई ।

अब रहे परी जो सादोन लड़िकी के,
नेवता जो कुमेल्हा न आइ हो लेलकार ।
तू हीं बबुआ परिछे लावा न चलिह मउरा में,
हम कनिया दान हो देहबि लेलकार ।
हमनी का टुटि गइलि आसारवा सांची हो माइनि के,
आसारा जो लागल सुघर के लेलकार ।
जोइ केहू बादिय पीठोन अंगदरी,
पाती अब बबुआ के देत ले भेजवाइ ।
जहिया बबुआ जो गुनि जइइं बिर्पात सुहवलि में,
अब बीर लड़े के होइहनि हो तइयार ।

गद्य : पंचे देख । तहिया गीयान का बामरि का रहल । समे बीतला पर, समे बीतला सभका डहरि लउके ले । धन के, आ बल के जेवनो घरी घमंड जब पहुँचेला, उ अपना सान का आंगा दुनिया के सान केहू ना जानल । ना जानल गरीबताके हालि । पंचे, ओहि बीर के बयान तहिया का रहल । अब पंचे केवन समे भइलि बा, अब का बुधी उनकर चलतिया, अब रहि गइल अतरा ए बीर के ।

अहां ऽ हां हां···
पंचे, जहिय दिननवा करि जो बाते,
पंचे जहिया दिननवा करि जो बाते । (पुन०)
आंगवा गउरा सुन जा खेलवा इहे अब रचि के न मांड़ो हउवे छावल,
इहे अब रचि के हरिसिया हउवे गाड़ल,
आंगावा माड़ो जो गइल न छवाइ ।
अं जेवन दुरुगा फोटरवा बाड़ो घींचले,
जेवव दुरुगा फोटरवा बाड़ो घींचले ।
ओहि आजु मोतीय सागाड़वा की न घाटि ।
जेकरा मुंडवा के कलसा बा धारावल,
रोपिन कोहबर, न दोहल बा पोताइ ।
बीर का छतिया के पीढ़वा रहल गड़ल, उहे जब धइल मड़उवे में न बाइ ।
उपरा जंघिया के हरिसी आ गड़ावल,
ओहि आजु बनल पतरवा में ना बाइ ।
एक ओर सतीया फोटरवा रहल खींचल,

एक ओर लोरिका खाड़ा बा पहलवान ।
बीर जब घइले झोंटा न सतीया के,
नगर सोनवा सुहवली दह रे पालि ।
उहे जब लिखिय के पतिया रे हलि गइलि,
ओहि आजु बमरा के पवने न दुआर ।
इहे जब चलल फोटरवा गउरा में,
आ फोटर आजु घइल न मड़उवे में दादा रे बाइ ।

गद्य पद्य : पंचे, मुंड के कलशा रहल, मुंड के कलशा धराइ रहल,
रोधिर कोहबर गइल सिचाइ,
आजु पंचे बीर के छाती के पीढ़ा मड़ाके,
आ अब घइल किला पर बाइ ।
ऊपर जाँघ के के हरीस टांगलि बा, आ ओहो पंजरे सती खड़ा भइल बा,
सती खड़ा भइल बाड़ी, आ धइ के झोंटा, (पुन०)
धइ के झोंटा मांड़ो में हंस बघिनि के लाल ।
आजु भइया घींचल रहल ना मड़उवा देखब गउ रा म ।
नर-नारी मांड़वा देखले छातीय जगल-बरली लेलाकार ।

गद्य : का मार स, गउरा के नर आ नारि, हाइ भगवान । देख, खेला जेकर अइसन राज वीधंस हो गइल, आ ए बीर के कोहबर पोतावल बा । उ बीर केइसे जीयत होइ हे, आ ऊराणी राणापा केतरे खेवत होइ हें ।

आरे फोटर भइया धइल मड़उवा में बाइ,
अब पंचे लागे जब चलल हरदी सतीया का ।
ओइसे आंगावा में लागलो धरमियों के बाइ,
सतीया के लागल बा हरदीया मड़वे में ।
जाहां बीर के फोटर उतरल रे बाइ,
आंगाना में दूसर हरदी संवरूव के ।
अब भइया गाना जब बाटे रे गवाइ,
लोरिका जोलिखि के पाती बा भेजिदेले ।
ओहि आजु सोना रे सुहवलिय पालि,
बोपर जो धइले लगनिया बाड़नि अलबेला ।
सतीया के दिनवा परल बा लेलकार,
हाहो बाबू एकमी लगनिया टरलि हो मीरवा में ।

दूइ जीय टरलिउ मोन्तवे में बाइ,
सीतायाइ तीजिया लगनिया टरि गइलि ।
लगनि आंगा टरलू चउथिये में बाइ,
पंचिमी लगनिया टरलि हो सतीया के,
आंगावा उ सतमी टरलि लेलकार,
पंचे आजु जब सतिमी लगनिया टरि गइलि ।
अब लगनि अठइं चललि लेलकार,
जब भइया अठइ लगनिया आंगा बढ़लि ।
अब लगनि सोवतू नावे में लोग बाइ,
सतीया के परलि हो सादी न रनिया के ।
अब लगनि दसमी के परि गइल बियाह,
परिगइल बियाहवा साचों रे सतिया के ।
अब पंजे दसमी के होइ रे बियाह ।

दशमी को संवरू सती के विवाह का लगन

गद्य : लगनि पड़ि गइल । हंसि के बोले बीर लोरिका, आजु बाबा के हमनी का नेवता भेंजि दी जा । जो त काका, आ बाबा जनिहन जे हमसे होताइ चलावल । बीर का लिखले ह पाती पर, जे आजु जो बाबा हमसे होताइ चाहसु चलावल, जेवन हमरा उनुका बुड़ा हो गइल, आ अगर भलाई होतखो त ओ बात के छेमा करीहन ओहि सोना सुहवली पालि । अब बाबा तोहरी परि गइल सादी लड़िकी के । आजु दशमी के परि गइल बियाह । बाबा आजु जो आपन भलाइ आ हमार भलाइजो ताकत होइ ह, अपनी बेटी सती के जो जनिह त सुहवलि में कनिया दान देके, आ माइ कुसंल्हा के ले के चलि आव गजन गउर गड़ पालि । हो जाउ सादी सती के, तहोरा हमारा होतई चलो सोना सुहवली पालि ।

हां हां हां···
एतना लिखलि पातीय बा गउरा के,
एतना लिखलि पातीय बा गउरा के । (पुन०)
ओहि जो गजने गउर गढ़ न पालि ।
जहिया अपना न हाथावा करि जो पाती,
धावनि हाथावा में दीहलन न धराइ ।
जब उहे चललि बा पतिया अलबाबेल्हा,
सुहवलि घइया जो गइलि बा बुताइ ।

बामरि और सती की मां कुसला का गउरा आगवन

गद्य पद्य : धावन जो जाइके जो ठुनुक ताटे बंगला पर बामरि का,
सोहरि के मांथ जब दामतांड़े त बामरि असीसत बाड़ें, त कह जीय ए पवनी।
जीय लाख-बरीस अब खांड़ अब बबुआ।
गंगा-जमुन-जल बढ़ो, बढ़तो आयु तोहार।
आ बबुआ जुग जुग बाबा तोर चलो, ओहि धन गजन गउर गढ़ पालि।
आजु का कारन से भइया तू आइल बाड़ हमारा पवन दुआर।
सब दिन चतुर जाति नाउ के, तोर-तोर देबे लागल जवाब।
बाबा जब हम पाती के हालि कहब, हमसे बहुत जाइ भूलाइ,
जेतना पाती लिखलि बाटे गउरा के, एहि लिखल परपेटा पर बाइ।
अपना हाथ के पाती धावन आ भइया जब बामरि का हाथे देले हुउए धराइ।
आरे सुनिलां जे कुसेल्हवा उहे लोटवेइ में जलवा भइता मांगे…बावल,
आ गंगिया जे खातिरी करावत बा बड़े आर,
गंगिया के गोड़वेइ न हथवे भइया बाटे धोववले,
आ उनुके अब लेइ के आइल लो जले पान,
धवनी के लेइ लेइ ना मोढ़वा पर बइएठवलं।
आजु धावनि रचि के करइ ना जले पान।
बामरि आजु काटि दीहलनि ना, पतिया सांचो बंगला में,
सुहवलि में देखले बांड़ नयने रे पासारि।
इ त हमरा परि गइलि ना…सदिया दादा लड़िकी के।
आजु ओहि गजने गउरवे गढ़े पालि।
आजु भइया निगिचइ लगनिया बाटे चलि ना आइल,
आजु लगनि निगिचा गइलि हो नियराइ।
ए कुसेल्हा चले केइ न परो न बबुआ सुहवलि ले,
चल चलीं गउरा न केरिया हो बाजारि।
सतीया के बारह सई ना मोहरी तू लेब ए करबी,
बीस बा आ मोहरी लेंइ जा कालेदार।
आजु भइया बीस सई न लेइ लेइ ददे असरफी।
सुहवलि कंचन थारे बा लेइ जा भरेवाई।
बबुआ आजु पीयरीइ में, धोतीया तूं रंगि बा लेबु।
बेटी के बियहुति देब इ न तइएयारि,

अब हम देबे चललीं कनीया दानावा दाना सुहवलि में,
आ सतीया के रचि के ना होइहनि रे बियाह ।
पंचे अब देखि लेब सबइया सांचो बमरा,
एहि आजु सोनवो सुहवली दहवा पालि ।
सतीया के रचिकेइ कनिया दानावा ह बीरवा देले,
आ लावा परिछे भुखल कुसल्हवा बबुआरे बाइ ।
आजु बीर दइ-जइ न अ गड़ियन पर लद पाठा जब लेले,
आ थरिया लोटा अउरी ले ले रहनि रे गीलास ।
जेवनि भइया तिलकइ रहलि न ए सुहवलि के,
उहो बीर थार में कइले ह तइयार ।
एतना आजु हउवनि गा दानवा हमरी सतीया के,
चले देबी गजने गउरवे गढ़े पालि ।
बहुत आजु भागये से आइल लोग सुहवलि के,
दू चार जाना संगवा डोल कढ़ुइ में ना आइ ।

डोलकढुई और चढ़कर विवाह करने का उल्लेख सती का 'डोलकढुई' विवाह गउरा में सम्पन्न, बमरी द्वारा वर और कन्या के लिए पर्याप्त धन देना

गद्य : हं भइया, अबहीं अबो बियाह होता । जेकरा जुरतिया, उ चढ़ु के होतिया, आ जेकरा नइखे आंटत, उ डोल-कढुइ, तब त ए पंचे चढ़ि ले डोल कढुइये में खरचा बढ़ि गइल बा । नात आंगे जेकरा सहतो रहल ह, उ कहत रहल जे हमरा चढ़ि के नइखे सहत । आ अब सभ में सब कहता जे भाइ डोल कढुइ में बहुत भीर बा, आव चढ़ि के करींजा । पंचे, ओगोंने सतीके बियाह डोल कढुइ भइलि ह । अब कनिया दान दे के लो आइल बाटे । जेकर रहे बमरिया नांव । जेतना दूल्हा के रहल समधीरोही, आ ले के लो आइल बाटे गजन गउर गढ़ पालि । अब भइया उठल बा मंगल आंगन में, अब दसमी के जुमल बाड़े लेलकार ।

हां हां हां

एनिया रेसम न सूतवा करि जो डोरी,
जेकरा रूपवन लागलि बा पटिहाट ।
आंगावा चरि चरि गेनान गोड़वा-तारी,
चरि चरि झुलिया गइलि बा सीरहान ।
बीरवा लोसक न डलुए जो गलइचा,
उपरा मुसुमुरि जो देला रे बिछाइ ।

इहे जब रतिया के पवना जो बीछावल,
सब करिदाने के बीरवा बाइ।
बीरवा देखे खेलाइ न अलवाबेल्हा,
आ बमरा उ सोचत दुअरबे पर दादा रे बाइ।

गद्य : भइया जब देखे जलसा गउरा के। कहे जे हाइ भगवान, आजु हमरी आंखी अन्हवट लाग गइल। आजु आपन मय समे हम बिगाड़ि के, मये आपन समे बीगरि के, सीराजवा हमके बेरि बेरि कहसो आजु हमरी आपी से।
आजु जो हम बेटा केइ क ऽ ऽ कहलकी जो कइले न रहितीं।
नाहीं आजू बीनसल रहित कामावा रें हमार।

गद्य : अब आजु जो राइ से सादी भइ रहित, राइ से बियाह भइ रहीत, बाइ नाही, अब हम करि कइसे सकीं, आजु हमरी लिखनी में दोसबा। आ पंचे, जलपान बहुत भांति से बीर करवलं स, कनिया दानाहा लोके। सब जल पियातारे। लोरिक बोलल बांड़ जे ए भइया अब जल्दी बियाइ के तैयारी कर आ टंट घंट। बाबा हमार भूखल बांड़, तपली के महिना बा, पियासले होइहन। झटपट होखो सादी हमरी भउजी के।

आरे बाबा के घर ओठवा गइलनि रे झुराइ।
सुनि ल बायनवा सांचोए सुधराके,
जेकर बीर के बांका ए लोरिक परल नांव,
सुनलीं ज पंडित धावल लो मांड़वा मे,
आरे बेद लोग चलल उचरही न बाइ,
जब भइया एने के पंडित सुहवलि के,
आ गइल रहलनि माजना गउर गढ़ पालि,
अब जब चउका पर अउर रानी बइठल।
आरे दूल्हा उ बइठल मांड़ो में लेलकार,
आरे भइया कन्ना न बाड़ो रे देवढ़ोय में,
आरे माड़ो में मंगल बाड़नि रे गवाइ।
पंडित बेदवा पढ़े लो अंगना में,
अब सुन सोना जे सुहवलिय पालि।
अब भइया डाल के पुजन होखे लागल।
अब डल पुजइया पहिले न भइल बाइ,

पहिले जब डाल ए पुजइलनि अंगना में,
पाछे अब बेदए खुललि लेलकार ।
चलि गइल आड़रवा सांचो दुअरापर,
हाहो बाबा मानिजइब बतिवा हमार ।
अब बाबा चलीय चल न बखरी में,
आरे मांड़ों में, बइठि जइब हो लेलकार,
अब एहजा होखो न सादी सतीयाके,
हंसिय के उठल बमरिया रे बाइ,
कहत बा जे बेटा मोर उठ ए कुसेल्हा,
सब एइजा चल जा भइया हमार,
अब तनी चलिय चल जा मड़वे में,
आ रचि के लड़िकिय के होखोरे बियाह ।

गद्य : आजु भइया उठल रजा बाटे बमरिया, आ संग में नाउ पंचे बारी बाड़े के ले के सोन के घार उठालो लोहल । बीर चलल गइल चलावल । आजु पंचे, पहुँचि लो गइल मांड़ों में बाइ । बोलल बा बमरिया जे हे बबुआ आजु हमार तिलक बाकी रहि गइल, हम ना चढ़वली हइ आंगे तिलक गनती करवा ल ।

अहां हां हां, थोड़ी अब भउवा सुनल खेलान गउरा में,
ओहि बाजु गजन गउरव गढ़पलि ।
इ देख सोन के पाराउवा बोर तीलक बटुरी बाड़नि न इतजाम ।
बाबा न नाहिय तीलकवा बबुआ चढ़ल,
ओहि जब सोना सुहवली दहपालि ।
एतना हउए न दानवा लाड़की के,
हमरा से पंचे जोगोय त नाहीं बाइ ।
बबुआ ले के न दानवा अब तूं ही अब लेब,
दानवा देखे देबइना गंजवाइ ।
आजु उहे हंस बेटाइ न रणीये के,
जेकरना बंका लोरिक न परल नांव ।
उहे जब हंसि-हंसि न तिलक लोग देखावे,
पंचे देखब जा तिलक न हमार ।
जेकरी मोहरी असरफी थरिया में,
मोतीया भरलि डालिय में भइया बाइ ।

अब बीर लेला दहेज मड़वा में,
हंसि के ले महल बखरिया में न बाइ ।
अब पंचे हंसि के तीलक पाठा जब दे ताड़न,
पाछे मांड़ों में बइठि गइले लेलकार ।
आजु भइया जो बेद लो पढ़े लागल बराम्हन,
सती चउका बइठि गइली लेलकार ।
आरे संवरू बर बनि के बोलल बाड़े,
आरे दूलहा जब संमल मढ़उवा में बा ।
उठल मंगलबा बाड़नि हो मउरा में,
रचि के जब मंगल बाड़नि रे गवाइ ।
जब बीर रुपया पैसा न लागलि छींटे,
आरे जेकर भइया परल कुसेल्हवा बाइ नाव ।
अब भइया बीगे लागल दान मांड़वा में,
आरे हमरी बहिनी के परि गइलनि बियाह ।
खुसीय मड़उवा सांची ए भइया चलल ।
आरे खुसीया बा उठल मांड़ों में लेलकार,
अब तनी सुनिल बयान बीरवे के ।
आं जंघिया पर बामरी लेलन ए बइठाइ,
अब भइया कनिया दान पाठा हउए साचो देल ।
आरे लिखनीय भुभुति गइलि रे भगवान,
अब एइजा बीरवा से चललि हो होवाइ ।
आरे पंचे सुनि लेव ऽ मनवा लगाइ,
जब पंडित न बेद लगल पढ़े ।
आरे दुलहा बनल घरामिया रे बाइ,
अब भइया सेनुर डाले के अड़र भइल,
आरे जेकर ककना हाथ में बाइ,
लाल ममछवा रहल रे दुलहा के ।
आरे नयना काजर रहले लहरदार,
कमर में पीयरीय घोती रहलि डाललि ।
आरे सती पीयरीय लुंगा पहिर ए बाइ,
देले रहल दान बीर अलबेला ।

जेकर आज रसे बमरिया नांव,
रनिया चउकवा बइठि गइली सती,
आरे सेनुर डाले चले लोरिक लेलकार,
लावा परिछाइल रहल ए कुसेल्हा के ।
आरे लावा जब आँगन गइल रे परिछाइ,
पंचे लाला ऊँचा गाना होइ गइलं ।
एइजा बावा फेरु ए देइ रे मुधियाइ,
उहे ए गानाइ गड़बड़ि न होइ गइलं ।
आ लावा अब संगे में गरलहू परि ए छाइ ।
अइ जेवनी वेर धुर नान्हू लेके लावा हवें,
परिछले पंचे लावा ले के बागति अजइया बा ।
अब भइया लउवा में लावा बिगेलागल,
अब भइया लउवा में लागल मीले ।
तारिया गाना गवतू हुमेलवे पर बाइ,
अब भइया उठल गारी न अंगाना मे,
अब भइया उठल गारी न अंगना में,
लउवा जब मीलल लेलकार ।
पंचे, अब एहंजा ए गाना मोर छुटि जइहं,
अब गाना चलल बिवहूवें परु बाइ ।
अब भइया होते चलल सादी सतीया के,
ओरि नगर गउरा न केरि र बजारि ।
अब जब बामरि बाड़े जांघ बइठवले,
अब सेनुर डाले ए चलल सवरू बाइ ।
पंचे उहे रचिके सेनुर हउबं डलले,
सतीया के साचों के जब हो गइलनि बियाहू ।
ओहि जागो फोटर धइल वा आँगनामे,
पीढ़ा आजु बनल जगनवे में बाइ ।
ओहि पर भइल ह सादी रे सतीया के,
साचो बीर के गउरा में हो गइलनि बियाह ।
लागलिहू नाता मुहवलि में,
हीतइय सोना रे सुहवलिय पालि ।

भावार्थ, शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

सुमिरन

पृष्ठ 1

भावार्थ—हाँ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ हे राम, हे राम, हे राम, आज राम से ही जीवन है, एक दिन मृत्यु है। राम में ही जीवन का आधार है। यदि तू राम का भजन नहीं करोगे तो कुंभी नरक के गर्त में गिर जाओगे। यदि तुम राम का भजन करोगे तो तुम्हारा सुरधाम बन जायगा। फिर इससे मैं भी लाभ प्राप्त करूँ और आगे ठाकुर जी का नाम भजूँ। जरा मैं नगर के डीह का स्मरण कर लूँ। हे बाबा मैं तुम्हारा नाम नहीं जान सका। मैं दूर देश का बालक हूं! शर्म से मेरे शरीर का ढाँचा गिर रहा है। जिस प्रकार आप नगर की रक्षा करते है वैसे ही हे बाबा, हमारी रक्षा कीजिए। पूर्व में लालिमा छा जायगी, पश्चिम में प्रकाश होने लगेगा। अपने नगर की बड़ाई में तत्पर, मेरा भूला हुआ रास्ता ठीक हो जायगा। तो हे बाबा जिस दिन तक मृत्युलोक में मेरा शरीर जीवित रहेगा और अस्थिपंजर में जब तक प्राण लोटता रहेगा तब तक इस संसार में मैं तुम्हारा गुणगान करता रहूँगा और हे डीह बाबा तुम्हारा नाम लेता रहूँगा। आज जो शरीर और बुद्धि इस संसार में है वह तुम्हारे चरण की बलिहारी है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—जियन = जीवन। मुवन = मृत्यु। रामले = राम से। हउवन = है। अधार = आधार। कूमि नगर = कुंभी नरक,टेप में स्पष्टता नहीं है। शायद 'नरक' 'नगर' सुनाई पड़ रहा है। कुम्भी नरक या कुंभी पाक नरक वह नरक है जिसमें मांस खाने के लिए पशु-पक्षी मारनेवाले खौलते हुए तेल में डाले जाते हैं। गाड़ि = गड्ढा, गड्ड, गर्त। सुरधाम = स्वर्ग। लाभ निवारी = मैं लाभ का निर्वाह करूँ। निवारी = मैं निर्वहण करूँ, प्राप्त करूँ। रछ्छा = रक्षा। वोगों = उसी प्रकार। चौकी कर = हमारी रक्षा करें। लाही लगि जाई = अरुणिमा छा जायगी। नइयां = नाम। जाकर आज नगर के डीह देवता सो गये हैं और मेरी प्रार्थना नहीं सुन रहे है।

माँ जगदम्बा का स्मरण

पृष्ठ 2-3

मां जगदम्बा जाग उठी और आज उन्होंने सागर (शायर, कवि) को ललकार कर बाँध दिया तथा वह मृत्यु मंडल में, इस संसार में, नगर में पहुँच गयीं। वह पति का अंगूठा मरोड़ने लगी और कहने लगी—हे पति, आज मेरा कहना मान लीजिए। आज दूर देश का एक डिंगर (दुष्ट व्यक्ति) इस नगर में आया है। कहीं हमारा बच्चा संकट में पड़ गया है वह मृत्युलोक में आपका नाम ले रहा है। मैंने

उसका दुख सुना और सुनने से हमारी छाती फट गयी । हे पति, जैसे आप नगर की रक्षा करते हो वैसे ही इस स्थान पर हे बामन ध्यान दीजिए । जगदम्बा कह रही हैं कि जिस प्रकार आप नगर की रक्षा करते हैं उसी प्रकार सभा में प्रतिष्ठा की रक्षा कीजिए । हे स्वामी, आप ज़रा हमारे बच्चे की रक्षा कीजिए, मेरा बच्चा विपत्ति में पड़ गया है । नगर के डीह देवता सो रहे हैं और प्रार्थना नहीं सुन रहे है । मां जगदम्बा, सायर (कवि) को लेकर मृत्युलोक में हैं और डीह को ।····वह डीह को ? दुहत्थी चोट लगा रही हैं । वह शिव से कह रही है ऐ स्वामी, ऐ मूर्तिनारायण, अब सोने में विघ्न हो रहा है । तुम्हारे घर के ऊपर वज्रपात हो जाय, वज्र की धार गिर जाए । दूर देश का दुष्ट व्यक्ति मेरे नगर में आया है । मेरा बेटा आज संकट में पड़ गया है । मृत्युलोक में मेरी छाती फट गयी है । मैं जाकर विष खा लूंगी ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ - अरदास = प्रार्थना, अर्ज़दाश्त । सायर = सागर, शायर । मिरुतमंड़ल = मृत्युलोक । सवंसार = संसार । संकेता = संकट में । फाटि गइल छाती हमार = हमें दुख होने लगा । ओइड़ो = उसी प्रकार, उसी स्थान पर । ओइड़ो बावन घाल लिलार का अर्थ बहुत स्पष्ट नहीं है । बिहड़ा = कठिनाई, संकट । तोहथा मारे = उसने दुहत्था मार मारा, उसने दोनों हाथों से बड़े ज़ोर से मारा । भिनिक = विघ्न । देवी कुएँ में गिरने की तैयारी करने लगीं । तब सोते हुए डीह बाबा जाग गये और अपनी पत्नी को ललकारने लगे कि हे विवाहिता, हे बालक के समान क्षीण मुख वाली नारि चलो मां और बेटी टोनहिन बन जाओ और हम बाप बेटा ओझा बन जाएँ । धरती सवा बित्ता है वहाँ मेरा शरीर लोट जायगा । जो गाने में स्वर लुप्त कर देगा उसको खम्भे में चुनवा दिया जायगा । जो लड़ने में बल छोड़ देगा उसको तलवार के घाट उतार दिया जाएगा । अब नगर के डीह जाग गये, वे किसी का आतिथ्य स्वीकार करेंगे । गायक कह रहा है कि इस पंवारे को छोड़कर अब ऐ पंचों, देवी के नाम का भजन किया जाय ।

भवानी का स्मरण

पृष्ठ 3-4

भावार्थ—भाग्य से भवानी जग गयीं । हे पवित्र दुर्गा माँ, आप युद्ध के समय चलिए । गीति के समय, हे सरस्वती, आप मेरी जिह्वा पर बिराजिए । पंचों की मंडली बैठी हुई है, छोटे बड़े सब एक समान हैं । सब लोगों ने मुझे आज्ञा दी है, मुझमें गाने की शक्ति नहीं रह गयी है । तुम्हारे ही बल का भरोसा है । मेरा प्राण संकट में फँस गया है ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—बजरपरो ना तोहरा घर, आरे तोहरा पर गिरिति गजबवे के धारि = तुम्हारे घर पर वज्रपात हो जाय तथा तुम्हारे ऊपर बिजली गिर पड़े । माहुर = विष । ईनार = कुआं । लरिकवन्हा = लड़के की भाँति । पातरि = पतली । माइ धिया = माता और पुत्री । मूल-पाठ में घिया हो गया है जो अशुद्ध है । ओझा =

भूत-प्रेत का भगाने वाला, तंत्र-मंत्र, टोना-टटका करने वाला व्यक्ति। अरार=? बिता=बालिश्त, बित्ता। बया=शरीर। गर=गला। खंभवा=खंभे में। जमुकतिरि =एक प्रकार का खड्ग। पहनाइ=पहुनाई, आतिथ्य, अतिथि होने का भाव। जूझि युद्ध। अध जल में=आधे जल में अर्थात् संकट में।

हे देवी, मेरा गीति का गाना छूट गया है। संसार में मेरा शरीर जर्जर हो गया है। जब समय अच्छा होता है तो इस संसार में हित चाहने वाले लोग मिलते हैं, जब समय बुरा आता है तो कोई भला चाहने वाला नहीं मिलता। हे जगदम्बा, आपने मेरा संग पकड़ा है। मैं हर घड़ी आपका नाम भजता रहा। आगे जो युद्ध होने वाले हैं उनका हाल मैं नहीं जानता। यह महाभारत मैंने आँखों से नहीं देखा है। यह सुना हुआ गाना मैं गा रहा हूँ। इस गीति को मैंने कान से नहीं सुना है। हे देवी, मैंने जिस दिन के लिये पूजा की है वह समय इस सभा मे निकट आ गया है। यदि गूढ़ अक्षर मुझसे छूट गए तो दुनियाँ में लोग कल मेरी बड़ी निंदा करेंगे। जिन व्यक्तियों को गाने का कभी ढंग नहीं आया वे सभा में मस्तक खोलकर बैठे हुए हैं। तुम्हारी पूजा मैंने की है उसको धिक्कार है। तुम्हारा नाम कभी भी स्मरण करने योग्य नहीं है। देवी, ज़रा खेकर मुझे उस पार लगाओ। मेरा शरीर दिन रात तुम्हारे ऊपर आश्रित रहता है। हे देवी, अगर मैंने तुम्हारी भक्ति मृत्युलोक में छोड़ दी होगी (और यदि दुनिया में घमंड और अपराध किया होऊँगा तो मेरा साथ न देना)। मैंने दुनिया में घमंड और अपराध नहीं जाना।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ --गीति=गायक अपने गायन को पँवारा, गीति और गाना कहता है। सुरसती=सरस्वती। मेड़रि=मंडरी। हुकुम=हुक्म, आज्ञा। बूतें=शक्ति से, बूते से। अधजल में पड़ि गइल परान=आधे जल में प्राण हो गया है अर्थात् प्राण संकट में पड़ गया है। खांखरि=खोखला, जीर्ण-शीर्ण। बनलेइ पर=अच्छा समय होने पर। हितवा=हित, मित्र। बिगरला पर=बिगड़ने पर। लोहवा=लोहा, युद्ध।

पृष्ठ 4-5

भावार्थ - आज दुनियाँ मे गायकों की माँग बढ़ गयी है। हे देवी, मुझे तेरे बल का ही भरोसा है। मैंने सुना है कि आपने सुघरा की पूजा स्वीकार की और इस संसार में आपने तलवारों को रोका। जैसे आपने एक बार (अपने प्रिय की प्रतिष्ठा रखी) और युद्ध मे जिसकी तलवारें चमक उठी, उसी प्रकार हे मोहिनी जगदम्बा, मैं तुम्हारी पूजा कर रहा हूँ। आप ज़रा अपनी महिमा प्रकट कीजिए। पंचों, भवानी जागृत होकर दौड़ गयीं। माँ दुर्गा सिर पर मंडराने लगीं। सरस्वती भी गीति-गायन के समय जिह्वा पर विराजमान हो गयीं और वह कहने लगीं हे बेटा सुचारु रूप से गाओ, मैं कान लगाकर सुनूँ। यदि एक भी गूढ़ अक्षर भूल जायगा, मैं दो दो अक्षरों को मिला दूँगी और लज्जा रखूँगी। मैंने दुलरा की पूजा खायी तब भारत अर्थात् युद्ध में मेरा शरीर

गल गया। हे बच्चा, जब गूढ़ अक्षर भूल जायगा मैं दो दो कड़ी मिला दूँगी और लाज बचाऊँगी। हे पंचों, जिस दिन के लिए मैंने पूजा की (वह अवसर आ गया) देवी प्रसन्न हो गयीं। एक दो व्यक्तियों की बात कौन कहे अब सारी दुनिया भी क्रुद्ध होकर कुछ नहीं कर सकेगी। हे पंचो, मैं अब भारथ का गाना गा रहा हूँ। अब आप लोग इसका भेद समझकर सुन लीजिए। हे पंचों, हिन्दू गंगा लाभ करेंगे और तुर्क कब्र में जायेंगे। हे भद्र कामिनी, आपने मेरा साथ छोड़ दिया। हे देवी, मैं कहाँ गीति गा रहा था। आज हृदय में कहाँ विस्मरण हो गया। हे देवी जिस दिन के लिए मैंने पूजा की वह घड़ी आ गयी। अब आप शूरों की कीर्ति कह दीजिए। किसके लिए भारथ तैयार हुआ है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—बाजलि तरेवारि = तलवारें बज उठी। मोहिनी = चित्त को लुभाने वाली। पूजनियाँ = पूजा। तनकी = ज़रा सी। मेराइ देइबि = मिला दूँगी। केवन चलावो = कौन बात कहे? काइ ले करी = क्या करेगी। कोहनाइ = क्रोधित होकर। एइजाँ = इस जगह। हिनु = हिन्दू। गोर = कब्र। दीलें = दिल में। बिसमोर परल = विस्मृत हो गया। गइलि नियराइ = निकट आ गयी। कीरतिया = कीर्ति। हे देवी, किसके जीवन के लिए स्वयंबर ठन गया है। हे पंचों, बमरी के छै पुत्र थे। ये छवो पुत्र दैव के लाल थे। परन्तु उनमें दो वीर जिनका नाम भीमली और झिंगुरी था बड़े नामी थे। छै बेटा बमरी के तो थे ही सातवी बेटी सती का भी अवतार हुआ था। पंचों, जरा दुनिया में भारथ सुनिए। अब ललकार कर सशक्त धनुष गाड़ दिए गए हैं और मर्दों की सान, तथा उनका अभिमान गरज उठा है तथा महाभारत की तैयारी हो चुकी है।

पृष्ठ 5

भावार्थ (गद्य-पद्य)—जब सुरहन मे मोतीसगड़ के घाट पर अखाड़ा खुदा हुआ था, और जिस समय बामरि का पुत्र, जिसका नाम भीमलिया था, बैठा हुआ था (उस समय) एक ओर पट्टा सिरजवा लड़ रहा था, फिर झिंगुरी पहलवान लड़ रहा था। एक ओर दसवंता, भगवंता भी लड़ रहे थे। सभी सुहवल के निकटवर्ती तट पर लड़ रहे थे। इधर वीरों की ताली गरज उठी, तब बैठे हुए भीमली की शक्ति उभरने लगी। गायक कहता है कि मैंने सुना है कि उसकी छाती का बल बढ़ गया था और उसकी भुजाओं का बल रुक नहीं रहा था।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—केकरी कारन = किसके कारण। जियरवा = प्राण, जीवन। सुअम्बर = स्वयंवर। ठनलबाइ = आयोजित हुआ है। छ गोई = ठीक छै। रहलनि = थे। दइब = दैव। बाकिर = बल्कि। सरनामी = नामी, प्रसिद्ध। धेना = धनुष। जबिया = जाबिर, अत्याचारी। अड़ार = तट, अरार। ताड़वा बाजि गइल = गर्जना शुरू हो गयी। ताड़ = शब्द, ध्वनि। अड़ाई नहीं बलवा = बल रुक नहीं रहा था।

पृष्ठ 5-6

ऐ पंचों, बामरि का बेटा जिसका गज भीमलिया नाम था उठा और उलटा लंगोटा कसने लगा जिसके ऊपर मल्ल वर्ण की पहलवानों वाली एक विशेष गांठ थी। उसने अजगर की सी पेटी बाँधी जिसमें गोला हिल नहीं सकता था। धरती से उसने मिट्टी उठायी और अपनी गर्दन पर चढ़ा ली। उसने ज़ोर अजमाया और अपने सिर पर मिट्टी चढ़ा ली। बीर ने डंड बैठक की, वह सोना सुहवली पार में डंड खीचने लगा। डंड खींचने के बाद उसकी मुट्ठी में, घूसे में बल आ गया। वह ठुमुकते हुए धरती पर पग डाल रहा है, लगता है सचमुच इन्द्र ही अखाड़े में जा रहे हों। चलते चलते वह सुरहलि के निकटवर्ती तट पर पहुँच गया जहाँ झिंगुरी का अखाड़ा खुदा हुआ था। अब वह पट्ठा बाँह उठाकर ललकारने लगा। बमरी का बेटा जिसका नाम बली भीमलिया था, और जो अब जग उठा था, डाँट कर कहने लगा—भइया झिंगुरी और सिराज सुन लो, मेरी बात मान लो। दोनों भाई दाहिनी भुजा दबाओ और अपनी अंकवार में मुझे चांप लो। फिर बली भीमली ने कहा—हे दसवंत, मेरी बायीं ओर तुम अपनी भुजा दबाओ। वहाँ भंगवता आदि चारों बीर भुजाओं से अंकवार देने लगे। झिंगुरी ने उसके गले में फंदा डाल दिया फिर वह वीर से प्रार्थना करने लगा।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—मालबरन = पहलवानों के लंगोटों में दी जाने वाली एक विशेष गांठ (मल्ल + वर्ण > मालबरन)। घींचल पेटी अजगर के = अजगर के समान पेटी चढ़ा ली। जीमुस = जुंबिश, स्पंदन। मउरे = सिर पर। डंड = एक प्रकार का व्यायाम जिसमें हाथ पैर के पंजों का सहारा लेकर छाती और पेट को ऊपर नीचे ले जाया जाता है। इसको सपाट खींचना भी कहते हैं। उठक-बइठकिया = दंड-बैठक, व्यायाम की एक प्रकार। घूंचवा = घूसा, बंधी हुई मुट्ठी। पगुआ = पग। इनरवा = इन्द्र। बन्हिया = बाँह। आबांकेबारि = अंकवारि, आलिंगन देना। फनवा = फंदा।

पृष्ठ 6-7

वह क्या प्रार्थना कर रहे हैं; कह रहे हैं, किसकी माँ ने दूध और मिश्री खायी है, किसने दुनिया में अवतार लिया है। तुमसे कौन लोहा लेगा, उसकी नजर का हाल सुनिये।

पंचो, बीर दसवंता वहाँ रो रहा है वह भीमली के चरण पर गिर गया। ऐ भइया, जो तुम्हारी भुजा से भुजा मिलाऊँगा तो हमारे शरीर की हड्डियाँ टूट जायेंगी। तब बीर राजा भीमला कड़क कर बोलने लगा, भाई झिंगुरी मेरी बात मानो। जब सुरहन में तुम्हारी गर्जना होती है हमारे कलेजे में कड़क सी उठती है। भइया तुम सुरहन का अखाड़ा छोड़ दो, मोती सगड़ का घाट छोड़ दो। पंचों, सुरहन को झिंगुरिया ने छोड़ दिया और बबुरी बन पहाड़ को बह चला गया। भीमली की

सीना जोरी के कारण उसने लंगोटा खोलकर फेंक दिया और बबुरी वन पहाड़ में वह चला गया। कंधे पर लाठी रखकर अब बबुरी वन में गाय चरा रहा है। सिराज भी बबुरी वन में गाय चरा रहा है। दसवंता, भगवंता भी मेलन ठेलन के पार चले गये। पंचों, आज बीरों ने धन से पूर्ण सोना सुहवली के दह के पार सुरहन का अखाड़ा छोड़ दिया। इस कारण से भीमला का रोब और बढ़ गया उसको सुहवलि में चैन नहीं मिल रहा है। बीर अब बरगद के पेड़ मे अपनी भुजाएँ लगा रहा है, ज़ोर अजमा रहा है। लचक कर वह करवट लेकर धरती पर गिर पड़ा है। (तब से) बामरि का पुत्र विक्षिप्त सा हो गया है, अपनी शक्ति को वह रोक नहीं पा रहा है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—कांड़रि = खांड़, मिश्री। देनियां = दुनियाँ। ओइजा = उस जगह। पंजरिये के हाड़ = पंजर की हड्डी। हाड़ = हड्डी। कड़कि कड़कि = कड़क-कड़क कर। बिगि देला = उसने फेंक दिया। कन्हिया = कंधा। लठिया = लाठी। दह = नदी का गहरा भाग जहाँ अधिक पानी हो, बड़ी नदियाँ कभी-कभी बाढ़ के बाद छोटी नदी या झील जैसा सोता छोड़ जाती हैं उसे दह कहते है।

पृष्ठ 7

ऐ पंचों, बीरों ने अखाड़ा छोड़ दिया, सब लोग इधर-उधर चले गये। भीमला अब अपनी शक्ति को रोक नहीं पा रहा है, उसने पेड़ में अपनी भुजा लगायी। आज यहाँ बमरी का पुत्र भीमली सनक गया है उसको अब रात दिन चैन नहीं मिल रहा है। वह अपने लंगोटे को उलटा कस रहा है, और मालवर्ण की गाँठ बाँध रहा है, वह अजगर सी अपनी पेटी को बाँध रहा है जिसमे गोला अडिग है। ऐ पंचो, बीर जब छाती में उत्साह से तवा बाँध रहा है उसकी बर्छी दुहरी होती जा रही है। वह सिर पर गुलाबी वस्त्र (पगड़ी) पहन रहा है। उसके मुंह पर कवच फहराने लगा है। वह पैर में अलीगंज का जूता पहन रहा है। अस्सी मन का मुगदर उसने अपनी गर्दन पर धारण कर लिया है। अब इधर भीमली का आसन उठ गया है वह संसार को मथित करने के लिए चल पड़ा है। समरगढ़ के सौ खम्भे है दरवाजे पर उत्तर दक्षिण व्यायाम करने के लिए डंडसार बने हुए है। पीले रंग का छोटा सा बामरि का घर है वहाँ कचहरी लगी हुई है। भीमली वहाँ चलते चला जा रहा है बामरि उसको नज़र उठा कर देख रहा है। भीमला ने झुककर माथा नवाया। बामरि उसको आशीष दे रहा है—बेटा तुम लाख लाख वर्ष तक जीवित रहो, अक्षय रहो। गंगा यमुना जैसे बढ़ती हैं वैसे तुम्हारी आयु के साल बढ़ें। बेटा मैं तुमसे पूछता हूँ, इस बात का भेद बता दो किस का काल आ गया है, किसकी मृत्यु निकट आ गयी है। बेटा तुमने अस्सी मन का मुंगदर सर पर चढ़ा लिया है। तब उसके बेटे भीमली ने कहा—ब्रह्मा ने इन्द्रासन में मुझे अमरत्व लिख दिया है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—फेड़वा = पेड़। दरखत = दरख्त, पेड़। भइंसा = भैंसा. यहाँ वीर के लिए प्रयुक्त हुआ है। लहकारि = उत्साह के साथ, बढ़ाकर। दूबर = दोहरा। पाट = वस्त्र, पगड़ी। गिरा = मुँह पर ?। लंगर = कवच। पराइ = पड़ा हुआ है। महै चलल = वह मथने चला। समरगढ = एक स्थान का नाम। डंड़सार = व्यायाम शाला, डंड बैठक करने की जगह। सोहरि के = झुककर। ओनावे माथा = सिर झुका रहा है। खांड = देश। वरीस = वर्ष। गरेसल काल केकरि = किसका काल ग्रसित हो गया है, किसकी मृत्यु निकट आ गयी है। मउवति = मृत्यु। इनवारासन = इन्द्रासन, स्वर्ग।

पृष्ठ 8

ब्रह्मा ने साठ हाथ का वल मेरी भुजाओं में भेज दिया है किन्तु हमारा जोड़ नही भेजा ताकि हमारे हृदय का कांटा निकल जाय। काका, अब मैं धरती को मथने चला। पूरी शक्ति लगाकर अपनी जोड़ी खोजने चला। वसुधा मे जो कोई वीर उत्पन्न हुआ होगा अपनी शक्ति से मुझे रोक देगा। पंचो, भीमली दुनियाँ का मान मथने चला पर उसकी जोड़ी का वीर पृथ्वी पर अवतरित नहीं हुआ था।

जिस समय वह पृथ्वी को मथने चला तो सान मे उसकी बराबरी का कोई मर्द नही था जो अपने वल से उस पर रोक लगा दे। अब भीमला बारह भठी पारकर बंगाल और तीन सौ भठी पार कर सिलहटि के पहाड़ पर पहुँचा। दक्षिण दिशा में वह पंपापुरी पहाड़ पर पहुँचा। जिस नगर में वह ताल बजाता वहीं बीर दसो नख अर्थात् दोनों हाथ जोड़ लेते। किसका काल पूज गया है। किसके सिर पर युद्ध आ गया है ? बीर बवेला भीमली गरजने लगा उससे कितनी गर्भिणी स्त्रियों का गर्भ गिर गया। गायक कहता है, मैंने सुना है कि पांच से अधिक दिशाओं में भीमली ने भ्रमण किया। वह कावुल देश खोज कर चला फिर पंजाब मे गया। बातें उस समय की हैं। पर ज़रा गुरु का नाम भज लीजिए। हे पंचों, हिन्दू गंगा लाभ करेगा तुर्क कब्र में जायगा। हे भद्र कामिनी दुर्गा ! आपने मेरा साथ छोड़ दिया, मैं कहाँ गीत गा रहा था अब दिल में कहाँ विस्मृति हो गयी ! जिस दिन के लिए मैंने पूजा की वह दिन निकट आ गया है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ - जाड़िया = जोड़, या जोड़ी जो मुकाबला कर सके। निकड़ि जाई कांटवा = कांटा निकल जाय। माहना = मथना, मथने की क्रिया। पहिया लगाई = अपनी पूरी शक्ति लगाकर, चरम सीमा पर पहुँचकर। बेलमाइ देइय = मुझे रोक देगा। पिरीथमी = पृथ्वी। सोने में = वस्तुतः शब्द 'साने में' है। पाठ अशुद्ध छप गया है। भठी ? = मील की भाँति का एक माप प्रतीत होता है। नहरना = नख। दसो नहरना = दसो नख, अर्थात् दोनों हाथ। गाभी = गर्भी, गर्भवती। पंचोतर = पाँच से अधिक। पनेजाब = पंजाब। घरिअ = घड़ी।

आप सुहवल की कीर्ति कह दीजिए कि किस प्रकार भारत शुरू हुआ। जब भीमली पहुँचा, बमरी की कचहरी लगी हुई थी और दरबार खूब भरा पूरा था। बायें मंत्री बैठा हुआ था और दाहिने बाँका दीवान महतो बैठा हुआ था। धूमिल और उदास होकर भीमली सोना सोहवली पाल आया हुआ है उसने झुककर मस्तक नवाया, बामरि उसको आशीर्वाद दे रहा है। कहता है मेरे पुत्र तुम लाख वरस जीवित रहो। अक्षय रहो।

पृष्ठ 9

हे बेटा, तुम्हारी जोड़ी आज पृथ्वी पर मिल गयी है, निश्चय ही तुम्हारी बराबरी का जोड़ मिल गया है। भीमली अब सोच में पड़ गया, चिंतित हो उठा उसका धैर्य टूट गया। वह धरती में माथा झुका कर रोने लगा। उसने कहा हे काका, मेरे भाग्य के लेख में आग लग जाए, चलो हम इन्द्र के पावन द्वार पर चलें। ब्रह्मा ने मेरे भाग्य में अमरत्व लिखा है। साठ हाथ का बल उन्होंने मेरी भुजाओं में भर दिया है। उन्होंने इस संसार में मेरे जोड़ का कोई व्यक्ति नहीं भेजा है कि मेरा सान प्रगट हो सके। हे पिता मेरा बल, मेरा सान वढ़ गया है। मृत्युलोक मे लड़ने के लिए मेरी छाती फट रही है। मैं विष खाकर मर जाऊँगा, कुएँ में गिर कर धँस जाऊँगा। राजा बमरी इस बात पर क्रुद्ध हुआ। उसकी आँखों से लहू के आँसू टपकने लगे। उसने कहा—बेटा तुम्हारे ऊपर वज्रपात हो जाय तुम पेट में ही दबकर नष्ट हो जाते तो अच्छा होता। तुम सचमुच बल मे कमजोर हो गये हो और तुम्हारी बुद्धि में विक्षिप्तता आ गयी है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—कीरिति = कीर्ति। लहटल बेटा = बेटा परच गया, पहुँच गया। भरुअर = भरा पूरा। धूमिल मलल = मंद और दुखी करके। सोहरि = झुक कर। ईसरबाद = आशीर्वाद। खांड़ = देश, खण्ड। वसुधा = पृथ्वी। अधेड़ा = अधीरता, अधैर्य। तीनवां के = ? माहुर = विष। साठी = साठ। मुइ जाइत = मर जाता। भंसि जाइबि = धँस जाऊँगा। रोधिल = रुधिर। बघेला = बीर। ओंजरे तर = उदर के नीचे, पेट में ही। अबर = दुर्बल। बुधिया = बुद्धि। वउराह = पागल। भूप = राजा।

राम कथा का उल्लेख

हे बेटा, विष खाकर स्त्री कुँए में गिर पड़ती है। आज अगर तुम्हारे जोड़ का बीर तुम्हें नहीं मिलता तो मेरी बात मान जाओ, सातवें गर्भ से सतिया का अवतार हुआ है, छत्तीस हाथ का भाला तुम सुहवल में जल के सुन्दर तट पर गाड़ दो। जैसे जनकपुर में सीता का स्वयंबर हुआ था, जिसमें धनुष गाड़ दिया गया था और जिसमें देश-देश के राजा आये हुए थे, उसी तरह कोसों दूर से यहाँ बीर उमड़ पड़ेंगे।

धनुष हिलाने से नहीं हिला तब सभी राजा लज्जित हो गये थे। रघुवर रामचन्द्र का जन्म हुआ। उन्होंने अयोध्या मे अवतार लिया, जाकर ताड़का का वध किया, युद्ध का बड़ा यज्ञ किया। बगसर में जाकर काम को मार डाला। भगवान लोगों की मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। उन्होंने अहिल्या का धूल उड़ा दिया, जीवन दिया, उसको चरण रज दिया। फिर जनकपुर जाकर उन्होंने धनुष तोड़ा तथा जनक का प्रण तुड़वाया। उसी प्रकार मोती सगड़ में तुम भी धनुष संभालो। तुम्हारे मुंड का कलश बनेगा तथा रक्त से कोहबर पुतवाया जायगा। तीन वीर बेटों को लड़वा कर टाँगों की जो हरिश टंगवा देगा वही सतिया का, सोना सोहवलि में विवाह करायेगा। जब बामरि ने इतना कहा तब भीमली ने तुरन्त जवाब दिया। गायक कहता है कि मैंने सुना है कि वीर (भीमली) उठा, वह बीर लड़ने में बांका और जुझारू था। उसने अस्सी हाथ का भाला रथ पर उठा लिया और चलकर मोतीसगड़ के घाट पहुँच गया। मोहवलि में सान गड़ गयी तथा महाभारत की तैयारी हो गयी। अब सोना सुहवलि में बामरि का बयान सुनिये।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—जनाना = औरत। पेटा = गर्भ। सुआंर = सुन्दर तट पर। अजोधा = अयोध्या। बगसर = एक स्थान का नाम जो बिहार मे गंगा नदी के तट पर है। तड़िका बधन = ताड़का का बध। अहिलै = अहिल्या। अहिला = अहिल्या। चरन रजि = चरण रज। धेना तोरलन = उन्होने धनुष तोड़ा। परन = प्रण। साइहि = संभालकर। कोहबर = विवाह के वर बधू एक कमरे मे देव पूजन के लिए लाये जाते हैं उसे कोहबर कहते हैं। कलसा = कलश। रोधिल = रुधिर। पोताय देई = पुतवा दिया जायगा। कहिया शब्द सदिया है, शादी। जुझार = जुझारू, युद्ध मे कुशल।

बामरि ने डुग्गी पिटवा दी, नगाड़ा बजवा दिया, ऐ देश-देश के वासियों, दुनियाँ मे कोसों तक के उमराव राजा! यदि जांघ मे बल हो, और भुजाओं में शक्ति बढ़ी हो तो आकर लोहे का चना सोना-सोहवलि में चबाये। ऐसा बीर ही दुल्हे का मौर बाँधेगा और सोहवलि में बारात करने आयेगा जो शक्तिशाली है। एक-दो की बात कौन करे दुनियाँ भर के लोग बारात करने आ जायँ। जो बीर गड़े हुए भाले को उखाड़ कर फेंक देगा वह बावन बुर्ज़ का तम्बू बावन भीटे पर गड़वा देगा (और सतिया से विवाह कर सकेगा)। रेशम के सूत की डोरी होगी और रात में वह पियरी (पीला वस्त्र) पहन सकेगा। वह वीर सुन्दर सेज, और मदिरा पान का सुख भोग सकेगा। बीच में हरे और पीले रंग का कालीन होगा जिसमें ज़री का काम होगा। उस पर तेगों का बागीचा लगेगा। मैं बर्छियों का मांड़ौ (मंडप) गड़वा दूँगा। बामरि कहता है कि वह बीर तम्बू मे बैठ जायगा और अपने मान की रक्षा करेगा, छाती फुला लेगा। इसके बाद पाँच गोमतही लकड़ी मोती सगड़ पर बजायी जाने लगेगी फिर पांच सुमतही लकड़ी बजायी जायगी फिर बियहुती (विवाह से सम्बन्धित)

लकड़ी बजायी जायगी। फिर वह बीर युद्ध सम्बन्धी मारू राग बजवायेगा। जब मेरे पुत्र भीमली के कानों में ध्वनि सुनाई पड़ेगी तब वह बाँका और जुझारू बेटा उठेगा। अलीगंज का जूता पहनेगा। पैर में मोजा डालेगा तथा छाती पर लोहा धारण करेगा फिर दोहरी करके बर्छी हाथ में लेगा। वह पट्टा अस्सी मन का मुंगदर गर्दन पर धारण करेगा। मैं उसको गुलाबी पगडी बाँध दूँगा जिसमें एक ओर जीरा और लौंग फहरायेगा। भीमला चक्रव्यूह बनाकर लड़ने के लिए तैयार हो जायेगा।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—उमड़ाव = उमराव, राजा। डगा = डुगी। धउंसा = धौंसा, नगाड़ा। जाँघी = जाँघ में। बलुसाइ = पौरुष। लोहा के चना चबइहैं = वह युद्ध करेगा। लरकि के = तेजी से जाकर। बरिआत = बारात। मउर = मुकुट। उपारिके = उखाड़कर। बीग दीहलन = फेंक दिया। बुरुज = बुर्ज़, चोभ। जूनी = शब्द जूमी होना चाहिये। एकत्र होगी, जूनी का अर्थ 'पुराना' है जो इस संदर्भ में उचित नहीं लगता। गुमतहीय और सुमतहीय लकड़ी = नगाड़े या बैंड पर लकड़ी से निकाली विशेष ध्वनि। 'गुमतहीय' और 'मुमतहीय' का अर्थ अस्पष्ट है। बियहुती = विवाह सम्बन्धी मारुवे डगम पिटवाई = युद्ध में बजाया जाने वाला मारू लकड़ी की ध्वनि निकाली जायगी। पगवाह = पाग, पगड़ी। डगम = डग्गा-डुग्गी आदि बजाने वाली लकड़ी। जीरा = खड्ग, कवच, वैसे जीरा और लौग एक साथ आया है जिसका अर्थ स्पष्ट नहीं है। लवंग = लौग, इस प्रसंग में अर्थ बहुत स्पष्ट नही है। कभी-कभी गायक परम्परा से आये हुए शब्दों को बदल देते है। 'जीरा' और 'लवँग' ऐसे ही शब्द लगते है।

पृष्ठ 11

बामरि कहता है, बेटा तुम सोना मुहवलि पार सागड़ पर चले जाओ जहाँ तुम्हारे मस्तक का कलश रखा जायगा तथा रुधिर मे कोहबर पुतवाया जायगा। तुम्हारी छाती का पीढ़ा गढ़वाया जायगा एवं जांघ की हरिश बनवायी जायगी। वहाँ एक बीर सतिया के सिर का झोंटा पकड़ेगा और मेरी बेटी सतिया से विवाह कर लेगा। हे पंचों, सतिया के जीवन के कारण छत्तीस जाति की कन्याएँ कुँवारी रह गयी हैं। कोई बारह वर्ष की कन्या है कोई सोलह वर्ष की स्त्री है। सभी स्त्रियाँ अविवाहित रह गयी हैं।

हे पंचों, हिन्दू गंगा लाभ करेगा, तुर्क कब्र में जायगा। वर कामिनी दुर्गा आपने मेरा साथ छोड़ दिया। हे देवी, जिस दिन के लिए मैं आपकी पूजा कर रहा था वह घड़ी निकट आ गयी है। हे देवी, बीरों की कीर्ति कह दो, कैसे भारत तैयार हुआ? पंचों, पंवारा छोड़कर अब भारथ का बयान सुनो। छत्तीस वर्ण की कन्याएँ कुँवारी रह गयीं हैं। जैसे वन में सियारिनें बिलखकर रोती हैं और घर के कोने में बिल्लियाँ कुहुँकती हैं उसी प्रकार बेटियाँ रो रही हैं। रानियाँ चिहुँक-चिहुँक कर दुनियाँ

की ओर देख रही हैं, मस्तक झुका कर ताक रही हैं। हे दैव, इस संसार में कोई वीर पैदा नहीं हुआ है जो सोना सुहवली पार आ जाय।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—हरिस = विवाह के अवसर पर मंडप में गाड़ी जाने वाली लकड़ी, यह हलका लम्बा लट्ठा होता है जिसके एक छोर पर फाल वाली लकड़ी आड़े बल जड़ी रहती है और दूसरे छोर पर जूआ लगाया जाता है। झोंटा = स्त्रियों के सिर का लम्बा बाल। सरिया = शुद्ध सतिया है। छोहड़ी = छोकरी, कन्या। बरिया कुँवार = बाल कुँवार।

पृष्ठ 11 पर आरे पंचे हिनु····नियराइ, सूत्र है यह पहले भी आ चुका है। गायक इसकी बार-बार आवृत्ति करता है। बिलारि = बिल्ली। कन्याएँ कह रही थीं कि हे रघुवर, आज शायद पृथ्वी पुरुषों से खाली हो गयी है, किसी पुरुष ने अवतार नहीं लिया है। सब यहाँ गदहों ने ही अवतार लिया है। जब जब लग्न के महीने आते थे सोहवल की कन्याएँ माथा नवाकर रोया करती थी। गायक कहता है, पंचों, हिन्दू गंगा लाभ करेगा तुर्क कब्र में जायेगा। हे भली कामिनी दुर्गा, आपने मेरा साथ छोड़ दिया। हे देवी, जिस दिन के लिए मैंने पूजा की थी वह दिन आज निकट आ गया।

पृष्ठ 12

देवी, अब वीरों की कीर्ति कह दीजिये, भारत कैसे तैयार हुआ? पंचों, जिस दिन की बात है, उस समय का हाल सुनिये।

छत्तीस वर्ण की बेटियाँ सोहवलि में मस्तक झुका कर रो रही थी। मृत्युलोक में कुछ समय ऐसे ही बीत गया, लड़कियों का कुछ दिन कट गया। दुनियाँ में उनका कोई सहायक नहीं था। जब भी लग्न का महीना आता था लड़कियों के हृदय में अग्नि सुलगती थी। दुनियाँ के लोग एकत्र होते थे, कहते थे हम लोगों की भाँति कोई स्त्री (दुखी) नहीं है, और न इस प्रकार का कोई राजा ही उत्पन्न हुआ है। सब के मुँह पर मिट्टी लग गयी है। हमारे जीवन काल में सोहवलि मे प्रेम नहीं (लिखा) है। शायद यह पृथ्वी बिना पुरुष के हो गयी है। यह संसार नष्ट क्यों नहीं हो जाता। भीमली के जोड़ का व्यक्ति रचा नहीं गया है, हम लोगों के कलेजे में आग सुलग रही है। भगवान, या तो भीमली की कोई जोड़ी उत्पन्न हो जाता या यह संसार ही ध्वस्त हो जाता! वे कह रही है कि हे सखी, कल से हम लोग गढ़ सोहवल छोड़ दें और लोटा धोती लेकर नीचे जाकर सागर में गोते लगायें तथा सूर्य बाबा को नमस्कार करें।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—निपूरुख = बिना पुरुष के। बीरहवे = व्यर्थ। बुला = शायद। साख समात = प्रभाव, प्रतिष्ठा आदि। हुरकति अगिनि = अग्नि प्रज्वलित हो रही है। मोहबति = मुहब्बत, प्रेम। करेजवे में = कलेजे में। हैठिये = नीचे। गोतवा = गोता, डुबकी। सागड़ = सागर, सरोवर। निसिकार = नमस्कार।

पृष्ठ 12-13

वे कह रही हैं, हे आदित्य नाथ, हे गोंसाईं, हे ब्राह्मण के लाल, आज तुम बारह कला धारण करके प्रकट हुए हो, तुम संसार में सोलह कला भूल गये हो। इसलिए हम कह रहे है कि हम लोगों का दुख तुमने नहीं देखा। हम लोगों का शरीर जल रहा है। जिस दिन बामरि के पुत्र भस्म हो जायेंगे हम लोग तुम्हें दूध का थाल चढ़ायेंगे। सोना-सुहवली में रानियों ने इस प्रकार विनती की, उपाय किया। ऐ पंचों जिसकी आँख में पट्टी पड़ी है उसको मेरा गाना दिखाई नहीं पड़ रहा है। जो हृदय में उमंग के साथ गाना सुनेगा उसका बल कम नही होगा, बढ़ेगा। पंचों, स्त्रियों ने लोटा और धोती ली फिर सुहवलि से चली। किसी के पास कुश की चटाई थी, किसी के पास मृगछाला था। सुरहन का रास्ता पकड़कर सब मोती सगड़ के घाट चलीं। स्त्रियों मे कई बारह वर्ष की कन्याएँ थी, कोई सोलह वर्ष की स्त्री थी। किसी के शरीर मे तरुणाई चढ़ी हुई थी, किसी का तीन पन बीत चला था, और चौथा पन निकट आ गया था। मुहवलि में उनकी कमर झुक गयी थी। हड्डी और मज्जा शरीर से छूटने लगा था। कुछ के ललाट मे बल आ गये थे, कुछ के दाँत टूट चुके थे। रानियाँ सुरहन का रास्ता पकड़ कर मोती सागड़ चली गयी और सागर पर कुल्ला दातून करने लगी, डुबकियाँ लगायीं, और सागर के भीट पर आकर कपड़ा बदलने लगी।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—बरहेइ कलवाउ = बारह कला। बिसराय करइलें = वह भूल गये। रउवाँ = आप। जरतियाई़ देहिया हमार = हमारी देह जल रही है। सुरुज = सूर्य। थार-थाल। संउजा = उपाय। जमवलें बाड़ी सउंजा रनियाँ = रानियों ने उपाय किया है। अन्हवट = आँख की पट्टी। लउकल नाही बाइ जेकरिय = जिसको दिखाई नहीं पड़ रहा है। हियवइ = हृदय में। फानि के = उमग के साथ। बिरथवे नाहि जाइ बल = बल व्यर्थ नही जायगा। कुल्हि = सब। कन्हियै = कंधे पर। लोटिया = लोटा। कुसवाइ के = कुश का। केउनो = कोई। झारिके = झाड़कर। डगड़िया = डगर, रास्ता। तिरिया = स्त्री। पनवां = आयु के चार भागों में कोई एक। कुलवामंज = कुल्ला मंजन, नित्यक्रिया।

पृष्ठ 14

रानियों ने भीटे पर अपना वस्त्र खोला। अपना आँचल खोलकर वह सूर्य भगवान का ध्यान लगा रही हैं, नमस्कार कर रहीं हैं। वे क्या ध्यान कर रही हैं 'हे नाथ, हे गोसाईं, आप ब्राह्मण के पुत्र हैं, आप बारह कलाओं के साथ उदित हुए है आपकी सोलह कलाएँ विश्राम पा रही हैं। इस मृत्युलोक में आप हमारा दुख नहीं देख रहे हैं। यहाँ किसी किसी के मुँह की मिट्टी नष्ट हो रही है। जीवन काल में ही उसके शरीर की मिट्टी महकने लगी हैं। यह पृथ्वी बिना पुरुष के हो गयी है, यह संसार नष्ट हो जायगा। यहाँ कोई बड़े मर्द के बूँद से पैदा नहीं हुआ है, सभी गदहे

का अवतार लेकर उत्पन्न हुए हैं। हे सूर्य भगवान, आप हम लोगों का दुख इन्द्र के पावन द्वार पर जाकर कह दीजिए। देवता लोग भीमली का जोड़ भेज दें। यदि भीमली जूझ कर मर जायगा तो हम आपको दूध की धार चढ़ायेंगे। आज रानियाँ आंचर खोल कर बिनती कर रही हैं, देवताओं का अभिवादन कर रही हैं। वे अपना आंचल नीचे कर देती हैं, अपनी धोती खींच लेती है। तुलसी की माला लेकर उन लोगों ने भीटे पर मृगछाला बिछा दिया है। किसी ने काली कमरी बिछायी है, किसी ने कुश की चटाई। सभी ने रघुबर का ध्यान किया और माला फेरने लगीं। जवान स्त्रियाँ योगिनी बन गयी, सागड पर तपस्या करने लगी। तब जगदम्बा की धरती हिलने लगी, संसार डगमगाने लगा। सोहवल मे इतना पाप बढ़ गया था कि धरती के बूते संभाला नहीं जा रहा था। नीचे धरती का बुर्ज हिल उठा, कितने देवता लोग इन्द्रपुरी में भाग खड़े हुए। हे पंचों, अब उस दिन की बात सुनिए, लग्न का हाल सुनिये। मृत्यु-लोक के देवता जब इन्द्रपुरी में पहुँचे तो वहाँ देवताओं की कचहरी में हलचल मच गयी पृथ्वी डगमगाने लगी। संसार ध्वस्त होना चाहता था। किस वीर ने इतनी तपस्या की है ? पृथ्वी पर पाप बढ़ गया था। ब्रह्मा,विष्णु एकत्र हो गये।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—लुगवे = धोती को। निरिकार = ध्यान। बिसराम = विश्राम। रहबरि लगी हुई थी = उर्दू में इसका अर्थ मार्ग दर्शक है। मुंहे रहबरि माटी = मुँह में मिट्टी लगी हुई थी। बून = बूंद, वीर्य। जूझीबेटा = बेटा जूझकर मर जायगा। कालिय = काली। कमरिया = कंबली। चटइया = चटाई। तपेसवा = तपस्या। बेसुन = विष्णु। बिटुवे रहल = एकत्र हुए थे।

पृष्ठ 15

देवता लोग इन्द्रासन में एकत्र हो गए। व्याकुल देवता अब तपस्या करने लगे, ध्यान लगाने लगे। दुनियां में सर्वत्र ध्यान किया। उनकी दृष्टि सोहवलि की ओर गयी। उस मोती सगड़ पर कुछ बारह वर्ष की कन्याएँ, कुछ सोलह वर्ष की कन्याएँ और कुछ युवा स्त्रियां कुश की चटाई पर बैठी हुई हैं। किसी किसी का तीन पन व्यतीत हो चुका है, चौथापन निकट आ गया है। उनकी हड्डी और मज्जा ढीली पड़ गयी है, कमर झुक गयी है, सिर का बाल पक गया है। मुँह में खोजने पर भी दाँत नहीं दिखाई पड़ रहा है। देवताओं ने ध्यान लगाया तो पाया कि वहाँ बड़ा पाप हो रहा है।

मोती सागर पर भीमली का भाला गड़ा हुआ है। विष्णु ने ब्रह्मा से कहा—अपनी बही खोल दो और आँख पसार कर देखो। भीमला के भाग्य का लेख कैसा है ? उसने बड़ा अत्याचार किया है। जिसने संसार में घमण्ड किया है, उसको तोड़ने के लिए मेरा अवतार हुआ है, संसार पर विपत्ति आयी है। भगवान उसको हरने चले। भीमली की बही निकली। देवता लोग एक-एक शब्द अलग करके उसे देखने लगे।

लिखा है कि भीमला के जोड़ का दूसरा मर्द नहीं है, आगे उसके बराबर बीर पैदा नहीं होगा, पहले भी उसके बराबर कोई मर्द-पैदा नहीं हुआ था। वह मारने से नहीं मरेगा और न वह जल कर राख होगा।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—बेआकुल = व्याकुल। धियान = ध्यान। पाहि लगाई = अंतिम सीमा तक। नजरि = नज़र। काना = कन्या। ओइमें = उसमें। चढ़लि जवानी = जवानी चढ़ी हुई है। ओनही गइल करियाँव = उसकी कटि झुक गयी है। करियाँव = कटि, कमर। बार = केश। मुसवा शब्द मुँहवाँ है। बैसुन = विष्णु। पसारि नयना = आँख खोलकर। अनड़ी = अंधेर, अत्याचार। बरियार = जबर्दस्त। भीरिया = भीड़, मुसीबत। बिलगाइ आँख आँख = एक-एक अंक या शब्द अलग अलग करके। बरियार = जबर्दस्त। आँख = अंक, आंक। अंबर = अमर। जलछार = जलकर राख।

पृष्ठ 16

न तो पानी में डुबाने पर उसकी नाव डूबेगी, न मरने से ही उसकी मृत्यु होगी। ऐ पंचों, अब देखो देवी, इन्द्रासन में अपना झूला डाले हुए थीं। वे इन्द्र के पावन द्वार पर झूल रही थीं। भीमली के प्राण के लिए विष्णु भगवान ने अपनी रचना रची। कृपालु प्रभु अच्छी तरह से दुनियाँ को रौंदने के लिये नीचे आ गये। अहीर लोगों ने लोरिकी गाना शुरू किया। सबने अहीर लोरिक का बयान शुरू किया।

लोरिक और संवरू के जन्म की कथा

गायक कहता है मेरा अलबेला गाना सुनो। अब मैं यहाँ (बीरों के) जन्म का वर्णन करूँगा। जिस समय रघुबर ने पृथ्वी को मथना शुरू किया, संसार की रचना करने के लिए प्रकट हुए वह गउरा गढ़पाल आये। वहाँ एक कन्या थी जिसकी बारह वर्ष की उम्र बीत चली थी। गउरा में वह बाल कुँवारी थी। तब तक इधर सूर्य भगवान गोलाकार प्रकट हुए। इधर धूप से रानी का शरीर बिंध गया। रानी ने चका-चौंध में अपनी आँख खोल दी और सूर्य की दृष्टि उससे मिल गयी। इससे रानी सचमुच गर्भवती हो गयी। वह रानी बंगले से छमछमाती हुई उठी और रोती हुई आंगन में आई। उसने कहा हे प्रभु, मेरी कमाई में कौन सी चूक हो गयी कि तुमने हमें गर्भवती बना दिया। मेरे मुँह में कालिख पुत गयी। मैं संसार को कैसे मुँह दिखाऊँगी।

पृष्ठ 16-17

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—बोरला से = डुबाने से। झूलनवा = झूला। विसुना भगेवान = विष्णु भगवान। ओल्हि अइलनि = नीचे उतर आये। कांढ़े

चललनि = वह रौदने चले । महनइ मथे जब लगलन = जब वह मथित करने लगे । बाम्हनि = ब्राह्मणी । तलकी = तनिक । डंफुआ = गोलाकार, वृत्ताकार रूप । घमवा = घाम, धूप । बेधले बदनिया में बाई = बदन में धूप बेधने लगी । चौहुँकिय = आश्चर्य चकित होकर । डीठि = दृष्टि । छमंकिय = छमककर । कमइया = कमाई । करिखवा = कालिख । मुँहवइ करिखवा हो लागि वा गइल = उसके मुँह में कालिख पुत गयी, उसकी निन्दा होने लगी । घालबि देखलाइ मुँह कइसे = मुँह कैसे दिखाऊँगी ।

पृष्ठ 17

नवें महीने में जाकर अपने भवन में गिर पड़ी उसने मृत्यु लोक में अन्न जल त्याग दिया ।

लोकलाज बचाने के लिए पैदा हुए संवरू सीबचन को कुमारी कन्या द्वारा गड्ढे में फेंका जाना

ऐ पंचों, रानी गर्भवती हो गई, तब अन्न जल सब त्याग कर और एक कोने में सिर डाल कर भवन में रोने लगी । मैं दुनियां के अन्दर कैसे मुंह दिखाऊँ । हे भगवान मुझे लांछन लग गया । हमने कभी पुरुष की ओर नहीं देखा, न मैं किसी की गोद में अंग भटाकर सोयी, यह सुख मुझको पीड़ा दे रहा है । गर्भिणी रो रही है ।

तो ऐ पंचों, रघुबर की रचना अब सुन लो । गायक कहता है कि मैंने सुना है कि नौ महीने के लिए रानी गर्भवती हो गयी । आठ महीना बीत गया । नौवाँ महीना भी बीत गया । अब आगे का हाल सुनिए जब ठीक आधी रात हो गयी और रात ढलने लगी । दो बीर पैदा हो गये । उन दो बीरों ने गउरा में अवतार लिया । धरती पर उनका नाल छीना गया । ब्राह्मणी ने तब वहाँ पाप किया । लड़कों को उसने बटलोई में कसवा कर रात में ही एक गड्ढे में फेंकवा दिया । अब उस दिन का आगे का खिलवाड़ सुनिये, लोरिक का गाना सुनिए ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—तेजले अन्न जल = उसने अन्न जल त्याग दिया । तियागि के = त्याग कर । मूंड़ी लगाय के = गर्दन लगाकर । कइसे = किस प्रकार । लंछना = लांछन । कबो = कभी । तिकवली नजर ना = मैंने नजर उठाकर नहीं देखा । भिड़ाई = भिड़ाकर । हुड़कावति बाइ सुखवे = सुख पीड़ा दे रहा है । हुमुकावति बाई = बाई का अर्थ "उमंग प्रदान कर रहा है" जो ठीक नहीं बैठता, हुड़कावति बाई अधिक सार्थक प्रतीत हो रहा है जिसका अर्थ है "पीड़ा दे रहा है ।" बरामर = बराबर । निचल्हांइ = नीचे की ओर । ढलने की ओर । टूटइ रतिया लागल निचल्हांइ =

रात ढलने लगी। जामि बा गइल = पैदा हो गया है। धरनी = धरती। निछिन गईल नरवा = नाल कट गयी। नरवा = नाल। तउला = बटलोई। गड़ही = बड़ा गड्ढा। बीगवाइ देहलेह = उसने फेंकवा दिया है।

पृष्ठ 18

किसी के बूते में नहीं है कि वह लोरिकी गावे। लोगों ने घूम-घूम कर लोरिकी गायी। सब इस प्रसंग का बयान करते हैं। अब आप मर्दों का बयान सुनिये। बीर धरमी ने अवतार लिया है। यह रचना रघुबर द्वारा रची गयी है। धरमी संवरू ने सूर्य की दृष्टि लगने से जन्म लिया है, ब्राह्मणी के गर्भ से वह उत्पन्न हुए हैं, वह गड्ढे में फेंक दिये गये हैं।

पंचों, अब आगे का बयान सुनिये। गायक कहता है कि पीपरी दूर बसी हुई है। गउरा गढ़पाल भी दूर है। जब बच्चे गड्ढे में फेंक दिये गये। बीरमदेव के सुअरों ने पीपरी में अपनी तंग झोपड़ी या कोठरी को तोड़ दिया। दुसाधिनि ने डंडा लेकर सुअरों का पीछा किया पर सूअरे कब्जे में नही आ रहे थे। मैंने सुना है, गायक कहता है, पूर्व में प्रातः की अरुणाई छा गयी, पश्चिम में प्रकाश फैल गया। तब दुसाधिनि गउरा की राह पर पहुँच गयी और खोइलनि अपने माथे पर दही लेकर बेचने चली। वह पश्चिम के भीटे की ओर जा रही थी। दक्षिण दिशा से सूअर आकर वहाँ एकत्र हो गए। तब तक एक सूअर अपना लम्बा मुँह बटलोइ में मारने लगा। दोनों बच्चे तब कियां कियां करके किकियाने लगे, रोने लगे। पंचों, अब गाने का खिलवाड़ देखिये। दुसाधिनि ने गड्ढे पर सोटा फेंक दिया। खोइलनि ने अपनी दही पटक दी।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—धरमवा बीर = धर्मबीर, संवरू धर्मवीर थे। उनको लोरिकी में बार-बार 'धरमी' कहा गया है। डीठिया से = दृष्टि से। गड़ही = गड्ढा। लमबांइ = लम्बा, दूर। तोरले बाइ = तोड़ा है, तुड़वा लिया है। खोभरिया = छोटी झोंपड़ी या कोठरी जहाँ सुअर विश्राम के लिए रखे जाते हैं। दूसधिनी = दुसाध की पत्नी। पछिवें के = पश्चिम का। खोटवइ = शुद्ध शब्द 'सोटवइ' है सोटा। बेबरा = एक नदी का नाम, इस पर अभी अनुसंधान की आवश्यकता है। थूथुन = थूथन, सुअर का मुँह।

पृष्ठ 19

दोनों स्त्रियों ने अच्छी तरह से काछ मार लिया लांग कस लिया, तथा वे गड्ढे में कूद गयीं। दुसाधिनि ने बटलोई उलट दी। खोइलनि ने धर्मी को ले लिया। दोनों रानियाँ बच्चों को लेकर अपनी ड्योढ़ी पर गयीं। दोनों की आँखों में पट्टी पड़ गयी। यह सब रचना रघुबर की है। सबकी आँखों के सामने अँधेरा हो गया। पीपरी में इधर हल्ला हो गया कि बाँझिन दुसाधिनि को बेटा उत्पन्न हुआ है। इधर गउरा में डुग्गी बज गयी कि भगवान ने खोइलनि की कोख पलट दी है (उसको बच्चा हुआ

है) । ऐ पंचों, वह कब गर्भवती हुई । गउरा में बच्चे का अवतार कब हुआ, संसार में रघुबर के खेल को किसी ने नहीं जाना । सभी भयभीत हो गये । पंचों, उस समय की बात सुनिये, गउरा की कथा सुनिये । रघुबर ने ऐसा खेल किया, उनकी यह लेखनी है । गउरा में उन्होंने ही ऐसी रचना रची है । संवरू ने खोइलनि का दूध पी लिया तब वह अहीर पुत्र कहलाने लगे । सुबच्चन ने ब्रह्मदेव की पत्नी दुसाधिनि का दूध पी लिया इसलिए वह दुसाध कहलाये । रघुबर की भक्ति सचमुच कठिन है । सुहवली में महाभारत ठन गया है । स्त्रियों को जीवन-रक्षा के लिए मृत्युलोक में दो बालक उत्पन्न हुए हैं । पहले का नाम श्रेष्ठ मल साँबर पड़ा ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ - काछि लेहलनि = काछ लिया, भिड़ लिया । कछनियं = काछ, घुटने तक कसी हुई धोती । अन्हवाटि = आँख का बंद होना, आँख के सामने पट्टी पड़ना । अंधवटि = आँख के सामने अंधेरा । बाझिन = बंधवा । डंफिया = डुग्गी । कोखिया = कुक्षि, गर्भ । जंजाल = प्रपच । लिखनियाँ = भाग्य का लेख । छीर = दूध । दुसाध = पूर्वीउत्तर प्रदेश में हिन्दुओं में चमारों की भाँति दुसाध भी एक जाति होती है जो सूअर पालती है । दूगो = ठीक दो । बार = बाल, बालक । हउवनि नांव = नाव है ।

पृष्ठ 20-21

आगे ज़रा मर्दो का खेल सुन लीजिये । दोनों बीर झूलने पर झूल रहे हैं । एक दुसाध के यहाँ और एक अहीर के यहाँ । अब खोइलनि का खेल देखिये । वह चाहे जितना तेल लेकर उसके शरीर में लगाना चाहें, बच्चा जमीन पर नहीं बैठ रहा है । वहाँ बुढ़िया उसका पैर बटोर रही है तथा उसको बैठाने की कोशिश कर रही है । बच्चा बार-बार टेढा होता चला जा रहा है । वह धरती पर पग नहीं धर रहा है । खोइलनि उसको पकड़-पकड़ कर उसके पैर में तेल मिला रही है और कह रही है कि शायद मेरा बच्चा लंगड़ा है । छै महीने की बात कौन कहे, दो चार वर्ष बीत गए तब भी बच्चा धरती पर पैर नहीं रख रहा है, वह पलंग पर झूल रहा है । एक दिन पंचों, सूर्य का गोला डूब गया । दुनिया में अंधकार छा गया । खोइलनि अपने सुन्दर पुत्र को आंगन मे पलंग पर सुलाकर चूल्हे में आग जलाने गयी । अब बीर का हाल सुनिये । वह तेजी से उछलकर पलंग पर से उठ गया तथा जमीन पर पैर डालने लगा । उसने गढ़ गउरा छोड़ दिया और सुरहुर मे जा पहुँचा । बीर शंकर के मंदिर पर चला गया । वहाँ भोला की समाधि लगी हुई थी । धरमी संवरू उनका पैर पकड़कर दबाने लगे फिर उनके पैर में उलझ गए । खोइलनि इधर जब आँगन में आयीं तो बच्चा दिखाई नहीं पड़ा । वह घर से टोले मे, पड़ोस में गयी, फिर वह राजा की हवेली (बखरी) में गयीं और कहा—हे सखी, तुमने मुझसे परिहास किया है, मेरे लाल को चुरा लिया है । रानी ने खोइलनि की निंदा की । बुजरो, तुम एक लड़के के कारण गर्व

में चूर हो गयी हो। हम लोगों को भगवान ने बच्चे दिये हैं। हम तुम्हारे बच्चे की चोरी क्यों करेंगे।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—पलन = पलंग। लेल = शुद्ध शब्द 'तेल' है। मेरवसु तेल = वह तेल लगा रही हैं। बिटोरत गोड़वा = पैर समेट रही हैं। पंगुवा = पग। तेल मेरावति = तेल मिला रही है। लंगड़ = लंगड़ा। लतवड़ = पैरो को। डंफुआ सुरुजे = सूर्य का डंफ या मंडल। अन्हार = अंधकार। बारे गइलि अगिया = आग जलाने गयी। चूल्हिया = मिट्टी का चूल्हा। छरकिय के = छटककर, उछलकर। एंड़ा = एड़ी, पैर। हे हियाइ गइलन = वह प्रवेश कर गया, चला गया। तोड़ी = 'ताड़ी' शुद्ध है समाधि। गोड़वा = पैर। जुमलीय बाड़ी = वह पहुँच गयी। लउकल बाइ = दिखाई पड़ा। जगो = जगह। टोला-परोसे = टोला-पड़ोस मे। बखरी = राजा का बड़ा मकान। खोसवा = किस्सा, मजाक। चोराइ लिहलसि = चुरा लिया। धाधाइ गइलू = तुम इतरा गयी हो, मद में चूर हो गयी हो। छोरि-छोरि = (चरि-चरि) = चार-चार, मूल पाठ अशुद्ध है। पूतवा = पुत्र। काहे के घालबो रे चोराइ = क्यों, किसलिए चुरा लूँगा ?

पृष्ठ 21

वे कह रही है हम तुम्हारा लड़का क्यों चुरायेंगी ? देव ने हमें चार-चार बच्चे स्वयं दिये हैं। तो पंचों, इधर संवरू शंकर जी के चरण पर पडे हुए हैं, खोइलनि गली में रोती फिर रही है। हाय, हमने किसका बिगाड़ किया है कि पलंग से लोगों ने मेरे पुत्र को लूट लिया है। खोइलनि गउरा में फूट-फूट कर रो रही है। संवरू शिवमन्दिर में है।

तपस्वी संवरू का शंकर जी से बुढ़िया खोइलनि को पुत्र देने का वर माँगना

पृष्ठ 21-22

पंचों, जब दो-चार दिन तक शंकर दानी ने शिव का चरण दबाया और जब उनका ध्यान टूटा तो संवरू का बाल रूप देखकर उमंग मे उन्हें गोद में उठा लिया। उनकी धूल झाड़ने लगे। शिव की समाधि टूट गयी। उन्होंने बच्चे को अपने अंग से लगा लिया। कहा, हे बाबू, हे लड़के, हे सुन्दर, तुम मेरी बात मान जाओ। तुम्हारी उम्र तपस्या के योग्य नहीं है। तुम मेरा चरण क्यों दबा रहे हो ? तुम मुझसे वर माँग लो, मैं तुम्हे वरदान दूँगा। तब बीर मल सांवर ने धीरे-धीरे जवाब दिया। हे, बाबा, हमें धन का लालच नहीं है। न बल की कमी है। हमें किसी बात की कमी नहीं है। मैं कौन सा वरदान माँगूं !

लड़के ने कहा—मेरे लिए यही वरदान है कि आपका चरण दबाने के लिए मेरा अवतार हुआ है। मैं आपका चरण दबाता रहा, चरण में ही मेरा स्नेह है। हमें

बल नहीं चाहिए, न धन का लालच है। तुम्हारे चरण की सेवा करने के लिए मृत्युलोक में हमारा अवतार हुआ है (ऐसा कीजिए कि) माया में मेरा शरीर न जाय। अब शंकर क्या करें ! उन्होंने कहा—संसार में जो हमारी पूजा करता है उसको मैं अपने मुंह से वरदान देता हूँ। उसको भक्ति पूरी होती है। तुम मुझसे बरदान माँगो। गायक कहता है कि हे बाबू, यहाँ सुहवलि का गायन कठिन है। मुझमें सभा में गाने की शक्ति नहीं है। आप लोग बीरों का बयान सुनिए। सभी अहीरों का वर्णन करते हैं। वरदानी वीर उत्पन्न हुए थे। सुहवल के लिए उनका अवतार हुआ था। भाइयों मेरा अलबेला गाना सुनिए, अपने मन में ध्यान कीजिये। बालक संवरू की भक्ति कठिन है। शिव बरबस वरदान देने लगे।

शंकर ने कहा—तुम वर माँगो नहीं तो तुम्हारी भक्ति पूर्ण नहीं होगी। जो इस मृत्युलोक में आया है वह वरदान माँग कर ही हमारा सेवक हुआ है। धरमी ने अपने गले मे फंदा लगा लिया और क्या माँगा ? शंकर जी से उन्होंने पूछा, क्या जो मैं माँगूंगा वह मिलेगा। हाँ मिलेगा, (सचमुच) मिलेगा। तब संवरू ने कहा—हे बाबा, मै तुमसे एक मृत्युलोक मे वर माँग रहा हूँ ! मैं इस लिए तुम्हारा पैर दबा रहा था। मैं गउरा मे बाझिनि (खोइलनि) का दूध पी रहा हूँ। उस दूध से मेरा प्रतिपालन, मेरी रक्षा कैसे होगी। मैंने बाझिन का दूध पिया है !

पृष्ठ 23

गउरा में मेरा शरीर पानी हो गया है। ऐ बाबा हम वर माँग रहे हैं, हे शंकर जी आप मुझे वरदान दीजिए। मेरी तरह का ही बीर और बलशाली मेरी मां के गर्भ से उत्पन्न हो। इस पर शंकर जी को खड़े-खड़े गर्मी आ गयी। देवता लोग नाचकर धरती पर गिर पड़े। इस पाजी ने इस प्रकार का वर मांगा है कि वह देने योग्य नहीं है। धरमी ने मंदिर छोड़ दिया, कहा—वरदान देने चले थे। चलें अब बोहा में हम माला फेरें, सभी देवताओं का ध्यान करें। शंकर जी बड़ा वर देने के लिए कह रहे थे। वर माँगने पर इनके गर्मी छितरा गयी है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—कहताड़ी स = वे कह रही हैं। चर-चर = चार। अन्हरिये = वैसे ही। धांगत बाड़न = गिर पड़ रहे हैं। डंकरति बाई = वह रो रही है। बीगड़वा = बिगाड़, अनिष्ट। अहकि अहकि = फूट फूटकर। हहाइ के = उमंग में आकर। धुरिआ = धूल। ताड़ी = ध्यान, समाधि। सुघड़ = सुन्दर। तपेसा = तपस्या। उमिर = उम्र। काहे खातिर = किसलिए। चरनी = चरण। रसे स = धीरे-धीरे। कमतिया = कमी। चरन = चरण। नेह = स्नेह। गरज = आवश्यकता। भग-तीया = भक्ति। भकती = भक्ति। फंसरी = फांस। गर = गला। पूरन = पूर्ण। बरवा-दानी = वरदानी, जिसको वरदान मिला हो। पतपाल = प्रतिपालन, रक्षा। पीहिए घल्लीं दूधवा = दूध पी ही डाला। नीयर (हमरे) = हमारे समान। गरमिया चढ़ि

गईल = गर्मी चढ़ गयी । पजिया = पाजी, दुष्ट । जोगीय = योग्य । देवलवा = देव-स्थान, मंदिर । मनियवाँ = माला । धियान = ध्यान । झंव आइ गइल = मूर्छा आ गयी । सिवाला = शिवालय, शिव का मंदिर । गरमियाँ तोरले बावा बाइ = उनको गर्मी हो गयी है ।

पृष्ठ 23

संवरू ने कहा—यह (शंकर जी) तो मुझसे भी अधिक गरीब हो गये है । जब इन्होंने कहा तो मैंने वर माँगा । अब इनको तो देना चाहिये था पर इनको तो मूर्छा आ गयी । अब मैं चलूं और देवताओं पर ध्यान धरूँ । पंचों, धरमी ने अब शिवाला छोड़ दिया । कंठी माला लेकर वह मुरहन में, बोहा में बैठ गये । इधर ब्रह्मा, विष्णु एकत्र हुए । विश्वकर्मा भी कूद पड़े । रथ मंदिर में पहुँचा । इधर ब्रह्मा और विष्णु एकत्र होकर मंदिर मे शंकर जी की भुजाएँ पकड़ कर उन्हें उठाने लगे, उनका दाँत छुड़ाने लगे (मूर्च्छा दूर करने लगे) । कोई चुल्लू में पानी लेकर उन्हें पिला रहा है । अब आगे का खेल, बीरों का वृत्तांत सुनिए ।

सभी देवता शंकर जी के मंदिर मे एकत्र थे । कोई उनका दाँत दबा रहा है, कोई उन्हें जल पिला रहा है, कोई उनको पंखा झल रहा है, कोई उन्हें धरती से ऊपर उठा रहा है । प्रभु विष्णु भगवान कृपालु हैं, सशरीर खड़े हैं, युक्ति लगा रहे है । अब शंकर के नेत्र खुल रहे हैं । उनको भगवान दिखाई पड़े ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—झवं आइ गइल = झाँई आ गयी । बेर = समय । सिवाला = शिव का मंदिर । जूमि गइलन = एकत्र हो गये । ओलिह गइलन = नीचे आ गये । बिसकर्मा = विश्वकर्मा । रंधिया = रथ, शब्द 'रथिया' प्रतीत होता है । दंतवा छोड़ावै = दाँत छुड़ा रहे है, मूर्च्छा छुड़ा रहे है । चिरुआ = चुल्लू । चिरुवा पीयवले बाइ = चुल्लू का जल पिला रहा है । बेटुराय गईल = वे एकत्र हो गये । धई धई = पकड़-पकड़ कर । जुगुति = युक्ति । ठड़ा बाड़े = खड़े है । लवधि गइलन = दिखाई पड़ गये ।

पृष्ठ 24

मैंने सुना है कि शंकर जी की आँखो से झर-झर नीर झरने लगा । वहाँ भगवान ने हँसकर कहा—हे शंकर जी, यह क्या हुआ है ? शंकर जी ने कहा—मैं क्या करूँ ? उन्होंने अंगुली से दिखाया कि वह लड़का माला खटखटा रहा है । अभी वह तरुण भी नहीं हुआ है । मैं समाधि में था । न जाने कब से यह लड़का मेरा चरण दबा रहा था । जब मेरा ध्यान टूटा तो उसका बाल रूप देखकर, उत्साहपूर्वक उसको मैंने उठा लिया । फिर मैंने उससे स्पष्ट रूप से कहा कि तुम मुझसे वर माँगो । लड़के ने कहा कि मुझे वर की आवश्यकता नहीं है—हमें बल की कमी नहीं है, धन का लालच मुझको नहीं है । हे महाराज (विष्णु) उसने मुझे झटकार दिया । तब मैंने कहा कि जो

मेरी भक्ति करता है, और जो वरदान ले लेता है वह मेरा सेवक बन जाता है। तीन बार उसने पूछा कि क्या जो मैं माँगूंगा वह मुझे मिलेगा तो मैंने चौथी बार हाँ कह दिया। तब उसने वर माँगा, हे प्रभु मै क्या करूँ? ब्रह्मा ने जिसको बाँझिन लिख दिया, उसके मस्तक में यह टंकित कर दिया, वह लेख ब्रह्मा के मेटने से भी नहीं मिटेगा औरों की कौन कहे। मैं उसे (खोइलनि को) कैसे गर्भवती बना दूं। वहाँ विष्णु प्रभु दयालु थे। शंकर जी ने उलटा ही वरदान दे दिया था। प्रभु ने कहा—आपने इस भस्मासुर को वरदान दे दिया है। जैसे हमको नर से नारी बनना पड़ा, जैसे भस्मासुर को मैंने जलवा दिया। आपने वैसा ही कठिन वर दे दिया है और अपने प्राण को संकट में डाल लिया है। आप स्वयं विकल हो गये है। हमारे गले में आपने फंदा डाल दिया है। शंकर जी आप उठ जाइये, मैं आपकी भक्ति की रक्षा कर दूँगा। ब्रह्मा का लेख रह जायगा और आपका वचन भी पूरा हो जाएगा।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—सयानो नइखे भइल=तरुण नहीं हुआ है। हुहाई के=उत्साहित होकर। नइखे=नही है। कामे नइखे=आवश्यकता नहीं है। जवान काटि के तीन=तीन बार प्रतिज्ञा कराकर। माँह=मध्य में। टांकी मारि दींह=टंकित कर देंगे, भाग्य मे लिख देंगे। भसमइमुरवा=भस्मासुर। भस्मासुर : राक्षस जो शिव से वरदान प्राप्त कर पार्वती पर ही मोहित हो गया। कृष्ण ने उसे जला दिया। सरनीये=शरण, सुरक्षा। जिय पर गाँहक दीहला रे लगाइ=आपने प्राण संकट में डाल लिया।

पृष्ठ 25-26

भगवान ने कहा—आप इसी प्रकार वर दे दे, और मेरे गले में फंदा डाल दीजिए, आपका वर पूरा कर रहा हूँ। उन्होंने शंकर जी को तुमड़ी दे दी और कहा कि लड़के से दूध माँग लाइए तब आपकी भक्ति रहेगी और उसकी भी भक्ति रह जायगी। लेकिन आप गाय का दूध माँग कर लाइए। उमंग के साथ जब शंकर जी तुमड़ी लेकर चले तो देवता लोग शिवालय मे बैठ गये। शंकर ने लड़के के पास जाकर दूध की बात कही और कहा कि हे बच्चा, तुम अपना ध्यान तोड़ो, जरा दूध ला दो। तब बच्चे ने और जल्दी-जल्दी भक्ति शुरू कर दी। शंकर जी जितना ही कहते जा रहे थे लडका उतनी ही तेज माला खटखटा रहा था। शंकर जी बहुत क्रुद्ध हुए। धरमी झटकार कर माला तोड़ने लगा त्यों ही शंकर जी सावधान हो गए।

बालक कहने लगा—ऐ शंकर जी, हमारी भक्ति में आपने हस्तक्षेप कर दिया, हमारी भक्ति की माला आपने तोड़वा दी, क्यों झटकार कर मेरी तुलसी माला तोड़ दी। शंकर जी की आँखों से झरझर आँसू झरने लगे। उनके कलेजे में गहरी चोट लगी। तुमने सचमुच ठीक बात कही है पर मेरी बात तुम सुन लो।

उन्होंने कहा कि ऐ बच्चा, जो तुमने वर माँगा है उसके सम्बन्ध में मुनि लोगों

ने कहा है कि मैं दूध ले आऊँ उसी से बीरों का अवतार होगा। जब शंकर जी ने दूध माँगा तब लड़के संवरू ने कहा—मैं जंगल में जाकर किसकी गाय का दूध दुहूँ, मैं किसकी गाय का दूध आपको दूँ। यदि मैं गउरा में दूध माँगने जाऊँ तो गली में मेरी माँ दुखी है। मैं उसकी माया में फँस जाऊँगा।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—तुमड़ी = एक बर्तन जो साधु मुनि अपने पास रखते हैं। कगरी = पास। धवरलन संकरजी = शंकरजी दौड़े। धिआन = ध्यान। हाली-हाली = जल्दी-जल्दी। किरोध = क्रोध। निहुरि के = झुककर। मनियाँ = माला। लतवा दीहल लगाऽ भगती में = तुमने भक्ति में हस्तक्षेप कर दिया। लोरक = आँसू। हर हर = प्रवाह के साथ, अविरल। लइका = लड़का। होनियाँ = होने वाली घटना। केरिया = के, का। अहकति बा = वह इच्छा कर रही है।

पृष्ठ 26

संवरू ने कहा सागर के पार गउरा में मैं दूध माँगने नहीं जाऊँगा। हे शंकर जी, चाहे आप वरदान दें या नहीं। अब मैं किले में माला जप रहा हूँ। आपने बरबस मेरी माला तोड़ दी। आप बताइए मैं किसका दूध दुहूँ। संवरू कह रहे है यह फंदा नहीं लगेगा कि मैं गउरा दूध माँगने जाऊँ। हमारी माँ रो रही है। अगर मैं जाऊँगा तो मैं वहाँ फँस जाऊँगा। मैं उससे अलग हट गया हूँ। मैं न जा सकूँगा, न दूध दूँगा। तब शंकर जी अपनी तुमड़ी लेकर अपने मन्दिर में लौट आये। प्रभु जी हँस-हँस कर अपने दास से पूछ रहे है कि आपकी आँखों से आँसू क्यों गिर रहा है?

क्या कहूँ—उसने दूध भी नहीं दिया। जब उसको बुलाने का मेरा मन चाहा तो उसने और ज़ोर से माला खटखटाना शुरू किया। उसने दूध तो दिया नहीं, यह भी कहा कि मेरी माता गली में दुखी होकर मुझे खोज रही है। वह मुझे माया में फँसाने आयी है। हँस कर विष्णु भगवान ने कहा यह तो ठीक ही है, उसने झूठ क्या कहा है? आप तुमड़ी लेकर कैसे गये? गाय तो दिखाई पड़ती नहीं वह किसका दूध दुहे? इस पर क्रुद्ध होकर आप रोते चले आ रहे है। अब हम लोग आपका प्रबंध करेंगे। आपकी भक्ति को हम लोग ठीक करेंगे, उसकी मर्यादा रखेंगे। तब इन्द्रासन में जितने देवता थे उन्होंने धर्म की गायें बना दी। धर्म की गायें बना दी गयीं। उन गायों को सुरही गाय कहा जाता है। सत के बछड़े भी देवताओं ने बना दिये। गायों का झुंड मन्दिर की ओर चला। वे अपने बछड़ों को चाट रही है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—कीला = किला। मनियवां = मनिया, माला। फाँस = फंदा। भोला = शंकर जी। नियारा = अलग। नीरवा = नीर। आउर = और। हाली-हाली = जल्दी जल्दी। खटकावे लागल = वह खटखटाने लगा। अहक तिन बा माता = मेरी माँ दुखी होकर, मुझे पाने की लालसा कर रही है। किरोध = क्रोध। भकती = भक्ति। धरमउती = धर्मात्मा, धर्म से बनायी

गयी । सुरही = सुरभि, एक पौराणिक गाय जो गाय-जगत की माँ समझी जाती है, गोमाता । बछरू = बछडा । भुँड़िया = झुंड । लररुवे = बछडे को । चाटति बाड़ = चाट रही हैं । सत के = धर्म का ।

पृष्ठ 27

गायें मंदिर की ओर दौड़ीं तथा जाकर धरमी की देह चाटने लगी । इधर माया के बछड़े भी बन गये थे । भगवान ने माया की रस्मी (नोई) बनायी जिससे गायों का पैर दूध दूहते समय बाँधा जा सके । विष्णु जी ने शंकर से कहा—ऐ भाई, तुम बछडे को लेकर चले जाओ । लड़का दूध दूह कर दे देगा । सुरभि गायों के दूध से सचमुच बीर अवतार लेंगे । हम वरदानी वीरों को देने के लिए तत्पर हैं । इस प्रकार ब्रह्मा की कलम की मर्यादा रह जायगी, ऐ शंकर जी, तुम्हारा सम्मान भी रह जाएगा । धर्म के बीर उत्पन्न हो जायेंगे ।

हे पंचों, हिन्दू गंगा लाभ करेंगे, तुर्क कब्र में जायेंगे । हे देवी, जिस दिन के लिए मैंने पूजा की वह दिन निकट आ गया है । मैं कहाँ गीत गा रहा था और कहाँ मेरे हृदय में चूक हो गयी । देवी, आप वीरों की कीर्ति कह दीजिए जिनके देश में तलवारें झनझना उठी । पंचों, जरा ध्यान लगाकर बयान सुन लीजिए ।

धर्म से बनी हुई गायों को संवरू ने दूह दिया, गायें जिनको सुरभि कहा जाता था । धरमी धरती से दूब नोच रहे हैं तथा गायों को खिला रहे हैं । अब गायों का बयान सुनिये । वे सचमुच एकत्र हो गयी । दूध दूह कर मन्दिर में गया । इन्द्रासन में जितने देवता थे, वे सभी तैंतीस करोड़ देवता मन्दिर में बैठे हुए थे । शंकर जी सुरही गायों का दूध लिए हुए थे, वह मन्दिर में प्रवेश कर गये, वहाँ कृपालु विष्णु भगवान बैठे हुए थे ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—धवली बाड़ी = दौड़ पड़ी है । दे चाटति बाड़ देहिया = वह देह चाट रही है । बछरू = वटस, बछड़ा । नोअड़ा = नोई, गाय या भैंस को दूहने के लिए पिछली टांगों में जो रस्मी बाँधी जाती है उसे नोअड़ा या नोयंड, नोई कहते हैं । सुरहिआ = सुरभि, सुरही गाय । पूरहरि = संपूर्ण रूप से । भोला = शंकर । पनियाँ के राखि दिहले = पानी को रख दिया है अर्थात्, प्रतिष्ठा बचा ली है । मरदाना = बीर । तरवार बजल = तलवारें बज उठीं । धरमउती = धर्म से बनी हुई, धर्मप्राण । नोचति दूबि = वह दूब नोच रहा है । खीयावे लगलन = वह खिलाने लगे । रनलिअ सगइया = गायें दौड़ पड़ी, गायें एकत्र हो गयी । तैंतीस कोटि = तैंतीस करोड़ । देआलु = दयालु, कृपालु ।

पृष्ठ 28-29

मंदिर में सुरही गायों का दूध पहुँच गया । अब आगे का बयान सुनिये । लोग घूम-घूमकर दुनियाँ में लोरिकी गाते हैं, सभी अहीर का बयान करते हैं । पंचों,

ज़रा मेरा अलबेला गाना सुनिये। यह गीति अब छाप (मशीन) में खींची जा रही है। अब आप लोग सुन्दर रूप लोरिक का नाम सुनिए। उसका कैसे अवतार हुआ। तैंतीस करोड़ देवता और मुनि शंकर जी के मन्दिर में एकत्र हैं। आज प्रेम की हांड़ी बन गयी तथा प्रेम की अग्नि तैयार कर दी गयी। धर्म का चावल बनने लगा। धर्म हाड़ी में उतरने लगा। सुघड़ (लोरिक) का बयान सुनिये। अब उसके अवतार की भूमिका बनायी जाने लगी (उसका अवतार रचा जाने लगा)। गायक कहता है मैंने सुना है कि इन्द्रासन के जितने देवता थे सभी हाँडी से वरदान लेने लगे। चावल के दाने हाँडी मे पड़ गये फिर उसमें सुरही गाय का दूध छोड़ा जाने लगा। वहाँ वरदानी खीर बन गयी। फिर हाँड़ी में पिंड बनाया जाने लगा। यह रचना कृपालु भगवान ने रची है। प्रभु वहाँ गये। स्त्रियों के जीवन के कारण अब संसार मे विध्वंस हो रहा है। जब-जब धरती पर विपत्ति आयी हैं तब-तब उसको हरने के लिए विष्णु भगवान ने अवतार लिया है। मंदिर में खीर पक गयी। अब बीर का बयान सुनिये। सुहवलि का खेल सुनिए। गाना अब आसानी से नहीं गाया जायगा।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—ओहिजां = वहाँ। लोरकिया = लोरकी, लोरिकी। बयार = शुद्ध शब्द 'बयान' है। गीति = लोरिकी का गाना। छपवा = टेपरिकार्डर को गायक 'छापा' कहता है। घीचात बा छपवे में = छापे मे खींचा जा रहा है। मुनी = मुनि। बिटुराइ गइलो = एकत्र हो गये। पतुकिया = हाँड़ी, पतुकी। *अगिनी = आग*। चाउर = चावल। सूघरा = सुन्दर, सुघड़। दानेइ = दाना। चउरा = चावल। खीरिया = खीर। पिंड = चावल और दूध से बनायी गयी पिंडी। भीरिय = भीर, विपत्ति। हरे खातिर = हरने के लिए। पाकि गइल खीरिया = खीर पक गयी। तहि = शुद्ध शब्द 'तनि' है, ज़रा। ठट्ठे मे = मजाक में, आसानी से।

लोरिक के जन्म की भूमिका

पृष्ठ 29-30

अब आप लोग जन्म का खेल सुन लीजिए। वर से अब बीर अवतार लेगा। प्रभु हाँड़ी खंगालने लगे। एक पिड बनकर तैयार हुआ। विष्णु भगवान कृपालु थे, वहाँ से उठे और शंकर जी के पास गये जो उनके सेवक थे। विष्णु भगवान कहने लगे—

मै आपको वरदानी पिंड दे रहा हूँ, आपके हाथ मे यह वरदान दे रहा हूँ। यह पिंड लड़के को दे दीजिए। वह इसे गउरा जाकर खोइलनि को दे देगा। इसी पिंड को लेकर वह सुरसरि मे गोता लगायेगी, धोती बदल कर तैयार होगी तब पिंड का आहार कर लेगी और सुरसरि के निकटवर्ती तट पर ही वह गर्भवती हो जायगी। देवताओं के ऐसा कहने पर हाथ में शंकर जी पिंड लेकर चले। धरमी वहाँ गायों को दूब नोचकर खिला रहे थे। शंकर जी ने जाकर कहा—हम वरदानी पिण्ड दे रहे है। बच्चे ने शंकर जी से कहा कि यह पिंड मैं (माँ खोइलनि को देने नहीं जाऊँगा। वह मुझे भय से आक्रांत कर देंगी। आप मुझे भेज रहे हैं।

पर मैं नहीं जाऊँगा। शंकर जी ने कहा—भइया कैसे जाओगे ? जिस प्रकार कृष्ण ने अवतार लिया था और आप योगी बनकर गए थे, उसी प्रकार आप मुझे योगी बनाइये, तब मैं योगी बन कर गउरा के बाजार में जाऊँगा। [इसके बाद सूत्र है हिन्नू करे····नियराय[गायक कहता है हे देवी आप शूरमाओं की कीर्ति कह दीजिये। किस प्रकार शूरमाओं का सुहवलि प्रस्थान हुआ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—वर से = वरदान से। खंखोरै लगलन = वह खंगालने लगे। पतुकिया = पतुकी, हांड़ी। बेसुनेइ = विष्णु। दासी = दास, सेवक। पींड़वा = पिंड। सुरसरि = गंगा नदी, इससे प्रतीत होता है शायद गउरा सुरसरि (गंगा) के पास था ? अहरवा = आहार। केमुन = कृष्ण। जोगी = योगी। दरसन = दर्शन। पयान = प्रस्थान।

पृष्ठ 30-31

हे देवी, आप शूरमाओं की कीर्ति कह दीजिए। अब महाभारत तैयार होगा। इस विश्व में किसकी सान गड़ी है। जिस दिन की बात है आप लोग सुनिए। आगे युद्धों का वृत्तान्त है। बाँझिन खोइलनि के पुत्र संवरू ने शंकर से कहा—हे विष्णु के सेवक, हे दानी, मेरी बात सुनिये। अगर मैं पिंड लेकर माता के पास जाऊँगा तो वह मुझे पहचान लेंगी और मुझे माया मे फँसा देंगी। हे बाबा, जैसे कृष्ण का जन्म हुआ था और भगवान योगी बनकर दर्शन करने गये थे आज मुझे भी वैसा ही योगी बना दीजिये ताकि मेरी माया कोई भाँप न पाये। शंकर बाबा ने कहा—

हे दुष्ट, हे डिंगर, तुम दुनिया को बहुत कष्ट दे रहे हो और मेरे ऊपर तुमने जबर्दस्त बेड़ा (बंधन) डाल दिया है। शंकर जी ने उसे अपना शरीर देना शुरू किया। *जैसे कृष्ण के साथ मिलने के लिए योगी रूप में शंकर गए थे, वैसे ही संवरू* के सिर पर जटा निकल आयी, उसके शरीर पर जटा लोटने लगी। उसने ललाट पर भस्म लगा लिया। शंकर जी ने उसकी देह मे विभूति लगा दी, झूला लटकवा दिया तथा गले मे चमड़े की दुवाली डाल दी। दुवाली में नाग जैसी सांस थी। शंकर ने धरमी संवरू को अलबेला योगी बना दिया। उनके कंधे मे झोली लटक रही थी। एक ओर भाँग की झोली झूल रही थी दूसरी ओर धतूरे का गोला लटक रहा था। जैसे शंकर जी कृष्ण से मिलने गये थे वैसा ही दास योगी उन्होंने बच्चे को बना दिया।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—सूरवां = शूरमा, बीर। सांन = शान। सम्भर = समर, युद्ध। पींड़ = पिंड। चीन्ह् लेइ माता = माता पहचान लेंगी। बेरो = ? केसुन = कृष्ण। जोगिअ = योगी। लखे जनि = दिखाई न पड़े। डिगरू = दुष्ट। खोरि खोरि = खोद खोदकर, उकसा-उकसा कर। डाहत बाड़ = जला रहे हो, कष्ट दे रहे हो। बेड़ा = बन्धन। बरियार = बड़ा, सशक्त। तनवा = शरीर। जटा =

जटा, साधुओं जैसा लटा हुआ लम्बा केश या बाल। भसमि = भस्म, राख। रमउले वाड़नि भसमि = उन्होंने भस्म लगा लिया है। भभूती = विभूति, राख। झूलवा = लटकाने वाला झोला। दुअलिय = चमड़े का चौड़ा फीता, दुवाली। नगवा = नाग। झोरिय = झोली। बगलिये में = बगल में। धोकरिया = एक विशेष प्रकार का झोला, धोकरी। धतुरवा = धतूरा, एक नशीला पौधा या उसका फल जिसको सुखा कर गोला बनाया जाता है।

पृष्ठ 31-32

अब पंचो, आगे का हाल सुनिए। स्त्री जीवन के लिए भारत की तैयारी हो रही है, युद्ध की रचना हो रही है। इधर भीमला की साग गड़ गयी है, विष्णु भगवान विकल हैं। धरती पर पाप बढ़ गया है जिससे भूकम्प प्रारम्भ हो गया है। महाभारत के लिए अद्भुत रचना रची जा रही है। शंकर जी ने योगी बना दिया है। माता की झोली बन गयी है। उसमें योगी ने वीरों के जन्म के लिए पिंड रख लिया है। वह भ्रमण करने चलेगा और अपनी माँ को वरदान देगा। शंकर जी ने संवरू से कहा कि तुम अपनी मां से कहना कि वह कुल्ला मंजन करके तैयार होकर सुरसरि में गोते लगाये। गंगा के निकट रानी अच्छी तरह तैयार हो जाये तब ऐ लाल तुम उनको वरदानी पिंड दे देना, रानी उसका आहार कर लेगी। जब रानी पिंड का आहार कर लेगी तब गंगा तट पर वह गर्भवती हो जायगी। उसके शरीर का बाँझपन छूट जायगा।

भइया, आज शंकर जी ने बालक संवरू को सेवक बना दिया है, जमकर योगी बना दिया है। योगी ने हाथ में कमण्डल ले लिया है, जोगियों वाला संड़सा ले लिया है। कांख तर मृगछाला ले लिया है। वह गउरा की ओर चला। पूर्व में लालिमा छा गयी है। पश्चिम की ओर सागर प्रकाशमय हो गया है। कौवों ने बोलना शुरू कर दिया है। इधर खोइलनि की नींद खुल गयी है। उन्होंने हाथ में झाड़ू लिया, बखरी को साफ करने के लिए चली। उसी समय द्वार पर योगी पहुँच गये।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ - रंगिया = रंग। भूइडोलवा = भूकम्प, भूडोल। खातिर = के लिए। मरदनिया = पुरुषत्व सम्बन्धी, मरदाना। भरमेइ जइब = भ्रमण करने जाएगा। कुल्ला मंजन = हाथ मुँह धोकर दातुन करना। नीकठवे = 'निकटवे' शुद्ध शब्द है निकट में। तनवां = शरीर। कमंडल = साधुओं और योगियों का एक विशेष जलपात्र। संड़सा = लोहे का बना हुआ एक औजार, आम तौर पर गर्म चीजें उठाने के लिए संड़से या सड़सी का प्रयोग होता है, योगी लोग इसे धारण करते है। टेरवा = टेर, ध्वनि। झारे चलल = साफ करने चली। कूँचवा = झाड़ू, कूँचा। बढ़नी = झाड़ू। वसमतिये चाउर = बासमती चावल। काढ़ति वाड़ = निकाल रही है। मूँगवइ के दलिया = मूँग की दाल। भीछा = भिक्षा।

पृष्ठ 32-33

ज्योंही झाड़ू को खोइलनि ने पृथ्वी पर डाला त्योंही जोगी ने मनौती शुरू की। उन्होंने 'योगी की जय', 'योगी की जय' कहा। रानी ने कुछ सोचकर झाड़ू को आँगन में फेंक दिया। कहने लगीं मेरी कमाई में कौन सी चूक हो गयी है कि इस मृत्युलोक में मेरी देह वन्ध्या हो गयी है। यदि योगी मेरे दरवाजे से वापस लौट जायगा तो बड़ा पाप होगा। खोइलनि रानी अपनी हवेली में बासमती चावल निकालने लगीं, फिर मूंग की दाल लेने लगी तथा योगी को भिक्षा देने चली। ज्योंही वह भिक्षा देने चलीं, योगी की नजर उनके ऊपर पड़ी। योगी पाँच कदम पीछे हट गया। मैं बांझिन की भिक्षा नहीं लूँगा, मै तुम्हारी भिक्षा यहाँ नहीं लूँगा। रानी अब रोने लगीं। हाय दैव! वह धरती पर गिर पड़ी।

ऐ पंचों, जब जोगी ने इतना कहा तब रानी के कलेजे में चोट लगी। झुक कर कहा—ऐ योगी, मैं अपनी विवशता कह रही हूँ। एक समय मेरी कमाई मे चूक हो गयी तो इस समय मे मै बांझिन हो गयी हूं। मैं एक विधवा का लड़का गड़े में पा गई थी जो गउरा में एक बटलोई मे फेंक दिया गया था। उस बच्चे को लेकर मैं पुत्रवती हो गयी थी। दुनिया ने कहा था कि मेरी कोख पलट आयी है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—बाढनि = बढ़नी, कूँचा, झाड़ू। जय मनावल = जयकार किया। कमइया = कमाई। हेलवा मारि दिहली = हेला = पुकार? हेलवा दिहलीं = दौड़ गयीं। चाउर = चावल। बसमतिया = बासमती। मूंगवा = मूंग। भीछा = भिक्षा। जुमतियाड़ी रानी = रानी उपस्थित हो रही है। लोटि गईल धरतिया मैं = वह धरती में लोट गयी, वह धरती पर गिर पड़ी। करेजा = कलेजा। घाव करेजा लागल = कलेजे मे चोट लगी। अधीन = विवशता। अलवंतियाँ = अलवाँत, पुत्रवती, प्रसूता। कोखिया पलटलि = कोख पलट आयी है।

पृष्ठ 33-34

मैं उस बच्चे का तेल उबटन कर रही थी, पैर की मालिश कर रही थी, पर वह धरती पर पैर मोड़ कर नहीं रखता था, दो चार वर्ष तक मेरा बच्चा पलंग पर झूलता रहा, धरती पर पैर नही डाल रहा था। एक दिन मैं चूल्हे में आग जलाने गयी तो सूर्य का गोला डूब चुका था। उसी समय पलंग से मेरा बच्चा गायब हो गया। तब से मेरा हृदय दुखी है।

सुरसरि में गोता लगाकर रानी का पिंड लेना

तब योगी ने कहा, हे माता उठो, तुम मुझे साधारण योगी न समझो, मैं तुम्हें वर दे रहा हूँ, उठकर वरदान ग्रहण करो। ऐ मेरी माता, आज से वन्ध्या का नाम छूट जाएगा। मैं पिंड के साथ तुम्हें वरदान दूँगा। तुम कल सुरसरि में गोता मारना, कुल्ला मंजन करके तैयार रहना। ऐ माता, तुम गंगा के निकट धोती बदलना, और

पिंड का आहार करना, तुम उसी स्थान पर गर्भवती हो जाओगी। तुम्हारा बांझिन नाम छूट जाएगा। जब तुम्हारी गोद में लड़का उत्पन्न हो जाएगा तब निश्चय ही मैं तुम्हारी भिक्षा लूंगा। अब आप लोग लोरिक का बयान सुन लीजिए। बाबा, मेरे गाना में थोड़ा फर्क है, गायक कहता है। (पृष्ठ 34 पर 8 से 12 पंक्ति तक पुनरावृत्ति मात्र है।)

शंकर के वरदान से लोरिक का अवतार लेना

पृष्ठ 34

पंचों, अब जिस दिन की बात है उसका हाल सुनिए। बीर संवरू पिंड देने गउरा गया है। अब बीर लोरिक के जन्म की कहानी सुनिये। वरदानी ने अवतार लिया। मोती सागर पर इधर भीमली की सान गड़ी हुई थी। गायक कहता है कि लोग सुहवलि का सीधा रास्ता पा जाते है और लपककर वहाँ का गाना गा देते हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—ओबति चोवति = प्रसन्न होकर। गोड़वा मलति रहली = पैर मल रही थी। मीमोरि के = मोड़कर। लात = पैर। वाकी = बल्कि। बारै गइली = मैं जलाने गयी। अगिया = आग। चुल्हिया में = चूल्हे में। सम्में में ओही = उस समय में। गायबइ = गायब। ललनवा = पुत्र। वयवा = हृदय, शरीर। वियोग = दुख। अजुवे ले = आज ही। नइयां = नाव कालिह। नीकठवा = निकट। धोती बदलिहऽ = कपड़ा बदलना। जग = जगह। बलकवा = बालक। निहचै = निश्चय ही। फक्क = फर्क। बीनवले बाड़ी = वह प्रार्थना कर रही है। सोझिये = सीधा सा। डहरिया = डहर, रास्ता। लपकि के = लपक कर। गावत लोग बाइ = लोग गा रहे हैं।

पृष्ठ 34-35

सुहवल का गाना कठिन है। किसी के बूते की बात नहीं है कि यह प्रसंग कहे। अब अहीर ने लोरिकी गायी है। अब जन्म का बयान सुनिये। धर्म का पिंड बना हुआ था। शंकर वरदानी का दान दिया हुआ पिंड था। प्रिय संवरू लेकर माता खोइलनि के यहाँ पहुँचे। गउरा गढ़पाल मे रानी ने आँचल पसारा। योगी ने कहा हे मैना, आप मेरी थाती यत्नपूर्वक रखिए। यदि दिन में पिंड का सेवन करोगी तो पिंड गंदा हो जाएगा। आज तुम किले में रनिवास मत करो। कल पूर्व में अरुणोदय होगा, पश्चिम में प्रकाश होगा। तब तुम लोटा और धोती लेना तथा सुरसरि के तट पर चली जाना, ठीक से कुल्ला दातून करना तथा पिंड के लिए सावधान रहना। यदि जरा भी पिंड गिर गया तो भगवान तुम्हारी मनोकामना पूर्ण नही करेंगे।

पिंड देकर योगी ने माता को यह बात समझा दी, हे मैना, सुरसरि के निकट धोती बदलना और पिंड का आहार करना। तुम उसी सुरसरि बेवरा नदी के तट पर

गर्भवती होगी और तुम्हारा बांझिन नाम टूट जायगा। तुम्हारी कोख से जो बालक पैदा होगा वह वीर होगा, पट्ठा होगा। जब गउरा में थाली बज जायगी तो मेरे वन में आवाज़ पहुँच जायगी। मैं अपना डेरा छोड़ दूँगा और प्रातःकाल तुम्हारे पावन द्वार पर आ जाऊँगा। उस समय तुम्हारी भिक्षा लूँगा तथा रचकर वीर का दर्शन करूँगा। यदि मेरी जबान झूठी हो गयी तो मेरे योगी नाम का अपमान हो जायगा। योगी प्रिय संवरू ने पिंड दे दिया था।

शब्दार्थ और टिप्पणियां—बूतवे = शक्ति से। दानवां = दान, वरदान। जतन करिहं = सुरक्षित करेंगी। मयना = मैना, स्त्री, माँ। थतियो = थाती को। दीनवां = दिन में। गंदाई = गंदा। पछिवें = पश्चिम में। लोटवइ = लोटे को। खबरदार = सावधान। पूरन करिहनि नाही = पूर्ण नहीं करेंगे। झरि जइहैं = गिर जायगा। पूरन करहनि ना भगवान = भगवान तुम्हारी इच्छा पूर्ण नहीं करेंगे। सुरसरि बेवरवा = सुरसरि:बेवरा नदी समानार्थी हैं। बेवरा नदी के पास ही गउरा गढ़पाल होना चाहिये जहाँ खोइलनि के गर्भ से लोरिक पैदा हुआ था। तन सेईं = तन से। सेइ = से। थरिया वजि जाइ = थाली बज जायगी। पूर्वी उत्तर प्रदेश में गाँवों मे पुत्र उत्पन्न होने पर थाली बजायी जाती है। मबदिया = शब्द, ध्वनि। डेरवा = डेरा, स्थान। जूमबि = मैं पहुँच जाऊँगा। दरसन = दर्शन। जबनियाँ = जबान, वचन। नीचे परीनइयां हमार = हमार नाम अपमानित हो जाएगा।

पृष्ठ 36

पंचों, अब पिंड का खेल सुनिये। रानी खोइलनि उसे लेकर लेट गयी। योगी ने अपना रास्ता लिया और शंकर जी के मंदिर में चला गया। उसकी माया मंदिर में उतर आयी। जिस दिन शंकर जी संवरू का ध्यान कर रहे थे, संवरू गायों की माया में पूरी तरह से फंसे हुए थे। गायक कहता है कि उन्होंने सरउंज बोहा के मध्य गायों को दूब नोच-नोचकर खिलाना शुरू किया। उनको गायें वरदान में मिली थीं। गायें सरउज में बढ़ती जा रही थी। धरमी की गायों मे वृद्धि होती जा रही थी। अनाथ संवरू उनकी सेवा कर रहे थे। ज़रा सुहवल का बयान सुनिये।

खराद पर चढ़ाने के लिए यहाँ मशीन (टेपरिकार्डर) चली आयी है। इस बार गाने की पहचान होगी। जो लोग सीधा रास्ता पकड़ कर चलते हैं या गाना गाते है वे उसको तिरछा भी कर देते हैं। रूप बदल देते हैं। पंचों, आज यहाँ श्रोताओं की मंडली बैठी है। संवरू (खोइलनि को) पिंड देने के बाद माया में उलझ गये हैं। उन दिनों बूढ़ कूबे के दिन पतले थे। वे सहदेव के बैलों को चराया करते थे और शाम को भोजन माँग कर खाया करते थे। लेकिन आज का खेल सुनिये। सरउंज में कैसे उनकी गायें बढ़ रही थीं। जिसके पास खाने के लिए अन्न का कण भी नहीं था उनके पास गउरा में कैसे धन बरस रहा था। अब जरा अलबेला खेल सुनिए।

शब्दार्थ और टिप्पणियां—ढुलकि गइनीं = ढुलक गयीं, लेट गयीं। पंयड़ा = रास्ता, पगदण्ड। दूलर = प्रिय। धियनवा = ध्यान। चोंथि चोंथि = नोच-नोचकर। बयना = गाय। ई आज खरादे····पहचान, यहाँ प्रस्तुत लेखक के टेपरिकार्डर का उल्लेख है। तिरीसे = तिरछा। मेंडरि = मंडली, श्रोताओं का समूह। दुरबल = कमजोर, दुर्बल। दुरबल दिन = बुरा दिन, पतला दिन। बरधी = बैल। कनवा = कनिक, गेहूँ का आटा। ओल्हल बाड़ = बरस रहा था, गिर रहा था। खेलवा = खेल तमाशा।

टेपरिकार्डर मशीन और लेखक का उल्लेख

पृष्ठ 37

ऐ भाइयों, आज यह सब का छापा ले-ले कर उतारेंगे, मैं सबके गान का वजन नपवा दूँगा। आज सचमुच आप लोग मेरा खेल देखिए। मैंने अपना गाना सुना दिया है। गाने वाले पंचों अब जरा सुन लीजिए।

जब पिंड को रानी ने प्राप्त किया, उसे दिन भर उसने यत्न से रखा। जब सूर्य डूब गया और घर-घर में दीपक जल उठे, उस समय अपने घर में रानी खोइलनि ने दीपक जला दिया पर अपने चूल्हे में आग नहीं जलाई। इसी बीच बूढ़ कूबे आ गये। वह दिन भर बैलों को चराते रहे थे। उनको भूख लगी थी। जब उन्होंने चूल्हे की ओर देखा तो उसमें आग भी नहीं जल रही थी।

उन्होंने कहा, दुष्टा, तुमने चूल्हे में आग क्यों नहीं जलायी? तुम भोजन कब बनाओगी? खोइलनि ने अपने आँचल में पिंड बाँध कर रखा था तथा जल लाल टोटीदार लोटे में था। उसने कहा--स्वामी, मेरे मूर्ति नारायण आप थोड़ी घड़ी में ही क्यों व्यग्र हो उठे। आज आपको ऐसा खाना दिखाऊँगी कि उसे देखने मात्र से आपका पेट भर जाएगा। खोइलनि रानी ने कहा--

हे पति, आपने क्रोध क्यों किया है? आज आपको ऐसा भोजन कराऊँगी जिससे शरीर आनन्द में रहेगा। बूढ़ कूबे ने कहा—इस स्त्री ने हमको पागल बना दिया है, स्वयं भी पागल हो गयी है। खाना बना नहीं है और यह कहती है कि मैं ऐसा खाना खिला दूँगी कि मैंने जन्म भर नहीं खाया होगा। फिर कभी भूख नहीं लगेगी। बूढ़ कूबे ने हाथ-पैर धो लिया। रानी ने कहा पलंग पर ही खाना मैं आपको दूँगी। पंचों सुनिए, बूढ़ कूबे जाकर पलंग पर बैठ गए तथा रानी ने अपने आँचल से पिंड खोला।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—बोजन देइबि टनवाय = उसका वजन करा लूँगा। थातिय = थाती। दिया लेसान होता = दीपक जल उठे हैं। बारि देली = उसने दीपक जला दिया। तिकवलनि = उन्होंने देखा। बुजरो = एक गाली है। लेलछिया = लाल। गड़ुवा = टोटीदार लोटा। अउंजाइ गइल तूँ = तू व्यग्र हो उठे।

किरोध = क्रोध। अन्नन रही सरीर = शरीर आनन्दित रहेगा। सनकी = पागल। बिजन = व्यंजन, विविध प्रकार का अच्छा भोजन। पालानवा = पलंग।

पृष्ठ 38

खोइलनि क्या कह रही है—देखिए मेरे स्वामी, मूर्तिनारायण, आप मेरे सिन्दूर के मालिक हैं। प्रातःकाल एक योगी आये और वे वरदान में एक पिंड दे गये। किसलिए ? इसलिए कि जब इस पिंड को खाऊँगी तो गर्भवती हो जाऊँगी, सुरसरि के किनारे। जब बूढ़ कूबे ने यह बयान सुना तो कहा कि रानी तुमने मुझे ऐसी बात सुनायी है कि मेरा पेट भर गया। दोनों पिंड को अगोर रहे थे, उनका सदैव उस पर ध्यान बना रहा। दोनों किले में पिंड की रखवाली कर रहे थे कि पूर्व में लालिमा छा गयी, पश्चिम में उजाला हो गया। कौवों ने बोलना शुरू किया। प्रातःकाल हो गया, पौ फटने लगी। रानी बुढ़ खोइलनि ने कहा—स्वामी मेरी बात मान जाइए, आप नौकरी पर जाइए मैं सुरसरि के निकटवर्ती तट पर जाऊँगी। प्रातःकाल बहुत तड़के खोइलनि ने पिंड लेकर तथा हाथ में धोती, दातुन लेकर और घर में साकल लगाकर, सुरसरि के लिए प्रस्थान किया। (आप लोग सुनिये) खोइलनि बुढ़िया थीं। एक धोबिन थी जो रोज साथ नहाने जाती थी। दोनों सखी हो गयी थीं। इधर खोइलनि सुरसरि के निकट तट पर पहुँची तो धोबिन उनके दरवाजे पर पहुँची। कहने लगी पौ फट गयी है, गउरा में, अभी तुम्हारी नींद नहीं खुली। हे सखी, तुम अपना दरवाजा खोलो, हम लोग सुरसरि के तट चलें। धोबिन ने दो-चार बार आवाज लगाया पर हवेली में खोइलनि का कोई उत्तर नहीं मिला।

शब्दार्थ और टिप्पणियां—मूरति नारायण = नारायण की मूर्ति के समान, खोइलनि का पति के लिए एक संबोधन। धन = हे मेरे धन। सेन्हुर = सिंदूर। मोआर = मालिक। सेन्हुर के मोआर लाग ऽड़ = तुम मेरे सिन्दूर के मालिक हो, पति। जोगी = शुद्ध रूप जोगी है। जिमुवन = प्रस्तुत हुए। रिजुवर = सीधे सादे प्रेमी। दूनों खानी = दोनों लोग। प्रानी = प्राणि। जतन कइके = यत्न करके। अगोरि के = रक्षा करते हुए। लालित = अरुणाई। पछिम = पश्चिम। टेरवा = टेर, शोर। पह = पौ। पह फूटति वाय—पौ फट रही है, प्रातःकाल का अरुणोदय हो रहा है। नोकरिया = नौकरी। सिकड़ी = सांकल। पयान = प्रस्थान। नतवा = नाते से। पाहवा = पौ। निंनिया = नींद। जूमली दुवार = वह द्वार पर पहुँची। डंड़वा = दरवाजा ? हाला = बार। दूचारि हाला = दो चार बार।

पृष्ठ 39

भइया, जब पखरी में खोइलनि नहीं बोली तब धोबिन की नजर फाटक पर पड़ी और देखा तो वहाँ सांकल चढ़ी हुई है। अब सुनिए, धोबिन अपनी साड़ी घुटनों तक लाकर काछ भिड़ने लगी। धोती को उसने ठीक से बाँधा। लगता है सखी को कुछ

प्राप्त हुआ है तभी वह धोखा देकर सुरसरि के निकट, तट पर चली गयी हैं। यह दुखद आश्चर्य दिखाई पड़ रहा है, बुरा अचम्भा है। हम लोग रोज-रोज एक साथ स्नान करते थे (आज क्या हुआ)। धोबिन ने धोती को घुटने के ऊपर तक बाँधा, सीने को भी कस कर बाँध लिया, पैर दबाया तथा बयालिस हाथ कूद गयी। जैसे माघ में हरिणी को चिढ़ा दीजिए वह खेत में मेराव (मटर आदि) आदि चरने लगे। उसी प्रकार धोबिन भी कूदते-फाँदते सुरसरि के तट चली।

इधर खोइलनि ने सुरसरि में गोता मारा तथा धोती बदल कर तट पर खड़ी हो गयी। जब आहार करने के लिए पिंड खोला तब धोबिन ने दूर से ही उसे शपथ दिलायी। कहा—हे सखी, तुमने मुझसे बड़ा धोखा किया। अगर आज तुमने मुझे जबर्दस्ती त्याग किया तो कैर कपिला गाय का बध करोगी। जिस चीज के कारण तुम मुझे गउरा में छोड़ आयी थी उसमें हे सखी, मेरा आधा हिस्सा है। पंचों, अब जिस समय की बात है, उस समय का बीरों का खेल सुनिये। मैं आगे जन्म की कहानी कहूँगा। लोरिक का वृत्तांत सुनाऊँगा। जब धोबी की पत्नी वहाँ पहुँची तो खोइलनि पिंड का आहार करने चली। धोबिन ने ऐसी शपथ दिला दी।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—सिकड़ी = सांकल, जंजीर। कछनियाँ = घुटने के ऊपर तक ले जाकर धोती को पीछे से बाँधना। उनेहारि = कसकर, ठीक प्रकार से। कीत = या तो। हतके = दुख पूर्ण। लउकल वा = दिखाई पड़ा। कुअचरज = बुरा अचम्भा। संगही = साथ-साथ। काछि कइ कछनियाँ = धोती को घुटने तक संभालकर बाँधकर। अंचरे = आँचल को। सीना = छाती। रोज-रोज = हर रोज। एंड़ा दावि देला = एड़ दबा दिया। फानलि = वह फांद गयी। बेयालिस हाथ = ब्यालिस हाथ। माधावइ = माघ में। हरनी = हरिणी,। पिन्हिकल = बिदक गयी, चिढ़ गयी। हरनी लो पिन्हिकल = हरिणियाँ चिढ़ गयी। केराव = मटर आदि की फसल। सोतवा = शुद्ध 'गोतवा' है। नीकठ = निकट। किरियवा = शपथ। दगवा = दगा, धोखा। बलेदानी करबू = त्याग कर दोगी। हिसवा = हिस्सा।

पृष्ठ 40

खोइलनि सुरसरि तटपर हैरान रह गयीं। उन्होंने कहा—हे दैव नारायण, हे कर्तार, आपने यह क्या कर दिया। यदि मैं यह वरदानी पिंड अकेले खाऊँगी तो गाय मारने जैसी बड़ी हत्या लगेगी। न जाने पिंड में क्या गुण है, इससे क्या अवगुण उत्पन्न हो जाय। हे सखी, तुम धैर्य धारण करो और सुनो। तुम सुरसरि में प्रवेश कर जाओ, तुम घाट पर कुल्ला मंजन करो, जी में घबराओ नहीं। सुरसरि में गोता लगाओ, ठीक से स्नान करो। आकर धोती बदलो। हम दोनों एक ही साथ पिंड का आहार करेंगे। पंचों, अब रघुबर का खेल सुनिए। भगवान ने ऐसी रचना

रची है। घाट पर ऐसा संयोग उपस्थित हुआ। अब आगे की लेखनी का बयान सुनिए।

भैया, अब सुघर लोरिक का बयान सुनिये। लोग लोरिकी ललकार कर गाते है। आजकल झूठा गाना गाकर ही गायक लोग सुहवल पहुँच जाते हैं। आगे गीति का तानाबाना तैयार हो रहा है। यह अलबेला गाना बहुत ही कठिन है। सुहवल में महाभारत रोप दिया गया है, शुरू हो गया है। वहाँ मर्दों की सान गड़ गयी थी, इसलिए युद्ध की तैयारी हो रही है। धोबी की स्त्री ने एक रचना रच दी। उसने सुरसरि के तट पर कुल्ला मंजन किया तथा ढंग से गोता लगाया। उसका आधा अंग खुला हुआ था, आधा अंग डूबा हुआ था, आधा सूखा हुआ। उसने जाकर कपड़ा बदला और रानी से पिंड माँगा।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—कठुआइ परिगइल बा = वह ठंडी पड़ गयी, वह हतप्रभ हो गयी। हतया = हत्या। गुन = गुण। अगुन = अवगुण। धीरिजा = धैर्य। ढूकि जइब = प्रवेश कर जाओगी। घटिया = घाट। असनान = स्नान। संग ही = एक साथ। जूमि गयल = जुट गया। सनजोग = संयोग। घटिया पर = घाट पर। लिखनिय = लेखनी, लिखी हुई वस्तु। गितिया = गीति। पटसार = पटशाल, ताना-बाना बुना हुआ। उघारि = खुला हुआ। गतरिया = गात्र, शरीर। बुड़ि गईल = डूब गया। निखहरे = खुले में, अनावृत्त। चारपाई पर 'निखहरे' सोने का तात्पर्य बिना बिछौना के सोने से है। यह शब्द बलिया की भोजपुरी में आम है। रची-रची = रच रचकर, ठीक से। गोनवा = डुबकी।

पृष्ठ 41

धोबिन ने कहा—कुछ मेरे लिए भी डाल दो। तुमने किसलिए चोरी की है। मालूम नहीं इस पिंड मे क्या गुण-अवगुण है। तो मैं भी हिस्सा लगाती हूँ। इसमें तीन हिस्सा लगा, तीन वीरों को जन्म हुआ। तीसरे वीर का आगे उल्लेख नही है। रानी खोइलनि ने आधे से अधिक हिस्सा लिया। गायक कहता है कि धोबिन को जब पिंड मिला, सुरसरि के तट पर उसने जल्दी से आहार कर लिया। खोइलनि ने पीछे अपने पेट में डाला। इससे गउरा के जन्मे हुए बीरों मे फर्क आ गया। धोबिन अग्नि नक्षत्र में गर्भवती हुई। बाद में लोरिक पहलवान गर्भ में आया। एक ही पिंड में दो भाग सुरसरि के तट पर हो गया था। दो खण्डों के बल से दो वीर हो गए। दो स्त्रियाँ (रानियाँ) गर्भवती हो गयीं। रानियों की मनोकामना पूर्ण हो गयी। वे दोनों सुरसरि के तट से घर वापस लौटीं। यहाँ धरमी गायों को नोच-नोच कर दूब खिला रहे हैं और आनन्द से उनकी सेवा कर रहे हैं। ये गायें धर्म से उत्पन्न हुई थीं। उन्होंने क्या किया? तो आज गायों का सरउंज बोहा में हाल सुन लीजिए।

यहाँ गायें बढ़ने लगीं। पिंड से यहाँ लड़के गर्भ में आ गये। अब अलबेला बयान सुनिये, हमारा गाना सुनिए। जब रानियाँ गउरा बाजार में गर्भवती हुईं तब इधर वीर संवरू की गायें भी बढ़ने लगीं, ये गायें वरदानी थीं। बोहा लम्बा था तथा संवरू की गायें भी बढ़ी हुई थीं। संसड़ी बोहा में धरमी का अलबेला अखाड़ा खुदा हुआ था। शंकर का वहाँ मंदिर भी बना हुआ था, शंकर जी, जिन्होंने संवरू को वरदान दिया था।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—डालि के = डालकर। गुन अवगुन = गुण अवगुण। हीसा = हिस्सा। लगावतानी हीसा हम = हम हिस्सा लगा रही हैं। ढेर = ज्यादा। आधा ले ढेर = आधे से ज्यादा। पवलसि धोबिन = धोबिन ने प्राप्त किया। गप देने = मुंह में जल्दी से डालकर, जल्दी से। फरक = अन्तर। अगिनि = अग्नि। नछतर = नक्षत्र। पछिला = पीछे। दुइ खंड = दो भाग। पूरन हो गईल = मनोकामना पूर्ण हो गयी। अनन से = आनन्द से। बढ़े लगली = बढ़ने लगीं। गरभउती = गर्भवती। लमकी गइया = गायें अधिक हो गयीं। संसड़ीय = सांसड़।

पृष्ठ 42

भइया, बोहा में मन्दिर बना है जरा आँख फैला कर देखिए। वही धरमी का अखाड़ा बना है। उनका अब बयान सुनिये। उन्होंने पकड़ी के सात पेड़ लगवाये तथा पीपल के सात पेड़। सात पेड़ उन्होंने बरगद के लगवाये। बगल में हरशंकरी उगी हुई है। शंकर जी का मन्दिर इस प्रकार का बना है। उसके बीच में ही अखाड़ा है। वहाँ धरमी संवरू ललकार कर मेहनत करते हैं। अब लोरिकी का बयान सुनिये। रानियाँ इधर गर्भवती हो गयी थीं। उनका समय अब पास आ रहा था। आठ महीने का गर्भ हो चुका था। फिर नवें महीने में वीरों का अवतार हुआ। थाली बज गयी। संवरू के कान में आवाज पहुँची। वीर कह रहे हैं शायद ब्रह्मा की समाधि खुल गयी है। गउरा में मेरी जोड़ी उत्पन्न हो गयी है।

गायक प्रस्तुत लेखक को सम्बोधित करते हुए कह रहा है कि हे बाबा, अब आप मशीन जारी कीजिये। मेरा गाना यहाँ बन्द हो रहा है। पंचों, उस दिन की बात है, आगे समर का हाल सुनिए। पंवारा सुनिए कि महाभारत कैसे तैयार हुआ है। भीमली की सान सचमुच गड़ गयी है और डंका पीट रहा है। मागड़ पर स्त्रियाँ योगिनी बन गयी तथा जमकर भूचाल आ गया। देवता लोग हलचल में पड़ गये। भगवान अपनी रचना रचने लगे। गायक फिर सूत्र दुहराता है पंचों, हिन्दू गंगा में लाभ करेगा तुर्क कब्र में जायगा। हे देवी, मैं कहाँ गीति गा रहा था। कहाँ मेरे दिल में विस्मृति हो गयी। जिस दिन के लिए आपकी पूजा की वह दिन निकट आ गया है। आज आप वीरों की कीर्ति कह दीजिए। वीरों का अवतार कैसे हुआ?

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—देवल = मन्दिर। नयन पसार = नयन फैलाकर। जागों = जगह। ओही जागों = उसी जगह। खनल ह अखाड़ा = अखाड़ा खुदा हुआ

है। फेड़ = पकड़ी। पकड़ी = पीपल की जाति का एक पेड़। बरखद = बरगद। हर संकरिय = हरशंकरी = पाकड़ और पीपल का संयुक्त वृक्ष जो धार्मिक दृष्टि से पवित्र माना जाता है। निगीचे = निकट। धरिया = थरिया शुद्ध शब्द है, थाली। बाजि गइल धरिया = थाली बज गयी। तड़िया = नाड़ी, ध्यान, समाधि। जोगीनिया = योगिनी। बिसमोर = विस्मृति।

पृष्ठ 43

लोरिक का जन्म और छठियार का उत्सव

ऐ पंचों, अब यहाँ गउरा का खेल सुन लीजिये। जिस दिन से बीर का अवतार हुआ, उस दिन से यहाँ धन में वृद्धि होने लगी। खोइलनि ने कहा—ऐ स्वामी, ऐ मूर्तिनारायण, तुम मेरे सिन्दूर के मालिक हो। गउरा में मेरा दसवें दिन का स्नान हो गया। मैं सौर-गृह से निकल आयी। यहाँ सोलह सौ घर यदुवंशी है और भारी संख्या में अहीर हैं। हे स्वामी आप बबुआ लोरिक के लिए छठियार का आयोजन कीजिए। रानी ने छठियार का जिक्र किया। खोइलनि सतनहान करके, पवित्र होकर छठियार के उत्सव की तैयारी करने लगी। मैंने सुना है कि रास्ता पकड़ कर बूढ़ कूबे कुसुमा-पुर के बाजार में गये। वहाँ महदेव की ऊँची गद्दी लगी हुई थी। वह नीचे धर्म के साथ न्याय करते थे। बूढ़ कूबे ने कहा—हे ठाकुर, आज मेरे घर में खुशी हुई है। मेरे बूंद से पुत्र का अवतार हुआ है। मेरी रानी सउरी से निकल आयी है। मेरे बच्चे का छठियार है। ठाकुर जरा डुग्गी पिटवा दीजिए, गली मे शहनाई बजवा दीजिए। सोलह सौ यदुवंशी जो यहां रहते है मेरे द्वार पर एकत्र हो जायँ, ऐसा आज मेरी विवाहिता के मन मे उल्लास उठा है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—धनवाँ = धन। मवार = मोवार, मालिक। दसनहना = नव प्रसूता का प्रसूति-गृह मे निकलकर दसवें दिन का स्नान। सउरी = सौरी, सूतिगृह। बयवा = शरीर। सोरह सै = सोलह सौ। झारि के = जमकर, एक साथ। बसलिबा = बसी हुई है। छठिहरवा = छठियार पुत्र जन्म के छठे दिन का उत्सव। सतनहान = शुद्धि के लिए नव प्रसूता का सातवें दिन का स्नान। डगरिया = रास्ता। गदिया = गद्दी। अनियाव = न्याय। धरम = धर्म। ठकुरइना = हे ठाकुर, हे मालिक। लखरिय = शुद्ध शब्द 'बखरिय' है, बखरी, गावों में राजा का मकान, हवेली। डुगिया = डुग्गी। सहनइया = शहनाई। खुसिया = खुशी। बीटोर होइतन = वे एकत्र होते, उनका बिटोर होना। बियहीय = विवाहिता। हुलस = उल्लास।

पृष्ठ 44

बूढ़ कूबे कह रहे है कि मैं सबका हाथ धुलवाऊँगा। पंचों, जब खोइलनि का बयान बूढ़ कूबे महादेव से कहने लगे तो उनका मन दूना हो गया, उत्साह बढ़ गया। उन्होंने कहा—वाह, पट्ठे, तुमने ऐसी अच्छी बात सुनायी। मैं अद्भुत रूप से प्रसन्न हो गया हूँ, तुम अपने द्वार पर जाओ। मैं डुग्गी पिटवा रहा हूँ। राजा महदेव ने ऐसा कहा—

कुसुमापुर में चमार को बुलवाया और कहा कि तुम गले में शहनाई डाल लो तथा किले में डुग्गी फिरवा दो कि बूढ़े कूबे को लड़का हुआ है तथा गउरा में उल्लास छा गया है। उनकी यह लालसा है कि वह कुल खानदान को द्वार पर बुलवाकर, एकत्र करा कर, बच्चे का छठियार करें। कल उनके द्वार पर आप लोग एकत्र होइए।

भाइयों, सहादेव का ताल बज गया, डुग्गी उन्होंने पिटवा दी। पहर भर दिन चढ़ गया था। सोलह सौ जदुवंशी और वहाँ बसे हुए सभी अहीर बूढ़ कूबे के पावन द्वार पर पहुँचे। सहदेव की गद्दी लगा दी गयी। बूढ़ कूबे स्वयं मोढ़ा पर बैठ गये तथा गले में कफन (कफनी) डालकर (नम्रतापूर्वक) तथा दसों नख जोड़कर (दोनों हाथ जोड़कर) उन्होंने कहा आज मेरा भाग्य खुल गया कि मेरी स्त्री को प्रिय पुत्र पैदा हुआ है। पंचों, आप लोग मेरे दरवाजे पर हाथ-पैर धोइये और मेरे यहाँ जूठन गिराइए, भोजन कीजिये यह मेरी विवाहिता की कामना है। भाइयों गउरा का बयान सुनिये, लोरिक का छठियार आयोजित हुआ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—धोवाइ देइबि हथवा = मैं भोजन करने के लिए हाथ-पैर धुलवा दूँगा। मन दूना हो गइल = उनके मन में बड़ी प्रसन्नता हुई। अद्भुत रूप = विशेष रूप से आनन्दित रूप। देउढ़ी = ड्योढ़ी, देहली, द्वार। चमरा = चमार, एक जाति। गरवा में = गले में। हुलस उठल = प्रसन्नता हुई। ताल बाज गइल = ताली बज गयी, मंजीरा बज उठा। मोढ़ा = मूँज का बना हुआ बैठने का एक आसन। गर में कफन डालि के = गले में कफन डालकर, अत्यन्त विनीत भाव से। दसो नहन = दस नखों को, दोनों हाथों को। भगिया = भाग्य। कोखिया = कोख। गोड़वा धोइ लेत = भोजन के लिए पैर धो लेते। गोड़ = पैर। जूठन गिरइत = आप लोग जूठन गिराते अर्थात् आप लोग भोजन करते। आमलवा = निश्चित समय। कफनी = वह कपड़ा जो मुर्दे के गले में डालते हैं।

पृष्ठ 45

धरमी संवरू का कलेजा दूना हो गया, वे प्रसन्न हो उठे। उन्होंने कहा—मेरी माता ने पहले पुण्य की ओर पैर रखा था। शायद सचमुच मेरा जोड़ पैदा हो गया है। उन्होंने कहा—हे माता, तुम धन्य हो, अद्भुत हो। अब खोइलनि का बयान सुनिये। वह रात में छठियार करने चली। गउरा में भोजन की तैयारी हुई। सोलह सौ यदुवंशी तथा सम्पूर्ण अहीरों के घर से एक-एक आदमी भोजन करने चले। खोइलनि ने कहा—

मैं बड़ी गरीब हूँ। आप लोग चलकर हाथ धो लीजिए, मेरी बड़ी लालसा है। सभी लोग खोइलनि के द्वार पर उपस्थित हुए। एक-एक व्यक्ति पैर धोकर तैयार हुआ। वहाँ सोलह सौ यदुवंशी थे। सम्पूर्ण अहीरों के घर से आया हुआ एक-एक व्यक्ति (घरजनवा), सभी हाथ धोकर भोजन के लिए तैयार हुए। भोजन अद्भुत बना था।

विधि पूर्वक भोजन हो रहा था। खोइलनि के यहाँ व्यंजन बने थे, सब लोग गद्गद् हो गये। इस प्रकार का भोज कराने वाला धन्य है, लोगों ने कहा। रानी ने मन लगा कर भोजन तैयार कराया है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—करेजवा = हृदय। करेजवा दूनवा भइल बाइ = उनका कलेजा दूना हो गया है, उन्हें अत्यधिक प्रसन्नता हुई है। पुनिया = पुण्य। सिरजल वाड़ेनि = रच दिया गया है, सृजन कर दिया गया है। अद्बुद = अत्यन्त प्रसवा, अद्भुत। जवनी वेर = जिस समय। रतिया = रात में। घरजनवाँ = घर से एक-एक व्यक्ति को निमन्त्रण करने को घरजनवाँ निमन्त्रण कहते हैं। घर के सारे पुरुषों को दिया गया निमन्त्रण 'सबहरि' कहा जाता है। गरीवता = गरीबी। टिसुना = तृष्णा, लालसा। जाना = जन,व्यक्ति। रचिय के = रच कर। अद्बूद रूप = अद्भुत रूप, प्रसन्नता से पूर्ण। भोजवा = भोज, दावत, निमन्त्रण। बराने = के लिए (?) हियवे से = हृदय में।

पृष्ठ 46-47

जैसे भाई की आशा पूरी हुई उसी प्रकार लड़का गउरा में बढ़े। भाई-बंधुओं ने वर दे दिया। गउरा के और लोग भी आये। पंचों, अब यहाँ का गाना खत्म हो रहा है, हमारा गाना आगे बढ़ रहा है। अब योगी का हाल सुनिए, जो पिंड का वरदान देकर गये थे। जब वह शंकर के मन्दिर पर गए तो हँसकर उन्हें जगा दिया। उन्होंने कहा—हे शंकर जो आपका वचन पूरा हो गया। हमको योगी बना दीजिये जिससे देव बनकर मैं अपने भाई से मिलने जाऊँ। जैसे कृष्ण का दर्शन करने के लिए योगी गये थे वही रूप मेरा बना दीजिए। मैं अपने भाई से मिलूँ और आपका मन खिल उठे, प्रसन्न (अद्बुद) हो जाय।

भाइयों, शकर दानी उठ गये। उन्होंने संवरू के सिर पर माया की जटा बढ़ा दी। उनके सिर पर जटा झुलने लगी। उन्होंने ललाट पर भस्म लगा लिया, अंग में विभूति रमा ली। माया का झोला सभाला तथा योगी बन गए। अब योगी का खेल देखिए, संवरू योगी बन गए है।

उनकी एक ओर भांग झूल रही थी, एक ओर धतूरे का गोला लटक रहा था। हाथ में संड़सा था। वह बोहा चले। उनके हाथ में कमण्डल था। वह कांखतर मृग-छाला दबाये हुए थे। शेषनाग की दुवाली तथा गर्दन में बदरिका पड़ी हुई थी। पंचों, अब आगे की बात सुनिए। आगे के समर का खेल सुनिए। लड़कों का वर्णन सुनिये। योगी द्वार पर दर्शन के लिए आये हैं और जय-जयकार कर रहे है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—अशिया = आशा। वरबा = वर। **जगाइ देलन = उन्होंने जगा दिया। कउल = कौल, वचन। पूजि गइल = पूरा हो गया। देउरो = देव-स्थान में। अद्बुद = प्रसन्न। भायवा = शुद्ध 'मायवा' है, माया।**

लीलरा = ललाट । धुधकी = स्पष्ट नही है, 'भुभती' या ,भभुती' शब्द होना चाहिए, विभूति, राख । झुल्ला = झोला । भांग = एक नशीली सूखी हुई घास । संड़सवा = संड़सा, चिमटा । कमंडल = साधुओं और योगियो का जल पात्र । मृगछलवा = मृग छाला । सेसवे नाग = शेषनाग । दुआली = चमड़े का फीता । बदरिका = बैर का फल । लरिकन्न के = लड़कों का । दरसनवा = दर्शन ।

पृष्ठ 47

अब रानी खोइलनि उठीं तथा थाली को मोतियों से भरवा लिया । उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई । थाल को मोती से भर कर उन्होंने ऊपर थोड़ा बासमती चावल, फिर मूंग की दाल रख दी । वह दरवाजे पर भिक्षा देने चलीं । जब योगी बाबा को दरवाजे पर भिक्षा देने चलीं तो योगी पाँच कदम पीछे हट गए । हे माँ, मैं गउरा गढ़पाल में तुम्हारी भिक्षा नही लूंगा । तुम्हारी कोख में अद्भुत रूप उत्पन्न हुआ है । मेरी माया उनके दर्शन के लिए आयी है ।

गायक कहता है, मैने यह सुना है कि खोइलनि का मन उदास हो गया, उनके मन में दुविधा हो गयी । पंचों, उस दिन का और समर का हाल सुनिये । रानी अपनी हवेली में चली गयी, गोद में बालक को लिया और योगी ने उसका दर्शन किया । चिल्लर की भाँति बालक बहुत ही दुर्बल था । वहाँ योगी का शरीर (हृदय) जल गया, वह वापस आये । उनका वरदान पूर्ण नही हुआ था । उन्होंने कहा—रानी मैं तुम्हारी भिक्षा नहीं लूंगा । वह बहुत क्रुद्ध हो गये, सचमुच विष जैसा हो गये । वह शंकर के मन्दिर पर गए । कहने लगे—शंकर जी तुम्हारे ऊपर वज्रपात हो जाए, तुम्हारे ऊपर बिजली की धार गिर पड़े । तुमने जीव के बदले में चिल्लर भेज दिया है, मेरी माँ के गर्भ से चिल्लर का अवतार हुआ है । तब शंकर जी अपना चिमटा लेकर दौड़े ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—खूसी उठि गइल = उनको प्रसन्नता हुई । भिछा = भिक्षा । कोखी = कोख में । मया = माया, शरीर । दोच = उदास । मनवा दोच हो गइलन हमार = हमार मन उदास हो गया । ढुकि गईल रानी = रानी प्रवेश कर गई । गोदी में = गोद मे । चिल्लर = एक छोटा कीड़ा, जो कपड़े में लग जाता है । निपटे = अत्यन्त । दूबर = दुर्बल । पाठा = पट्ठा पूरन = पूर्ण । बरदानी पूरन नाहीं भइलें = वरदान पूर्ण नहीं हुआ । खुनुसिनि = क्रोधित होकर । माहुरवा = विष । माहुरवा होइ बा गईल खुनुसिनि = वह क्रोध में विष जैसे हो गए, उनको भयंकर क्रोध हुआ । देवल = मन्दिर । गजबवे के धार = बिजली की धार । बजर परो = वज्रपात हो जाय । बदलवा में = बदले में ।

पृष्ठ 48-49

शंकर जी ने चिमटे से योगी को दोबार पीटा । उन्होंने कहा—दुष्ट तुम पर वज्रपात हो जाय । तुम मुझसे बड़ी-बड़ी बात कर रहे हो । गउरा में एक पिंड से

ही दो बीर उत्पन्न हो गये हैं। एक धोबिन के गर्भ से लड़का उत्पन्न हुआ है, एक ने तुम्हारी माता के गर्भ से अवतार लिया है। वहाँ से वह बीर बघेला (संवरू) लौटा तथा धोबिन सुरसरि के द्वार पर पहुँचा। धोबिन वहाँ कपड़ा रेह में डाल कर धोने के लिए तैयारी कर रही थी। संवरू ने सबको अभिवादन किया। धरमी ने बीर को देखा। सचमुच वह जोड़ का पैदा हुआ है। जोगी संवरू वहाँ गये और सुन्दर रूप अजयी को गोद में उठा लिया, और उसे खेलाने लगे। यह बीर धन्य है जिसका अवतार हुआ है। धोबिन यहाँ कपड़े सौद रही थी, रेह में सान रही थी।

जोगी संवरू उसका हाथ पकड़ रहा था। उसने कहा हे माता, अब यहाँ कपड़ा सौंदना बंद कर दो, अब तुम मेरी माँ (मयना) हो गयी हो। तुम्हारी गोद में बीर बालक पैदा हुआ है। अब तुम कपड़े का धोना बन्द कर दो। दुधिलापुर में तुम हमारी मयना (माँ) हो चुकी हो। भाइयों, योगी ने बड़ी गड़बड़ी उत्पन्न कर दी। धोबिन की बाँह पकड़ कर वह कहने लगे। कपड़े मत धोओ, इतने दिन तक तुम धोबिन थीं अब तुम मेरी माता हो गयी हो। धोबिन का शरीर सूख गया।

हाय भगवान, योगी कह रहे है कि कपड़ों का धोना छोड़ दूं। गदहे पर लादकर गन्दे कपड़े घर-घर फेंकवा दूं। मैं सबको कह दूं कि इतने दिन मैंने कपड़े की धुआई की अब आप लोग दूसरा धोबी खोज लीजिए। धोबिन नयी ब्यायी हुई गाय की भाँति थर-थर काँपने लगी।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—सउनति रहलि = सौंद रही थी. रेह में सान रही थी। पल्लगी = अभिवादन। ओहड़पा = दूसरी ओर (?) हूमचि हूमचि = जोर लगा-लगा कर। खूलति = व्यायाम कर रहा है। खम्हिवा = बरामदा। खेलावै लगलन = वह खेलाने लगे। लदिया = गन्दे कपड़ों की ढेर। लूगवा = लग्गा, कपड़ा। सउनल = सौंदना, रेह में सानना। गंठियाइ = गाँठ मे, गोद मे। मयना = मदना, मैना, सारिका, सुन्दर स्त्री के लिए एक संबोधन है। देहै सुखि गइलबा = वह भयभीत हो गयी, उनका शरीर सूख गया है। गदहन पर = गदहों पर। छाड़ी = उतारे हुए गन्दे कपड़े। कांपलि धोबिन थर-थर = धोबिन थर-थर कांपने लगी। बिआइलि गाइ = ब्याई हुई गाय।

पृष्ठ 49-50

कुसुमापुर मे सोलह सौ अहीरों का घर है। वहाँ सहदेव का प्रताप तप रहा है। धोबिन कहने लगी कि जिस दिन गन्दे कपड़ों की ढेर फेकवा दी जायगी उस दिन डुग्गी पीट जायगी तथा युद्ध की लकड़ी बजने लगेगी। राजा सहदेव यहाँ आ जायगा और मेरे पति के मुँह में गोबर ठुँसवा देगा, और उलटा भुसुक चढ़वाकर उन्हें मुर्गा बनवा देगा। कच्ची बाँस की छड़ी कटवा कर उससे पति का चमड़ा उधड़वा लेगा। मुँह में वह रुखानी ठोकवा देगा। भौहों में टिकुरी गड़वा देगा। दरवाजे पर आप योगी

नहीं, लगता है काल आये हैं। कपड़े की धुलाई छुटेगी तो मेरा पति कैद कर लिया जायगा। अलबेला योगी हँस पड़ा।

हे रानी, हमारी बात मानो। अब यह धुवाई नहीं होगी। अब दरवाजे पर कपड़े नही साने जायेंगे। अब तक किले में तुम धोबिन कही गयीं, अब तुम योगी की माँ कही जाओगी। तुम्हारी आँखों में पट्टी लगी हुई है, तुम्हें कुंवा दिखाई पड़ा है, विपत्ति दिखाई पड़ रही है, तुम काका को बुला दो। गन्दे कपड़ों की लादी गदहों पर लदवा दो तथा सभी अहीरों के द्वार पर ललकार कर फेंकवा दो। जो तुम्हें कोई डर दिखायेगा तो मैं उसका मुँह बन्द करवा दूंगा। हे मैना, जो तुम्हें कोई तिरछी नजर से देखेगा तो बोहा में महाभारत गहरा जाएगा। भाई, मुझे तुम योगी मत जानो। भाई के लिए तुम्हारी कपडे की धुलाई छूट रही है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—तपल बा राजा सहदेउवा = राजा सहदेव का प्रताप तप रहा है। सउनल = धोने के लिए रेह में साने हुए कपड़े। मुसुक चढ़ाई उलटा = वह मुर्गा बनायेगा। ठुंसवाइ देई = ठुंसवा देगा। कउन = कच्चे बांस की छड़ी। बोकला = खाल। ओकाचि घली = छिलवा देगा, उधड़वा देगा। रूपवाली = रुखानी जैसा कोई औजार। भंउवा = भौंह में। टेकुरी = टेकुरी, एक प्रकार का सूजा जिसे जूता सीने के लिए चमार प्रयोग करते हैं। कलवा = काल, मृत्यु। पतीय = पति। बनखानि पर्रा = कैद मे डाल दिया जायगा। अन्हवट = पट्टी। ईनार = कुँवा धीरई तोके = तुझको भय दिखायेगा। लादी = रेह में साने हुए कपड़ों का ढर। छाड़ी = गन्दे कपड़े। लुगा = कपड़ा। समसाइ दईब मुँहवे = मुँह बंद करवा दूंगा। गहुवाइ देइबि भारथ = महाभारत या युद्ध ठनवा दूंगा।

योगी वेश में संवरू का आना और धोबी का पक्ष लेना

पृष्ठ 50

हे पंचो, योगी वेश में संवरू ने जब कपड़ा धोना बन्द करवा दिया तब धोबिन बड़े संकट में पड़ गयी। वह जाकर अपने पति को जगाने लगी। पति ने कहा — बुजरो, जो तुम कह रही हो वह तो मैं सुन ही रहा हूँ, मुझे तो नींद आ रही है। तुम उसको योगी मत जानो, वह तो हमारे गले का फाँसी है। उसकी जाति तो तुम जानती ही हो, अहीर कैसे उलटे होते हैं। वे तुम्हारी-हमारी देह सीधा नहीं रहने देंगे।

तब तक वहाँ अहीर संवरू उपस्थित हो गया तथा बखरी (हवेली) के अन्दर चला गया। कहने लगा — हे काका, हे पिंजल, आज मेरी बात मान जाइए। आपके शरीर (कोख) से बीर उत्पन्न हो गया है, आज किसमें इतनी बड़ी शक्ति है जो आपको तिरछी अंगुली दिखा दे। मैं एक बार लोहे का हेंगा नधवा दूंगा और गउरा में उसे कंड़वा दूंगा, रौंदवा दूंगा। आप मुझे वह योगी मत जानिये। दोगला (वर्ण शंकर) न समझिये जो दरवाजे पर आया है। हे मालिक, आप गदहों पर कपड़े लदवा दीजिए।

संवरू बाँह पकड़ कर उन्हें घसीट कर दरवाजे पर ला रहे हैं। वह कह रहे है, सचमुच गदहों को लाइए और उनकी पीठ पर गन्दे कपडे लदवा दीजिये और उन्हे हाँककर सबके गन्दे कपड़े फेंकवा दीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ धइके = पकड़ कर। ऊँघाई = नीद। गर क फाँसी = गले की फाँसी। देहि सोझ ना रहे दीहें = वे शरीर सीधा नही रहने देंगे। सोझ = सीधा। ककदई = हे काका। असवड = ऐसा बड़ा। दीदवा = दीदा, शक्ति, साहस। हाला = बार। एके हाला = एक बार। हेगवा = हेगा। लोहवन के = लोहे का। नाधि देई हम = हम नधवा दंगे। खंड़हरि = रौंदने या कांड़ने की प्रक्रिया। खंड़हरि डालबि = रौंद डालूँगा। दोगला = नाजायज संतान, वर्ण सकर। बहियाँ = बाँह। ठिठिरावत बहियाँ = बाह पकड़ कर घसीट रहे है। ठेलि के = ठेलकर। गादहवा = गदहा। पिठिये के = पीठ पर। बिगवाई दीह तूँ = फेंकवा देना (तुम)।

पृष्ठ 51

भैया, क्या सबके दरवाजे पर फेंकना पड़ेगा? धोबी अपनी पत्नी से कह रहा है। चलो हे विवाहिता, जो गति होनी है वह तो होगी ही। उसने संवरू योगी से कहा– तुम योगी नहीं हो, हम लोगों के लिए काल बनकर आये हो। उन्होंने कहा, तुम काल ही जानो, लेकिन अब तुम हरगिज कपड़े की धुलाई नही करोगे। पिंगला धोबी ने कहा– अच्छा। वह गदहों को लेकर आया और जो गन्दे कपड़े थे उनको धोबिन ने बाँध दिया। कुसुमापुर मे जितने गन्दे कपडे थे उनका उसने गट्ठर बना लिया।

अब अलबेला बयान सुनिए। अब मुहवल का प्रस्थान होगा। धोबी ने गन्दे कपड़ो को लाद लिया और गदहों को हांक दिया। साथ में धोबी की स्त्री भी थी। वह गउरा गढ़ गयी और हँस कर कहने लगी –आप लोग हमारा कहना मानिये, अपना-अपना कपड़ा पहचान कर आप लोग ले लीजिए। अब हम आपके कपड़े नही धोयेंगे। जब अहीरों ने यह रूप देखा तो वे जलकर भस्म हो गये। ऐ बुजरो, तुम हम लोगों का कपड़ा बिना धोये फेंक रही हो। धोबिन ने कहा अब हरगिज हमसे धुलाई नही होगी। अब हम कपड़ो की धुलाई नही करेंगे। आप लोग धोबी खोज लीलिए। लोगों ने कहा—धोबी पागल हो गया है। उससे बोलना व्यर्थ है। धोबिन ने गन्दे कपड़ों को सबके दरवाजों पर फेंक दिया। फिर गदहों को हाँक कर वह कुसुमापुर आयी। वहाँ सहदेव की गद्दी लगी हुई थी।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ- बीगे के परी = फेंकना पड़ेगा। जवन = जो। गति = दशा। हिरगिस = हरगिज, किसी प्रकार। एहिगो = इसी प्रकार। खलिहं = खाली, सादी। आमडे = आम, साधारण। बगुवा = गट्ठर वकुचा। बबुई = बहू। सरनिया = सरणि रास्ता।

पृष्ठ 52

दरबार लगा हुआ था। फाटक पर सिपाहीं खड़े थे। वे तिलंगी सिपाही थे। सिपाही कह रहे थे कि राजा को बंगले में खबर दे दी जाय। सने हुए कपड़े लादकर धोबी कुसुमापुर पहुँचा और गन्दी रेह में सने हुये कपड़ों को सहदेव के द्वार पर पटक दिया कि सभी लोग अपने कपड़े चुन-चुन कर ले जायँ। प्यादे तब तक जाकर सहदेव के बंगले में पहुँच गए। सिपाहियों ने कहा—

ऐ ठाकुर, क्या आपको इस बात की जानकारी है कि धोबी पागल हो गया है। रेह में सने हुए कपड़ों को हम लोगों के द्वार पर उसने पटक दिया है और कह रहा है कि सारे घर के लोग अपने-अपने कपड़े पहचान कर ले जायँ। राजा क्रुद्ध हो उठा। उसकी एड़ी से सर तक आग लग गयी। उन्होंने कहा—साले को खम्भे से बाँध दो। चार-चार सिपाही धोबी पर चढ़ बैठे। पिंगला धोबी वहाँ से चिल्लाकर भागा और उसने योगी को खबर दी। अब योगी का बयान सुनिये।

उन्होंने शंकर से वरदान माँगा और कहा—आपका (विश्वंभर) बान नष्ट हो जाये! आपने मुझे इन्द्रपुरी में वरदान दिया था। अब भइया, बान का बयान सुन लीजिए। वीर ने वह विश्वंभर (अग्नि) बाण शंकर जी से माँगा। धरमी को देवताओं का वरदानी बाण मिल गया, पाँच सौ बर्छियों का धनुष था। पाँच बान ब्रह्मा ने वरदान स्वरूप उसको दिया। उन्होंने कहा—हे लाल, इस बान को छोड़ोगे तो वीर चौदह कोस ढुलक जायेंगे। दावाग्नि फैल जायगी। अंगार बरसने लगेगा—कुँआ में धुंवा उठने लगेगा, तालाब खौलने लगेंगे। सीधरी मछली दांत बा कर मर जायगी, गरई मछली भी मर जायगी। पृथ्वी डगमगाने लगेगी। ऐसा वरदानी बाण संवरू को मिला था। देवता लोगों ने उसे वरदान दिया था। फिर वीर संवरू सोच में पड़ गये।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—धनवा = धन। रुहले रहल = चढ़ा हुआ था, बढ़ा हुआ था। पियादा = सिपाही। तिलंगा = सिपाही। एड़िया दरे लागल अंगार = सिर से एड़ी तक उनको आग लग गयी। खम्भा में बान्ही जा = खम्भे में हम लोग उसे बाँध दें। चील्हिकि के = कड़क कर चिल्लाकर। खबरि = खबर, समाचार। बिलि जाऊ = विनष्ट हो जाय। बिसांभर = विश्वंभर, अग्नि। बनवा बिसांभर = अग्नि बाण। बरइछ = बर्छी। धना = धनुप। नरियाई चउदह कोस = परिक्रमा करेगा चौदह कोस। बनडाढ़ा = दावाग्नि। सीधरी = एक मछली। दांत चियारी = दांत बाकर मर जायगी। पोखरा = तालाब, पुष्कर। गरई = एक मछली।

पृष्ठ 53-54

ब्रह्माजी से कहा—हे ब्रह्मा, आप मुझे यहाँ दूसरा बान दे दीजिए। इस बाण के छूटने पर बड़ा पाप हो जाएगा। फिर ब्रह्मा ने तीर तथा बाण का दान दिया। वह

बरदानी बाण संवरू के बगल में लटक रहा था। वह कुसुमापुर आये। इधर सिपाहियों की दृष्टि उन पर पड़ी। वे कुसुमापुर भगे तथा सहदेव से कहा—हे ठाकुर, एक योगी दुधिलापुर बैठा हुआ है। उसको देखकर हृदय धड़क रहा है। हम लोग भाग आये हैं। लगता है योगी हमारी जान नहीं छोड़ेगा।

श्रोताओं की आँख में नींद आने का गायक द्वारा उल्लेख

ऐ पंचों, सबकी आँखों में नींद आने लगी है, वे हमारा गाना समझ रहे हैं। यहाँ गाना बन्द होगा। बाबा यहाँ मशीन को जारी (बंद) कर दीजिए, यहाँ मेरा गाना खत्म होगा। पंचों, जिस दिन की बात है उस दिन का खेल सुनिये। राजा सहदेव क्रोध में जल उठे, उनकी एड़ी में अंगार लग गया। एक सौ अहीर हैं, एक योगी है। सोलह सौ अहीर वहाँ बसे हुए हैं।

गउरा में डुग्गी बज जाय, कुसुमापुर में नगाड़ा बज जाय। सोलह सौ घर वहाँ यदुवंशी थे, (सबने यही कहा)। दुधिलापुर में योगी को घेर कर मारा जाय। धोबी को मुर्गा बना दिया जाय। भाइयों, सहदेव क्रोधित हो गए। उन्होंने कुसुमापुर में चुनौती दे दी। चमार शहनाई लेकर दौड़े, उनके गले में शहनाई सहदेव ने बँधवा दी थी। एक चमार डुग्गी लेकर गउरा चला गया जहाँ अहीरों की बस्ती थी।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—बनवां = बान। तिरियैइ क = तीरों का। दनवां = दान। पुलुसन = पुलिस, सिपाही। तिरवा = तीर। एगो = एक। सरके लागल मनवां हमार = हमारा मन भय से डगमगाने लगा। बुझाता = मालूम होता है। ओंघाई = नींद। संगला ? डगर बजवाइ देईं जा = हम लोग डुग्गी बजवा दें। घेरि के = घेर कर। बसगिति = बस्ती।

पृष्ठ 54-55

भाइयों, कुसुमापुर में सहदेव की डुग्गी बज गयी। बीरों, अब गौने से लौटी हुई स्त्रियों को छोड़ दो। गंगा से लौटी हुई स्त्रियों का त्याग कर दो। विवाहिताओं की शैया छोड़ दो। नाक में पहनी जाने वाली झुलनी का बयान छोड़ दो। ठाकुर ने जिस दिन के लिए पालन किया है वह घड़ी निकट आ गयी है। अपना लंगोटा कस कर आप लोग लड़ने के लिए तैयार हो जाइए। दुधिलापुर में एक योगी आया है। अब निश्चय ही भारत (युद्ध) गहरायेगा। सबकी बनी हुई लादी बरबस जोगी ने दरवाजों पर भेजवा दिया है। इस बार योगी को घेर कर मार डालो। मुसुक चढ़ा कर उसको मुर्गा बना दो।

भाइयों, अब गउरा बाजार में भारत की तैयारी होने लगी। सभी 'मारो-मारो' कह कर दौड़े। सहदेव के दरवाजे पर फौज एकत्र हो गयी। सहदेव उठे तथा सात मकुनी हाथियाँ मँगवाईं। सहदेव वीर सात हाथ के थे। वह हाथियों पर जंजीर चढ़वा रहे थे। सबके गले में शृङ्खलाएँ बँध रही थीं। कुसुमापुर में हाथियों के हौदे

कसे जाने लगे । सहदेव ने लंगोटा कसा तथा मस्तक पर पगड़ी बाँधी । वह युद्ध के लिए तैयार हो गए ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—गवननि के = गौनों की । गवनहरि = वह स्त्री जिसका गौना अभी-अभी हुआ है । दोंगा = गौने में आयी हुई लड़की जब माता-पिता के यहाँ लौटती है और उसके बाद जब फिर वह पति के घर आती है तो उस समय जो उत्सव होता है वह दोंगा है । लड़के की ओर से कई सम्बन्धी जाकर बहू को दोंगे में लाते है । बहुआरि = बधू । निहिचय = निश्चय । मारि घालऽ = तुम लोग मार डालो । केन्यिा = का, की । नारूबेइ नारू = ? शायद शुद्ध 'मारूबेइ मारू' है = मारो मारो । मुकुनइ = चकुनी हाथी । सिकरेइ में = जंजीर में, शृङ्खला में । नंधएवायत = वह बंधवा रहा है । हाथा = नर हाथी । हउदा = हौदा । मुरेठा = एक विशेष पगड़ी, साफा ।

पृष्ठ 55

गायक कहता है कि मैंने सुना है कि सहदेव की पलटन भारी है । वह शत्रु से लड़ने के लिए तैयार है । अब बावन जोड़ी नगाड़े बज उठे, तिरपन जोड़ी करनाल बज उठे । बीस-बीस तुरहियाँ बज उठीं । शृङ्गियों की ध्वनि गूँज उठी । नेपाली त्रिगुल भी बज उठे, जैसे युद्ध में बजते हैं । जिस समय बाजे बज उठे,* कायरों का मन भी दुगुना हो उठा । जब नेपाली बिगुल बज उठे, कायरों का रोम-रोम फड़क उठा । लोग लड़ने की तैयारी करने लगे । योगी को घेर कर मारने के लिए ललकारने लगे । धरमी इधर काछा चढ़ाने लगे ।*योगी ने बारह वर्ण की गाँठें बाँधी हैं जो मल्ल लोग बाँधते है । वीर ने लोहे का कवच अपनी छाती पर डाल लिया । कुसुमापुर में उसकी जटा हिलने लगी । ऐ बाबुओं, तुम लोग बढ़ बढ़कर बातें कर रहे थे, घर में बैठकर गाल बजा रहे थे ।

शब्दार्थ तथा टिप्पणियां – गरूहू = भारी । पलटन = फौज । बादी = शत्रु । लड़े के = लड़ने के लिए । बाजलि = बज गयी । बावनी = बावन । जोड़िए = जोड़ी । नगारा = नगाड़ा । करनालि = बड़ा ढोल । तुड़हिया = तुरही । सिंगा = शृङ्ग, रण-सिंगा, फूंक कर बजाया जाने वाला एक बाजा । गोहरई गोहार = गुहार पर गुहार, तुमुल ध्वनि । बीगुला = तुरही तथा रणसिंगा की जाति का एक बाजा जो मुँह से फूंक कर बजाया जाता है, बिगुल । कदरन के = कायरों का । कदर = कायर । दुनवाँ मनवाँ होई जाइ = मन दूना होता जा रहा है, उनके मन में उमंग उमड़ रहा है । नयपाली बिगुलवा = नेपाली बिगुल, । रोउंवाइ = रोम-रोम । फहरात = फड़क रहा है । रोउंवाइ फहरात = रोम-रोम फड़क रहा है । मलवे बरनवा के गाँठ = मल्ल वर्ण की गाँठ । छजवा = कवच, छज्जा । चमकाइ देलेनि सिनबेई में छजवा = सीने में कवच धारण कर लिया । चमकाइ देलेनि = चस्प कर दिया । सिनबेई में = सीने मे । हलर-हलर करं = हिलने लगा । जटवा = जटा । दहा = हृद सरोवर के

पास। पइनी पुआइल होइब = बहुत बढ़-बढ़कर बातें करते रहे थे। गाल होइबऽ बड़वरे = बड़ा गाल बजा रहे थे, शेखी मार रहे थे।

रिकार्डिङ्ग करते समय मुझे रतसंड के आटे की मील पर नींद आने लगी—गायक का मेरे ऊपर आक्षेप

पृष्ठ 56-57

गायक कहता है मैं इधर आटे की मील पर गाना सुनने आऊँगा, जहाँ मशीन पर गाना हो रहा है। यदि गाना में आपको नींद आ रही है तो अपने घर गोठहुली चले जाइये। गोठहुली जाकर सो जाइये। हे कायर, आप जाकर स्त्री के संग आलस्य में पड़ जाइये। यदि इतर मर्दो का संग है तो सभा में मेरा गाना सुनते रहिये।

इधर योगी की लड़ाई कठिन है। अब वीर लड़ने के लिये तैयार हो गये। सहदेव अपने अहंकार में डूबे हुए हैं। योगी खेत और मैदान में है। धरमी ने अपनी कमान की नोक (गोशा) छोड़ दी। वह आकाश में छा गयी। उन्होंने सरई का तीर हाथ में ले लिया। उसे ठीक से सँभाल लिया। आगे धनुष मचमचाने लगा धरती पर कमान चरचराने लगा। इधर सहदेव की जांघ काँपने लगी अपने हाथों को उन्होंने पीछे लौटा लिया। कहने लगे, यह योगी तो बन में रहने वाला योगी नहीं है। यह तो बांका वीर है, लड़ने में जुझारू है। जो योगी के भाले के नीचे पड़ जायगा उसका जीवन बचने योग्य नहीं है। इधर योगी की पलटन हट गयी तथा सहदेव की पलटन हवेली में घुस गयी। सभी वीर अपने-अपने घर गये। उनकी स्त्रियां गली में आपस में बातचीत करने लगीं। हे बहिन, तुम धोबिन को नहीं जानती हो। वह बन में योगी से मिली थी उसकी कोख बेटा उत्पन्न हुआ है। उसने गुहार लगायी है तथा हम लोगों के साने हुए कपड़ों को भिजवा दिया है।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ मील = रतसंड की आटे की चक्की जहाँ मैंने रिकार्डिङ्ग की थी, यह बलिया जिले में रतसण्ड है। मसीनवे = मशीन। निनिया = नींद। सुधाआइ लेब घरवै = घर का रास्ता लो। गोठहुली = मेरा अपना गाँव जो बलिया जिले में है। कादर = कायर। अलसाइ जइबऽ तू = तुम आलस्य में पड़ जाओ। गोसवा = गोश, कमान की नोक। सरइय = बाण, सरकण्डा। तीरवा = तीर। धेना = धनुष। कमाइ = कमान। जंधिया होलि गइल = उसकी जांघ काँपने लगी। हाथा = भोजपुरी में 'हाथा' स्त्री लिंग है, हाथ पुल्लिंग है। बनवंइ के = बन का। संउजा = बातचीत, सलाह-मशविरा। उदे = शुद्ध 'उहे' है। गोहारि करे आइलबा = वह गुहार पर सहायता करने आया है। गोहारि = पुकार, आवाज लगाना।

पृष्ठ 57-58

लगता है यह धोबिन योगी के साथ उलझी हुई है। योगी की बूंद से लड़के का अवतार हुआ है। लोगों में असली भेद कोई नहीं जानता था कि किसके बूंद से लड़का उत्पन्न हुआ है, किन्तु इन्होंने प्रवाद

फैला दिया । पंचों, अब आगे की बात सुनिये । संवरू ने धोबिन से कहा —हे माता, दुग्धिलापुर में तुम मेरी मैंना हो, माँ हो । गउरा में खोइलनि मेरी माता हैं । मेरी दो माताएँ हो गयी हैं । गउरा में मेरे दो भाई हो गये हैं । हे मयना, हे माता, जब अन्न की कमी हो जाय, कपड़े फट जायँ तो खबर करना, मैं आपको भेजवा दूंगा । यदि अन्न की कमी हो जायगी तो मैं अन्न की छोंड़ि (अन्नागार) भरवा दूंगा । परन्तु अब अहीरों के कपड़ों की धुलाई न करना । योग की प्रभुता चलेगी ।

धरमी वहाँ से लौटे, अपनी माता खोइलनि के यहाँ पहुँचे । कहने लगे, हे माता, आप मुझे योगी मत समझिए । मैं वही लंगड़ा पुत्र हूँ जो पलंग पर पड़ा रहता था । जिस लंगडे बेटे के लिए तुम्हें शक-संदेह था वही बेटा मैं हूँ । हे माँ, मैं आँख खोलकर (सब कुछ देखते हुए) कह रहा हूँ । आप गउरा में राज कीजिए, काका का गाय चराना छुड़वा दीजिये । आपको जितने दूध की जरूरत हो, और किसी बात की भी आवश्यकता हो तो आप मेरे पास खबर भिजवा दीजिए । बुढ़िया खोइलनि हँस कर बोलने लगीं, बेटा मेरी बात सुनो । जिस दिन तुम्हारा जन्म हुआ तब से लक्ष्मी आसन जमा कर, पैर तोड़ कर यहाँ बैठी हुई है ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ— अझुराईल धोबिन संगवा = वह धोबिन के साथ उलझा हुआ है । मारमियाँ = मर्म, भेद । भुभुकाई = भभूका आग, चिंगारी । भुभुकाइ ना दिहलनि रे उठाइ = उन्होंने आग लगा दी, प्रवाद फैला दिया । मोखा = मोक्ष, मोक्ष की अधिकारी । पटोर = रेशम । फटहा = फटा हुआ । छांड़िया = शुद्ध 'छोंड़िया' है । छौड़ि, = अन्न रखने का बड़ा कुण्डा । सक = शक, संदेह । लंगड़ा = एक पैर का विकलाँग । किछऊ के = किसी चीज का । लछिमी = लक्ष्मी, समृद्धि । गोड़ = पैर । गोड़ तोरि के बइठि गइली = पैर तोड़ कर बैठ गयीं ।

पृष्ठ 58

खोइलनि ने कहा —मेरे यहाँ धन बढ़ गया । हवेली में वह धन खाने से कम नहीं होगा । मलसांवर माँ को ढाढ़स दिलाकर शंकर जी के मन्दिर पर वापस आ गये । संवरू की गायों में वृद्धि हो गयी थी । उनकी गोशाला जमी हुई थी । जिस समय बीर सरउंज में आ गये, उसके बाद का सुहवल के बाजार का गाना सुन लीजिये । भीमली की जोड़ी का अवतार हो गया है । दुर्गा का खेल अब सुन लीजिए । वह दुनियाँ में घूम रही हैं, कोई उनका भार सह नहीं पा रहा है । कोई उनकी बराबरी का मिल नहीं रहा था जो पूजा दे सके । गायक कहता है कि मैंने सुना है कि ब्रह्मा की सौ बहनें हैं । वे मृत्युलोक में घूम रही हैं । सबको यहाँ सहारा मिल गया । दुर्गा यहाँ बहुत व्याकुल हैं । देवी वसुधा में अपना सेवक ढूंढ़ने चलीं । उनको दुनियाँ में कोई नहीं मिला जो पूजा चढ़ा सके, जिसमें पूजा देने की शक्ति हो ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—खइला से = खाने से। धिरजवा = धैर्य, ढाढ़स। अंड़री = अंड़ार, गायों के रहने की जगह। चभकली = जमी हुई थी। अंड़री चभकाली = गायों का अड़ार खूब जमा हुआ था। भरवा = भार। आभरवा = मुद्रण की भूल है। 'आ भरवा' शब्द है। भरवा = भार बोझ। थेघवा = थेघ, सहायता। पूजवा मान = जिसकी शक्ति पूजा देने लायक हो, जो पूजा दे सके।

पृष्ठ 59

दुनियाँ को नाप कर तथा रमरेखा घाट पर गोता मार कर वह सोचने लगीं कि आज हमारी सभी बहनों को सहारा मिल गया। काका ने मेरा नाम 'पेटहिया' रखा जिसका कभी पेट नहीं भरता। इन्द्र के पावन द्वार पर मैं इसी नाम से विख्यात हुई। दुनियाँ में आश्रय मिलने का भरोसा नहीं रहा तब उन्होंने सोचा कि लोरिक के यहाँ जाकर रोटी के टुकड़े मात्र से गुजारा करूँगी। गायक कहता है कि मैंने सुना है कि दुर्गा उदास हो गयी थीं कि गउरा में उनका सेवक उत्पन्न नहीं हुआ है।

पंचों, धरमी संवरू की भक्ति कठिन है। उनकी भुजाओं में शक्ति थी। कार्तिक में 'कंथ सरि' लगी हुई है तथा भृगुमुनि के पावन द्वार पर मेला लगा हुआ है। दुर्गा आधे आकाश मे रह गयी थीं। अपना रथ उन्होंने पृथ्वी पर लौटा दिया था। वहाँ ऐसा मेला लगा हुआ था कि दुनियाँ के सारे वीर वहां एकत्र थे। इसमें मेरा सेवक निश्चित ही होगा यह सोचकर वह बलिया आयीं।

पंचो, अब जिस दिन की बात है उस दिन का आगे का खेल सुनिये। वीरो ने अवतार ले लिया है, उन सुन्दर वीरों का बयान सुनिये। धरमी सुचारु रूप से दूध दुहने लगे। एक काँवरि मे उन्होंने उसे खोइलनि के पास भेजना शुरू किया। दूसरे बेहंगी का दूध दुधिलापुर उन्होंने पहुँचवाना शुरू किया। लड़के दूध पीने लगे। उनकी भुजाओं में खूब शक्ति बढ़ने लगी।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—काढ़िके = नापकर। रमरेखा = बिहार के बक्सर में गंगा के किनारे का एक घाट रमरेखा घाट है। थेध = सहारा। पटेहिया = 'पेटहिया' शुद्ध है, जिसका पेट कभी नहीं भरता हो। टुकी = टुकड़ा। खाँड़ा = टुकड़ा, खंड। टूटल रहल मनवा = मन टूट गया था। लउरि = लाठी। कतिके केइ = कार्तिक का। कथेसरी = ? भिरगुन = बलिया मे भृगुमुनि का मन्दिर है। उनके नाम पर मेला लगता है। दर्दर मुनि भी वहाँ थे इसलिए उस मेले को ददरी का मेला कहा जाता है प्रधानत: पशुओं का यह बड़ा मेला है। यहाँ पहलवान भी जुटते है। रधिया = 'रथिया', शुद्ध है, रथ। हरिआइल = हरा भरा हुआ। कावंर = वहंगी। कँवरिन = काँवर से। गुधरेगी = कुश्ती, भिड़न्त। नवहा = नवयुवक।

पृष्ठ 60

दुर्गा की पूजा संकट मे पड़ गयी है। यहाँ मेरा गाना अटपटा हो गया है। मेरा मन घबरा गया है। [गायक कहता है कि मेरे गाने में गलती हो गयी है। देवी

को पूरी भक्ति मैंने नहीं की। क्या छोड़ दूं ? आगे करना ही पड़ेगा, मैं आगे कर दूंगा पूजा करने का समय आयेगा।]

हे भाइयों, चौदह टोलों के लड़कों, नवयुवकों को धोबी अखाड़ा खुदवा कर लड़वाने लगा। मैंने सुना है कि धोबी का इधर बल बढ़ने लगा, उसकी भुजाओं में शक्ति आने लगी। चौदह टोलों के युवकों को धोबी गउरा में लड़वा रहा है। फिर भी उसकी कसरत पूरी नहीं हो रही है। उसके शरीर में दर्द, पीडा होने लगती थी। उसका बल बढ़ने लगा। उसका मन भी बढ़ने लगा। सभी युवकों को उसने लड़वाया। तब भी उसके शरीर का दर्द नही गया। वह अपने शरीर को जमीन से रगड़ता था। तब तक सावन का महीना आया। पंचमी (पचइया) आ गयी। देश-देश में कुश्ती की प्रतियोगितायें होने लगीं। दंगल होने लगा। बीर की सभी लोग सराहना करने लगे।

शब्दार्थ तथा टिप्पणियाँ—कसुवे लंगोटा = उसने लंगोटा कसा। मलवा बरन = मालबरन एक विशेष प्रकार की गाँठ। पेटीय = पेटी। फंटवा = फेंटा। गरदा = धूल। चमकावल गरदा = उसने धूल लगा ली, चमका ली। अटपट = अस्त-व्यस्त। भुजा बढ़ल = भुजा में शक्ति बढ़ने लगी। बाजावत वाटे धोबिया = धोबी लड़वा रहा है। मेहनति = कसरत। बधे लागलि देहिया = देह दुखने लगी। पुहकार = पुष्ट, शक्तिशाली। लड़ाइ धललं = लडा चुका। बाथवा = दर्द, पीड़ा। रगड़त धरतिया में बाट देहिया के = वह अपनी देह को धरती पर रगड़ रहा है। सावनेइ के = सावन का। महिन्ना = महीना। पचइया = पंचमी, नागपंचमी, सावन की नागपंचमी को पहलवानों का दंगल होता है। गंगनी = दंगल। सरहना = सराहना, प्रशंसा।

पृष्ठ 61

हे, पंचों, दिनों दिन जब धोबी का बल बढ़ने लगा, वह अपनी शक्ति को रोक नहीं पा रहा था। सावन का महीना आ गया। पचमी पर सभी बीर लड़ने की तैयारी करने लगे, लड़ने लगे। अब अजयी का हाल सुनिये। इसकी चर्चा चारो ओर फैली हुई है कि झिंगुरी के मुकाबले का दंगल खेलने वाला कोई इस दुनियाँ में नहीं है। पिंजला के पुत्र अजयी ने भी यह बात सुनी। उसने कहा— मुहवल नगर में चलना चाहिये। उसने यह बात किसी को नहीं बतायी। गायक कहता है कि मैंने सुना है कि सूर्य भगवान अस्त हो गए। इधर धोबी ने अपने मन में, दिमाग में (वहाँ जाने का निश्चय किया) उसने भजन किया, बैना गाय का दूध पिया तथा अपनी माँ से पैसा माँगा। उनसे कहा मुझे कुछ पैसे की आवश्यकता है। धोबिन ने पैसा दे दिया और अजयी से कुछ नहीं पूछा कि पैसा किस लिए चाहिये। धोबी ने बताया भी नहीं।

रात को जब खाना पीना हो गया और हे पंचों, जब सब लोग सो रहे थे तब धोबी ने गउरा गाँव छोड़ दिया। कंधे पर लंगोटा रख लिया, जांघिया रख लिया।

फिर सोना सुहवली चला जो दह के पार था। उसने कहा चलूं झिगरू की शान देखूं। सुहवलि में ललकार कर दंगल हो रहा है। जैसे एक बार बमरी का पुत्र भीमली गर्व में चूर हो गया था वैसे ही धोबी का अहंकार बढ़ गया था। रात-दिन चलकर वह सुहवल के बाज़ार में पहुँचा।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ—पंचइया = श्रावण शुक्ल पंचमी को नागपंचमी कहते हैं। इसको भोजपुरी में पचइयाँ कहते हैं। इस दिन नाग या सर्प की पूजा होती है। इस दिन कुश्ती का दंगल होता है और बड़े-बड़े पहलवान अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। सानी के = मुकाबले का। बली = शक्तिशाली। दीमाग = दिमाग, मस्तिष्क। बयनवाँ = बकेन गाय। दमवां = दाम, पुराने पैसे का पचीसवाँ भाग, पैसा। पइसा = पैसा। गरजिया लागलि बाड़ हमरा = पैसे की आवश्यकता है (हमको)। गरज = गर्ज, ज़रूरत। खान-पीयन = खाना पीना। सूता = सोना। सूता परि गईल = लोग सो गये। गरदनी मे = गर्दन मे। कन्हिया = कंधा। कन्हियइ पर = कन्धे पर। रतियाइ = रात में।

पृष्ठ 62

उसने रास्ते में कहीं पड़ाव नहीं डाला। गउरा में दो घड़ी दिन चढ़ गया था। दुधिलापुर मे युवक एकत्र हुए और अजयी की माँ से पूछा हमारे मीता (मित्र) अजई कहाँ चले गये हैं? बोहा में मेहनत (व्यायाम, कसरत) की तैयारी है और पता नही हमारे मित्र अजयी कहाँ चले गए है। धोबिन ने कहा—हे बच्चों, भोर से ही सुघड़ अजयी का पता नहीं है। नवयुवकों ने अजयी को पहर भर दिन तक ढूंढ़ा, धोबी का पता नहीं चला।

गायक कहता है कि धरमी संवरू को इसकी सूचना मिली। गउरा का अखाड़ा आज बन्द हो गया है। दुधिलापुर मे अजई का पता नहीं चला। बीर सांवर बोहा छोड़कर धोबिन के पावन द्वार पर आ गये। पूछा, माँ क्या तुम्हें अन्न की कमी हो गयी है कि गउरा में तुम्हारी प्रतिष्ठा घट गयी है। तुमने किसका कर्ज खाया है? क्या किसी साहुकार ने तुम्हारे ऊपर कर्ज (दाम) चढ़ा दिया है। तुम्हें दूध की कमी तो नहीं हो गयी है?

दुधिलापुर में मेरी जोड़ी क्यों बिछुड़ गयी है अर्थात् अजयी कहाँ चले गये हैं। संवरू ने जब जाकर यह पूछा कि क्या किसी का कर्ज आपने लिया है तो धोबिन ने हंसकर कहा—हे लाल, हमने किसी का कर्ज नही खाया है। जब तुम्हारे जैसा प्रतापी बीर है तो हमें कौन आँख दिखायेगा? और दूध तो यहाँ घड़ों पड़ा है। मैं और क्या कहूँ। यदि बेटा कहकर गया होता तो मैं बता देती। कुछ दुख होता तो वह भी कहती। रोते-रोते धरमी बोहा वापस गए। गउरा में क्या गड़बड़ी हो गयी कि

हमारी जोड़ी बिछुड़ गयी। धोबी के बिना संवरू व्याकुल हो गये। अजयी सुहवलि पहुँच गया।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ - पंयड़ा = रास्ता। पंयड़ाइ में = रास्ते में। मोकाम = विश्राम। दुइ = दो। घरी = घड़ी। मितवा = मित्र, प्रिय। अखढ़वा = अखाड़ा। पतवा नइखे लागल = पता नहीं चला। नापता = गायब। जोड़ि = शुद्ध शब्द 'छोड़ि' है, छोड़ि दिहलनि = उन्होंने छोड़ दिया। अनवां = अन्न। परदवा = पर्दा, इज्जत। फाटि गइलें परदवा = पर्दा फट गया, इज्जत चली गई। करजिया = कर्ज। बिछड़ि गइलनि = बिछुड़ गये। नीयर = समान। तोहरा नीयर = तुम्हारे समान। बकीआ = बाकी, शेष, बचा हुआ। करेजवा फाटल = कलेजा फट गया। अयगुन = अवगुण, बुराई। बेयाकुल = व्याकुल।

पृष्ठ 63

गायक कहता है भाइयो, अब सुहवल में पहर भर दिन रह गया। उधर सोहवली में दंगल जमकर शुरू हो गया। वहाँ अजयी पहुँचा और दंगल में डट गया। सागड़ पर उसने कच्छा चढ़ा लिया, मालबरन की गाँठ डाल ली। उसने ढग से फेटा बाँध लिया। फिर अपनी जांघ मे जाँघिया डाल लिया। उसने सागड़ पर और कपड़े रख दिये तथा धरती से उसने मिट्टी उठायी, गर्दन पर डाली। ललाट पर रोली डाल ली। पेट मे धूल मली तथा दण्ड-बैठक करने लगा। जब सुरहन में उसने डंड खींच लिया तो उसकी भुजाएँ फूल सी गयीं, चढ़ गयी। उसको नींद आने लगी, शरीर को नींद सताने लगी। लगता था उसके हाथ फेरने से दांत टूट जायगा।

ऐ भाइयो, अब गाना सुनने में तुम लोगों का मन लगा है। आँख खोल कर देखते रहो। जरा धोबी का खेल देखो। बीर दंगल में उतर गया है। उसने एड़ी दबायी और ब्यालिस हाथ कूद गया। दंगल में उतर कर उसने ताली बजा दी। सुरहनि में कोलाहल मच गया। लोग कटकटा कर धोबी पर चढ़ गए। उसको जोर से धक्का मारा पर जिसके सीने पर धोबी धक्का मार देता है वह बीर झंडे की भाँति भहरा जाता है, पैर के नीचे आ जाता है।

पृष्ठ 64

(जमीन पर गिरकर) बीर मुंह से मिट्टी उठाने लगे। सबके ओंठ सूख गये। अब धोबी उठकी-बैठकी (उठना और बैठना) करने लगा। दंगल में अपना ताल मिलाने लगा। उसने जब दो हाथ खेल दिखाया सूर्य अस्त हो गया। मुहवल में कोलाहल, शोर मच गया। खेल बन्द हुआ। सुहवल में सभी मुरझा गये, सूख गये, सब धरती पर गिर गये। धोबी को वहाँ किसी ने पहचाना नहीं था। उसने सागड़ पर डेरा डाल दिया था।

ऐ पंचों, जितने लड़नेवाले थे सभी अपने घर चले गए। धोबी का वहाँ कोई मित्र नहीं था, न कोई वहाँ जानकार था। धोबी ने जमकर वहाँ डेरा जमाया। वह खाना क्या खाता था? वह लिट्टी लगाता था तथा सांझ को सीटी लगाता था। दिन भर भाँटा पर शरीर रगड़ता था। शाम को लोग दंगल (गंगनी) में जाते थे। जिस समय धोबी दहाड़ता था, लगता था सूखे में बादल गरज रहे हैं। जिसको वह मार देता था उस वीर की हड्डी दुखने लगती थी। उसको बुखार लग जाता था। सिर गरमा जाता था। भाइयों, सात दिन तक धोबी दंगल में लड़ता रहा तब वहाँ युवकों को बहुत अधिक ज्वर चढ़ गया। सबके माथे पर अजवाइन छाप दी गयी। युवक सभी बीमार पड़ गये। धोबी ने दंगल में सबको विचलित कर दिया। पंचों, पंड़वार (रतसंड के पास का एक गाँव) का खेत लम्बा है, यहाँ एक पतली पगडंडी खुल गयी है, यहाँ के लोगों की कमर भी पतली हो गयी है।

पृष्ठ 65

अब जरा गायक के लिए हुक्का चढ़ाइए। गाने में तुम लोगों की गांड़ फट गयी है। सुहवल का गाना लम्बा है। हुक्का चढ़ाने वाले की गांड़ भी इस बार फट गयी है। अब उस दिन की बात सुनिये। सुहवल का बयान सुनिये। मर्दों की देह में दर्द शुरू हो गया। उनके मस्तक पर अजवाइन छपी हुई है। सातवें दिन बीर अजयी उठा। दंगल में गया। कोई वीर वहाँ इस बार नहीं पहुंचा। धोबी वहाँ जोर से ताली ठोकने लगा। वह कालिंजर की ताली थी। सुहवल में उस पर कोई कान नहीं दे पाता था। राजा बमरी ने उसे सुना। उसका मन तड़प उठा, वह अपने बंगले से उठा। अपने बायें बैठे हुए मन्त्री तथा दाहिने बैठे हुए महतो दीवान से उसने कहा—आज सुहवल में बड़ा आश्चर्य, बुरा आश्चर्य है। कहीं बादल दिखाई नहीं पड़ रहे हैं। सुहवलि में सूखे में बादल गड़गड़ा रहे हैं। बमरी ने कहा—यह क्या हाल है? बादल तो कहीं दिखाई नहीं पड़ते। यह गड़गड़ाहट कहाँ से सुनाई पड़ रही है। मन्त्रियों ने कहा

ऐ ठाकुर, आप बैठ जाइए। इस नगर के बादल से हम लोग परिचित हैं। पश्चिम देश पाँच देशों से ऊपर है। काबुल का देश पंजाब है। पश्चिम का एक धोबी मोती सगड़ पर चढ़ आया है। सात दिन तक उसने दंगल खेला है, उसने सबकी गर्दन फुला दी है। इससे सबको बुखार, गुड़गुड़ी चढ़ आयी है। सबका सिर गर्म है तथा सबका सिर दुख रहा है। उसी वीर ने ताली बजायी है। वही सुहवल में गड़गड़ाहट सुनाई पड़ रही है। बमरी ने अपने पुत्रों से कहा—हे हाथी के समान बीर भीमली तुझ पर वज्रपात हो जाय, झिंगुरी तुझ पर बिजली गिरे।

पृष्ठ 66

भीमली ने बामरि से कहा कि ऐ काका, मैंने पृथ्वी को मथ डाला। दुनियाँ को मैंने रौंद डाला। यह बीर किसके आंगन में बस गया है। वह सोहवलि में ताली गरज

रहा है। धोबी की जाति तो हीन है। वे कपड़ों की धुलाई करते हैं। पर जिसका धोबी ऐसा है, वह खुद कैसा बीर होगा जो किले में बैठा हुआ है? आज मेरे भाई झिंगुरी का नाम डूब गया। देश में मेरी मर्यादा नष्ट हो गयी। धोबी अब सचमुच अपना रास्ता नापेगा, अपने नगर के लिए प्रस्थान करेगा। वह कहेगा कि राजा बमरी पर वज्र गिर जाय। इन पर बिजली गिर जाय। उनको एक भी बीर पुत्र पैदा नहीं हुआ। कुल उनके पुत्र गदहा ही पैदा हुए हैं। भाइयों, राजा बमरी रोने लगा, मेरे वीर्य से सचमुच गदहा ही पैदा हुए हैं। तब बायें बैठे हुए मन्त्री ने बमरी को समझाना शुरू किया, दाहिने महतो दीवान बैठे हुए है।

हे राजा, आप पत्र लिखकर बत्रुरी वन-पहाड़ में भेज दीजिए। बामरि आसन पर बैठे हुए पूछ रहे हैं कि क्या कोई बीर का नाँव-गाँव जानता है। मंत्री लोगों ने कहा—हम लोग तो देखने भी नहीं गये कि वह वीर कैसा है? सोहवलि के सारे युवकों को बुला कर नांव-गांव पूछा जाय। नवयुवक के द्वार पर सिपाही छूटे। वहाँ कोई दोहरी चादर, लिहाफ ओढ़े हुए हैं तो किसी ने खोल ओढ ली है।

पृष्ठ 67

कोई देह पर दुपट्टा डाले हुए है। सभी बीर बीमार पड़े हुए है। सबके माथे पर अजवाइन रखी गयी है। उनकी देह में दर्द है। राजा के तिलंगी (सिपाही) छूटे, नवयुवकों की बुलाहट हुई। सिपाहियों ने युवकों से कहा—बामरि भइया बुला रहे हैं, धोबी का मूल स्थान बुनियाद तुम लोग बताओ। बीर आह करते हुए उठे। कोई रजाई ओढ़े हुए पड़ा है, कोई गिलाफ ओढ़े हुए है, कोई लिहाफ ओढ़े हुए है, कोई काला कम्बल डाले हुए है। सबको गुड़गुड़ी ज्वर चढा हुआ है। सबके सिर पर अजवाइन रखी गयी है। [यह सूत्र पहले भी आ चुका है] बीरों का सर गरम है, उनको दर्द है। बीर डंडा लेकर बमरी के पावन द्वार पर चले जहाँ उनकी कचहरी लगी हुई है। वहाँ पहुँच कर सभी युवक बंगले में प्रवेश कर गये। जब बमरी ने ऊपर से ताककर देखा तो सचमुच सभी बीर बेहाल हैं। वह दांतों तले अंगुली काट रहा है।

हे पंचों, सभी नवयुवकों को देखकर वह आश्चर्य चकित है। सबको बैठाकर वह पूछ रहा है कि जरा सागड़ का कुशल मंगल कहो। नवयुवक कहने लगे, हे ठाकुर पश्चिम का एक धोबी आया है, उसने सात दिनों तक दंगल खेलाया है। इस कारण सभी की देह की नसें ढीली हो गयी हैं, धुन गयी हैं। धोबी के साथ दंगल खेलने से ज्वर चढ़ गया है। हमारे कलेजे मे दर्द बढ़ गया हैं। हमने सचमुच झिंगुरी से गंगनी खेली है पर यह धोबी दाँव पर नही आता। इसने ऐसा दंगल खेलाया है।

पृष्ठ 68

युवकों ने बामरि से कहा—हमारे शरीर की नसें उखड़ गयी हैं, नाड़ा उखड़

गया है। बामरि चिन्ता में पड़ गया, आश्चर्य चकित हो गया। दाँतों तले कलम दबाने लगा। गली-गाँव में युवक छूटे। यह धोबी कैसा बीर है? और उसका राजा दुनियाँ में कैसा है? इधर भीमली संसार को रौंदने चला है। बमरी सोच रहा है, हे भगवान, यह धोबी, कपड़ा धोने वाला, नीची जाति का है। कुछ लड़ता भी होगा पर उसने तो यहाँ तो दंगा कर दिया है। मोहवलि में उसने युवकों का धर्म-कर्म बिगाड़ दिया है। युवक कह रहे हैं कि हम लोगों ने दंगल तो खेला है झिंगुरी से। पर ऐसा दबाव कभी नहीं पड़ा [जैसा धोबी के साथ दंगल खेलने से पड़ा है।]

बमरी ने कहा कि तुम लोग बताओ कि वह धोबी कहाँ का है? क्या वह कभी अपना स्थान बताता भी है। युवकों ने कहा—वह बताता तो है पर बड़ा ऊटपटांग बताता है। आप कलम उठाकर लिखिएगा जो हम बतायेंगे। वह गाँव का नाम ऐसा अजीब बताता है कि कहा नहीं जा सकता। बामरि ने कलम उठा ली। आगे कागज रख लिया।

युवकों ने कहना शुरू किया "उत्तर में देवहा बह रही हैं, दक्खिन में गंगा बह रही हैं। बीच में सरयू नदी का झील है। बलिया में नदियों का मुहाना है, संगम है। इस बलिया में भरतपुर का परगना है, बिहियापुर तक इसकी सीमा है। देवी ब्रह्माइन का वहाँ चबूतरा है नीचे गउरा गढ़पाल है। गढ़ गउरा का छोटा टोला है। इसमें तिरपन गलियाँ हैं, बाजार हैं।

उत्तर टोला ब्राह्मणों का है, दक्षिण में कोइरी की जाति बसती है। पश्चिम में जुलाहा, मुगल और पठान बसते हैं, पूर्व के टोले में सोलह सौ यदुवंशी अहीर बसे हुए हैं। वहाँ खेती-बारी नहीं होती, न हल कूदाल चलता है। घर-घर में वहाँ अखाड़ा खुदा हुआ है। दरवाजे पर दुहरे बदन के मल्ल हैं। हँस और हँसिनी की जोड़ी की भाँति वहाँ दो बीर साँवर और लोरिक रहते हैं। लोरिक कमाई करता है। वहाँ सब एक-छत्र राज्य कर रहे हैं। मैं लोरिक का धोबी हूँ। यहाँ सोना सुहवली में मैंने चढ़ाई कर दी है।" गायक कहता है कि बामरि बेहोश हो गया, उसको दांत लग गया। वीरों का नाम सुनकर वह धरती पर गिर पड़ा। धन्य है गउरा का पानी। एक स्त्री ने वहाँ बच्चों को पालकर तैयार किया है।

पृष्ठ 69

जिस धोबी की जाति नर्म है उसने सुहवलि में सबकी नसें ढीली कर दीं। सभी युवकों का पेट गड़बड़ हो गया (उनका दिशा-मैदान गड़बड़ा गया)। सबको दस्त आने लगी। सबको ज्वर हो गया। मन्त्री हँसने लगा। युवकों द्वारा सब कुछ बताये जाने पर वह व्याकुल हो उठा। किसकी माँ ने दूध-मिश्री खायी है। किस बीर ने वसुधा पर जन्म लिया है, कौन बीर है जो हमारे बीर झिंगुरी से दंगल ठानेगा। मन्त्री ने बामरी से कहा—झिंगुरी को आप गेरू पहाड़ पर भीमली को पत्र भेज दीजिए। गायक कहता है—हिन्दू गंगा लाभ प्राप्त करेगा, तुर्क कब्र में जाएगा।

ऐ भद्र कामिनी दुर्गा, आपने मेरा साथ छोड़ दिया। मैं कहाँ गीत गा रहा था, कहाँ अब हृदय में भूल हो गयी। आज उन मर्दों की कीर्ति कह दीजिए जिनके देश में तलवारें हैं। देवी जिस दिन के लिये मैंने पूजा की थी वह दिन निकट आ गया। बमरी इधर सुहवलि में रो-रोकर पत्र लिखने लगा। अगल-बगल में पता है, बीच में सलामी (अभिवादन) है, एक ओर शूरों का नाम लिखा है। उसने कहा (लिखा) पश्चिम देश, पाँच से ऊपर है, उसे काबुल और पंजाब कहते हैं। इसके बाद सूत्र है (बलिया में भरतपुर परगना है—बिहियापुर सीमा है, आदि, आदि; देखिये पृष्ठ 68 का भावार्थ।)

पृष्ठ 70

(गउरा में) हंस-हंसिनी की भाँति लोरिक और सांवर है। लोरिक कमाई करता है तथा परिवार के व्यक्ति खाते हैं। वह कह रहे हैं—लोरिक का धोबी है। उसने सात दिन तक सुरहन में दंगल (गंगनी) खेला है, जिसमे वीरों की देह उखड़ गई है, उनको दस्त होने लगी है, उनको ज्वर और गुड़गुड़ी चढ़ गयी है। वे कोने में गर्दन डालकर पड़े हुए है।

जब उसने ताली बजायी तो लगता था कि सुरवली में बादल गड़गड़ा रहे हैं। धोबी की गर्जन से गर्भिणी स्त्रियों के गर्भ गिर जाते हैं। पुत्र तुमने वीर का जन्म नहीं लिया, तुम गदहा पैदा हुए हो। तुमने सोहवल में सान गाड़ कर कहा कि तुमने पृथ्वी को मथ डाला है, दुनियाँ को जमकर रौंद डाला है पर तुम्हें कोई जोड़ी नहीं मिली है। सोहवल में तुमने छत्तीस हाथ का भाला गाड़ दिया सागर के तट पर। तुमसे गउरा किस प्रकार छूट गया। वहाँ तो खदान है जहाँ मर्द सिरजे जाते हैं। धोबी जिस दिन गांव छोड़ देगा वह पश्चिम मे चला जायगा जहाँ पंजाब है। वहाँ लोग कहेंगे, बेटा-चोद राजा बमरा ने सुरहन में सान गाड़ी है। एक नर्म जाति धोबी गंगा सोहवली पाल में आ गया। गंगनी खेलाकर युवकों की इज्जत लूट ली। मर्दों का शरीर उखड़ गया।

पृष्ठ 71

उनका पेट बिगड़ गया, गुड़गुड़ी बुखार चढ़ गया, मस्तक जलने लगा, सिर दर्द करने लगा। बमरी के तुम पुत्र नहीं पैदा हुए हो, गदहा उत्पन्न हुए हो। धोबी की सान गड़ गयी है। उसने और सबकी सान उखाड़ दी है। हे बाबा, यह पवांरा छोड़ कर अब गाना आगे बढ़ेगा। जिस दिन की बात है उस दिन के आगे के युद्ध का हाल सुनिये। मर्दों का पवांरा सुनिए, वे लड़ाकू, जवान शेर की भाँति थे। बामरि ने पत्र लिखकर सुहवल में धावन (संदेशवाहक) के हाथ में दे दिया। गेंदे के फूल की भाँति सुन्दर धावन ने गेरू पहाड़ के लिए प्रस्थान किया। वह डगर पर चलता रहा। कहीं उसने विश्राम नही किया। चलते-चलते वह गेरू के पहाड़ पर पहुँच गया। झिंगुरी

लंगोटा कसे हुए था, उसके ऊपर मालबरन की गाँठ थी। वह कसरत कर रहा था। धावन ने पहुँचकर सलाम किया। झिगुरी ने आशीर्वाद दिया।

हे सेवक लाख वर्ष जीवित रहो जैसे गंगा-यमुना बढ़ती हैं वैसे तुम्हारी वृद्धि हो। तुम अक्षय रहो, अमर बनो। तुम्हारा नाम चलता रहे। तुम सुहवल में दादा का कुशल मंगल कहो। वे कैसे हैं, बहिन सती कैसी है। मेरी सोना सोहवली पाल नगरी कैसी है? समाचार कहो। नाऊ की चतुर जाति होती है। दोनों हाथ जोड़े वह एक पैर पर खड़ा था। कहने लगा, हे मेरे ठाकुर, मेरी बात सुनिये। यदि मैं बातचीत में, मौखिक कहूँगा तो बहुत बातें भूल जायेंगी। कुशल-मंगल का सारा समाचार इस पत्र मे लिखा हुआ है।

पृष्ठ 72-73

धावन ने जब अपने हाथ की पाती झिगुरी को दिया तो वह पत्र फाड़ कर एक-एक अक, एक-एक अक्षर देखने लगा। पत्र में इधर-उधर पता है, बीच में सलामी है। जब किनारे से वह पत्र पढ़ रहे हैं तो उसमें लिखा है—उत्तर बहल बा देवहा···· बेकति भोगताड़ी एक उंजे राज। [गउरा की पूरी सीमा यहाँ वर्णित है जिसको गायक कई बार पहले गा चुका है।]

पत्र में लिखा है, ऐ झिगुरी, गउरा का एक धोबी आया है। उसने सुहवल में सात दिन तक गंगनी खेली है। उसने यहाँ के सारे युवकों की इज्जत नष्ट कर दी है। उनकी देह उखड़ गयी है। सबको बुखार आ गया है। धोबी की ताली की गर्जना ऐसी है जैसे सूखे में बादल गरज रहे हों। कितनी गर्भवती स्त्रियों का उससे गर्भपात हो गया है। बमरी ने झिगुरी को लिखा है, तुम मेरे बेटा नहीं उत्पन्न हुए हो, तुम्हारा जन्म गदहे के बूँद से हुआ है। यदि तुम सुहवलि में धोबी को मार दो तो तुम्हारी इज्जत बनी रहेगी। आज उस समय की कथा, आगे के युद्ध का हाल सुनिये। बमरी के बेटा झिगुरी ने कहा—

सुरहनि में मेरी जोड़ी आ गयी है। मैं चलकर अपने मन की इच्छा पूरी करूँ, हृदय की अभिलाषा पूरी करूँ। जब उसने मर्द का नाम सुना तो उसकी भुजाओं में बल बढ़ गया। उसने गेरू पर्वत पर लंगोटा कसा। गर्दन में धूल लगायी। झिगुरी की सान उठी। उसने अपनी गर्दन में डेंगा (?) (तेग) लगा लिया। वह हिल-हिल कर अपना पग धरने लगा। वह क्रोध में जहर जैसा हो गया था। उसको कुँवा भी दिखाई नहीं पड़ता था।

पृष्ठ 73-74

क्रोध मे जलते हुए झिगुरी अपने मन में विचार करने लगा—साले धोबी में इतनी धृष्टता आ गयी है कि सुरहन में आकर उसने ताली बजा दी है। बीर क्रोध में पागल होकर सोना सुहवलि चला। बग़ल में बबुरी बन पड़ गया जहाँ सिरजवा

गाय चराता था। जब सिराजवा ने दादा झिंगुरी का रोब देखा तो रास्ते में मिलने पहुँच गया। वह झिंगुरी के गले लग गया तथा दोनों हाथ जोड़कर कहने लगा—भाई झिंगुरी बीर मेरी बात सुनो। किसका काल आ गया है, किसकी मृत्यु निकट आ गयी है, तुम्हारी तेग किस पर उठ गयी है ? झिंगुरी ने कहा—भइया अब तुमसे कहाँ तक कहूँ, किस्सा लम्बा है, कहने पर समाप्त नहीं होगा। डाँटकर पट्टा झिंगुरिया ने कहा—

पश्चिम देश पचोतर है काबुल और पंजाब। एक बलिया है भरतपुर परगना जिसकी सीमा बिह्यिापुर है। वहाँ गउरा में हंस-हंसिनी की एक जोड़ी है। लोरिक-मांवर उनका नाम है। गउरा में एक जाति का धोबी है, कपड़े की धुलाई करता है। वह सोना मुहवली पाल आ गया है। सात दिनों तक उसने दंगल खेलाया है तथा युवकों की देह का नारा उखड़वा दिया है, उनकी देह उखड़ गयी है। उनको गुड़-गुड़ी का ज्वर चढ़ गया है, सिर गर्म हो गया है। कोई बीर अब गंगनी खेलने के लिए तैयार नहीं है। धोबी की ताड़ी बजने से गेरू के पहाड़ पर गड़गड़ाहट पहुँच गयी है। सुहवल में कितनी गर्भिणी स्त्रियों के गर्भ गिर गये हैं।

पृष्ठ 74-75

उसने कहा—ज़रा गउरा के धोबी को देखा जाय, कैसा धोबी सुहवल में आया है। आतुर होकर सुहवल में झिंगुरी ने छाती पीट ली। भैया तुम इन बातों को जाने दो। सिराजवा ने कहा अब सान की रक्षा करना संभव नहीं है। जिन बीरों का नाम तुमने लिया है उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। जब मेरी गायें बहक गयी थीं, मैं खोजते-खोजते गउरा पहुँच गया था, सरउंज बोहा में चला गया था। मैं कहाँ तक वर्णन करूँ, मेरी छाती फट रही है। सिराजवा ने कहा—भइया झिंगुरी, बड़ा-बड़ा पुआ पकाया है तुमने, बड़ी डिंग मारी है। मैंने बीर को देखा है। उसको तुम धोबी मत जानो। वह धोबी लड़ने मे बांका है, जुझारू है। यदि तुम अपनी इज्जत की रक्षा करना चाहते हो तो तुम बबुरी बन पहाड़ लौट जाओ। नहीं तो जाकर काका को समझा दो कि वह बात मान जायँ। गउरा गढ़पाल वर खोजने हम लोग चलें। जैसी हमारी बहन सतिया उदित हुई है उसी प्रकार बोहा में पाहुन बैठे हुए हैं।

यह सुनकर झिंगुरी का बदन क्रोध मे जलने लगा। वह बहुत क्रुद्ध हुआ और सिराजवा को गाली देने लगा। सिराजवा तुम मेरी आँखों के सामने से चले जाओ, तुम्हारी गांड़ फट गयी, तुम परेशान हो गये। आज मैं धोबी को गंगनी (दंगल) में मार दूँगा। इस दह के पार सोना सुहवलि में धोबी की सान मैं तोड़ दूँगा। सिराजवा ने कहा—यहाँ तुम मन का पुवा पका लो तथा सुरहन के निकट-वर्ती तट पर चले जाओ। जब बीर से तुम्हारी भेंट होगी तो तुम्हारा मुंह बन्द हो

जाएगा, जबान नहीं निकलेगी। यहाँ बड़ी-बड़ी बात कर रहे हो पर जब लोहा लगेगा तो तुम्हारी सान ढह जायगी। मेरी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारी इच्छा भी पूरी हो जायगी।

पृष्ठ 75-76

गायक कहता है, जिस दिन की बात है उसके आगे के समर का हाल सुनिये। झिंगुरी की सान उठी वह दह सोना सुहवली पाल चले। अभी छै घड़ी दिन शेष था, तब तक झिंगुरी सुहवलि में जूम गये। सुहवल की लड़कियाँ अपना मस्तक नीचे कर रोने लगीं। कहने लगी, ऐ सखी, हमारी बुझी हुई आग धधक उठी है। आज शत्रु नजर के सामने दिखाई पड़ रहा है। सुहवलि में बमरी कहीं जूझ जाय तो हम लोगों का विवाह सम्पन्न हो जाय। स्त्रियों ने वादो को अपनी आँखों से देखा। उन लोगों के कलेजे मे चोट लग गयी। झिंगुरिया ने रास्ता पकड़ा और सुहवली पाल पहुँच गया।

वहाँ बामरि की ऊँची गद्दी लगी हुई थी। नीचे दरबार सजा हुआ था। वीर ने उन्हें झुक कर माथा नवाया। बामरि ने आशीष दिया। उसने कहा—बेटा, जीवित रहो, लाख बर्ष तक अखंड जीओ। जैसे गंगा-यमुना मे जल बढ़ता है वैसे तुम्हारी वृद्धि हो, बढती हो। बेटा, तुम लोग बड़ा-बड़ा पुवा पकाते रहे, बहुत डिग मारते रहे। भीमला ने सान के साथ पृथ्वी को रौंद डाला। कोई वीर उसकी बराबरी का रचा नहीं गया था। तुमने कहा कि कोई वीर पैदा नहीं हुआ है जो हम लोगों को गंगनी खेला सके।

पृष्ठ 76

बामरि ने कहा—ऐ झिंगुरी, तुम्हारी जोड़ी दह गुरहन में मोतीसगड़ के घाट पर आ गयी है। उसने युवकों की सांस तोड दी है। सबको सुहवलि मे ज्वर आ गया है। नवयुवकों की नसें उखड गयी हैं, उनका सिर और कपार खूब वथ रहा है। तुम मेरे पुत्र नहीं पैदा हुए हो, गदहा पैदा हुए हो। जब बामरि धिक्कारने लगा तो झिंगुरी ने सिर झुका दिया। उसकी आँखो से नीर ढुलक रहा है। वह सोना सुहवली दह पार दूसरे बंगले में जाकर बैठ गया।

उसने अपने सिपाहियों को सुहवलि में छोड़ा तथा युवकों को बुलावा भेजा। झिंगुरी का सन्देश था। मित्रो, सुहवली में अब गंगनी खेलनी पड़ेगी। तुम सब लोग दह सुहवली में पार जमा हो जाओ, मैं यहाँ आ गया हूँ। युवकों ने अपने सिर की अजवाइन धो डाली। छाती मे लोहा बांधकर, हाथों में लंगोटा और जाँघिया लेकर झिंगुरी के पावन द्वार पर वे पहुँच गये। वहाँ बमरा का पुत्र बैठा हुआ है।

पृष्ठ 77

सुहवल के युवक सचमुच एकत्र हो गये। झिंगरी ने पुकारा, मित्रों अब मेरी

मेरी बात सुनो। क्या तुम्हारे जाँघियों में घुन लग गया है? क्या तुम्हारा पौरुष, बल कम हो गया है? सुरहन का खेल बयान करो, सुरहन में कैसा धोबी आया है। तब बीर कहने लगे, जवाब देने लगे। झिंगुरी सुनिये, सुरहन में हम लोग आपसे गंगनी खेले हुए हैं। हम लोग धोबी का क्या वर्णन करें। उसके बल को थाहा नहीं जा सकता। वह जिसको थप्पड़ मारता है वह झंडे की भाँति गिर जाता है, फिक जाता है। सबकी छाती टूट गयी है, कमर टूट गयी है। वह कहने लगे भइया, चलकर धोबी का बल देखिये, वह मोतीसगड़ पर बैठा हुआ है। पंचों इधर झिंगुरी की देह जल गयी, उसकी आँख रुधिर की भाँति लाल हो गयी। वह उछल पडा। बमरी ने चुनौती दी है। वह लोहे का बीड़ा दांत से चबा रहा है, कठिन चुनौती स्वीकार कर रहा है। झिंगुरी कह रहा है—मैं धोबी की सान तोड़ दूँगा। वह सागड़ पर आया है।

गायक कहता है—हे बाबा, अब धीरे-धीरे मेरे गायन की कड़ियाँ खुल रही हैं। स्वर ने मेरा साथ छोड़ दिया है। इसके बाद सूत्र है—हिनुकरि गंगा…नियराई। दुर्गा देवी से गायक कहता है, बीरों की कीर्ति कह दीजिए। आगे धोबी का बयान है। बमरी का बेटा झिंगुरी क्रुद्ध हुआ। उसने उलटा लंगोटा कसा। अजगर की तरह पेटी बाँधी जिसमें गोला जुम्बिश नहीं खा रहा था, अडिग था। •

पृष्ठ 78

भाइयों, झिंगुरी ने मुट्ठी से अपनी गर्दन पर धूल लगायी, फिर युवकों को अपने साथ ले लिया। वह आगे चला, पीछे-पीछे युवक चले। सभी गाँव छोड़कर नीचे गये जहाँ मोतीसगड़ के घाट पर अजइया बैठा हुआ था। उसकी सान उठी। वह उल्टा लंगोटा कसने लगा, उसमें मालबरन की गांठ थी। वह अजगर की सी पेटी बाँधे हुए था, जिसमें गोला अडिग था। वह अपने सिर पर धूल लगाने लगा, दण्ड-बैठक करने लगा। उसकी सान और बढ़ गयी। उसकी छाती को गज से नापा नहीं जा सकता था। उसकी पिंडुलियाँ ऐंठी हुई थी, उसकी नब्ज की हड्डी हिल रही थी। उसकी छाती चौड़ी हो गयी थी, शरीर गोले की भाँति स्थिर हो गया था।

भाइयों, सुनो, आगे बमरी का पुत्र झिंगुरी झूम रहा था। धोबी दंगल के लिए कूद पड़ा। इधर झिंगुरी का दल भी एकत्र हो गया। सभी धोबी की ललकार को देख रहे थे। झिंगुरी आँखों में टकटकी लगाये देख रहा था। उसका मुँह सूख गया था। बीर धोबी का रोब देखकर वह दांतों तले अंगुली दबाने लगा। कहने लगा सिराजवा ने मुझे बार-बार मना किया था। सागड़ पर मेरे सिर पर विपत्ति आ गयी है। बीर धोबी जैसा गढ़ा गया है वैसा मर्द दुनियाँ में नहीं है। झिंगुरी कसरत करने लगा। फिर बीर दंगल (गंगनी) में डट गया, खड़ा हो गया। उसने नवयुवकों से कहा आधा तुम लोग धोबी की ओर चले जाओ। आधा हमारी ओर डट जाओ। ऐसा दिखाई पड़ता है कि मोतीसगड़ पर अलबेला, अद्भुत खेल होगा।

पृष्ठ 79

जिसको राम विजय देगा वही प्राप्त करेगा । मुहवलि के युवक गंगनी में डट गए । आधे युवक झिंगुरी के दल में जाकर खड़े हो गए । आधे धोबी की ओर जाकर डट गये । बीर बघेला अजयी उछल पड़ा । रण में वह इस प्रकार चक्कर लगाने लगा जैसे भैंसा मंडराता है, गरजता है । उसने ताल ठोंका तो गेरू का पहाड़ फट गया । धोबी की ताली बजी, वह दंगल में चढ़ गया । सोना मुहवली पार झिंगुरी भी उछलकर पहुँचा । दोनों बीर एक दूसरे को देखने लगे, दोनों बाँके, जुझारू थे । अजइया ने अब ताल दिया तथा झिंगुरी को थप्पड़ मारा । वह पीछे गिर गया । धोबी ने उसकी छाती पर एड़ा मारा । फाँदकर वह अपने दल में चला गया । वहाँ झिंगुरी का झंडा आया था । दह के पार उसका दंगल बिगड़ गया । उसका दबदबा कम हो गया । धोबी अपने दंगल में जा खड़ा हुआ । कसरत, मेहनत करने लगा । झिंगुरी चिन्ता करने लगे । सचमुच कभी ऐसे बीर से भेंट नहीं हुई थी । झिंगुरी ने मुहवल के औघड़ बाबा का सुमिरन किया । कहने लगा बाबा जगिए, मोहवल में आपने हमारी पूजा खायी है । इसी दिन के लिए मैंने आपकी पूजा की है । मुरहनि में मैं बीच धार में डूब गया हूँ । तब तक धोबी ने फिर ललकार बाँधा । औघड़ बाबा गंगनी पर दंगल में उपस्थित हो गये । धोबी ने ताल ठोंका, झिंगुरी ने उस पर चढ़ाई कर दी । धोबी जोर से चोट करने चला ।

पृष्ठ 80

जब झिंगुरी सभी के साथ लड़ने के लिए रण में आगे बढ़ा तो मन में हुआ कि अजयी को ऐसा मारूँ कि उसका शरीर आधा हो जाय, दो टूक हो जाय । क्रुद्ध होकर अजयी भी चला । पर धोखा हो गया । ज्योंही वह आघात करने का मन बनाने लगा, औघड़ बाबा ने उसका पैर फँसा दिया । औघड़ बाबा ने धोबी का पैर खींच दिया तब तक झिंगुरी ने उसे लात मारा । ऐसा उछलकर लात मारा कि धोबी जमीन पर धूल में गड़ गया । उसके शरीर में मूर्च्छा आ गयी । उसको सागड़ पर दांत लग गया ।

सभी युवकों ने जयजयकार मनायी । वहां धोबी का कोई हित-मित्र नहीं था । धोबी को सबने वहीं दंगल में छोड़ दिया और स्वयं बीर मुहवल के बाजार में भाग गये । पंचो, अब उस दिन का, आगे के समर का हाल सुनिए । सोना सुहवलि पाल का पंवारा सुनिए । जब युवक भागे तो धोबी जाति के एक आदमी मखुवा के पास दया करके पहुँचे और कहा, ऐ मक्खू तुम्हारी जाति का एक धोबी आया है । झिंगुरी ने दंगल में उसे लात मारा है और वह गिर गया है । उसका कोई सहायक नहीं है । मक्खू की पत्नी ने अपने पति से कहा कि उस बीर को मचोले पर घर लाओ । यदि वह जीवित रहेगा तो हमारी बड़ी सेवा करेगा । गायक कहता है कि मैंने सुना है कि सुहवल में युवकों को लेकर मखुवा चला ।

पृष्ठ 81

मखुवा सोना मुहवली पाल चला। खटिया का मचोला बनाकर सुरहन के बाजार में ले गया। सुरहन में जहाँ झिंगुरी से दंगल हुआ था वहीं वीर अजयी धरती पर गिर गया था। मखुवा ने पहले लोटा में जल लिया और उसका दाँत छुड़ाने लगा। लोग उसे पकड़ कर उठाने लगे। मखुवा ने चुल्लू भर पानी धोबी अजयी को दिया। उसकी हलक सूख गयी थी, उसकी प्यास अब थोड़ी शान्त हुई। पट्टा अजइया को टाँग कर नवयुवकों ने खटोले पर रख दिया। उसे सोना मुहवली पाल लाये। तब मखुवा ने अपनी बेटी बिजवा ओर सरासरि से कहा किसी कोइरी के कोड़ार में और किसी भाड़भूजे के भाड़ में तुम लोग चली जाओ। धोबी अजयी के शरीर का अंग-अंग घायल था। बिजवा कोइरी के कोड़ार में गयी, सरासरि गोंड़ की दूकान में गयी। गोंड़ की स्त्री से उसने बालू लिया और मुहवलि आ गयी। बिजवा ने बैगन खरीदा तथा मुहवलि के बाजार पहुँच गयी।

अजयी इधर पलंग पर सुलाया गया था, उसको अपनी देह की सुधि नहीं थी। मखुवा की स्त्री ने चोकर की पट्टी बांधनी शुरू की। सरासरि ने बालू की पोटी बाँधी। सरासरि ने बैगन फाड़ा और उसका लोथा बनाया। बिजवा एक आग की बोरसी लायी। मखुवा की स्त्री ने बोरसी लेकर वहाँ रख दिया।

पृष्ठ 82

अब स्त्रियों ने धोबी को लोथा देना शुरू किया। एक ओर सरासरि ने लोथा चलाना शुरू किया दूसरी ओर से बिजवा ने शुरू किया। एक ओर मखुवा की स्त्री ने लोथा चलाया। वीर अजयी के शरीर पर लोथा दिया जाने लगा। वीर का बयान सुनिए, वह पलंग पर पड़ा हुआ है। सात दिन तक लोथा चलता रहा तब जाकर अजयी की आँख खुली। फिर मखुआ की स्त्री ने बेटा सरासरि से कहा—मेरे बच्चे की सात दिन पर आँख खुली है। थोड़ा पतला हलुवा बनाकर लाओ, वीर को अंगुली से हलुवा चटाया जाय। अब हमारे बच्चे की जान बच जायेगी, वह मरेगा नहीं। मैंने सुना है कि मखुवा की बेटियाँ उठी जिनका नाम बिजवा और सरासरि था। मक्खू की पत्नी के दिल को राहत मिली।

उसने अब अपने हाथ में घड़ा उठा लिया। वह रास्ता पकड़ कर अहीरों के द्वार पर चली गयी। उसने भैंस का घी खरीदा तथा अपने मिट्टी के बर्तन में रख लिया। सुरहल में जाकर उसने कड़ाही लेकर उसमें घी ठीक से डाल दिया। पतला हलुवा बनाया, उसे थाली में डाला। बिजवा ने हलवा थाली में लिया। बिजवा सरासरि मखुवा की दोनों बेटियाँ चली।

पृष्ठ 83

हाथ में थाली और लोटा लेकर मखुआ की बेटियाँ बिजवा और सरासरि चलीं। वे व्यंजन लेकर अजयी के पास पहुँची। एक लड़की ने लोटे का जल रखकर अजयी को उठाया, फिर उसके हाथ में लोटे का जल दिया। उसने पलंग पर ही कुल्ला

किया। बिजवा ने उसे अंगुली से हलुवा चटाना शुरू किया। अजयी को झिंगुरी के पैर की गहरी चोट लगी थी। भाइयों अब वह हलुवा चाट रहा है। कितने दिनों तक उसने हलुवा-गुड़ चाटा ? एक एड़ की चोट के कारण उसे सात महीना हलुवा-गुड़ चाटना पड़ा, तब उसके शरीर में कुछ स्पंदन हुआ। अजई हाथ में डंडा लेकर दिशा-मैदान होने चला। उसी समय छत्तीस वर्ण की बेटियाँ मखुवा के द्वार पर पहुँची। उन्होंने मखुआ की स्त्री से कहा—

तुम सखी की माँ हो, अतः मुहवलि में तुम हम लोगों की भी मा लगोगी। छत्तीस जाति की कन्याएँ एकत्र होकर कह रही हैं कि हे माता, स्त्री का दुःख स्त्री ही जानती है। आप अपने पति को बामरि के पास भेज दीजिए। वह पूछे कि जो बीर-मर्द (अजयी) पीटा गया है उससे क्या हम (मक्खू) अपनी दोनों लड़कियों की शादी कर दें। अगर मुहवल में लग्न शुरू हो जाय तो बाद में वह पापी बमरी हम लोगों का भी विवाह होने देगा। बिना मतलब के कोई किसी के पास नहीं जाता है। छत्तीस वर्ण की कन्याएँ अपने मतलब के लिए धोबी के यहाँ एकत्र हैं। तब धोबी की स्त्री ने कहा—तुम लोग ऐसी नाव नहीं चलावो, ऐसी बात मत करो, नहीं तो कोई चुगली करने वाला बमरी को खबर कर देगा तो वह बमरी मेरे पति को मुर्गा बनायेगा और मुँह में गोबर ठुँसवा देगा।

पृष्ठ 84

कच्ची बाँस की छड़ी कटवाकर वह शरीर की खाल खींचवा लेगा, नखों में बाँस की खपची ठोंकवा देगा तथा भौंहों में टेकुरी गड़वा देगा। बाँह को उलटा कसवा कर वह डगर पर, रास्ते पर गिरवा देगा। छत्तीस हाथ का भाला वह मेरे पति के सीने में घोंपवा देगा। सखियों, इस प्रकार की बात मत करो। पंचों, मुहवलि का बयान आप लोग सुन लीजिए। लड़कियाँ यहाँ विकल है। एक दिन की बात कौन करे, सखियाँ हर घड़ी शादी की बात करने लगी। कहते-कहते किसकी मति नहीं घूम जाती। अन्त में मक्खू की पत्नी ने कहा—अब मैं कह रही हूँ, मेरे पति जब आकर भोजन पर बैठेंगे तो मैं यह बात जरूर कहूँगी, पर कहने में कठिनाई है। स्त्रियों ने कहा कि स्त्रियों का हाल स्त्रियाँ ही जानती है। सोना मुहवली दह पाल के मर्द क्या इस बात को जानेंगे।

हे माई, दिन भर तो हंसते-खेलते हम लोगों का समय गुजर जाता है पर रात को हृदय में आग सी धधकने लगती है। हमारी मिट्टी को, शरीर को दैव ने असहाय बना दिया है। कोई भीमली की जोड़ी नहीं दिखाई पड़ता। मुहवल में हमारा शरीर बेचैन है। यहाँ सभी बीर गदहा ही पैदा हुए हैं। पंचों, अब यहाँ का पवारा यहाँ है, मैं आगे का बयान कह रहा हूँ। मुहवल का खेल सुनिये। गायक कहता है मैंने सुना है कि मखुवा की स्त्री ने रच-रचकर व्यंजन बनाया है। तब तक मखू लादी लेकर उपस्थित हुआ। धोबी ने लोटे में जल लिया तब धोबिन ने कहा—

हे पति, जब तक मैं गदहों की लादी खोल रही हूँ तब तक आप अपना हाथ पैर धो लीजिए।

पृष्ठ 85-86

मखुवा की स्त्री कह रही है कि हे स्वामी, आप यहाँ जलपान कर लीजिए। मखुवा कह रहा है आज तो मेरी बड़ी सेवा हो रही है। इस प्रकार तो यह कभी पूछती नहीं थी। आज तो लादी लेकर कह रही है कि इसे वह खोलेगी और मैं जल पीऊँ। कोई परेशानी तो नहीं है। आज की तरह तो कभी मेरी स्त्री प्रसन्न ही नहीं हुई कि उल्लास के साथ जल दे। अपने मन में मखुवा ने यह सब सोचते हुए जल का लोटा ले लिया। धोबिन ने गदहों के कपड़े खोल लिए, लादी खोल दी। मखुवा की स्त्री हँस-हँस कर कह रही है, ऐ सैंया, मेरी बात मानो, तुम जलपान कर लो, दिशा-मैदान हो लो। फिर भोजन कर लो जिसे हमने बहुत ही ढंग से बनाया है। धोबी को उसने खिलाया। दोनों लड़कियों को उसने सुला दिया था। वे दूसरी हवेली में सो रही थीं। अजई द्वार पर सो रहा था।

धोबी मुहबल पाल दिशा-मैदान होने गया। जिस समय वह वापस आ रहा था तो समय कुछ अधिक हो गया। घर-घर में लोग सोने लगे थे। लोटे का जल मखुवा की स्त्री ने पति को दिया कि चलकर वह खा ले। जब धोबी हाथ-पैर धोकर भोजन के स्थान पर बैठ गया तो धोबिन ने आगे थाली रखकर कहा—हे पति, एक कार्य के लिए मैं आप से इतनी प्रार्थना कर रही हूँ। झिंगुरी ने उस वीर को मारा है वह हमारी जाति का लड़का है। कल प्रातःकाल कचहरी में चले जाओ और राजा से प्रार्थना करो कि वे आज्ञा दें तो अपनी लड़कियों की उससे शादी कर दूँ। धोबी क्रोध में जल उठा और व्यालिस हाथ कूद गया, इसके बाद सूत्र "हिनु करि गंगा····घरी गइलि निअराइ।"

गायक का आत्मकथन—दुर्गा का स्मरण

पृष्ठ 86

गायक कहता है—इधर मेरा गीति का गाना छूट गया है। मेरा शरीर अब खोखला हो चुका है। हे देवी, अच्छे समय की आप संगिनी हैं, सहायक है। बुरा समय आने पर आपने मेरा साथ छोड़ दिया। जब से आपने मृत्युलोक में मेरा साथ दिया तब से मैं आपका गाना गा रहा हूँ। आज भाग्य से भवानी जगीं। हे दुर्गा माँ, युद्ध के लिए चलिए। आज गीति के लिए हे सरस्वती, आप मेरी जिह्वा पर झटपट तैयार हो जाइए। आप शरीर में मस्तिष्क है, आपके चरण की बलिहारी है। यहाँ पंचों की मण्डली बैठी हुई है। छोटे बड़े यहाँ समान हैं। हे देवो आज मुझको (गाने की) आज्ञा दी गयी है। बीच धारा में मेरी नाव पड़ी हुई है, मोहिनी आप खेकर मेरी नाव पार लगाइए नहीं तो बीच धारा में मेरी नाव डूब जायगी।

हे देवी, दुनियाँ मे सबको अपनी देह का घमण्ड होता है। मेरी देह को

आपका सहारा है। जब समय अच्छा होता है तो दुनियाँ में लोग हितू मिलते हैं। दिन बिगड़ जाने पर कोई हितू नहीं मिलता। आपकी भक्ति में मुझसे कौन सी चूक हुई है कि आप सभा में मेरा संग छोड़ रही हैं। पंचों, अब देवी का खेल सुनिये। वह अब मेरी जिह्वा पर बैठेंगी। भवानी मेरे भाग्य से जागेंगी। युद्ध के समय वह मेरे सिर पर रहेंगी। गीति के समय सरस्वती मेरी जीभ पर उपस्थित होंगी। उन्होंने कहा—हे बाबू, अलबेला, गाओ, गाओ।

पृष्ठ 87

अब आप लोग कान लगा कर थोड़ा सुन लीजिए। देवी ने कहा—मैंने शूरमा की पूजा स्वीकार की है, देश में तलवार ग्रहण की है। जिस कोने में महाभारत छिड़ा हुआ है उधर हमारा शरीर घूम गया है। जैसे मैंने रण में प्रतिष्ठा रखी है, रण में तलवार उठायी है, उसी प्रकार हे गायक, तुम मर्दों का बयान, जिनके देश में तलवार चली है, गा दो। अगर एक कड़ी भी भूल जायगी तो मैं दो-दो कड़ी जोड़ दूँगी। तुम अद्भुत कांति गा दो, मैं तुम्हारी जीभ पर तैयार हूँ, उपस्थित हूँ। पंचों, आज जिस दिन की बात है, उस दिन का गाना आप लोग सभा में सुन लीजिए। जिस दिन धोबी की स्त्री ने पति से कहा कि आप मेरी बात सुनिये, झिंगुरी ने जिस वीर को मारा है उसने छह महीने तक हलुवा-गुड़ चाटा है। अब उस बच्चे की देह में सातवें महीने में थोड़ा स्पंदन हुआ है, हलचल हुई है।

हे पति, आप जाइये ताकि राजा से हुक्म लेकर उससे अपनी लड़कियों की शादी हम लोग कर दें। मखुवा बिगड़ उठा, क्रुद्ध हो उठा। अपनी विवाहिता का झोंटा पकड़ कर उसने जमा कर उसे लात मारा, एड़ मारी। मखुवा की पत्नी चिल्ला उठी। उसकी दोनों लड़कियाँ बखरी (हवेली) में वहाँ पहुँच गयीं। उन्होंने कहा - हे काका, आज हमारी माता ने कौन सा अपराध किया है कि बखरी में आप उसे पीट रहे हैं। धोबी ने कहा कि यह मेरे शरीर का ग्राहक पैदा कर रही है, मेरे लिए संकट उत्पन्न कर रही है। कल राजा मेरी जान नहीं छोड़ेगा। कल किसी चुगलखोर ने यदि सुना और जाकर उससे कह दिया तो राजा वामरि हमें मुर्गा बनाकर मुँह में गोबर ठुसवा देगा। कच्चे बाँस की छड़ी से मुझे पीटेगा तथा शरीर के प्रत्येक अंग की खाल खिचवा लेगा।

पृष्ठ 88

कल उलटा मुश्क चढ़ाकर, मुर्गा बना कर वह मुझे मुहवल में धराशायी कर देगा, ढहवा देगा। मेरी छाती पर वह भाला घोंपवा देगा। नखों में खपची ठोंकवा देगा। मेरी बाँहों में वह छड घुसवा देगा। बुजरी, यह मुहवल में मेरी शत्रु हो गयी।

पंचों, उस दिन का, आगे का हाल सुनिये। काका को पकड़कर लड़कियों ने पृथक कर दिया, छुटा दिया। वे माता के शरीर पर तेल लगाकर उनकी सेवा करने

लगीं। उन्होंने कहा—तुमने यह क्या किया ? माता ने कहा इन दुष्ट लड़कियों ने हरामी लड़कियों ने रोज-रोज हमसे कहा—तो मैंने अपने पति को यह विवाह की बात कह दी। इस दुष्ट ने मेरे शरीर में पैर मारा है। मेरी कमर धँस गयी है, मैं कल इसको 'तिरिया चरित्र' दिखाऊँगी। मैं धोबी-घाट जाऊँगी। इसकी प्रतिष्ठा मैं सोहवल में नष्ट कर दूँगी। धोविन ने कहा—इसने मुझे पैर से मारा है। इसको जहर ही समझो। कल मैं अपनी करामात धोबी-घाट पर दिखाऊँगी। वहीं हमारी इनकी बात होगी।

पंचों, जिस समय पूर्व में लालिमा छा गयी, कौवे बोलने लगे, भोर प्रातः काल में बदलने लगा तो धोबी और धोबिन दोनों झगड़ने लगे। धोबी तड़के ही गदहों पर लादी लाद कर धोबी-घाट कपड़े धोने चला गया तो धोबिन अपने घर से उठी। उसने विजवा से झटपट रसोई बनाने के लिए कहा।

पृष्ठ 89

व्यंजन तैयार करो। हमारे केश को कंघी से साफ करो। मैं अब तिरिया-चरित्र करूँगी। मैं उनको अपना खेल दिखाऊँगी। उस पापी ने खींचकर जोर से मुझे लात मारी है, मेरे शरीर में गहरी चोट आयी है। पंचो, अब स्त्री का खेल देखिये। सोना सोहवली पार मे धोविन का हाल सुनिये। विजवा ने रसोई बनायी। सरा-सरि ने अपनी माता का बाल झारा, सँवारा।

आज रानी सिर की चोटी गूँथने लगी। ऊँचा जूड़ा घुमाकर बाँधने लगी। उसने अपनी आँख म काजल लगाया जैसे सावन की घटा उमड़ आयी हो। उसने दुधिया रंग की बिन्दी लगायी, माँग मे लहरदार सिंदूर लगाया तथा अंगूठे का पोर दबाने लगी। उमने टेढ़ी-सी बिछिया पहन ली जिसमें घुँघरू लगे हुए थे। उँगली में उसने अंगूठी डाली। पैर में कड़ा डाला तथा नूपुर डाले। कमर में करधनी डाली, वह कटि में हिलने लगी। साठ गज का हलका नामक आभूषण उसने गर्दन में डाला। बाहों मे उसने छड़ा डाला। उसने शरीर के हर अंग में गहना पहना।

पृष्ठ 90

सोना सोहवली में दह के पार धोबिन ने सोने की आरसी बनवायी। सोने का तार खिचवाया। सोने की झबिया उसने मस्तक पर लटका लिया। नाक में उसने नकवेसर डाली। नाक में झुलनी और बुलाक नामक गहने भी डाले। इस प्रकार रानी सुहवलि के बाजार में प्रकट हुई। एक तो वह धोविन है, दूसरे उसने साज शृङ्गार किया है। उसने मखमल की चोली पहनी है जिसमे चौंतीस तार (बयारि ?) लगे हैं। उसने दक्षिण की छींट पहनी है जिस पर छप्पन हजार पंछी लगे हैं, चित्र बने है। उसके आँचल पर मोर बने हुए हैं, बगल में कोयल कूक रही है। उसकी चद्दर तासबदर (?) की है, उस पर सूर्य की ज्योति चित्रित है। बायें चन्द्रमा है। (इन पंक्तियों को गायक ने फिर दुहराया है।) धोबिन ने बायें से घूंघट डाल लिया है,

दाहिने में पर्दा कर लिया है। उसने भोजन की थाली ले ली है, लोटे का जल लिया है। वह धीरे-धीरे हिल-हिल कर पग धर रही है जैसे दोंगे को विदाई के उपरान्त बहू चलती है, जैसे गौने के बाद लड़की पग डालती है, धोबिन वैसे ही कदम बढ़ा रही है।

पृष्ठ 91

धोबिन धोबी-घाट चली। उसके पैर के आभूषण (गोड़रइला) बज रहे थे, नूपुर झंकृत हो उठे थे। रानी ने बायें पर्दा कर लिया था तथा दाहिने भी घूँघट डाल लिया था। वह सोना सोहवली पाल जा रही थी, धोबी-घाट जा रही थी। अभी दो बीघा ही धोबिन को जाना था कि धोबी का माथा ठनका। उसने धोबिन की सूरत देखी। उसका मन वहाँ डोल गया। उसने कहा हे मेरे दैव, हे नारायण, हे विधाता आपने क्या कर दिया। आज स्त्री ने ऐसा श्रृङ्गार किया है कि उसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। वह ऐसी लग रही थी जैसे गौना या दोंगा कराकर आयी हो। वह बिना बुलाये ही घाट पर आ गयी है। धोबिन वहाँ भोजन रखकर अलग हो गयी। धोबी कुल्ला आदि करके कह रहा है कि देखो आज मैं व्यंजन तो खा रहा हूँ पर तुमने इतना क्रोध क्यों किया है? इतना क्रोध तुमने क्यों धारण किया है? धोबिन ने फटकार कर कहा--

घटिहा, मुझसे बोलो मत। आज तुमने मेरा नाता टूट रहा है। दुष्ट, तुम मेरी देह मत छुओ। धोबी का खाना जहर हो गया। धोबिन ने तिरिया-चरित्तर किया है। उसने धोबी से कहा—खाना हो ना खाओ, नहीं खाओगे तो भी मैं खाना लेकर चली जाऊँगी। यदि तुम मुझसे बोलोगे तो हमारा तुमसे नहीं पटेगा। धोबिन ललकार कर रही है, वह धोबी की शकल नहीं देख रही है। वह कह रहा है कि हाय दादा, मैंने लात से उसे मार दिया था, इसलिए वह क्रोध में है, गुस्से में वह चिल्ला रही है।

पृष्ठ 92

अब जल्दी प्रीति नहीं लगेगी। हे पंचों, दो-चार कौर खाकर धोबी ने भोजन टाल दिया। धोबिन ने कहा थाली छोड़ दो, तुम कपड़ा धोने जाओ तो मैं वापस जाऊँगी। धोबी झँखते हुए कुल्ला करके कपड़ा धोने चला गया। धोबिन थाली और हाथ में जल लेकर वापस चली आयी। गायक कहता है कि मैंने सुना है कि धोबी दिन भर कपड़ा धो रहा है और धोबिन की सूरत उसकी नजर में नाच रही है। उसने तिरिया-चरित्र किया है। धोबी को चैन नहीं मिल रहा है। रानी जाकर फिर व्यंजन बना रही है। इधर सूर्य का गोला डूब रहा है। उसने सायंकाल अजयी को खिलाया, लड़कियों को अपनी बखरी में भोजन कराया। लड़कियों को दूसरी बखरी में

सुलाया। फिर धोबिन अपने महल में प्रवेश कर गयी, दीपक जला दिया तथा शैया लगा दी। उसने चुन-चुनकर सेज लगायी। अपनी शक्ति भर उसने उठा नहीं रखा।

गायक कहता है कि मैंने सुना है कि जब शैया बिछाने के बाद धोबिन जल लेकर पहुँची, तब उसने पति से कहा चलो, खा लो। धोबी हाथ-पैर धोकर, लोटा लेकर भोजन करने गया। धोबिन भोजन को उसके सामने टालकर स्वयं पलंग पर चली गयी। अब धोबी के लिए भोजन विष हो गया। जब कोई व्यक्ति लोभी बन जाता है तो उसको कुछ अच्छा नहीं लगता। अब तो वह धोबिन की प्रार्थना में आ ही गया। दो-चार कौर जल्दी-जल्दी खाकर कुल्ला-मंजन करके उसने कहा--

पृष्ठ 93

हे पत्नी, रात को क्रोध मत करो। धोबिन ललकार कर उठ गयी, कहने लगी—घटिहा, तुम्हारे शरीर में ज़रा भी लज्जा नही है। तुम मेरी शक्ल-सूरत पर लुब्ध हो गये जिस समय गौने में बहू बन कर आयी, दोंगे में दुलहिन बनकर आयी, तुम मेरी शैया पर सोते रहे और मेरी झूलनी का मजा लेते रहे, मेरे साथ आनन्द उठाते रहे। सेज पर रोज-रोज आकर सोते रहे। तुम्हारी तृष्णा में आज आग लग जाय। तुम्हारी वासना आज इतनी बढ़ गयी है? हमारी लड़कियों की देह में भी तो आग लगी हुई है। जब तक तुम राजा से जाकर मेरी बात नहीं कहोगे, तब तक मैं तुम्हारे साथ अंग लगाकर नहीं सोऊँगी। धोबी ने कहा--आज नही मैं कल जाऊँगा और कल ही बात कर सकूंगा।

धोबिन ने कहा—तो यह नहीं आज होगा कि तुम मेरी सेज पर सोओगे। जब तक तुम ठाकुर से प्रार्थना नहीं करोगे, हमारा तुम्हारा संग हो नहीं सकेगा। धोबी चाहे जितना भी उपाय लगाता था वह उसको पास नहीं फटकने देती थी। धोबी ने कहा— मैं कल निश्चय ही राजा के यहाँ जाऊँगा और अवश्य ही सीधे उससे बात करूँगा। स्त्री ने कहा तुम मेरी सेज की आशा छोड़ दो। परसों तुमसे मेरा बिगाड़ हो जायगा। धोबी का मन टूट गया, वचन देकर वह अपने द्वार पर सोने चला गया। तब धोबी की पत्नी उठी, फाटक की खिड़की खोली तथा सुहवल का रास्ता पकड़ कर मन्त्री के द्वार पर पहुँची। मंत्री अभी सोये हुए थे। उस क्षत्रिय को उसने उठाया। मन्त्री चौककर उठ बैठे। कहा—ऐ धोबिनि, तुम आधी रात को मेरे द्वार पर कैसे आ गयी? धोबिन ने कहा--मुझे पुश्चली मत समझो कि तुम्हारी सूरत पर लुब्ध होकर पास आयी हूँ।

पृष्ठ 94

हे बाबू, मुझे एक बहुत जरूरी काम है, इसलिए रात में मैं यहां उपस्थित हुई हूँ। पंचों, सुहवल का गाना कठिन है, आप लोग ध्यान लगाकर सुनिये। मन्त्री ने

धोबिन (रानो)ʼने कहा —तुम यहाँ मेरी बात सुनो। गउरा मे जो बीर आया हुआ था, जिसको झिंगुरी ने जोर से लात मारा था तथा जिसको बेहोशी आ गयी थी, गर्मी छितरा गयी थी, उसको सभी छोड़कर चले आये थे। तब मैंने अपने पति को दो-चार युवकों के साथ भेजा। लोग खटोले पर लादकर उसे हमारे किले में लाये। मन्त्री, हमने सात महीने तक लोथा ? चलाकर हलुवा-गुड़ खिलाया तब बीर की देह में स्पंदन आया। बाबू, आज मेरी एक प्रार्थना है। जितनी तुम्हारे शरीर में आग है उतनी ही आग हमारी लड़कियों के शरीर में है।

सब मुहवल में अपना दुख जानते हैं, लड़कियाँ यहाँ अभागिन पैदा हुई हैं। छत्तीस वर्ण की बेटियों को बामरि ने बाल कुँवारि रहने दिया है, उनका विवाह रोक दिया है। उनमें कुछ बारह वर्ष की कन्यायें हो गयी हैं, कुछ सोलह साल की स्त्री हो गयी हैं। दह के पार मुहवल में किसी की पूर्ण युवावस्था आ गयी है। कुछ का तीसरा पन बीत गया है तथा उनके सिर का बाल पक गया है। कुछ की कमर झुक गयी है।

पृष्ठ 95-96

उनके मुँह के दाँत टूट गये है। उनकी आँखों से आँसू गिर रहे हैं, मुहवलि में तड़पते हुए उनको प्रातःकाल हो जाता है। धोबिन ने कहा—आप राजा के मन्त्री कहे जाते है। आप मुहवलि में अग्निकरता ? (शत्रु का हाथी) छू लीजिए। मैं कल अपने स्वामी को कचहरी भेजूँगी, वे प्रार्थना करेंगे। तब राजा बमरी क्रुद्ध होगा। आप अपनी बातो से उनकी रक्षा कीजिएगा। बाद मे आप कोई उपाय कीजिएगा कि मेरी दोनों लड़कियों का विवाह ठाठ से हो जाय। धोबिन ने कहा—हे मन्त्री, मैं दुखी बनकर आयी हूँ। मै पुंश्चली (घटिहा) नहीं हूँ कि यहाँ घूम रही हूँ। इस बात को देखिए कि जो तुम्हारी देह मे आग है वही मेरी देह मे है, वही हमारी लड़कियों की देह में है। मन्त्री ने कहा—तुम ठीक ही कह रही हो लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ। फिर भी तुम अपने पति को भेजना। उपाय लग जाएगा तो लग ही जायगा। यदि नही लग सके तो विवशता है।

पचों, जब धोबिन वहाँ से हटी तो कहाँ गयी ? गायक कहता है कि मैंने सुना है कि धोबिन मुहवलि में विकल थी, मन्त्री का द्वार उसने छोड़ दिया तथा पतली गली का रास्ता लिया और राजा के दीवान महतो के द्वार पर गयी। महतो पैर फैला कर सो रहे थे। धोबिन ने उसका दुपट्टा पकड़ कर खींचना शुरू किया। बाबू आप उठिए। आधी रात बीत गयी है, अब रात्रि नीचे की ओर ढल रही है। धोबिन ने कहा—मेरे घर एक काम है। मेरे शरीर में अशान्ति है, चैन नहीं पड़ रहा है। महतो उठे और धोबिन का रोब देखकर कहने लगे, ऐ भाई, यह क्यों आयी

है ? उसका जवाब धोबिन ने दिया। मैं घटिही नहीं हूँ और न मैं तुमसे घटिआई करने आयी हूँ।

पृष्ठ 96

मैं अपने दुख के कारण यहाँ आयी हूँ। तुम जरा उठो और मेरी प्रार्थना को सुनो। हे पंचों, जब राजा का दीवान महतो बैठ गया तब धोबिन ने कहा—देखो, मेरी ईख में पत्तियाँ नहीं हैं, मेरे यहाँ कुशल नहीं है, और लोगों के यहाँ सुहवल में है। आज मैं चली हूँ कि कल मैं अवश्य ही अपने पति को राजदरबार में भेजूंगी। तू दीवान हो। हम लोग प्रार्थना कर रहे हैं कि आप सब लोग देखिए कि छत्तीस वर्ण की कन्याएँ यहाँ बिना ब्याहे बाल कुंवार पड़ी हुई हैं। वे कन्याएँ चीख रही हैं जिससे मेरी छाती फट गयी है। कल मेरे पति राजा के यहाँ जायेंगे, तुम देखना तथा वहाँ आसन जमाकर बैठे रहना।

आज जो मैं अपने पति को भेजूंगी तो वह प्रार्थना करेंगे कि क्या हम लोग लड़कियों की शादी कर दें ? हम लोग जानते हैं कि राजा क्रुद्ध होगा पर आप लोग उपाय लगाइयेगा। आप लोग उपाय लगा देंगे तो संभव है सबकी लड़कियों की शादी इस लग्न के शुरू होने पर हो जाय। महतो के हृदय में यह बात बैठ गयी। यह धोबिन ठीक ही तो कह रही है। दीवान ने कहा—

लेकिन कल बहुत तड़के भोर में ही भेजना। पहली प्रार्थना में ही वह अपनी प्रार्थना कर देंगे। अगर राजा क्रोध करेंगे तो हम लोग उनको समझायेंगे। यह सब करके धोबिन अपने घर लौट आयी। जब वापस आयी तो यह सोचने लगी कि अब तो रात थोड़ी सी रह गयी है। मैं अपने पति को जगाऊँ कि दिशा-मैदान होकर तैयार रहें कि जब मैं भोजन बनाऊँ तो मेरे पति खालें और ज्योंही राजा की कचहरी शुरू हो, वहाँ पहुँच जायँ। भाइयों, मखुवा की पत्नी इधर विकल है, उसका दुख असह्य है। वह चली गयी। पहर भर रात शेष है। रानी ने लोटे में जल लिया और कहा—हे स्वामी, हे मूर्तिनारायण।

पृष्ठ 97-98

तुम मेरे धन सिंदूर के मालिक हो। स्वामी, अब पहर भर रात शेष है, प्रातःकाल हो रहा है। मुरहन के निकट तट पर दिशा-मैदान, कुल्ला-मंजन के लिए तुम जाओ। जब तक तुम मंजन करके आओ मैं भोजन बनाती हूँ। पहले ही जब राजा की कचहरी लगे तुम अपनी प्रार्थना कर देना। भइया, मक्खू अब झींखने लगा, दुखी होने लगा, अपने मन में विचार करने लगा, कहने लगा—इस बुजरी पर, दुष्टा औरत पर वज्रपात हो जाय, बिजली की धार गिर पड़े। जैसे खंसी बकरे का दिन जब पूरा हो जाता है और उसे दाना दिया जाता है, वैसे ही मेरी स्त्री भोजन तैयार कर रही है। यह सोचते हुए मक्खू उठा। उसकी देह मुर्झा गयी किन्तु रात में वह वचन दे चुका था, अब उसे इन्कार कैसे कर सकता था।

मक्खू आह भरते हुए उठा, लोटा लिया, धीरे-धीरे पग डालकर चलने लगा, मुरहनि पहुँचा। कुछ देर तक वह शौच करते सोचते रहा। इसमें एक घड़ी बीत गयी, पहर बीत गया। उसने पानी छुआ, आबदस्त लिया। फिर मुरहन में नीचे चला गया, लोटा साफ किया, कुल्ला-मंजन किया। इतने में पौ फट गयी। संसार-सागर में प्रकाश हो उठा। धोबी ने किले में दातुन किया। इधर धोबिन ने विधिपूर्वक रुचि-कर भोजन बनाया है, उठ-उठ कर वह अपने पति का बाट जोह रही है। दो घड़ी दिन चढ़ गया है, मेरा पति कहाँ उलझ गया है? दो घड़ी दिन चढ़ेगा तब राजा की कचहरी जमकर लगेगी। कचहरी के लिए देर हो जायगी, अभी हमारे पति नहीं आये। ऐ पंचों, इधर मखुवा की स्त्री ऐसा सोच रही थी कि तब तक वहाँ वह पहुँच गया।

पृष्ठ 98

धोबिन हँसकर बोली, हे स्वामी, देर हो रही है। यदि पहली प्रार्थना में मेरा मुकदमा नहीं पड़ेगा तो सब नष्ट हो जायगा। जल्दी झटपट तुम खाओ। धोबी ने कहा—बुजगी, तुमने मेरे लिए व्यंजन नहीं बनाया है, यह तो हमें जहर ही मालूम हो रहा है। मेरे कलेजे में यह अन्न धँस नहीं रहा है। इधर मक्खू की स्त्री हँस रही है। वह कह रही है, स्वामी, यह बात मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं लग रही है। जो कहना था तुमने कह दिया, अब चलो। मक्खू की स्त्री जबर्दस्ती पकड़कर कह रही है, चलो। चलना पड़ेगा। खाना तो रोज-रोज है।

पंचों, मक्खू का मन जाने को नहीं कर रहा है। उसकी स्त्री ने गर्दन में हाथ डाला और गली में ढकेलते हुए उसे कचहरी में ले गयी। कहने लगी, रात को तुम्हारी वासना डगमगा उठी थी। तुमने मुझे वचन दिया, कौल करार किया। आज अपने वचन को पूरा करो। हे पति, कल तुम मेरा रस लूट लेना, मेरे साथ आनन्द करना। मक्खू कहने लगा सुहवलि में तुम्हारी शक्ल सूरत मेरे लिए जहर हो गयी है। ऐ दुष्टा, तुमने हमारी जान के लिए ग्राहक पैदा कर दिया है।

पृष्ठ 99

मक्खू ने कहा—चल तो रहा हूँ, तुम मुझे घसीट क्यों रही हो। हमारी बाँहें पकड़कर झटकार दो, अब तो मैं चल ही रहा हूँ, अब तो चलूँगा ही। भाइयों, मक्खू की स्त्री ने अच्छी तरह से मक्खू पर दबाव डाला। मक्खू तब कचहरी चले। वह चलते गये, बढ़ते गये। पंचों, जैसे यहाँ मशीन में महफिल बैठी हुई है उसी प्रकार सुहवल के बाजार में महफिल बैठी हुई है। कचहरी लगी हुई थी, जमकर दरबार लगा हुआ था। राजा की गद्दी ऊँची थी। नीचे धर्म और न्याय करने वालों की गद्दी थी। बायें मंत्री बैठे हुए थे, दाहिने महतो दीवान बैठे हुए थे। मखुवा वहाँ आगे बढ़ गया, पर फाटक पर जाकर उसने पीछे हट जाने का इरादा किया। मखुवा की स्त्री ने उसकी गर्दन में हाथ डाला। एक हाथ चूतड़ पर रखा तथा उसे फाटक पर

ढकेल दिया। धोबी काँपते हुए कचहरी में उपस्थित हुआ। राजा बमरी की पलकें उठ गयीं। उसने कहना शुरू किया। राजा बमरी ने कहा—हे मक्खू, तुमने अपनी गर्दन में कफन क्यों बाँध लिया है, क्यों मरना चाहते हो ? क्या तुमको किसी ने मारा है, गाली दी है ? तुमको किसी ने चिढ़ाया है कि तुम इस प्रकार बेबस होकर गले में फाँसी लगाकर बोल रहे हो। मखुवा ने कहा– मेरे ठाकुर बात मानिये। किसी ने मुझे मारा नहीं है न किसी ने दबाव चढ़ाया है। मैं एक बात के लिए आया हूँ। पूछे बिना रहा नहीं जाता है और पूछने में डर लगता है। मक्खू ने रो-रोकर राजा से कहा। हे ठाकुर, यहा मेरा शरीर काँप रहा है, मुझे डर लग रहा है। पूछे बिना बात भी नहीं बनेगी। पचों, धोबी जितना काँप रहा था, उतना ही डर रहा था। कहने लगा, कहने मे बड़ी कठिनाई है। यदि नहीं कहूँ तो भी कठिन है। ठाकुर, मुझसे कहा नहीं जाता, मै क्या कहूँ।

पृष्ठ 100

राजा ने कहा—कहो। मक्खू ने कहा—डर लग रहा है। राजा ने कहा—कहो, कहो। जो प्रार्थना लेकर आये हो उसे कहो। मैं सुनूँ। मक्खू ने कहा—भय लग रहा है। मंत्री ने कहा—अरे भाई कहो। अब क्या डर रहे हो। उसने कहा—कहूँ। मन्त्री ने कहा—हाँ। कहो। पर मुझे डर लग रहा है धोबी ने कहा—अच्छा कह रहा हूँ। ठाकुर मुझे डर तो लग रहा है लेकिन अब कहे बिना रुकूँगा भी नहीं। ठाकुर ने कहा—कहो। धोबी ने कहा—गउरा का वह वीर धोबी जो यहाँ आया था और जिसे झिंगुरी ने लात से मारा था, उसका यहाँ शरीर मिट्टी मे गड गया था। वह हमारी जाति का लडका है। उसको टाँग कर मैं सुहवल मे लाया था। छह महीना तो मैंने उसे पलंग पर ही हलुवा-गुड़ चटाया और उसकी बड़ी सेवा की। अब धीरे-धीरे उसकी देह मे प्राण का संचार हुआ है। वह सोना सुहवली पर टहलने लगा है। मेरी विवाहिता बुजरी मान नहीं रही है। मुझे डर लग रहा है किन्तु कहे बिना काम भी नही बनेगा। बमरी ने कहा नहीं तुम कह डालो। तुम्हारी स्त्री ने क्या कहा है। हे मेरे ठाकुर, हे शक्तिशाली राजा, मेरी बात सुनिये, वह कह रही है कि राजा से हुक्म ले लाओ कि हम लोग अपनी दोनों लड़कियों की शादी कर दें।

धोबी पर राजा बमरी का क्रुद्ध होना

पृष्ठ 100-101

बमरी के पैर में आग लग गयी और उसके सिर की शिखा तक लपट पहुँच गयी। क्रोध में उसकी पलकें लाल हो उठीं, आँखें रुधिर की तरह सुर्ख हो उठीं। उसने कहा—इस साले धोबी को पकड़ो। इसको खंभे में बाँधो। मखुवा आदमियों पर गिरते-पड़ते वहाँ से भागा। गायक कहता है कि मैंने सुना है कि मंत्री ने

सिपाहियों को बँगले में ही रोक दिया । सिपाहियों, आप लोग अपने आसन पर ही बैठे रहिये । मंत्री ने कहा तिलंगियों, सिपाहियों, खबरदार उठना मत । सिपाही बैठे रहे । मखुवा वहाँ से भागा, मखुवा की स्त्री फाटक के पास खड़ी थी । उसको भागते हुए उसने पकड़ लिया । उसकी धोती की लांग में हाथ लगा दिया तथा फिर फाटक को पकड़ लिया । धोबी चिल्ला उठा—बुजरो, मुझे छोड़ दो । धोबिन मक्खू की धोती का बन्धन पकड़े हुए है तथा अपना एक हाथ फाटक पर रखे हुए है । बाँयें मंत्री बोल रहे हैं, दाहिने दीवान महतो बोल रहे हैं । उन्होंने कहा—हे मेरे शक्तिशाली ठाकुर, हमारी बात सुनिये । हम लोग आपसे कह रहे हैं सुहवल में कान लगाकर सुनिये । भीमला की सान किसके लिए गड़ी है । हम लोग आपसे पूछ रहे हैं । मर्द के लिए ही तो सान गड़ी है । जो मर्द नहीं रहा, और जिसको बुरी तरह पीट दिया गया, उसकी शादी हो भी जाय तो हमें लगता है हमारी शान बिगड़ेगी नहीं ।

पृष्ठ 101

बमरी सोचने लगा, अपने मन में विचार करने लगा । असली मारना तो मैदान में आकर मारना है । घात लगाकर मारना तो मारना नहीं है । मन्त्री ने कहा—जिस बीर को सात महीना हलुवा-गुड़ चटाया गया है क्या वह अभी शेष है ! हे ठाकुर, जो किले में शान गाड़ी गयी है वह तो उसके लिए है जिसकी जाँघों में शक्ति है, भुजाओं में बल है । ऐसा ही तो कोई बीर होगा जो मौर बाँधेगा और यहाँ बारात करने आयेगा ।

एक दो बीरों की क्या बात की जाय, सारी दुनियाँ यहा बारात करने आयेगी, सारा संसार यहा उमड़ पड़ेगा । यहाँ रास्ता पकड़ कर लोग मोती सगड़ के घाट पर आयेंगे । उनमें जो बीर गड़े हुए भाले को उखाड़ देगा वह बावन बुर्ज का तम्बू बावन भीटों पर गड़वा देगा । उनमें रेशमी सूत की डोरी होगी फिर पीली कनातें खड़ी होंगी । उनमें कुमकुमा लटक रहे होंगे, बीच में हंडिया और गिलास प्रकाश-मान होंगे । तेगों का बागीचा लग जाएगा, बर्छियों का मण्डप खड़ा हो जायगा । इस सोना सुहवली पाल में ढालों का ओसारा (बरामदा) खड़ा हो जायगा । वहाँ एक-एक बीर योद्धा अपनी भुजाओं को फैलाकर बैठेगा । वह गोमतिही लकड़ी बजायेगा, फिर बियहुती लकडी बजायेगा । फिर युद्ध का स्वर । (मारू) डुग्गी पर पिटवायेगा । सारे सुहवल में उसकी आवाज गूंज उठेगी । भीमलिया उसको सुनेगा । वह उल्टा लंगोटा कसेगा फिर मल्लवर्ण का गाँठ बाँधेगा । उसका रोब उभरने लगेगा । वह मोती सगड़ पर चला जायेगा । जो बीर अपने मस्तक का कलश धरवायेगा, अपने रुधिर से कोहबर पुतवायेगा । अपनी छाती का पीढ़ा गड़वायेगा, टांगों की हरिश गड़वायेगा । वही सिर पर जटा और मौर धारण करेगा और सतिया से बिवाह कर सकेगा ।

क्षत्रियों ने कहा कि ऐ पंचों जिसके लिए शान गड़ी है वह शान से आयेगा ? यह धोबी तो नपुंसक है, नामर्द है।

पृष्ठ 102

ऐ ठाकुर, जिसका नाम नामर्द हिंजड़ा पड़ गया है उसकी शादी हो जाय तो मैं उसमें कोई चिन्ता की बात नहीं देखता। तब बमरी ने कहा—मखुवा को बुलवाओ। मन्त्रियों ने सिपाहियों से कहा—तुम लोग उसे खोजो, वह तो अब घर भी चला गया होगा। सिपाही मखुवा को खोजने चले ताकि उसकी लड़कियों की शादी तय हो जाय। उन्होंने देखा कि धोबिन ने धोती की लांग में हाथ डालकर मखू को पकड़ रखा है और वह अपना शरीर पटक रहा है, छटपटा रहा है। सिपाहियों ने पुकारा— ऐ मक्खू। मक्खू कहने लगा—आप लोग सुनिये। शादी की बात मैंने नहीं की है, इसने (मेरी पत्नी) की है। इसी ने की है, इसी ने मेरी बात नहीं मानी। सिपाहियों ने मक्खू के कहा—ऐ घोड़ा (मूर्ख) जरा चुप तो रहो। क्या तुम्हारी औरत ही कचहरी जायगी ? मक्खू ने कहा—वह चली जायगी तो मैं क्या करूँगा !

सिपाहियो ने कहा—जरा तुम ठंडे हो जाओ। तुम्हारे शरीर की गति हम लोग जानते हैं तुम डरो मत। अब तुम्हारा काम हो जायेगा। मक्खू ने पूछा "क्या सचमुच काम हो जायेगा ?" सिपाहियों ने कहा—हाँ हो जायेगा। तब धोबी के शरीर में धैर्य वापस आ गया। आशान्वित होकर वह कचहरी में चला। धोबी मक्खू वहाँ पहुँचा और बमरी के सम्मुख खड़ा हो गया। मक्खू का कलेजा काँप रहा था जैसे हाल की ब्याई हुई गाय काँपती है। बामरि ने हँसकर कहा—मक्खू डरो मत। मगर शादी वैसे होगी जैसे मैं कह रहा हूँ। मेरा आडर (आज्ञा) है, तुम लड़कियों की शादी करो लेकिन बंगले में मांड़ो (मण्डप) न छवाना। हरिश न गड़वाना, कलश न धरवाना, वेद-पाठ न करवाना, सखियों से मंगलगान न कराना। अंधेरे घर में लड़कियों का विवाह कर देना। धोबी अब चिन्ता में पड़ गया, हाय दादा कैसे विवाह होगा ? धोबी जब बाहर निकला तो धोबिन ने क्या पूछा—बामरि ने क्या कहा—? धोबी ने कहा—क्या कहा है, लाँड़ कहा है ?

पृष्ठ 103

मैं क्या कहूँ ? मक्खू ने कहा—क्या इस प्रकार किसी की लड़की का विवाह होता है ? बामरि कहता है—कलश नहीं रखा जायगा, मंगलगीत नहीं गाये जायेंगे, हल्दी नहीं लगेगी। ब्राह्मण वेद नहीं पढ़ेंगे। मक्खू ने अपनी पत्नी से कहा—तुम्हीं बताओ विवाह किस प्रकार होगा ? ऐ निरबंसिया ! इसी प्रकार सब कुछ सम्पन्न होगा, स्त्री ने कहा। गायक कहता है—धोबिन ने सुहवलि में सिंदूर खरीद लिया। दोनों व्यक्ति अपने द्वार पर वापस आये। मक्खू की पत्नी ने कहा—हे सइयाँ, अब तुम कन्यादान दे दो। कल प्रातःकाल मेरा बनाया हुआ व्यंजन तुम खाओगे। ब्रह्मा की लेखनी

नहीं मिटती । लिखा हुआ था तो तुमने भी भोजन नहीं किया । तुमने काग-स्नान (कोइलरि नहान) किया है । मेरी भी स्थिति वही है । इसी कन्यादान के लग्न में हम लोग लड़कियों की शादी कर दें । किस प्रकार शादी हुई ? धोबिन ने अजयी, लड़कियों और पति को लेकर उनके कमर में करधनी बाँध दी ।

भाइयों, अब रानियों के विवाह का हाल सुनिये । उनका नाम विजवा और सरासरि था । तीसरी स्त्री वहाँ मक्खू की पत्नी थी । उसने रचकर कोरा कलश रखा । गौरा और गणेश की रचना की । मंडप में चौका पुर दिया । एक हरिश खड़ी करवा दी । शादी का सारा उपचार धोबिन ने तैयार कर दिया । वह विधिपूर्वक मंगल गान गाने लगी । रचकर वर-कन्या को उसने हल्दी लगायी । भटकोड़ का अनुष्टान सम्पन्न किया । सुहवल में अजयी और कन्याओं को अब हल्दी लग गयी है ।

पृष्ठ 104-105

सुहवल के बाजार में सूर्य का गोला डूब गया । घर-घर में दीपक जल उठे । इधर मखुवा की स्त्री उठी । वह नहछूनहावन करने लगी । उसने कुल्हड़ में जल लिया । शादी के सारे उपचार उसने किए, सारी रस्में सम्पन्न कीं । लड़कियों को पीले वस्त्र पहनाये । रानी धोबिन ने स्वयं कोरी धोती पहनी । उसने मखुवा को भी कोरी धोती पहनाई । उसने अपनी हवेली में कन्यादान का उपक्रम किया । चौके पर मक्खू भी बैठा था । मंडप में गठबन्धन करके दोनों बैठे हुए थे । लड़कियों को आज्ञा हुई तो वे भी आकर माता-पिता की जांघ पर बैठ गयी । मक्खू की स्त्री ने तब अजयी से कहा—मांग में सिंदूर डाल दो ताकि हमारी लड़कियों का विवाह हो जाय ।

अब किले का खेल देखिए । अजयी दूल्हा बना हुआ है । वह माँग में सिन्दूर डालने चला । मांडो में दीपक जल रहा था । अजयी ने मांग में सिन्दूर स्पर्श करा दिया । रचकर उसने बुन्दा (टिकुली) लगाया । कन्याओं का विवाह हुआ । अजयी की शादी हुई । ऐ बाबू, गायक लोग लोरिकी गाते हैं और कहते है कि लड़का सुहवल में ससुराल करने गया था । पीछे सागड़ के घाट में उसने गंगनी का खेल (दंगल) शुरू किया ।

पंचों, जिस दिन की बात है, उस दिन के लग्न का हाल सुनिये । पंवारा अलबेला है, जवान लड़ने वालों का है । वीर धोबी की शादी की बात सुन लीजिए । सुहवल में इसी प्रकार विवाह हुआ । तब तक रात भी खत्म होने को आई । थोड़ी ही रात रह गयी । मखुवा की पत्नी हवेली में सो गयी । दोनों लड़कियाँ आंगन में सो रही हैं । अजयी द्वार पर सो रहा है । मक्खू अन्दर डेवढ़ी पर सो रहा है । ये सभी रात भर जगे थे ।

पृष्ठ 105-106

पूर्व में अरुणिमा छा गयी, पश्चिमी सागर में प्रकाश हो गया । कौवे बोलने

लगे, धीरे-धीरे प्रातःकाल हो गया। सूर्य का रथ प्रकट होकर किले में चल पड़ा। इधर छत्तीस वर्ण की बेटियाँ बखरी में चिहुँक कर उठीं, सभी ने धोबी की हवेली का रास्ता पकड़ा और मक्खू के पावन द्वार पर चलीं। वे क्यों चलीं ? इसलिए कि उनकी सखी की शादी का मुहूर्त निश्चित कर दिया गया है, कहने लगीं चलें हम मंगल गायें। आज तो हल्दी और मटकोड़ की रस्में होंगी। गायक कहता है कि छत्तीस वर्ण की बेटियों के हृदय में बड़ी खुशी हुई। रानियाँ झुंड बना कर गली के रास्ते, मक्खू के द्वार पर चलीं। कहने लगीं हमारी सखी का मुहूवल में लगन है, चलें वहाँ ठीक से मंगल गायें। सखियाँ चलो, हम चुन-चुन कर बखरी में गाना गायें। लड़कियों का हृदय प्रसन्न हो उठा था। वे मक्खू के द्वार पर मंगल गाने चलीं।

पंचों, स्त्रियाँ गाना गाने चली। सखी का भाग्य धन्य है यदि उसकी शादी हो गयी तो हम लोगों ने भी तो धीरज धारण किया है, शायद भगवान हमारा दुख भी समझें। पंचों, सभी वर्ण की स्त्रियों ने अपने मन में संतोष संजोया है कि इस बार अगर इसकी शादी हो गयी तो हो सकता है कि हम लोगों की भी शादी हो जाय। शायद हमारा भाग्य भी जाग उठे।

पृष्ठ 106-107

भाइयों, छत्तीस वर्ण की बेटियां मक्खू के पावन द्वार पर पहुँच गयीं। जब उन्होंने बरामदे में पैर रखा तो देखा कि अजयी ने कंकन बाँध रखा है तथा गुलाबी वस्त्र पहन रखा है। वह पीली धोती पहने हुए था। वे घबरा गयीं। अरे ! यहाँ तो शादी हो गयी है। वे कहने लगी—देखो दूल्हे ने कफनी बाँध रखी है। उसकी आँखों में काजल है। उसके सिर पर जमा कर पगड़ी बाँधी गयी है। नीचे उसने पीली धोती पहन रखी है। उसके मस्तक पर रोब झलक रहा है। लड़कियाँ आँख पसार कर देखने लगीं यह किसको कंकन बाँधा गया है। वे हवेली में प्रवेश कर गयीं। उन्होंने विजवा की माँग में सिन्दूर देखा, सरासरि ने भी सिंदूर धारण किया है। उन्होंने कहा—भाई, तुम्हारे किले में वज्रपात हो जाय, तुम गड्ढे में गिर कर नष्ट हो जाओ। तुमने सखी की शादी कर दी पर हम लोगों को क्यों नहीं निमन्त्रण दिया। हम लोग मिल-जुलकर गीत गाते, मंगल-गीति सुनाते। कुछ सावन की कजली गाते। हमारे स्नेह और प्रेम की लालसा पूरी हो जाती। हम लोगों की लालसा अधूरी रह गयी। तब मखुवा की स्त्री ने कहा—बेटियों, तुम सब लोग सुनो। विजवा का भाग्य किसी प्रकार उदित हुआ है। यह विवाह अकस्मात् सम्पन्न हो गया है।

पृष्ठ 107-108

मक्खू की स्त्री ने कहा—तुम लोग किस चक्कर में पड़ गयी हो। इस विवाह में कितनी बाधा थी, कहा नहीं जा सकता। तुम लोग धैर्य धारण करो। तुम लोगों

के लिए भी भगवान हैं। लड़कियों ने कहा - भगवान तो हैं, लेकिन हम लोगों की मनोकामना पूर्ण नहीं हुई। यदि हम लोग सखी की शादी में थोड़ा भी गाना गा देते, तो संतोष हो गया होता। पर विवाह हो गया तो ठीक ही है। बाबू लोगों, अब आगे का खेल बता रहा हूँ। मुहवल में हमारी बातें सुनिये। अजयी की शादी हो गयी, सरासरि का विवाह भी ठीक से हो गया। छत्तीस वर्ण की कन्याएँ धोबी के घर एकत्र होती हैं। कुछ अजयी के मुँह में दही लपेटती हैं, कुछ उसके शरीर को गुदगुदाती हैं। कुछ उसका दुपट्टा पकड़ कर खींचती है। कन्याएँ अजयी से मजाक कर रही हैं। अजयी भय से थर-थर काँप रहा है, डर से उसका रोम-रोम काँप उठता है। वह कह रहा है कि यह तो बड़ा रोग उत्पन्न हो गया है, कहीं यदि मैंने किसी पर हाथ फेर दिया और उस लड़की ने जाकर बामरि से कह दिया तो मैं तो मुसीबत में फँस जाऊँगा।

पंचों, पाहुन का रिश्ता जोड़ कर छत्तीस वर्ण की बेटियों ने अजई को उद्वेग में डाल दिया। तीसरे दिन धोबी ने कहा, बाबा, मैं यहाँ रहूँगा नहीं। मक्खू ने पूछा, बाबू क्यों नहीं रहोगे। अजयी ने कहा, नहीं, मैं अब नहीं रहूँगा। आप कल मेरी विदायी कर दीजिए। यदि अपनी लड़कियों की विदायी करनी है तो कर दीजिए नहीं तो मैं तो अवश्य गउरा चला जाऊँगा। मक्खू ने कुछ सोच कर कहा—बेटा, जो तुम्हारे मन में चिन्ता है वह मेरे मन में भी है। लेकिन जैसे इतने दिन यहाँ रह गये वैसे ही दो दिन और रह जाओ। लड़की की विदायी मे कुछ खर्च भी तो होता है। विदायी का दिन मैं निश्चित कर देता हूँ। तीसरे दिन तुम उन्हें डोली असवारी में ले जाना। मै विदायी कर दूँगा। अजयी ने कहा मैं किसी प्रकार यहा दिन काट रहा हूँ पर दिन काटने योग्य नही है। वह बामरि के भय से कांप रहा है कि यदि किसी की बेटी झूठ मे भी जाकर कह दे कि मैंने उसे छेड़ा है तो वह मेरी जान नहीं छोडेगा। यह शादी क्या हुई है, मेरे प्राण के लिए संकट पैदा हो गया है।

पृष्ठ 108-109

सोना मुहवली गार में अजयी पर इतना संकट पडा हुआ था। पंचों, अजयी की विदायी का दिन निश्चित हो गया। विजवा, सरासरि का दिन तय हो गया। सुहवलि की सारी कन्याएँ मिलने आ रही है। कह रही है—सखी आज यह आखिरी मिलन है। तुम्हारा दिन अब गउरा में रहने का आ गया है। तुम्हारा भाग्योदय हो गया है। हमारी किस्मत मे तो यहीं दह लिखा है। वे सुहवलि में दिन-रात चिन्ता में पड़े-पड़े दिन काट रही हैं। मक्खू को लड़कियों की कल विदायी है। मक्खू उनके लिए लूगा-झूला कपड़ा लत्ता तैयार कर रहा है। लडके के लिए पीले रंग की धोती रंगी गयी है। सभी तैयारी हो गयी। ठाकुर बमरी से पूछकर डोला तय हो गया, बयाना दे दिया गया। कल विजवा और सरासरि दोनों लड़कियों की विदायी

होगी। पूर्व में अरुणाई छाने लगी पश्चिम में प्रकाश फैलने लगा। अजयी परेशान होने लगा। उसने कहा—मेरा गउरा गाँव दूर है। बाबा, क्या आप हमारे लिए गाड़ी लदवायेंगे ? जो कुछ भी तैयार हो उसे जल्दी जुटा दीजिए और डोला यहाँ से उठवा दीजिए। मक्खू ने कहा—ठीक है, बाबू, धीरज रखो, जरा दातुन-कुल्ला कर लो, हम लड़कियों की विदायी कर देंगे। अजयी लोटा-दातुन लेकर हाथ मुँह धोने लगा। मक्खू ने लड़कियों को डोले पर बैठा कर गाँव की सीमा पर पहुँचवा दिया।

पृष्ठ 109-110

गायक कहता है कि मैंने सुना है कि विजवा की विदायी होने लगी, पीछे सरासरि की डोली चली। बमरा की बेटी छत पर थी उसने विजवा की डोली देखी। वह धीरे-धीरे छत से नीचे आयी। सागड़ पर रानियों की डोली छिपी हुई थी। सती भींटे पर पहुँची। उसने विजवा और सरासरि का डोला पकड़ लिया। सखियों का डोला उसने पकड़ा तब और सभी लड़कियाँ वहाँ एकत्र हो गयीं। सभी लड़कियाँ हँस-हँस कर उनसे ठिठोली करने लगी। कहने लगी, सखियों तुम लोगों का भाग्य खुल गया है। भाग्योदय हो गया है। तुम लोग बहू बन कर डोले में बैठी हो। रानियाँ आपस में बात कर रही है। सती वहां सागड़ पर विजवा और सरासरि की डोली का बाँस पकड़ कर खड़ी है। अन्य स्त्रियाँ विकल है। थोड़ी घड़ी के बाद अजयी की विदाई हो रही है। उसने पीली धोती कंधे पर रख ली है। वह धीरे-धीरे पैर उठा कर चल रहा है जैसे इन्द्र अखाड़े में जा रहे हों।

गायक कहता है पंचों, यहां से जितना मदरसा दूर है। [यहां गायक रतसंड के स्कूल और आटे की मिल की दूरी का उल्लेख कर रहा है जहाँ मैंने रिकार्डिङ्ग की थी।] उतनी ही दूरी थी। अजयी की नजर सती पर पड़ी। उसको देख कर धोबी आश्चर्य में पड़ गया। दाँतों तले अंगुली दबाने लगा। अद्‌भुत रूप है उसका। उसकी कुक्षि, खुला पेट अजयी को दिखायी पड़ गया। उसने कहा—हे दैव, इस आकृति की स्त्री मैंने कभी नहीं देखी। उसका मन मूर्च्छित-सा हो गया। सती विजवा की डोली का बाँस पकड़ कर खड़ी थी। धोबी का मन उसमें उलझ गया था।

पृष्ठ 110-111

अजयी ने कहा—ऐ विवाहिता, तुम डोले में बैठी हो। मैं एक बात पूछ रहा हूँ, मेरा सवाल सुनो। जरा डोली का पर्दा उठाओ। देखो—यह किसी कंगाल की बेटी है, या रानी है जो किसी कंगाल के घर उत्पन्न हुई है। या हे रानी, यह कोई विधवा है। इसकी माँग पर सिन्दूर तो दिखाई नहीं पड़ता। जिस समय अजयी ने अंगुलि-निर्देश किया, सतिया के अंगूठे में आग लग गयी, लहर-सी उठने लगी।

सागड़ पर उसकी देह जलने लगी। उसके हृदय में क्रोध उत्पन्न हो गया। उसने आँख फैला कर देखना चाहा तो विजवा सती के पाँव पर गिर पड़ी। बहन मेरी बात मान जाओ। यदि तुम मेरे पति पर नजर डाल दोगी तो हे बहिन, इस सागड़ पर मेरा सिन्दूर, मेरा पति जल कर भस्म हो जायगा और मैं विधवा हो जाऊँगी। वैधव्य में मेरा दिन और रात गुजरेगी। गाँव के नाते से हे गोतिन, मेरा पति तुम्हारा भी पाहुन लगेंगे। विजवा कह रही है कि हे सती अगर सिर उठा कर तुम देख दोगी तो हमारे पति जल जायेंगे। मैं विधवा हो जाऊँगी, मेरी मिट्टी, मेरा शरीर बीच धार में डूब जायगा। [यहाँ गद्य में पहले कही हुई बात की पुनरुक्ति है। लोक गायक की यह एक विशेषता है।]

जब बिजा ने इतनी बात कही तब सती ने हँस दिया। फिर अजयी ने कहा—ऐ सोहवलि की नारियों, मेरी बात सुनो। मैं तुम लोगों से कह रहा हूँ अपने हृदय में यह बात बैठा लो। झिंगुरी के लात मारने का यह सुफल है। अपनी विवाहिता का डोला लेकर मैं गउरा गजन गढ़पाल चला जाऊँगा। अपने मित्र की अगुवाई करूँगा तथा सुहवलि में बामरि के लिए दामाद खोजूँगा। मैं मतिया के लिए निश्चित वर खोजूँगा तथा निश्चित रूप से सभी कन्याओं का बियाह होगा।

पृष्ठ 111-112

आगे सचमुच मतिया का विवाह होगा। उस समय मैं भी दो-चार को भुना लूँगा, ग्रहण कर लूँगा। पट्ठा अजयी का मन भींटे पर डोल गया था। सती क्रोध में दाँत से अपना वस्त्र चबा रही थी। मतिया सोच रही है गाँव-घर के नाते से यह मेरा पाहुन लगता है। पंचों, अगुवाई की बात तो हो गयी। स्त्री का डोला अब उठ गया। स्त्रियाँ मोती सगड़ से घर वापस आयीं। अजयी गौना करा कर गउरा चला। तो पंचों, अब सुहवल का गाना सुनिये। अब गीति गउरा की ओर बढ़ रही है। इधर बिजवा का डोला उठ गया। साथ में मरासरि भी चली। दूल्हा बन कर अजयी गउरा गजन गढ़पाल चला। वह दौड़ते-धूपते चला। दो घड़ी दिन शेष था। विवाहिता की डोली लेकर वह बोहे में पहुँच गया।

गायक कहता है कि मैंने सुना है कि धरमी मलसांवर की नजर उस पर पड़ी। आज धोबी बोहा में दिखाई पड़ा है। जैसे गाय लपक कर बछड़े की ओर दौड़ती है उसी प्रकार धरमी अजयी की ओर दौड़े। अजयी ने झुक-झुक कर उनका पैर छुआ। धरमी ने आशीर्वाद दिया—पट्ठे लाख वर्षों तक अखण्ड जीवित रहो। गंगा और यमुना जल की भाँति तुम्हारी आयु बढ़े। तुम इस मृत्युलोक में अपना कुशल कहो। जब से तुमने गउरा गाँव छोड़ा तब से मेरा हृदय बेचैन है। तुमने क्यों गाँव छोड़ा? अजयी ने कहा—मैंने माँ का दूध पिया अतः मेरी भुजाएँ मोटी और शक्तिशाली हो गयीं। चौदह टोलों के युवकों को मैं एक बार ही लड़ा देता

था। तब भी मेरे शरीर का कंडा, अकड़ न नहीं जाती थी, मेरा बल सीने में समाता नहीं था। मैंने सुना कि बामरि के द्वार पर सोहवलि में गंगनी, दंगल हो रहा है। अपने बल और घमंड के कारण मैंने किसी से कुछ नहीं कहा और सोना सुहवली पाल चला गया। मोती मगड़ के घाट पर मैंने दंगल में भाग लेकर कितने युवकों का गर्व चूर किया।

पृष्ठ 113

अजयी ने कहा—मैंने झंडा गड़वा दिया। जब मैंने दो-चार खेल खेले, युवक परास्त हो गये। बाद में मैंने जब झिंगुरी को गंगनी खेलवाया, उन्हें विचलित कर दिया तो इन दो नारियों को मैंने सुहवलि में जीता। उन्हें गउरा गढ़पाल लाया हूँ। जब धरमी ने रानियों के जीतने की बात सुनी तो उनकी छाती फूली नहीं समायी। उन्होंने कहा—अनुज-बंधुओं तुम लोग हवेली में उतरो। वहाँ संवरू के मन में अत्यन्त प्रसन्नता हुई। धोबी की शक्ति में उनकी बुद्धि रम गयी। धोबी पीट गया था इसको उसने छिपा दिया, उसने बहाना बना दिया। उसने कह दिया ललकार कर मैंने रण में नारियों को जीता है।

पंचों, अब जिस दिन की बात है, उसके आगे के समर-हाल सुनिये। ऐ धोबी तुमने बड़ा पुवा पकाया, बोहा में बड़ी डींग मारी। अब धोबी का खेला सुनिये। रानियाँ अब बंगले में पहुँच गयीं। उनको स्त्रियों ने डोले से उतार लिया था। पंचों, जब विजवा-सरासरि को डोला से उतारा गया तो मुहवल में हल्ला मच गया कि पिंजला की दो पुत्र वधुएँ (पतोहू) आयी हैं। इधर अजयी का जल्मा जम गया। उसने झूलनी का बहार लुटना शुरू किया, पत्नियों के साथ विहार करना प्रारम्भ किया। युवक रोज-रोज लड़ने आते थे, वह रोज उन्हें कसरत करवाता था। पिंजला का पुत्र बिहड़ था, उसने सुरहनि में सबको लड़वाया।

पृष्ठ 114-115

पंचों, अजयी सबको लड़वा रहा है। विधि-ब्रह्मा का लेख है, ऐसा शुभ संयोग बना। थोड़े दिनों के बाद फागुन का महीना चढ़ आया। हिन्दुओं का त्यौहार आ गया। [इसके बाद टेप में गायक अपने शिष्य रामदेव और उनके गायन का उल्लेख करता है, यह विषयान्तर है।] साँझ में संवत् फूंका गया, गउरा गढ़पाल में सहदेव की डुग्गी बज गयी। उसने चौदह टोलों में डंका पिटवा दिया कि कल जो कोई ताल बजायेगा उसको मैं मुर्गा बनवा दूँगा, उसका उलटा मुश्क चढ़वा दूँगा, मुँह में गोबर ठुसवा दूँगा। बाँस की कच्ची छड़ी कटवा कर उसकी खाल खिंचवा लूँगा। उसके नखों में खपची ठोकवा दूँगा, भौंहों में टेकुरी धँसवा दूँगा, बँगले में ढकेलवा दूँगा। उसका आधा शरीर बरामदे में धरवा दूँगा और आधा धूप में टँगवा दूँगा। छत्तीस हाथ का भाला मैं जबर्दस्ती उसके शरीर में घोंपवा दूँगा।

पंचों, राजा की डुग्गी बज गयी। होलिका जला दी गयी। अब मैं रानियों का थोड़ा बयान करता हूँ। मैंने सुना है गाना और दोंगा कराकर आयी हुई स्त्रियों का मन गउरा में उदास हो गया था उनका मन गिर गया था। दो घड़ी रात शेष थी सभी अपने बंगले में उठीं। हाथ में दधिकांदो लेकर वे अपने फाटक पर खड़ी थीं। उन्होंने कहा—वीर लोरिक जब प्रातःकाल उठेंगे और दिशा-मैदान होने चलेंगे तो तड़के हम उनसे दधिकांदो खेलेंगे तब हमारी मनोकामना पूर्ण होगी। पंचों, गउरा में रानियों का मन लगा हुआ है। सभी लोरिक की प्रतिक्षा कर रही हैं। सभी गौना और दोंगा कराकर आयी हुई स्त्रियाँ फाटक पर लोरिक का बाट जोह रही हैं। हम लोग उनसे होली अवश्य खेलेंगे जिसमे हमारे मन की कामनाएँ पूर्ण हो जायँ, पेट की लालसा बुझ जाय।

पृष्ठ 115-116

तो रानी कब तक खड़ी रही? पहर दो घड़ी दिन चढ़ गया था। तब रानियाँ आपस में कहने लगीं। शायद लोरिक पर गउरा में कोई विपत्ति आ गयी है। सांझ को संवत फूंका गया, होलिका जलायी गयी। महादेव डुग्गी पिटवा चुके थे। उनके कानों में शब्द पड़ गया था। महादेव की दुहाई, उनकी घोषणा सर्वत्र पहुँच चुकी थी। गउरा गढ़पालि में जितनी गौना और दोंगा से आयी हुई स्त्रियां थीं सबके मन में प्रसन्नता थी। उन्होंने आपस मे बातचीत की थी कि प्रातःक्रिया से निवृत्त होकर हम जरूर लोरिक पर होली खेलेंगे। पहर भर ही रात शेष थी। गड़ही में रानियाँ बात कर रही थीं, सभी 'नहउरा' में एकत्र थीं। गउरा में अभी उषाकाल था, लालिमा थी। स्त्रियां दधिकांदो लेकर फाटक पर हैं। वे शूरमा का बाट देख रही हैं। यदि इस ओर से बबुआ लोरिक दिशा-मैदान होने चलेंगे तो उन पर हम लोग दधिकांदो खेलेंगे और अपनी मनोकामना पूर्ण करेंगे। शाम को अबीर खेलेंगे और गली में केसर उड़ायेंगे। यह सोच कर सभी ड्योढ़ी पर, फाटक पर खड़ी थीं। घड़ी पहर दिन चढ़ गया। अब छै-छै घड़ी समय बीत गया। शेरनो का पुत्र लोरिक द्वार पर आसन जमा कर बैठा हुआ था।

इधर गउरा में रानियों का दिल टूटने लगा। वे लोरिक को गाली देने लगीं। कहने लगीं क्या इस डिगर, दुष्ट को अन्न की कमी हो गयी है, या उसके घर का पर्दा लुट गया है। वह किस विपत्ति में फँस गया है कि अभी तक गउरा में वह उठा नहीं है। कोई स्त्री कह रही है कि शायद बोहा में संवरू मारा गया है इसलिए वह विपत्ति में फँस गया है। जैसे वह हम लोगों का दिल तोड़ रहा है वैसे ही भगवान उसका दिल तोड़ेगा। स्त्रियाँ गली में उसको गाली दे रही हैं। धोबी ने दुधिलापुर में सुना। धोबिन को गालियाँ बर्दाश्त नहीं हुईं। उसने कहा—मैं क्या कहूँ? धोबी ने विजबा से कहा—हे बिवाहिता, हे पतली मुँह वाली मेरी स्त्री, खूंटी पर जो वस्त्र टँगे है, उनको उतार लाओ। मैं अब गुलाबी पगड़ी बाँधूंगा।

पृष्ठ 117

अजयी ने कहा—मैं गुलाबी पगड़ी बाँधूंगा जिसमें एक ओर फूल पत्ते (बीड़ा) फहरायेंगे। अलीगंज का जूता और पैर में मोजा पहनूँगा। रास्ता पकड़ कर मैं मित्र लोरिक के पावन द्वार पर जाऊँगा।

धोबी की वेशभूषा

गायक कहता है कि मैंने सुना है कि धोबी अपनी वेशभूषा (जामा) धारण करने लगा। उसके कुर्ते पर सोने का पानी किया गया है, गर्दन में सोने का तार लगा है। अगल-बगल फूल और बेल, बुट्टे लगे हुए हैं। वह अपनी पगड़ी बाँधने लगा। उसमें (बाँस?) झालरें लगी हुई हैं। उसमें लवंग और लताएँ रची गयी हैं। उसका दुपट्टा छपा हुआ था, सजा हुआ था। उसने पैर में मोजा धारण किया। दुधिलापुर में अपना घर छोड़ कर वह लोरिक से घर के द्वार पर पहुँचा। यहाँ लोरिक अपने बँगले में बैठा हुआ है। अजयी ने कहा—मित्र, सुन नहीं रहे हो। सभी स्त्रियाँ गाली दे रही हैं। भाई ढोलक उठाओ, मैं डंफ उठाऊँगा दरवाजे पर ताल बज जाय। लड़के एकत्र हों और जम कर होली हो जाय। बीर लोरिक सोचने लगा, विचार करने लगा। फिर कहा—मीता, सुन लो। मुझको सहादेव से भय नहीं है। वह हमारा क्या कर लेंगे ? डर मुझको भैया धरमी सांवर का है। वे हमारे घर के मालिक हैं। जो घर का मालिक कहता है उतना ही करना चाहिए। यहां मुझे ज्यादती लगती है। हमें फगुवा नही खेलना चाहिए। मीता मैं साफ-साफ कह रहा हूँ। मैं होली (फगुवा) खेल नहीं सकूँगा। अजयी ने कहा—नहीं खेलोगे। उसने कहा—किसी प्रकार नहीं। भले ही लोग कहें कि सहादेव मुझसे शक्तिशाली हैं, ताकतवर हैं। इसके लिए मेरे मन में कोई भय नही है, न इससे मैं अपने को हीन ही समझता हूँ। यह तो समय की बात है। केवल मैं ही तो हिन्दू नहीं हूँ। यह सारा नगर हिन्दुओं का है। यदि गउरा मे होली नहीं होगी तो हमको ज़रा भी हर्ष-विषाद नहीं है।

पृष्ठ 118

पर हम होली गा नहीं सकेंगे। अजयी ने कहा—मीता, ठीक है, कहो तो मैं बोहा में दादा संवरू के यहाँ जाऊँ। यदि वह कहेंगे तब तो डंफ उठाओगे न ? लोरिक ने कहा—अगर भइया आज्ञा दे देंगे तो गउरा की गलियों में ललकार कर फगुवा गाऊँगा। यदि उनकी आज्ञा हो जायगी तब तो मुझे भय नही है। मैंने भैया को मालिक माना है। इधर डंफ बज गया और सहादेव का दिमाग फिरा हुआ है तो कहीं महाभारत न छिड़ जाय। यदि लोहा लग गया तो भइया सुनेंगे और कहेंगे कि भाई पर बज्र गिर जाय, वह समीप में हैं। खेत की सीमा पर नष्ट हो जाय। हमें केवल नाम के लिए झूठा घर का मालिक बनाया है। हमसे इस समय पूछना

तो चाहिये था, संवरू दादा कहेंगे। मैं गाय का चरवाह तो नहीं हूँ। लोरिक से कहा—मैं सहदेव का जरा भी अदब नही मानता। क्रोध करके वे हमारा क्या बिगाड़ लेंगे ! हमें तो केवल संवरू दादा का डर है, वे बोहा मे हमारे मालिक है। अजयी ने कहा—अच्छा मै जा रहा हूँ। लोरिक ने कहा जाओ पंचा, धोबी अजयी यहाँ लोरिक से क्या कह रहा है और वहाँ संवरू से जाकर क्या उलटी बात करेगा, आप लोग देखिए। उसका खेल देखिए। लोरिक से बात कर वह संवरू दादा के यहाँ चला। धरती पर पैर दबाकर वह बयालिस हाथ कूद गया। गउरा गाँव छोडकर वह सुरहन की ओर चल पड़ा। जब आधा सुरहन मे पहुँचा तो वह सरउज मे प्रवेश कर गया। वहाँ हर-शंकरी लगी हुई थी। धरमी गायो के अडार मे बैठे हुए थे। शूरमा की गाये अच्छे मांसल शरीर की भरी-पूरी थी। उनकी शोभा अकथ्य है। संवरू की नजर उठी। आँख पसार कर गउरा की ओर देखा तो अजयी दिखाई पडा जो दौडे चला आ रहा था। उन्होने अपने मन मे कहा—भाई आज तो खुशी का दिन है, मंगल का दिन है। यह अजयी हमारा भाई क्यो यहाँ दिखाई पड रहा है। क्या भावजो के कपड़े फट गये है, क्या उनके पास कपडो की कमी हो गयी है या पाँवदान पुराना हो गया है। बीर संवरू अपने मन मे सोचने लगे, विचारने लगे।

पृष्ठ 119-120

शायद दुधिलापुर मे खर्चे की कमी आ गयी है इसलिए धोबी बोहा मे आ रहा है। आज धरमी इतनी बात सोच रहे थे कि धोबी ने आकर अपना मस्तक झुकाकर अभिवादन किया। धरमी ने पूछा क्या तुम्हे किसी बात की कमी हो गयी है ? धोबी कहने लगा अगर तुम्हारे जैसा बलवान बीर है तो हमे किस बात की कमी होगी। फिर यहाँ कैसे आये, संवरू ने पूछा। उसने कहा—क्या कहूँ, कहा नही जा रहा है। अजयी वहाँ ऐसा विनम्र हो गया कि ससार मे कोई नही होगा। वह कहने लगा—संवरू दादा, महादेव की डुग्गी सायकाल बज गयी और घोषणा कर दी गयी कि मुश्क चढाकर मुर्गा बनवा दिया जायगा अगर कोई कल ताल बजायेगा—पूरा सूत्र यहाँ है जो कई बार आ चुका है।

उलटा मुसुक चढाइबि·······छाती देइबि भीड़काइ। सहादेव की दुहाई फिर गयी है, घोषणा हो गयी है। हमारे भाई बीर लोरिक रो रहे है। वह कह रहे है इन्द्रासन मे मेरा भाग्य विपरीत हो गया, कमजोर के घर मे मैं पैदा हो गया। यदि बलशाली घर मे पैदा हुआ होता तो मै मन लगाकर होली खेल लेता। धरमी इस पर क्रुद्ध हो उठे, उनको आग लग गयी। क्रोध की लहर उनके शरीर से प्रकट होने लगी। उनकी बरौनियाँ लाल हो गयीं। आँखे खून की तरह सुर्ख हो गयी। उन्होने कहा—पट्ठा अजयी सुनो। मैं अभी जीवित हूँ। खूब दूध पी

चुका हूँ, मेरी कोख हिल उठी है। जाकर घूमकर फगुवा खेलो, सहादेव के द्वार पर चढ़ जाओ। कुसुमापुर बाजार में ढोल बजा दो। जिस दिन सहादेव टेढ़ी अंगुली दिखायें तुम खबर देना। यह अहीर सहादेव के पावन द्वार पर दौड़ जायेगा। एक ही बार जम कर बाण चलाऊँगा। उनकी सारी हवेली पहर भर में नष्ट कर दूँगा।

पृष्ठ 120-121

पंचों, जिस दिन की बात है, उसके आगे के समर का हाल सुनिये। धोबी बोहा से गउरा में उत्फुल्ल होकर लौटा, वीर लोरिक के द्वार पर पहुँचा। वह आसन जमाकर बैठा हुआ था। धोबी ने उससे कहा—मैं बोहा गया था। धरमी फूट-फूट कर रो रहे हैं। उन्होंने कहा है—भइया लोरिक पर 'वज्र गिर जाय, बिजली गिर जाय। यह भाई कायर पैदा हुआ है, क्लीव अवतरित हुआ है। सहादेव की डुग्गी बजी तो वह परेशान हो उठा। (उसकी गाँड़ फट गयी)। यह लोरिक भाई नहीं पैदा हुआ है, गदहा पैदा हुआ है। लोरिक क्रोध में जल उठा, उठकर बंगले में गया। कहा—भाई गउरा में जरा फाटक खोल दो। वह खूंटी पर रखा हुआ जामा पहनने लगा। उसमें सोने का पानी किया गया था। गर्दन में सोने का तार लगा हुआ था। उसके पीले रूमाल में तार का फूल लगा हुआ था। युवक लोग उस गमछे को गुावटी कहते थे। वीर उसको अपने शरीर पर डालने लगा। जामा सूत से उसने बाँध दिया।

वीर ने अलीगंज का जूता और पैर में मोजा पहना। वह हवेली से पैर दबा कर द्वार पर आ गया। अजयी से कहने लगा - मीता, वीर बवेला, अब मेरी बात मानो। तुम ढोलक उतारो। मैं डंफ उठा लूं। पहले दरवाजे पर ताल बजे। धोबी ने ढोलक ले लिया, लोरिक ने खूंटी से डंफ उतार लिया। दोनों वीर वहाँ बाजे पर ताल ठोकने लगे। गउरा के बच्चे गली मे दौड़ पड़े। ज्योंही धोबी ने ताल बजाया, युवक लोरिक के द्वार पर आ पहुँचे। होली का एक ताल बाजे पर बजने लगा। स्त्रियों की आशा टूट चुकी थी। सभी उठ कर हवेली में आयीं। कहने लगीं—ऐ सत्यवती, हमारे लोरिक का ताल बज गया, गढ़ गउरा में चलो। हम (अपने शरीर की) तैयारी करें, रंग लेकर तैयार हो जायँ। कोई केसर उड़ायेगा। कोई अबीर उड़ायेगा। अलबेली होली हो, हम लोग बबुआ से मन लगा कर होली खेले।

पृष्ठ 121-122

पंचों, अब जिस दिन की बात है उस दिन का राजा का खेल सुनिये। लोरिक फगुवा खेलने चला, उधर स्त्रियाँ सज-धज कर चलीं। सबने केसर लिया है, उनके एक हाथ में रंग है। जब होली खेलने का बीड़ा उठाया गया अजयी भी गली में सब बीर के साथ होली गाने चला। बीर होली खेलने लगा, गली में होली का ताल बजाने लगा। जैसे ब्रज में होली होती है वैसे ही यहाँ होली हो रही है। गोपियों के बीच जैसे कन्हैया प्रकट हुए थे वैसे ही यहाँ बीर बवेला लोरिक प्रकट हुआ। भाइयों अब गली में केसर उड़ने

लगा वैसे ही जैसे व्रज की होली में केसर उड़ता था। बीर लोरिक होली खेल रहा है। रंग से उसका शरीर पूरी तरह रंग गया है। वह घूम-घूमकर होली गाने लगा। सबके द्वार पर उसने होली गायी। तब बीर अजयी ने कहा—

दो घड़ी दिन चला गया। मीता लोरिक मेरी बात मानो। यहाँ से रास्ता पकड़ कर हम लोग कुसुमापुर बाजार चले, होली खेले और मन की लालसा पूरी करें। पंचों, दो घड़ी दिन चढ़ गया है। गउरा मे फगुवा गाकर अजयी ने कहा— मीता, चलो कुसुमापुर चले। लोरिक ने कहा - हाँ चलो चले। पंचों, सुघड़ सुन्दर लोरिक का बयान सुनिए। बीर गउरा छोड़कर कुसुमापुर के लिए बाहर निकला। वहाँ सहदेव की बेटी धरहरे पर बैठी हुई थी।

पृष्ठ 123-124

बगल मे छत पर महदेव की स्त्री बैठी हुई थी जो चनवा की भावज लगती थी। जब बीर लोरिक फगुवा खेलने चला तो इधर सहदेव की लड़की मचल गयी, कहने लगी – भउजी तुम मेरी बात सुनो—तुम मुझे आडर दे दो, मैं बीर पर हुँकार करके होली खलूँगी। तब महादेव की स्त्री छत पर फूट-फूटकर रोने लगी और कहने लगी हाय ननद तुमने यह मुँह से क्या बात निकाली है? नाते-रिश्ते में वह बीर तुम्हारा भाई लगता है, अगर तुम बीर लोरिक पर फगुवा खेलोगी तो आज ही मेरे पति की पगड़ी नीचे हो जायगी। इन पर महदेव की बेटी बिगड़ उठी। कहने लगी—

भउजी, मै तुमसे कहती हूँ यदि तुम खेलने की आज्ञा दे देती हो तो मै फगुवा खेलूंगी। तभी कुशल समझो। अगर नहीं खेलने दोगी तो विष का बीज निकालकर कुसुमापुर में बो दूंगी। मै पान की दूकान लगा दूँगी। तुम्हारी छत के नीचे दूकान लगा दूंगी और चुन-चुनकर पान के बीड़े लगाऊँगी। सारे देश के गुंडे हमारा पान खायेंगे। शैया बिछाकर इस कुसुमापुर बाजार मे सोने लगूंगी। तुम्हारी इज्जत इस सोना सुहवली पाल मे मैं खूब बना दूंगी। जब चनवा ने इतना कहा तो महदेव की पत्नी थर-थर कांपने लगी। हाय, तुम कैसी स्त्री हो! अगर फगुवा खेलने का तुम्हारा मन है तो खेल लो। सेज बिछाने से तो यही अच्छा है। चनवा ने कहा—

मै तुमसे कह देती हूँ। मैं गउरा में केवल बाजार करने नही जाती थी, और लोग एक बार बाजार करने जाते थे मैं तीन बार जाती थी। केवल उसी बीर लोरिक के लिए। गायक कहता है कि मैंने सुना है कि इधर धोबी का गोल चल पड़ा है, लड़के कुसुमापुर जा रहे है। चनवा ने अपने शरीर में अबीर लगा लिया था और अपने ललाट पर उसने चिड़िया लगा रखी थी। घड़े में उसने रंग घोल लिया था। हाथ में पिचकारी उठा ली थी।

पृष्ठ 124-125

इधर धोबी का दल सहदेव की खिड़की पर पहुँच गया। ज्योंही दल वहाँ पहुँचा चनवा ने पिचकारी भर कर लोरिक पर रंग फेंका। किन्तु वह कहीं और लग गया। तब धोबी सिर उठाकर हँसने लगा। कहने लगा—ऐ सहदेव की बिटिया सुनो, यह लोरिका हमारा मीत है। अगर तुम इस पर रंग का एक बूंद भी डाल दो तो मैं जानूंगा कि तुम सहदेव की असल बेटी हो। धोबी ने सहदेव के ठीक दरवाजे पर डंफ बजा दिया। 'पंचों, दिन फगुवा का था, उस दिन की बात आप लोग मन लगाकर सुनिये। अब यहाँ से रात का दिन होगा। यहाँ महाभारत ठन जायेगा। विधि का लिखा हुआ लेख कुसुमापुर में घटित होने लगा। गली में होली का ताल बज गया। जब धोबी ने धिक्कारा तो चनवा का शरीर क्रोध में जल उठा। उसके पैर तक लपट फैल गयी। (वह सिर से पैर तक क्रोध में जल उठी।) वह बंगले में डाँटकर बोलने लगी।

बाबू, तुम हमारी बात सुन लो। अपने मीत लोरिक को सजग कर दो। वह घड़े में रंग भरें, ललकार कर होली गावें। मैं उनके सिर पर होली खेलूंगी। अगर मै अपने बाप की बेटी हूँ और एक माँ के गर्भ से पैदा हुई हूँ तो मैं उनके सिर पर रंग मारूँगी। तुम्हारे मीता पैर तक रंग में डूब जायेगे। पंचों, गुहवल का गाना कठिन है। लोग होली खेल रहे हैं। चनवा ने अपनी पिचकारी उठाली और कहने लगी—अपने मित्र लोरिक को सजग कर दो। अब जो हमारी पिचकारी लग जाय तब समझ लेना कि मैं सहदेव की बेटी नहीं बेटा हूँ। रानी चनवा ने कुसुमापुर में शपथ ले ली, गउरा से उसकी ठन गयी। कुसुमापुर में तकरार छिड़ गयी। लोरिक का फगुवा शुरू हो गया। अजयी होली का ताल बजाने लगा, डंफ चंग बज उठा।

पृष्ठ 126

बाजा बजने लगा। लड़कों की जोड़ियाँ भी बजने लगीं। गलियों में होली जम कर हो रही है। चनवा ने अपनी पिचकारी भर कर आँचल में छिपा लिया है। फाटक पकड़े वह कोठे पर खड़ी है। इधर होली मची हुई है। सुरहा में मादकता सी (सुरभि) छायी हुई है। स्त्रियों की आँखें यह बता रही हैं। चनवा ने लोरिक पर पिचकारी मार दी, उस के पैर तक रंग से रंग गया। ताल बज उठा, सुर में सुर मिल गया। लोरिक ने चट आँख बन्द कर ली। चनवा ने ऐसी पिचकारी मारी कि उसकी पूरी गर्दन भीग गयी। अब बीर बघेला रोष में आ गया, उछल पड़ा। कहने लगा बीरों अब सुनो। अब मैं चनवा पर फगुवा खेलूंगा, इसी कुसुमापुर बाजार में। धोबी डर के मारे वैसे कांपने लगा जैसे ब्यायी हुई गाय काँपती है। वह कहने लगा—हे मीता, यदि चनवा पर तुम फगुवा खेलोगे तो यहाँ महाभारत ठन जायेगा। लोरिक ने कहा—

खबरदार अधिक मत बोलो। जिस शान से तुम मुझे यहाँ ले आये हो वैसे ही मैं फगुवा अवश्य खेलूंगा। लोरिक ने लडको से कहा—धक्का मार कर तुम लोग हवेली में घुस जाओ। बाहर मत निकलना। अब होली होगी। एक तो गउरा के लडके पाजी थे दूसरे लोरिक ने उन्हे ललकार दिया। लडके चनवा पर उलझ पडे। किसी ने उसका आचल पकडा, किसी ने उसकी साडी पकडी और उसे ठेलकर घर मे ले गये। आधे लडको ने चनवा को पकड कर घसीटा और आधे लडके हवेली मे प्रवेश कर गये। उन्होने घडे का जल ले लिया और गली मे भाग आये। जब घडा गली में आ गया तब लडको ने चनवा को छोड दिया। उसको जरा भी संकोच नही था कि लडके क्या करेंगे। वह बेगम होकर फाटक पर चली गयी। लोरिक फगुवा खेलने की तैयारी करने लगा।

पृष्ठ 127

महदेव की लडकी चनवा का यौवन चढाव पर था, वह किसी का दबाव नही मानती थी। वह फाटक पर जाकर खडी थी। इधर लोरिक घडे म रग भर रहा था। उसके हाथ मे सत की पिचकारी थी। उसने उसको मुट्ठी मे लगा लिया। घडे का रग वह मिलाने लगा। चाना (चदा) ओठ पर कपडा रखकर फाटक पर हँस रही थी। उसको जरा भी लज्जा हया नही थी। वह जितना हँस रही थी उतना ही बीर लोरिक का क्रोध बढता जा रहा था। वह जहर जैसा हो गया था। उसने पिचकारी मे रंग भरा। अपना पूरी शक्ति उसने पिचकारी पर लगा दी और चाना के सीने पर उसको तान दिया और रग फेक दिया। उसका मुह मुर्झा गया, ओठ सूख गया। वह कुसुमापुर बाजार मे गिर गयी, छटपटाने लगी। बायी ओर से पिचकारी दबाकर लोरिक न रग फेका, फिर अपनी वज्र की सी हड्डी लेकर दाहिने फेका, जब दाहिने से चनवा घूमी कि लोरिक पर रग फेकूँगी तो उधर उसके भाग्य ने साथ नही दिया। लोरिक ज्यो-ज्यो पिचकारी दबाता था, रग फेकता था, वह चौखट पर नाच कर गिर पडती थी।

धोबी जान लेकर चिल्लाते हुए भागा। हाय लोरिक क्या इस प्रकार रग खेला जाता है। जब लोरिक होली खेल चुका तब उसने कहा—कही इस तरह होली खेली जाती है। महदेव हमारी जान नही छोडेगा। क्या ऐसा फगुवा खेलाया जाता है कि किसी की जान ही ले ली जाय। लोरिक ने कहा अब अधिक मत बोलो। इसी से मै फगुवा खेलने नही आता था। तुम जबर्दस्ती यहाँ लाये। फगुवा नही खेलना चाहते तो वापस चलो। चनवा के गिरते ही लोरिक ने परेशान होकर गउरा का रास्ता नापा। दोनो वीर जब तक उधर घूमे, चनवा फिर खडी हो गयी। कहने लगी अजयी वापस लौट जाओ। अगर नही लौटोगे तो शिकायत करके मै तुम्हे फिर दुधिलापुर से बुलवाऊँगी।

पृष्ठ 128

फिर दोनों बीर गली में जाकर खड़े हो गये। चनवा ने हँस कर कहा—मैं अब तुमसे कह रही हूँ। अगर तुम्हारे घर में कोई स्त्री होती तो तुम स्त्री का दर्द जानते। उसने लोरिक से कहा—धोबी से मित्रता करने के कारण दोनों भाई कुंवारे पड़े हो। जिस दिन तक बुढ़िया जीवित है वह तुम दोनों को देख रही है, तुम्हारी आवश्यकताओं पर दृष्टि रखती है। जब तक वह गउरा में जीवित है, तुम गउरा में बेडर घूम रहे हो। जिस दिन वह मर जायगी उस दिन तुम्हें गउरा गढ़पाल में वास्तविकता, असलियत दिखाई पड़ने लगेगी। तुम गउरा में कंडी पर आग सुलगाओगे और संवरू बोहा में। जब तक वह जीवित है तुम्हारा साथ दे रही है अन्यथा यहाँ से तुम लोग समाप्त हो जाओगे, तुम्हारा चिराग जो अभी जल रहा है, बुझ जायगा। चनवा उसे झिड़क रही है, चिढ़ा रही है। इस धोबी के कारण कुंदे की तरह तुम लोग कुंवारे पडे हो। जब तक तुम लोग जीवित हो तभी तक नाव चल रही है, जिस दिन मर जाओगे तुम्हारा खेल खत्म हो जायगा। चनवा चुन-चुन कर कटु बाते कह रही है। लोरिक पर बिजली गिर गयी। उसकी आँखों में आँसू आ गये। कुसुमापुर में यह स्त्री तो ठीक ही कह रही है। तो धोबी के कारण हम लोग जाठ की तरह कोरे कुंवारे पड़े हैं।

पंचों, इसी धोबी के कारण ही तो हम लोग कुंवारे हैं। अब इसी बात को लेकर धोबी से लोरिक का मतभेद हो गया। धोबी और उसमें गाँठ पड़ गयी। न लोरिक धोबी से बोल रहा है और न धोबी लोरिक से। दोनों अलग-अलग हो गये। एक ओर डंफ तथा दूसरी ओर खूंटी पर ढोल टाँग कर बीर लोरिक सोने चला गया। पर उसको नीद नही आती। जब से चनवा ने फटकारा है, और जब-जब उसकी याद आती है, वह बैठ कर रोता है। हाय कितने लंगड़ों की शादी हो गयी। हम से छोटी उम्र वालों में कितनों का विवाह हो गया और घर में पत्नियाँ आ गयीं। आज धोबी की मित्रता के कारण मेरा वंश डूब रहा है। यदि आज मैं अपने भाई का चिलम चढ़ाता रहता तो दोनों भाइयों में से एक की अवश्य शादी हो गयी होती। लोरिक बरामदे में रो-रो कर बैठा हुआ है।

पृष्ठ 129-130

पंचों, उसकी माता ने मन में सोचा कि बेटा ने घूम-घूम कर फगुवा गाया है अतः थक गया है। बीरों से कह दिया जरा देख आओ यदि माँगे तो कुछ खिला देना। बुढ़िया जा कर सो गयी। बीर बात याद आने पर इधर बार-बार रो रहा है। अगर वह सोना भी चाहता है तो उसको नींद नहीं आती। पूर्व में लालिमा छा गयी, पश्चिम में प्रभात का प्रकाश आ गया। लोरिक दुपट्टे से मुँह ढँक कर बरामदे में सोने का बहाना कर लेट गया। जब दो घड़ी दिन चढ़ गया और आँगन में धूप तेज हो गयी तो खोइलनि को बेटे की याद आ गयी। हाय मेरे

लाल को आज खराई मार गयी। प्रातःकाल कुछ न खाने से तबियत गड़बड़ हो गयी। कल उसके सिर मे भयकर दर्द होगा, वह बीमार हो जायगा और हमारा मन विकल हो उठेगा। रानी दौड कर द्वार पर आयी।

वहाँ बीर दुपट्टा तान कर सोया हुआ है। उसने उसका दुपट्टा उठाया तो देखा कि उसकी आख मे टकटकी लगी हुई है, आँखो से आँसू झर रहे है, वह घर की बंडेरी (छत) की ओर एकटक देख रहा है। उसने लोरिक को उठा कर कहा मेरे बेटा, जग जाओ। किन्तु वीर कुछ नही बोला। वह खोइलनि का मुह एकटक निहार रहा ह। उसकी आँखो मे निरन्तर नीर बरस रहा है। खोइलनि छाती पीट कर पलंग पर गिर पडी। हाय भगवान्, हमारी लका मे आग लग गयी। टोले और पडोस की स्त्रियाँ, गोनिनिया सभी दौड पडी, एकत्र हो गयी। पूछा—क्या हाल है। खोइलनि ने कहा मै हाल क्या कहूँ। हमारे बच्चे का यह हाल देखो। मेरा बेटा फगुवा नही खेलने जा रहा था। दुष्ट अजयी जबर्दस्ती उसको ले गया। न जाने किस दुष्ट ने इस पर टोना चला दिया, सभाल कर जादू मार दिया। या किसी ने इसे कुदृष्टि से देखा है। खोइलनि ने पडोसिना से कहा, थोडी देर के लिए हमारे दरवाजे की रखवाली करो मै दुधिलापुर जा रही हूँ। मै इस दुष्ट से पूछूं कि किसी ने कटु बाते की है, या पत्थर चला कर मारा है कि बिना बीमारी के ही लोरिक का कठ रुद्ध हो गया है। रानी खोइलनि रो-रो कर दुधिलापुर धोबी के द्वार पर चली। गउरा गढपाल छोड कर दुधिलापुर बाजार गयी।

पृष्ठ 130-131

धोबी की दो स्त्रियां थीं, जिनका नाम बिजवा और सरासरि था। बिरजा (बिजवा) ने नजर उठायी तो खोइलनि को गली मे देखा। पचो, जब से लोरिक को शब्द-बाण लगे थे उस समय का हाल सुनिये। मखुवा की बेटियाँ बिजवा और सरासरि वहा पहुँची। वे खोइलनि के साथ रोती हुई आयी। (लोरिक को देख कर) वे गिर पडीं। कहन लगी हाय मइया इतनी परेशानी तुमने क्यो उठायी। तुमने हम लोगो को क्यो नही बुलाया। बुढिया खोइलनि वहाँ रोने लगी। रानियो मेरी बात सुनो। मेरे बबुआ गाँव म फगुवा खेलने नही जा रहे थे। धोबी अजयी बरबस उसको फगुवा गाने के लिए ले गये। गउरा मे यह बीमारी उनको लगी है। खोइलनि ने कहा बहु, मेरे बेटे का कठ रुद्ध हो गया है। दुष्ट अजयी कहाँ सोया है? मुझे जरा दिखा दो। जरा मै भेट कर लूं और पूछूं कि मेरे बेटे को कौन-सी बीमारी हो गयी है। फगुवा गाने के लिए वही ले गया था। बीजा चरण पर गिर पडी और हँस कर कहने लगी।

मेरी मा, गउरा का रास्ता पकड कर घर चलो। मै बखरी मे जा रही हूँ जहाँ मेरे पति सोये है। मै निश्चय ही पूछ कर आ रही हूँ तब तुम्हारे दरवाजे पर

आकर मैं खबर दूँगी। खोइलनि इधर घर आ कर सो गयी। धोबिन दुधिलापुर बाजार चली। बीजा जब अपने द्वार पर पहुँची तो वहाँ धोबी का गलीचा बिछा हुआ है, वह आसन जमा कर बैठा हुआ है। बुटवल का गुड़गुड़ा चढा हुआ था जिसमें जहानाबाद की चिलम थी। वह नया तम्बाकू पी रहा था। उसके गले और छाती में तम्बाकू लग नहीं रहा था। उसकी स्त्री सरासरि पंखा झल रही थी। धोबी बरामदे में बिहार कर रहा था।

पृष्ठ 131-132

तब तक इधर मखुवा की बेटियाँ विजवा और सरासरि बोल उठीं—सैंया मूर्ति-नारायण, तुम हमारे सिंदूर के मालिक हो। लोरिक फगुवा खेलने नहीं जा रहा था तुम उसको बलपूर्वक ले गए। हम तुमसे पूछते हैं इसका भेद बतला दो, क्या किसी शत्रु ने उसे टोना किया है या किसी ने कटुक्तियाँ कही हैं। कौन सी बात हमारे बाबू के कलेजे में धँस गयी है। वह आज गुमसुम हो गए हैं। उनका कंठ गउरा में रुँध गया है। माता ने हमें पकड़ लिया, हमारी छाती फट गयी। जब धोबिन ने इतनी बात पूछी तो अजयी धोबी ने हुक्का छोड़ दिया। हत्यारे ने पीछे गर्दन करके अपना मुँह कुण्डे की भाँति लटका दिया। यह देखकर विजवा के शरीर में आग लग गयी। इसकी कृति, कर्म अजब है। कहने लगी—

मैं बात कर रही हूँ और तुमने पीछे घूम कर कुण्डा की भाँति मुँह लटका दिया है। तुम तो आज ऐसे फूल गए हो जैसे ससुराल में आ गए हो। तुम्हें पाँव छुलाने की चाह है क्या ? इस तरह ससुराल मे नाराज़ हुआ जाता है। मैं पूछ रही हूँ इसका भेद बताओ। धोबी ने कहा—बुजरो पूछ रही हो बता रहा हूँ। उसने कहा—किसकी बहन बिटिया दुनिया में मैं भगाऊँ और लोरिक की शादी करवाऊँ। इसीलिए वह क्रोध में है। हे पति, वह इसीलिए क्रुद्ध है। यदि शादी के लिए ही वह क्रोध में है तो तुमने तो सुहवल में सखियों को धैर्य बँधाया ही था कि हम बीर की अगुवाई करेंगे तथा उस बामरि के लिए दामाद लायेंगे। हमारी सखियाँ सुहवल में उठ-उठकर ताक रही होंगी कि हमारे पाहुन बमरी के लिए कब दामाद लेकर आयेंगे।

पृष्ठ 132-133

आज तुम हमारे बाबू की अगुवाई कर दो। सुहवलि में हमारी सखियाँ (पति की) खोज में हैं। धोबी ने कहा प्रातःकाल ही तुमने सुहवल का नाम लिया। आज मेरा पुराना घाव उभर गया है वह लकड़ी के कुंदे की भाँति गिर पड़ा। उसने कहा—बुजरो मुझे ज्वर आ गया है। धोबिन ने अजयी को हाथ से दे मारा। बिजा ने सरासरि से से कहा—चलो घर चलें। इसके शरीर पर लुकाठी पटक दें। वहाँ सखियों को इसने ढाढ़स बँधाया था और यहाँ सुहवल का नाम सुनते ही इसका घाव उभर गया है। दोनों बहनें फिर बखरी में घुस गयीं। बिजा ने सरासरि से कहा—अब मैं अगुवाई

करने जाऊँगी। हमारे बाल में मोती गूंथ दो, ललाट पर हीरा डाल दो। सोने की अँगूठी पहना दो, सोने का तार खींचवा दो। मेरे सिर की ओर सोने की झबिया लटकवा दो, कमर में करधनी झूल जाने दो। छाती पर हलका लटका दो। पोर-पोर में घुंघरू का झंकार हो जाय। ऊपर मखमल की चोली पहना दो ताकि मंदमंद बयार लगे। वस्त्र दक्षिण देश का बना हुआ पहन लूं। मैं अब दुधिलापुर चलूंगी।

पंचों, उसने ललाट पर बिंदी लगायी, माँग में सिन्दूर डाला, बाल का जूड़ा ठीक किया। एक तो मखुवा की लडकी स्वयं सुन्दर थी, दूसरे उसने शृङ्गार कर लिया और अहीर के द्वार पर चली। मखमल की चोली, दक्षिणी चीर, जिसमे छप्पन हजार पंछी लगे थे, उसने धारण किया था। उसके आचल पर मोर था और कोयल कूक रही थी। सूर्य की ज्योति की भाँति वह चमक रही थी। बाये (वडेरी मे) चन्द्रमा था। मखुवा की बेटी चली। उसके पैर का गहना गोरहरा आर घूंघरू बज रहे थे। गली मे शोर मच गया, हाहाकार मच गया। सखियो, दुधिलापुर धोबिन आ रही है, आँख फैलाकर उसकी सूरत देख लो। पंचो, जब धोबिन लोरिक के द्वार पर चली सभी नारियाँ मोहित हो उठी।

पृष्ठ 134-135

सभी उसको देखने के लिए चली, किसी ने उसको देखा नही था। धोबिन जब अहीर के द्वार चली तब सब अपने द्वार पर खड़े होकर (देखने लगे)। मक्खू की लड़की बिजवा ने लोरिक का घर पहचाना नही था। वह चारो ओर अपनी आँख नचाकर देख रही थी। आज गुणों की सारी शक्ति उसके मुकाबले मे थक गयी? पंचों, जब रास्ता पकड़कर धोबिन चली तो पीछे से गुंडे कहने लगे ज़रा हमारी ओर ताक दो। स्त्रियाँ दाँतो तले अँगुली दबाती थी, आश्चर्यचकित थी। वे कहने लगी—हाय भगवान तुमने ऐसी सूरत दी है इस धोबिन को कि उसकी सूरत की इस गाँव में कोई स्त्री ही नहीं है।

भाइयों, धोबिन बन-ठन कर लोरिक के द्वार पर चली। सभी धोबिन की सूरत पर लुब्ध हो गए थे। रानी पतली गली मे आ गयी। लोरिक की खोज में वह रात में सबके द्वार पर गयी। वह अपनी नजर इधर-उधर घुमाती चलती थी। आगे लोरिक दिखाई पड़ा, वहाँ तुलसी की गांछ लगी हुई थी। महावीरी झंडा वहाँ गड़ा हुआ था। धोबिन रात में वहाँ खिल रही थी। गउरा गजन गढ़पाल में लोरिक के द्वार पर झंडा गड़ा था, यह पहचान धोबिन को मिल गयी। जब लोरिक लड़ने जाता था तो कहा करता था—हमारे दरवाजे पर तुलसी की गांछ के तले झंडा है। धोबिन इससे द्वार पहचान कर वहीं रुक गयी। सोच विचार कर कहने लगी यही बाबू (लोरिक) का द्वार है। जब पांव धोकर घर पर चढ़ने लगी तब तक लोरिक ने देखा यह धोबिन तो खूब है! उसकी देह जल उठी। बरामदे मे क्रोध से वह बावला हो गया।

अपना दुपट्टा दबाकर सो गया। कहा—बुजरी धोबिन ने तो और हमारी इज्जत लूट ली।

पृष्ठ 135-136

पंचों, लोरिक क्रुद्ध हो उठा। यह धोबिन बनकर नहीं आयी है, यह तो मेरा सर्वनाश कर रही है। जितने लोगों ने इसे देखा होगा उन्होंने यही तो कहा होगा कि शायद धोबिन लोरिक से मिली हुई है। तभी तो इतना बन-ठन कर जा रही है। यह सोचकर उसके मन में और क्रोध हुआ, आग लग गयी। अपने मन को बाँधकर, दुपट्टा लेकर वह बरामदे में सो गया। इधर वहाँ मखुवा की बेटी बिजवा उपस्थित हो गयी। वह बंगले में प्रवेश कर गयी।

उसने विकट रास्ता अख्तियार कर लिया है। वह बंगले में हँस कर बैठ गयी। कहने लगी—लाडले लोरिक, मेरी बात मान लो, बंगले में उठकर बैठो। जो तुमको बीमारी लगी है, उसका भेद बतला दो। धोबिन पकड़कर उसका दुपट्टा खींचने लगी। लोरिक लेटा रह गया, क्रोध से उसका शरीर जलने लगा। इसी के कारण तो मैं बाल कुँवारा रह गया हूँ। जब धोबिन ने दुपट्टा खींचा तो लोरिक को और आग लग गयी। उसका क्रोध और बढ़ गया। पंचों, केवल दो घड़ी की बात कौन करे, वह छै घड़ी तक लोरिक की स्तुति करती रही। बबुआ उठो, मेरे आने की लाज रखो। उठकर मेरा सवाल सुन लो। तुम अपना दुख कहो। क्या हमारी देह ऐसी (अपवित्र) हो गयी है कि तुम मेरे पति से बात भी नहीं करते।

दुधिलापुर में रोज हँसी मजाक होता था आज तुम्हारी अवस्था। ऐसी हो गयी? तुम यहाँ उठकर बैठो। तुम मेरा मान रख दो। आज हमने खोइलनि से प्रण किया है कि तुम्हारे खोये पुत्र का रुद्ध कंठ मै खोलवा दूंगी, बोलवा दूंगी। तुम मेरी लाज क्यों नहीं रख लेते। रानी (धोबिन) छै घड़ी से आरती उतार रही है। रो-रोकर वह कह रही है—बाबू अब तुम ज्यादती कर रहे हो। अब उठ जाओ, नहीं तो तुम मुझे वह धोबिन मत समझो कि मैं फिर गउरा आऊँगी। मैं ऐसा दाग लगाऊँगी कि वह धोबी के घर धोने से भी नहीं छूटेगा। चेत करो। उठ बैठो, नहीं तो नील का ऐसा दाग़ तुम पर लगाऊँगी कि जन्म भर वह दाग़ नहीं छूटेगा। मेरी इज्जत रखो नहीं तो मैं यहाँ आसन जमाकर बैठ जाऊँगी।

पृष्ठ 136

पंचों, धोबिन कहती रह गयी पर लोरिक ने बात नहीं सुनी। तब उसने कहा अब हमें दोष मत देना। यह मत समझो कि मैं लौट कर गउरा जाऊँगी। अब तुम्हारे मीता मेरा बनाया हुआ भात नहीं खायेंगे। मैं जहर खाकर मर जाऊँगी। नहीं तो कुँए में गिरकर मर जाऊँगी। फिर शोर मचेगा, गंदे लोग अट्टाहास करेंगे। लड़के

लुकाठी उठाएँगे । दुनियाँ में हल्ला मचेगा—किस कारण धोबिन तुम्हारे दरवाजे पर गयी थी । कुछ गड़बड हुआ है । लोरिक ने कुछ ऊँचनीच काम किया है, इसी से धोबिन कुएँ में गिर गयी है । बिजवा इस प्रकार बोली । पहलवान लोरिक दुपट्टा उतार कर बैठ गया । उसने कहा—हाय भगवान मेरा शरीर तो कलंकी है, तुम कुछ और कह लो । लो मै अब उठकर बैठ गया । तुम चली जाओ । मैं अपना दुख कहता हूँ पर तुम इसे संभाल नही पाओगी । अब हमारा दुख कोन काट सकता है ? केवल मेरा भाई । देखो, कितने छोटो की शादी हो गयी । लंगडो का विवाह हो गया । इस गाँव मे कितने दरिद्र है पर कोई कुँवारा नही है, तुम घूमकर देख लो । तुम्हारे साथ रहने मे तुम्हारी मित्रता के कारण हम दोनो भाई कुदे की तरह कुँवारे पडे हुए है । मुहवलि मे धोबिन हँस पडी ।

हे बाबू, हे राजा, तुम मेरी बात मान जाओ । आज मै तुम्हारा काम करने के लिए ही आयी हूँ । गुहवलि मे मै तुम्हारी अगुवाई करूंगा पर तुम यह मत समझो कि तुम सुख मे दही-बडा खाओगे । सुख मे तुम फुलौरा नहीं काटोगे । लोहे का चना चबाना पडेगा । अगर तुमने अवतार लिया है तो सुनो । मुहवल मे छत्तीस हाथ का भाला गडा हुआ है, उसकी शान बत्तीस गढ तक है । यह सब सती के कारण हुआ है । सती जैसी बेटी बाल कुँवारी पडी हुई है तुम दूल्हा को मौर बाँधो और बारात करने चलो ।

पृष्ठ137

वहाँ गिन गिन कर मुड के कलश रखवाने होंगे । कोहबर के पास रुधिर होगा । तुम्हे छाती का पीढा गढवाना होगा । तुम्हारी जान तलवार पर होगी । लोहे का मुकुट होगा तब तुम मुहवल मे विवाह करोगे । अगर तुममे इतनी शक्ति हो तो खाना खाओ । खाम कर बीर बघेला उठ गया । भउजी अद्‌भुत बात मेरे मन में स्थिर हो गयी हे । मै अन्न की शपथ ले रहा हूँ । मन्दिर मे चलकर जल धरवा लो । यदि बीच मे मैने जल पी लिया तो मै कैरी (भूरी) और कपिला (भूरी, सफेद) गाय का वध करूंगा । तो तुम चलो, ईमान रहेगा । मै बामरि के बेटे को मारूंगा । मुहवल मे ऐसा बाजा बजेगा कि लोग नाम स्मरण रखेंगे । सती के लिए कलश धराऊँगा कोहबर रुधिर से पुतवा दूंगा । फिर मै गउरा वापस आऊँगा ।

पचो, हिन्दू गंगा लाभ करेंगे, तुर्क कब्र में जायेगे । हे भद्र कामिनि आपने मेरा साथ छोड दिया । मै कहाँ गीत गा रहा हूँ कहाँ हृदय में विस्मृत हो गयी । हे देवी, जिस दिन के लिए मैने पूजन किया था वह दिन निकट आ गया है । हे भवानी, सौभाग्य के लिए जगो, मेरे भाग्य से जगो । तुम्हारा नाम सुर नरमुनि सबके बीच चलता है, यह कीर्ति बड़ी है । हे सरस्वती, मेरी जिह्वा पर उपस्थित होइये । एक समय मे लोहा तानकर बीर जवान लोरिक खड़ा हुआ तो बंदा

ने अपनी धार चला दी। हे देवी, मेरा शरीर अब खोखला हो गया है। यहाँ लोगों की मंडली बैठी हुई है। इस सभा में मेरे लिए छोटे-बड़े एक समान हैं। हमारे बूते यह गाना गाया नहीं जाता। तुम्हारे ही बल बूते का भरोसा है। मेरी नाव बीच जल में पड़ी हुई है। देवी, चाहे इसे खेकर पार लगाओ या इसे डुबा दो। पंचों की सभा मंडलो बनाकर बैठी हुई है। हमारे लिए सब समान हैं। सबने मिलकर हुक्म दिया है, मेरे में यह शक्ति नहीं है कि मैं यह नाव खे सकूं।

पृष्ठ 138

मेरे भाग्य से भवानी जगिये, युद्ध के समय हे दुर्गा देवी, उपस्थित होइये। गीति के समय हे सरस्वती, मेरी जीभ पर बैठिये। जिस दिन के लिए मैंने पूजा की वह घड़ी निकट आ गयी है। देह में दिमाग है यह तुम्हारे चरणों की बलिहारी है। हे देवी, मैं मृत्युलोक में सदैव तुम्हारा नाम भजता रहा। मेरा ध्यान सदैव तुम पर रहा। देवी, लोहा कब लगा, युद्ध कब हुआ, (मालूम नहीं) मैं इसे कानों से सुनकर गा रहा हूँ। देवी, यह आँखों से मैंने नहीं देखा है। हे देवी, तुम्हारे बल और भरोसे से मैं पंचों की मंडली में सिर खोलकर बैठ गया हूँ, अगर एक भी अक्षर भूल जायगा तो दुनिया बड़ी निन्दा करेगी। देवी जिस दिन के लिए मैंने पूजा की है वह घड़ी निकट आ गयी है। मैंने सुना है कि तुमने शूरमा की पूजा स्वीकार की है और तुमने तलवार गाड़ दी है। जिस कोने में लोहा लगता है उस कोने में तुम्हारी देह पहुँच जाती है। जिस महाभारत में तुम पहुँच जाती हो रण की पूरी तैयारी हो जाती है। जैसे तुमने शूरमा की प्रतिष्ठा रखी है वैसे ही मेरी प्रतिष्ठा रखो।

[इसके बाद जाग हमरी····तइयार सूत्र है] (प्रारंभिक पंक्तियों की पुनरावृत्ति है, पर छंद भिन्न है) दुर्गा ने कहा—ऐ बालक गाओ, गाओ मैं कान लगाकर सुनूं। यदि एक भी अक्षर भूल जायगा तो मैं दो-दो गढ़कर मिला दूँगी। तुम बीरों की कीर्ति कह दो जिन्होंने तलवारें बजा दीं। पंचों अब जिस दिन की बात है उस दिन के समर का हाल सुनिये। गजन गउरगढ़पाल में जब धोबिन ने अगुवाई की बात की तब लोरिक ने विवाह सम्पन्न होने के पूर्व अन्न न खाने की शपथ ले ली, जल भी उसके लिए हराम हो गया। उसने कहा—यदि मैंने पानी बीच में पी लिया तो मैं केरा (भूरी) और कपिला (भूरी और सफेद गाय) की हत्या (का अपराध) करूँगा। जब तक मैं भैया का मौर (मुकुट) न बाँधूगा, मैं अन्न-जल नहीं ग्रहण करूँगा।

पृष्ठ 139

लोरिक ने कहा—मैं अब भाला उखाड़ कर मोती सगड़ के घाट फेंक दूँगा। पंचों, धोबिन दुधिलापुर चली गयी, गजन गउरगढ़ पाल से वह रवाना हो गयी। खोइलनि उठी। लोरिक से कहा दातुन कर लो, कुल्ला कर लो, जरा मुँह में कुछ आहार कर लो। लोरिक ने कहा—मैं गउरा में अब जल नहीं पीऊँगा। मेरा प्रण इन

गया है। मैंने शपथ ले ली है कि मैं अन्न नहीं खाऊँगा। जल हराम है। मैंने यह मन्दिर में कह दिया है। प्रण पूरा किये बिना यदि बीच में मैं जल पीऊँगा तो मैं कैरी कपिला गायों का वध करूँगा। भैया को गउर (मुकुट) बाँधूंगा तथा सुहवल बारात करने जाऊँगा। मैं अब व्यर्थ ही अनाज गले नही उतार सकूँगा।

आज मुझे चिन्ता इसी बात की है। भैया को संदेश भिजवा दो। मैं यहाँ दुर्गा की पूजा करूँगा। [गायक पहले दुर्गा की पूजा करना भूल गया था (देखिए पृष्ठ 60) अब वह यहाँ पूजा कर रहा है।] लोरिक ने कहा—भाई, आज दुर्गा की पूजा करो। संवरू भाई से आज्ञा मँगवा लो। मै तुमसे कहता हूँ भवानी की पूजा हल्की नही है। उनकी पूजा कठिन है। माता मेरी बात मानो। अगर तुमसे संभव हो तो यह स्वीकार करना अन्यथा तुरन्त जवाब दे देना। खोइलनि ने कहा—बेटा तुम्हारा मन तो पूजा मे थोड़ा लगता है, पूजा मे मेरा मन अधिक है।

बेटा, मेरा मन पूजा करने का बिशेष है। बेटा, धन की कमी नही है। लक्ष्मी यहाँ विराजमान है। पैर तोड कर बैठी हुई है। इस धन मे कमी नही होगी। तब व्रती खोइलनि के पुत्र देवकी नन्दन राजकुमार लोरिक ने कहा—मेरी माँ, रेशम की भांति कोमल (पटोर।) मेरी बात सुनो। अधिक पैस से काम नही होगा। यहाँ बहुत कर्तव्य करने वाला व्यक्ति चाहिए। चलो जरा सहादेव की आज्ञा माँगो। कल गउरा मे पंचायत हो और गले मे कफन डाल कर मै भाई बन्धुओं को यह बात कहूँ। खोइलनि का पुत्र चतुर है। उसने अपनी माँ को सहादेव के द्वार पर प्रार्थना करने के लिए भेजा। बुढ़िया खोइलनि गउरा छोड़कर दुधिलापुर चली गयी। वहाँ सहदेव की गद्दी लगी हुई थी, दरबार जमा हुआ था। उसी समय खोइलनि पहुँची।

पृष्ठ 140-141

सब लोगों ने देख कर कहा—खोइलनि आ गयी। वह आगे चलती गयी। सिपाही वहाँ से हट गये। वह कचहरी मे पहुँच गयी। कहने लगी—ठाकुर मेरी बात सुनिये, हमारी बात मानिये। आज मेरा एक कार्य है। आप कहे तो मै अपनी बात कहूँ। ठाकुर ने कहा—कहो, क्या काम है। खोइलनि ने कहा कि कार्य यही है कि मेरा बेटा आदि शक्ति भवानी की पूजा करने को कह रहा है। मैने कहा—कोई कठिनाई नही है, हर्ज नही है। मेरे पास इतनी रकम है। मेरी भवानी की पूजा हल्की नही है यदि ठाकुर कहे तो मै इसमे हाथ लगाऊँ। नही तो पूजा देने को सामर्थ्य मुझमें नही है। सहदेव खिल उठे। उन्होने कहा खोइलनि तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारा पूजा मे मन थोड़ा कम भी है तो मेरा मन (कुसुमापुर में) अधिक है। सहदेव ने कहा—अहा, हा, तुम से अधिक आज मेरा मन आनन्दित है। भवानी की पूजा होने दो। खोइलनि ने कहा—मेरा बेटा लोरिक कहता है कि सभी जातियों की पंचायत (बिटोर) दरवाजे पर हो। राजा डुग्गी बजवा दे। सहदेव ने कहा ठीक है।

गउरा में पूजा की बात से सब प्रसन्न हो उठे। छत्तीस वर्ण के लोग आह्लादित हो उठे। सब ने कहा शक्ति भवानी दुर्गा की पूजा होनी चाहिए। बुढ़िया खोइलनि प्रसन्न हो उठी। अपने दरवाजे पर वापस आयी। इधर सहदेव ने हुक्म लगा दिया। चमारों ने गले में शहनाई बाँधी कि किले में डुग्गी पिटवा दी जाय। कल पूर्व में लालिमा होगी। पश्चिमी सागर में प्रकाश होगा तब लोग खोइलनि के दरवाजे पर एकत्र हों। यहाँ गउरा-गजन गढ़पाल में दुर्गा की पूजा होगी। अब राजा की डुग्गी बज गयी। सभी ने मन लगा कर सुना। [इसके बाद सूत्र है] पूर्व में लालिमा छा गयी। पश्चिम में प्रकाश फैल गया। कौवों ने टेर लगाना शुरू किया। भोर से बिहान होने लगा। सहदेव उठे और लोरिक के पावन द्वार पर पहुँच गया। उनकी बड़ी गद्दी लग गयी। सब के नीचे बैठने के लिए मोढ़े लग गये। छत्तीस जाति के सभी लोग गजन गउर गढ़ पाल आ गये। पंचों की मंडली बैठ गयी। तब सहदेव ने कहा—अपनी बात गर्ज कहो। गायक कहता है मैंने सुना है कि लोरिक ने अपनी गर्दन में कफन डाल लिया।

पृष्ठ 141-142

उसने दोनों हाथ जोड़े, एक पैर पर खड़ा हो गया। ऐ मेरे शक्तिशाली ठाकुर, ऐ बीर, मेरी बात सुनिये। गउरा में मेरा कार्य बड़ा है। अगर सब भाई, सभी पंच मिलकर सहायता करेंगे तो मैं शक्ति भवानी की पूजा दूँगा। राजा सहदेव ने कहा—ठीक है। उन्होंने कहा सब लोग हाथ उठा दो। सभी जाति के लोगों ने हाथ उठा दिया। जो भी काम लगेगा। हम लोग करेंगे, रुपया पैसा धन से। हर प्रकार से। पूरा गाँव पूजा देने को तैयार है। पंचों, व्रती खोइलनि का बेटा लोरिक बोला। हे राजा सहदेव सुनो। पंचों, सुनो मैं पूजा का बयान कर रहा हूँ। इतनी चीजें मुझे एकत्र करनी पड़ेंगी। भाइयों यहाँ सवा सौ मन घी लगेगा। सवा सौ मन शाकल्य, समिधा लगेगी। ऐ माँ, तुम सवा सौ मन जौ मंगा लो उसे तुम अन्य चीजों के साथ मिश्रित करके हवन-सामग्री तैयार कर लो। पहला हवन खेत में होगा; नगर के पूर्व की ओर खेत और मैदान में। सवा सौ मन गाय का घी और सवा सौ मन शाकल्य और फिर सवा सौ मन जौ लेकर पहले हवन होगा। उसने कहा अभी भाई धरमी ने तो आज्ञा दी ही नहीं है। उनको तो अपनी अनुमति भेजनी चाहिए। हमें दूध का सवा सौ खप्पर खेत में भरना पड़ेगा। खोइलनि ने कहा ठीक है। दूध की क्या कमी है। मैं एकदम तैयार हूँ। गले में कफन लगाकर वह कहने लगा—हे सहदेव जो जिस योग्य है वह उसी प्रकार सेवा करे। मैं प्रार्थना कर रहा हूँ। आपके लिए यह आडर (आदेश) है कि आप काठ का चंदन फड़वाकर खेत में कुंड खुदवा दें।

पृष्ठ 142-143

लोरिक ने मुसलमानों से कहा कि यदि तुम लोग मेरी पूजा में शामिल हो

तो सोलह सौ बकरे जिनकी हड्डियाँ पुष्ट हों, फिर सोलह सौ भैंसे तुम लोग खरीद कर एकत्र करो। खंसी और भेडे अगणित हों। उन्होंने कहा सब ठीक है। फिर लोरिक ने कहा पूजा में अब कुम्हारों का काम लग गया है। तुम लोग सवा सौ खप्पर गढ़कर तैयार करा। हमारी देवी की पूजा अत्यन्त कठिन है। यह पूजा मेरी शक्ति के बाहर है। लोरिक ने कहा —इतनी पूजा की सामग्री पहले ठीक हो जाय। फिर हे माता मै कह रहा हूँ, कल दरवाजे पर बजाज को बुलाकर पंडितों और पंडिताइनों को धोती धौर साड़ी रंगवा कर दान कर दो, क्योंकि पंडित लोग जाकर हवन करायेंगे। पंडिताइनो को पीली साड़ी मिलनी चाहिए। ऐसा न हो कि कोई पीले वस्त्र के विना रह जाय। खोइलनि ने कहा – बेटा, तुम्हारा मन तो पूजा में थोड़ा लगा है, मेरा मन अधिक लगा है। इतनी पूजा की सामग्री मै तैयार करूँगी। पंचों, जब पूजा की तैयारी हो गयी तो खोइलनि उठी। द्रव्य जमीन से उखाड़कर उसने कहा—जिसको खंसी-भेड़ा खरीदना है वह यह तोड़ा ले ले। आज मंजरी ? निकाल कर तोड़ा देने लगी और कहने लगी कि तुम लोग खंसी और भेड़े खरीदो ।

उसने कहा हे महदेव, आप चदन की लकडी मगवाइये। खेत मे कुड खुदवा दीजिए। उसने दरवाजे पर द्रव्य निकालकर दे दिया। सहादेव ने कहा— यह पूजा सबकी है। मै राजा हूँ, मै भी यहाँ कुछ दान करूँगा। उसने कहा—नही। यदि कुछ कमी हो जाये तो आप उधार दगे। यदि देवी की पूजा कराने की इच्छा है तो दूसरी बार फिर आप पूजा करवा लीजिएगा क्योंकि हमारे बेटे ने पूजा की तैयारी की है। रग मे भंग हो जायगा। आप देखिये कि वह गजन गउर गढपाल मे कैसी पूजा कर रहा हे ?

पृष्ठ 143-144

बुढिया खोइलनि ने गउरा मे फिर ध्वजा उखडवाया, बदलवाया। उसने दरवाजे पर पुकारा जिसकी जितनी इच्छा हो रुपया-पैसा गठिया ले। पहली पूजा दुर्गा की होगी। अब आप लोग आँख खोल कर देखिये। मेरे बेटे की गउरा मे बड़ी लालसा है वे पूजा चढ़ायेंगे। हे ठाकुर, तुम्हारी भी लालसा है दूसरी बार तुम भी पूजा करवा लेना। पंचों गउरा में अब पूजा की तैयारी हो रही है। कोई खंसी और भेड़ा खरीदने जा रहा है, कोई हवन-सामग्री खरीदने जा रहा है। कोई टिन का घी खरीद रहा है। लोरिक के दरवोजे पर कांटा (तराजू) गड़ गया। यहाँ हवन-सामग्री तौली जा रही है। सवा सौ मन घी बटोरा गया है। सौ सौ मन शाकल्य की तैयारी हो चुकी है। सवा सौ मन जो, फिर उसमें हवन-सामग्री डाल दी गयी है। सहादेव ने वन से चंदन काठ की लकड़ी कटवा दी है। कुंड खुद गया है जिसमें हवन होने वाला है। पंचों, गउरा नगर के बाजार में कठिन पूजा आयोजित है।

सभी गउरा विकल है । पूजा की तैयारी हो रही है । पंचों, अब जिस दिन की बात है, उस दिन की पूजा का खेल सुनिये । इधर जुलाहों और धुनियों ने खरीद कर बकरे और भेड़ों को तैयार कर लिया है । वहाँ खंसियों की दंवरी शुरू हो गयी है, वे किले में आ गये हैं । उनको पूजा के लिए छेंक दिया गया है । एक ओर भेड़ों की परिक्रमा हो रही है, दूसरी ओर खंसियों की । एक ओर भैंसों की दंवरी हो रही है । बुढ़िया खोइलनि उठी । वह जमीन से द्रव्य उखाड़कर दरवाजे पर लायी । दरवाजे पर उसने बजाज को बुला लिया है । अब वह धोतियों का दान करने चली ।

पृष्ठ 145

गायक कहता है कि मैंने सुना है कि पीले रंग में रंगी हुई धोतियाँ खोइलनि पंडितों को दान कर रही हैं । उनकी गमछियाँ पीले रंग में रंगी हुई हैं । उनके कुर्ते भी पीले रंग में रंगे हुए हैं । गउरा में जितनी पंडिताइनें हैं उनके लिए भी धोतियाँ फड़वा दी गयी हैं । स्त्रियों के झूले पीले रंग में रंगे गये हैं । सभी कपड़े रंग-रंग कर तैयार किये गये हैं । भाइयों, सभी ने पीले कपड़े पहन लिये हैं । सभी ने दान ग्रहण कर लिया है । कुम्हार सवा सौ खप्पर लेकर खेत के मैदान में चला । पंचों, अब चंदन की लकड़ी चीर कर हवन कुंड में रखी जा रही है । जब हवन कुंड तैयार हो गया तब सहादेव ने पंडितों को अडर (आज्ञा) दिया कि सारी हवन सामग्री लेकर आप लोग खेत मैदान में चलें । पंचों, आज पंडितों ने हवन-सामग्री ढोनी शुरू की तथा हवन कुंड के पास ढेर लगा दिया । पंचों, अब गउरा बाजार में पूजा की तैयारी हो रही है । सवा सौ खप्पर वहाँ एकत्र कर दिये गये । धरमी कांवर में वहाँ दूध जुटाने लगे तथा बोहा से उसे गउरा पहुँचा दिया । धन्य भाग्य है भाई का कि उसने भवानी के पूजन की तैयारी की । जब खूब दूध पहुँच गया तो लोरिक ने संवरू से कहा — भइया दूध की बहंगी भेजवाना अब बंद कर दो । पंचों, अब खेल सुनो । पूजा की अब तैयारी हो गयी । सभी नर-नारी एकत्र हो गये । खेत में पूजा होने लगी । खेत बहुत लम्बा है ।

पृष्ठ 146-147

आज दुर्गा की पूजा होगी । आप लोग मन लगा कर इसे देखिए । पंडित लोग पुस्तक लेकर चले तथा जा कर कुंड पर बैठ गये । (ब्राह्मण) देवताओं ने कुंड में अग्नि डाल दी । अग्नि जल उठी । ब्राह्मणों ने लोरिक से संकल्प करवाया । पंडित लोग हवन सामग्री लेकर बैठ गये । सब स्वाहा-स्वाहा करने लगे । कुंड में हवन किया जाने लगा । यहाँ जोते हुए खेत में लोरिक ने खप्पर भरवा दिये थे । हवन हो रहा है, धुंआ मृत्युलोक में उठ रहा है और इन्द्रलोक में जा रहा है । जब वहाँ

देवताओं तक सुगन्ध पहुँची तो वे जय-जयकार करने लगे। कहने लगे कि किस वीर ने मृत्युलोक में यज्ञ ठान दिया है। शायद यज्ञ में ही हवन हो रहा है। सुगन्ध से सबका मन प्रसन्न हो गया। भगवान ने देवताओं की इच्छा पूरी कर दी। पंचों, भवानी ने इन्द्र के पावन द्वार पर झूला लगा रखा था। कहने लगीं—लगता है बबुआ लोरिक अब समझदार हो गया है। गउरा में उसने हमारी खोज की है। दुर्गा ने अपना रथ हाँक दिया जिसमें वरुण और कुबेर लगे हुए थे, बाघ और सिंह की इसमें जोड़ी लगी हुई थी। दुर्गा रथ पर बैठ गयीं। यहाँ गउरा में उथल-पुथल है। दुर्गा ने इन्द्रासन से रथ हाँक दिया तथा मृत्युलोक में आ गयी। वह आधे आकाश में आयीं तो खेत में मेला लगा हुआ था। जैसे कथिया में कथेसरि का मेला लगता है, (बलिया में) भृगुमुनि के दरबार में ददरी का मेला लगता है, वैसे ही खेत में मेला लगा हुआ है।

लोगों के अंग से अंग छिल रहे हैं। मेला कस कर लगा हुआ है। वहाँ खप्पर भरकर तैयार किये गए थे। भवानी आकाश से गरज उठी। बाघ का रूप उन्होंने धारण कर लिया था। लोग भागने लगे। उन्हें लगा कि सिंह, बाघ वहाँ उपस्थित हो गया है।

पृष्ठ 147-148

गायक कहता है कि मैंने सुना है कि पंडित लोग अपनी पुस्तकें लेकर खेत से भगे। जिस समय भवानी पूजा लेने चली तथा सिंह का रथ छोड़कर वह गरजने लगीं तो सभी खेत में भागने लगे। लोग ऐसा भागे कि किसी का घुटना फूटा, किसी का माथा फूटा।

मैंने सुना है कि गउरा में चिल्लाहट शुरू हो गयी। पंडिताइनों ने कहा, इस दुष्ट ने पूजा करवाने के लिए नहीं यहाँ बुलाया था, यह हमारा वलिदान कराने के लिए यहाँ ले आया था। देवी सिंह की तरह खेत में गरज रही हैं। लोरिक आसन जमाकर बैठा हुआ है। पंचों, जब भवानी सिंह बनकर गरजने लगीं तो सभी स्त्री-पुरुष भागे। घर-घर के दरवाजे बन्द हो गये, उनमें डंडे लगा दिये गये। यदि यह बाघ (सिंह) गाँव में प्रवेश करेगा तो बड़ी क्षति पहुँचायेगा। पंचों, जब घर के किवाड़ बन्द कर दिये गये तथा खेत से सब लोग हट गये तो भवानी ने बुढ़िया का रूप धारण कर लिया। उनके बदन से पीब फूटने लगा। तब खोइलनि का बेटा वहाँ से उठा और दुर्गा के चरणों पर गिर पड़ा। कहने लगा—

हे माता मेरी बात सुनो। हाय, भवानी मैं आपसे पूछ रहा हूँ। क्या मेरी पूजा में कमी हो गयी? मेरी पूजा में क्यों विध्वंस हो गया? मेरी माता भवानी तुम्हीं धर्म की रक्षा कर सकती हो। तुम अपनी कृपा क्यों छोड़ रही हो? वह भवानी

के पैरों में उलझ गया। माता मेरी बात सुनिये। तब माई भवानी हँसी, उनका नाम अपर बल है 'अनन्य शक्ति वाली' हैं। उनके बायें हाथ में खप्पर विराज रहा है, दाहिने हाथ में उन्होंने मोह् (?) को नचा रखा है।

आज देवी ने पीली धोती धारण की है, उनकी लटों से तेल की धार चू रही है। उन्होंने कहा तुम्हारा भाग्य धन्य है कि मृत्युलोक में तुमने मेरी पूजा की है। बच्चा, मैं पूछ रही हूँ कि तुम कहाँ लोहा लगाओगे कहाँ महाभारत छिड़ेगा ? किस प्रयोजन से तुम मुझे पूजा दे रहे हो। बीर बघेला लोरिक ने कहा—देवी मेरी बात सुनिये। मैंने पहले निमन्त्रण आपको इन्द्रासन में भेजा, फिर मैंने पूजा तैयार की। आप मेरी पूजा खा लीजिये। पीछे हमारा दुख पूछियेगा।

पृष्ठ 148-149

पंचों, जिस दिन की बात है उसके आगे का खेल सुनिये। खेत में खप्पर भर दिये गये। दुर्गा का मन मचल गया, वह खप्पर पर टूट पड़ीं। उन्हें पकड़-पकड़ कर चाटने लगी तथा उन्हें खेत और मैदान में फेंकने लगीं। जब वे सभी खप्परों को चाट गयीं तब वहां रोने लगीं। कहने लगीं—मेरे लाड़ले पुत्र, मेरी बात सुनो। तुमने मेरी भूख को, जो समाप्त हो चुकी थी, जगा दिया है मेरे तन में आग लगी गयी है। जल्दी मेरा पेट भरो नहीं तो कुशल नहीं है। ब्रती का बेटा देवकी नन्दन राजकुमार उठा। उसने हाथ में खड्ग ले लिया तथा बकरों का बलिदान करने लगा। जब छाक का अर्घ्य दे दिया गया तब भवानी वहाँ उपस्थित हो गयीं। बकरों पर टूट पड़ी। जब बीर उनकी गर्दन पर खड्ग मारता था तो उन्हें वह निगल जाती थी। दौड़-दौड़कर वह खून चूसने लगी।

बचे हिस्से को जोते हुए मैदान में फेंकने लगीं। सवा सौ पुष्ट और मासल बकरों को वह खा गयीं। सोलह सौ भैंसों को निगल गयी। अनगिनत बकरों को खा गयीं। जब समस्त रक्त वह चाट गयी तो दुर्गा रोने लगीं। मस्तक झुका कर कहने लगीं—मुझसे यह आधी भूख संभाल में नहीं आ रही है, पूरी भूख तो रोकी जा सकती है।

दुर्गा ने कहा—मुझे ललकार कर पूजा दो ताकि मेरा पेट भरे। नहीं तो मेरे शरीर में आग लगी हुई है। तब लोरिक ने अपनी जांघ में खड्ग मार दिया। उसमें रक्त की धारा बह चली। देवी लोरिक का खून पीने लगीं। अपने ओठ से उसकी जाँघ दबाने लगी। उसका सारा रक्त दुर्गा ने खींच लिया। बीर लोरिक धरती पर गिर पड़ा। सारा रक्त चाट कर दुर्गा कहने लगीं—मेरी बात सुनो। कुछ कुछ कमी रह गयी है मेरा मन अभी अतृप्त है। बेटा, यदि तुमने पूजा न दी होती तो संताप होता। तुम्हारा सब कुछ खिलाना अकारथ चला गया। मेरा पेट नहीं भरा। तब बीर ने सोचा, विचार किया। कहने लगा—

हे देव, हे नारायण, हे विधाता तुमने क्या किया। भवानी की पूजा में भले ही अब मेरा तन चला जाय [कोई चिंता नहीं।] उसने अपनी जीभ पकड़ ली, अपनी शिखा पर तेग रख दी। फिर खड्ग चला दिया। रुधिर की धारा बह चली जैसे गंगा की धारा अपना किनारा काट कर बही जा रही हो।

पृष्ठ 149-150

भवानी ओंठ लगा कर खून पीने लगी। फिर खून फच-फच मुंह से निकालने लगीं तथा उसे खेत पर फेंकने लगी। उनका हृदय तृप्त हो गया। वह अपनी चिट्ठुकी दबाने लगीं और खेत में जय-जयकार करने लगी। कहने लगीं-- बेटा, जैसे तुमने तेगा चलाकर रुधिर से मेरा पेट भर दिया वैसे ही रण मे जब लोहा लग जायेगा, युद्ध उग्र रूप धारण कर लेगा तब मैं तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करूँगी। जैसे बलिदान देकर तुमने मुझे पूजा दी है वैसे ही जहां तुम्हारा पसीना गिरेगा वहाँ मेरा खून गिरेगा। देवी यह कह कर लोरिक की जांघ पर बैठ गयीं। पूछने लगीं—तुमने हमें पूजा क्यों दी है ? व्रती खोइलनि का बेटा देवकी नन्दन राजकुमार हँस पड़ा। कहने लगा—

भइया, मेरी भवानी तुम धर्म का पक्ष लेती हो। मेरा भावज धाबिन ने साहवल में अगुवाई की है। बामरि के छै बेटे है। सभी दैव के लाल हे। छत्तीस हाथ का भाला पानी के पास गाड़ दिया गया है। देश में डुग्गी पिटवा दी गयी है। हलचल मचा दी गयी है। जातिपाँति का ध्यान नहीं रखा गया है उसने समस्त संसार को हाँक लगा दी है। जिसकी जाँघ में शक्ति बढ़ गया हो, भुजा में बल बढ़ गया हो, वह छाती पर ढाल धारण करेगा, दूल्हे का मार बँधवायेगा। हे दुर्गा, वहां एक दो की कौन बात कहे सारी वसुधा बारात करने आयेगी। जो मोती सगड़ के घाट पर भाला उखाड़ देगा और उसे फेंक देगा वह बावन बुर्ज का तम्बू भीटे पर गड़वायेगा। रेशम सूत की डोर बांधेगा। फिर पाली कनात खड़ा करवायेगा। आस-पास कुमकुमा होगा, काच के गोलों की मालाएँ होंगी। बीच में हंड़िया और गिलास का प्रकाश होगा, तेगों का बागीचा लगेगा। बर्छियों से मण्डप गाड़ा जायेगा। ढाल से ओसारा बनेगा।

इस मोती सागड़ पर बीर मोढ़े पर आसन ग्रहण करेगा। उसके हृदय मे अतिशय प्रसन्नता होगी। तब बीर गोमतंही लकड़ी बजायेगा, फिर विवाह के समय की लकड़ी बाजे पर बजायेगा। बमरी का बेटा भीमली इसको सुनेगा। अस्सी मन का मुगदर वह अपनी गर्दन पर उठा लेगा। पैर में मोजा पहनेगा। सुहवलि पार में गुलाबी पगड़ी बाँधेगा जिसमे एक ओर जीरा और लवंग ? फहरायेंगे। अलीगंज के जूते में लोहा जड़वा कर वह पहनेगा और मोती सगड़ के घाट आयेगा। भीमला की गर्जन से गेरुवा पहाड़ तक (आवाज जायेगी)।

पृष्ठ 150

यह लिखा है कि जो भीमली के शरीर का कलश धरवायेगा, उसके रुधिर से कोहबर पुतवा देगा। छाती का पीढ़ा गड़वाकर तलवार से उसकी जान ले लेगा। वही मौर धारण करेगा। जो भीमली का सामना कर सकेगा, वही सती से विवाह करेगा। हाय भवानी, लड़की सती के कारण छत्तीस वर्ण की कन्याएँ बाल कुँवारी पड़ी हुई हैं। भौजी ने गउरा से अगुवाई की है। मैंने अन्न न ग्रहण करने की शपथ ली है, जल भी मेरे लिए हराम है। मैंने यदि (विवाह के पहले) बीच में ही पानी पी लिया तो मैं कैरी और कपिला गाय के वध का अपराधी हूँगा। जब तक भिमलिया को मैं मारूँगा नहीं [तब तक ऐसा मेरा प्रण रहेगा] मेरे मुण्ड का कलश धरा जायेगा, अपने रुधिर से कोहबर पुतवा दूँगा। सतिया का झोंटा पकड़ूँगा और भावज का विवाह करूँगा।

हे देवी, सती के आँचल (खोंइछा) में जो चावल पड़ेगा उससे मैं आहार करूँगा। इधर खेत में दुर्गा ने अपनी छाती पीट ली। कहने लगी—हाय, यह क्या हुआ। यदि मैं जानती तो तुम्हारी पूजा नहीं लेती। मैंने गउरा में पूजा खायी, यह मेरे जीव का काल हो गया। तुमने जो बात कही है, जिस बीर का नाम तुमने लिया है वह नाम लेने योग्य नहीं है। तुमने सुहवल का नाम लिया है उससे मेरी छाती फटने लगी है। बीर भीमली का नाम लेने से आदि शक्ति भवानी रो रही हैं। सुहवलि का लोहा कठिन है। किसी के बूते से वह लोहा संभलेगा नहीं। इस बात को तुम छोड़ दो, इसे जहन्नुम में जाने दो। व्रती का बेटा लोरिक बोला—

भवानी आप धर्म का पक्ष लेती हैं। रमइया का साथ देती हैं। मैंने अन्न न खाने की शपथ ली है, जल न लेने का मन्दिर में व्रत लिया है, उसको हराम समझ लिया है। यदि प्रण पूरा करने के पहले ही मैंने पानी पी लिया तो कैरी कपिला गाय को मारूँगा। जब तक सतिया की शादी सम्पन्न नहीं करा लूँगा मैं कैसे अन्न ग्रहण करूँगा ? तुम धर्म का पक्ष लेती हो, मुझे जीवित रहने का लोभ नहीं है, न मरने का पछतावा होगा। आप गउरा में मेरा साथ पकड़िये, सोना सुहवली पाल चलिए। जिस दिन धरती पर रक्त की धारा गिरे आप इन्द्र के पावन द्वार पर जाइये। मेरा संग छोड़कर वहाँ घर के द्वार के बागीचे में बैठिये। पर यह जान लीजिए जगदम्बा आपने मेरा साथ पकड़ा है जब तक आप साथ रहेंगी तब तक सुहवलि में हमारा शरीर नाचता रहेगा, चलता रहेगा।

पृष्ठ 151-152

बारह वर्ष तक कुत्ता जीवित रहता है। सोलह साल तक सियार जीवित रहता है। अठारह वर्ष तक सूरमा जीता है। इससे अधिक जीना धिक्कार है। हे जगदम्बा, मुझे जीने की लालसा नहीं है, मरने का मुझे जरा भी पछतावा नहीं है।

पर आप मुझे सोहवल में लेकर चलिए। शेर जवान, लड़ाकू बीर गरज उठा। पंचों, आज जिस दिन की बात है उस दिन का बीर का हाल सुनिये। भाई भवानी कुरखेत (कुरुक्षेत्र) में रो रही हैं। लोरिक ने कहा—हाय माता, [इसके बाद सूत्र है : अन के किरिया····कपिला गाई', यह कई बार आया है] यदि आप मेरा साथ न देंगी और इन्द्र के पावन द्वार पर रहेंगी तो मैं नरक में पड़ जाऊँगा। हाय भवानी, क्या आप मेरा साथ नहीं देंगी!

देवी ने कहा—सोहवल के कुल के विरुद्ध नहीं। क्या तुम नहीं मानोगे? लोरिक ने कहा—भले ही मैं मर जाऊँ, जूझ जाऊँ। भवानी अगर हमारा संग छोड़ देंगी, इन्द्र के पावन द्वार पर चली जायेंगी तो मैं कुम्भी पाक नरक में चला जाऊँगा। मुझे जीने की लालसा नहीं है, मरने का जरा भी पछतावा नहीं है। दुर्गा ने कहा—जो मिट्टी गउरा में बोयी गयी वह सोना सुहवली में मिट्टी में मिल जायगी। लोरिक ने कहा—अच्छा ठीक है।

दुर्गा ने कहा—यह न समझो कि धर्म के लिए मैं सुहवल मोती सगड़ के घाट चली जाऊँगी। बच्चा, मैं तुमसे कह रहा हूँ, कान लगाकर सुनो। उस सती ने अपना गिधौरा पिड़ना पुर बाजार में भेजा है। वहाँ हिरिया जिरिया बंगालिनि रहती हैं, फिर कलवारिन रहती है जिसका नाम जासो है। स्त्री-चरित्र में तुम लीन रहते ही हो। कैसे पिड़नापुर से सिधौरा लेकर हम लोग मोती सगड़ के घाट आयेंगे?

पृष्ठ 152-153

तब व्रती खोइलनि का बेटा देवकी नन्दन राजकुमार लोरिक बोला—मेरी मैया जगदम्बा, मेरा जीव आपके धर्म पर ही आश्रित है। हमें पिड़नापुर ले चलिये। पिड़नापुर बाजार में मैं स्त्रियों की ओर नहीं देखूंगा, न तो उनकी झूलनी पर लुब्ध हूँगा। हे जगदम्बा, मैं आपका साथ पकड़ूंगा। मुझको पिड़नापुर ले चलिए। तब भवानी हँस पड़ीं। कहा—मैं तुम्हारा समस्त खेल समझती हूँ। तुम वहाँ बिल्कुल नहीं मानोगे। बेटा तुम कह रहे हो कि मैं स्त्री का आशिक नहीं हूँ। लेकिन मैं जानती हूँ कि तुम स्त्री के आशिक हो। पिड़नापुर में राज्य स्त्रियों का है, पुरुषों का नहीं। अगर तुम वहाँ लुब्ध हो जाओगे तो हमारी देह संकट में पड़ जाएगी। बीर ने कहा—

मेरी मैया भवानी, यह जीव तुम्हारे धर्म के सहारे है। जिस प्रकार भी तुम मुझे साधना चाहो, मेरी परीक्षा लेना चाहो, इस खेत में ले लो। वह कह रही हैं—अच्छा ठीक है। दुर्गा ने इधर इन्द्रासन वाला लंगोटा मांगा। इस लंगोटे में पीला रंग मिला हुआ है। पंचों, जब दुर्गा ने चलने के लिए कहा तब उन्होंने लंगोटा खींचकर लोरिक को बाँधा। उसकी लांग (कच्छ) को उलटकर बाँध दिया। उसमें मल्ल वर्ण की

गाँठ थी। उन्होंने नेटी खींच कर वाँध दी जिसमें गोला, लोहे का गोला अटल था। लोरिक का लंगोटा खुल नहीं सकता था, काटने से कट नहीं सकता था। देवी ने लोरिक को ब्रह्मचर्य का लंगोटा कस कर बाँध दिया।

पंचों, अब दुर्गा रथ हाँक रही है, उसमें बाघ और सिंह थे। वरुण और कुबेर उसमें बाँधे गये थे, नाधे गए थे। जगदम्बा उसमें बैठ गयी और साथ में लोरिक को बैठा लिया। देवी ने गउरा से रथ हाँका और वह पिड़नापुर बाजार चली। वह कहीं रास्ते में आसपास ठहरती नहीं थीं। सूर्य का गोला डूब गया, साँझ हो गयी। पहर भर रात चली गयी तब देवी पिड़नापुर बन में पहुँच गयी। फिर वहाँ के तालाब पर पहुँची। वहां बारह सौ मढ़ी और चौदह सौ भूत-वैताल खंजड़ी बजा रहे थे। यहाँ चुड़ैलों का नाच हो रहा था। जगदम्बा वहाँ काँप रही थीं, वह मोहिनी वन में प्रवेश कर गयी। उन्होंने लोरिक का बाल रूप बना कर वहाँ प्रवेश किया था। इधर दूतों की डुग्गी बज रही थी, नाच हो रहा था।

पृष्ठ 154

भवानी हर कोने में घूमने लगीं तथा वन को अच्छी तरह से काटने लगीं। चलते-चलते वह आधे जंगल में पहुँच गयीं। वहाँ वनसत्ती का चौरा था। दुर्गा ने उन्हें आवाज लगायी, बहिन। वनसत्ती की नींद टूट गयी। जैसे गाय बछड़े पर दौड़ती है उसी प्रकार वनसत्ती दुर्गा की ओर दौड़ीं। बहिन अच्छा किया कि तुम आ गयी। इन्द्रासन में बहुत दिनों से तुम्हारा साथ छूट गया था। काम पड़ने पर तुम आज आ गयीं। जब वह दौड़ कर आयीं तो गोद मे एक बच्चा दिखाई पड़ा। वनसत्ती ने अपनी छाती पीटी। मैं पूछ रही हूँ कि तुम किसका बच्चा लेकर चली हो ? जिसका लंगड़ा-लूला बेटा मर जाता है उसकी माँ कुआँ झांकती है।

हे बहिन, तुम किसका सुन्दर बच्चा लेकर यहाँ आयी हो। कल प्रातःकाल जब पूर्व में लालिमा छा जायेगी, पश्चिम में प्रकाश फैल जायगा। कौवे टेर लगाना शुरू करेंगे, भोर से बिहान हो जायगा तो हीरिया जिरिया बंगालिनि तथा जासो कलवारिन कमरू कमच्छा की विद्या चलायेगी तथा योगिनियों का नयन बाण मारेंगी। तुम्हारी तो जो गति होगी वह होगी ही, इस लड़के को अवश्य छीन लेंगी। इस बच्चे को यहाँ लाकर तुमने अच्छा काम नहीं किया है। यहां ये किसी को क्षण भर भी रहने नहीं देती हैं। तुम्हारी और इस लड़के की बात कौन कहे। ये कमरू कमच्छा की विद्या चलाती हैं तथा देवताओं को भी रोज दो घड़ी के लिए भेड़ा बनाती हैं। खप्पर में उन्हें चना खिलाती हैं और खप्पर में पानी पिलाती है।

तब भवानी गरज उठीं—उनका जगिया (जगदम्बा) नाम था। बहिन बनसत्ती तुम मेरी बात मानों, मैं अर्ज कर रही हूँ। तुम मुझे कोई ऐसा-वैसा मत समझो कि पिड़नापुर आ गयी हूँ। ऐ स्त्री, इस मोती सगड़ पर यह मेरा लाड़ला है। अधिक बात

मन करो, मेरा कहना मानो। तुम इसको अगोरो, इसकी रखवाली करो। मुझे पिड़नापुर जाने दो। वहां का मैं जरा खेलवाड़ देख लूं। मैं जल्दी लौट आऊँगी तो बच्चे को लौटा देना। ऐ वनसत्ती इस मोती सागड़ पर तुम खेल देखना।

पृष्ठ 155-156

तुम मुझे वह दुर्गा न समझो। अगर मैं असल भवानी हूँगी तो इस मोती सागड़ पर नंगे सबको नचाऊँगी, नहीं तो मेरा नाम वेश्या पड़ जायगा। पंचों, जिस दिन की बात है उस दिन का हाल सुनिये। दुर्गा बनसत्ती को साथ लेकर मोती सगड़ पर चढ़ गयी। बनसत्ती के जाने से वहाँ से भूत वैताल काँप कर भाग गये। वहाँ के बारह दंगली सागर छोड़कर जंगल में भाग खड़े हुए। अपूर्व शक्ति वाली दुर्गा वहाँ पहुँच गयीं। उन्होंने बनसत्ती से कहा—तुम्हें मैं अपनी थाती सौंप रही हूँ। इसकी रक्षा करो। बनसत्ती ने कहा—दो घड़ी की बात कौन, कहो मैं दो चार दिन तक तुम्हारे लड़के को सागर पर बचा दूँगी। तुम अपना कार्य करो। उन्होंने अपनी थाती (लोरिक) को सौंप दिया।

पंचों, जिस दिन की बात है उस दिन का पिड़नापुर का खेल देखिए। दुर्गा बनसत्ती का साथ छोड़कर पिड़नापुर बाजार गयीं। छै घड़ी रात चली गयी थी, ढलती रात में जगदम्बा वहाँ घूम गयीं। वहाँ स्त्रियाँ बंगले में सो रही थीं, बाहर लोग पहरा दे रहे थे। दुर्गा ने दूर से ही देखा। वहाँ कोई बड़ेरी (घर की छत) पर काँख रहा है, कोई अनाथ बच्चों को पकड़े हुए है। देवी ने सबको पहरा देते हुए देखा। उन्होंने कहा—हे दैव, हे नारायण, हे विधाता, तुमने क्या प्रकट कर दिया। अब तो जादूगरों से भेंट होगी। ये पहरेदार हमारी जान नहीं छोड़ेंगे।

पंचों, भवानी बड़े संकट में पड़ गयी थी। ये जादू चलाने वाले किसी अनाथ पर बिल्ली जैसा आक्रमण कर रहे हैं। कोई खपरैल पर नाच रहा है। कोई नीचे पहरा दे रहा है। भवानी ने चार बार किले की परिक्रमा की। किले में किसी प्रकार प्रवेश करने की गुंजाइश नहीं थी। पचो, अब जगदम्बा का खेल सुनिये। देवी संकट में है। वह चलती चली गयीं। एक शंकर का मन्दिर बना हुआ था। शंकर को वहाँ जल चढ़ता था। उसके लिए नाली बनी थी। भवानी को वहीं थोड़ी खाली जगह मिली। पंचों, कान लगाकर सुनिये। मच्छर का रूप धारण कर भवानी नाली में प्रवेश कर गयीं, फिर ड्योढ़ी पर चली गयी। ज्योंही वह ड्योढ़ी से गुजरीं, वहाँ एक फुलवारी लगी हुई थी।

पृष्ठ 156-157

शंकर के मन्दिर की फुलवारी में अरुवा-मरुवा फूल थे। एक ओर तिखड़ी के फूल खिले हुए थे, दूसरी ओर गुलाब के फूल उगे हुए थे। फूल लहलहा रहे थे।

हीरिया, जिरिया बंगालिन तथा जासो कलवारिन वहाँ शंकर की पूजा करती थीं। जगदम्बा वहाँ पहुँच गयीं। वह फूलों की सुगंध लेने लगीं। देवी फूलों पर मोहित हो गयीं। फिर कहने लगीं— मैंने दुष्ट लोरिक की पूजा ली है, यह मेरे जीव का काल हो गया है। यदि मैंने पूजा न स्वीकार की होती तो मैं फूलों का वास लेती, और तृप्त हो गयी होती। कुछ देर बीता कि भवानी ने फुलवारी छोड़ दी। कहने लगीं मेरे बेटे ने पूजा दी है। अगर मैं यहाँ बैठी रह जाऊँगी तो बनसत्ती, जो सागर पर बैठी हुई हैं, कहेंगी कि मैं अपने मन से वेश्या बन गयी हूँ। फिर भवानी साव-धान हो गयीं तथा दूसरी ड्योढ़ी में वह प्रवेश कर गयीं। फिर आँगन में चली गयीं। वहाँ सात सेविकाएँ घड़ा भर-भर कर जल रखे हुए थीं। ज्योंही जसुई की नींद खुलती थी तो वह सात घड़े बासी और सात घड़े ताजे जल से नहाती थीं। जसुई आज ड्योढ़ी में सोयी हुई थी। आँगन में भरे हुए घड़े पड़े थे।

पंचों, भवानी अब अपने मन में कुछ सोचने लगीं, फिर सातों घड़ों को ढुलका दिया। घड़ों के पानी से कुछ स्त्रियों का अधः-भाग भीग गया, किसी का फुरहुर भीग गया। वे चौंक कर उठीं और आपस में कहने लगीं, बुजरो, तुमने मूत्र करके मेरी साड़ी खराब कर दी है। उनका आपस में झगड़ा शुरू हो गया। दुरगा उनका तमाशा देखकर आँगन में हँसने लगीं। स्त्रियाँ आपस में झगड़ने लगीं। तुमने अधिक माँड पीकर मेरा शरीर खराब कर दिया है। भवानी ने एक स्त्री का सिर घड़े की ओर फेर दिया। घड़े की ओर जब नज़र गयी तो उसने कहा—क्यों व्यर्थ में तुम लोग झगड़ रही हो। देखो वहाँ घड़े ढुलके हुए पड़े हैं।

पृष्ठ 157-158

जल्दी चलो, घड़ों को तैयार करो, नहीं तो भोर होने पर जसुई हम लोगों की जान नहीं छोड़ेगी। स्त्रियाँ घड़ों को तैयार करने लगीं और दुर्गा किले का रास्ता पकड़कर मोती सगड़ के घाट पर चली गयीं। बनसत्ती ने कहा—बहिन, अब तुम मेरा बच्चा दे दो। मेरा कार्य हो गया। बनसत्ती उठकर वहाँ से अपने स्थान को चली गयीं। भवानी ने बीर लोरिक को योगी रूप बना दिया। वह अच्छी उम्र का गेहुवें रंग का बन गया। उसके सिर का सब्ज बाल सुशोभित हो गया। आँख और मुँह उसका चिकना और ढला हुआ था। वह ढीली-ढाली धोती पहने हुए था। उसकी कमर में डांड़ा (करधनी) लटक रहा था। उसके मुख का दाँत दूध के दाँत की तरह सुशोभित था। उसकी पिंडलियाँ पतली थीं, गर्दन काली सी थी, छाती हाथी के वर्ण की थी जैसे धोबी के पाट पर पीटी गयी हो, उसकी जाँघे सुघड़ थीं जैसे केले का पेड़।

मोती सगड़ के घाट पर लड़के का रोब छा गया। बीर लोरिक बहुत सुन्दर था। फिर दुर्गा जिनमें अपार शक्ति थी, उसके सिर पर बैठ गयीं। रानियों ने जब

घड़ा उठाया तो सावन की कजली का स्वर छेड़ा। गाते हुए वह जल लेकर चलीं तो घड़े आकाश में उड़ गये। बेठन स्वर अलापने लगे। वे हवाई जहाज की तरह आवाज करने लगे। भवानी ने लोरिक से कहा—बेटा तुमको बार-बार मना कर रही थी, तुमने मेरी बात नहीं मानी।

अब पिड़नापुर में मोती सगड़ के घाट का खेल देखो। जब उसने ऊपर सिर उठाया तो घड़े नाद कर रहे थे, गरज रहे थे। नीचे स्त्रियाँ ताल बजा-बजा कर गाना गा रही थीं। लोरिक जाकर देवी के आँचल में छिप गया। मैं तो जानता था कि भीमलों से सुहवलि पाल में लड़ाई होगी। ऐसा खेल तो हमने मृत्युलोक में कभी नहीं देखा। ये तो मिट्टी का घड़ा उड़ा रही है, मेरा शरीर भी उड़ा देंगी। मोती सगड़ पर दोनों की जाँघें काँप रही हैं। दुर्गा ने मुँह दबाया, नीचे सिर कर लिया। मुकुट उतार कर वह मोती सगड़ पर बैठ गयीं। लोरिक तुलसी की माला फेरने लगा। दुर्गा ने वहाँ माया की धूनी रमा दी। अब पंचों सुहवल का खेल सुनिये। गायकों को इससे सुन्दर फल मिलता है।

पृष्ठ 159-160

गायक लोग सीधी सड़क पकड़कर मोती सगड़ के घाट चले जाते हैं। भाइयों, सचमुच सुहवल का गाना कठिन है। शूरमा लोरिक का यह पहला भारथ (युद्ध) है। दुर्गा का खेल देखिये। लोरिक को वह योगी बनाकर बैठी है। तब तक सात सेविकाएँ उपस्थित हो गयी। भीटे पर वे जल भरने लगीं। जब उन्होंने अपना बेठन सिर पर रख लिया तब तक दुर्गा ने अपनी सारंगी बजाना शुरू कर दिया। उसमें से बत्तीस राग निकलने लगे। लड़कियों का सिर उधर घूम गया। कहने लगीं—अरे उधर देखो, धूनी रमी हुई है। एक योगी वहाँ है, चलो चलें। वे योगी के पास पहुँच गयी। योगी को देखकर मोतीसगड़ पर उनकी बुझी हुई हृदय की आग धधक उठी। उनका कलेजा रस से भिन गया, उन पर महुवे का नशा चढ़ गया। उनकी गोद की चोली फैलने लगी। कहने लगीं इस योगी ने तो हमारे हृदय की बुझी आग जगा दी। अब चैन नही पड़ेगा।

उन्होंने कहा- योगी बाबा जरा अपना सिर उठाइये, हम लोगों की ओर देखिये। नयन से नयन मिला लीजिये ताकि हम लोगों की आकाँक्षा पूरी हो जाय। जब सेविकाओं ने इतना कहा तो योगी ने और माला खटखटाना शुरू किया। उन्होंने डाँटकर कहा—तुम जितनी माला खटखटा रहे हो उतना ही हमारे कलेजे को घाव लग रहा है। जरा ठीक से हमारी ओर देख लो। यदि नहीं देखोगे तो समझ लो हम तुम्हें माला नहीं खटखटाने देंगे। न योगी रहने देंगे। हम लोग कंवरू कमच्छा की विद्या चलायेंगे। योगिनियों की तरह नयन-बाण मारेंगे और आदमी का तन छुड़ाकर तुम्हें भेड़ा बना देंगे, फिर गले में रस्सी डालकर तुम्हें

पिड़नापुर बाजार ले चलेंगे। दिन भर खप्पर में पानी पिलायेंगे, खप्पर में खाना देंगे, तथा तुम्हें खूब पीटेंगे, सर्वभोगी बना देंगे, वहाँ तुम 'नहीं' नहीं कह सकोगे। तुम ठीक से यहाँ देखो, नहीं तो निश्चित ही तुम्हें सर्वभोगी बना देंगे।

पृष्ठ 160-161

वहाँ योगी (लोरिक) के सिर पर जगदम्बा बैठी हुई थीं। उन्होंने बीर का सिर झुका दिया। करधनी दबा दी। स्त्रियाँ उसे अधिकाधिक भय दिखाने लगीं पर उसने अपना सिर नहीं उठाया। वे चारों ओर घूम कर कहती थीं—ज़रा हमारी ओर ताको। हमारी ओर देखने में तुम्हारा क्या लगता है ? तुम नहीं देखोगे तो तुम्हारी सांसत होगी। उसके सिर पर भवानी बैठी हुई थीं जिनका नाम अपर बल था। स्त्रियाँ सागड पर योगी को बार-बार देखती थीं, पर बीर अपना सिर नहीं उठाता था। तब उन्होंने आपस में कहा कि हम लोग इस पर कंवरू कमच्छा की विद्या मारें, योगिन का नयन बाण चलावें और इसको भेड़ा बना लें। इसको दिन भर सागड़ में जल पिलावें तथा खप्पर में चना चबवावें। रात को इसको हम लोग सर्व भोगी बनालें। उन्होंने अपनी विद्या छोड़ी। योगी पर अपनी माया फेंकी। पर आज भवानी प्रसन्न थी। दुर्गा वहाँ नाच रही थीं और इनकी जादू को वह नष्ट कर देती थीं।

स्त्रियाँ परेशान हो गयी। उनकी विद्या असफल हो गयी। उनमें से किसी ने कहा— चलो हम अपनी ठकुराईन को ले आयें। छै स्त्रियाँ हार मानकर पिड़नापुर बाजार मे गयी, जहाँ पिड़नापुर बाजार मे अपने बंगले मे हिरिया सो रही थी। उन्होंने कहा---हे मलकिन, हम उस चरित्र को क्या कहें जिसको आँखों से देखा है। हम लोगों के सारे घड़े ढुलक गये थे। फिर जब घड़े में पानी लेने के लिए हम लोगों का मन हुआ तो हम लोगों ने एक योगी को देखा जिसकी शोभा अकथनीय है। उसने ऐसी सारंगी बजायी जिसमें छत्तीस राग निकल रहे थे। जब तक सारंगी बज रही थी हम लोगों के कलेजे में आग सुलग रही थी। नजर उठाकर हम लोगों ने देखा तो देखा कि एक सुन्दर योगी है।

वह बारह वर्ष के गभरू और सोलह वर्ष के पहलवान के भाँति है। उसकी अंगुलियाँ पतली-पतली हैं, उस पर मुद्रिका है। उसकी कटि सुन्दर है। उसकी छाती गज वर्ण है जैसे धोबी का पाट हो। उस लड़के का रोब ऐसा था जैसे पलीता-रोशनी जल रही हो। उसका मस्तक महुवा जैसा सुन्दर है, उसके मुख से गुलाब का इत्र झर रहा है। हे ठकुराइन, हम लोग कहाँ तक वर्णन करें, उसका रोब देख कर हमारी छाती फटने लगी।

पृष्ठ 162-163

हम लोगों ने कहा कि हमारी ओर देखो तो वह माला जोर से खटखटाने

लगा। जैसे ही वह माला फेर रहा था वैसे ही हमारे कलेजे में चोट लग रही थी, आग धधक रही थी। हमने उससे कहा जैसे हम लोग तुम्हारा मुँह देख रहे हैं वैसे ही तुम हमारा मुँह देखो, नजर से नज़र मिला लो ताकि हमारी तृष्णा बुझ जाय। हे मलिकनि, उसने ज़रा भी हमारी प्रार्थना (अर्ज़दास्त) नहीं सुनी। ऐसी बातें हुई कि हमारे जादू का भी उस पर असर नहीं हुआ। तब हम लोग यहाँ आये हैं। सहुआ की बेटी जमुई ने जब यह बात सुनी तो कहने लगी - तुम लोगों ने हमारी बुझी हुई हृदय की आग धधका दी है। योगी की बात कौन कहे, मैं देवताओं को भी भेड़ा बना दूंगी।

अब मैं सागर पर चलूंगी। जरा तुम लोग तीसरी ड्योढ़ी में सोई हुई हीरिया जिरिया को जगा लाओ। हम तीनों मिलजुल कर सागड़ पर चलेंगे। सेविकाओं ने पिड़नापुर में आग लगा दी है। जमुई बेचैन-सी हो उठी है। सेविकाएँ हीरिया जिरिया जासो कलवारिन के साथ यहाँ पहुँचीं। कहने लगी कि तुम लोग सोयी हो। यहाँ एक योगी आया है। वे दोनों जल्दी ही जादू का झोला लेकर (जासो) जमुई के यहाँ पहुँची। जमुई ने कहा—हे सखियों, हीरिया जिरिया, एक ऐसा योगी भींटे पर आया है कि सेविकाएँ उसकी प्रशंसा कर रही हैं।

उसके रौब का योगी संसार में नहीं है। चलें अगर वह अपनी इच्छा से आने को तैयार हो जाय तो उसे लाया जाय और नहीं तो कंवरू कमच्छा की विद्या मारकर, आदमी का तन छुड़ाकर उसे भेड़ा बना देंगे। दिन भर उसको भेड़ा बनायेंगे और रात में आदमी बना देंगे। उसके साथ अपने-अपने हिस्से के मुताबिक खाट पर आनन्द उठायेंगे। बारी-बारी से आनन्द उठाने का जो हम लोग बंटवारा कर लेंगे तो उसमें मतभेद नहीं होगा। लेकिन चलकर उसकी माला तोड़ दें। चलो मोती सगड़ के घाट चलें।

पृष्ठ 163-164

पंचों, जिस दिन की बात है उस दिन का पिड़नापुर का हाल सुनिए। स्त्रियाँ आँगन में बैठ गयीं तथा श्रृङ्गार करने लगीं। वे अपने केश में मोती गूँथने लगीं। अपने ललाट के सामने हीरे जड़ने लगीं। उनकी अरघी ? सोने की थी, उनमें सोने का तार खींचा गया था। उनकी झबिया लटक रही थी। उनकी कमर में करधनी थी। हलका उनकी छाती पर लटक रहा था। गंगा-जमुनी की हंसुली उन्होंने अपनी गर्दन में पहन ली थी। उनके नूपुर बज रहे थे। उनकी अंगुठियाँ चमक रही थीं। उनके छिद्रों में बिंदियाँ लगी हुई थीं। उन्होंने मखमल की चोलियाँ पहन लीं जिनमें बयार का मंद-मंद स्पंदन हो रहा था।

उन्होंने छींट पहन ली जिनमें छप्पन हजार पंखी लगे हुए थे (चिड़ियाँ बनी हुई थीं)। उनके आंचल पर मोर विराज रहे थे। बगल में कोयल कुहुक रही थी। ताशबद्दर की चद्दर उन्होंने अपने शरीर पर डाल रखी थी, जिसमें सूर्य की ज्योति

लगी थी। बायें चंद्रमा उगा हुआ था। सखियों का झुंड निकला। उन्होंने पिड़नापुर गाँव छोड़कर घाट के लिए प्रस्थान किया। किसी ने सावन की कजरी छेड़ी, किसी ने लहरा छेड़ा। सब स्त्रियाँ पहपट गा रही थीं। वे रास्ता पकड़कर मोती सगड़ के घाट पहुँच गयीं। उन्होंने अपना गाना बंद किया। योगी की सूरत देखकर वे आश्चर्यचकित हो गयीं। वीर तुलसी की माला फेर रहा था। योगी को भवानी धारण किये हुए थीं।

पृष्ठ 165-166

वीर हमेशा तुलसी की माला जपता था तथा माँ दुर्गा पर ध्यान लगाये हुए था। ऊपर जगदम्बा बैठी हुई थीं। इसी बीच हीरिया जिरिया बंगालिन तथा जासो कलवारिन पहुँच गयीं। कहने लगीं—ऐ योगी, सुनो, अगर अपनी इज्जत बचाना चाहते हो तो हमारी ओर सिर उठाकर देखो। जब-जब तुम माला फेरते हो तब-तब हमारे हृदय में चोट लगती है। सद्व्यवहार करो, हमारी ओर देखो, हम लोग यहाँ आये हैं। हमारी अद्भुत सुंदरता देखो, नहीं तो हम तुम्हें दिन में भेड़ा बना देंगे। संध्या समय तुम्हारे लिए शैया बिछा देंगे। न तुम्हारा योग रहेगा, न तुम माला जप सकोगे। हम लोग तुम्हें सर्वभोगी बना देंगे।

इसके बाद भी वीर ने उनकी ओर न देखा। अपना सिर झुका लिया। जितनी ही जादूगरिनें उसे डरवा रही थीं वह उतनी ही माला जपता रहता था। वे योगी पर कामरूप और कामाख्या देवी का जादू मार रही है। भवानी उनकी विद्या को गेंद की भाँति फेंक रही हैं। जितना जादू चल रहा था दुर्गा उसको अपने हाथों में ले लेती थी। उनका सारा जादू भंग कर वह सागड़ पर डुबा देती थीं। रानियाँ स्तब्ध हो गयी कि योगी पर जादू का प्रभाव नहीं पड़ा।

यह जब बच्चा था तभी कामरूप मे कामाख्या देवी के मंदिर मे गया था। हम लोगों की सारी विद्या इसने काट दी। हम लोगो की बुझी हुई आग को इसने खोद-खोदकर जगा दिया। हम लोगों को चैन नहीं मिलेगा। चलो हम लोग साड़ी खोलकर सागड़ पर नहाये। हीरिया जिरा बंगालिनि तथा अन्य सभी स्त्रियों ने भींटे पर अपने सारे वस्त्र उतार कर रख दिये, फिर जल में प्रवेश कर गयी, जमकर स्नान करने लगीं। उन्होंने जादू से वहाँ नौका बना दी। फिर वे नौका-विहार करने लगीं।

दुर्गा ने लोरिक को ललकारकर कहा—अब डर खत्म हो गया। बेटा, स्त्रियों का चीर लूट लो। लोरिक कहने लगा—हे भवानी, तुम्हारा धर्म का पक्ष है। यदि यहाँ मैं स्त्रियों के कपड़े उठाऊँगा तो मेरा बल घट जायेगा। फिर भीमला से कौन युद्ध करेगा। अपर बल भवानी हंसने लगीं। बेटा तुम पागल हो गये। तुम्हारी बुद्धि मंद पड़ गयी। भवानी ने उसके लिए धनुष बनाया और उसमे तीर लगा दिया।

कहा—बेटा वस्त्र को हाथ से मत स्पर्श करो । इस तीर मे लपेट-लपेट कर सारे कपडे लाओ । लोरिक स्त्रियो का वस्त्र लूटने चला जैसे कृष्ण ब्रज मे लूटने चले थे ।

पृष्ठ 167

बीर उसी प्रकार चीर लूटने चला । उसने हाथ मे धनुष ले लिया तथा सारे कपडो को तीर मे लपेटकर उठा लिया तथा उनका ढेर लगा दिया । दुर्गा मोती सागड के घाट पर बैठी हुई है । देवा ने धरती से कहा- हे धरती, अब फट जाओ । धरती वहाँ फट गयी जहाँ योगी ने मृगछाला बिछाया था । मृगछाला के नीचे फटी हुई धरती मे देवी सो गयी । उसमे उन्होंने कपडो को ठूँस दिया । मृगछाला उस पर पडा हुआ था । योगी माला फेर रहा था । सखियाँ इधर नौका विहार कर रही थी । धरती को दुर्गा ने कपडे सौप दिये थे ।

प्रात: काल हो गया, पूर्व मे पक्षी बोल उठे । स्त्रियो ने कहा चलो कपड़ा बदले नहीं तो दिन साफ हो जायगा । सखियो ने नाव छोड दी तथा मोती सागड के घाट पर चढ गयी । पर वहाँ तो कपडे थे ही नहीं । हाय दादा, कौन ऐसा चोर लगा था जिसने हमारे कपडो को चुरा लिया । उसमे से किसी ने कहा—शायद योगी हो । दूसरे ने कहा—हाय दादा, तुमने क्या कहा ।

पृष्ठ 168-169

तुम्हारे बुलवाने पर वह योगी नही बोलता, वह साड़ी लूटेगा । जोगी तो वही बैठा है जहाँ बैठा हुआ था । कौन सा चोर है जिसने वस्त्र चुराये है । हम लोग तो इस मोती सागड के घाट पर नगे हो गये है । भाइयो, अब पुरइनि के पत्तो को आधा पीछे और आधा आगे करके जल्दी-जल्दी अपना शरीर ढँकने लगी, उन्होने कहा यह तो बडी दुर्गति हो गयी । हीरिया जिरिया ने कहा—यदि कोई ले गया होगा तो पृथ्वी के अन्दर ही तो ले गया होगा । सखियो तुम लोग धैर्य धरो ।

हीरिया जिरिया बगालिनि ने कामरूप कामाख्या की विद्या तथा योगिनी का नयन बाण (नयना जोगिन के बान) मारा । उनकी विद्या सफल हो गयी, बाणासुर की विद्या आकाश मे गयी । उसने जाकर सूर्य का रथ रोक दिया । अब हीरिया जिरिया की विद्या ने जाकर सूर्य नारायण से सारा हाल कहा कि हमारी सेविकाओं का वस्त्र कोई चोर हर ले गया है । नारायण ने कहा - यदि आकाश मे चोर वस्त्रों को लाया होता तो मै जानता । तुम्हारी चोरी धरती के अदर हुई है । उसका हाल शेषनाग जानते है । चोर हमारे राज्य मे नही आया है । वे अपना दुख सूर्य भगवान से रो रही हैं और कह रही है आप थोडी देर रुक जाइये । यदि आप प्रकट हो जायंगे तो मेरी चेलियों का तन दुनिया देखेगी ।

वह सूर्य भगवान के आगे रो रही है । हे नारायण, हमारा धर्म कर्म आपके हाथ मे है । अब हीरिया जिरिया की विद्या, जादू मोती सगड़ के घाट आ गयी ।

वह फिर पाताल लोक गयी। वहाँ नाग सो रहे थे, नागिन पंखा झल रही थी। हीरिया की विद्या (जादू) ने कहा अपने पति को जगाओ। हमें काम है। हमारी चेलियाँ मोती सागड़ के घाट पर नंगी बैठी हुई हैं। सोता हुआ नाग जग गया।

पृष्ठ 170-171

विद्या (जादू) ने कहा—नाग बाबा मेरी बात मानिये। मैं कहाँ तक कहूँ, सागर पर एक जोगी बैठा है। उस पर हमारी अक्ल काम नहीं कर रही है। हमारी चेलियाँ नौका-विहार कर रही थी तब किसी चोर ने हमारी चेलियों के वस्त्र चुरा लिये। तब नाग ने कहा—उस योगी को योगी मत जानो। उसके कारण मेरा शरीर भी अलसा गया है। मैं तुम्हारे चट्टे का हाल कहता हूँ।

उत्तर मे देवहा बह रही है। दक्षिण में गंगा ललकार रही हैं। बीच में सरयू का झील है। बलिया मे मुहाना है। भटपुर और बिह्यिापुर सीमा है बलिया की। वहाँ बरम्हाइन का ऊंचा चौरा है। नीचे गउरा गढ़पाल है। वहाँ तिरपन बाजार लगते हैं। उत्तर टोले में वहाँ ब्राह्मण रहते है, दक्षिण में वहाँ कोइरी बसते है। पश्चिमी ओर वहाँ जुलाहे है, मुगल और पैठान भी वहाँ हैं। वहाँ हंस-हंसिनी की जोड़ी है। एक का नाम लोरिक है और दूसरे का नाम सावर है। वह लोरिक आइन डाइन नहीं पूजता है, न भूत वैताल को पूजता है। वह ब्रह्मा की बहिन दुर्गा को पूजता है। वह क्षण में मृत्यु लोक में रहती है, क्षण में इन्द्र के पावन द्वार पर जाती हैं।

सोना मुहवल में शूरमा ने बीड़ा उठाया है। सत्ती के सिधौरे के कारण जिसको हीरिया ले गयी है, मोती सगड़ के घाट पर उसको दुर्गा लेकर टिकी हुई है। उसी योगी ने वस्त्र लूटे हैं। दुर्गा ने उन्हें लुटवाया है। उसी से जाकर प्रार्थना करो तब तुम्हारा दुख कम होगा। नहीं तो तुम्हारा दुख कम नहीं होगा। तुम्हारे ऊपर क्या विपत्ति पड़ी है। जब मुहवलि पर चढ़ाई होगी उस समय मेरी बड़ी दुर्गति होगी। उसी वीर का यह दबाव है कि मेरी छाती कड़क रही है। तुम्हारे ऊपर जितनी विपत्ति है उससे चौगुनी अधिक विपत्ति मुझ पर है। इस बार मेरी बड़ी दुर्गति होगी। हे जादू, मैं तुम्हें क्या हाल बताऊँ। मैंने तुम्हारे चोट्टे को बता दिया है।

पृष्ठ 171-172

जब चोर का पता चल गया तो जादू ने यम की तलवार छोड़ दी। फिर वहाँ से चला जहाँ हीरिया जिरिया बंगालिनि और जमुई कलवारिन थीं। उन्होंने जादू से सब समाचार पूछा। उसने कहा—क्या हाल पूछ रही हो? वह योगी नहीं है। वह गउरा का अहीर है, जिसके साथ में आदि शक्ति भवानी हैं। तुममें शक्ति है तो जाकर कपड़े ले लो। जमुई ने कहा मुझको यह सिधौरा कुरेद-कुरेद कर खा रहा है। सती ने अपनी सारी यहाँ रख दी। इसी कारण हमारे पति हमें छोड़कर भाग गये।

इधर हीरिया जिरिया तथा अन्य सभी स्त्रियाँ पुरइनि के पत्तों से अपना शरीर ढंककर योगी के पास जाकर हाथ जोड़ने लगीं। कहने लगीं—हे सुघर, हे बाबू आज तुमसे हम लोग कह रहे हैं। हम लोग तुम्हारा हाल नहीं जानते थे, बरबस हमने तुम्हें रिझा दिया।

हमारी बात मानो और हमारा वस्त्र दे दो। हम लोग चलकर सती का अमर सिंधौरा दे देंगे। जब स्त्रियों ने ऐसा कहा तो भवानी तड़प उठी, जीभ दबाने लगीं। पर बीर स्त्रियां की बात सुनकर प्रसन्न हो उठा और उन्हें वस्त्र नीचे से निकाल-निकाल कर दे दिया। भवानी दूर जाकर बिदक गयी। रोने लगी कि मैं बारबार इसे मना कर रही हूँ यह हमारा सुग्गा तो स्त्रियों पर लुब्ध हो गया। पंचों, भवानी रो रही हैं। लोरिक सखियों से हंसी और मजाक करने लगा। भवानी अलग हटकर अक्ल लगा रही हैं। सखियाँ लोरिक से कह रही है, चलो। कपड़े पहनकर तथा देह में आभूषण डालकर वे चलीं। सखियाँ झुंड बनाकर गले मे गला मिलाकर चली। उन्होंने चारों ओर से बीर को घेर लिया था। जैसे कृष्ण कन्हैया गोपियों के सामने यमुना तट पर प्रकट हुए थे वैसे ही लोरिक उनके सामने प्रकट हुआ, उनसे मिला। वे सभी पिड़नापुर बाजार चले। आगे वीर लोरिक था। पीछे जगदम्बा रो रही थी। हाय यह तो मेरा सुग्गा मेरा पक्षी उड़ गया।

पृष्ठ 173-174

लोरिक स्त्रियों की झुलनी पर लुब्ध हो गया। पिड़नापुर मे मेरी मिट्टी (शरीर) अब संकट में पड़ गयी है दुर्गा ने कहा सखियों ने लोरिक से कहा—एक बार विधाता हमारा सोचा हुआ पूरा कर देता। जब सतिया की शादी हो जायगी तो कहेगी कि हमारा बाबू पिड़नापुर गया था किन्तु उसका स्वागत नहीं किया गया। हम लोग तुम्हारा सिंधौरा तो दे देंगे पर कुछ स्वागत भी करेंगे। बबुआ, तुम्हारी दुर्गा की क्या पूजा है बताओ—लोरिक ने कहा—मेरी दुर्गा की पूजा लम्बी है, किसी के बूते में नहीं है उनको पूजा देना। एक हल्की पूजा यह है कि भट्ठी पर मैं उनको दारू पिलाता हूँ। सखियों ने कहा—ठीक है। सखियों ने रेशम के सूत की खटिया पर तोशक लगा दिया।

मुसुरुम का बिछावना और गलीचा सज गया। सखियों ने लोरिक से उस पर बैठ जाने के लिए कहा। किसी ने उसका पैर धोया, कोई जल लेकर आयी, कोई मीठा लेकर आयी और कहा बाबू जलपान कर लो। इसके बाद हम लोग भवानी के लिए भी कुछ उद्योग करेंगे। लोरिक ने कहा—तुम लोग ठीक कह रही हो। लेकिन मैंने अन्न न खाने की शपथ ली है। इसके बाद सूत्र है [अनके किरिया खइली……… नरक की गाड़ी।] दुर्गा के लिए हीरिया जिरिया ने सात भट्ठियाँ पीड़नापुर में फुंक-

वायीं। उसमें शराब चुवाने लगीं। महुआ और लौंग का दारू चुवाया गया। हीरिया जिरिया तथा जासो कलवारिन ने तब लोरिक से कहा—चलो भट्ठी पर तैयार हो जाओ। भवानी को पूजा दो, फिर हम लोग सिधौरा दें और तुम गजन-गउर गढ़पाल चले जाओ।

इधर दुर्गा का मन डिग गया। वह मद पर टूट पड़ीं। पिड़नापुर में वह सात भट्ठियों का मद पी गयीं। उनको नशा छा गया। लोरिक का साथ उन्होंने छोड़ दिया। वह नशे में चूर होकर इन्द्रपुरी में पहुँच गयी, वहाँ सो गयीं। इधर लोरिक ने दारू माँगा तो स्त्रियों ने कहा हम तुम्हें मद नहीं देंगे। जैसे तुमने सागर पर हमें रिझाया है वैसे ही अब हम तुमको रिझायेंगे। तुमको हीरिया, जिरिया, जमुई के साथ बारी-बारी से बिहार करना ही पड़ेगा। जब उनसे फुर्सत पाओगे तब दासियों की इच्छा पूरी करनी होगी। शेरनी का बेटा क्रुद्ध हुआ। खाट से नीचे धरती पर उतर आया। तुम लोगों ने भवानी की आशा तोड़ दी मैं अब यहाँ अकेला हूँ। जैसे भवानी की तृष्णा, आशा टूटी है उसी प्रकार हम तुम्हारी आशा तोड़ेंगे।

पृष्ठ 175-176

हीरिया ने कहा—तुम सेज पर नहीं सोओगे तो उठो। हम तुम्हें सिधौरा दे देंगे। दूसरी रात को जिरिया उसको अपनी हवेली में ले गयी और उससे कहा कि मेरा मन रख दो। वीर बघेला ने अपना हाथ झाड़ दिया और बिगड़ उठा। खबरदार, मेरा शरीर मत छुवो। उसने कहा—मुझसे सहमत हो कर सो जाओ नहीं तो कल मैं तुझे बहुत सताऊँगी। लोरिक ने कहा—मैं तुम्हारे पास नहीं सोऊँगा और न झुलनी की बहार लूटूँगा। इसी विवाद में रात बीत गयी। बीर पलंग पर नहीं बैठा। पूर्व में लालिमा छा गयी, पश्चिम में प्रकाश फैलने लगा। कौवों ने टेर उठायी, भोर बिहान में बदलने लगा।

उसने कमरू कमच्छा की विद्या चलायी तथा नयना जोगिन का बाण मारा तथा लोरिक को सुग्गा बना दिया। उसने सुग्गे को फिर आदमी बना दिया। लोटे में जल लेकर, फूलों की सेज डाल कर, दीपक जला कर वह कहने लगी। यह जल लेकर हाथ पैर धोवो, भोजन कर लो। सेज पर मेरे साथ सोओ। उसने इनकार कर दिया। उसने कहा—दुर्गा का कहा हुआ मैं भूल गया। पिड़नापुर में मेरा अवसर चूक गया। तुम शत्रु हो गयी हो पर जैसे तुमने मेरी भवानी की आशा तोड़ी है वैसे ही मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण नहीं करूँगा। जिरिया लगी रही पर वीर ने हाँ नहीं कहा। वह बयालिस हाथ कूद गया, आँगन में बैठ गया। तीसरी बार जमुई की पारी आयी। जमुई उसे आँगन में ले गयी। भोजन बनाकर, खानपान करके उसने कामरूप कामाछा की विद्या चलायी, जादू मारा, नयना जोगिन का बाण मारा। उसने सुग्गा से आदमी बना दिया। उसने कहा—मैं तुम्हें कल सिधौरा दे दूँगी अगर तुम मेरा मन रख दो।

पृष्ठ 176-177

लोरिक ने कहा नहीं दोगी। उसने कहा नहीं। पंचों, अब पंवारा कहाँ तक कहूँ। यह पंवारा कहने से समाप्त नहीं होगा। अब सबकी दूसरी बारी आ गयी। सात दिन बीत गये। पिड़नापुर में बीर की आशा टूट गयी। भवानी ने संग छोड़ दिया। वह अब मेरी सहायता नहीं करेंगी। अब मेरी अक्ल काम नहीं करेगी। अब मैं इन्हीं लोगों की बुद्धि से काम लूं। जब जसुई उसको सेज पर गयी तो उसने उसको मनुष्य बना दिया और उससे साथ में सोने का प्रस्ताव किया। लोरिक ने कहा—मैं कैसे सोऊँ? भवानी ने पीले रंग का कच्छ चढ़ाकर मल्लवर्ण की गाँठ लगा दी है। फिर लंगोटा पहना दिया है। यह खोलने से नहीं खुलेगा। मैं तुम्हारा मन कैसे रक्खूं? जसुई ने तब हँस कर कहा—दूल्लर मेरी बात मानो, खोलने से नहीं खुलेगा। तब उसने उसकी कमर में हाथ डाल दिया तथा हाथ में छूरी ले ली। इस समय अपने रथ पर दुर्गा वहाँ पहुँच गयीं।

लोरिक को पिड़नापुर बाजार में थप्पड़ मारा। अरे घटिहा, तुम्हारे ऊपर वज्र गिर जाय, तुम्हारे मुँह में कालिख पुत जाय। यदि तुमको यही करना था तो मुझको पिड़नापुर क्यों लाये? मुझको इस बात का डर था। अब सती का विवाह कैसे होगा? वहाँ खोइलनि का बेटा देवकी नन्दन राजकुमार रो उठा। मैया, मेरी भवानी कुछ उपचार कीजिए। अपार बल देवी गरज उठीं। जसुई का हाथ पकड़ कर उसे लम्बा फेंक दिया। कहा - बेटा कमर से खड्ग निकालो, लौके की तरह अपनी खाँड़ चमका दो, बिजुली की तरह उससे आघात कर दो।

जब देवी ने ऐसा कहा तो उसने अपनी मखमली म्यान से तलवार निकाली। धरती पर उसे दे मारा। उसका बाण पहाड़ की तरह टूटने लगा। जसुई का कंठ सूख गया। उसका शरीर काला पड़ गया। तलवार की चमक से वह गिर पड़ी। हीरिया और जोरिया बोलने लगीं—हे भवानी, सिंधौरा हमसे नहीं संभल सका तो हमने उसे लोहितागढ़ भेज दिया। किसको माँ ने पुत्र का जन्म दिया है? कौन वीर पैदा हुआ है। सिंधौरा सात समुद्र पार है। भस्मासुर उसकी रखवाली कर रहा है। यह सुन कर भवानी हँस पड़ीं—कहा यह बात तुमने पहले क्यों नहीं बतायी। तुम्हारे ऊपर वज्रपात हो जाय, बिजली गिर जाय। तुमने यह बात पहले बताई होती तो हम लोहितागढ़ बाजार चले गये होते। मैं अपने बेटे को संग में लेकर पिड़नापुर आ गयी हूँ।

पृष्ठ 178-179

जब तक सिंधौरा लेकर नहीं आऊँगी तब तक मेरा नाम वेश्या रहेगा। जब सिंधौरा लेकर आ जाऊँगी, तब मेरा नाम दुर्गा होगा। दुर्गा ने बीड़ा उठा लिया।

लोरिक से कहा। मैंने बाघ और सिंह की जोड़ी को, वरुण और कुबेर को जोत दिया है। लोरिक को उन्होंने जाँघ पर बैठा लिया और लोहितागढ़ चलीं। दुर्गा समुद्र पार करने लगीं। उन्होंने सात खाड़ियों को पार किया। वहाँ तीन सौ साठ दानव थे। दुर्गा उस पार गयीं, वहाँ दानवों की रात थी। देवताओं ने वरदान दिया था कि अगर दानवों का एक बूँद खून गिरेगा तो सौ दानव तैयार हो जायँगे। लोहितगढ़ में सिंधौरा रखा हुआ है। इधर दुर्गा रोने लगी, अपने सिर का बाल नोचने लगीं। यहाँ तो देख रही हूँ कि भाई ब्रह्मा का वरदान है कि यहाँ एक बूँद खून गिरेगा तो सौ दानव अवतार लेंगे। अब हम लोगों की बुद्धि कैसे काम करेगी। खोइलनि का बेटा देवकी नन्दन राजकुमार रोने लगा। हे माँ दुर्गा, मैं तुम्हारे ही बल और शक्ति से यहाँ हूँ। इस विकट स्थिति को मैं नहीं जानता था, मैं नहीं जानता था कि इतनी कठिनाई है, नहीं तो मैं बीड़ा नहीं उठाता, न शपथ लेता। भले ही संवरू कुँवारे रह जाते। भवानी अब तुम्हारे धर्म के पक्ष का सहारा है। चाहे खेकर मेरी नाव पार लगाओ या अधजल में मेरी नाव डुबा दो।

पृष्ठ 179-180

दुर्गा ने कहा—चलो तुमको ले चलती हूँ। उसे समुद्र के बीच कंगूरे में, गुँबद में ले जाकर बैठा लिया। वह इन्द्रासन पहुँच गयीं। वहाँ कचहरी लगी हुई थी, दरबार लगा हुआ था। मंत्री और महतो दीवान बैठे हुए थे। वहाँ जगदम्बा रो पड़ीं। देवताओं का ध्यान टूट गया। विधि ब्रह्मा उठे, आगे आये। पूछा—मेरी बहिन तुम फूट-फूटकर क्यों रो रही हो, क्या विपत्ति आ गयी है? दुर्गा ने कहा—मेरी देह संकट में फंस गयी है। मेरे सेवक ने गउरा में पूजा दी है।

मैं लोहितागढ़ गयी, वहाँ दानव वरदानी हैं। सत्ती का अमर सिंधौरा वहाँ है। अगर वहाँ एक बूँद भी रक्त गिरा तो सौ-सौ दानव तैयार हो जायंगे। तीन सौ साठ दानव वहाँ बसे हुए हैं। उसके बीच में सिंधौरा है। मेरा लड़का वहाँ संकट में पड़ गया है। पता नहीं उसकी क्या गति हो रही है। भैया मुझे उबारो नहीं तो मेरा नाम गहरी पेटवाली पड़ गया है। ब्रह्मा ने उन्हें चुप कराया और कहा—जो कहो वह करूँ। दुर्गा ने कहा—मैं थोड़ी देर के लिए जा रही हूँ। अपनी आभा दिखलाऊँगी।

बीस कोस के अन्दर तुम माँस बरसाओ और मैं आभा दिखलाऊँ। मैं दानवों से कहूँ—तुम लोग यहाँ क्यों हो? मकर लगा हुआ है। त्रिवेणी पर ऐसी मकर संक्रान्ति कभी नहीं आयेगी। तुम लोग चलकर समुद्र में गोता मारो। तुम लोगों को माँस का भोजन मिला है। ब्रह्मा ने कहा—जाओ ठीक हो जायगा। ब्रह्मा से वर माँग कर भवानी मृत्यु लोक में आ गयीं। सूर्य का डंफ डूब गया। लड़के को लेकर

भवानी अपनी आभा दिखान लगी । दानवो की नीद खुली । इतनी दूर पर यह मकर संक्रान्ति लगी हुई है । गोता मारकर हम लोग मास का आहार करेगे ।

कल रात हम लोगो ने आभा देखी है। दानवो ने समुद्र तट पर त्रिवेणी स्नान की तैयारी की—सभी दानव वहाँ एकत्र हो गये । भस्मासुर ने कहा—हे माता सुरसी इस सती के सिधौरा के लिए बडे-बडे प्रयत्न हुए हैं । इस फाटक पर तुम बैठो—कही हम उधर गये इधर बीर चढ आये तो तुभ चिल्लाना । हम लोग बीर को चारो ओर से घेर लेगे और उसे खा जायँगे ।

पृष्ठ 180-181

पंचो, इतनी परेशानी हे, तब भस्मासुर न सुरसी को समझाया । फाटक पर सुरसी वहाँ बैठ गयी । दानव जगल से समुद्र तट पर चले । ज्योही वे वहाँ से हटे आदिशक्ति भवानी बारह वर्ष की कन्या तथा सोलह वर्ष की नारी का रूप धारण कर, पीली धोती पहनकर तथा गोद मे बालक को लेकर चली । सुरसी यहाँ से उतनी दूर थी जैसे यहाँ से मदरसा ।

[गायक रतसड के स्कूल का उल्लेख कर रहा है जहा मै रिकार्डिग कर रहा था । वहाँ स वह थोडी दूर पर था ।] वह फाटक पर पहरा दे रही थी । जब उन्हे सुरसी ने देखा तो कहा—ह भगवान, अच्छा मकर लगा ह । हमारा भोजन तो दरवाजे पर ही चला आया है । मुरसी इधर हँस-हँसकर खुशी मना रही है । दुर्गा ने छ. महीने के लडके को अपनी गोदी मे सभाल रखा हे । जब दानवी अट्टहास कर उठी तब आदि शक्ति भवानी ने कहा—हाय मौसी, हाय मौसी । अच्छा हुआ कि तुमसे भेट हा गयी ।

पचो, जब वह राक्षसी जगल म उसे निगलने चली तो दुर्गा ने कहा—हे मौसी, मै तुमसे भेट करने आयी हूँ । राक्षसी ने कहा—यह ता वचन भग हो गया । उसने पूछा—हमारी दूसरी बहन तो थी नहीं। किस नाते से तुम मुझे मौसी बना रही हा । दुर्गा न कहा—मै क्या जानूं ? मेरी मा ने कहा था कि जब तुम्हारा गौना हुआ तो मेरी मा का भी जन्म हुआ । उसकी कुक्षि से मेरा जन्म हुआ । यह बात मैने कान स मुनी हे । मेरी माँ ने कहा था कि तुम्हारे ऊपर कोई बिपत्ति आ जाय तो सुरसी के पास लाहितागढ चली जाना । सुरसी ने कहा—यह ठीक है पर तुम अब हटो । दुर्गा ने कहा—मैं हट जाऊँगी लेकिन हमे जरा भइया का किला दिखा दो कि लोहितागढ का किला कैसा है ? आदिशक्ति भवानी ने माया डाल दी है ।

सुरसी ने कहा—अच्छा देख ला । उसने हवेली खोल दी । हवेली छः खडो की थी । ज्यो ही सुरसी ने दरवाजा खोला, दो झोलियाँ वहाँ लटक रही थी । दुर्गा ने लोरिक को चिकोटी काटी, लड़का चिल्ला उठा । सुरसी ने कहा—लडके को रुला दिया बुजरो तुमने । यदि दानव सुन जायेगे तो तुम्हारी जान नही बचेगी । दुर्गा ने

कहा—हे मौसी यह दुष्ट बहुत ही शैतान है। सुरसी ने कहा—उस झोली को तुम मत छूना।

पृष्ठ 182-183

अहीर के जीवन के लिए बड़े-बड़े उपाय रचे गये हैं। वह झोली आँधी की है। यदि पहिले फाटक पर पहुँचोगी तो यह झोली आँधी छोड़ेगी। लोहितागढ़ में यदि यह झोली छू लोगी तो विष का वपन हो जायगा। एक ओर पत्थर की झोली है, एक ओर आँधी की झोली है। भवानी ने कहा—मौसी तुम आगे चलो। यह शैतान झोली क्या करेगी? वे आगे गयीं। दूसरी देहली को पार किया तो देखा वहाँ दो डंडे झूल रहे हैं। भवानी ने लड़के को चिकोटी काटी। वह लड़का रोहितागढ़ में चिल्ला उठा। सुरसो कह रही है—अरे दुष्टा, उसको क्यों रुला रही हो? दुर्गा ने कहा—इसने हठ पकड़ लिया है। मानता नहीं है। वह डंडा चाहता है।

सुरसा ने कहा—उसे छूना मत। वे डंडे 'ईंटन' और 'पीटन' हैं। जब बच्चा इसे छू देगा तो अहीर को ये पीट कर गिरा देंगे। दुर्गा ने कहा—मौसी यहाँ से चलो। फिर आगे एक चौखट पार किया। वहाँ दो झोलियाँ थीं। दुर्गा चिकोटी काटकर बच्चे को रुला रही हैं। सुरसी ने बताया कि इन झोलियों को छूना मत। इनमें 'हाड़ा' 'हाड़ी' हैं, बर्रे हैं। वे अहीर को डंक मार कर खा डालेंगे। आदि-शक्ति भवानी जब उसको चौपाल में ले गयीं तो वहाँ लोहे का कुँडा बना है। उसी में सती का सिधौरा है। कुंड देखकर भवानी ने फिर बच्चे को चिकोटी काटी।

सुरसा ने फिर डाँटा तो दुर्गा ने कहा—यह दुष्ट कुंड पर चढ़ना चाहता है। उसने कहा—चढ़ना मत। उसमें सती का सिधौरा है। यदि उस पर लड़के को चढ़ा दोगी तो आग लग जायगी। तब दुर्गा ने कहा - दुष्ट चलो तुम जल तो जाओगे ही। समस्त लीला देखकर भवानी सुरसो को आँगन में ले गयीं। कहने लगी चलो तुम्हारे माथे का जुंआ निकाल दूँ। जब उसके माथे में भवानी ने हाथ डाला तो बारह सौ भरही, चौदह सौ भूत वैताल, यम सबको उन्होंने सुरसा पर छोड़ दिया।

पृष्ठ 183

सुरसी चौखट पर सो गयी। भवानी ने कहा—बेटा, मेरी बात सुनो। जल्दी सिधौरा लूट लो और जल्दी हम लोग गउरा गजन गढ़ पाल चलें। भवानी ने हड्डा और हड्डियों का झोला, डंडा आदि के थैले सब कुछ लूट लिये। सब कुछ लूट कर वह कुंडे पर गयीं। ज्योंही लोरिक ने घर के भीतर हाथ डाला अग्नि प्रज्वलित हो गयी। आग की लपट वहाँ फैल गयी। लोरिक आँगन में भाग आया।

दुर्गा ने उससे कहा—देर मत करो, तुम सँवरू का सत सुमिरन करो। बीर बघेला प्रार्थना करने लगा—भैया मल-सांवर सुनो तुम गउरा गजन गढ़ पाल बैठे

हो । लोहितागढ़ में मेरी देह पर संकट आ गया है । तुम्हारा सत जगे । मेरी गुहार है तुम्हारा सत प्रकट हो । धरमी का सत प्रकट हो गया और कमरे की आग पर चढ़ बैठा । सिंधौरा पर धर्म बैठ गया । कमरे की आग बुझ गयी । दुर्गा ने सिंधौरा लूट लिया, फिर अपना रथ हांक दिया जिसमें बाघ और सिंह, वरुण और कुबेर लगे हुए थे । दुर्गा सिंधौरा लेकर आकाश मार्ग से चलीं ।

पृष्ठ 184-185

रानी खोइलनि का बेटा लोरिक कूद पड़ा । उसने दुर्गा से कहा मुझे रथ पर मत ले चलो । अगर मैं यहाँ से भागूँगा तो मुझे नरक का वास मिलेगा । मुझे आज्ञा दो कि मैं सुरसी को एक लात मारूँ, नहीं तो यह बात लोग कहेंगे कि मैं भाग गया ।

लोरिक ब्यालिस हाथ कूदा और सुरसी को उसने जोर से एंड़ (पैर) मारा । वह चिल्ला उठी । इस पर लोहितागढ़ के दानव एकत्र हो गये । उन्होंने कहा—गउरा का अहीर आ गया है । सुरसी रोने लगी । भस्मासुर ने कहा—क्या तुम्हें नहीं मालूम है कि अहीर दुर्गा को पूजता है । तुमने तो मुझे बीच जल में छोड़ दिया । अब तो सती हमें शाप देगी ।

दुर्गा हीरिया जिरिया बंगालिन के यहाँ गयीं और कहा देखो यह सती का सिंधौरा है । मैं लेकर आया हूँ । दुर्गा और लोरिक सिंधौरा लेकर आ पहुँचे । लोरिक ने कहा चलो भइया से कह दें कि वे वर बनें । जब भवानी वहाँ गयी तो धरमी ने उन्हें नयन खोलकर देखा । लोरिक ने उनसे कहा—मैंने बीड़ा उठाया है । तुम्हारी शादी के लिए पिड़नापुर से सती का सिंधौरा लाया हूँ भइया, हमारी प्रार्थना है, दुर्गा हमारे ऊपर सजग हैं, आप वर बन जाइये । दो रस्सी लम्बा हटकर, आरती करके लोरिक ने मलसांवर से विनती की ।

सोना सुहवलि में सतिया की शादी आप से हो । सांवर क्रुद्ध हो उठे, कहा तुम मेरे शत्रु हो गये हो । मैं तुम्हें खंड-खंड करके गेरुवा पहाड़ पर फेंक दूँगा । तुम्हारा प्राण नहीं छोड़ूँगा । सांवर ने उसे पकड़ना चाहा कि भवानी प्रकट हो गयीं । लोरिक की किसी तरह जान बची । वह कठहर नदी में कूद गया । सांवर ने कहा—मैं मृत्यु लोक में भक्ति करने आया हूँ । क्या यहाँ मैं शादी करूँगा ? लोरिक के साथ मे जगदम्बा थीं । वह गउरा चला । हाय अब दूलहा कौन बनेगा ? सुहवलि में कैसे बारात जायगी । दुर्गा ने कहा—बेटा थोड़ी सी बात में ही घबराना नहीं चाहिए ।

पृष्ठ 186

लोरिक से कहा अब गउरा चलो—धैर्य रखो, शादी होगी, बोहा में ब्राह्मणों को भेज दिया जाय । उन्हें कुछ लालच दिया जाय । पहले वे 'नहीं' 'नहीं' कहेंगे, धरना देंगे, मरने लगेंगे । (पर बाद में तैयार हो जायंगे ।) बीर को संग लेकर

भवानी गउरा पहुँच गयीं। खोइलनि को वहाँ बड़ी खुशी हुई। भवानी ने कहा अब घबराओ मत । हम लोग सती के अमर सिंधौरा के लिए चले गये थे। अब संवरू की शादी होगी। शादी की बात सुनकर खोइलनि प्रसन्न हो उठीं। पुत्र, तुम धन्य हो कि मेरी कोख से तुम उत्पन्न हुए। शादी में तुम्हारा मन लगा हुआ है तो मेरा भी मन तुमसे अधिक ही है। पर धरमी ने हठ कर दिया है कि मैं दूल्हा ही नहीं बनूँगा।

पंचों, जिस दिन की बात है उसके आगे के समर का हाल सुनिये। भवानी के साथ लोरिक बैठा हुआ है। खोइलनि गउरा से ब्राह्मणों के टोल में पहुँची। पुरोहितों ने कहा—दो चार व्यक्ति आप लोग गउरा चलें। पाँच ब्राह्मणों को लेकर वह गउरा चली। विप्रलोगों के पाँव में खड़ाऊँ था। धोती पहनकर काँखतर पोथी दबाये, हाथ में छड़ी, और जलपात्र लिये वे चले। यजमान दानी मिला है (यह सोचते हुए) वे लोरिक के द्वार पर पहुँचे। लोरिक देवता लोगों के चरणों पर गिर पड़ा कि जाकर आप लोग बोहा में मेरे भाई को समझा दीजिए।

पृष्ठ 187-188

यदि शादी सम्पन्न हो गयी तो आप लोगों को दक्षिणा दूँगा कि खजाने से धन कम न होगा। पंचों, जिम दिन की बात है अब उसके आगे के समर का हाल सुनिए। लोरिक ने ब्राह्मणों को सांसड़ बोहा में भेजा। उनके हाथ में सोने के रंग की छड़ी थी। वे गायों के अड़ार पर चले गए। अहीर की गायें काफी बढ़ गयी थीं। धरमी हरसंकरी को ओर देख रहे थे। ये तो बोहा में देवना ब्राह्मण लोग आ रहे है। संवरू दादा को खुशी हुई। वे लोगों के लिए उठकर कम्बल विछाने लगे। ये लोग तो भगवान ही हैं। इन लोगों का कुछ स्वागत कर दूँ।

जब ब्राह्मण हरशंकरी तक पहुँच गए, संवरू ने झुककर मस्तक नवाया। देवता लोग आशीर्वाद देने लगे। धरमी तुम लाख वर्ष जीवित रहो। जैसे गंगा और यमुना का जल बढ़ता है वैसे ही तुम्हारी आयु बढ़े। संवरू ने उन्हें बैठने के लिए आसन दिया। पर वे नहीं बैठे, कहा—हम लोगों का बैठना तो यही होगा कि तुम हमारा धर्म रख दो। तुम्हारी मुहवलि में शादी हो। इसीलिए हम तुम्हें मनाने आये हैं। सुहवल में शादी कर लो। वीर बघेला अब अंगार की तरह जल उठा। कहने लगा—तुम लोग ब्राह्मण हो, इसका थोड़ा संकोच है। यदि तुम लोग शादी का नाम लोगे तो कुशल-क्षेम नहीं होगा। ब्राह्मण कहने लगे कि तुम हम लोगों को वह ब्राह्मण मत समझो कि हम लोग गजन गउर गढ़पाल ऐसे ही वापस चले जायेंगे। हम लोग पीपल के पेड़ पर चढ़कर फाँसी लगा लेंगे। सरउंज बोहा के मध्य हम लोग मर जायेंगे।

बीर बघेला जिसका नाम संवरू था, कहने लगा इसकी हमको जरा भी चिन्ता नहीं है। तुम लोग सरउंज में बोहा के मध्य पीपर पर चढ़ जाओ और वहाँ से गिर

पड़ो । हमें दूध की कमी नही है। मैं मिट्टी की छोटी प्याली, ढकनी में खीर खिलाऊँगा। तुम लोग हमारे पशुओं को चराओगे। तुम लोग ब्राह्मण हो तो तुम्हारी पूजा तो खीर ही है। इसकी हमें कोई कमी नहीं है। तुम लोग गिर पड़ो।

पृष्ठ 188-189

भाइयों, पोथी आदि फेंककर अब वे लोग पीपर पर चढने लगे। ऊपर चढ़ कर डाल पर झूलने लगे, कहने लगे, संवरू, अब हम गिरेंगे, मर जायेंगे। संवरू ने कहा—तुम लोग गिरो और मरो। मै तुम लोगो को पूजा चढाऊँगा। तुम्हारे जनेऊ तोडने या फाँसी लगाने का मुझे भय नही है। तुम जबर्दस्ती मेरी शादी करोगे ? मैं शादी नही करूँगा। बाबाजो लोग कहने लगे कि दादा, इसको तो ब्राह्मणो का भी भय नही है। कह रहा है कि तुम लोगो जैसा ब्राह्मण हम रोज ढूंढते हैं। वह कहता है तुम्हे मालूल है न कि मेरा नाम सांवर है। तुम्हारे जैसे ब्राह्मणो को मर जाना चाहिये ताकि मेरी गायों के चरवाह बढ जायँ।

मै तुम लोगो को खीर और दूध खिलाता रहूँगा। विप्रों ने आपस मे कहा—अरे भाई, छोडो, हम लोग उतर जायँ, यह सावर हठी है, मानेगा नही, यह मूढ़ अहीर है। यह मान नही सकेगा।

पचो, विप्र लोग उदास होकर अब पीपल मे धीरे-धीरे नीचे आ गये। पोथी लेकर चुपचाप उन्होने गउरा का रास्ता नापा। वीर राजी नही हुआ। ब्राह्मण देवता वहाँ से चले, लोरिक उनकी बाट देख रहा था। वे लोरिक के द्वार पर पहुँचे। लोरिक ने हँस कर कहा—क्या हाल है ? ब्राह्मणो ने कहा—तुम देख नही रहे हो कि हम बिना जनेऊ के यहाँ है। हमने जनेऊ तोडकर फेंक दिये। हमारा यज्ञोपवीत भ्रष्ट हो गया। वह हठी कहता है कि मै शादो करू गा ही नही। हमारे मरने पर हमें खीर चढायेगा और हमसे चरवाह का काम लेगा। उसकी शादी के लिए हम लोग अपनी जान तो नही देंगे। तब सिहनी खोइलनि का पुत्र लोरिक फूट-फूटकर रोने लगा।

पृष्ठ 189-190

उसने कहा—हे भवानी, तुम्ही धर्म की पक्षधर हो। अब लो मेरी धुली हुई गाय को धरमी ने अधजल में अटका दिया है। भवानी ने जाकर लोरिक का कंधा पकडा और कहा—तुम रोओ मत। जिसके संग में भवानी हैं उसका कार्य कैसे बिगडेगा ? मै देखूंगी कि मलसावर का हठ कैसे रहता है। पंचों, अब भवानी लोरिक को वहाँ बैठाकर इन्द्रासन अपने भाई ब्रह्मा के यहाँ चली। भवानी ने रो-रोकर कहा, भइया मेरी बात सुनो। मैंने अमर सिंघौरा लिया और लोहितागढ़ से गउरा आ गयी। मेरी मूढ़ संवरू से भेंट हो गयी है। हमारे सेवक लोरिक ने उससे शादी करने

को कहा तो लगा कि दुष्ट उसको तोड़कर गेरुवा पहाड़ पर फेंक देगा। किसी प्रकार अपने बच्चे को बचाकर गजन गउर गढ़पाल लायी।

ब्राह्मणों को देवता जानकर मैंने भेजा तो साँवर ने कहा—चाहे तुम लोग मरो या जियो, मुझे चिन्ता नहीं। एक मिट्टी की प्याली (ढकनी) में चावल की खीर चढ़ाऊँगा। तुम लोग प्रेत होकर खीर खाओगे और मेरे पशुओं को चराओगे। साँवर ने कहा—मै प्रार्थना नहीं सुनूँगा, शादी नहो करूँगा। कभी शादी नहीं करूँगा। मेरा बेटा निराश होकर रो रहा है। गउरा में मेरा बेटा कैसे जीवित रहेगा ? भवानी ने कहा—कौन समझायेगा उसे। ब्रह्मा ने कहा—सबसे उपाय पूछा जाय, सबसे तरकीब पूछी जाय कि वह किसी प्रकार बात मानेगा या नहीं।

सभी देवता एकत्र हुए। आदिशक्ति भवानी इन्द्रपुरी मे गले में कफन डालकर रो रही हैं। यदि कोई ऐसा होता जो संवरू को समझा देता तो मैं सुहवल बाजार में उसकी शादी कराने जाती। तब शंकर और गउरा पार्वती हँस पड़ीं। मृत्युलोक का बीड़ा हम उठावेंगे और जाकर संवरू को मनायेंगे। शंकर जी ने बीड़ा उठाया, पार्वती ने भी संकल्प किया हम इसी बार संवरू को समझा देंगे।

पृष्ठ 190-191

पंचों, आप लोग कान लगाकर सुनिये। अब शंकर पार्वती जी, दोनों सरउंज में साँवर को समझाने चले। प्रातःकाल हो गया। सूर्यनारायण उदित हो गये। उसी समय गौरा पार्वती वृद्धा बनकर माथे पर टोकरी लेकर गोबर के कंडे बटोरने चलीं। बाबा शंकर वृद्ध बन गये। उनकी कमर टेढ़ी हो गयी थी। सिर का बाल भी पक गया था। एक हाथ में फटा हुआ डंडा लेकर वह अपनी बुढ़िया को खोदने लगे। बुढ़िया ने कहा—क्या खोद रहे हो। क्या कभी मन भी थकता है। क्या मैं संवरू की भाँति हिजड़ा हूँ कि कहूँ कि मैं शादो नहीं करूँगा। तुम्हारा थोड़ा मन है तो हमारा शादी करने का अधिक मन है।

बोहा में यह खेल हो रहा है। वीर संवरू हरि शंकरी में बैठा हुआ है। शंकर जी वृद्ध बनकर वृद्धा पार्वती को खोद रहे हैं। क्या इस बोहा में तुम मुझसे शादी करोगी। पार्वती कह रही हैं कि हे वृद्ध, मेरा तन थक गया है पह शादी के लिए मेरा मन चंचल हो गया है। मैं संवरू की भाँति हिजड़ा तो हूँ नहीं कि मैं मृत्युलोक में विवाह न करूँ।

मलसांवर टकटकी लगाये देख रहे हैं कह रहे हैं। यह बूढ़ी हो गयी है, उसका बाल पक गया है, शरीर का चमड़ा छूट गया है पर यह बूढ़ा लुब्ध है उसे खोद रहा है और कह रहा है कि क्या तुम मुझसे विवाह करोगी। तो वह कह रही है क्या मैं संवरू की भाँति हिजड़ा हूँ ? यह तो मेरा नाम हिजड़ों में रख रही है। पंचों, गउरा और

पार्वती ने संवरू को रिझा दिया। उनका मन पक्का हो गया कि मैं सुहवल में निश्चित ही विवाह करूँगा। बीर का मन डिग गया। शिव पार्वती ने आज्ञा देकर अब दुर्गा को भेजा। धरमी अब शादी करेंगे।

अब फूल गेना नाऊ बुलाया गया और उसको बोहा में भेजा गया कि जाकर कहो कि सुहवलि में शादी करने के लिए सांवर तैयार हो जाये। गांगी नाऊ थर-थर काँपने लगा जैसे ब्यायी हुई गाय काँपती है। हे दैव, हे नारायण, संवरू नाराज हैं, हमारा पिंड नहीं छोड़ेंगे। यदि नहीं जाऊँगा तो लोरिक जान ले लेंगे। भवानी ने कहा—ऐ गेंदे के फूल की भाँति सुन्दर नाऊ सब काम ठीक हो गया है। यदि डर लग रहा है तो हरिशंकरी का रास्ता पकड़ लेना। तुम धरमी का खेल देखना। नाऊ ने बीड़ा उठाया और वह सरउंज बोहा चला गया। धरमी प्रतीक्षा कर रह रहे थे कि गउरा से आकर उन्हें कोई मनाता और वे शादी के लिए तैयार हो जाते।

पृष्ठ 191-192

नाऊ ज्योंही आधा सरउंज गया त्योंही उसने दक्षिण का रास्ता पकड़ा। संवरू ने कहा—आरे नाऊ, तुम कहाँ जा रहे हो ? उसने कहा—नेवता करने। तो तुम आओ, इधर आओ। जब नाऊ घूम कर आया तो सांवर ने पूछा—क्या तुमने दरवाजे पर कोई बातचीत सुनी है ? उसने कहा—हाँ, क्यों नहीं सुनी है। आप शादी करना नहीं चाहते। लोरिक रो रहे है। उन्होंने कहा—जाकर गउरा में कह दो जो हमारे जन्म का हाल बतायेगा उस कन्या से मैं शादी कर लूँगा।

पंचों, यह बात संवरू ने कही—नाऊ ने आकर यह बात कह दी। भवानी वहाँ बैठी हुई थीं। लोरिक ने यह बात मान ली। माँ खोइलनि से लोरिक ने सब हाल पूछा। बेटा यह तो मैं भी नहीं जानती कि किसकी कोख से संवरू पैदा हुए। मैंने तो उसे गड्ढे में पाया। लोरिक तब बिजवा के यहाँ गये, उससे कहा—भाई संवरू ने तो संकट पैदा कर दिया है। कह रहे है कि जो मेरे जन्म का हाल बता देगा उससे शादी करूँगा। उसने कहा—मै समुर संवरू के जन्म का हाल तो नहीं जानता पर सती के जन्म का हाल मैं जानती हूँ। नाऊ से पूछकर समुर के जीवन का हाल पूछ लो।

नाऊ ने जाकर कहा हे संवरू, आपके जीवन का हाल कोई नहीं जानता पर बिजवा कन्या के जन्म का हाल जानती है। संवरू ने कहा जाकर गउरा में कह दो, वहाँ लोगों की पंचायत हो मैं आ रहा हूँ। मैं अपने जन्म का हाल बता दूँगा। गउरा में शोर हो गया कि संवरू अपने जीवन का हाल बतायेंगे लोरिक के दरवाजे पर लोग जमा होने लगे।

पृष्ठ 193-194

तब लोरिक विजा धोबिन के यहाँ गये। कहा, भउजी, भैया जन्म का हाल

बताने वाले हैं (तुम चलो)। धोबिन ने कहा—मैं, ससुर के सामने कैसे बोलूंगी। उस कचहरी के अन्दर एक छोटी छोलदारी (तम्बू) डाल दो, उसी में मैं बैठूंगी और सतिया के जन्म का हाल बताऊँगी।

पंचों, अब उस समय के लग्न का हाल सुनिये। एक छोटा तम्बू पड़ गया। चारों ओर लोगों की मण्डली बैठ गयी। बिजवा और सरासरि वहाँ पहुँचीं। बिजवा ने बायें परदा कर लिया था, दाहिने शाल रख लिया था। वह जाकर तम्बू में पर्दे में बैठ गयी। धरमी पहुँचे। उनके बैठने के लिए मोढ़ा लगा हुआ है। धोबिन ने कहा—हे ससुर, मैं आपके जन्म का हाल नहीं जानती पर सती के जन्म का हाल मैं जानती हूँ। आप अपने जन्म का हाल बताइये। सब जानते थे कि संवरू खोइलनि के पुत्र हैं। संवरू ने बताया कि सूर्य भगवान की दृष्टि लगने से ब्राह्मणी के गर्भ से मेरा जन्म हुआ है।

सुबचन और संवरू हम दोनों सूर्य भगवान की जिह्वा से उत्पन्न हुए। ब्राह्मणी को पाप लग गया, लांछन लग गया। अतः नवें महीने में जब हमारा जन्म हुआ, चमारिन ने नाल छोना तभी हम लोगों को बटलोई में कस कर फेंकवा दिया गया। जब मेरी माता खोइलनि दही का बर्तन लेकर चलीं तब बिड़ान की बहू के सूअर वहाँ गड्ढे में पहुँच गये। उन्होंने हमें थूथुन (सुवर का मुँह) मारा तो हम लोग चिल्लाने लगे। भाई सुबचन को तब दुसाधिन ने धोती भिडकर बटलोई से उठा लिया। माँ खोइलनि ने दही के बर्तन में मुझे लूट लिया।

पंचों, विधि ब्रह्मा की लेखनी मिटती नहीं। संवरू ने अहीर की स्त्री का दूध पिया तो अहीर कहलाये। लोरिक ने अब धोबिन से सतिया के अवतार की कथा बताने के लिए कहा। उसने कहा—पत्नी के साथ बामरि अपना राज्य छोड़कर गंगा तट पर समाधि यज्ञ करने लगे। उन्होंने गंगा तट पर सिर मुँड़ा कर धरना दे दिया फिर विनम्र भाव से पति-पत्नी यज्ञ और हवन करने लगे।

पृष्ठ 195-196-197

गंगा महारानी ने उनको कहा कि रानी की कोख में कन्या का सुयोग नहीं है। इन्होंने तो मेरे तट पर धरना दे दिया है। ये समाधि यज्ञ करने लगे हैं। तब गंगाजी ने नाग के यहाँ धरना दिया। वह मनुष्य है। इसको कुछ दान दो ताकि मैं रानी का आँचल भर दूँ। नाग ने दान दिया। गंगाजी ने वह दान राजा रानी को दिया। फिर सतिया उत्पन्न हुई! यह सुन कर वहां लोग हँस पड़े। आश्चर्य में पड़ गए। गनना खूब बन गया।

पंचों, संवरू की शादी कठिन है। मन लगाकर सुनिये। गायक लोग सीधे रास्ते जाते हैं। मल साँवर बोल उठे। लोरिक मेरी बात सुनो। भवानी आप भी सुनिये। गउरा मे मेरी यही प्रार्थना है। मैं संसारी (नारकीय) पालकी पर नहीं

बैठूंगा। आप इन्द्रासन वाली पालकी मँगाइये, तब मैं दूल्हा बनकर चलूंगा। भवानी हँस पड़ीं। कहा—ठीक है। भवानो ने लोरिक से कहा—बीरों को पाती भेज दो। मैं इन्द्रासन जा रही हूँ। भइया, ब्रह्मा से मैं प्रार्थना करूँगी। संवरू को शादी निश्चित हो गयी। द्वार पर पत्र लिखे जाने लगे।

पहला पत्र गंगाजी को लिखा गया। फिर देवताओं को पत्र लिखा गया। फिर मंदिरों में पत्र भेजे गये। कुछ पत्र कलि को गए। कुछ डीह देवताओं को गये। फिर सभी वीरों को पत्र भेजे गये। बगल में पता था। बीच में सलामी लिखी गयी थी। सिलहट में पत्र लिख गया जहाँ बली सीवधरा था। पीपरी में देवसिया को पत्र लिखा गया। बिहियाँपुर में बाठा को पत्र लिखा गया। फिर सहदेव को पत्र गया कि सुहवल में भइया की शादी तय हो गयी है। जितनी शक्ति है उसको समेटकर सुहवलि बाजार चलना होगा।

गउरा के बीरों को पाती गयी कि वे सुहवलि बाजार चलें। वीरों को छाती गज भर फूल गयी। कहने लगे हम सुहवलि की चढ़ाई करेंगे। बामरि के बेटा भीमलिया को हम देखेंगे। देवी इन्द्रपुरी गयीं और रोने लगीं और देवताओं के यहां धरना देने लगीं।

पृष्ठ 197-198

भवानी ने कहा—मेरे भइया ब्रह्मा मेरी बात मानो। ग्रह निकट आ गया है। संवरू ने इन्द्रासन की पालकी माँगी है। हमारे लड़के संवरू ने शादी तो स्वीकार कर ली है, पर कह रहा है कि मैं नारकीय पालकी पर नहीं बैठूंगा। ब्रह्मा ने कहा—इन्द्रासन की पालकी तुम मृत्युलोक में ले जाओगी और वहाँ नारकीय मूर्ख पालकी पर बैठेगा। सभी देवताओं की वहाँ पंचायत बैठी। वहाँ सूर्य भगवान भी थे। देवी ने कहा—इनसे पूछा जाय। तुमने संवरू को नारकीय बनाया है।

सूर्य नारायण ने अपनी दृष्टि से ब्राह्मणी को गर्भ दिया (और सांवर पैदा हुआ)। सूर्य भगवान की अब दृष्टि ही ऊपर नहीं उठी। ब्रह्मा ने कहा सिर उठाओ। तब विष्णु भगवान ने कहा—मैंने भक्ति बिगाड़ी थी क्योंकि इस भीमली के कारण स्त्रियों को योगिन बनकर वन में जाना पड़ा है। उन्होंने कंठी-माला धारण किया है। धरती पर पाप अधिक हो गया है। पृथ्वी डगमगाने लगी है, संसार हिलने लगा है। मृत्युलोक में पाप हो गया है। यह संसार नष्ट होने वाला है। इन्द्रासन पर कष्ट छा गया तब यह रचना रची गयी है। धरमी तो सूर्य नारायण का बेटा है। वह कुमारी ब्राह्मणी की कोख से पैदा हुआ है। देवी अब पालकी लेकर गउरा बाजार में आ गयीं। ब्रह्मा ने अपना चंवर भी भेज दिया।

अब यहाँ का पंवारा छोड़कर मैं ठाकुर का नाम भजता हूँ। संवरू वर बन गये। लोरिक बारात करने चला। राउत का बेटा श्रेष्ठ सीवधरा चला। मकरा का

बेटा देवसिया भी चला। नोनवा चमारिन का बेटा वीर बाँठा भी चला। सभी धोबी की बाट जोह रहे थे।

पृष्ठ 199-200

धोबी दुधिलापुर में था। लोरिक का धावन वहाँ पहुँचा। कहने, लगा सब बारात ठीक हो गयी है। तुम्हारी प्रतीक्षा हो रही है। सोहवलि का रास्ता तुम्हारा देखा हुआ है। यह सुनकर अजयी छाती पीटने लगा। धरती पर भहराकर गिर पड़ा। मेरी विवाहिता पर वज्रपात हो जाय। बुजरो, निर्लज्ज बनकर सो जाओ। सुहवल का नाम लेने से मेरी छाती का घाव उभर गया है। यदि तुमने अगुवाई नहीं की होती तो मेरे ऊपर यह विपत्ति नहीं आती। तब विजवा की एड़ी जलने लगी, शरीर जलने लगा। सैंया, तुम्हारे ऊपर वज्र गिर जाय, तुम दीवाल के पर्दे के नीचे दब जाओ।

मैं तुमसे कह रही हूँ। यहाँ मेरी बात मानो। तुम लंगोटा मुझे दे दो। अपनी तेग दे दो। तुम हमारी साड़ी पहन लो, बाँहों में चूड़ियाँ डाल लो। माँग में ज़रा सिन्दूर डाल लो। ललाट में रोली लगा लो। मुझे भोजन दे दो। फिर मैं उलटा लंगोटा कसूँगी। ऊपर मल्ल वर्ण की गाँठ लगाऊँगी। छाती में लोहे की बनी हुई ढाल बाँधूँगी। मैं गुलाबी पाग पहनूँगी जिसकी एक ओर जिरही (कवच) फहरायेगी। अलीगंज का जूता पहनूँगी, मोजा पहनूँगी तथा बबुआ की बारात ले जाऊँगी। (यह सूत्र वीरों के लिए बारबार प्रयुक्त हुआ है।)

अजयी ने कहा—बुजरो तुमने मुझे नर से नारी बना दिया। मैं सुहवलि बारात करने जाऊँगा। जैसे पान में चूना लग गया हो। बात उसके कलेजे में धँस गयी। उसको आग लग गई, कहने लगा—मेरा जाने का मन नहीं था। मैं अब लंगोट कस रहा हूँ मगर तुम अपनी माँग धो लो। संतोष कर लो। तुम विधवा हो जाओगी। यह देख लो। दुधिलापुर बाजार में तुम रांड़ बनकर रहोगी।

धोबिन ने मुँह तोड़ उत्तर दिया—सैंया मूर्तिनारायण, तुम मेरे सिंदूर के मालिक हो। मैं रांड़ होकर रहूँगी। बनियों की दूकान और चट्टी पोतूँगी। विधवा होकर मैं गुजारा कर लूँगी। तुम यहाँ से पैर हटाओ तथा सोना सुहवलि पाल चले जाओ। सीवान (गाँव की सीमा) पर संग्राम हो जाय। तुम सबसे आगे अग्नि की धारा में जूझ जाओगे तो तुम्हारा सुरधाम बन जायगा। तुम्हारा अगला जनम बनेगा। पीछे मेरी काया भी तर जायगी।

पृष्ठ 200-201

पंचों, जिस दिन की बात है उसके आगे के समर का हाल सुनो। धोबी वीर की वेशभूषा में पूर्णरूप से सुसज्जित होकर दुधिलापुर से चला। (आगे सूत्र है और विचारों की पुनरावृत्ति है।) धोबिन ने कहा—आगे तुम्हारी मुक्ति बनेगी, पीछे मेरी

मुक्ति होगी। अगर तुमने पीछे पैर रखा तो कुम्भी पाक नरक में जाओगे। अपने जीवनकाल में तुम विकलांग हो जाओगे तथा मरने पर नरकबास करोगे। इन्द्रपुरी में मेरा जीवन भी बिगड़ जायगा। यदि तुम सुहवल में जूझ जाओगे तो मेरा स्वर्ग बन जायगा। अजई ने अपने से कहा—तुम पीछे पग मत रखना, यदि पीछे पग दोगे तो तुम्हारी कमाई डूब जायगी। यह कहते हुए वह सुहवलि के लिए चला। वह चलते-चलते लोरिक के द्वार पर पहुँच गया। उसके पहुँचने से किले के सभी वीरों का उत्साह दुगुना हो गया।

आज वीर अजई ने लोरिक से कहा चलो बारात लेकर चलें। लोरिक ने कहा मीता सुहवल का मार्ग तुम्हारा जाना हुआ है, तुम चलो। जितने शूरमा थे सभी बारात करने चले। सोलह सौ घरों के यदुवंशी, अहीर ग्वाले सभी बारात के साथ चले। पंचों, गउरा में सब कुछ बना हुआ था। वहाँ खेती-बारी नहीं होती थी न वहाँ लोग फावड़ा चलाते थे। वहाँ घर-घर अखाड़ा खुदा हुआ था। हर दरवाजे पर दुहरे बदन वाले मल्ल पड़े रहते थे। वहां हंस और हंसिनी का एक जोड़ा रहता था, लोरिक और सांवर।

गउरा की शोभा बनी हुई थी, वह कहने योग्य नहीं है। वहाँ कुसुमापुर बाजार में सहदेव तप रहे थे। बारात मे सभी वीर चले, वे दैव के लाल थे, बीर बघेला थे, उनकी कमर मजबूत थी। एक ओर बाजे की आवाज बुलन्द हो रही थी, एक ओर युद्ध की लकड़ी बज रही थी।

पृष्ठ 202-203

एक ओर बाँका जुझाम्न लकड़ी बज रही थी, उसी प्रकार नगाड़े और जोड़ियाँ बज रही थीं। आगे तिरपन जोड़ा ढोल बज रहे थे। बीस तुरहियाँ भी बज रही थी, रणसिंगा की आवाज फैल रही थी। शंखों की गूंज उठ रही थी जिससे धरती हिल उठी थी।

पंचों, सुहवल के लिए भारी बारात चली। खूब मन्त्रोच्चार हो रहे थे। बारात में हाथियों की संख्या अगणित थी। हाथियों के टांडा के साथ धरमी पालकी में बैठ गये। हवेली में सहदेव की पुत्री चनैनी भी मंगल गा रही थी। शेष नाग की भाँति चमडे का फीता संवरू की गर्दन में लटक रहा था। ब्रह्मा का दिया विश्वम्भर बाण तथा विशेष धनुष उनके पास था। दूलहे की शोभा अद्वितीय थी।

खोइलनि ने कहा, हे बबुवा, तुमने अपना विशेष ओढ़न (ढाल) नहीं लिया। तुम्हारी पहचान कैसे होगी। बेटा तुम अपनी तेग धारण कर लो, कंठाभरण भी पहन लो। वीर सांवर हँसने लगे। माँ तुम्हें दूलहे का लोभ है। हमारी देह ही दूलहा है। सुहवल में दैव हमारे मन की बात रखेंगे। हमारी प्रभुता वहाँ रहेगी।

माँ, तुम तो पागल हो गयी हो, तुम्हारा ज्ञान मन्द पड़ गया है। उन्होंने अपनी माता से कहा अगर मैं अपना हथियार यहाँ छोड़ दूँगा तो क्या जाने सुहवलि में क्या गति होगी ? आखिरी समय में यदि संग्राम छिड़ जायेगा तो हम क्या वीरता दिखायेंगे ? मैं अपनी तेग रख लूंगा।

पृष्ठ 204-205

धरमी ने कहा—हे माता, यदि वहाँ कुछ गड़बड़ी हो गयी तो हमें पीछे भागना पड़ेगा। आगे पड़ जाने पर जूझना पड़ेगा। सुहवलि में यदि मेरी शान रह गयी तो कुछ मन की बात करूंगा। यदि तुमको दूलहा बनाना है तो गुलाबी गमछा दे दो, हाथ में कंकण है ही। माँ ने गुलाबी गमछा दे दिया; हाथ में कंकण बँध गया। रानी बुढ़िया खोइलनि अपने बंगले की ओर घुमी। छत्तीस वर्ण की बेटियाँ आँगन में एकत्र थीं। बुढ़िया ने कहा—कुछ मंगलगान शुरू करो। हम लोग बच्चे का परछन करें।

पंचों, अब जिस दिन की बात है उसके आगे के समर का हाल सुनिये। गउरा बाजार के पास पड़ोस की स्त्रियाँ गोतिनें एकत्र हो गयीं थी। मंगल के और विवाह के गीत गाये जाने लगे। सोने की थाली में आरती सजायी गयी। दही, गुड़, अक्षत, थाली में रखी हुई थी। रानी ने हाथ में मथनी उठायी और परछन करने चलीं। खोइलनि अपने लड़के की पूजा करने चली, पीछे और स्त्रियाँ चलीं।

सुघर साँवर की पालकी उठी। अक्षत-चावल जमकर फेंके जाने लगे। रानी सगुन कर रही है, दही गुड़ अक्षत (चावल) से वह वीर को टीका लगा रही हैं। गौना करके आयी हुई स्त्रियाँ, तथा डोम की बहुएँ धरमी की सूरत देख रही हैं और कह रही हैं ऐ सखियों, सुनो। सतिया धन्य है कि उसको ऐसा वर मिला है। गंगा-स्नान करके उसने ऐसा वर पाया है। परछन के बाद सवारी ड्योढ़ी से बाहर हुई। टोल पड़ोस की गोतिनें और खोइलनि सवारी को पकड़े हुए थीं।

पृष्ठ 206-207-208

भाइयों, अब पालकी और पीलवान चले। मुट्ठियों से वहाँ खोइलनि मोती लुटाने लगीं, धन लुटाने लगीं। संवरू से डीह तथा अन्य देवताओं का अभिवादन कराया गया। पालकी अब धीरे-धीरे चली। खोइलनि ने खूब धन लुटाया। धन लूट कर कंगली आज अघा गये। खोइलनि की कोख धन्य है। उन्होंने गंगा स्नान कर संवरू को पाया है। सारे गरीब लोग आशीर्वाद दे रहे हैं। पालकी ने गाँव के देवताओं की परिक्रमा की। फिर गाँव के बाहर ले जाकर उसको छिपाया गया। संवरू की बारात चल पड़ी। इसमें सभी बीर जबर्दस्त करधनी वाले थे, सभी मर्द योद्धा थे, दैव के लाल थे। राजा सहदेव भी चले। लोरिक के लिए रात बड़ी थी। वह भी चला। आगे-आगे अजयी था।

अब रास्ते का खेल सुनिये। बारात दो-चार कोस निश्चित होकर आगे बढ़ी तो सती क्रुद्ध हो गयी। कहने लगी इस डिंगर (दुष्ट) पर वज्रपात हो जाय। यह दीवाल की ओट में दब जाय। इन्द्रासन में न तो मेरी शादी लिखी है और न विवाह। इस पापी ने झूठ में ही बाँस में मेरा कपड़ा टाँग दिया, मेरी प्रतिष्ठा लूट ली, धर्म लूट लिया। सती की देह में आग लग गयी। उसका कलेजा हिलने लगा। उसने अपने सत का सुमिरन करना शुरू किया। सत को झटकार कर उसने फेंका।

कुँआ में उसने सत फेंका, सागर में उसने जहर छुड़वा दिया। कुओं में भाँग घुलवा दिया। आस-पास माया का बाजार लग गया, उसमें रंग-रंग की मिठाइयाँ थीं। उनमें जहर था। सती ने जब यह खेल किया तो माँ दुर्गा वहाँ दौड़ीं, बारात उन्होंने रोक दी। कहने लगीं—बेटा तुम्हें मैंने बार-बार मना किया। बेटा किला में संग्राम छिड़ गया है बारात भारी हो गयी है। बंगला से रतसंड तक बारात आयी थी। (बंगला और रतसंड बलिया जिले के दो गाँव हैं जो कुछ ही दूरी पर हैं।) दुर्गा ने कहा तुम्हारी बारात में दो-एक लोग नहीं हैं। बारात भारी है। सती ने सागड़ में विष घुलवा दिया है। कुओं में उसने भाँग घुलवा दिया है। माया का बाजार और दूकानें लग गयी हैं। मिठाइयाँ वहाँ जहर हैं। जो कोई वीर उन्हें खायेगा तो उसी स्थान पर बेकार हो जायेगा। तुम सोना सुहवलि कैसे चलोगे। वहाँ किसी का लंगड़ा पुत्र भी जूझ जायगा तो उसकी माँ कहेगी कि मेरा वीर पुत्र जूझ गया है।

पृष्ठ 208-209

यदि किसी का बूढ़ा पति भी मर जायगा तो उसकी पत्नी कहेगी कि मेरा पति संवरू की शादी में जूझ गया। हाय बेटा, कलंकित करने वाली भारी बारात तुमने एकत्र कर ली है। आदिशक्ति भवानी ने खेल किया, वह खेल किसी के मान का नहीं है। लोरिक ने गले में फंदा डालकर तथा दोनों हाथ जोड़कर कहा—मैया मैं यह हाल नहीं जानता था। मैं तो जानता था कि भीमली से लड़ना है। मैं यह नहीं जानता था कि सती ऐसा हाल करेगी। माता अब चाहे खेकर पार लगाइये या बीच धार में डुबा दीजिए। मेरी नाव आपके हाथ में है। पंचों, भवानी बारात रतसंड़ से हटाकर अब गंडवार ले गयीं।

गंडवार से जब वह सुखपूरा चलीं तो वह बिदक गयीं। (गाँवों का नाम दूरी बताने के लिए है।) सहकना बहकना जीव का काल है। अब सुहवल में काम आ पड़ा है। यहाँ बहुत बड़ा खेल होगा। लोरिक का कलंक यहाँ छूट गया। यहाँ सती और भवानी का झगड़ा शुरू हुआ। सती ने कहा दुर्गा ने हमें बेपर्द कर दिया है, मेरी इज्जत लूट ली है, वह जरा सुहवलि आ जायं तो उनका बढ़ा हुआ मन मैं ठीक कर दूँगी। गायक कहता है कि सुहवल का गाना कठिन है।

पंचों, जब बारात कुछ दूर आगे सुखपूरा तक गयी तो लोरिक को सहसा याद आया कि तागपाट तो गउरा में छूट गया है। लोरिक ने अजई से कहा—मीता तुम्हारा सुहवलि का रास्ता देखा हुआ है, तुम बारात लेकर चलो। मैं सती का तागपाट गउरा से ले आऊँगा। इधर भवानी इन्द्रासन चली गयीं। और वहाँ आलस्य में पड़ गयीं। लोरिक गउरा का रास्ता पकड़ कर चला।

पृष्ठ 210-211

सूर्य अस्त हो गये। घर-घर में दीपक जल उठे। दो तीन घड़ी रात चली गयी। गउरा में छत्तीस वर्ण की स्त्रियाँ जलुवा, (स्वांग आदि) कर रही थीं। लोरिक ने वहाँ आवाज लगायी। वहाँ चनवा पहुँच गयी और उसने फाटक खोला। कहा—कैसे मेरी सूरत पर तुम्हारी नजर फिर गयी कि यहाँ वापस लौट आये। लोरिक ने अंगार फेंकना शुरू किया। तुम वेश्या हो। तुम्हारा परिवार वेश्याओं का है। हर घड़ी तुमको लोलुपता सूझती है। माई से कह दो कि तागपाट छूट गया है, मैं उसे लेने आया हूँ। खोइलनि दुखो हुई। इतनी रात चली गयी है। उसने लोरिक को ताग-पाट दे दिया।

लोरिक सोचने लगा रात को अब क्या दौड़ूँ। वह वहाँ सो गया। इधर भवानी इन्द्रपुरी में अलसा गयी थीं। इधर आगे-आगे धोबी आ रहा था, पीछे सारी बारात चल रही थी। यहाँ बामरि की बेटी सती मदाइन हँसी। उसको सुरहन में अवकाश मिल गया, जगह मिल गयी। उसने अपने सत का सुमिरन किया। सत का उसने गेंडा बना दिया। उसका एक ओठ आकाश में गया दूसरा धरती से जुड़ गया।

अहीर की बारात उसमें प्रवेश करने लगी। सारी बारात गेंडा के मुंह में समा गयी। कंहार कहने लगे—यह दुखदायी मुहवल कैसे स्थान में बसा हुआ है। दो घड़ी दिन में ही इस मार्ग में अंधकार छा गया है। सभी बारात यहाँ गेंडे के मुंह में चली गयी है। गेंडे ने अपना मुंह बन्द कर दिया और उस स्थान को छोड़कर वह सुरहन में जाकर लेट गया। मुंह में अपनी पूँछ डालकर वह सुरहन के तट पर सो गया। इधर जब लोरिक की नीद खुली तो वह दौड़ कर चला। वह रात में कम चलता था दिन में अधिक। पर उसको बारात का पता नहीं चला।

वीर सोना सुहवली पाल पहुँच गया। अब सुरहन में डट गया। पानी भरने वाली पनिहारिनों, तथा सोलह सौ कुंजड़ों की स्त्रियों से जाकर उसने पूछा, क्या बारात इधर गयी है? द्वार-द्वार पर जाकर वह व्याकुल होकर पूछता, किन्तु बारात का पता ठिकाना नहीं था। तब वह फूट-फूटकर रोने लगा। सती अपने मुंह पर आँचल डाले अट्टालिका पर हंस रही थी। दुर्गा वहाँ पहुँच गयीं। लोरिक मोती सागड़ पर बैठा हुआ था। अब बयान सुनिये।

पृष्ठ 212-213-214

माँ भवानी वहाँ पहुँची और लोरिक को गोद में उठा लिया। आँसू पोंछे। कहाँ महाभारत ठन गया है। कहाँ तुम्हारा दाँत टूट गया है (तुम पर विपत्ति आ गयी है)। लोरिक ने गउरा में तागपाट छूटने से लेकर बारात के गायब हो जाने की सारी कहानी बतायी। दुर्गा ने कहा—मैं तुमसे कह रही थी कि सती बहुत अनर्थ करेगी। मुझको भी आलस्य आ गया। तुमको मुझसे भी अधिक आलस्य आ गया। जरा भी तुम शोर मचाते तो मुझे आगामी घटनाओं की सूचना मिल जाती।

उन्होंने लोरिक से कहा—इस घटना को अपहरण मत समझो। अब किसी पर जरा भी विश्वास मत करो। अब जरा भी आलस्य मत करो। भवानी ने सती को थोड़ी देर के लिए संकट मे डाल दिया। भवानी असल है। उन्होंने कहा—जैसे रास्ते में सती ने मेरा सहारा तोडा है वैसे ही मै उसका सहारा तोड़ूगी। उसका जलता हुआ दीपक बुझा दूँगी। नैहर से उसका नाता टूट जायगा। उसको निश्चित ही गउरा ले चलूगी।

भवानी ने बीर को योगी बना दिया, माया की सारंगी उसके हाथ मे दे दी तथा खेल प्रारम्भ किया। योगी गाना गाते हुए चल पड़ा। उसके साथ जगदम्बा थी। उसने फेरी लगाना शुरू किया, सुहवलि गाँव छोड़ दिया। रानियाँ योगी को भीख देने चली, किन्तु यह योगी भिक्षा के लिए नही आया है। लोग योगी को भीख देने जाते थे पर वह कहता मै भिक्षा के लिए फेरी नही लगा रहा हूँ। लोग पूछते फिर तुम्हे क्या चाहिए, क्यों फेरी लग रही है ? योगी की आँखो से झर-झर आँसू गिर रहे है, वह गली मे रो रहा है।

पंचो, बीर पर विपदा आ पड़ी है। आज मैने दूल्हे के सिर पर मुकुट रख दिया है, यहाँ बारात लेकर आया हूँ। यहाँ मेरे सारे वीर गायब हो गये है। इसीलिए मेरी फेरी लग रही है। दुनिया मे किसी ने बारात देखा हो तो बता दे। पर किसी को कुछ मालूम नही था। लोगो ने कहा—जैसी बारात की बात तुम बता रहे हो वैसी बारात इधर नही गयी है। भवानी ने फिर यह सोचकर कि जब सती का यह हाल है तो यदि वह धर्म का मुकुट-मौर और तागपाट गायब कर देगी तो मेरा साथ कौन देगा ? उन्होंने कहा—हे धरती फट जाइये ताकि मै अपने लड़के को यहाँ छिपा दूँ। धरती दो टूक हो गयीं। दुर्गा ने धरती को अपना बेटा सौंप दिया। कहा—आप इस लोरिक की रक्षा कीजिए। फिर समय पर इस थाती को लौटा दीजिएगा।

पृष्ठ 214-215-216

भवानी ने कहा—जब मैं माँगू मेरी थाती दे देना। पंचों, अब धरती माता

बीर को अपने अंग में समेट कर उसकी रक्षा कर रही हैं। जगदम्बा अपना रथ हाँकते हुए इन्द्रपुरी पहुँच गयीं। वहाँ देवताओं की कचहरी लगी हुई है। सब उनका मुंह देख रहे हैं। पंचों, यह बात सुनिये, जब दिन अच्छे हैं तो सब साथी हैं, हितू हैं। दिन बिगड़ने पर कोई मित्र नहीं हैं। इन्द्रपुरी में वह अपने भाई ब्रह्मा के द्वार पहुँची, वहाँ सब मुंह लटकाकर बैठे हुए थे। कोई उनसे बात नहीं कर रहा है, न कोई कुशलमंगल पूछ रहा है।

उनकी सात बहनें थीं। उन लोगों में झगड़ा हुआ तो काका ने दुर्गा को मृत्युलोक में भेज दिया। उनका नाम बड़ी पेटवाली 'पेटहिया' पड़ गया था। किसी प्रकार सोहवल में उनका सहारा लगा था (वह भी टूट गया।) दुर्गा ने कहा--इस बार मैं इन्द्रासन फूंक दूँगी, इन्द्रासन में हलचल मच गयी। लोहा लग गया, उन्होंने अपना सिर नीचा कर लिया, फिर गरज उठीं। उन्होंने आग की चिनगारी उठायी और इन्द्रासन में उसे घुमाने लगीं। जैसे मेरा सहारा टूट गया है वैसे ही भाई का अवलम्ब तोड़ दूँगी।

सभी देवता अपने बंगले में प्रवेश कर गये। ब्रह्मा ने जब यह बात सुनी तो अपनी स्त्री के पास गये। कहने लगे---मेरी बहन क्रुद्ध है, वह इन्द्रासन फूंकना चाहती है, मेरा किला फूंकना चाहती है। तब वहाँ किसी ने प्याली में तेल लिया, किसी ने अबटन लिया, कोई मचिया लेकर दौड़ा। कोई पत्र लेकर दौड़ा। जितनी ब्रह्मा की स्त्रियाँ थीं, आगे बढ़ीं। किसी ने दुर्गा को बैठने के लिए मचिया दी, किसी ने उनके शरीर में तेल लगाया, किसी ने पंखा झला। सभी डरे हुए थे। भवानी क्रोध में जल रही थीं। कहने लगीं—दूसरे के घर से आकर यहाँ तुम इन्द्रपुरी में एक छत्र राज्य कर रही हो। मेरे बालक का सोना मुहवली में अवलम्ब टूट गया है। मैं तुम्हारा इन्द्रासन फूंक दूँगी। ब्रह्माइनि ने भवानी का पैर पकड़ लिया। कहा—ननद (दुर्गा) तुम मेरा कहा-सुना माफ करो। मैं तुम्हारे लिए कचहरी लगवा रही हूँ। जो पूछना हो पूछ लो। सब तुम्हारी पुकार पर खड़े हैं किला मत फूंको।

पृष्ठ 216-217-218

देवी कह रही हैं, एक बात है जिससे मेरे हृदय में आग लगी हुई है। तुम जाकर भाई से कह दो। अगर मेरी बात कोई नहीं सुनेगा तो मैं इन्द्रासन गरजकर फूंक दूँगी। यह मेरा भी तो है। यदि हमारी विपत्ति में कोई हितू नहीं है तो मैं जरूर आग लगा दूँगी। क्या मेरा नैहर यह नहीं है? पंचों, ब्रह्माइन ने कहा—हम लोग कचहरी लगवा रहे हैं, आपका दुख क्यों नहीं सुना जायगा, आपका दुख क्यों नहीं हरा जायगा।

तब ब्रह्माइन ने ब्रह्मा से कहा—ननद का दोष नहीं है, आप हमारे पति हैं, सिंदूर के मालिक हैं। पूरा दोष आप लोगों का है। उनके बालक पर आप लोगों ने

संकट डाल दिया है। इससे हमारी ननद संकट में हैं। वह अतृप्त-सी, आकुल होकर रो रही हैं। जैसे भी हो आप उनकी विपत्ति में सम्मिलित होइये नहीं तो वह किला फूंक देंगी। देवता लोग थर-थर काँपने लगे जैसे ब्यायी हुई गाय काँपती है। देवताओं ने कहा—हम लोग उनकी परेशानी नही जानते थे। यदि मालूम होता तो हम लोग पूछते।

इसके बाद का अब सुहवल का खेल सुनिये। कैसे सती की शादी हुई, कैसे गउरा में विपत्ति आयी, कैसे सुहवलि में विपत्ति आयी, कैसे देवी इन्द्रपुर में रोयीं, कैसे वहाँ कचहरी लगी ? अब देवताओं की कचहरी बैठ गयी। ब्रह्मा की ऊँची गद्दी लग गयी। देवी, कचहरी में चलीं। दरबार वहाँ जमकर लगा हुआ था। तब तक ब्रह्मा उठे और दुर्गा से पूछा—तुम्हारा यहाँ आना क्यों हुआ है ? तब जगदम्बा हँसी। भैया मेरी बात मानो। यदि यह बात तुमने पहले पूछी होती तो मेरी छाती नही फटती। मुझे दुख हुआ था तब मैं तुम्हारा कैलाश फूंकने चली।

दुर्गा ने कहा—भैया मैंने पृथ्वी को मथ डाला, पूरी शक्ति लगायी, पर मेरा कोई सेवक नहीं मिला जो मुझे पूजा दे। मैंने जाकर रमरेखा घाट पर गोता लगाया। फिर रथ तैयार कर मैंने कहा भइया के पास चलूं। उनके टुकड़ों पर पलकर उनके पास गुजारा करूंगी। काका ने मेरा नाम बड़ी पेटवाली पेटहिया रखा था। मैं निराश होकर आपके पास आ रही थी, दुनिया में मुझे कोई सहारा नहीं मिला। काशी में तपेश्वरी का मेला लगा हुआ था। भृगुमुनि का दरबार भी लगा हुआ था। मेरी दृष्टि मृत्युलोक में घूमी। मैंने अपना रथ पीछे घुमाया। भृगुमुनि के द्वार पर मैं गयी। वहाँ खूब जल चढ़ रहा था। मैं जाकर फाटक पर खड़ी हो गयी। जिसको जरा भी आशा बंधती थी वह विनतभाव से प्रार्थना करता था। अर्घ्य का जल वहाँ बह उठता था।

पृष्ठ 219-220

दुर्गा ने कहा—बलिया शहर में भृगुमुनि की पूजा होने लगी। उनकी समाधि खुली। वह आँख खोलकर देखने लगे। जब फाटक पर आये तो वह मेरी ओर दौड़े और पूछने लगे मैं यहाँ क्यों आयी हूँ, कौन सा काम पड़ गया है। जब भृगुमुनि ने मेरा दुख पूछा तो मैंने कहा—मैंने सारी पृथ्वी को रौंद डाला किन्तु मुझे कोई सेवक नहीं मिला जो मुझे पूजा दे सके। मेरी सारी आशाएँ टूट चुकी थी। मैंने देखा वहाँ मेला लगा हुआ है। भीड़ इतनी थी कि अंग से अंग छिल रहा था।

मैं भृगुमुनि के पास अपना रथ ले गयी और कहा तुम मेरे सेवक का पता लगाओ, मुझे कौन पूजा देगा। उन्होंने कहा मैं अपने पास ही तुम्हारा मन्दिर यहीं बनवा दूंगा। अपने हिस्से में मैं तुम्हें आधा दे दूंगा। आधा बताशा और जल तुम्हें चढ़ेगा और आधा मुझे। मैंने कहा—हे भृगुमुनि, मैं तुम्हारी पूजा में आग लगा

दूँगी । काका ने मेरा नाम 'पेटहिया' (बड़ी पेटवाली) रखा है । यदि बताशा ही खाना था तो कोई मुझे पुण्यवान नहीं मिल गया होता । तब भृगु ने कहा—यह पतली पगडंडी पकड़कर बोहा चली जाओ ।

एक मलसांवर नामक बीर है वह तुम्हारी पूजा देगा । मैं व्याकुल थी, सर-उंज बोहा में चली गयी । मैं सुरहन में प्रवेश कर गयी । वहाँ सात पेड़ पीपल के थे, सात पेड़ पकड़ी के थे । वहाँ हर संकरी लगी हुई थी । गायों का वहाँ अड़ार था । वहाँ सांवर मेहनत (कसरत) कर रहे थे । मैंने उसे देखा और कहा—यही बीर मुझे पूजा देगा । मैं बारह सौ मरही और चौदह सौ भूत वैताल लेकर, तथा पृथ्वी का सारा भार संभाल कर उसके मस्तक पर बैठ गयी । उसका शरीर नाच गया, वह धरती पर गिर पड़ा । मूर्च्छित हो गया । मैंने कहा मुझे लांछन लगेगा । मैं गउरा चलूं ।

बुढ़िया खोइलनि के पावन द्वार पर पहुँची । वहाँ छै महीने का बालक लोरिक था । मेरा रथ वहाँ रुक गया । अपनी कलाई पर कुछ मरही, भूत वैताल लेकर मैंने उसकी छाती दबायी, उसने अंगड़ाई ली । तब से मैं गउरा में उसकी सेवा करने लगी ।

पृष्ठ 221-222-223

खोइलनि उसको एक बार अबटन लगाती थी तो मैं दिन में दो बार । वह दो बार लगाती थी तो मै चार बार । जैसे माली फुलवारी सींचता है वैसे मैं लड़के की सेवा करती थी । वह अजई के संग लड़ने लगा । रोज-रोज बढ़ने लगा । जब वह फगुवा खेलने गया तो एक स्त्री (चनवा) ने उसे अपमानित किया । [इसके बाद 'अनके खा छलारो··· कपिला गाइ' सूत्र है] तब उसने शपथ ली कि संवरू को मुकुट (मौर) बाँधूंगा तथा सुहवलि बारात करने जाऊँगा । भीमली का भाला उखाड़कर फेंक दूँगा । सती का झोंटा पकड़ूँगा विवाह करूँगा ।

बीर ने मेरी पूजा की । इन्द्रासन से मैं मृत्युलोक में आयी । हे भइया, ब्रह्मा, मैंने तुम्हारी गद्दी छोड़ दी । सवा सौ खप्पर मैं चाट गयी । खंसी और भेड़ों का उसने वध किया । मैंने उनका रक्त पीना शुरू किया । फिर भी मेरा पेट नहीं भरा । मैंने कहा—बेटा किसी को निमन्त्रण देकर आधा पेट नहीं खिलाया जाता । उसने तलवार से अपनी आधी जाँघ काट दी । जब खून वह चला तो मैं उसे पीने लगी । मेरा पेट भर गया । मैंने जय-जयकार किया । फिर मैंने उसे वरदान दिया कि बेटा, जैसे तुमने मेरा पेट भरा है वैसे ही लोहा में युद्ध में तुम्हारा पेट भरूँगी । जहाँ तुम्हारा पसीना गिरेगा वहाँ मेरा खून गिरेगा । हे भइया, (ब्रह्मा) सुरहन के निकट अब उसकी सारी बारात गायब हो गयी है ।

मैंने लड़के को योगी बनाया । उससे सारी दुनियाँ में भिक्षा मँगवायी । मैंने

सर्वत्र ढूंढ़ा कहीं बारात का पता नहीं चला। आप इन्द्रपुरी में इसका भेद बता दीजिये। जब दुर्गा ने यह प्रार्थना की, इन्द्रपुरी के सभी देवताओं ने कान लगाकर सुना, किन्तु किसी की अक्ल ने काम नहीं किया। उन्होंने इन्द्रासन में ढूंढ़ा, कैलाश में ढूंढ़ा, आकाश में ढूंढ़ा पर पता नहीं चला। अन्त में उन्होंने कहा—लगता है पाताल लोक में चोरी हुई है। इसका पता शेषनाग ही बता सकेंगे।

तब दुर्गा ने ब्रह्मा से कहा—यदि अपने बच्चे को लेकर वहाँ जाऊँगी तो वह विष छोड़ देंगे। हमारा बच्चा जल जायेगा। आप गरुड़ को मेरे साथ भेज दीजिये। तब हम पातालपुरी जायेंगे। पंचों, अब बयान सुनिये। सुहवलि की गीति अजब है। गले के बिना मेरा गाना बिगड़ रहा है। संसार में बेटों को पाला जाता है कि थकने पर काम आयेंगे। इस सम्पूर्ण रात में मैं अपना दुख कह रहा हूँ।

पृष्ठ 224-225

गायक कहता है—रात से मैं अपना दुख कह रहा हूँ लेकिन कोई मेरी प्रार्थना नही सुन रहा है। पंचों, जब बुरे दिन आते हैं तो कोई हित नहीं होता। जब भवानी का कोई हित नहीं था तो मेरा हितू कौन मिलेगा। पंचों, जो भी हो जो मेरे हृदय में है उसे मैं कह रहा हूँ। आदिशक्ति भवानी गरुड़ को लेकर सुहवल बाजार चली आयी। धरती से कहा—मेरी थाती दे दो, मुझे भारी काम लग गया है। जब भवानी ने प्रार्थना की तो बीर अंगड़ाई लेते हुए निकला। भवानी रोकर कहने लगीं—हे पुत्र, तुम्हारे कारण देवताओं से मेरा मतभेद हो गया। मैंने किला फूंकने की तैयारी की। नैहर में भाई से वैर हुआ।

बारात धरती में गायब हो गयी है। दुर्गा ने यम का छूरा तोड़ दिया, लोरिक को छः महीने का बालक बनाकर चलीं। संग में पीछे गरुड़ को ले लिया था। वे नाग के पावन द्वार पर पहुँच गयीं। नाग सो रहे थे। नागिन पंखा झल रही थीं। गोद में बच्चे को लेकर भवानी ने नागिन से कहा—अपने सोये हुए पति को जगा दो। मुझे उनकी भारी जरूरत है। नागिन क्रोध में जल उठीं। पर नज़र उठाकर देखा तो लड़के की वहाँ शोभा बिखर रही है। उसने कहा—जिसका लंगड़ा, लुंज-पुंज लड़का मर जाता है उसकी माँ जान देने के लिए कुंवा झांकने लगती है। तुम यहाँ किसके पुत्र को लेकर आ गयी हो जो ऐसा सुन्दर है। तुम कह रही हो कि पति को जगा दूँ। यदि मैं उनका अंगूठा दबा दूं तो वह ऐसी लहर (विष) फेंकेंगे कि यह सुन्दर बालक जल जायगा और रानी का दीप बुझ जायगा।

नागिन ने कहा—मैं उन्हें जगाऊँगी तो अवश्य वह अपने फण पर आग उत्पन्न कर देंगे। तुम्हारा बेटा अवश्य जल जायगा। भवानी ने कहा जो कुछ भी हो इस समय मुझे उनकी जरूरत है। नागिन ने पकड़ कर अंगूठा दबाया। नाग ने फण ऊपर कर विष फेंका, लहर फेंकी। गरुड़ ने दुर्गा की आज्ञा से उनके सिर पर पंख

डाल दिया। नाग धरती पर लोट गये, गिर पड़े। नागिन ने कहा—दुर्गा, तुमने मेरे पति को क्यों मारा। वह त्राहि-त्राहि करने लगी।

पृष्ठ 225-226-227

नागिन हाथ जोड़कर कहने लगी—हमने कौन सा अपराध किया है कि मेरे पति के दुश्मन को लेकर आप चढ़ आयीं। इन्हीं गरुड़ के डर से हम लोग पाताल लोक में चले आये हैं। दुर्गा ने कहा—हे नागिन, आज तुमको जितनी पीड़ा है उतना ही दर्द मुझे है अपने लाल के लिए। मैं तुम्हारे पति को मरवाने नहीं आयी हूँ। मैं जानती थी कि वह मेरी प्रार्थना नहीं सुनेगा, इसलिए मैं उसके मारने वाले को लेकर आयी हूँ। तुम रोवो मत। अपने पति को समझाओ। नागिन ने कहा—अब समझाना क्या है। अब सब तो सिर पर आ पड़ा है। गरुड़ वहाँ से हट गये। नाग वहाँ शान्त पड़ा है।

उसने भयभीत होकर नयी ब्यायी हुई गाय की तरह काँपते हुए कहा—आप मेरा शत्रु लेकर चली आयीं। कौन सा ऐसा काम आ पड़ा है। दुर्गा ने कहा—यह कार्य है कि सुहवलि में सारी बारात गायब हो गयी है। नाग ने कहा—यह खेल सती ने किया है। उसने सत का गेंडा बनाया। उसका एक ओठ धरती में था एक आकाश में। उससे ही उसने सारी बारात निगलवा ली है। वह गेंडा मुरहन में मुँह में पूँछ डालकर सो रहा है। दुर्गा ने नाग से वहाँ चलने के लिए आग्रह किया। यदि तुम नहीं चलोगे तो जैसे कृष्ण ने तुम्हें नाथ दिया था उसी प्रकार तुम्हें नथ पहना कर ले चलूंगी और सुहवलि मे नचाऊँगी। सती को यह दिखा दूँगी।

पंचों, भवानी ने कुश की रस्सी लेकर नाग के मुंह मे डाल दिया। नागिन त्राहि-त्राहि करने लगी। दुर्गा ने कहा जिस प्रकार मैं तुम्हारे पति को ले जा रही हूँ वैसे ही लौटाऊँगी। बालक लोरिक ने नाग की रस्सी पकड़ ली। सती आश्चर्य में पड़ गयी। वह अपनी छत पर सिर पटकने लगी। हे विधाता, तुमने क्या कर दिया। विधि ब्रह्मा की लेखनी मिटने योग्य नही है। उसने दुर्गा को अद्भुत कहा। उसने कहा मेरे जीव के कारण ही यह सारी फजीहत हो रही है। भवानी ने नाग को गली-गली नचाया।

सतिया सुहवल में रो रही है। दुर्गा तुमने बरबस मेरी इज्जत लूट ली। नाग ने उनको बारात दिखा दी। कहा गेंडा की गर्दन काट दो बारात बाहर निकल आयेगी। भवानी ने लोरिक से गर्दन काट लेने को कहा। लोरिक ने अपना कच्छ पहन लिया, उसके ऊपर मल्ल वर्ण की गाँठ थी। उसकी छाती पर लोहे का कवच था। उसमें बर्छियाँ थीं। बायें नैपाली ओड़न (ढाल) दाहिने विद्युत की तेग थी।

पृष्ठ 228-229-230

लोरिक के बगल में छप्पन छूरियाँ झूल रही थीं। ऊपर गुलाबी पाग थी जिसमें जिरही लगी हुई थी। अपनी पूरी शक्ति से उसने गेंडा को मारा। गेंडा ने जब पूँछ झटकारी, आँख नचायी तो दूर जाकर लोरिक रोने लगा। अब जान बचेगी नहीं। भवानी ने ललकारा और खड्ग से लोरिक ने गेंडे के सिर पर प्रहार किया। उसकी गर्दन दो टूक हो गयी। तब भवानी ने कहा—हे नाग सारी बारात तो निकल गयी किन्तु हमारा दूलहा ही नहीं है न अगुवा अजइया है। नाग ने कहा—पालकी का टेढ़ा बाँस नाग की पूँछ में अटक गया है। पूँछ को फाड़ दो दूलहा निकल जायगा।

दूलहा और अजई पूँछ फाड़े जाने पर बाहर निकल आये। पंचों, सुरहन के निकट शूरमा बारात निकल आयी। गरुड़ को साथ लेकर भवानी ने नाग को काली दह में पहुँचा दिया और नागिन से कहा—देखो जैसे तुम्हारे पति को मैं ले गयी थी वैसे ही पहुँचा रही हूँ। हमारा काम हो गया। आगे-आगे अजयी चल रहा था पीछे सारी बारात चली। मोती सगड़ के घाट पर अजयी उतरा और कहने लगा जो इस भाले को उखाड़ देगा वही बावन बुर्ज का तम्बू गड़वायेगा। सागड़ पर यही पत्र लिखा हुआ है।

पंचों, बारात में बड़े-बड़े बीर थे किन्तु उन्होंने जब भाले को देखा तो सबका कंठ सूख गया। कहने लगे—किसकी मौत आ गयी है, किसका काल पूज गया है। हमारी गउरा में स्त्रियाँ छूट गयीं। शैया छूट गयी, झूलनो का आनन्द छूट गया। सोचा था हम यहाँ दही-बड़ा खायेंगे। गोश्त (कलिया) खायेंगे। यह फुलौरा दही बड़ा तो जीव का काल हो गया। जो भाले को उखाड़कर फेंक देगा भिमली सुरहन के निकटवर्ती तट पर उसकी जान नहीं छोड़ेगा। बारात में जितने बीर थे भाला देखकर उनके ओठ सूख गये। लोरिक जब भाला के यहाँ पहुँचा तो भवानी भींटे के उत्तर में चली गयी थीं।

पृष्ठ 230-231

पंचों, गले में गमछा डालकर लोरिक घूमने लगा। कहने लगा—मैंने इस-लिए सबको निमंत्रण दिया था कि जिसमें बल और शक्ति होगी, जाँघ और भुजाओं में ताकत होगी वह मोती सगड़ पर भाला उखाड़ देगा। जब सभी बीरों ने नहीं कह दिया तो लोरिक के मन में हीनता आ गयी। वहाँ भाला छोड़कर माँ दुर्गा के यहाँ रोते हुए चला। बामरि की बेटी सतिया इधर हँस रही थी।

दुष्ट बड़ा पुवा पका रहे थे, बड़ा गाल बजा रहे थे। मोती सगड़ पर अब भाला से मुकाबला हो गया है। लोरिक दुर्गा के चरणों पर गिर गया। मैया, मेरी भवानी मैंने बारात में बड़े-बड़े योद्धाओं को निमंत्रित किया था। पर भीमली का

भाला देखकर सबका कंठ सूख गया है। भवानी ने फटकारा तुम्हारे ऊपर वज्रपात हो जाय। मैंने तुम्हें बार-बार मना किया, मैं न तो आज भाला स्पर्श करूँगी और न तुम्हारी गुहार सुनूँगी। आज अगर तुम भाला उखाड़ कर फेंक दोगे तब मैं कल प्रातःकाल से जब पूर्व में लालिमा छा जायगी पश्चिम में प्रकाश हो जायगा, कौवे टेर उठायेंगे, तुम्हारा साथ दूँगी। तब तुम संवरू का विवाह करना।

वीर बघेला लोरिक सोच में पड़ गया। फिर मोती सगड़ के घाट पहुँचा। सती ओठ पर आँचल डालकर तमाशा देख रही थी। यह अभी बालक है, यदि यह जूझ जायगा तो इसकी माँ गउरा कैसे जायेगी। उसने कहा—मेरे भाई की शान भारी है। भाला मोती सागड़ पर गड़ा हुआ है।

पृष्ठ 232-233

जो बीर यहाँ पंजा अजमायेगा, भाला दबायेगा वह उसी स्थान पर शेष हो जायगा, काल कवलित हो जायगा। यह बीर युद्ध के योग्य नहीं है, यह मेरे भाई की शान उखाड़ने चला है। उस स्त्री का कर्म फूट गया जिसके गर्भ में तुम उत्पन्न हुए हो। जिसका लंगड़ा लूला बच्चा युद्ध में मर जाता है उसकी माँ कुएँ में झाँकती है, जान दे देना चाहती है। जिसका (लोरिक) ऐसा पुत्र युद्ध में मारा जायगा वह गउरा बाजार में कैसे जीवित रहेगी।

पंचों, अब बीर लोरिक लंगोटा कस कर तैयार हुआ। नीचे झुक कर उसने मुट्ठी में धूल उठायी। देवताओं का स्मरण करने लगा। देवी आपने मेरा साथ छोड़ दिया। कोई बीर भाला नही उठा रहा है। उसने कहा—हाय भगवान, हाय विष्णु, हाय तैंतीस कोटि देवताओं, मैं सबको हाथ जोड़ रहा हूँ। जगदम्बा ने हमारा साथ छोड़ दिया, बीरों ने हमारा संग छोड़ दिया। अब मेरा कोई सहायक नहीं है। जैसे सभा में द्रौपदी के चीर की रक्षा की उसी प्रकार भगवान, मेरी लज्जा बचाइये। मेरी देह संकट में फँसी हुई है। कोई मेरा हितू दिखाई नही दे रहा है। यह कहते हुए वह अपने शरीर पर धूल फेंक रहा है। जैसे बाघ अपने शिकार पर टूटता है लोरिक भाले पर टूटा। भाला सात बार मुड़ गया, धरती पर गिर गया। बीर ने जब उसे गोद में उठाया तो भाला फिसल गया। बार-बार वह भाला पकड़ता पर भाला फिसल जाता था। बीर का गोरा बदन अब काला पड़ गया। वह पसीने से लथपथ हो गया। भीमली का भाला हिलता नहीं था।

बामरी की बेटी सती मदाइन ने भवानी को धिक्कारा। तुम्हारी पूजा को धिक्कार है। तुम्हारा बेटा मृत्यु लोक में मर रहा है। तब भवानी वहाँ पहुँची, गरज उठीं। बेटा तुम बलशाली हो, तुम भाला छोड़ दो। मैं तुम्हें शिक्षा दे रही हूँ। तभी भाला उखड़ सकेगा। बीर भाला छोड़कर मोती सागड़ पर अलग खड़ा हो

गया । भवानी ने कहा—जैसे भादों में भैंसा मंडराता है वैसे ही मंडराओ । बीर बघेला लोरिक गरजा और धरती पर चोट करने लगा । भवानी उसको लेकर उड़ जाती थीं फिर उसे फेंकती थीं । उसकी देह सूख गयी । भवानी ने उसे कहा—उठो तुममें शारीरिक बल तो है पर ज़रा बुद्धि की कमी है । जाओ, आगे बढ़ो, भाले को लटका दो, अंगुलियों में दबा लो । उसने छाती में तीन बार भाला लपेटा, तीन बार गर्दन में उसे घुमाकर बाँधा, शेष को भी अपने शरीर में लपेट लिया । फिर धरती पर पैर रखकर वह बयालिस हाथ कूद गया ।

पृष्ठ 234

भवानी ने जैसे सीख दी थी, वैसा ही किया । भाला उखड़ गया । पर उसको मूर्च्छा आ गयी जैसे लंका में लक्ष्मण को शक्तिबाण लगा था । वह धरती पर गिर पड़ा । धरती पर उसका खून बहने लगा । जगदम्बा ने उसे गोद में ले लिया । सतिया हँस पड़ी । उसने कहा भवानी तुम्हारे ऊपर वज्रपात हो जाय । ऐसे हो लाड़ले को लेकर चली थी कि मोती सगड़ पर खून फेंकने लगा ।

भवानी रो रही हैं और हवा झल रही हैं । उन्होंने सतिया से कहा—मैं मोती सगड़ पर दुखी हूँ । कल मैं अपने लाड़ले को पा गयी तो कल लोहा छिड़ेगा, युद्ध होगा, तलवारें चलेंगी । भीमली के मुंड का कलश धरा जायगा । कोहबर को रुधिर से रंग दिया जायगा । उसकी छाती का पीढ़ा बना दिया जायगा । तुम्हारे सिर का झोंटा पकड़कर निश्चय ही संवरू से तुम्हारा विवाह करा दूँगी । जैसे मैं अतृप्त होकर रो रही हूँ वैसे ही तुम रोओगी । तब वहाँ लोरिक ने सहदेव से कहा—मेरे ठाकुर सहदेव, बावन बुर्ज का तम्बू भीटे पर गड़वा दीजिए । उसकी डोरियाँ रेशम के सूत की हों । आगे पीले रग की कनात खड़ी करवा दीजिए । उसके इर्द-गिर्द प्रकाश और सजावट के लिए कुमकुमा लगे हों गिलास और हंडिया लगे हों । तेगों का बागीचा और बर्छियों का मंडप खड़ा कर दिया जाय । ढालों का ढेर लगा दिया जाय । एक-एक बीर छाती चौड़ी कर वहाँ बैठ जाय ।

पृष्ठ 234-235-236

जब बीर ने आज्ञा दी तो सहदेव ने वैसा ही करा दिया । तब बीर ने बाजा बजाने वालों से कह दिया पट्टों, पाँच गोमत ही लकड़ी बजा दो फिर विवाह की लकड़ी बजा देना । फिर युद्ध के स्वर लकड़ी पर निकालना ताकि आवाज सुहवलि तक सुनी जा सके । यह सुनकर बाजा बजाने वाले उठे, बाजा बजाने लगे ।

बमरी को जब आवाज सुनाई पड़ी तो वह दाँतों तले अंगुली दबाने लगा । उसने बायें बैठे हुए मंत्री दाहिने बैठे हुए महतो दीवान से इसका भेद पूछा । किसने चुपके-चुपके विवाह के लिए दही गुड़ खाया है । किसने तिलक चढ़ाया है । किसकी

लड़की की शादी पड़ गयी है। किसके यहाँ माँड़ो छा दिया गया है। सुहवल में ये बाजे क्यों बज गये हैं। बमरी क्रुद्ध हो उठा। घर-घर के बीर भय से काँप उठे। कहने लगे—ऐसी किसो की शक्ति नहीं है कि यहाँ आकर तिलक चढ़ावे। हमें लगता है कि कोई दूर बारात ले जा रहा है। रास्ते में देर हो गयी है, (अतः बारात यहाँ ठहर गयी है। इसीलिए बाजे बज रहे हैं। कल पूर्व में लालिमा छा जायगी। पश्चिम में प्रकाश हो जायगा। कौवे टेर उठायेंगे, भोर हो जायगा प्रातःकाल हो जायगा—तब ये वीर अपनी शान उखाड़ लेंगे और अपना रास्ता लेंगे।

जब बमरी ने यह सुना तो कुछ ठंडा हुआ। अच्छा, यदि वे रास्ता पकड़ कर आगे चले जायेंगे तो कोई हर्ज नही है। किसी ने सुहवलि में तो शान नहीं गाड़ी है। लोगों ने कहा—नहीं। तब बामरी को धैर्य हुआ, उसका क्रोध शान्त हुआ।

पृष्ठ 236-237

धर्म और न्याय का विचार कर बमरी अपने महल में बैठ गया। इधर मोती सगड़ पर रास मण्डली का नाच शुरू हो गया। बीर बघेला लोरिक उठकर सहदेव के यहाँ गया। कहने लगा—ठाकुर, मेरी बात मानो, यह नाच बन्द करवा दो और लोगों को उनकी इच्छा के अनुसार भोजन सामग्री दो। वे भोजन विधिपूर्वक बनाकर खायें।

कल पूर्व में लालिमा छा जायगो। पश्चिम में प्रकाश होगा, कौवे बोलने लगेंगे, भोर से बिहान होगा, तब जैसी भगवान की इच्छा होगी, होगा। नाच बन्द हो गया। आटा, चावल, घी सब कुछ तौला जाने लगा। अहरा फूँका गया, आटा मांड़ा जाने लगा। किसी ने दाल-भात बनाया। किसी ने खिचड़ी बनायी, किसी ने लिट्टी लगायी। कँहार घी डालकर आटा सान रहे थे। जब बाजा बजाने वाले खाना खाने बैठे तो कँहारों से कहा—आज हम लोगों ने जमकर खाना खाया है। कल हम लोग दो-दो लंगोटा सिवायेंगे। यदि इस ठाकुर की बारात दो-चार दिन रह गयी तो हम यहाँ कसरत करेंगे। यदि बामरि का लड़का चौथे दिन यहाँ आ जाय तो हम उसे रोक लेंगे।

पंचों, अब आगे का बयान सुनिये। सोना सुहवलि में अब भारी विपत्ति आयेगो। खाकर सभो बीर तम्बू में सोये हुए हैं। बीर लोरिक वहाँ पहरा दे रहा था! इधर-उधर टहल रहा था। सतिया नयन खोलकर देख रही थी। उसने अपने सत का सुमिरन किया। लोरिक पर उसने नींद का आक्रमण करवाया। उसे ऐसी नींद आयी कि वह टूट नहीं रही थी। जम्हाई उसे दबाने लगी, सिर तक जम्हाई का आक्रमण हुआ। रो-रोकर वीर ने देवी को पुकारा वह उपस्थित हो गयीं।

पृष्ठ 238-239

उसने कहा—मैया जगदम्बा सुनिये, यह जीवन आपके ही धर्म पर आधारित है। मेरी देह सुस्त हो गयी है। मुझे बहुत दिन दौड़ते हो गया। कहीं सोने की सुविधा नहीं मिली। हमारी आँख पर नींद चढ़ बैठी है। मुझमें इसको सहने की शक्ति नहीं है। देवी आप यहाँ रखवाली कर दीजिए। माँ भवानी वहाँ हँस पड़ीं। हे लाल, मेरी बात मान जाओ, मैंने तम्बू में तुझ निराश्रित की बाँह पकड़ी है। देवी अब भींटे पर गयीं। हे लाल तुम यहीं सो लो। ध्यान से सो जाओ।

अब सागड़ का बयान सुनिये। देवी ने लोरिक को वहाँ सुला कर लक्ष्मण रेखा खींच दी। वह अपने भाई ब्रह्मा के द्वार चली गयीं। इधर सती सुरहन चली गयी जहाँ नागिन हरदोइया का बिल था। बमरी की बेटी वहाँ रो पड़ी। कहा—बहिन हरदोइया, यहाँ बड़ा काम पड़ गया है। तुम नाते में मेरी बहन हो। तुमने मुझे मृत्यु-मण्डल में सखी कहा है। जब तुम्हारे ऊपर विपत्ति पड़ेगी तो मैं उसमें शामिल होऊँगी। सागड़ पर मुझे एक काम है। इससे बढ़ कर दूसरी विपत्ति मेरे ऊपर नहीं आयेगी। इसमें तुम शामिल हो जाओ। सती ने कहा—तुम अहीर की बारात डंस दो। हरदेइया ने कहा—डंसने को तो डंस दूं पर मुझे यह आभास मिला है कि तुम्हारा दूल्हा भींटे पर आया है।

यह लग्न टलने वाला नहीं है। सती क्रुद्ध हो उठी। उसकी एड़ी में आग लग गयी। कहने लगी—बहिन तुम दीवाल की ओट में दब जाओ। तुम बहन नहीं पैदा हुई हो शत्रु पैदा हुई हो। तुमने मेरा अपमान किया है। मेरी छाती फट गयी है। मैंने इन्द्र के पावन द्वार पर अपना जीवन अपनी भाग्यरेखा अंकित करायी है। मैंने ब्रह्मा से कहा छै बार आपने मुझे मृत्युलोक में जन्म दिया। छै बार मुझे विधवा किया। तुम मुझे मृत्युमण्डल में मत भेजो और न स्त्री का जन्म दो। ब्रह्मा ने कहा—मेरी लेखनी स्याही में डूब चुकी है। मेरा नाम मृत्युलोक में सतिया पड़ चुका है यह मिटाने से अब नहीं मिट सकता। मैंने कहा अच्छा तुम सती नाम लिख दो पर मेरे लिए पति मत भेजो, और न शादी मृत्युलोक में लिखो। बहिन, यह मैंने अपने सामने लिखवाया है।

पृष्ठ 240-241

इन्द्रासन में मेरी शादी नहीं लिखी गयी है, न मृत्युलोक में मेरे लिए वर ही रचा गया है। सुरहन में आज तुमने मेरा अपमान कर दिया है। सुरहन में मेरा कलेजा फट गया। हरदोइया ने कहा—अच्छा ठीक कह रही हो पर मुझे दोष मत देना। अगर मैं टीस-क्लेश उत्पन्न कर रही हूँ तो इसका हाल भगवान ही जानेंगे। दो आज्ञा, मगर खूब सोच-समझकर आज्ञा देना। अब तो तुम अपनी नजर से देख आयी हो। मैंने तो नहीं देखा है कि भाग्य में तुम्हारा पति लिखा है या नहीं। मगर तुम

अपने पति को मरवाने के लिए मुझे भेज रही हो, हमें दोष मत देना। सती ने कहा मैं दोष नहीं दूँगी। तुम जाकर अहीर को बारात डंस दो जिससे बारात खत्म हो जाय। देखो, कल भवानी क्या करती हैं।

हरदोइया फुफकारते हुए जा रही है। वह तम्बू में प्रवेश कर गयी। वहाँ दीपक जल रहे थे, हंड़िया और गिलास प्रकाशमान हो रहे थे। नागिन पहुँच कर पहले डंसने लगी, फिर उसने कहाँरों को डंसा। तम्बू में घूम-घूमकर वह सभी वीरों को डंसने लगी। उसने सभी बारात को डंस लिया फिर संवरू के पास गयी। उनका मुख-मंडल प्रकाशमान था। नागिन उनको मूरत देखती रह गयी और अपना सिर नीचे कर लिया। उसने सतिया को धिक्कारा कि उस पर बज्र गिर जाय। जो अपने पति को मरवाती है भगवान उसका निस्तार कैसे करेंगे। पर मैंने तो वचन दिया है। अब तो यहाँ शूरमा को डंसना ही होगा।

पृष्ठ 241-242-243

पंचों, जिस दिन की बात है उसके आगे के समर का हाल सुनिये। हरदोइया संवरू को डंसने में कतराने लगी। फिर सोचने लगी डंसे बिना बात भी नहीं बनेगी। वह संवरू के सिर पर चढ़ गयी और अपना सिर उनके पैर को ओर करके उनकी नाक में पूँछ डाल दी और हिलाने लगी पर वीर नहीं जगा। फिर नागिन हरदोइया ने अपनी पूँछ निकालकर उनके दूसरे नथने में डाल दिया। वीर संवरू ने करवट ली उन्हें छींक आ गयी। नागिन को धक्का लगा तो उसने संवरू को काट लिया।

हरदोइया ने अब सभी बारात को डंस दिया, किसी को नहीं छोड़ा। जब तम्बू छोड़कर वह सागड़ पर चली तो बीर लोरिक का दुपट्टा चमका। नागिन डंसने चली तो लक्ष्मण रेखा वृत्त पर, जहाँ लोरिक था, आग उठी। नागिन को आग लगी तो वहाँ से भाग चली। वह सुरहन के ताल में गयीं, जल में कूद गयी। पंक में लोट-पोट कर फिर लोरिक को काटने दौड़ी। वृत्त पर फिर आग उठी और नागिन के शरीर पर फफोले उठ गए। वह अपने बिल पर चली गयी।

सतिया ने उससे सागड़ का हाल हँसकर पूछा तो हरदोइया ने कहा—मैंने सारो बारात डंस ली है किन्तु भींटे पर एक बीर को नहीं डंस सकी। उसके पास गयी तो वहाँ आग फैलने लगी। मेरा शरीर झुलस-सा गया। मैं पंक में लोट-पोट होकर तुम्हारे लिए फिर उसे काटने गयी तब शरीर पर ऐसी अग्नि गिरी कि अब लगता है शरोर बचेगा नहीं। बामरि की बेटी वहाँ रोने लगी, कहने लगी तुमने तो मेरे असली शत्रु को छोड़ दिया। वह तो मेरी दुर्गति करेगा। हरदेइया बोलने लगी, तड़ातड़ जवाब देने लगी।

पृष्ठ 244-245

बहिन या तो तुम पागल हो गयी हो या तुम्हारी बुद्धि मन्द हो गयी है। जिस बीर को मैं डंस दूँगी वह उसी स्थल पर शेष हो जायगा। मुझको ऐसी-वैसी नागिन मत समझो। सारे दुष्ट मोती सगड़ पर मरे पड़े हैं। कल गिद्ध कटकटायेंगे, गिधनियाँ मंगल गान करेंगी। सियार आदि कल दौड़ लगायेंगे, मांस खायेंगे। कब तक वह पाजी रखवाली करेगा। वीरों का मांस सड़ने लगेगा। वह दुष्ट अंधेरे में ही सुहवल छोड़ देगा और गउरा बाजार चला जायगा। सती तुम घबराओ मत। कौन है जो इस बारात को जीवित कर दे। सतिया ने कहा यह मेरे हृदय में रह-रहकर संताप उत्पन्न कर रहा है, हृदय में खोद-खोद कर आग लगा रहा है। सती सुहवल चली गयी नागिन अपने स्थान पर।

फिर प्रातःकाल हुआ। सूर्य का डंफ निकल आया। दो घड़ी दिन चढ़ गया। बीर लोरिक को धूप सताने लगी। उसने देखा कि सारे वीर सोये पड़े हैं, कोई जाग नहीं रहा है। फिर वह तम्बू में प्रवेश कर गया। वहां सारे बीरों के मुँह से फेन निकल रहा है, झाग निकल रही है, उनका शरीर पीला पड़ गया है। सभी मर चुके हैं। अजइया सोया हुआ है। उसका शरीर पीला पड़ गया है, मुँह से गाज निकल रही है। पास में धरमी पड़े हुए हैं। लोरिक पागल हो उठा, मल सांवर को जगाने लगा। उनका शरीर लकड़ी जैसा हो गया था। वह फूट-फूट कर रोने लगा। तब तक जगदम्बा वहाँ पहुँच गयीं। मल सांवर को गोदी में उठा लिया। लोरिक को लेकर वह दूर चली गयी। रो-रोकर उसके आँसू पोंछने लगीं। सती अपनी अट्टालिका पर हँस रही थीं।

दुर्गा दुख में तड़प रही हैं, सती प्रसन्न होकर हँस रही है, अट्टहास कर रही हैं। लोरिक ने कहा भाई के बिना मैं गउरा में कैसे मुँह दिखाऊँगा। फूहड़ स्त्रियाँ उपहास करेंगी। लड़के होलिका की लुकाठी बना-बनाकर हमें ललचायेंगे। [चन्दा (चनवा) वाली घटना की ओर संकेत है] दुर्गा ने लोरिक के हाथ गुलेल और गोलियाँ दे दीं। तुम बच्चा इससे कौवों को उड़ाओ, गिद्ध, सियार आदि से सजग रहो कि वे मृतकों का अंग भंग न करें। सजग रहो। मैं इन्द्रासन जा रही हूँ। दुर्गा ने माया का धनुष और तीर बना दिया। माया की गुलेल बना दो। कहा—यहाँ तुम कड़ककर सागड़ पर कौवों को उड़ाओ।

पृष्ठ 247-248-249-250

दुर्गा ने कहा—दिन में तुम गिद्धों को उड़ाना, रात में सियारों को भगाना। कड़ा पहरा देना। सती के जीवन के कारण मेरा भाई से मतभेद हो गया है। जितना वह मुझे सुहवलि में सता रही है उतना ही मैं उसे सताऊँगी। तुम यहाँ खबरदार

रहना । देवी इन्द्रासन गयीं । सती कोठे पर बैठी हुई हैं । वह अपना सत सुमिरन कर रही है । सागड़ पर गिद्ध उड़ने लगे । बीर गुलेल चलाने लगा । धनुष से गिद्धों को नचा-नचाकर मारने लगा । वे बीघों दूर भागने लगे । कौवे दस बीघे की दूरी तक भागे । जब दुर्गा इन्द्रासन गयीं तो सती ने इधर अपना खेल शुरू किया । उसने सागड़ पर कौवों-गिद्धों को ललकार कर भेजना शुरू किया । बीर लोरिक ने उन्हें भगाना शुरू किया । गिद्ध ठहर नहीं सके । सुहवलि में इस बात का हल्ला मच गया । सागड़ पर अंधेरा हो गया है वहाँ गिद्ध मंडरा रहे हैं । वहाँ कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा है । यह बड़ा अचरज है ।

पंचों, सुहवल में अंदेशा छा गया । ऐसा हाल है वहाँ का कि गिद्ध कटकटा रहे हैं, वहाँ जाने लायक भी नहीं है । बीर लोरिक इधर गिद्धों को उड़ा रहा है । अब सूर्य का गोला डूब गया, घर-घर दीपक जल उठे । अब सियारों की कटकटाहट शुरू हुई । लोरिक उनको भगाने लगा । बीर सारी रात सियारों को भगाता रहा ।

अब उसकी विपत्ति सुनिये । सतिया वहाँ प्रलय मचा रही है । सारी बारात मरी पड़ी है । सती सियारों को वहाँ खदेड़ कर भेज रही है, बीर लोरिक उनको भगा रहा है । इस प्रकार रात बीत गयी, प्रातःकाल हो गया । सती काग और गिद्धों को भेज रही है, वे मंडरा रहे हैं । ऐसा लग रहा है जैसे बादल घिरे हों । बीर गुलेल और धनुष से उन्हें दो-दो बीघे तक खदेड़ रहा है । सती उसको कोसने लगी । इस पाजी पर वज्र घहरा जाय । इसको नींद भी नहीं आती । उसका क्रोध बढ़ गया, पागल-सी हो उठी । दिन होता, रात होती लोरिक दिन में कौए और गिद्धों को उड़ाता, रात में सियारों को भगाता । सतिया अपना सत सुमिरन करती । प्रातःकाल हुआ, माघ के लाल बादलों से जैसे पत्थर गिरता है उसी तरह वहाँ पत्थर पड़ने लगे । बीर लोरिक अपनी ढाल तैयार करने लगा ।

पृष्ठ 251-252

भाइयों अब तड़तड़ाकर पत्थर गिरने लगे । आँधी उठ गयी । लोरिक ने अपनी ढाल ऊपर की । पत्थर ढाल से टकराने लगे । वे वीर के घुटने से लग जाते थे । उस पर विपत्ति पड़ी हुई थी । रो-रोकर वह काग उड़ा रहा था । उसकी गर्जना से वे भाग खड़े होते थे । उसकी बाहों में भी पत्थरों से चोट लगती थी । बीर का शरीर घुन गया उसे मूर्च्छा आ गयी पर बीर गर्जन करता रहा । रात हो चली । कौए अपनी जान लेकर भागे । सती ने इधर क्या किया ?

जब पत्थर बन्द हो गये तो तूफान उठा । अँधेरा छा गया कि सागड़ पर आर-पार नहीं दिखाई पड़ता था । आँधी से तम्बू गिर गया । बीर 'मारो-मारो' करके डाँटता था, सियारों पर उसने ललकार बाँधा । उधर अँधेरी रात गहरी थी । समीप के

सियार दूर भागते थे। सारी रात लोरिक सियारों को भगाता रहा। प्रातःकाल हुआ, लालिमा छा गयी। पश्चिम में प्रकाश हो गया। फिर सती ने अंधड़ उठाया। पत्थर गिरने लगे, लड़का ढाल से उन्हें रोकने लगा। तब तक जगदम्बा इन्द्रपुरी पहुँच गयीं, कहने लगीं—मेरी सारी बारात मर गयी है, मेरा बेटा लोरिक तड़प कर रो रहा है। विधि-ब्रह्मा ने कहा। मेरी बात सुनो। यह सारा खेल सतिया का है। उसने नागिन से सारी बारात डंसवायी है। सात दिन में अब सतिया मुझसे भेंट करने आयेगी। जितना तुम्हारा बेटा दुख में है उतनी ही उस पर विपत्ति आयेगी।

देवी अब मोती सगड़ पर पहुँच गयीं। लोरिक उनकी ओर वैसे ही दौड़ा जैसे बछड़ा उछल कर गाय की ओर दौड़ता है। उसने कहा—मैया, यहाँ पत्थर की वर्षा हो रही है। मेरी देह पर पत्थर गिर रहा है। सुरहन में मेरा पैर सूज गया है। बेटा मैं तुमको बार-बार मना कर रही थी, दुर्गा ने कहा।

पृष्ठ 253-254

बेटा, अगर तुम इस स्थान पर विपत्ति नहीं सहोगे तो तुम्हारा बेड़ा कैसे पार होगा। यह विपत्ति तो तुम्हीं ने पैदा की है। मुहबलि की लड़ाई कठिन है। तुमने मुझसे बार-बार मोती सगड़ पर चलने के लिये कहा। मैं बार-बार मना कर रही थी। खैर कोई बात नहीं। इस समय को काट लो। अब तुम सो जाओ। जगदम्बा स्वयं पहरा देने लगीं।

सूर्य का डंफ डूब गया। घर-घर दीपक जल उठे। सती अपना सत सुमिरने लगी। सत की पालकी पर बैठकर इन्द्र के पावन द्वार पर पहुँची। वह डाइन लेकर विष्णु के द्वार पर पहुँची। वहाँ लकड़ी की आग सुलग रही थी। ज्योंही वह वहाँ पहुँची उस पर जलती लुकाठी का प्रहार हुआ। दूत उसको पीटने लगे, वह रो उठी। विष्णु का द्वार छोड़कर वह ब्रह्मा के द्वार पर पहुँची। वहाँ भी दूत लुकाठी लेकर पहुँचे, दो चार लुकाठी जमायी। वहाँ से फिर वह विष्णु भगवान के यहाँ आयी। वहाँ यज्ञ की लकड़ी जल रही थी। फटी लकड़ी की मार वहाँ फिर पड़ी। सती को कहीं शरण नहीं मिली। वह रोकर चिल्ला कर ब्रह्मा से कहने लगी—मैंने कौन-सा अपराध किया है? इन्द्रपुरी में क्यों मेरे ऊपर मार पड़ रही है? ब्रह्मा ने कहा तुमसे बड़ा पाप हुआ है। अपने पति को तुमने मारा है। सारी बारात को मारा है। जितना अहीर का बेटा दुखी हुआ है उतना ही तुम भी पीटी जा रही हो।

सती ब्रह्मा के चरण पर गिर पड़ी—मैंने कौन-सा पाप किया है? इसे दिखा दीजिये। ब्रह्मा ने कहा तुम्हारे जाने के बाद देवताओं ने यह सोचा कि मृत्यु लोक में जब सती जायगी और दूसरों के विवाह में मंडप में जायगी तो कहेगी ब्रह्मा की कलम में आग लग जाय। यदि उन्होंने मेरी शादी लिख दी होती तो मेरी भी ऐसे ही शादी

होती । इसीलिये बाद में तुम्हारे भाग्य में विवाह लिख दिया गया। सुहवलि में जाकर अपना लांछन छुड़ाओ । तुमसे भारी पाप हो गया है । बामारि की बेटी वहाँ से रोती हुई लौटी ।

पृष्ठ 255-256

सतिया धर्म की डोली पर बैठ गयी तथा सुरहनि में उपस्थित हो गयी जहाँ हरदोइया का बिल था । सती वहाँ बिलख-बिलख कर रोने लगी, बहिन मेरी देह पर विपत्ति आ गयी है। हरदोइया ने कहा—अब क्या रो रही हो। सती ने कहा—जलती लकड़ी की मार से मेरा शरीर आहत हो गया है । मुझे नहीं मालूम था कि हमारा विवाह ब्रह्मा ने लिख दिया है । उन्होंने कहा कि मैंने यह अपराध किया है कि मैंने अपने जीवित पति को मरवा डाला है । इससे बड़ा पाप क्या हो सकता है ? मैं ब्रह्मा के चरण पर गिर पड़ी । उन्होंने कहा कि सभी देवताओं ने कहा है कि सती माया के बाज़ार में जा रही है । कहीं वह अगर विवाह में मंगल की बात सुनेगी तो कहेगी कि ब्रह्मा की लेखनी और पोथी जल जाय । इसीलिये ब्रह्मा ने बाद में मेरे ललाट में शादी लिख दी । यह लेख मिटने वाला नहीं है । हरदोइया ने कहा अब बारात जी नही सकेगी ।

बामरि की पुत्री रोने लगी । बहन हरदोइया मेरे ऊपर संकट आ गया है । तुम्हारी बात बिलकुल ठीक थी । मेरी आँख पर पट्टी पड़ी हुई थी । ब्रह्मा ने बाद में मेरी शादी के लिये भाग्य में टांकी लगा दी । बहन अब चाहे मेरी देह को नरक में डाल दो या उससे बाहर निकाल लो । हरदोइया ने कहा अब क्या कहूँ बहिन, बड़ा संकट उठाना पड़ेगा । यदि तुम बारात जीवित करना चाहती हो तो माया की गायें बना दो, चार कोनों में नांद गड़वा दो । जो वीर सागड़ पर सोया है उससे दूध दुहवा कर उनमें भरवा दो । मैं वीरों का विष खींच-खींच कर नांद में ढरका दूँगी । अपना शरीर झकझोर कर दूध में डाल दूँगी । शरीर ठंडा हो जायगा । दूध बर्रे के तेल की भाँति काला हो जायगा । तुम उपाय करोगी तो बारात जी जायगी । चांदनी रात थी । सतिया ने सत सुमिर कर सवा सौ गायों को सुरहनि के तट पर उत्पन्न कर दिया । धर्म की गायें छलांग मार कर वहाँ पहुँचीं और बछड़ों के लिये हुंकड़ने लगीं ।

पृष्ठ 257-258

सतिया ने अपने सत का सुमिरन किया तथा चार कोनों में नाद गड़वा दिया । सत से मिट्टी उठाकर उसने घड़ा और धूंचा बना दिया । सवा सौ बछड़े तैयार कर दिये । उनके गले में रस्सी लटकी हुई थी । सती ने नोंयड़ भी बना दिया । सती ने जब बछड़ों को छोड़ा तो भवानी लोरिक के पास आ गयीं और डपट कर कहा बछड़ों

को रोक दो, गायों को सूखा कर दो। तब सती रोकर विलाप करेगी। हमारी दूध देने वाली (ओहरि) गाय को तुमने सूखा कर दिया। तब तुम कहना कि जब बारात जीवित करोगी तब गायें दूध देंगी। मैं अपनी शक्ति से उन्हें एक बार में दुह दूँगा। सतिया कहेगी कि मैं एक बार में बछड़ों को छोड़ती हूँ तुम सभी गायों को एक साथ दुह दो।

लोरिक ने भवानी से कहा—आपने तो मुझे विकट स्थिति में डाल दिया है। मैंने तो आज तक बकरी भी नहीं दुही है। भवानी ने कहा – बेटा तुम बिगड़ गये हो, पागल हो गये हो, तुम्हारा ज्ञान मंद हो गया है जिसकी कायस्थ बुद्धि वाली देवी संगी हैं उसका काम कैसे रुकेगा। मैं अमल भवानी हूँगी तो इसी मोती सगड़ पर सारा खेल होगा। तुम चुपके से एक घूचा लेकर बैठना, मैं गायें दूह दूँगी और तुम्हारे सत की रक्षा करूँगी। भ्रम में मत पड़ना और नहीं मत कहना। नहीं तो धुली हुई नाव पंक में अटक जायगी। सती ने सत की गायें छोड़ दीं, पीछे बछड़े दौड़े।

दुर्गा यह खेल देख रही है। लोरिक ने बछड़ों को रोक दिया है। सती से कहा हरगिज़ बछड़ों को नहीं जाने दूँगी। दुर्गा सोचने लगी अभी तो बहुत कार्य शेष है। अभी तो झिंगुरी दसवंता, भगवंता, भीमली, सीरजवा सबसे युद्ध करना है। अभी तो पट्टा भीमली का बिहड़ युद्ध आगे है। पंचों, लोरिक ने बछड़ों को रोक लिया था। अब आप लोग ध्यान से सुनिये। सती वहाँ बोल उठी।

पृष्ठ 259-260-261

सती ने कहा तुम्हारी देह में शक्ति हो तो मैं सवा सौ बछड़ों को छोड़ देती हूँ, तुम गायों को दुह लो। जब तुम गायों को दुह दोगे तो मैं बारात को जीवित कर दूँगी। लोरिक हँसा और कहने लगा—छोड़ दो गायों को। ऐसी गायें हमने गउरा में बहुत दुही है। अब दुर्गा का खेल देखिये। बीर ने हाथ में दूध का पात्र, नोई आदि लेकर दूध दुहना शुरू किया। सती दौड़-दौड़कर दूध नांद में ढालने लगी। वह घबराकर सुहवलि जाने लगी। तब बीर लोरिक ने दौड़कर तेग उठा लिया। कहने लगा मैं तुझे जाने नहीं दूँगा। हमारा तुम्हारा यह कौल है, करार है कि मैं गायों को दुह दूँगा तो तुम बारात जीवित कर दोगी।

लोरिक ने कहा —मैं तुम्हारी गर्दन काट लूँगा। भवानी ने कहा—हाय बीर स्त्री वध मत करो। इस कुकर्म में मत फँसो नहीं तो तुम्हारी बारात नहीं जीवित होगी। सती सुरहनि में नीचे गयी। तब का खेल सुनिये। दुर्गा ने बीर को मोती सगड़ पर सुला दिया। बारह सौ मरही, भूत, बैताल तथा यम, सबको उसके सिर पर डाल दिया। खोइलनि का पुत्र लोरिक नशे में सो गया। इधर हरदोइया देह

झकझोरती हुई चली। चलती-चलती वह बाजा बजाने वालों के पास गयी, फिर कहांरों के पास गयी। वह घूम-घूम कर सबका विष खींचने लगी।

देवी दुर्गा ने सबको अच्छी तरह से सुला दिया था। विष नागिन के ब्रह्मांड में भिन गया। वह जाकर विष दूध में छोड़ने लगी। दूध पहले पीला हुआ फिर काले रंग में बदल गया। एक-एक कर उसने सबका विष खींचा। तीन नांद उसके विष से भर गये। उनमें का दूध काला हो गया। मोती सागड़ पर एक नांद शेष रह गया। अब नागिन दूल्हे (मलसांवर) के पास पहुँची। उनके शरीर में इस प्रकार विष भिन गया था कि नागिन द्वारा उनकी अंगुली से विष निकाले जाने पर भी उनकी सांस वापस नहीं आयी। नागिन हिचकी ले-लेकर विष खींच रही थी। वह विष निकाल कर चौथे नांद में कूद गयी। दुर्गा यहाँ खेल कर रही थीं। हरदोइया गले में लग गयी। तब तक तम्बू में अंगड़ाई लेकर, देह तोड़कर संवरू उठ गये।

पृष्ठ 261-262-263

संवरू ने कहा ऐसी सुख की नींद कभी नहीं आयी थी। लोरिक सोना सुहवलि में रो उठा। कहने लगा—भैया, जैसी नींद तुम्हें आयी थी वह मेरा हृदय ही जानता है। ऐसी नींद हमारे शत्रु को भी न आये। (इसके बाद सूत्र है हिनु करे⋯बिसभोर) गायक कहता है, देवी, जिस समय के लिये मैंने पूजा की है वह घड़ी निकट आ गयी है। आप वीरों की कीर्ति कह दीजिये। भाग्य के लिए भवानी जगिये। दुर्गा मां अब युद्ध के लिए जगिये। गीति के लिए, हे सरस्वती जीभ पर बैठिये। यहां पंवारा छोड़कर हर घड़ी मैं देवी का नाम भजूँगा।

पंचों की मंडली बैठी हुई है। यहां छोटे बड़े सब एक समान हैं। सबने मिलकर हुक्म लगाया है। मुझमें शक्ति नहीं है कि इसको पार लगाऊँ। मैं पंचों की मंडली में मस्तक खोलकर बैठ गया हूँ। जिस दिन के लिए मैंने पूजा की वह दिन निकट आ गया है। देवी, यह युद्ध का समय है। इसको मैंने आँख से नहीं देखा है। कान से सुनकर इसे गा रहा हूँ। अच्छे दिन के सब साथी हैं। दिन बिगड़ने पर कोई सहायक नहीं है। सबकी देह में दिमाग है। मुझे तुम्हारी ही शक्ति का भरोसा है। हे देवी, जब से आपने मृत्यु लोक में मेरा संग पकड़ा है तभी से यह गाना गा रहा हूँ। जब आप साथ छोड़ देंगी तो मेरा गाना भी चला जायगा।

देवी ने कहा—गाओ। एक भी अक्षर भूल जायगा तो मैं जोड़ दूँगी। तुम वीरों की कीर्ति कह दो। संसार में तलवारें झनझना उठीं। देवी प्रसन्न हो उठीं हैं। देवी जग गयी हैं, दुनिया क्रुद्ध होकर अब क्या करेगी? इस पंवारे को छोड़कर अब शूरमाओं को स्मरण करूँ। सभी योद्धा बीर महफिल में बैठ गये। लोरिक उठा और खाद्य सामग्री, रसद के पास पहुँचा तो देखा कि रसद लगभग समाप्त है। वह अजयी के पास पहुँचा। यहाँ सात दिन हम लोगों को टिके हो गया। यदि यहाँ सामान घट गया तो उधार भी नहीं मिलेगा। तुम ज़रा पाती लिख दो

सोना सुहवलि पार भेज दो। अजयी छाती पीटने लगा। वह तम्बू में लेट गया। कहने लगा—मेरे छाती की हड्डियाँ कड़क उठी हैं, पंजर की हड्डी टूट गयी हैं, हाथ काँप रहा है। मैं पत्र नहीं लिख सकता। मुझे कंपकंपी आ गयी है, सिर में दर्द हो गया है। यह सुनकर भय से सबका कंठ सूख गया। लोरिक ने कागज उठाया। कोई पत्र लिख नहीं रहा था।

पृष्ठ 264-265-266

आगे समर का हाल सुनिये, पंवारा सुनिये। पत्रिका घुमी, वहाँ एक से एक बीर योद्धा थे, दैव के लाल थे। सभी करधनी के मजबूत बीर थे जो बारात करने गये थे। भीमला के भय से कोई पत्र नहीं लिख रहा है कि वह जान नहीं छोड़ेगा। जब किसी ने पत्र नहीं लिखा तो बीर को क्रोध आ गया। कहने लगा—हाय ! आज पढ़ा न होने का मुझे दुख है। जन्म लेने के बाद ही मैं गउरा में लड़ने लगा। न मैं मु शी के दरवाजे पर गया न कुछ पढ़ाई की। वह तम्बू छोड़कर सागड़ पर चला गया, फूट-फूट कर रोने लगा। भइया जगदम्बा वहाँ दौड़ीं, मोती सागड़ पर पहुँच गयीं। लोरिक के आँसू आंचल से पोछने लगीं। तुम किस संकट में हो, क्यों रो रहे हो।

तब बीर लोरिक कहने लगा—यदि आज मेरी लकड़ी नमक आदि घट जाय तो कोई उधार नहीं देगा। सुहवलि से यहाँ कोई पाती नहीं आयी है न सागड़ से सुहवलि पाती गयी है। यहाँ सारे बीर सुहवलि में आ गये हैं। मैं कागज लेकर अजयी के पास आया कि वह पत्र लिखकर बामरि के द्वार पर भेज दे तो उसको कंपकंपी शुरू हो गयी, उसका सिर दुखने लगा। जिस बीर के पास पाती लेकर लिखवाने जाता हूँ वह तुरन्त जवाब देता है पत्र हमसे नहीं लिखा जायगा। मैंने जनमते ही अखाड़े में धूल लगाना शुरू किया। सौरी में ही मैंने तुम्हारा ध्यान लगाया। यदि मैं गउरा में पढ़ा होता तो आपसे पढ़वाकर पत्र भेज देता।

दुर्गा ने कहा तुम्हारा पत्र मै लिख रही हूँ। जो बीर उसको पढ़ेगा उसका दाँत लग जायेगा। तुम किस चिन्ता में हो ? ऐसा कड़ा पत्र लिखूंगी कि विष की गाँठ लग जायगी। बीर लोरिक तम्बू में गया। कलम-दावात लाया, लम्बा कागज लाया। दुर्गा ने उसे उठा लिया। अब दुर्गा का हाल सुनिये। दुर्गा पत्र लिखने चलीं। अगल-बगल पता है, बीच में सलामी है, एक कोने पर अहीर का नाम लिखा है। [इसके बाद सूत्र है उत्तर भय बहलदेवहा·······बसल बाड़ी अहीरान] संवरू वर बन कर आये है। बमरी बात माना, राय बात से, सहमति से शादी कर लो। जो तुम्हें अच्छा लगे वह सब करो। देवी ने सब कुछ लिख दिया।

पृष्ठ 267-268

दुर्गा मांड़ो की तस्वीर खींचने लगीं। भीमली के रक्त से उन्होंने कोहबर पुतवा दिया। उसके सिर का कलश धरवा दिया, उसकी छाती का पीढ़ा गढ़वा दिया। जाँघ की हरिश गड़वा दी। सतिया का झोंटा पकड़ कर मांड़ो में खड़ा कर दिया। कागज में, पत्रिका में दुर्गा ने यह तस्वीर खींच दी। उस लम्बी स्त्री सती का केश मृत्युलोक में लोट रहा है। उसका शरीर मशाल की तरह जल रहा है। उसका मस्तक महुवा की भाँति है। सती का सारा ग्रोब भवानी ने चित्रित कर दिया। लोरिक ने उसका झोंटा पकड़ लिया है और बामरि से कह दिया है कि इसका विवाह कराऊँगा।

दुर्गा ने विष का वृक्ष बो दिया था। भवानी ने इस प्रकार का पत्र लिखकर धावन के हाथ भेजने को कह दिया। लोरिक रो-रोकर कहने लगा कि जिस व्यक्ति के परोक्ष में यह पत्रिका लिखी गयी है वह कैसे इस पत्र को लेकर जायगा। भाई जगदम्बा बिगड़ गयीं। तुम्हारे ऊपर वज्रपात हो जाय, तुम ओट में जाकर दब जाते तो अच्छा होता। अरे और कोई नहीं जायगा तो नाऊ गागी तो पत्र लेकर जा ही सकता है। वह क्यों नहीं जायगा।

पंचों, अब आगे के समर का हाल सुनिये। लोरिक ने गांगी को बुलाया। गांगी ने आकर सलाम किया। लोरिक ने उससे बामरि के पास पत्र ले जाने को कहा। वह धरती पर भय से गिर पड़ा, हाथ पैर पटकने लगा। तब तक जगदम्बा आ गयीं। हाथ से गांगी को उठा लियाँ। चुल्लू में पानी लेकर उसका दाँत छोड़ाने लगीं। वह रोने लगा। दुर्गा ने उसके आँसू पोंछे, कहा—मुझे जुड़ी का बुखार नहीं आया है, न मेरा सिर दुख रहा है। मुझको मृगी भी नहीं आयी है। वह कहने लगा—गउरा मे मेरी विवाहिता संकट में पड़ गयी है। सुहवलि में मेरा काल आ गया है। मेरे बच्चों को आहार तक नहीं मिलेगा। मेरे बच्चे विपत्ति में पड़ गये हैं। इसीलिए मुझे गर्मी आ गयी ओर सागड़ पर दाँत लग गया।

पृष्ठ 269-270

भवानी हँसने लगीं, जवाब देने लगीं। गांगी तुम पागल हो गये हो, तुम्हारा ज्ञान मंद पड़ गया है। जिसके संग में दुर्गा है उसका काम कैसे बिगड़ेगा। तुम पत्र लो और सुहवल में चले जाओ। यदि कोई तुम्हें टेढ़ी अंगुली दिखा देगा तो युद्ध छिड़ जायगा, लोहा लग जायगा। तलवारें चलने लगेंगी। तुम्हारी जान के लिए खून की नदी बह जायगी। कितनी स्त्रियों की माँग धुल जायगी। गांगी नाऊ ने कहा—माँ आप धर्म की रक्षिका हैं। जब आप प्रसन्न हैं तो क्रुद्ध होकर मेरा कोई क्या कर लेगा। गांगी पत्र लेकर चला—साथ में दुर्गा थीं। आगे दुर्गा जा रही थीं पीछे नाऊ गांगी।

दुर्गा ने सबकी आँखों पर पट्टी लगा दी थी कोई गांगी को देख नहीं रहा था। देवी ने पतली गली पकड़ ली। चलते-चलते बामरि के द्वार पर पहुँचीं। वहाँ खम्भे में शंख और मोर थे। उत्तर-दक्षिण में बरामदा था जहाँ कसरत होती थी। पीले रंग का (पीतल का) वहाँ छोटा घर था। ऊपर गद्दी लगी हुई थी, नीचे धर्म का दरबार लगा हुआ था। बायें मन्त्री थे, दाहिने महतो राय दीवान थे। बंगले में झरोखा था। दुर्गा ने धावन गांगी से कहा—बंगले में पत्र फेंक दो। गांगी ने खिड़की से पत्र फेंक दिया। वह कचहरी में गिरा जहाँ बामरि का दरबार लगा हुआ था। गांगी भाग कर मोती सगड़ पर आ गया। लोरिक को उसने बताया कि मुझे सोना सुहवलि पाल न भेजो बमरी का किला दुर्भेद्य है। उसकी कचहरी में बड़ा रोब है।

दुर्गा ने अब लोगों की आँख की पट्टी खोल दी। बामरि ने डाँट कर कहा—मंत्री देखो यह कैसी पाती आयी है। पत्रिका पीले रंग की थी। वह जलकर भस्म हो गया। उसकी एड़ी में आग लग गयी सिर तक लहर फैल गयी। उसकी बरौनियाँ लाल हो गयीं, भौंहें क्रोध में उलट गयीं। तुम लोग कहते थे कि किसी देश का राजा है जो दूर की यात्रा पर जा रहा है। यह तो हमारे ही द्वार पर पाती गिरी है इसका एक कोना पीले रंग से रंगा है। यह तो सगुन वाली पाती यहाँ आयी है।

पृष्ठ 271-272

बामरि ने पत्र ले लिया। पत्र फाड़कर एक-एक अक्षर पढ़ना शुरू किया। अगल-बगल पता है बीच में सलामी है। अन्त में वीरों का नाम लिखा हुआ है [इसके बाद उत्तर बहल-मय देवता · · · · साँवर लोरिक हनांव सूत्र है जिसमें लोरिक की जन्म-भूमि का परिचय है] संवरू वर बनकर आये हैं। लोरिक बारात करने आया है। भीटे पर उसने बावन बुर्ज का तम्बू गड़वा दिया है। रेशमी सूत की डोरी है, आगे पीली कनात है। तम्बू में वीर, योद्धा बैठे हुए हैं, उनकी भुजाएँ फैली हुई हैं। भीमली की शान को, भाले को सुरहनि में फेंक दिया गया है। यदि तुम सहमति से शादी करोगे तो प्रेमपूर्वक शादी हो जायगी। यह मत समझो कि यहाँ कोई दुर्बल वीर आया है और प्रार्थना कर रहा है।

कल प्रातःकाल लालिमा छा जायगी, पश्चिम में प्रकाश होने लगेगा तब गाँव की सीमा पर युद्ध छिड़ जायगा। पंजे में तलवारें चलेंगी। सोहवल में गड़गड़ाहट फैल जायगी। उसको तुम सुन नहीं सकोगे। जब वह पत्र के पन्ने खोल रहा है तो उसमें वह पढ़ रहा है कि भीमली के खून से कोहबर पुत जायगा। उसके सिर का कलश होगा। उसकी छाती का पीढ़ा बनाया जायगा, उसकी जाँघ की हरिश गाड़ी जायगी। ऊपर पत्र में सतिया का चित्र है वह खड़ी है लोरिक उसका झोंटा पकड़े हुए है। वीर बमरी बेहोश होकर गिर पड़ा है, अब सुहवल में हलचल मच गयी है।

बीर बामरि बेहोश हो गया है, उसको दाँत लग गया है। लोग दौड़-दौड़ कर उसकी बाँह उठाने लगे। कोई उसके कंधे को सहारा दे रहा है। बमरी को गर्मी चढ़ गयी है।

छत्तीस वर्ण की स्त्रियाँ वहाँ एकत्र हो गयी हैं। कह रही है कि हमें रात भर आभास हुआ है कि सतिया का मंडप गड़ा हुआ है और खूब मंगल हो रहा है। कोई कह रहा है मेरी दायीं अलंग फड़क रही है, बायीं आँख में शुभ की सूचना मिल रही है। सती का निश्चित विवाह होगा। बमरी ने मंत्री से पूछा—क्या हाल है। किसने दही-गुड़ खाया है, कौन तिलक चढ़ाने आया है। कौन दूलहा खोज रहा है। कौन अगुवा बनकर सुहवल आया है। पहले तो इस बात का पता लगाना है।

पृष्ठ 273-274

बामरि ने कहा—उस वीर का दोष कम है। अधिक दोष अगुवा का है, क्योंकि उसी ने अगुवाई की है और बागत को यहाँ लाया है। बायें मंत्री और दाहिने बैठे हुए महतो दीवान ने कहा—हे ठाकुर, हे बलशाली, मेरी बात सुनिये। सुहवल में किसका काल पुज गया है। किसकी मौत निकट आ गयी है। कौन दही-चीनी खाने गया था। मंत्री और दीवान ने कहा—हम लोगों ने सुना है कि अजयी ने, जिसको झिंगुरी ने मारा था और जो मिट्टी में गड़ गया था और जिसको टाँगकर भखुवा के यहाँ पहुँचाया गया था, अगुवाई की है। यह वही अजयी है जिसके शरीर में छः महीने तक लोथा चलता रहा और जो सात महीने तक हलुवा-गुड़ खाता रहा। ठाकुर इसमें आपका दोष नहीं है। हम लोग नहीं जानते थे कि पागल होकर वह ऐसा काम करेगा।

हम लोगों ने आपसे कहा था कि जिस वीर का पानी उतर गया, जो इस प्रकार पीट गया है, और जो नपुंसक हो चुका है उसकी शादी हो भी जाय तो कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। आपने भखुवा को आज्ञा दी थी कि अपनी लड़कियों की शादी कर लो। शादी कर लड़कियों का डोला सागड़ पर गया तो उसने सतिया को एक नजर वहाँ देखा तो भखुवा की बेटी सतिया के चरण पर गिर पड़ी और कहा—बहन, अगर तुम ताक दोगी तो मेरा पति भस्म हो जायगा, मैं विधवा हो जाऊँगी। नाते में मेरा पति तुम्हारा पाहुन है। सती इस पर हँस पड़ी थी। बिजवा ने अपने पति को बताया था कि यही सती है जिसके कारण छत्तीस वर्ण की कन्याएँ अविवाहिता पड़ी हुई हैं। उस अजयी ने कहा कि मैं सती के लिए पति खोजूँगा। बामरि के लिए दामाद खोजूँगा। पहले सती का विवाह होगा बाद में अन्य स्त्रियों की शादी होगी।

धोबी ने दूल्हा तैयार किया है आपके लिए दामाद ढूँढ़ा है। वह अगुवा बन कर सागर पर बैठा है। बामरि ने धोबी अजयी को बुलवाने के लिए कहा। मंत्री

और दीवान ने कहा—उसे भखुआ धोबी के द्वारा बुलवाया जाना ही ठीक होगा। भखुवा धोबी ही अपने दामाद को बुलायेगा। दूसरों के बुलाने से वह हरगिज नहीं आयेगा। आदमी छूटे। भखुवा अपने द्वार पर कपड़े सौंद रहा था कि सिपाही पहुँच गये।

पृष्ठ 275-276

सिपाहियों ने मखुवा को डाँटा और कहा—चलो तुम्हें राजा बुला रहे हैं। मखुवा कहने लगा—इस मृत्यु लोक में मेरा भाग्य फूट गया है। इन कुत्तों से मेरी भेंट हुई। सिपाहियों से कहा—जिसका दुर्भाग्य होता है, वही तुम लोगों का दर्शन करता है। मैंने किसका क्या बिगाड़ा है? सिपाहियों ने कहा जल्दी चलो हम लोग कल से ही हलचल में हैं। तुमको कपड़े की धुलाई सूझ रही है। तुम्हारे दामाद ने सतिया के लिए वर ढूंढ़ा है। ठाकुर बमरी बेहोश हो गये थे, उनको दाँत लग गया था हम सब लोग परेशान हैं, रोना-पीटना शुरू हो गया है और तुम यहाँ कपड़े सौंद रहे हो। भखुवा ने अपनी पत्नी से कहा—बुजरो मैंने तुमको बार-बार मना किया। तुमने जबर्दस्ती लड़कियों की शादी कर दी। तुमने इस दुष्ट का मुँह घी की हाँड़ी में डलवा दिया था।

मैं कहाँ तक तुमसे दुख कहूँ। तुमने उसकी शादी करायी वह अब अगुवा बनकर सोना मुहवली पास आया है। उसने पत्र भिजवाया है, भोमली का भाला उखड़ गया है। राजा बामरि ने मुझे बुलवा भेजा है। वह रो-रोकर कहने लगा। बात मत पूछो अपनी माँग धो लो। मेरा काल आ गया है। राजा मुश्क चढ़वा देगा, मेरी बाहों को पीछे बंधवा देगा, मुँह में गोबर ठूंसवा देगा। कच्चा बाँस की छड़ी से शरीर की खाल उधड़वा देगा। नखों में खपचाली ठुकवा देगा। भौंहों में टिकुरी गड़वा देगा। आगे पीछे पैर दबवाकर धरती पर गिरा देगा। आधा धड़ वह घर के बरामदे में धरवा देगा। आधा वह धूप में टंगवा देगा। छत्तीस हाथ का भाला मेरी छाती में घोपवा देगा। मेरा काल पुज गया है, तुम अपनी माँग धो डालो। उसकी पत्नी ने कहा—हे पति, क्या उसको झिगुरी की मार भूल गयी है कि यहाँ अगुवाई करने आया है।

झिगुरी की एड़ी की चोट से वह छः महीने तक हलुवा-गुड़ चाटता रहा। चलो हम दोनों राजा के दरबार में चलें। लड़कियों की शादी हमारे लिए काल हो गयी। मक्खू पत्नी से साथ राजा के दरबार में पहुँचा। राजा बामरि ने कहा—मैं तुम्हें जेल में डाल दूँगा, यदि कुशल चाहते हो तो मोती सगड़ के घाट जाओ, अपने दामाद को लाओ। मखुवा की स्त्री गले में कफन डालकर, मुंह पर आँचल डाले हुए कचहरी में खड़ी थी। उसने कहा—हे बलशाली ठाकुर सुनिये—

पृष्ठ 277-278-279

बीर अब मेरी बात मानिए। [यहाँ सूत्र है, हीनू करे ···· जीमा होख तइयार] हे देवी, मुझे आपके ही चरण की बलिहारी है। मेरी देह आज बिना किसी सहारे के है। आप किस दिन काम आएँगी। जगदम्बा युद्ध का समय आ गया है। यह गीत मैंने कान से सुना है, आँखों से नहीं देखा है। मैंने सुना है कि आपने बीर लोरिक की पूजा स्वीकार की है। हे देवी जैसे रण में सुघर लोरिक की प्रतिष्ठा रख ली वैसे ही आपने मेरा संग पकड़ा है। आज एक भी शब्द छूट जायगा तो सारी दुनियाँ मेरा अपमान करेगी। जिस दिन आप साथ छोड़ देंगी मेरा गाना खत्म हो जायेगा।

हे जगदम्बा, मैंने हर समय आपका भजन किया। मेरा गोति गाना छूट गया है, मेरा शरीर अब खोखला हो चुका है। मखुवा की स्त्री ने बामरि से कहा—तुम मेरे मालिक हो। मुझे बहुत दुख है। मेरे ये दामाद अपनी गति जानते हैं। एक एड़ के लगने से छै महीने तक हलुवा-गुड़ उन्होंने खाया है। अगर वह आपके लिए दामाद खोज कर लाये हैं तो आप आज्ञा दोजिये मै अपने पति को भेजती हूँ। अगर मेरा दामाद सागड़ पर युद्ध करके मर जायेगा तो उसके जैसा मुझको बहुत दामाद मिलेंगे। मेरे पति को दो घड़ी के लिए छुट्टी दीजिए। वह सागड़ पर जरूर जायेंगे। बामरि ने कहा दो घड़ी के लिए कौन कहे मैं दो चार दिन की छुट्टी देता हूँ पर उसको जरूर लेकर आना।

मक्खू बाहर निकला किन्तु ज्यों ही गली में आया तो कहने लगा बुजरो, तुमने दिन तो रख दिया। क्या वह बलि का बकरा बनने आयेगा। तुमने मेरी जान को हलचल में डाल दिया है। मखुवा की स्त्री हँस पड़ी। मैं तुम्हें तिरिया चरित्तर पढ़ा रही हूँ सोना सुहवलि पाल चले जाओ उसको धन के लिए लुभाकर, फुसलाकर यहाँ लाओ यदि वह सुरहन में जूझ जायेगा तो कल दूसरा दामाद ढूंढेंगे।

पृष्ठ 280-281

मखुवा ने कहा—वहाँ कम आमदनी है, सफलता के कम लक्षण हैं। वह आयेगा नहीं। उसकी पत्नी ने कहा रास्ता पकड़ो और जाओ। कहना कि मेरी स्त्री रो रही है कि हे पाहुन सूखी लिट्टी आप सुहवल में खा रहे हैं। मेरी स्त्री बारह प्रकार का भोजन बना चुकी है। दामाद आकर खा जायँ फिर मोती सागड़ के घाट पर चले जायँ। यही बबुआ हैं जिनकी हमने इतनी सेवा की है। आज वे सागड़ पर सूखी लिट्टी खा रहे हैं। हे पति, तुम इतनी बात रो-रोकर कहना। वह धोबी माया में फँस जायगा। अच्छा मैं जा रहा हूँ। पर वह सावधान हो जाएगा। सशंकित हो जायेगा।

धोबिन अपने घर गयी। मक्खू सोहवलि के लिए चला। ज्यों ही वह नीचे उतरा लोरिक ने उसे देखा। वह कुछ दूर दुलकी (घोड़े की चाल) चल रहा है फिर

चौपाल (पालकी) की चाल की भाँति धीरे-धीरे चल रहा है। लोरिक तम्बू में प्रवेश कर गया। उसने अजयी से कहा—मीता, उठो। तुम सुहवलि के लोगों को पहचानते हो।

देखो, राजा का कोई संदेशवाहक आ रहा है। शायद वह लड़ने आया है। वीर अजई उठा, मोती सगड़ के घाट पहुँचा और ध्यानपूर्वक देखने लगा। उसने लोरिक से कहा कि यह कोई निमन्त्रण वाला नहीं है और न राजा का धावन है। यह तो हमारे ससुर मक्खू हैं। मुझको दुपट्टा तान कर सो जाने दो। शायद बामरि ने दबाव दिया है तभी वह तेजी से चले आ रहे हैं। वह तम्बू देखेंगे। मेरा शरीर नहीं दिखाई पड़ेगा तो मुझे पूछेंगे। कह देना कि धोबी नहीं आया है। चाहे जितना प्यार से बात करें बताना मत। यदि वह दबाव डालें तब भी मत बताना। सुहवलि में दामाद की जो सेवा होती है वह मेरा शरीर जानता है। पंचों, अजई दुपट्टा तानकर सो गया। मक्खू आगे बढ़ते जा रहे हैं। जब वह आधा सुरहनि में पहुँचे तो उन्होंने अपना सिर कुछ ऊपर उठाया। अब देवी का खेल सुनिये। सोहवल में ऊपर पीली कनात पड़ी हुई थी। नीचे उसमें रेशमी डोर लगी हुई थी।

पृष्ठ 282-283

तम्बू के अगल-बगल में सोने के झब्बे लटक रहे हैं, उसमें मोतियों की झालरें लगी हुई हैं। वीर का सोने का कलश स्वर्ग छू रहा है। धोबी मक्खू अपने मन में विचार करने लगा। हमने बहुत नाम सुने थे। बहुत तम्बू यहाँ आये पर ऐसा तम्बू किसी का नहीं था। तम्बू के चारों ओर पन्नियाँ लगी हुई हैं, ऊपर पतंग उड़ रहे हैं। यहाँ तो बामरि के पास जितना धन होगा उतना यहाँ इस तम्बू में लगा हुआ है। भवानी प्रसन्न थी। वह मोती सगड़ के घाट बैठी हुई थीं। मक्खू मोती सागड़ पर चला गया। उसने तम्बू में झाँक कर देखा वहाँ कोई बूढ़ा आदमी नहीं था। सभी जवान थे जिनकी घनी मूँछे निकली नहीं थीं। ये सभी अपनी भुजाओं को फुला-फुलाकर तम्बू में बैठे हुए थे।

दुर्गा ने सबका एक रंग एक रूप बना दिया था। लगता था सभी एक ही दिन, एक ही बूँद से, एक ही गर्भ से अवतरित हुए हैं। मक्खू विकल हो उठा। वह विक्षिप्त होकर घूमने लगा, कोना-कोना छान डाला, वहाँ एक भी बूढ़ा नहीं था। दूल्हा धरमी की गद्दी ऊपर लगी हुई थी। वह सोचने लगा हे दैव नारायण, हे विधाता आपने क्या सुन्दरता निर्मित कर दी है। सतिया का गनना खूब बना है। गंगा नहा कर उसने ऐसा पति पाया है। जैसी सूरत-शकल सती की है वैसा ही दूल्हा है।

मक्खू को जब अजयी नहीं दिखाई पड़ा तो वह लोरिक के पास चला गया। लोरिक सागड़ पर टहल रहा था। पूछा—भइया तुम्हारा घर कहाँ है। मेरा नाम

मक्खू है । मैं सुहवल का हूँ । लोरिक ने पूछा तो तुम क्या चाहते हो ? उसने कहा—अजयी मेरे दामाद हैं । मैंने सुना है कि अहीर की बारात आयी है । मेरी स्त्री ने अपने दामाद के लिए भोजन बनाकर रखा है । लोरिक ने पूछा तुमने सब जगह देखा है क्या अजयी हैं यहाँ । मक्खू ने कहा—नही । बूढ़ा मक्खू रो-रोकर धरती पर गिर पड़ा । यदि आज मेरा दामाद जीवित होता तो यहाँ अवश्य आता । लोरिक ने उसे चुप कराया । मक्खू और जोर से रोने लगा । हमारी लड़कियाँ संकट में पड़ गयी हैं। वे विधवा हो गयीं । उनका जीवन कैसे चलेगा । लोरिक ने कहा—बुढ़ऊ चुप रहो । पर मक्खू शान्त नहीं हुआ, वह रोता चला गया ।

पृष्ठ 284-285

लोरिक ने अंगुली से इशारा किया कि अजयी कहाँ है ? धीरे-धीरे मक्खू वहाँ तम्बू में चला गया । उसने अजयी का दुपट्टा उतारा तो वह एकटक देख रहा था । अजयी ने अभिवादन नहीं किया तो मक्खू ने कहा पहचान नहीं रहे हो, पाँव छुओ । बाबू, हमारी लड़कियों का कुशल क्षेम कहो । उसने कहा—मैं क्या कुशल कहूँ ये दोनों गउरा में मर चुकी है । जब अजयी ने यह बात कही तो गउरा के सभी वीर आश्चर्य चकित होकर देखने लगे । मक्खू ने कहा बाबू वे मर गयीं तो तुमने समाचार भी नहीं दिया । अजयी ने कहा—उस बीमारी का क्या हाल कहूँ । बड़ी वाली खा-पीकर आनन्द से सो रही थी पर अचानक ही पटके में मर गयी । जब मै उसका प्रवाह कर आया तो दूसरी भी झटके में मर गयी । हे, बाबा, तुम्हारी बड़ी लड़की 'पटके' में और छोटी 'झटके' में मर चुकी है ।

मक्खू ने कहा जब वे मर गयीं तो अन्तिम क्रिया के दिन तो बुलाते । तुमने काम के दिन न्यौता क्यों नहीं दिया ? अजयी ने कहा 'हितई' का सम्बन्ध तो लालच से चलता है । तुम्हारी तीसरी बेटी होती तो मैं न्यौता भेजता कि शायद तुम उससे मेरा विवाह कर देते । बूढे ने कहा मेरी लड़कियाँ मर चुकी हैं तो तुमको यही अगुवाई करनी थी । कहीं दूसरी जगह अगुवाई करने को नहीं मिली ।

लोग कहने लगे दामाद और ससुर में खूब जम रही है । अजयी ने मक्खू से कहा—मैंने यहाँ इसलिए अगुवाई की है कि सती की शादी हो जायगी तो इस बार मैं भी दो चार लड़कियों को ले जाऊँगा । सुहवलि की कन्याएँ शुभ हैं इसलिए यहाँ बीर को लेकर आया हूँ । मक्खू ने रोकर कहा—मेरी पत्नी शाम से ही विधि पूर्वक भोजन बनाकर रो रही है कि मेरे दामाद सागड़ पर सूखी लिट्टी खा रहे होंगे ।

पृष्ठ 286-287-288

अजयी कहने लगा कि बकरे की भाँति तुम मेरे बलि का दिन निश्चित कर दोगे तथा मेरे गले में रोटी और जौ बँधवा दोगे । मैं तुम्हारे यहाँ भोजन नहीं

करूँगा। सुहवलि का हाल मेरा जाना हुआ है। जो तुम्हारे यहाँ भोजन बना है उसका हाल मेरा हृदय जानता है। मक्खू रोने लगा। तब लोरिक से नहीं रहा गया। वह अजयी के पास पहुँचा। कहने लगा—मेरे मीता और गुरु, तुम सुनो। यदि तुम्हारी सास का मन है तो तुमको मोती सगड़ के घाट जाना ही पड़ेगा। धोबी ने कहा—मित्र सुहवलि का हाल तुम नहीं जानते। राजा ने इस पर दबाव चढ़ाया है। यह सुरहनि में यहाँ हमें माया-जाल में फँसाने आया है।

सुहवलि में दामाद की जो सेवा होती है मेरा मन ही जानता है। वहाँ भोजन नहीं बना है। बलि के बकरे के गर्दन में जैसे रोटी जौ आदि बाँध दिया जाता है वैसे ही भोजन कराकर मेरा बलिदान कराया जायेगा। मीता, तुम इन बातों को जाने दो। सान गड़े रहने दो जिसको लड़ना होगा यहां मोती सागड़ के घाट आ जायगा। मुझे सोना सुहवलि पाल मत भेजो। वहाँ मेरा तन संकट में पड़ जायेगा। मक्खू ने कहा—भइया लोरिक अजयी से पूछो की क्या मेरी स्त्री ने इनको मारा है। यह साफ बता दे। अजयी ने तब लोरिक को पूरी कहानी बतायी।

मैं सुहवलि में चौदह टोले के तुम्हारे जैसे मर्दों को लड़वा रहा था। जब मेरी कसरत पूरी नहीं हुई तो मैं सुरहनि में गंगनी खेलने आ गया। सात दिन तक यहाँ के युवकों को मैंने गंगनी खेलायी। युवकों की इज्जत उतार दी। सातवें दिन ताली फिर गरज उठी। (इसके बाद सूत्र है) बमरी ने उसकी आवाज सुनी तो अपने पुत्र भीमली को धिक्कारा झिंगुरी को धिक्कारा। भीमली ने छत्तीस हाथ का भाला गड़वा दिया। मन्त्रियों के कहने पर बमरी ने झिंगुरी को बुलवाया। मैं सच कह रहा हूँ। ज्यादे सहकना और बहकना जी के लिए काल है। मेरा मन इतरा गया था।

पृष्ठ 289-290-291-292-293

मोती सगड के घाट पर सब लोग दूसरे व्यापार में लगे हुए थे। मैं इस भीटे पर लिट्टी लगाता था, रात को विश्राम करता था। दिन में कसरत करता था। मुझे कोई पहचानता नहीं था। कोई मेरे पास बैठता नहीं था। मेरी ताली सुबह शाम बजती थी। बामरि का पत्र पाकर झिंगुरी गेरुवा पहाड़ से सज-धजकर चला। उसने लंगोटा पहन रखा था जिसमें मल्ल वर्ण की गाँठ थी। अजगर की सी उसने पेटी बाँध रखी थी, जिसमें गोला स्थिर था। उसने गर्दन में धूल डाल रखी थी। झिंगुरी आया तो बामरि ने रोकर कहा—बेटा, तुम बेटा नहीं पैदा हुए हो गदहा पैदा हुए हो।

एक धोबी आकर यहाँ उत्पात मचाये हुए है। यहाँ से वह चला जायगा तो मुझे गाली देगा और कहेगा यहाँ सब गदहे पैदा हुए हैं। मीता मैं ब्यालिस हाथ दौड़ गया तबतक झिंगुरी उपस्थित हो गया। सभी युवकों को वह लेकर आया। मेरा भी मन बढ़ गया था। मैंने गर्दन पर मिट्टी लगायी, कुछ भुजाओं पर। फिर मैंने बैठक लगायी। मेरी भुजाओं की शक्ति अपार थी। मैंने ताली बजायी। गंगनी शुरू हुई।

जैसे बाघ बटेर पर, शिकार पर टूटता है वैसे ही झिंगुरी टूटा। पर मेरी चोट से झिंगुरी लम्बे जाकर गिरा उसकी बाँह हिल गयी। गंगनी में उसकी देह हिल गयी। झुक गयी।

पृष्ठ 294-295-296

वह घुटने पर आकर रुक गया। मैंने धरती पर पैर दबाया, बीर के ऊपर कूद गया। झिंगुरी ने अपना मस्तक नीचे कर लिया। अन्त में झिंगुरी ने धोखा कर दिया। हम दोनों वीर गरज कर उठे। उसी समय अवघड़ बाबा ने पैर खींच दिया। मैं गंगनी में गिर पड़ा। झिंगुरी परोसे भर ऊपर कूद गया। उसने मुझे जोर से पैर मारा। मेरे बदन में चोट से गर्मी छा गयी। मुरहन में मेरा दाँत लग गया। मीता, सब जय बोलने लगे झिंगुरी की जीत हो गई। वहाँ मेरा कोई हित चाहने वाला नहीं था। मक्खू से जाकर युवकों ने यह बात कही तो उनकी स्त्री ने कहा अपनी जाति का लड़का है उसको टाँग लाओ।

दो लड़कियों ने, जिनको विवाह कर मैं गउरा ले गया हूँ, मेरे शरीर पर लोथा चलाना शुरू किया। सात दिन तक मेरा सीना कड़कता रहा। हमारे शरीर पर लोथा चला पर मेरी आँख नहीं खुलती थी। मैं आँख खोलना चाहता था तो शरीर की हड्डी कड़कने लगती थी। आठवें दिन मेरी आँख खुली। मक्खू की स्त्री ने तब मुझे हलवा चटाया उसकी बड़ी और छोटी दोनों लड़कियों ने, जिन्हें मैं दुधिलापुर विवाह कर ले गया हूँ, घी का पतला हलुवा बनाकर खिलाना शुरू किया। मैं सात महीने तक खुश होकर हलुवा चाटता रहा। सुहवल मे मेरा शरीर फिर जागृत हो गया मैं टहलने लगा। लोरिक ने कहा जिसकी सास ने बुरे दिनों में सुख दिया, जिसने इतनी सेवा की, तुम्हारा इतना प्रतिपालन किया उसने आज बारह व्यंजन बनाये हैं, और तुम्हारी बाट देख रही है। तुम्हें निश्चित जाना है।

पृष्ठ 296-297-298

बीर अजयी रोने लगा। अब हमारी जोड़ी बिछुड़ रही है। मुझे सुहवल में जाना ही है। बामरि वहाँ मेरी जान नहीं छोड़ेगा। आज हमारी तुम्हारी मित्रता छूट जायेगी। सुहवलि की हालत मैं जानता हूँ। बीर लोरिक नाराज हुआ। उसने कहा—मीता तुम्हारे ऊपर बज्र गिर जाय, तुम ओट में दबकर मर जाते तो अच्छा होता। तुम चिंता छोड़ दो और सोना सुहवलि पाल चले जाओ। तुम अपने ससुर के द्वार पर भोजन करना और उसी रास्ते से बामरि के दरवाजे पर चले जाना और कह देना। प्रेम से वह लड़की नहीं भेज रहे हैं।

सात दिन सागड़ पर बारात को टिके हुए हो गया। वे जल्दी निमन्त्रण भेज दें। यदि वह तिर्छी उँगली कर तुम्हें ताक दें तो मुझे खबर कर देना। ऐ मीता, मैं

तुमसे कह रहा हूँ तुम गउरा में लड़ाते रहे। यही खेल यहाँ पर मत समझो। तुम्हारी जिंदगी के लिये यहाँ सुहवलि में मैं हड्डियों की ढेर लगा दूँगा। पर तुम्हें जाना ही पड़ेगा। अजयी ने कहा—मुझे जाना ही पड़ेगा तो ऐ लोरिक तुम भी लंगोटा कस लो। क्या जाने मैं उधर चिल्लाऊँ और तुम लंगोटा ही कसते रह गये। तब तक तो वह मुझे समाप्त ही कर देगा।

पंचों, अब जिस दिन की बात है उसके बाद का खेल सुनिए। धोबी ने लोरिक से कहा तुम अपना अस्त्र-शस्त्र पोशाक आदि धारण कर लो। [मूल पाठ में सूत्र है जो कई बार पहले आ चुका है] तब मैं मुहवल का रास्ता पकड़ूंगा। मैं वैसे ही नहीं चला जाऊँगा। तुम्हारे धोती पहनते-पहनते वह मेरी जान ले लेगा। धोबी ने अस्त्र-शस्त्र से अब अपने को सुसज्जित कर लिया, जामा पहन लिया [यहाँ भी सूत्र है] और अपने ससुर मक्खू के साथ चला। कहा—चलो तुम्हारी रसोई ठंडी हो रही है, बासी हो रही है। लोरिक से कहा—तुम सजग रहना। जाने की मेरी इच्छा नहीं हो रही है। यह मुझे बलिदान के लिये ले जा रहा है। लोरिक ने उसे जबर्दस्ती भेजा। गाँव के पास पहुँचने पर मक्खू ने अजयी को दक्षिण टोले में चलने के लिए कहा जहाँ बामरि का मकान था। मक्खू का मकान पश्चिम की ओर था। अजयी ने जब यह कहा—इधर कहाँ जा रहे है तो उसने कहा। डीह सहता नहीं था, शुभ नहीं था अतः राजा के घर के पीछे मैंने घर बनवा लिया है।

पृष्ठ 299-300

अजयी ने कहा—हाँ, वहाँ तुम्हारे बहुत से लड़के बच्चे हैं कि डीह शुभ नहीं है। ठीक बताओ, नहीं तो तुम्हारा मस्तक काट लूँगा। तब मक्खू ने कहा तो अब साफ-साफ मैं बता रहा हूँ। तुम सब जानते तो थे ही तब अगुवाई क्यों की? बीर अजयी गरजने लगा, मूँछों पर ताव देने लगा। तुम यह न समझो कि मै कमजोर हूँ। यहाँ से जाकर मैंने खूब दूध पीया है। अब यदि बमरी के बेटे से भेंट हो जायगी तो उसे मार कर खंड-खंड कर दूँगा। हे दादा, यह वही अजयी है जो एक ही एड़ की मार से जमीन पर गिर पड़ा था।

मक्खू ने कहा—अधिक ललकार मत बाँधो। यह अगुवाई तुम्हारे जी के लिए काल है। अजयी ने ससुर मक्खू को गाली दी। मैं तुम्हारे मुँह में तलवार डाल दूँगा। ऐसी बात मत करो। झिंगुर को कौन कहे भीमली को पटक-पटक कर मार डालूंगा। खंड-खंड करके उड़ा दूँगा। सीराज-मिराज की तो कोई गिनती ही नहीं है। पिंजला का बेटा अजयी उन्मत्त हो उठा। बूढ़े मक्खू को वह ललकारने लगा। बूढ़े ने कहा—हाय भगवान एक बात मैं बताता हूँ। ऐ बाबू, बामरि के इस समय बेटे यहा नहीं है केवल एक स्त्रैण है, एक 'मउगड़ा' है जो इस समय वहाँ है। झिंगुरी गेड़ुरी पर हैं सिराज बबुरी बन में गाय चरा रहे हैं। दसवंता भगवंता मेले-ठेले में

लड़ रहे हैं । झिंगुरिया का विवाह हुआ है। भिमलिया का भी विवाह हुआ है। वे फुलहनि के बाजार में गौना कराने गये हैं।

धोबी अजयी और उन्मत हो गया। कहने लगा मैं जरूर बामरि के द्वार पर जाऊँगा। उसने मक्खू से पूछा कहाँ-कहाँ सुहवलि में खतरा है। मक्खू ने कहा—मैं नहीं जानता। रास्ते में सती की सखियाँ मिलीं और कहने लगीं—क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम्हारे कारण हम लोगों पर यहाँ क्या गुजर रही है। तुम लौट जाओ, नहीं तो हमारी सखियाँ विधवा हो जायेंगी। अजयी नाराज हुआ, कहा—इस बार मैं सुहवलि में भिमली को मार डालूँगा। अजयी अपने बल को रोक नहीं पा रहा है।

पृष्ठ 301-302-303

लड़कियाँ सिर ऊपर उठाये झांक रही हैं। उन्होंने कहा पाहुन की शक्ति बढ़ गयी है। पाहुन, तुम ठीक ही कह रहे हो कि बमरी के बेटे को तुम मार दोगे और सती का विवाह होगा। पर हम लोग एक बात कह रहे है तुम सजग होकर बामरि के पास जाना। सोना सुहवलि की गली पतली है, जब कुछ और आगे जाना तो चौमुहानी है, वहाँ बहुत से वीर तेग लिये हुए खड़े है, वहाँ बहुत सावधान रहना। सब तुम्हारी बाट जोह रहे हैं।

स्त्रियाँ धोबी को यह भेद बताकर आगे चली गयी। धोबी पतली गली के रास्ते चला तो उसने अपनी तलवार उठा ली, उसके पास गुप्ती (एक प्रकार का खड्ग) थी, दूसरे हाथ में ओड़न ढाल थी। वह चोमुहानी तक झूमते हुए, पर दबाते हुए गया। वहाँ पर खड़े वीरों ने अजयी को ललकारा। धोबी बयालिस हाथ कूद गया। गली के उस पार जाकर अपनी तलवार संभाल ली, झुककर उसने तलवार फेंकी तो युवकों ने हथियार डाल दिया। पाहुन-पाहुन चिल्लाते हुए वे अजयी के पैरों पर गिर पड़े। उसने कहा यह मत समझो कि मैं वही हूँ जिसे झिगुरी ने एक एड़ मार कर गिरा दिया था। मैंने अहीर के यहाँ बकेन गायों का दूध पिया है, मेरी भुजाएँ मजबूत हो गयी हैं। इस बार झिगुरी की बात कौन कहे भिमली को मैं मार डालूँगा और इसी जगह, इसी क्षेत्र में उसकी हड्डियाँ बिखेर दूँगा। पंचों, सहकना, बहकना बहुत बुरा है।

स्त्रियों की झूलनी जीव के लिए काल है। धोबी बामरि के दरबार में पहुँचा। कचहरी में जाकर उसने माथा नवाया। डांटकर धोबी ने कहा बामरि तुम मेरा अभिवादन ले लो, मेरी बात सुनो—कई दिनों से हमारी बारात यहाँ टिकी हुई है। तुम न निमंत्रण की लकड़ी भेज रहे हो न भोजन का निमंत्रण दे रहे हो, न द्वार-पूजा करा रहे हो, तुम्हारा बेटा भिमली कहाँ है? झिगुरी कहाँ है? दसवंता,

भगवंता, सिराजवा कहाँ है ? समर जीत कर हम निश्चित रूप से सती को ले जायंगे । हाथ जोड़कर लेट कर बामरि ने कहा—अच्छा भिमली सात बरहों (रस्सी) को तोड़ डालता है । तुम भी उसे तोड़ दो । मैं बेटी को संग में लगा दूँगा ।

पृष्ठ 303-304-305

सहकना, बहकना खराब है । स्त्रियों की नाक की झूलनी जीव के लिए काल है । धोबी समझ रहा है कि वह सचमुच जीत लेगा । वह बामरि के साथ हवेली में गया । वहाँ बरहा विशेष मूंज का बना हुआ है । दो बीरों ने अजयी के शरीर में रस्सी बाँध दी । बमरी ने कहा—मेरा बेटा आठ ऐसी रस्सियों को तोड़ता है । धोबी ने कहा मुझसे तुम आठ रस्सियों को तोड़वा लो । अजयी ने अपनी मुश्कें चढ़ा लीं । तब बमरिया ने कहा कि बरहा छोड़ दो, झटकार दो कि वह टूट टूक हो जाय ।

धोबी का बल बढ़ा हुआ था । उसको संभालना उसके लिए कठिन था । उसने कहा—बेटी चोद बामरि तुम्हारे मुँह में मैं तलवार घोंप दूँगा । एक-एक बार करके क्यों रस्सी बंधवा रहे हो । एक ही बार सातों रस्सियों को बंधवा दो । शक्ति लगाऊँगा, सभी रस्सियाँ टूट कर बिखर जायेंगी । बामरि ने कहा मेरा बेटा बारी-बारी से ही रस्सी तोड़ता है । यदि भीमली एक बार में तोड़ चुका होता तो तुमसे भी मैं यही कहता । पटुवा का बरहा (रस्सी) बीरों ने उस पर चढ़ा दिया । एक ही बार में वह खंड-खंड हो गया । फिर सन का बरहा आया । यह भी शीघ्र धोबी ने तोड़ दिया । नारियल के रेशो से बना हुआ बरहा भी उसने झटकार कर तोड़ दिया ।

अजयी ने फिर बेटी को लगाकर गाली दी और कहा एक ही बार सब रस्सियाँ बाँध दो कि बरहा तोड़ूँ और सती को ले जाऊँ । अब सिपाही चमारों के यहाँ गये । चमारों ने चमड़े का बरहा बना दिया, उसे अच्छी तरह भांज कर तैयार कर दिया, उस पर केतकी चढ़ा दी । धोबी के मुश्कों पर उसे बाँध दिया गया । बामरि ने कहा—इस रस्से को तोड़ दो तो सती को संग में भेज दूँगा । चार-चार चमारों ने धोबी को रस्सी से बांधा । चमड़े का यह बरहा अच्छी तरह लपेट कर गाँठ दे-देकर बाँध दिया गया । साठ-साठ भावरें चमार के लड़कों ने डाल दी । तीन सौ साठ भावरें पड़ गयी । अजयी का शरीर अब फकड़ने लगा । उसके दो पुराने घाव उभर कर तड़कने लगे ।

पृष्ठ 306-307

पंचों, चमारों ने अच्छी तरह बरहा अजयी पर चढ़ा दिया । उसकी छाती चरचरा उठी । तब बमरिया बोला—पट्ठे बरहा तोड़ दो । आगे पीछे पैर लगा कर जब

उसने रस्सी को फेंका तब तक उसका पंखा पड़पड़ा उठा। अजयी चिल्लाकर गिर पड़ा। लोरिक वहाँ दौड़ा। राजा बमरी ने अपनी पुत्र बधुओं से कहा तुम लोग धोबी को मूसल, पीढ़ा, लोढ़ा आदि से पीटो, इसका सिर तोड़ डालो, आँखें धुन दो। जैसे गोधन कूटा जाता है वैसे ही धोबी की कुटाई शुरू हो गयी। बामरि की बहुएँ उसका लोढ़े से सिर तोड़ने लगी। तब तक माई जगदम्बा पहुँच गयी। जाकर धोबी के शरीर पर पट होकर गिर पड़ीं। उनके शरीर पर मूसल की चोटें पड़ने लगीं। इधर लोरिक बीर बघेला वहाँ दौड़ा। चारों ओर पता लगाया, घूमा किन्तु उसको अजयी का पता नहीं चला। वह राजा बामरि की गली में पहुँचा। स्त्रियाँ मूसल की मार कर रही थीं अजयी वहाँ बगल में सिसक रहा था। वह कराह रहा था।

लोरिक वहाँ ब्यालिस हाथ कूद गया। तब तक बामरि की बेटी सतिया चिल्ला उठी। भाभियों भागो, आंगन में घटिया आदमी घुस गया है। तुम्हारी इज्जत अब नहीं बचेगी। सारी औरतें भरभरा कर बखरी में प्रवेश कर गयीं। लोरिक अजयी के पास पहुँच गया। धोबी के शरीर का प्रत्येक अंग घायल हो गया था। उसकी पीठ पर मूसल की चोटें पड़ी थीं। अजयी वहाँ बेसुध पड़ा था, कुछ-कुछ बोलता था। उसने कहा भावज तुमने अच्छा काम नही किया है। तुमने आंगन मे विष बो दिया है। रोते-रोते वह अजयी का बरहा खोलता पर वह खुल नहीं रहा था। जैसे मैं अपने मित्र के लिए दुखी हूँ वैसे ही तुम अपने भाइयों के लिए अहक-अहक कर रोओगी। लोरिक रोता, बरहा खोलता और बार-बार यही कहता। बरहा नहीं खुला तो उसने तेग निकाल कर रस्सी का बाँध काट दिया। जैसे लक्ष्मण को जब शक्तिबाण लगा था और हनुमान लंका में पहुँच गये थे वैसे ही लोरिक वहाँ पहुँच गया था।

पृष्ठ 308-309

धोबी को जैसे शक्ति-बाण लग गया हो। लोरिक रो-रो कर धोबी को उठा रहा है। उसने गर्दन को सहारा देकर धोबी को गोद में उठाया और संवरू के पास लाया। धोबी अच्छी तरह पीटा गया है। संवरू ने देखा कि धोबी की गर्दन झुक गयी है। वह इधर-उधर हिल रही है। दूलहा बन कर संवरू बैठे हुए थे पर धोबी को देखते ही वह बयालिस हाथ कूद गये। कहा लोरिक तुम्हारे ऊपर वज्र गिर जाय, तुम आटे में दब जाओ, तुम बहुत डींग मार रहे थे, पूवा पका रहे थे। मना करने पर नहीं मानते थे, मीता धोबी को तुमने पिटवा दिया। मेरी छाती फट गयी।

संवरू ने बांस का धनुष अपनी सवारी से निकाला। उनके शरीर में आग लग गयी। संवरू ने बाँस और बरेठ का धनुष जब पालकी से निकाला तो लोरिक को मूर्च्छा आ गयी। बाँस बरेठ का धनुष लेकर उन्होंने बामरि का किला उड़ा देना

चाहा। तब तक लोरिक चिल्ला उठा। यदि तुम बाण छोड़ दोगे तो सारा सुहवल गाँव जल जायगा। मेरा जीना व्यर्थ हो जायगा, मैं नरक में गड़ जाऊँगा। मैं यह नहीं जानता था कि बामरि यह हाल करेगा, धोखा करेगा। लोरिक फूट-फूट कर रोने लगा, त्राहि-त्राहि करने लगा। तुम दूल्हा बनकर आये हो, हम तुम्हारी बारात करने आये हैं। इसी समय भवानी मोती-सगड़ के घाट पहुँच गयीं। धरमी का बाण उन्होंने पकड़ लिया। धरमी तुम दुनियाँ में डूब गये। दूल्हा बनकर तुमने बाण उठा लिया, तुम्हें पहले तो शादी करना भी नहीं स्वीकार था।

पृष्ठ 310-311-312

पान में जैसे चूना लग जाय वैसे ही बात संवरू के कलेजे में धंस गयी। रोकर उन्होंने धनुष रख दिया। वह धोबी को गोद में लेकर रोने लगे। भवानी, अब तुम्हीं धर्म की रक्षा कर सकती हो। मेरा भाई धोबी आज पीट गया है। मेरी छाती फट गयी है। जगदम्बा ने हँसकर कहा—अब युद्ध की तैयारी हो गयी है। कुएँ का पानी रोक लो। धरमी को चैन नहीं मिला। धोबी को गोद में लेकर वह सेवा करते रहे, रोते रहे।

लोरिक को भवानी ने गुलेल और गुरियों के साथ सुरहलि भेजा और कहा कि जो भी स्त्री वहाँ पानी भरने आये उसका घड़ा फोड़ दो। बीर लंगोटा कसकर, मालबरन की गाँठ चढ़ाकर वहाँ गया जहाँ सोलह सौ स्त्रियाँ पानी भर रही थीं, खूब भीड़ थी। किसी ने घड़े में पानी भरकर सिर पर रख लिया था, कोई अभी पानी भर रही थीं। लोरिक घड़ों पर गुलेल चलाने लगा। घड़ों के फूटने से, साड़ियाँ भीगने लगीं, दक्षिणी छीट की उनकी मखमल की चोलियाँ भी भीग गयीं। स्त्रियाँ घड़ा छोड़-छोड़ कर भगीं। सुहवल में हल्ला मच गया, सोनभद्र के घाट पर स्त्रियों ने बदअमली की है, दुराचार किया है। लोगों ने कहा—हे बामरि ! जितनी औरतें पानी भरने गयी थीं उनकी इज्ज़त चली गयी। लोरिक ने उनका घड़ा फोड़ दिया है, उनको इज्ज़त उसने ले ली है या छोड़ दी है कहा नहीं जा सकता।

बामरि के सारे शरीर में आग लग गयी। उसने झिंगुरी को पत्र लिखा, धावन को दिया। भीमली समुराल करने गया था। धावन फूलेना झिंगुरी के पास गया। झिंगुरी ने काका बामरि और अपनी बहिन सतो का हाल पूछा। उसने पत्र दे दिया। उसमें गउरा के अहीर का हाल लिखा था। [मूल पाठ में सूत्र है : बलिया भाटपुर.......लोरिक ह नांव]

संवरू वर बनकर आये है। पत्र में लिखा है राय बात से शादी कर लोगे तो ठीक होगा। यह मत समझो कि गउरा का बीर प्रार्थना कर रहा है। कल प्रातःकाल जब पूर्व में ललिमा छा जायगी, सुहवल में संग्राम छिड़ जायेगा। तलवारें

चलेंगी। दूसरे पन्ने पर चित्र है जिसमें विष का वृक्ष है। रक्त से कोहबर पुता गया है।

पृष्ठ 312-313

पत्र में छाती का पीढ़ा गड़ा है। भीमला के मुंड का कलश धरा है। पत्र में जो चित्र बना है उसमें भीमली की पीठ झुकी हुई है। वह आँख खोल-खोलकर पत्र देख रहा है। उसकी जांघ की हरिश गाड़ी गयी है। सतिया बहिन वहाँ खड़ी है, उसके पास ही लोरिक है। उसने सतिया का झोंटा पकड़ रखा है ऐसा चित्र पत्र में खींचा गया है। झिंगुरी सतिया का झोंटा देख रहा है। वह धरती पर गिर पड़ा है और कह रहा है शायद लोरिक ने मेरी बहिन को सागड़ पर घसीटा है। उसने कहा—अब हमारी इज्जत शेष नहीं है। इस समय उसका भी काल पुज गया है।

पंचों, पत्र देखकर झिंगुरी को क्रोध आ गया। उसने अपना कच्छ धारण किया, मल्लवर्ण की गाँठ लगायी, सात (छतीस ?) हाथ का डंडा उसने गर्दन पर डाल लिया है। वह झूमता हुआ पग डालने लगा जैसे इन्द्र अखाड़े में जा रहा हो। गेरुवा पर्वत से वह सुहवल के बाजार में चला। रास्ते में बबुरी बन पहाड़ पर सिराज की गायें थीं। सिराज कंधे में लाठी लिये गायों को चरा रहा था। उसने देखा भइया झिंगुरी ने छतीस हाथ का डंडा अपने कंधे पर रखा है। यह डंडा किस पर उठाया गया है। सिराज ने पूछा। किसका काल पुज गया है ? तुम्हारा भाला किस पर उठ गया है। झिंगुरी ने सिराज को पाती दिखाई।

इस पत्र में चित्र है। भीमला के मुंड का कलश है, जांघ की हरिश है। उसमें बीर का फोटो है जो बहिन सती का झोंटा पकड़े हुए है। सिराज ने कहा—भइया झिंगुरी, मैं डर के मारे नहीं कह पा रहा था। मेरी एक बार गाय भूल गयी थी तो इसी बोहा में वे गायें मिलीं। मैं सच कह रहा हूँ उसी समय मैंने दो गायें वरच्छा में दी थी क्योंकि ऐसा सुन्दर वर खोजने से नहीं मिलेगा। उसके मुकाबले में तुम्हारा धन नगण्य है चौड़ाई में चौदह कोस का दह, झील (कहते हैं बलिया का सुरहा ताल चौदह कोस में फैला है) है, सोलह कोस उसकी लम्बाई है। उसके आस-पास खर (घास) जमा है। बीच में झीने-झीने कमलनाल (पद्मनाल) हैं। वहाँ मुघर संवरू की गायें घूमती हैं। वहाँ दुधिया है जिसमें पत्ते निकले हैं। वहाँ गायों का प्रताप फैल रहा है।

पृष्ठ 314-315

वहाँ का जलसा देखने योग्य है। मैं बोहा में चला गया जहाँ मेरी गायें बहक गयी थीं। संवरू मीता ने सात पीपल का पेड़ लगाया है, सात पकड़ी के पेड़ लगाये हैं, सात बरगद के हैं। वहीं मन्दिर है जिसमें हर शंकरी लगी हुई है। पास

में वहीं गायों का अड़ार है। बीच में अखाड़ा खुदा हुआ है। सिराज अपने भाई झिंगुरी से कहने लगे, चलिए, हम सब लोग मिलकर काका से कहें कि बहिन सती की शादी वे कर दें तो हमारी शान बनी रहेगी। झिंगुरी यह सुनकर क्रुद्ध हो उठा। उसकी आँखें लाल हो गयीं। मैं खोइलनि के बेटे को मार डालूंगा, जलता हुआ दीपक बुझ जायगा। सिराज ने कहा—अच्छा चलो, यहाँ पुवा पका रहे हो, गाल बजा रहे हो, वहाँ तुम्हारी गाँड़ फट जायगी। तुम्हारी बोलती बन्द हो जायगी। तुम्हारा अभिमान चूर-चूर हो जायगा। इतना कहकर सिराजवा पशुओं की रखवाली करने चला गया। झिंगुरी क्रुद्ध होकर बयालिस हाथ कूद गया।

जब वह सुहवल पहुँचा तो छत्तीस वर्ण की बेटियाँ चिल्लाने लगीं। बामरि के बेटे लड़कर कब मरेंगे और हमारा विवाह कब सम्पन्न होगा ? आपस में कहने लगीं, परेशान होने से काम न होगा। पाहुन अजयी ने अगुवाई की है। सतिया की शादी निश्चित होगी, गली में स्त्रियाँ इस प्रकार बात-चीत कर रही हैं। बामरि की गद्दी लगी हुई है, दरबार जोरों पर है, झिंगुरी ने जाकर मस्तक नवाया। बामरि ने उसे गाली दी—तुम लोग बेटा नहीं हो, गदहा हो, तुम लोगों की शान मिट्टी में मिल गयी। यहाँ आकर लोरिक ने इतनी दुर्गति की है। झिंगुरी रोकर पीछे हट गया। अब वह उलटा कच्छ पहनने लगा। मल्लवर्ण की गाँठ डालने लगा।

पृष्ठ 316-317-318

झिंगुरी ने अलीगंज का जूता पहना। छाती पर लोहा (लोहे का कवच) बाँध लिया। उसमें दुहरी बछियाँ लगी हुई थीं। उसने अपनी गुलाबी पगड़ी पहन ली। उसकी एक ओर जीरा और लवंग लटक रही थी। छत्तीस गज का भाला उसने अपनी गर्दन में लटका ली। [यह सूत्र प्रायः सभी वीरों की साज-सज्जा के लिए प्रयुक्त हुआ है।]

झिंगुरी बामरि की कचहरी में गया और उसने बीड़ा उठा लिया, दाँत में उसे दबा लिया। सुहवलि का घर छोड़कर वह सुरहनि में चला गया। वह भूमि पर तेजी से बढ़ा, आगे-आगे वह कदम बढ़ाता था। तब बीर लोरिक ने अजयी से कहा—जरा उठो और देखो। धोबी झिंगुरी को पहचान गया। उसके सीने पर कँपकँपी छा गयी। सिर दुखने लगा। वह कहने लगा मुझे ओढ़ने से ढँक दो। बीर बघेला लोरिक उठा। बीरों का जितना ओढ़ना था उसके सिर पर रख दिया गया फिर भी उसकी कँपकँपी कम नहीं हुई। बैलों की पीठ पर रखी जाने वाली कंधेलियाँ भी उस पर रख दी गयीं। धोबी जाठ की भाँति सो गया।

झिंगुरी तम्बू का रोब देखने लगा। अहीरों का दल और भवानी की माया देखकर झिंगुरी छाती पीटने लगा। हाय भगवान जितना हमारा कुल धन सुहवल में होगा उतना तो इस तम्बू में लगा है। जिसका ऐसा तम्बू है, वह बीर मोती सगड़

के घाट बैठा हुआ है। झिंगुरी अपने मन में सोचने लगा। उसे चिन्ता हुई। वह भींटे पर चढ़ गया। जैसे महफिल बैठती है वैसे ही वहाँ बीर अपनी भुजाओं को फुलाये बैठे हैं। वह बीर का लेखाजोखा लेने लगा। वहाँ बूढ़ा कोई नहीं, कोई युवक ऐसा नहीं था जिसकी मूँछ निकली हो। सभी बिना मूँछ के दिखाई दे रहे थे। ऐसा पहनावा, ऐसा गढ़ा हुआ शरीर मैंने कभी नहीं देखा। सभी एक रंग थे, एक साँचे में गढ़े हुए। लगता था वे एक ही नक्षत्र में, एक ही बूंद से पैदा हुए हैं। वह दूसरे तम्बू में गया वहाँ भी वही हाल था।

पृष्ठ 318-319

संवरू की ऊँची गद्दी लगी हुई है। हाथ में कंकण बँधा हुआ है, माथे पर रंगा हुआ गुलाबी रंग का गमछा है। गले में मोतियों का हार है, गर्दन में शेषनाग की भाँति चमड़े का तसमा है। जब झिंगुरी ने यह रोब देखा तो वह आश्चर्य चकित हो गया। काष्ठवत् हो गया। हे बाबा, हे देव नारायण भइया सिराजवा जो कह रहा था वह प्रत्यक्ष आ गया है। अब तो मैं लौट चलूंगा और काका को समझाऊँगा कि यह शादी करने योग्य है। मेरी बहन सती के रोब का ही यह दूलहा है। अगर काका कहना मान जाते तो चलकर बारह सौ मुहरों के साथ मोतियों का एकावलि हार, बीस श्रेष्ठ कलदार मुहरें, कंचन की अशरफी थाल में भरवा देता। नाऊ तथा बारी को संग में लगाकर काका बामरि को लेकर मोती सगड़ के घाट में आ जाता। फिर दही-गुड़ का तिलक हम लोग संवरू के ललाट पर कर देते। हम सतिया की शादी कर देते, गउरा में मिठाइयाँ बंटतीं। कहीं ऐसा न हो कि यहाँ युद्ध छिड़ जाय। बीर कहने लगा—आगे बढ़ने योग्य नहीं है। चलकर काका को समझाया जाय।

वहाँ से हटकर झिंगुरी भींटा पर गया जहाँ बाजा बजाने वाले थे। वह डाँट कर बोला—बाजे वाले सुनो किसकी जाँघ की शक्ति से तुम लोगों ने सुरहनि में ताल बजा दिया है। किसकी तलवारों के बल पर मोती सगड़ के घाट आये हो। उन्होंने कहा—दो भाई जबर्दस्त लड़ाकू है उनके हम बाजा बजाने वाले हैं। इस बेटी-चोद बामरि के मुँह में हम तलवारें घोंप देंगे। सात दिन हो गये यहाँ बारात को टिके हुए। पर वह निमंत्रण की लकड़ी नही भेज रहा है। न भोजन का ही निमन्त्रण दे रहा है, न इस मोती सागड़ के घाट पर संवरू की शादी ही कर रहा है।

पृष्ठ 320-321

कल लड़ाई छिड़ेगी और तलवारें चलेंगी। हम लोग तेग धारण करेंगे। हमारे ठाकुर यहाँ बैठे रहेंगे। भीमला के सिर का हम कलश धरायेंगे। [संपूर्ण सूत्र

है—भीमला मुंड ···· निहुचे होइ बियाहै] । बाजा बजाने वालों ने इतना ललकारा तो झिगुरी की जीभ तालू में सट गयी । अरे भाई, ये तो युद्ध को गाजर-मूली समझ रहे हैं । ये छोटी जाति के हैं, इनसे बोलना ठीक नहीं है । ये मानेंगे नहीं । झिगुरी वहाँ से नीचे वापस आया । सोना सुहवलि पाल पहुँचा । वहाँ बमरी की कचहरी लगी हुई है । उसने सलाम दागा । बामरि ने आशीर्वाद दिया । बेटा लाख वर्ष जीयो, अक्षय रहो, गंगा जमुना के जल की भाँति तुम्हारी आयु बढ़े । तुम अमर हो, तुम्हारा नाम युग-युग तक चले । बेटा तुम मोती सागड़ के घाट का कुशल-क्षेम कहो । क्या लोहे के डर से अहीर गउरा के बाजार भाग गया । या उसकी तलवार से तुम भयभीत हो गये । झिगुरी ने कहा मुझे लोहा युद्ध का जरा भी डर नहीं है । पर मैं क्या रोब का वर्णन करूँ । बीर की गरिमा देखकर मेरी छाती फट गयी । तुम्हारे पास जितना धन सुहवल में है उतना तो सिर्फ उसके तम्बू में लगा है ।

जब मैं थोड़ा आगे बढ़ा तो मैंने देखा कि गउरा के मर्दों की रचना अद्भुत है । गउरा का पानी धन्य है । लोरिक सांवर राम-लक्ष्मण की जोड़ी है । पांडवों के भाई जैसे है । वहाँ केवल आदमी नहीं हैं देवता भी आये है । आगे बढ़कर मैंने देखा कि दूल्हे की गद्दी लगी हुई है । नीचे एक सुन्दर पहलवान बैठा है । उसका ललाट मधूक (महुवा) जैसा चमक रहा है, लगता है मशाल जल रही है । दूल्हे की छवि क्या कहूँ ? जैसी बहन मेरी सतिया प्रकाशमान है वैसे ही पाहुन उदित हुआ है । यदि आप मानें तो मेरी यह प्रार्थना है, दोनों हाथ जोड़कर एक बड़ी विनती कर रहा हूँ ।

पृष्ठ 322-323-324

उसने कहा—हे काका, मैं अपने दिल की क्या बात कहूँ ? सागड़ पर कुछ झगड़ा नहीं हुआ है । मेरे मन में एक लालसा उठी है कि मैं चलकर काका को समझा दूँ । पाँच ब्राह्मणों, पाँच सेवकों, तथा भाई बंधुओं को लेकर सोना सुहवली पाल चलिये । मोतियों का थाल भरवा लीजिए, एक लड़ी का (एकहरी, एकावलि) हार ले लीजिए, कलदार मुहरें तथा बीसा की अशरफियों को थाल में रखवा दीजिए और मोती सगड़ के घाट पर चलकर संवरू को दही-गुड़ से ललाट पर तिलक कर दीजिए । यहाँ सतिया को हल्दी लगे । राय मे शादी कर दी जाय । बमरी की आँखें लाल हो उठीं, क्रोध में बह कहने लगा तुम मेरे पुत्र नहीं उत्पन्न हुए हो मदहा पैदा हुए हो । मैंने छत्तीस वर्ण की कन्याओं को बाल-कुँवरि रोक रखा है, गउरा के बीर को देखकर तुम्हारी पुलपुली काँपने लगी है । तुम मेरी आँखों के सामने से चले जाओ । तुम्हारे ऊपर वज्र गिर जाय । झिगुरी वहाँ से हट गया, बमरी उसको गाली देने लगा, धिक्कारने लगा । गर्दन झुकाकर झिगुरी दूसरे कमरे में चला गया ।

वह रोने लगा, कहने लगा—मैंने प्रण किया है पंचों, आज मुझसे मिल लो। मैं सुरहनि में लड़ने जा रहा हूँ। फिर भेंट करने का अवसर नहीं मिलेगा। बमरी ने कहा—जाकर मृहवलि में जूझ जाओ, लड़कर मर जाओ। मुझे इसका हर्ष-विषाद नहीं है। बमरी का बेटा झिंगुरी वहाँ से सुरहनि का रास्ता पकड़ कर चला।

पंचों, अब आगे का हाल सुनिए। झिंगुरी मोती सगड़ के घाट पहुँचा। उसने ललकार बांधा। यदि कोई बीर लड़ाकू हो तो सुरहन में नीचे आ जाय। तब नोनवा का बेटा बंठवा उठा, उलटा कच्छ पहनने लगा जिसमें मल्ल वर्ण की गाँठ थी। उसने अजगर की सी पेटी बांधी जिसमें गोले स्थिर थे। बीर ने छाती पर लौह कवच धारण कर लिया फिर दुहरी बर्छी संभाल ली [स्पष्ट है यह वेश-भूषा सम्बन्धी सूत्र सभी बीरों के लिए आया है] उसने गुलाबी पगड़ी पहन ली। अलीगंज का जूता पैर में डाल लिया। हाथ में धनुष लेकर वह सुरहन में कूद गया। बांठा पहली चोट में उठा। झिंगुरी हँसा, कहने लगा—टिड्डियों की भाँति तुम लोग परेशान हो गये। बांठा बोला—झिंगुरी मेरी बात सुनो। हम तुम्हारी शान देखने आये हैं, अहोर की बारात करने आये है। तुम्हारी शान हम तोड़कर रहेंगे। झिंगुरी ने कहा—यहाँ हम गंगनी का खेल खेलायेंगे, लड़ेंगे।

पृष्ठ 324-325-326

झिंगुरी ने बांठा से कहा—गंगनी खेलोगे या लोहा लोगे। बांठा ने कहा—मैं तुमसे गंगनी खेलूंगा। गंगनी का नाम सुनकर झिंगुरी की छाती गजभर फूल गयी। तो तुम सिर का सोला हैट उतार दो। अपनी तेग भी रख दो। सुरहन के मोती सगड़ के घाट पर गंगनी हो जाय। बांठा ने अपना सोला हैट उतार दिया, अपनी साज-सज्जा उतार दी। दोनों बीर पयंतरा चलने लगे। बांठा ने चोट की, गंगनी पढ़ाने लगा। झिंगुरी पांच परोसा उछल गया और बांठा को ऐसी एड़ मारी कि वह धरती पर भहरा उठा। झिंगुरी ने मन में कहा इसके शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर दूँ। बांठा रोने लगा। मैं जाति का पवनी हूँ सेवा करने वाला हूँ। चमार हूँ। मुझे छोड़ दोगे तो मर्दों को लेकर गउरा गढ़पाल चला जाऊँगा। झिंगुरी यह सुनकर स्तब्ध हो गया। यह तो हमारा सगुन ही बिगड़ गया है। नीच जाति चमार से भेंट हो गयी। झिंगुरी ने कहा तुम भागो। बांठा झुक कर भागा। लोरिक से कहने लगा मेरी रस्सी काट दो।

लोरिक का मन खराब हो गया। झिंगुरी गरज उठा। जो बीर लड़ने वाला हो वह सामने आ जाय। मकरा का बेटा बलवान देवसिया अब उठा। बयालिस हाथ कूदा, बांठा तो घायल हो चुका था। झिंगुरी ने हंसकर कहा यह पता चल गया कि तुम लोग कैसे बीर हो। झिंगुरी ने पूछा—गंगनी खेलोगे या तलवार से लड़ोगे। गउरा के बीरों का दुर्भाग्य था। झिंगुरी गंगनी का हाल अच्छी तरह जानता था।

गउरा के बीर इसको नहीं जानते थे। देवसी गंगनी के लिए तैयार हुआ। उसने देह की सारी सामग्री निकालकर रख दी। पट्ठा झिंगुरी पयंतरा भांजने लगा, पांच पगेसा कूद गया। जिस बीर को वह मारता था, वह ज़मीन पर गिर जाता था। सभी रोने लगे। हम नीच जाति के पवनी हैं। झिंगुरी ने कहा – अरे, यहाँ तो सब नीच जाति के हैं। लगता है यह अहीर कुजाति है। इसके सब साथी चमार दुसाध ही हैं। देवसी आकर तम्बू में गिर पड़ा। अब मीवधरा उठा। वह बयालिस हाथ कूदा और मुकाबले में जा खड़ा हुआ। झिंगुरी ने पूछा—क्या खेलोगे, गंगनी या लोहा।

पृष्ठ 327-328

मीवधरा ने कहा—तुम तलवार उठाओ। झिंगुरी का शरीर अब कांपने लगा। गोवधरा ने कच्छ पहन रखा था। वह लड़ने में बांका और जुझारू था। उसके हाथ में तेग थी। एक ओर झिंगुरी चल रहा था, दूसरी ओर मीवधरा। झिंगुरी ने कहा—वार करो। किन्तु मीवधरा ने कहा—मैं पहले चोट नहीं करूँगा। बाद में अपनी शक्ति भर उठा भी नहीं रखूँगा। झिंगुरी की चोट खाली चली गयी। वह पयंतरा करने लगा। उसका शरीर ऐसे डोल रहा था जैसे कुम्हार का चाक। मीवधरा की कानी आख थोडी विचलित हो गयी, वह जरा असावधान हो गयी, झिंगुरी की तेग उसके ऊपर गिर पडी। वह लड़ाकू बीर गिर पड़ा। उसने मिट्टी उठा ली और कहा—भइया अगर अब चोट करोगे तो कुल में कलंक लग जायगा। मैं अहीर हूँ और यहां बागान करने आया हूँ।

अच्छा, तब झिंगुरी ने अपनी तेग बटोर ली। मीवधर तम्बू में जा गिरा। तीन बीर लड़ चुके। झिंगुरी गरज उठा। लोरिक, बहिन चोद, तुम्हारी मुँह में तलवार घार दूंगा। साले, तुम एक भी बीर नही लाये हो। सब गदहों को ही लेकर आये हो। अब खोइलनि का बेटा बीर लोरिक विक्षिप्त हो उठा। उसने भैंसासुर का पंजा अपनी छाती में लटका लिया। ऊपर उसने गुलाबी पगड़ी पहन ली। ['वेश-भूषा' का पूरा सूत्र यहाँ है] संवरू-संवरू बोलकर वह उठ खड़ा हुआ। संवरू ने उसकी बाह पकड़ ली और रोने लगे। हमारी जोडी बिछुड़ जायगी। गड़ा हुआ तम्बू उखाड़ लो, गजन गउर गढ़पाल चलें। तब खोइलनि का बेटा देवकी नन्दन राजकुमार रोने लगा। मैंने अन्न की शपथ ली है। मन्दिर में जाकर मैंने जल के लिए हराम बोल दिया है। यदि पहले ही, मैं जल पी लूंगा तो कपिला गाय मारने का पाप करूँगा। मैं मुंड का कलश धराऊँगा, रुधिर का कोहबर पुतवाऊँगा। छाती का पीढ़ा गड़वाऊँगा, जांघ की हरिश टंगवाऊँगा। भउजी का झोंटा पकड़ूंगा और भइया तुम्हारी शादी कराऊँगा। भावज के आंचल का चावल मेरा आहार होगा। माँ भवानी उसको डांटने लगीं। लोरिक और संवरू को पकड़ कर उन्होंने बैठा दिया।

पृष्ठ 329-330

माई भवानी ने सवरू को मोढा पर बैठा दिया और कहा—तुम मेरा खेल देखो। इधर रानी खोइलनि का बेटा बाका लोरिक युद्ध के लिए चला। वह अभी बारह वर्ष का तरुण था। उसके सिर मे अभी नर्म बाल सुशोभित हो रहे थे। इधर सुहवली की लडकियाँ रो पडी। कहने लगी—हमारी छाती फट रही है। अभी यह बीर छोटी उम्र का कोमल बालक है। इसकी धोंभी ढीली-ढाली है। कमर लचक रही है। झिगुरी की तलवार तेज है। इसके बूते मे नही है कि आक्रमण रोक ले। बीर हिल-हिल कर पग उठा रहा है और झिगुरी के पास जा रहा है। दोनो बीर कडक उठे। छत्तीस वर्ण की कन्याएँ सूर्य के आगे विनय करने लगी- हे आदित्य-नारायण, अब आप ही इस शेरनी के पुत्र के सहायक है। यदि बामरि का बेटा इस युद्ध मे मर गया तो हम आपको दूध की धार अर्पित करेंगे।

जब दोना बीर लडने को तैयार हुए तो वे सूर्य भगवान से प्रार्थना करने लगी। वे मनौती मनाने लगी। झिगुरी ने कहा—रे लोरिक, मै तुमको गंगनी खेलाऊँ या तुमसे तलवार का लोहा लूँ। लोरिक ने कहा- -जैसा तुम्हारा मन हो वैसा करो, जैसे चाहो तुम वैसे आजमा लो। तुम मुझको लडका मत समझो। मेरे भीतर बूढो की सी पुरानी हड्डी है। जब तुम नेग चलाओगे तो तुम्हारी नेग खड-खड हो जायगी। तुम्हारे अस्थि पंजर की हड्डी मै तोड दूँगा। झिगुरी ने कहा—गंगनी पर चढ आओ। बीर लोरिक ने नेग रख दी। देह की सामग्री मोती सागड पर उतार दी। वह बारह वर्ष का गभरू जवान है, बाल उसके नर्म (लवुज) है, उसका मुँह और उसकी आँखे सुघर हैं। उसके मुख मे दूध के दाँत सुशोभित हो रहे है।

पृष्ठ 331-332-333

भवानी ने इधर ललकार बाध दिया। बेटा, मेरी बात सुनो। मैं तुम्हारी गंगनी सुहवलि मे देखूँगी। लोरिक का मन दुगुने उत्साह से भर गया। वह पयंतरा चाल चलने लगा। एक ओर पहलवान झिगुरी भी घूमने लगा। सुरहन मे आँधी-सी उठ गयी। चारो ओर धूल भर गयी। दोनो बीर लडने के लिए तैयार है। सुहवल मे मोती सगड पर आर-पार दिखाई नही पडता था। लोरिक की चोट की आवाज गूज गयी। झिगुरी दो बीघे दूर जाकर गिरा। लोरिक ने उसकी गगनी तोड दी। झिगुरी ने कहा—तुमने गगनी तोड दी। अब मैं तुम्हे पढाऊंगा। फिर बीर सागड के नीचे गया। गर्दन पर धूलि चढायी, पयतरा चाल चलने लगा जैसे कुम्हार का चक्र (चाक) घूम रहा हो। लोरिक ब्यालिस हाथ कूदा। झिगुरी को उसने जोर से एड मारा। वह गिर गया। अजयी चिल्ला उठा, मीता इस साले की गर्दन काट ला। झिगुरी रोने लगा। बीर, मेरी जान छोड़ दो। विधाता तुम्हारा सोचा हुआ

पूरा करेंगे, तुम्हारी आशा पूर्ण होगी। जब बहिन सती की शादी होगी मैं लावा परछूँगा।

माँ भवानी क्रुद्ध हो उठी। उसको तलवार दी और कहा-- झिंगुरी की गर्दन काट लो। उसकी गर्दन काट कर लोरिक ने सोना मुहबलि पाल फेंक दिया। वहाँ बामरि की कचहरी लगी हुई थी। वही जाकर गर्दन गिरी। बमरी रोया, फिर हँसा। अपने मंत्री और दीवान से उसने कहा--झिंगुरी के मरने का मुझे भय नहीं है। अच्छा हुआ वह युद्ध कर मर गया। मैं किसी का ससुर नहीं कहा जाऊँगा। सिराज मेरा बेटा किसी का साला नहीं कहा जायगा। सारा मुहबल रो उठा। उस बामरि की छाती कठिन है। इसको जरा भी आंसू नहीं गिरे। गायक कहता है गले ने मेरा साथ छोड़ दिया है। [इसके बाद सूत्र है भागि वेरि भगवती..........परि गइल डेंगी हमार] देवी जिस दिन के लिए मैंने तुम्हारी पूजा की वह दिन आ गया है।

पृष्ठ 334-335-336

गायक का आत्मकथन--गायक कहता है :

हे देवी, वह घड़ी अब निकट आ गयी है। मैं तुम्हारे बल से, भरोसे से इस सभा में मस्तक खोलकर बैठ गया हूँ। इस समर को मैंने अपनी आंखों से नहीं देखा है, न कानों से सुना है। अगर एक अक्षर भी टूट जाय तो संसार मेरी निंदा करेगा। [इसके बाद भी गायक का आत्मकथन है यह पहले आ चुका है।] पंचों, अब आगे का गाना सुनिये। जब झिंगुरी का मुंड गहबल में गिर पड़ा और वहाँ हाय-हाय मच गयी तो राजा बामरि हँस रहा था। वह अपनी मूँछ पर ताव दे रहा था। बेटे की मृत्यु मुझको जरा भी खल नहीं रही है। उसने मंत्री और महतो दीवान से कहा। मैं किसका ससुर कहा जाऊँगा। मेरा बेटा भीमला किसका साला कहा जायगा। बामरि विचित्र है, उसकी आँखों से आँसू नहीं गिरे। बायें मन्त्री बैठा हुआ था, दाहिने महतो दीवान बैठा था। उन्होंने कहा पाती फुलहरि के बाजार में भेज दी जाय। भीमला गौना कराने गया है। वह ससुराल करने गया था। बामरि ने उसको पत्र रोते हुए लिखा। बेटा, मेरे सुपुत्र तुमने कहा था कि मैंने दुनिया को मथ डाला। कोई वीर नहीं पैदा हुआ है जो मुझे रोक सके।

गउरा का वीर यहाँ आकर मोती सगड़ पर बावन बुर्जों का तम्बू गाड़ चुका है [यहाँ 'बावन बुर्ज... ढालके लाग गइल ओमारि' सूत्र है] बीर लोरिक ने यहाँ हलचल मचा दी है। तुम्हारी गाड़ी हुई शान उसने मोती सागड़ पर उखाड़ कर फेंक दी है। उसने सोलह सौ पनियों के घड़े तोड़ डाले हैं, किसी की इज्जत नहीं बची है। बेटा भीमली मेरी बात सुनो, तुम्हारा वीर भाई, तुम्हारी जोड़ी झिंगुरी सुहबल में युद्ध में मारा जा चुका है। धांवन पाती लेकर फुलहरि के बाजार चला।

वह कुछ दूर घोड़े की चाल से (दुलुकी) चला। कुछ दूर कुत्ते की चाल से चला। उसने भीमली की ससुराल फुलहरी के लिए प्रस्थान किया। भीमली की भुजाओं में असीम बल था। वह ऊँचे हाथी पर बैठा था। उसकी गर्दन में मुंगदर झूल रहा था।

पृष्ठ 337-338-339

भीमली ने संग में अपनी विवाहिता की पालकी उठवायी है और सोमा मुहबलि पास आ रहा है। फुलगेना नाऊ से उसकी बीच जंगल में भेंट हो गयी। नाऊ ने झुककर सलाम किया। भीमली ने आशीर्वाद दिया। हे सेवक, तुम लाख वर्ष जियो, गंगा और जमुना के जल की भाँति तुम्हारी आयु बढ़े। युग-युग तक तुम्हारा नाम चले। तुम अक्षय हो, अमर हो। तुम मुहबल का कुशल समाचार कहो। काका बामरि कैसे हैं ? मेरी बहिन सती कैसी है ? नाऊ की जाति चतुर होती है। उसने कहा—मौखिक बाते बताऊँगा तो बहुत सी बातें भूल जायेंगी। इस पत्र में मोहबलि का सारा कुशल समाचार लिखा है। जंगल में हाथी से उतर कर जब उसने हाथ में पाती लिया तो एक-एक अक्षर अलग-अलग करके पढ़ने लगा। विवाहिता का डोला उसने एक ओर रखवा दिया। पत्र में गउरा का चित्रण है [उतर बदल भय देवहा....लोरिक हनाँव' सूत्र है]

गउरा से संवरू वर बन कर आया है। उसका छोटा भाई वीर लोरिक है। तुम्हारा गड़ा हुआ भाला उसने उखाड़ दिया है। मोरी सागड़ पर उसने बावन बुर्ज का तम्बू गड़वा दिया है— [पूरा सूत्र यहाँ है] पीली कनात है, कुमकुमा है, हड़िया और गिलास वहाँ प्रकाशमान है। नेगों का वहाँ बागीचा लगा है, बर्छियों का मंडप सजा है। देख रहा है कि रुधिर का कोहबर पुता हुआ है। मेरे मुड का कलश रखा गया है। मेरी छाती का पीढ़ा गड़ा है। लोरिक हँस-हँस कर बहिन सती का झोंटा पकडे हुए है। वीर क्रोध में जहर-सा हो गया। वह विक्षिप्त-सा हो उठा। उसकी पत्नी फुलकुंवरी छाती पीट-पीटकर रोने लगी। सैया, तुम किसका नाम ले रहे हो। जरा ठीक से पत्र पढ़कर सुनाओ। लोरिक का परिचय है ['उतर बदल गय देवहा''''सांवर लोरिक हनाव' सूत्र है] संवरू वर बनकर बारात करन आया है, लोरिक बारात करत आया है। पंचो, यह सुनकर भीमली की पत्नी रानी फुलकुंवरि ने जोर से अपनी छाती पीट ली। वह फुलहरि की बेटी थी।

पृष्ठ 340-341

भीमली की पत्नी पालकी मे फूट-फूटकर रोने लगी। हमारा तो भाग्य ही फूट गया। सती मेरी ननद नही, शत्रु पैदा हुई है। हे पति, जिस वीर का तुम नाम ले रहो हो वह इन्द्रपुरी में था। जहाँ उसका भाग्य लिखा जा रहा था, मैं भी थी। वह वीर डाइन, भूत, बैताल, चंडाल आदि की पूजा नही करता, वह ब्रह्मा की बहिन

दुर्गा की पूजा करता है। सती ने हमारी छाती पर आग रख दी है। तुम अपने हाथी को फुलहरि लौटा लो। तुम सुहवलि मत चलो, वहाँ विषाद की छाया है। भीमली ने कहा—तुमने बार-बार वीर की सराहना की है, पर मेरा भाग्य इन्द्रासन में लिखा गया है। मैं मारने से नहीं मरूँगा, न जलाने से छार-छार होऊँगा।

ब्रह्मा के सामने बैठकर मैंने अपना भाग्य लिखवाया है। सात हाथी की शक्ति मेरी भुजाओं में है, मैंने सारी पृथ्वी मथ डाली, दुनिया का अन्त कर डाला। कोई वीर मुझसे समर लेने के लिए खड़ा नहीं हुआ। मैंने सुहवलि में मोती सागड़ के घाट पर छत्तीस हाथ का भाला गाड़ दिया। तुम गउरा के डिगर की सराहना करती हो, हमारी देह जल उठी है। रानी फुलकुंवरी रोती रही, हे सैयां, हे मूर्ति नारायण, हे मेरे सिंदूर के स्वामी, तुमने दुनियाँ में बड़ा पाप किया है। सतिया के जीव के लिए तुमने सुहबलि में छत्तीस वर्ण की कन्याओं को अविवाहित रहने दिया है। उसमें बारह वर्ष की कन्यायें हैं, सोलह साल की स्त्रियाँ है, कितनों का तीसरा पन बीत गया है, कितनों का चौथा पन बीत गया है। उनकी हड्डियों का मांस झूलने लग गया है, उनकी कमर झुक गयी है, उनका बाल पक गया है। मुँह में खोजने पर दांत भी नहीं है।

पृष्ठ 342-343-344

उनकी मांग में सिंदूर नहीं पड़ा है। जैसे घर के कोने में बिल्ली रोती है वैसे ही वे रो रही हैं, जैसे वन में सियारिन बिलखती हैं, कन्याएँ भी बिलख रही हैं। तुमने बड़ा पाप कर्म किया है। प्रातःकाल उठकर स्त्रियाँ कंधे पर धोती रखकर, हाथ में लोटा लेकर, कांख में मृगछाला दबाकर मोती सागड़ पर गयीं और देवताओं पर ध्यान लगाये हुए उन्होंने माला का जप किया। आंचल खोलकर उन्होंने सूर्य की आराधना की। जब अविवाहिता स्त्रियों ने माला जपा तो पृथ्वी हिलने लगी, कैलाश डोल उठा, सभी देवता विकल होकर इन्द्रपुरी गये। ब्रह्मा के द्वार पर हलचल मच गयी। किस तपेश्वरी ने उलटा जप कर दिया कि यहाँ पाप बढ़ गया है। किस अधर्म के कारण संसार नष्ट हो रहा है। हे पति, तुम्हारे कारण ही वीर लोरिक पैदा हुआ है, अवतरित हुआ है।

ब्रह्मा, विष्णु सभी विकल हो गये थे। तुम हाथी को फुलहरि में लौटा ले चलो। भीमला की पत्नी ने रो-रोकर यह बात कही। भीमला डाँटकर कहने लगा—वेश्या, मैं शिव बाबा को पूजता हूँ, तुम्हारा कुल परिवार वेश्याओं का है, तुम भागने की बात कहती हो तो मेरा शरीर जल जाता है। वह कहने लगा—कहारों, डोली उठाओ, मोती सागड़ के घाट ले चलो, बाहर-बाहर पहले वीर लोरिक को मार डालूँगा तब घर चलकर पत्नी की डोली उतरवाऊँगा। उसकी पत्नी बिलख-बिलख कर रोने लगी, विपत्ति की आशंका से विलाप करने लगी। गायों ने उसके विलाप से घास

चरना छोड़ दिया, बछड़ों ने दूध पीना बंद कर दिया। उसकी डोली फुलहरि से उठ गयी। भीमली मकुनी हाथी पर चला। हाथी को जब उसने अंकुश लगाया तो जंगल में हाथी गरज उठा। मोती सगड़ पर जब आवाज पहुँची तो अजयी थर-थर कांपने लगा, उसको बुखार चढ़ गया।

पृष्ठ 344-345-346

अजयी को कँपकँपी शुरू हो गयी, उसका सिर गर्म हो गया, दर्द करने लगा। लोरिक ने उसके शरीर पर ओढ़ना डलवा दिया। एक ओर पट्टा बांठा कराहने लगा, दूसरी ओर अजइया। देवसिया और राउत का बेटा सीवधरा भी कराहने लगे। सागड़ पर कान देना कठिन हो गया। लोरिक सबको चुप कराने लगा। भीमला का हाथी चला। वह पीठ पर मुंगदर टांगे हुए था। [गायक कहता है कि मेरा गाना खराद पर चढ़ गया है, जरा बुटवल का तम्बाकू चढ़ जाय, जहानावादी चिलम हो, मेरा गला बैठ गया है।] भीमला का हाथी, मोती सागड़ पर पहुँचा, वीर बांका लड़ाका था, जुझारू था। अब वहाँ कोलाहल मच गया। धरमी की वहाँ गद्दी ऊँची लगी हुई थी। उनका रोब देखकर भीमली विचार करने लगा। जितना सुहवल में हमारा धन है उतना तो इस तम्बू में लगा है। उसके हाथी का घंटा बज उठा। सारे वीर वहाँ एकत्र हो गये।

माँ भवानी वहाँ जग रही थीं। लोरिक वहाँ भुजा फुलाकर बैठा हुआ था, उसकी आँख और मुँह ढला हुआ था। उसके दूध का दांत शोभा दे रहा था। भीमली ने उसको देखा तो कहने लगा गउरा का पानी धन्य है, जहाँ मर्दों की खान है, जहाँ वीरों की रचना होती है। यह वीर तो लोहा के उपयुक्त नहीं है। इसकी आँखों में सुन्दर बरौनियाँ हैं, मुख से गुलाब का फूल झर रहा है। भीमली उसको देखकर हाथी पर ही मुरझा गया। उसने लोरिक का रोब देखा, फिर वर सांवर का। कहने लगा—धन्य हो भगवान कि तुमने ऐसी जोड़ी रच दी! भीमली ने हाथी को आगे बढ़ाया, सारे तम्बू में घूम गया तो सभी मर्द उसको एक समान प्रतीत हुए। सभी तरुण, बिना मूँछ वाले वीर थे। भीमली छाती पीटने लगा। क्या गढ़ान है, क्या रचना है वीरों की! लगता है एक ही पाख में, एक ही शरीर से सब उत्पन्न हुए हैं। इसमें कोई छोटा-बड़ा नहीं है।

पृष्ठ 346-347

दुर्गा ने सागड़ पर खेल किया। भीमला का हृदय घबराने लगा। गउरा का पानी धन्य है, जैसे सोनार ने बैठकर इन वीरों को सांचे में ढाला है। भीमली ने कहा—लगता है भादों में इनकी माताओं ने शिव को जगाया है, माघ का जाड़ा उन्होंने बचाया है, जेठ का ताप बचाया है। इन वीरों को किस क्षेत्र में किस समय गढ़ा है।

भीमली ने कहा—जब मैं दुनियाँ मथने चला था तो गउरा मुझसे कैसे छूट गया। हमने गउरा को तो देखा ही नहीं। एक ओर बीर का तम्बू पड़ा है दूसरी ओर बाजा बजाने वाले हैं। हाथी को घुमाकर वह पूछने लगा—तम्बू का कोई मालिक है? बीर बघेला लोरिक बोल पड़ा—मैं ही मालिक हूँ। वह बारहवर्ष का गभरू जवान है। भीमला ने पूछा—किसके बल बूते पर तुमने यहा तम्बू गड़वा दिया है। मैंने संवरू के पुण्य प्रताप से तम्बू गड़वाया है। देखो, उनके सिर पर मौर है। अपने लोहे की शक्ति से मैंने शान गड़वायी है, यह प्रभुता मेरी है।

भीमली हँसकर कहने लगा—तुम्हारे सिर पर मृत्यु आ गयी है। तुम अभी बालक हो, कोमल हो, बाल नर्म हैं। तुम ऐसी बात करते हो कि हृदय को छू जाती है। उपद्रव तो तुमने खूब किया है। जिस माँ का लंगड़ा लूला बच्चा भी युद्ध में मर जाता है उसकी माँ कुँआ झाँकती है, तुम जैसा यदि लाल मारा जायगा तो तुम्हारी माँ की क्या दशा होगी। तुम गड़े हुए तम्बू को उखाड़ कर चले जाओ। लोरिक ने कहा—मुझको 'लड़का मत कहो, मेरे अन्दर बुढ्ढों की सी पुरानी हड्डी है। यदि मैं लोहे में लोहा लगाऊँगा तो तुम्हारी तलवार दो टूक हो जायगी। यदि तुम्हारे अंग से मेरा अंग भिड़ गया तो तुम्हारा पंजर टूट जायगा, तुम्हारी मेखला, तुम्हारे जूते, सब टूक-टूक हो जायेंगे।

पृष्ठ 348-349-350

लोरिक ने भीमली से कहा—तुम रास्ता पकड़कर यहाँ से चले जाओ और अपने पिता को समझा दो। मेरी प्रार्थना सुन लो—तुम सोना मुहवली पाल चले जाओ। बारह सौ मुहर, एकवली हार, बीसा कलदार मुहरें एक सोने की थाली में भरवा लो। ब्राह्मण, नाई तथा बारी को संग में लगा लो। भाई बंधुओं के साथ आकर संवरू को दही-गुड़ का तिलक लगा दो। सती को हल्दी लग जाय तथा सहमति से उसकी शादी हो जाने दो। नहीं तो सती के कारण यहाँ हड्डियों की ढेर लग जायगी। तुम अपनी पत्नी को डोला में सुहवल में पहुँचा दो। नहीं तो अगर यहाँ लड़कर मर जाओगे तो तुम्हारी रानी यहीं रह जायगी।

पंचो, भीमली का हाथी घूमा। वह उत्तर की ओर भीटे पर गया जहाँ बाजा बजाने वालों का डेरा था। पूछा—तुम लोगों ने किसकी शक्ति से यहाँ लकड़ी बजा दी है। ढीठ बाजा बजाने वाले परेशान हो उठे। उन्होंने कहा संवरू के पुण्य प्रताप से यहाँ ध्वजा गड़ गयी है। लोरिक के बल से हम लोगों ने यहाँ डंका पिटवा दिया है। कल प्रातःकाल नगाड़े बज जायेंगे, तुरहियाँ और सिंगे बज उठेंगे। करनाल, नरसिंघ गरज उठेंगे। युद्ध छिड़ जायगा, पंजों में तलवारें चलेंगी यहाँ सती के कारण हड्डियों का अंबार लग जायगा। भीमली सोचने लगा—ये बाजा बजाने वाले

छोटी जाति के लोग हैं, इनमें जरा भी लिहाज नहीं है, अदब नहीं है। भवानी वहाँ से अपने रथ पर इन्द्रपुरी ब्रह्मा के यहाँ चली गयीं। भीमली सुहवलि में आ गया। अपनी रानी को डोली से उतारा। इधर भवानी ने ब्रह्मा से प्रार्थना की—भैया मेरा कार्य आ पड़ा है। भीमला मोती सगड़ के घाट चला गया है, मेरा बेटा सुहवल में है। भीमला रोने लगा—हे ब्रह्मा, तुमने स्वयं पेड़ लगाया और उस पर कुल्हाड़ी उठा ली। यदि मेरे भाग्य को काटना ही था तो भाग्य में अमरत्व क्यों लिखा? ब्रह्मा ने भीमली से कहा – मैंने तुम्हें इसलिए वसुधा में थोड़े भेजा था कि वहाँ अत्याचार करो। तुमने सुहवल में पाप किया, अनर्थ किया। भीमला का लेख उन्होंने फाड़ दिया, नाली में फेंक दिया। उसकी पत्नी रोने लगी। और स्त्रियों ने कहा—यह कहाँ से वेश्या लाये हो। आते ही इसने उत्पात शुरू किया।

पृष्ठ 351-352

इसने घर में आते ही कलह फैलाया। सुहवलि में यह पूड़ियाँ नही चुन रही है। इतना सब कान से सुनकर उसने साहस बटोरा। पूड़ी और खीर खायी। वह रानी बिलख-बिलख कर रोने लगी। सुहवलि का ठीक मर्म कोई नहीं जानता। मुझे सभा में लोग वेश्या कह रहे हैं। पट्ठा भीमली हाथी से उतर करै दरवाजे पर आया। सेवक भेज कर उसने नाऊ और ब्राह्मण को बुलाया। दुर्गा के पास इन्द्रासन वाली पोथी थी। वह मोती सगड़ के घाट उतर आयीं। भीमली इधर अपने बंगले में बैठा हुआ था। हाथी द्वार पर झूम रहा था। भीमली का संदेश पाकर दो चार पण्डित सोना सुहवलि पाल पहुँचे। भीमली वहाँ बैठा हुआ था। उसकी छाती गज भर फुली हुई थी। उसने ब्राह्मणों को सिर नवाया। ब्राह्मण आशीष देने लगे। बाबू तुम लोग लाख वर्ष जीओ। जैसे गंगा-यमुना में जल बढ़ता है वैसे ही तुम्हारी आयु बढ़े।

भीमली ने सबको रेशमी सूत की चारपाई पर बैठाया। स्वयं वह मोढ़े पर बैठ गया, पूछने लगा। मोती सागड़ पर लड़के का कब मुहूर्त है। पोथी खोल कर बताइए कब साइत (शुभ घड़ी) है। इधर दुर्गा ने भी अपनी पोथी निकाली। पंडितों ने इधर भीमली को कहा कि रात जब ढल जाय तब युद्ध प्रारम्भ होना चाहिये। शेरनी (खोइलनि) का बेटा युद्ध मे मारा जायगा, यह लक्षण है कि सुरहन में तुम्हारी जीत होगी। इधर दुर्गा ने कहा—वीर चाहे जितना गरजे तुम उठना मत। लोरिक ने कहा—आप यही शिक्षा दे रही हैं। यदि वीर आकर ललकारे और मैं सोता रहूँ तब तो मेरा जन्म बिगड़ जायगा। मेरा नाम भग्गू पड़ जायगा। मैं कुंभीपाक नरक में जाऊँगा। मैं निश्चित ही लड़ने को तैयार हो जाऊँगा। दुर्गा ने कहा—दिन में लोहा लगेगा तभी तुम जीत सकोगे। रात में तुम्हारी हार हो जायगी। लोरिक

ने कहा —आप ही के धर्म का भरोसा है। ललकार सुनकर मैं पड़ा रहा तो मैं नरक के कुंड में जाऊँगा।

पृष्ठ 353-354

भवानी चाहे जितना समझावें लोरिक मानता नहीं था। अब भीमली इधर दिन भर हाथी को खिलाता रहा। आसन जमा कर वह अपने किले में बैठ गया। सूर्य का डंक डूब गया। दीपक जल उठे। भोजन घर-घर बनने लगा। खाकर सभी लोग सो रहे थे, पर भीमली बंगले में कराह रहा था। उठ-उठ कर वह देख रहा था। चार घड़ी रात चली गयी, पांचवी घड़ी आयी तब बीर उठकर अपने हाथी को कसने लगा। अस्सी मन का मुंगदर उसने अपनी गर्दन में लटका लिया, फिर अपना लंगोटा कसने लगा, उसमें मल्ल वर्ण गाँठ थी। अजगर की सी उसकी पेटी थी जिसमें गोले हिल नहीं सकते थे। भैंसासुर का पंजा उसने छाती में बाँध लिया। उसने गुलाबी पगड़ी पहन ली, जिसमें जिरही थी, सिरस्त्राण था। पैर में अलीगंज का जूता था। उसका हाथी गरज कर उठा। भीमली उस पर सवार हो गया। रात में पाँच-छै घड़ियां बीत चली थीं।

अब बीर की स्त्रियों का हाल सुनिये। भीमली की चार शादियाँ थीं। फुल-कुंवरी पांचवीं थी। वह रोने लगी। मुख में चार स्त्रियाँ प्रौढ़ थीं। उन्होंने अपने केश में मोती और हीरा जड़ रखा था। सोने की अरसी बनी हुई थी। उनकी सोने की झबिया थी जो सिर की ओर लटक रही थी। उन सबों ने आभूषण से अपने को अलंकृत कर लिया था। साड़ी पहन कर तथा दीपक जलाकर पांव पूजना होगा। पति लड़ने जायेंगे। इधर कोने में सिर लगाकर फुलकुंवरी रो रही थी। भीमली ने आज्ञा दी। चार स्त्रियाँ अलंकृत होकर तिल, अक्षत, गुड़, गाय का दही लेकर आरती करने चली। सबसे पहले ज्येष्ठा फिर अन्य। बीर हाथी पर बैठा हुआ था। उसने हाथी को अंकुश लगाया। हाथी धरती पर सूंड़ पटकने लगा।

पृष्ठ 355

अब स्त्रियां तिल, अक्षत, चावल, दही, गुड़ आदि लेकर भीमला के ललाट पर तिलक करने लगीं। उन्होने हाथी की पूजा की, फिर मुंगदर की पूजा की, धनुष की पूजा की। स्त्रियों के हृदय का उत्साह दुगुना हो गया था। पंचो, अब जिस दिन की बात है उस दिन के समर का हाल सुनिये। गायक कहता है कि मृत्यु लोक में मेरा दिन बिगड़ गया। मेरा गला फंस गया है। मेरी सब गीति बेकार हो रही है। काई-सी लग गयी है। मैं अपना गाना ठेलकर आगे ले जा रहा हूँ। बीर जैसे सज गया है उसका हाल सुनिये। जब स्त्रियों ने पूजन कर लिया और वहाँ से हट गयीं

तो भीमली ने कहा —**इसके बाद मूल पाठ में निम्नलिखित पंक्तियां थीं जो मुद्रित होने से रह गयीं थीं। वे पंक्तियां इस प्रकार हैं : —**

गद्य-पद्य—तहनी का आइल बाड़ूस, आ कालिह गवन करवली, उकाहें ना आइलि ह। तीनू हंसे लगलीं स, कह लिस जे आहा-हा। अइसन तू बियाह बिना छछाइल रहल ह दुनिया का अन्दर जे अइसन तोह के कनिया पागलि मिललि ह आ करकसि इनारि ले के आ नू लिआ के बइठा दीहल ऽ हमनी के सवति। जे लिआव तबले आ पूड़ी दुंगल भर परी। आ जब से बा तबे से फेंकरतिया सियारिन नियर। का जाने पागलि ह, कि सनकी ह, कि भूत मलेछ ओकर पर बाटे। हाइ पती अइसन सर हंग तूं नारि ले अइल, जे चलि आइल बा सोना सुहवली पालि।

बोले बीर बघेला, देबे लागल जबाब। तिरिया मोरि लरिकवन्हा जवन पातरि मुँह के नारि हमारि। जाके समुझादस, तोहनी के देखले बाड़ू स। हमरी बल के उ इस्तीरी जानति नइखे रोइरहलि बिया। धाइ के जब पूजि देइ पग तब हम सिधार देतानी बाको वियही के तरे आवे, ओके ले आवास। अब भइया मार स नारि लात, धमर धमर ढुकि गइली स बखरी में बाटे। आ जाहाँ बइठ रहलि बेटी फुलेहरि जेकर फुल कुंवरिये नाँव। नीचे मउरि रहलि नियखले। आपन दुख देखतिये करुना उघारि उघारि। ओहि बीच में रानी लो जुट ताटे। त ए पंचे, भारत जो बाटे दो हथा से। कहस ए बुजरी आहा हा आरे करुआसन तोर मुँह देखे जोग ना बाइ। आजु जबसे हमार पतीलिया अइलन आ तबसे तू रोइ रहलि बाड़िस ए बुजरी। आ आजु हमार पती लोहा पर चढ़ल बाड़न आ रोइ राइ के सगुन बिगाड़ ताड़ू। आज रोइ के सगुन बिगाड़ ताड़ू आ बुनकार रहल बाड़ू तब ले।

भीमली ने कहा जिस स्त्री को गौना करा कर मैं कल लाया वह क्यों नहीं आयी। तीनों स्त्रियां हंसने लगीं, आहा, हा, तुम विवाह के लिए इस संसार में ऐसे उत्सुक थे। तुमको ऐसी पागल कन्या मिली। तुमने घर में कर्कशा नारि ले आकर बैठा दिया, यह हम लोगों की सौत है। वह सियारिन की तरह रो चिल्ला रही है, वह पागल है, विक्षिप्त है या उसको भूत लगा है, या म्लेक्ष ने पकड़ लिया है। हाय पति, तुम ऐसी ढीठ पत्नी सुहवलि में ले आए हो। बीर बघेला भीमली ने जबाब दिया—हे स्त्रियों, हे पतली मुख वाली, शिशु सदृश कोमल नारियों, जाकर उसको समझा दो। मेरे बल को यह स्त्री अभी जानती नहीं इसलिए रो रही है। तुम लोग जानती हो। वह जिस प्रकार आवे तुम लोग ले आओ। जब वह मेरा पाँव पूज ले तब मैं प्रस्थान करूं।

अब भीमली पत्नियाँ धड़धड़ाती हुई पैर मारती हुई बखरे में प्रवेश कर गयीं जहाँ फुलेहरि की बेटी, फुलकुंवरि बैठी हुई है, वह सिर नीचे लटकाये हुए है। वह

अपने दुख को करुण दृष्टि से देख रही है, वह विषाद मग्न है। रानियाँ उसके पास पहुँच गयीं। उन्होंने उसे दो हाथ मारा। बुजरो, तुम्हारा अशुभ कारुणिक मुख देखने योग्य नहीं है। जब से हमारे पति तुम्हें ले आये तब से तुम रो रही हो। रो-रोकर सगुन बिगाड़ रही हो। भरभर आँसू टपका रही हो। फुलकुंवरि सोचने लगी जो होना है वह तो होगा ही। विधि ब्रह्मा की लेखनी मिटने योग्य नहीं है। यदि मैं पांव नहीं पूजने जाऊँगी तो कलंक लगेगा। रानी रोकर उठी। वह अपने आभरण उतारने लगी। उसके कंधे पर दक्खिनी वस्त्र था, उसमें पक्षी बने हुए थे। उसने हवादार मखमल की चोली पहन रखी थी। उसको उसने फेंक दिया। उसने साड़ी भी उतार दी।

पृष्ठ 356-357

पंचों, अब रानी का हाल सुनिये। दक्खिनही छींट के कपड़े को छोड़कर उसने अपना वस्त्र बदल लिया। उसने एकदम पुराना वस्त्र पहन लिया। फटा हुआ झूला पहन लिया। अपना रूप बिगाड़कर वह चली। भीमली की अन्य रानियाँ उसको पागल कह रही थीं। इसने ऐसा रूप बनाया है। भगवान ही बेड़ा पार लगायेगा। रानियाँ हँस रही थीं। फुलकुँवरि ने आरती के लिए हाथ उठाया। वह झुकी और भाँवरे लेने लगी। उसके शरीर पर फटा चिथड़ा लटक रहा था। तिल और चावल उसने हाथी के मुँह पर रख दिया और पूजा करने लगी। जब वह वहाँ से जाने के लिए कहने लगी तो भीमली ने हँसते हुए कहा—हाय विवाहिता, क्या इसी प्रकार पूजा की जाती है। उसने कहा—हे स्वामी, हे मूर्तिनारायण, हे मेरे सिंदूर के मालिक, इस सुहवल में तुम्हारा अस्थिपंजर ही शेष है। मैं तो विधवा हो चुकी हूँ। मैंने पूड़ी चुनचुन कर खायी। तभी मैं विधवा हो गयी थी। रानी रोकर, विलाप कर कह रही थी। मैं बार-बार मना कर रही थी। सती शत्रु पैदा हुई है। न वह उत्पन्न हुई होती और न यह मेरा हाल होता। वह रो रही थी।

उसकी अन्य चार रानियाँ स्तब्ध थीं। फुलकुंवरि ने कहा—ऐ पति, मैं किसको दोष दूँ। मैंने तुमसे बार-बार कहा—फुलहेरि के बाजार चलो। मैं तुम्हारी ऊँची गद्दी लगाऊँगी, धर्म और न्याय की वहाँ रक्षा करना। सुहवलि में लौटने योग्य नहीं है, वहाँ विषाद की छाया मंडरा रही है। तब तुमने मुझे वेश्या बना दिया। मेरे परिवार को वेश्याओं का परिवार कह दिया। गाली देकर तुमने मेरी डोली जबर्दस्ती उठवा दी। सैंया विधि ब्रह्मा की लेखनी मिटती नहीं है। जिस दिन उस वीर का इन्द्रासन में जन्म हुआ हमारा शरीर वहाँ था। वहाँ मैंने शूरमा का बल देखा।

पृष्ठ 357-358-359-360

वह आइन-डाइन नहीं पूजता, भूत-वैताल भी नहीं पूजता। वह ब्रह्मा की बहिन दुर्गा की पूजा करता है। तुम्हारे और हमारे जैसे कितनों को वह नष्ट कर देगा। मैंने तुम्हें उसी समय मना किया था। मैं शिक्षा दे रही हूँ कि अब यहाँ रहने योग्य नहीं है। जैसे तुम लड़ने के लिए कह रहे हो उससे अधिक मैं ललकार बांध रही हूँ। मोती सगड़ के घाट पर ललकार बांध दो। मेरे पति, युद्ध गहरा जायगा। लोहा अब उठ जायगा, तलवारें चल जायेंगी। तुम यह समझ लो वहाँ आदि भवानी बैठी हुई हैं। तुम अपनी शान में भूले हुए हो। तुम युद्ध में जूझ जाओगे तो मैं तुझे लेकर सती हो जाऊँगी। मैं भी युद्ध में तुम्हारे साथ चल रही हूँ। मैं विधवा होकर अपनी सुन्दरता, झूलनी का आभूषण नहीं दिखाऊँगी। अब तुम पीछे पैर मत हटाओ नहीं तो कुंभीपाक नरक में तुम जाओगे। प्रथम युद्ध में तुम अगर लड़ोगे तो तुम्हारा कल्याण होगा। मृत्युलोक में हमारा जन्म बनेगा, हम संसार (सागर) को पार कर जायेंगे। खबरदार, अब तुम सिर मत झुकाओ, तुम्हारा सिर पीछे नहीं गिरना चाहिए। पत्नी ने कहा—हाथी को हाँको। जिस दिन समर मे तुम गिरोगे मैं भी वहाँ पहुँच कर सती हूँगी। फुलकुंवरी ने एक-एक बात बता दी, रग-रग का हाल कह दिया।

लोरिक आइन-डाइन, भूत-वैताल आदि की पूजा नहीं करता है। मेरे कर्म में आग लग गयी है, भाग्य फूट गया है। सती ननद नहीं है, मेरी शत्रु है। वीर हाथी पर बैठ गया, अपना अस्सी मन का मुँगदर उसने उठा लिया। आधी रात ढल गयी तब भीमला लोरिक के तम्बू में पहुँचा, आवाज लगायी। दुर्गा ने लोरिक को गाढ़ी नींद में सुला दिया था। भीमली वहाँ गरज उठा। मेरे लड़ने वाले वीरों उठो। अपनी लालसा पूरी करो। उसके वीर अस्त्रशस्त्र से सुसज्जित हो गये। उसके सभी वीर कमर कस तैयार हो गये। भीमली लोरिक को गाली देने लगा। लोरिक अपने तम्बू में उछल पड़ा। भीमलो हमारा और तुम्हारा लड़ने का संयोग आ गया है। तुम लंगोटा कस लो।

पृष्ठ 361-362

लोरिक ने अपना उलटा कच्छ पहन लिया, मल्ल वर्ण की गाँठ डाल ली। अजगर की सो पेटी पहन ली जिसमें गोला जुंबिश नहीं खाता था। भैंसासुर का पंजा उसने छाती में लगा लिया। उस पर गोली की बात कौन कहे बर्छी व्यर्थ जाती थी। वह गुलाबी पगड़ी पहने हुए था जिसमें जिरही (कवच) लगी हुई थी, अलीगंज का जूता उसके पैर में था, फिर साथ में मोजा था। बायें नेपाली ढाल थी, दाहिने बिजली की तलवार थी, बगल में छप्पन छुरी थी, कटि में तलवार झूल रही थी। वह बारह वर्ष का गभरू और सोलह साल के पहलवान जैसा था। अभी उसकी पिंडुलियाँ पतली थीं, कटि उन्नत थी। वीर बघेला उठा और तम्बू के बाहर आया।

सुहवल की छतीस वर्ण की कन्याएँ ध्यान से देख रही थीं। जब उन्होंने प्रिय लोरिक को देखा तो छाती पीटने लगीं। उन्होंने आँचल खोलकर सूर्य भगवान से विनती की। उसका बाल-रूप देखकर सूर्य भगवान को नमस्कार किया कि वे लोरिक की रक्षा करें। उन्होंने कहा—क्या बाघ के सामने यह लाल लड़ने योग्य है ? उन्होंने सूर्य भगवान से कहा—हे आदित्य नारायण, आप ब्राह्मण पुत्र हैं। आप बारह कलाओं के साथ उदित हुए हैं, आप सोलह कलाओं के साथ बिश्राम करते है। आपने हमारा दुख नहीं समझा। हम लोग आपकी मनौती मानते हैं। यह शेरनी का बेटा बड़ा नादान है। इसकी भेंट भीमली से हो गयी है। यदि भीमली मारा जायगा तो हम दूध की धार देंगे। उसी समय भीमली कहने लगा—भाई तुम्हारा काल आ गया है। मुझे तुम्हारा मोह नहीं है, तुम्हारी माँ का मोह है। वह दुखी होकर रोएगी तो मुझे पाप लगेगा। दोनों वीर नीचे उतरे। संवरू नयन खोलकर देख रहे थे। आज मुझे जोड़ में लड़ना चाहिए।

पृष्ठ 363-364-365

आज मुझको लोरिक ने दूलहा बनाकर, मुकुट पहनाकर यहाँ बैठा दिया है और स्वयं लड़ने को तैयार हो गया है। इधर बीर लोरिक और भीमली के बीच बात-चीत हो रही है, कहासुनी हो रही है। भीमली कह रहा है—लोरिक तुम तम्बू उखाड़ लो और वापस चले जाओ। तुम उलटा बोल रहे हो, पर मुझे तुम्हारी माँ का मोह है, तुम्हारा नहीं। जब तुम सुरहनि में युद्ध कर मर जाओगे तो तुम्हारी माँ तड़प-तड़प कर रोयेगी। लोरिक ने कहा—मुझे भी तुम्हारा मोह नहीं है। मुझे सास का मोह है। जब तुम्हें मार डालूँगा और सती को बैठाकर ले जाऊँगा तो तुम्हारी माता कहेगी कि मेरे बेटों को मारकर तुम मेरी बेटी को लिये जा रहे हो। इस धृष्टतापूर्ण बात से भीमला की छाती फट गयी, वह क्रोध में जल उठा। लोरिक तुम हमेशा उद्दंड होकर, ढीठ होकर बात करते हो, तुम लड़ने के लिए तैयार हो जाओ। भीमली का हाथी खड़ा हो गया। लड़ने के लिए दोनों वीर तैयार हो गये। भीमला ने मुंगदर उठा लिया, दोनों मर्दों के भाले उठ गये। भीमली ने जब मुंगदर उठाया तो भवानी सोच में पड़ गयी। यदि मैं शक्ति अजमाने का मौका नहीं देती तो बारात करने आये हुए बीर बहकेंगे। इधर दोनों वीर पैंतरा लगा रहे है। लोरिक ने कहा—मैं पहले लोहा नही उठाऊँगा। मैं कठईत के कुल का पुत्र हूँ, पहले अस्त्र नहीं उठाता। वह हँस-हँसकर बात कर रहा था। सुहवलि की कन्याएँ मुग्ध थीं।

बामरि की बेटी सती अट्टालिका पर बैठे झंख रही थी। भीमली ने कहा मुंगदर की मार से मैं तुम्हारी हड्डी धुन दूँगा। हड्डियाँ धरती में धँस जायेंगी।

भोमली भाला गाड़ कर बहक रहा था। लोरिक के सिर पर भवानी थीं। भीमली मुंगदर का प्रहार कर रहा था। लोरिक की छाती पर मुंगदर लग गया। वीर धरती में धंस गया। देवी दुर्गा उसे अन्दर लेकर चली गयीं। भीमली जोर से गरजने लगा। संवरू इधर क्रोध में जल उठे। अजयी कह रहा था भीमली अद्वितीय वीर है। संवरू ने कहा—अजयी, अभी मैं जीवित ही हूँ और तुमने मेरे तम्बू के वीरों को नपुंसक कह दिया। युद्ध देखकर उनका क्रोध संभल नहीं रहा था। उनकी एड़ी में आग लग गयी थी।

पृष्ठ 366-367-368

संवरू के क्रोध की लहर उनकी शिखा तक पहुँच गयी। उनकी आँखें लाल हो गयीं, रक्त के समान सुर्ख हो गयीं। उन्होंने वीरों की साज-सज्जा पहन ली। [मूल पाठ में सूत्र है जो कई बार आ चुका है] उन्होंने अपना तीर उठाया। क्रोध में उन्हें पाप और पुण्य नहीं दिखाई पड़ता था। ब्रह्मा का दिया हुआ विश्वम्भर बाण उन्होंने उठा लिया। भाई तो मेरा जूझ ही गया। अब मैं अपने बाण को छोड़ूँगा। चौदह कोस तक दावाग्नि फैल जायगी। आदमी ही नहीं गायें भी आग से विकल हो जायेंगी। ज्योंही सांवर बाण छोड़ने के लिए कूदे, लोरिक रोने लगा। कहने लगा—हे भवानी, आपने मुझे यहाँ धरती में छिपा दिया है। भाई संवरू बाण छोड़ देंगे तो यहाँ संघर्ष छिड़ जायगा। कोयला बो दिया जायगा। हमारी नौका डूब जायगी। मैं कुंभीपाक नरक में चला जाऊँगा। संवरू दादा वर बनकर आये हैं। हम लोग बारात करने आये हैं। सिर पकड़कर लोरिक रोने लगा। तब दुर्गा गयीं। उन्होंने संवरू की बाहें पकड़ लीं और उसे कुर्सी पर बैठा दिया।

पंचों, भीमली का युद्ध कठिन है। गायक कह रहा है मेरा गला साथ छोड़ रहा है, हमारी गीति बिगड़ रही है। दुर्गा ने संवरू को बैठा दिया। लोरिक धरती में नीचे चला गया था। वह सुरहन में प्रकट हो गया। वह लड़ने के लिए तैयार हो गया। भीमली यह देखकर कहने लगा—सचमुच लगता है मेरा अमरत्व समाप्त हो चुका है। पत्नी मुझे बार-बार मना कर रही थी। मगर मैं पैर पीछे नहीं हटाऊँगा। यदि मैं पीछे पैर हटाऊँगा तो कुम्भीपाक नरक में जाऊँगा। लोरिक ने कहा—अवसर आ गया है। जैसे गोंड के भाड़ में दाने एकत्र हो जाते हैं, जैसे पानी भरनेवालियों पर रस्सी की मार पड़ने लगे वैसे तुम्हारा अवसर आ गया है, तुम लड़ो। दोनों ओर मैदान में उतर कर चिग्घाड़ने लगे जैसे भैंसे चिग्घाड़ रहे हों। वे दो बीघे में चक्कर लगाने लगे। धरती में धूल उठ गयी। धरती में अंधेरी रात सी हो गयी। लोरिक ब्यालिस हाथ कूद गया। हाथी की गर्दन पर चोट की, वह दो खंड हो गया।

पृष्ठ 369-370

पंचों, युद्ध के पैंतरे होने लगे। भवानी ने जाकर वहाँ हाथी का मस्तक काट दिया। वह गिर पड़ा। भवानी वहाँ से हट गयीं और जब वहाँ प्रकाश हुआ, धूलि हटी तो लोरिक ने कहा कि ऐ भीमली, तुम्हारा हाथी गिर पड़ा है। भीमली ने कहा—तुमने एक टट्टू मार दिया तो कोई शान की बात नहीं है। मैं सिर फिरा कर, मुँह मोड़ कर भागनेवाला नहीं हूँ। भीमली फिर गरजा। भवानी वहाँ उपस्थित हो गयी थीं। उन्होंने लोरिक से कहा—भीमली का सिर काट लो नहीं तो तुम्हारी जान नहीं बचेगी। भीमली को वरदान मिला है, भइया ब्रह्मा ने उसको वरदान दिया है। उन्होंने लोरिक को सावधान कर दिया। युद्ध का यह बीज नष्ट नहीं होगा। जरा भी असावधान मत होना। लोरिक ने कहा—माता, आपके धर्म का ही बल है। मैं आपकी शरण में हूँ, जितना आप कहेंगी उतना ही मैं करूँगा। लोरिक ने बाण उठाया। वह टूटते हूए पहाड़ की भाँति आवाज करते हुए निकल गया। लगता है भादों में बिजली कौंध गयी हो। उसने अपनी तेग चमकायी। ऐसी चमक उठी कि सबकी आखें चौंधिया गयीं। तेग पानी की तरह चल रही थी। उसने भीमली की गर्दन काट ली। वह चिल्ला उठा।

भवानी लोरिक को लेकर सुरहन की ओर दौड़ी पर वह पत्थर की भाँति हो गयीं। भीमली को ठोकर लगी, वह गिर पड़ा। उसका सिर धरती पर लुंठित हो गया। लोरिक ने जैसे झिंगुरी का सिर फेंका था वैसे ही भीमली का सिर दुर्गा ने सुहवलि में फेंक दिया। वह बामरि के द्वार पर जा गिरा। बामरि की पत्नी रो उठी, छाती पीटने लगीं। उनका हृदय-कमल बिखर गया। भीमली की माँ ने कहा—हाय लाल, हाय, लाल आज अँधेरा हो गया है। हाय सती, सुरहनि में मेरा बेटा जूझ गया, मर गया। (भीमली की पत्नी) फुलकुंवरी कहने लगी। क्यों रो रही हो। उस समय तुम क्यों नही रोयीं जब छत्तीस हाथ का भाला भीमली ने गड़वा दिया था। छत्तीस जाति की कन्याओं को तुमने अविवाहित रहने दिया। फुलकुंवरि सिर पर पर्दा डालकर सुहवलि में अब सती होने चली। उसके हाथ में भीमली का सिर है। उसकी लाश नहीं मिली तो वह सागड़ पर ऊपर चढ़ गयी।

पृष्ठ 371-372-373

आज मैं सुहवलि को क्या दोष दूँ ? सब दोष मेरे भाग्य के लेख का है। मैं पति का सिर पा गयी हूँ। उनकी लाश कहाँ पड़ी है, यह कह-कह कर फुल-कुँवरी रानी विलाप कर रही है। मुझे धड़ नहीं मिल रहा है। संवरू से उसने कहा—मेरे पति का धड़ मुझे दिखा दो। उन्होंने लोरिक से कहा—भाई, यह पतिव्रता है। मेरी शादी के लिए तुमने इसकी भक्ति बिगाड़ दी है। संवरू को

आँखों से आँसू गिरने लगे। इधर रानी भारी विलाप कर रही है। मेरे प्रिय की लाश दे दो। वीर लोरिक अपने साथ फुलकुंवरि को वन में ले गया और लाश दिखा दी। उसने कहा—हे सुन्दर, तुम्हारा दोष नहीं है, यह हमारे भाग्य का लेख है। यहाँ तुम थोड़ी लकड़ी एकत्र करवा दो और हमें चिता पर चढ़ा दो। मैं यहाँ अकेली हूँ; मेरी देह अकेली है। जिस वीर ने उसकी जान ली वह आज लकड़ी बटोर रहा है। चंदन की लकड़ी काट-काट कर सजायी गयी। एक ओर लोरिक ने भीमली को पकड़ा, दूसरी ओर भीमली की पत्नी ने।

लोरिक की आँखों से नीर बह चला। कहा- जो-जो तुम कहोगी मैं करूंगा। यहाँ हमारा क्या दोष है? फुलकुंवरि ने कहा—तुम्हारा कोई दोष नही है। जब इनमें बल था तो दुनियाँ को इन्होंने रौद डाला। छत्तीस वर्ण की कन्याओं को उन्होंने विवाह करने से रोक दिया। यदि यह नहीं किया होता तो मुझको इतनी विपत्ति नहीं होती। फुलकुवरि रानी चिता पर चढ गयी। आग उसके अंगूठा में जल उठी। फिर लहर की ज्वाला, बवंडर उठ गया। वीर भीमली जलने लगा। वन में भयंकर धुंवा उठा। रानी फुलकुंवरि भी जलकर राख हो गयी। वह वन में सती हो गयी। लोरिक मागड़ पर आ गया। बमरी अब विक्षिप्त हो उठा। उसने कहा—बेटा कुसला, यदि तुम्हें दुख है तो लड़ जाओ। वह स्त्रैण था। वह स्त्रैण धोती पहनता था। उसने बामरि को अंगुलि दिखायी। तुमने बेटी को बालकुंवारि रखा है। यदि पहले ही तुमने विवाह कर दिया होता तो यह विपत्ति नहीं आती। बामरि क्रुद्ध हुआ। उसके शरीर में क्रोध का अंगार जल उठा। कुसला को कहा—दूर हटो। कुसला वहाँ से चला गया।

पृष्ठ 373-374-375

पंचों, जिस दिन की बात है, उसके आगे के समर का हाल सुनिये। बायें मन्त्री बैठा हुआ है, दाहिने महतो दीवान। तुम लोग बताओ मैं किसका ससुर बनूं, सिराज किसका सार बने। मैं बबुरी बन पहाड़ पर पाती भेज दूँ। मुहवलि के मर्दों का अब हाल सुनिये। पत्र में बमरी ने लिखा कि - ऐ सिराज, झिगुरी जूझ गया है। मोती सगड़ पर बघेला, पट्ठा भीमली भी युद्ध में मारा जा चुका है। अहीर लोरिक हमारी पीठ पर अंगार दल रहा है, कुवो को उसने छेक लिया है। बेटा, हम लोगों का जीना धिक्कार हो गया है। तुम्हारी जिंदगी तो कुत्ते और सियार की सी हो गयी है। तुम बबुरो में भोजन करो पर हाथ मुँह मोती सगड़ के घाट पर धोओ।

धावन पत्र लेकर बबुरी वन गया और सीराज के हाथ में दे दिया। सीराज ने कहा—इसी तरह कुशलक्षेम क्यों नहीं कह देते। धावन ने कहा—मैं बातें भूल सकता हूँ। इस पत्र में सारा कुशलक्षेम लिखा है। सीराज ने पत्र फाड़ा, एक-एक अक्षर

अलग-अलग करके वह पढ़ने लगा। उसने पत्र में देखा कि दोनों भाई युद्ध में मारे जा चुके हैं तो किले में उसको दांत लग गया। हाय, मेरे बलशाली भाई जूझ गये। मेरा जीना धिक्कार है। सिराजवा रोकर उठा। वह लात मारने वाली गायों की चरवाही करता था। अपना कच्छ पहनकर, पेटी कसकर, (यहाँ सूत्र है) वह लड़ने की तैयारी कर वहाँ से चल पड़ा। हमारे भाइयों ने यहाँ ज्यादती की, मेरी बात नहीं मानी। काका जो चाहते थे वह हो गया। हमने रास्ते में झिगुरी से संवरू की गरिमा बतायी थी। हमने कहा था कि चलकर काका को समझाएँ। सब लोग मिल-जुलकर समझाएँ। चलकर वरक्षा कर दें। साज-बाज के साथ बारात आयेगी, मोती सगड़ में राय से शादी होगी। सीराज ने कहा—मेरा सोचा हुआ नहीं हुआ। अब तो हमको कमजोर औरत (हगनी) की तरह जिसको पेट झरने की बीमारी हो, मरना पड़ेगा। दीपक की बत्ती पर जैसे पतंगे मरते हैं वैसे ही हम मरेंगे।

पृष्ठ 375-376-377

दो वीर जूझ गये। हम लोगों पर भी मौत मँडरा रही है। हमारा जीना धिक्कार है। सिराजवा अपना प्राण हथेली पर लेकर चला। उसके हाथ में भाला था। वह मुरहन में पहुँच गया। वह सुहवल में काका बामरि से भेंट करने नहीं गया। माँ तो मेरी मर चुकी है, बाप तो मूढ़ हैं ही। जाऊँगा तो वह अपमान करेंगे। इससे अच्छा है कि मैं सुरहन में लौट चलूँ। बामरि काका के हृदय की आग बुझ जाय। मती को वह बाल कुंवारि रखे रहें। यह कहकर सिराजवा मोती सगड़ के घाट चला गया। वह गरजने लगा। कोई लड़ाकू हो तो सामने आ जाय। सिराजवा की गरजना सुनकर लोरिक उठा। अपना अस्त्र-शस्त्र, वेश-भूषा, साज-सज्जा, धारण करने लगा। [मूलपाठ में 'भइया कछे रहल चढ़वले · · · मोजा ले ला चढ़ाइ' सूत्र है।] सिराज कहने लगे—अपना बाण छोड़ो। कठईत के पुत्र ने कहा—मेरे कुल की रीति है कि शत्रु पर हम पहले बाण नहीं छोड़ते। अगर मेरा शरीर बच जायगा तो हम बाद में बाण छोड़ेंगे। पयंतरा होने लगा। सिराजवा के कंधे पर तेग थी।

बालक लोरिक के साथ उसका खेल होने लगा। सिराजवा लड़ने में बाँका और जुझारू था। वह बायी ओर दाँव मारता था तो लोरिक दाहिने भाग जाता था। यदि वह दाहिने दाँव मारता तो लोरिक बायें हो जाता। तलवार का खेल वहाँ हो रहा था। सिराज ने चार बार तेग चलायी। तब लोरिक ने कहा—अब बस करो। मेरा अवसर आ गया है। मेरी चोट अब सहो। सिराज ने कहा—अगर शरीर में प्राण रहा तो तुम्हारी भुजा पकड़कर तुम्हें गेरुवा पहाड़ पर फेंक दूँगा। तुम चूर-चूर होकर उड़ जाओगे। व्रती खोइलनि का बेटा हँस पड़ा। उसने बाण छोड़ा। उसकी लचकती हुई कमान और बाण की आवाज़, तड़तड़ाहट दुनियाँ में फैल गयी, कि वहाँ कान

नहीं दिया जा रहा था। सिराज की छाती धड़कने लगी। बीर लोरिक ने अपनी तेग उठायी, उसकी रोशनी सारी दुनियाँ मे छा गयी। उसने सिराज की गर्दन पर प्रहार किया। सिराज धराशायी हो गया जूझ गया, उसका सिर बामरि के द्वार पहुँच गया। अट्टालिका पर बामरि अपना सिर पटकने लगा।

पृष्ठ 378-379-380

सतिया सीढ़ी पर अपनी छाती दबा रही है। मैने सुहवलि मे अवतार लिया। हमने बहुत उपाय किया पर कुछ भी काम नही आया। आज भाइयो से मेरा नाता टूट गया, अभी तीन शेष हैं। द्वार पर काका मेरे बावले है। मेरे भाग्य मे ब्रह्मा ने शादी अंकित की है। ब्रह्मा ने बाद में मेरा विवाह टाँक दिया था। सुहवल का रास्ता मुझे मालूम नही है, वह कुहुँक-कुहुँक कर रो रही है। [गायक कहता है आज हमारा गाना यहाँ रुक जायगा, कल फिर शुरू होगा।] पंचो, अब जिस दिन की बात है उसके आगे का हाल सुनिये। इसके बाद ['आज़ हिन् करे गंगा' ‥ राखिद पानी हमार' सूत्र है।]

गायक कहता है कि हे माता दुर्गा, मै इस रण मे मस्तक खोलकर बैठ गया हूँ। [पूरे पृष्ठ 379 मे सूत्रों की आवृत्तियाँ हैं।] हे देवी, आप मर्दों की कीर्ति कह दीजिए। माँ जगदम्बा जग गयी, जीभ पर सरस्वती बैठ गयी। मर्दों का गाना सुनिए। बमरो ने मन्त्री से कहा मेरी बात सुनिये। ऐ पंचो, सुहवल रोने लगा। बामरि का कलेजा पत्थर है, सब कहने लगे। बामरि ने मन्त्री को कहा—बबुरी वन पहाड़ पर पत्र लिखकर, मेले ठेले से दसवंता भगवंता को बुलवा लीजिए। अपने जीवन में मैं किसका ससुर कहलाऊँ, भगवंता-दसवंता किसके सार कहे जाएँगे। पंचो, बामरि का हृदय कठिन है। धावन पत्र लेकर गढ सोहवलि से मेलन-ठेलन के बाग पहुँचा। उसने दसवंत को अभिवादन किया। दसवंत ने आशीर्वाद दिया। लाख साल जीयो। [आशीर्वाद सूत्र मे है। कई बार आ चुका है] पूछा सुहवलि की स्थिति क्या है? काका कैसे है, बहन सती कैसे है? मैं कहने लगूँगा तो भूल जाऊँगा। सारा कुशल मंगल पत्र में लिखा है। मेलन-ठेलन के किले मे दसवत पत्र पढने लगा गउरा के अहीर का नाम उसमें पहले लिखा है।

पृष्ठ 381-382-383

फिर बीर बघेला सिराज का नाम लिखा हुआ है। आगे लिखा हुआ है कि सिराज युद्ध में समाप्त हो चुका है। भीमला और झिंगुरी भी जूझ कर मर चुके हैं। दसवंत फूट-फूटकर रोने लगे। कहने लगे ऐसे बीर जूझ गये। हमारे जीने को धिक्कार है। गउरा का पानी धन्य है जहाँ के बीर मोती सगढ़ पर

आकर टिके हुए हैं। जब मेरे भाई मर चुके तो मुझमें क्या शक्ति है। हम लोगों का जीवन व्यर्थ है। दसवंता भगवंता दोनों भाइयों ने मेलन-टेलन का बाग छोड़ दिया। धनुष उठाया तथा सुहवलि चले। पत्र में यह भी लिखा था—हे दसवंत, मैं किसका ससुर कहा जाऊँगा, तुम किसके साले कहे जाओगे। दसवंत भगवंत लड़ने के लिए तैयार हुए। दसवंता ने भगवंता से कहा—तुम काका से मिल आओ। लड़ने की पहली बारी मेरी है। मेरा मुहूर्त लड़ाई करने का है। भगवंता ने कहा—भइया हमारी जोड़ी बिछुड़ जायगी। दसवंत ने कहा—मोती सगड़ पर जीने का लालच मत करो, मरने के लिए पछतावा भी नहीं करना चाहिये। अगली धार पर हम लड़कर मरेंगे तो हमारा सुरधाम बनेगा। दसवंत ने कहा—वियोग की बात मत सुनाओ। भइया भगवंता मुझको अब लड़ना है। मेरा युद्ध पहले होगा पीछे तुम्हारी लड़ाई होगी।

दसवंत ने मोती सगड़ पर ललकारा—यदि कोई लड़ाकू हो, बाँका जूझारू हो तो सामने आ जाय। व्रती खोइलनि का बेटा लोरिक हँस पड़ा—झंडा लेकर तुम झोली बुझाने आये हो, राख बुझाने आये हो, असल आग तो बुझ चुकी है। लोरिक ने अपने वीरों से लड़ने के लिए कहा। सबकी जाघें हिल रही थीं, सभी भयभीत थे। कहने लगे अभी तो पुराना घाव कड़क रहा है। लोरिक फिर स्वयं अस्त्र-शस्त्र से सज्जित होकर उठा। उसके बायें छूरी थी, दाहिने बिजली का खड्ग था, बगल में छप्पन छुरी थी, कटि में तलवार झूल रही थी। नरमा की पगड़ी सिर पर थी। बिरही नामक कवच उसने धारण किया था। पैर में मोजा था। उसने दसवंत से हंसते हुए कहा—तुम मेरी बात मानो। तुम काम वही करो जो तुम्हारे मन में है, पर मेरी बात सुन लो।

पृष्ठ 384-385-386

तुम यहाँ मेरी प्रार्थना सुनो। तुम सभी भाई लड़ जाओगे और यदि विधाता ने लालसा पूरी की, सतिया की शादी हुई तो बहिन का लावा कौन परछेगा ? जाओ झगड़ा मत मोल लो। दसवंत ने कहा—मुझे जीने की लालसा नहीं है, मरने का पछतावा नहीं। मेरे मरने के बाद ही सती का मांडो छाया जायगा। जब तक मेरे शरीर में दम रहेगा तब तक मैं सुहवलिपाल वापस नहीं जाऊँगा। लोरिक ने कहा अपनी तेग छोड़ दो। मैं लड़ने को तैयार हूँ। बामरि का बेटा वहाँ से हटा नहीं। हाथ में तलवार और बाण लेकर वह तैयार हो गया। उसके बाण की नोक धरती और आकाश को छूती थी। उसने निशाना लगाकर बाण छोड़ा। लोरिक ने अपनी देह झुका दी, बाण खाली चला गया। उसके चार-चार टुकड़े हो गए। लोरिक ने कहा—अब तुम्हारी जान नहीं बचेगी। तुम अपने अस्त्र-शस्त्र छोड़ दो, हथियार डाल दो और सोना सुहवली पार चले जाओ। दसवंत ने कहा—बहुत पुवा मत पकाओ, डींग मत मारो, मैं तुम्हारी जान नहीं छोड़ूंगा।

लोरिक हँसा, वह सावधान था। पाँच कदम वह पीछे हट गया। फिर अपना लचकता हुआ बाण दसवंत पर छोड़ा। वह निशाने से हटकर दूर चला गया। दसवंत की दृष्टि इधर-उधर फिर गयी। इसी बीच लोरिक ने उसकी गर्दन पर तेग मारी। उसकी धड़ कट कर वहीं गिर गयी। उसका सिर सुहवलि में बामरि की कमर के सामने जा गिरा। वह रोने लगा। बेटा भगवंता तुम्हारा जीना धिक्कार है। तुम्हारे जीवित रहते मैं ससुर कहा जाऊँगा, मेरे जीवित रहते तुम साले कहे जाओगे। तुम सुरहन में जाकर लड़ो, जूझ जाओ तब जानूँगा कि मेरा पुत्र जीवित है। भगवंता लड़ने के लिए तैयार होकर आया। उसने ताल ठोंका। सागड़ पर कोई वीर उससे लड़ने के लिए उठ नहीं रहा है। लोरिक धीरे-धीरे पैर उठाकर सुरहनि आया और कहने लगा। सतिया की शादी निश्चित होगी। कौन लावा परछेगा। तुम्हारा काल पुज गया है। भगवंता ने कहा—लोरिक तुम कह रहे हो मैं भाग जाऊँ, पर मैं यहाँ से भागूँगा नहीं।

पृष्ठ 387-388-389

बीर अकेला लोरिक क्रोध में जल उठा। बहुत देर से कहा-सुनी हो रही है, मुकाबला हो रहा है। तुम अपना सिरोही बाण छोड़ो, मैं उसको रोकूँ। भगवंता ने हँसकर कहा—हमारे खानदान में बहुत लोग लड़ चुके हैं। हमेशा हमारा बाण बाद में छूटता है। लोरिक ने कहा—अपना भाला फेंको और भाग जाओ, नहीं तो तुम्हारे प्राण नहीं बचेंगे। बीर लोरिक और दसवंत की लड़ाई शुरू हो गयी। लोरिक पाँच कदम पीछे हट गया। कमर से कटारी निकाली। पयंतरा करने लगा। उसकी कटारी चमक उठी। उसने भगवंत की गर्दन पर तेग मारी। उसकी गर्दन कट गयी। सती का यह भाई भी जूझ गया। सतिया बंगले में रो उठी, तुमने हमारे प्रिय भाई को मार दिया। भगवंता सती से पहले पैदा हुए थे। बाद में सती पैदा हुई थी।

सती अब अग्निकुण्ड में बैठ गयी। उसने अपने सत की पूजा की। उसने कहा—सुहवलि में आग लग गयी है। यह आग अब बुझाये नहीं बुझेगी। सती अग्नि-कुण्ड में कूद गयी थी। उसको कोई बीर बाहर निकालने वाला नहीं था। धर्म का आवाहन कर उसने अग्नि में प्रवेश किया था। उसने कहा—नैहर की मेरी लालसा टूट चुकी है। मैं बीर लोरिक का दिमाग तोड़ दूँगी। कैसे वह मेरी सुहवल में शादी करेंगे। उसने किला में अपने धर्म को तैयार कर लिया था। माई भवानी अब चिन्ता में पड़ गयीं। बेटा लोरिक तुमने मेरी बात नहीं मानी। तुमने आखिरी सीमा तक लड़ाई की। अब कोई ऐसा धर्मावतार नहीं है कि सती को अग्निकुण्ड से काढ़े। सुहवलि में कैसे विवाह होगा? लोरिक रोने लगा। माँ तुम्हारे धर्म का ही

सहारा है। मैं नहीं जानता था कि सुहवलि में ऐसी विपत्ति है। मैं जानता था कि यहाँ सिर्फ मर्दों से लड़ना है। अब तो हमारी अक्ल काम नहीं कर रही है। सती को विदायी कठिन है। बेटा तुमको मैंने बार-बार मना किया। तुम्हारो पूजा मैंने खायी यह मेरे जीव के लिए काल हो गया है। यहाँ अब 'सत' से सामना हो गया है। धर्म में मेरी अक्ल काम नहीं कर रही है। सती अग्निकुण्ड में बैठी हुई हैं। आदि शक्ति भवानी सागड़ पर रो रही हैं।

पृष्ठ 390-391

लोरिक रो रहा था। हर समय यह कह रहा था भवानी तुम्हारे ही धर्म का सहारा है। चाहे तुम खेकर पार लगाओ या मेरी नौका को डूबा दो। भवानी ने कहा—बेटा एक ही उपाय है। यदि जल्दी नहीं करोगे तो सुहवलि में विवाह की आशा कम ही है। सती का विवाह नहीं हो सकेगा। इधर कुण्ड में आग लपलपा रही थी। देवी चिल्लाने लगीं। भूत-म्लेक्ष सभी वहाँ दौड़ने लगे। बारह सौ मरही, चौदह सौ बैताल वहाँ एकत्र थे। पूछने लगे, माता जगदम्बा, आपने हमें क्यों पुकारा है। भवानी ने रोकर कहा मुहवलि में विपत्ति आ गयी है। सती अपना सत सुमिर कर कुण्ड में बैठ गयी है। हे पुत्रों, तुम लोग हमारा कार्य पूरा करो। यहाँ सवा सौ कुएँ हैं, सवा सौ तालाब हैं, सबका पानी समाप्त कर दो। सबने कहा—यह तो कठिन है, हम कैसे पानी सोख सकेंगे। देवी ने अब रोते हुए बाणा सुर को पुकारा। सागड़ पर बांणा सुर दैत्य वहाँ पहुँच गया।

पृष्ठ 391-392-393

बाँणासुर दैत्य वहाँ गरजने लगा। भाई भवानी तुम्हारे ऊपर कौन सा संकट पड़ा है। तुमने क्यों पुकार लगायी है। भवानी ने रो-रोकर कहा—दैत्य, मेरी बात सुनो। मेरी नाव मिट्टी में धँस गयी है। खेकर पार लगाओ। मैं कठिन विपत्ति में फँस गयी हूँ। जैसे सती अग्निकुण्ड में बैठी है वैसे ही तुम यहाँ सवा सौ तालाबों और सवा सौ कुंवों को सुखा दो ताकि यहाँ धूल उड़ने लगे। यहाँ धर्म का काम आ गया हैं 'सत' यहाँ अडिग है। बाणासुर ने कहा—बैल के वजन के बराबर सत्तू और नमक लदवा दो। मैं सब सत्तू ओठ लगाकर चाट डालूँगा। इधर सती ने अपने सत का खेल किया। इधर दुर्गा ने अपनी रचना रची। दैत्य बाणासुर तैयार हो गया। दुर्गा सत्तू और नमक छिड़कती जाती थीं, दैत्य उसको चाटता जाता था। उसने तालाब और कुंवों का पानी पी लिया।

देवी अब सती के पास गयीं। सती के धर्म का एक कुँवा था। वहाँ दैत्य पहुँच गया। भवानी ने कहा—तीन कोने का जल तुम खींच लो, एक ओर का छोड़ दो।

दैत्य ने कहा—यह मैं नहीं जानता। जब मैं ओठ लगाऊँगा तो सब कुछ साफ कर दूंगा। आधा हमसे नहीं छूटेगा। यदि आपको आवश्यकता है तो काम भर का जल रोक लीजिये। भवानी ने कहा—हे बाणासुर, यदि पानी नहीं रोकेगे तो हमारा काम सिद्ध नहीं होगा। दैत्य ने तीन कोनों का जल खींच लिया, भवानी ने एक कोने का जल रोक लिया। देवी सागड़ पर चलीं, दैत्य कैलाश को लौट गया। सतिया अग्निकुंड में थी। यहाँ बहुत क्रियाएँ हुई। भवानी ने लोरिक से कहा—सती ने बड़ा खेल किया है। मैं तुमको योगी बनाकर सुहवल ले चलूंगी। सागड़ पर डेरा डालूंगी। मोती सागड़ पर अद्‌भुत खेल होगा।

पृष्ठ 394-395

सतिया अग्निकुण्ड में बैठी हुई है। इधर भवानी ने लोरिक को बारह वर्ष का योगी बना दिया है। माया की झोली, गुदड़ी, थैली, सारंगी तथा सत के सर्प की दुवाली (चमड़े का फीता) उसकी गर्दन में डाल दी है। उसके मस्तक पर चन्द्रमा जैसा तिलक कर दिया है। लोरिक को दुर्गा ने सचमुच योगी बना दिया और उसकी बांह पकड़कर सुहवलि ले गयीं। सागड़ पर उसको कुएँ की जगत पर बैठा दिया। कहा—तुम यहीं सारंगी बजाना। जो कोई यहाँ जल भरने आवे तो तुम उसको रोक देना। तुम यहीं पैर लटका कर बैठे रहो। इस मोती सागड़ पर किसी को जल नहीं भरने देना। अगर कोई स्त्री रोवे कि पानी के बिना कण्ठ सूख गया है तो तुम रो-रोकर पूछना—कितने दिनों से तुम लोगों का जल छुटा है। उनसे कहना कि यदि सात दिन से जल छूटा है तो यह खेल सात दिन और रहेगा। तुम लोगों को सात दिन में ऐसी स्थिति हो गयी। मेरा जल तो छै महीने से छुटा हुआ है। मेरा शरीर योगी का है। मेरा एक प्रण है। मैं सुहवलि के बाजार आया हूँ। मेरे ही पाप से सुहवल का जल सूख गया है। जितना मेरा कंठ शुष्क हुआ है उतना ही यहाँ का जल सूखा है। यहाँ कुओं में धूल उड़ने लगी है। जब तक मुझे सती पानी नहीं पिलायेंगी तब तक सुहवल में पानी नहीं होगा। देवी ने कहा—यह खेल तुम करना मैं मोती सागड़ पर पहरा दूंगी।

दोनों ओर सत का खेल हो रहा है। बीर लोरिक योगी बनकर कुएँ पर बैठा हुआ है। माँ दुर्गा मोती सागड़ के घाट चली गयी हैं। वहाँ उन्होंने अपना चरित्र फैलाया। वहाँ ज्येष्ठ की लू चलने लगी। रानियाँ वहाँ घड़ा लेकर पानी भरने आयीं। सभी तालाबों को देखा, उनको डर लग रहा था कि घटिहा बदमाश वहाँ बैठा हुआ है। स्त्रियाँ तीन सौ साठ कुंवों को देख आयीं। कहीं जल नहीं मिला। सुहवलि में विपत्ति घिर आयी। सतिया अग्निकुण्ड में बैठी है। दुर्गा कुओं को सुखा कर अपना खेल कर रही हैं।

पृष्ठ 396-397-398

पंचों, भीमली की एक स्त्री को प्यास लगी। पानी के बिना उससे रहा नहीं गया। एक तो उस पर पति के मरण की विपत्ति है, दूसरे जल के बिना उसकी काया जल रही है। उसने सेविका से कहा कि लोटा और रस्सी लेकर तुम सती के कुएँ पर जाओ, शायद उसमें जल हो। सेविका सती के कुएँ पर पहुँची। वह धर्म का कुँवा था। वहाँ वह पहुँच गयी। जगत पर पहुँच कर वह रस्सी को लोटे में डालने लगी। वहीं योगी बैठा हुआ था। कुँवा सूखा हुआ था, उसमें थोड़ा जल था। लोटे को कुएँ में लटकाकर सेविका झंख रही थी। उसने कहा—हाय योगी बाबा! तुम इस जगत को छोड़ दो। मेरी रानी पानी के बिना मर रही है। योगी ने रो-रोकर उससे पूछा—कब से तुम्हारी रानी प्यासी है। कितने दिनों से उसका जल छूटा हुआ है। सेविका ने कहा छै दिनों से उसने जल नहीं ग्रहण किया है। तब योगी ने हँसते हुए कहा तुम्हारी रानी को छै दिन जल छोड़े हो गया। मुझे तो छै महीने जल छोड़े इस जंगल में हो गया। जब तक सती मुझे पानी नहीं पिलायेगी तब तक योगी की काया तृप्त नहीं होगी। जब मेरा हृदय तृप्त होगा तभी सुहवल में पानी होगा। मैं तुम्हें जल नहीं भरने दूँगा। जल छोड़े मुझे इस जंगल में छै महीने हो गये।

योगी ने जल नहीं भरने दिया। वह भीमली की स्त्री के यहाँ वापस आ गयी। उसने पूछा– तुम जल ले आयी हो तो उसने कहा – नहीं। वहाँ तो तीन कोने में कुँवा सूख गया है, एक कोने में थोड़ा जल शेष है। वहाँ योगी ने कहा—तुम्हारी रानी की छै दिन में यह अवस्था हो गयी है। छै महीने से मेरा जल छूटा हुआ है। जब तक सती पानी नहीं पिलायेगी तब तक वह जल नहीं पीयेगा। जब तक उसका हृदय शान्त नहीं होगा यहाँ पानी नहीं होगा। भीमली की स्त्री सती रूप धारण कर वहाँ पहुँच गयी। अपना दुखी रूप, विपत्ति का मारा हुआ स्वरूप छोड़ दिया। दक्खिनही वस्त्र पहन लिये, मखमल की चोली पहन ली। उसके वस्त्र में छप्पन पंछी चित्रित थे। गर्दन तक लटकने वाला केश संवार कर आभूषण पहनकर वह मोती-सागड़ पर पहुँची।

पृष्ठ 399-400-401-402

सती का रूप बनाकर भीमली की पत्नी योगी की बुद्धि थाहने चली। इधर माँ जगदम्बा वहाँ पहुँच गयीं। कुँए पर आकर कहा—भीमली की स्त्री तुम्हारी बुद्धि छीनने के लिए आ रही है तुम उसको अपमानित करो। वह तुम्हारी बुद्धि छलने के लिए आ रही है। यदि वह पानी लोटे में भर ले गयी तो सती की शादी नहीं हो सकेगी। बुढ़िया खोइलनि का बेटा लोरिक कुँए पर बैठा हुआ है। देवी मोती सगड़ के घाट बैठी हुई हैं। यहाँ धर्म का कंटा तैयार हो रहा है।

गायक का आत्म कथन पृष्ठ 400 पर है । अब तुम लोग घर में मत घुसो । मेरा गाना अब दंगल में है । अब सतिया की बिदायी होगी । मेरा बोझ उतर गया । गायकों सभा में मुझको दोष नहीं दीजिएगा ।

पंचों, भीमली की स्त्री सुहवलि में चली । सती का रूप बनाकर उसने लोटा खनकाया । उसने मुंह पर घूंघट डाल रखा था । उसने कहा—हे योगी बाबा, ज़रा एक ओर हटो । योगी तड़प उठा—भीमली की स्त्री तुम सुनो । तुम शूरमा के साथ सो चुकी हो । तुम्हारा शरीर पापी हैं । तुम मुझको वह योगी मत समझो । मैंने बचपन से ही वन में तप किया है । मैं यहाँ व्रती सती से भेंट करने आया हूँ । उसने सुहवलि में अवतार लिया है । जब तक सती पानी नहीं पिलायेंगी, सुहवलि में जल वापस नहीं होगा । भीमली की स्त्री सुहवलि पाल लौट गयी । उसने कहा—सचमुच यहाँ योगी आया है । इसमें ज़रा भी झूठ नहीं है । हम लोग व्यर्थ कह रहे थे कि अहीर आकर टिककर यहाँ बिपत्ति ढाये हुए है । वह अपनी सास, बमरी की पत्नी के पास गयी । रो-रोकर उसने अपना सारा दुख कहा । मेरी देह सुहवलि में मिट्टी हो गई, विधवा हो चुकी हूँ । सुहवलि में जल बिना मेरी छाती फट रही है । मैंने सेविका को सती के कुँए पर भेजा । तीन कोने में वह कुँवा सूख गया है । थोड़ा जल कुँए में है, वहाँ एक योगी बैठा हुआ है ।

पृष्ठ 402-403-404

उस योगी का क्या वर्णन करूँ । अभी कम उम्र का कोमल बच्चा है, उसके सिर का बाल नर्म है । वह ढीली-ढाली धोती पहने हुए है । कटि में करधनी हिल रही है । उसकी आँख और मुंह (साँचे में) ढला हुआ है । मुख में दूध का दाँत है । उसकी शिखा हिल रही है । वह योगी है । शेषनाग की दुदाली उसकी गर्दन में है । उसने ललाट पर भस्म रमाया है । उसकी ललाट पर गरिमा है । जब मैंने उससे कहा कि रानी छै दिन से प्यासी है तो उसने कहा तुम्हारी रानी का कलेजा छै दिन में ही फटने लगा । मेरा जल इस वन में छै महीने से छुटा हुआ है । भगवान ही मेरा प्रण रखेंगे । जब तक सती पानी नहीं पिलायेगी तब तक वह जल नहीं पीयेगा और न सुहवल में पानी होगा । सेविका के कहने पर मैं योगी की परीक्षा लेने गयी । मैंने ननद सती का रूप बना लिया था । अपने घमण्ड में मैं सती बनी । योगी सती के धर्म के कुयें पर बैठा था । उसने मुझे ऐसा बाण मारा कि मेरा शरीर शिथिल पड़ गया । ऐ भीमली की पत्नी तुम मेरी बुद्धि छलने आयी हो । मेरा धर्म लूटने आयी हो ।

योगी का कलेजा झुर रहा है इसीलिए सुहवल का पानी सूख गया है । योगी सब भेद, सब खेल जानता है । बामरि की पत्नी मन में सोचने लगी । सती ने तो मेरा विध्वंस करा दिया । अब जगदम्बा का खेल देखिये । सती घमण्ड के साथ

अपना सत सुमिरन कर आग में बैठी हुई है। बामरि की पत्नी ने कहा—सतिया मेरी बेटी नहीं पैदा हुई है, इसने हमारे गोकुल को उजाड़ दिया। पंचों, इतनी विद्या किसी में नहीं थी कि बाँह पकड़कर जबर्दस्ती सती को कोई डोली में बैठा दे। सती अग्निकुंड में घमंड करके बैठी हुई है। मैं दुर्गा का घमण्ड तोड़ूँगी। भीमला की पत्नी ने सास से कहा—आखिर में सती जायेंगी पर यह सब विध्वंस कर जायेंगी। सती के कारण यहाँ हड्डियों की ढेर लग गयी।

पृष्ठ 404-405-406

इधर बामरि की पत्नी उठी। उसने अपनी लटें बढ़ा लीं। गायक कहता है यहाँ गाना बंद हो रहा है। [गायक मेरी ओर संकेत कर कह रहा है—गाना अब बढ़ा दीजिए, मशीन बंद कर दीजिए, जरा मुझे तम्बाकू पी लेने दीजिए] मैं बलिया जिले के रतसंड में यह रिकार्डिंग कर रहा था।]

सतिया का खेल यहाँ कठिन है। यहाँ रो-रोकर विलाप करना होगा। पंचों, अब बामरि की पत्नी उठी और वहाँ गयी जहाँ सतिया कुंड में बैठी हुई थी। सतिया ने अपने सिर में आग लगा दी थी। रानी ने कहा—बेटी तुम मेरे आने की लाज रख दो, मेरा कहना मान लो। हम लोग दुष्ट अहीर को दोष दे रहे थे। कह रहे थे कि यहाँ दुर्गा ने अपना खेल रच दिया है, उन्होंने यहाँ का सारा पानी सुखा दिया है। हाय, बेटी, हाय, सती, यह खेल तो जंगल के तपस्वी योगी का है। उसने प्रण ठान लिया है कि मैं जल नहीं पीऊँगा।

छे महीने से वह जंगल में तपस्या कर रहा है। पानी के बिना उसका कंठ सूख गया है। वह धर्म का पानी पीना चाहता है। वह तुम्हारे कुँए पर बैठा है। उसका कहाँ तक वर्णन करूँ। रानी सती, तुम कुण्ड से निकल जाओ और योगी को पानी पिला दो। यदि उसका कलेजा शीतल होगा तो मुहवल में पानी वापस आ जायगा। बेटी, मेरी यही प्रार्थना है योगी को पानी पिला दो। सती ने कहा—माता तुम ठीक कह रही हो पर मैं तुमसे कह रही हूँ। तुम इस खेल को नहीं जानती, मैं जानती हूँ। तुम्हारा ध्यान योगी पर टिक गया है, पर मेरे हृदय में जरा भी योगी का आकर्षण नहीं है, वह योगी नहीं है, पापी है। उसने मुहवल में मेरे पाँच भाइयों को मारा है। योगी बनकर वह मेरा धर्म नष्ट करना चाहता है, वह हमारी इज्जत लूटने आया है। वह घटिया, हमारे कुएँ पर योगी बनकर बैठा है। वह उपद्रव कर रहा है, तमाशा कर रहा है। वह मेरी पीठ पर अंगार रखना चाहता है। तुम्हारी आँख में पट्टी पड़ी हुई है। वह तुम्हारा शत्रु है।

पृष्ठ 407-408

रानी ने कहा—तुम योगी को खूब पहचानती हो न। मेरे पेट से जन्मी हुई

तुम मुझको ही खेल खेला रही हो। जो असली योगी है उसको तुम नकली बता रही हो, चटिहा बता रही हो। हाय बेटी, मैं तुमको कह रही हूँ मेरी बात मान जाओ। तुम मेरे मुँह से अपशब्द न निकलवाओ। हमारे तुम्हारे बीच दीवार पड़ जायगी। अच्छे से जाकर योगी को पानी पिला दो ताकि सुहवल में पानी आ जाय। सुहवल में ज्यादा पाखंड मत करो। बामरि की बेटी अग्नि में बैठे-बैठे रोने लगी, उसका नाम सती मदइनी था। उसने कहा—मैं योगी को पानी पिलाने नहीं जाऊँगी। वहाँ मेरी इज्जत नहीं बचेगी। पंचों, इधर बामरि की पत्नी का बयान सुनिये। क्रोध में वह जहर सी बन गयी, उसको आग लग गयी। कहने लगी तुमको जुलाहा या धुनिया भी नहीं मिला, काँदू और कलवार भी नहीं मिला। तुम किसी को लेकर भाग जाती तो मेरा गोकुल नहीं उजड़ता, आज तुम मुझे खोद-खोद कर जला रही हो। तुमने यहाँ नाटक पसार दिया है।

सती का मन वहाँ उदास हो गया। वह अग्नि कुंड में रोने लगी। कहने लगी—माँ तुम्हारे ऊपर वज्र गिर जाय। काका पर वज्रपात हो जाय। अपने बेटों का उनको घमण्ड हो गया था। उन्होंने मोती सगड़ पर भाला गड़वा दिया। मेरी एक जिन्दगी के लिए छत्तीस जाति की कन्याओं को बाल कुंवारि रख दिया। तुमने सुहवलि में पाप किया है। तुमने मेरी देह में लांछन लगा दिया है। सतिया ने कहा—हे माता, तुम ऐसी जबान निकाल रही हो। मैं जुलाहा और धुनिया लेकर भाग जाऊँ। हाँ, निकल जाओ, तुम मेरे घाव पर नमक छिड़क रही हो, कोदों दल रही हो। तुम खेल नहीं कर रही हो। सतिया ने अब कुंड छोड़ दिया। वह ऐसी स्त्री बन गयी जिसके तीनपन बीत चुके हों। उसके सिर का बाल पक गया है। मुँह में एक भी दाँत नहीं है उसके शरीर से मवाद, पीब चू रहा है। इधर जगदम्बा कुँए पर पहुँची और लोरिक से कहा—सती ने अपना रूप बदल दिया है। उसने कोढ़ी रूप धारण किया है तुम घृणा मत करो। उसके हाथ का पानी नहीं पीओगे तो शादी नहीं होगी। वह कुएँ पर पानी भरने आयेगी।

पृष्ठ 409-410-411

यदि तुम सतिया से घृणा करोगे तो संवरू का विवाह नहीं हो सकेगा। मैं सागड़ पर जा रही हूँ और तुम्हें यह बतला रही हूँ। बामरि की बेटी जिसका सतिया मदाइन नाम है यहाँ आ रही है। वह झुककर चल रही है। उसने कुएँ में लोटा लटका दिया। एक हाथ उसने अपने कूबड़ पर रखा है। उसने अपना रूप विकृत कर लिया है। वह योगी की बुद्धि छलने चल रही है। जिस दिन की बात है अब उस दिन का खेल सुनिये। वह झुक-झुककर अपना पैर डाल रही है, उसकी कमर झुकी हुई है। योगी बघेला उसे देख रहा है और हँस रहा है। उसने अपनी सारंगी बजानी शुरू

की। उसमें बत्तीस राग निकल पड़े। उसी समय बामारि की लड़की वहाँ पहुँच गयी। वह वृद्धा बनी हुई है। जब वह आँखें मटकाती थी तो उनमें से कींचड़ गिरता था।

सतिया धीरे-धीरे कुएँ को जगत टटोल रही है। लोटा में रेशमी डोर डाल कर उसने कुएँ में लटका दिया तब योगी हँसकर कहने लगा। तुम मेरी भावज बनो, मैं तुम्हारा देवर बनूं। तुम पानी पिला दो कि मेरा हृदय-कंवल जो झुर गया है पल्लवित हो जाय। उसने लोटा फेंक दिया और कहने लगी—बुढ़िया होने पर तुम मुझे ऐ पापी, इस समय भावज बना रहे हो। तुम्हारे ऊपर बड़ा लांछन है। तुम हाथ-पैर मत पटको। तुम मेरी भावज लगती हो, मैं तुम्हारा देवर हूँ। तुम मुझे पानी पिला दो। छः महीने बीत गये मैंने जल नहीं ग्रहण किया है। मेरा कंठ सूख गया है। भावज सुनो, मैंने अन्न न खाने की शपथ ली है। मैंने जल के लिए हराम बोल दिया है। मैंने शपथ ली है। भीमली के सिर का कलश धराऊँगा, रुधिर से कोहबर पुतवाऊँगा। उसकी छाती का पीढ़ा गड़वाऊँगा, उसकी जाँघ की हरिश गड़वाऊँगा। तुम्हारा झोंटा पकड़ूंगा और विवाह कराऊँगा। छः महीने बीत गये। मुझे चैन नहीं मिला। हे भउजी, दुर्गा ने जमकर मेरी पूजा ली। जब मैंने सुहवल का नाम लिया वह भहराकर गिर पड़ी, कहने लगीं—गउरा में पूजा लेना मेरे लिए काल सदृश है।

पृष्ठ 412-413-414

इन सारी बातों को जहन्नुम में जाने दो। मैंने रो-रोकर कहा—ऐ भउजी, तुमने नाटक किया है। मैं तुम्हारा सब हाल जानता हूँ। तुम मेरी भउजी बनो, मैं तुम्हारा देवर बनूं। तुम मुझे पानी पिलाओ, तुम्हें मैं गउरा ले चलूं। सतिया क्रुद्ध होकर झनक उठो। अच्छा, मैं तुम्हें पानी पिला रही हूँ। जब उसने लोटे में रस्सी बाँधी तो उसके शरीर से मलगज, पीब गिरने लगा। उसने कहा—तुम कुएँ को जगत छोड दो, मैं पानी खीचकर तुम्हें पिला रही हूँ। मैं तुम्हारी भउजी हूँ। जगत के पास अंजुलि बाँधकर बैठो। सतिया ने कुएँ से जल भरा उसके मुंह से मलगज पीब गिर रहा था। उसने कहा—योगी जल पीओ। जब लोरिक ने अपनी आंजुरि लगायी तब सती लोटे मे मलगज छोड़ने लगी। ऊपर से यह पीब था, दुनियां के लिए पीब था, पर सतिया वास्तव में अमृत घोल रही थी।

बीर लोरिक का हृदय शान्त हो गया। बीर बघेला हँस पड़ा। भउजी मेरा हृदय तृप्त हो गया। तुम मेरी भावज बनो, तुम्हें गउरा ले चलूं। सती अपने वास्तविक रूप में हो गयी। पूछने लगी हमारी शादी करोगे। लोरिक ने कहा—इसके लिए मैंने अन्न जल छोड़ा है [पूरा सूत्र यहाँ दुहराया गया है।] सतिया ने कहा—तुम मेरी शादी यहाँ मत करो नहीं तो काका की छाती में बड़ा घाव होगा। बबुवा तुम कोहबर को पोतने की बात कह रहे हो तुम्हें लेकर जब भवानी यहाँ आयी

तभी यहाँ कोहबर पुत गया। तभी कोहबर पुत गया जब मेरे भाई जीवित थे। मेरा फोटो बँगला में है। सुहवलि में रुधिर से मेरा कोहबर पुत गया है, अब भाड़े का कोहबर ले लो। मुझे गउरा में ले चलो। सुहवलि में आग लगी है। इसी कुएँ पर मेरी बिदायी हो जायगी। दस-पाँच लग्न रख दो। तुम कुसला को निमन्त्रण वहीं भेज देना। वही हमारा भाई शेष है। वह लावा परछेगा। मुझे गउरा ले चलो। सतिया धर्म के डोले पर बैठ गयी। वह संवरू की इन्द्रासन वाली पालकी थी। दुर्गा उसे लेकर आयी थीं। ब्रह्मा ने चँवर दिया था। सती वहाँ अपना सत सुमिर रही थी। उसने कहा—कूच की लकड़ी बजा दो, गउरा गढ़ पाल चलो।

पृष्ठ 415-416

कुएँ से डोली उठी तथा सतिया की विदायी हुई। दूल्हे की भी पालकी उठी। युद्ध की समाप्ति की लकड़ी बज गयी। सतिया की डोली गउरा चली। यहाँ सतिया की शादी होगी। गायक कहता है हिंदू गंगा लाभ करेंगे, तुर्क कब्र में जायंगे। हे कामिनी, आपने मेरा साथ छोड़ दिया। आप कह दीजिए सतिया का गउरा में कैसे विवाह होगा। हे देवी, गाना गाना हमारा छूट गया है। मेरा मन दुविधा में पड़ा हुआ है। भवानी भाग्य के साथ है, युद्ध के समय देवी दुर्गा हैं। हे देवी, आप डोली लेकर कैसे चलीं। सुहवलि में सती का कैसे विवाह हुआ ? हे देवी, तुम्हारे ही बल और भरोसे से मैं पंचों की मण्डली में ललकार कर गाना गा रहा हूँ। सबको अपने बल का घमंड है, मुझे आपके बल का भरोसा है, आपकी बलिहारी है। गाना अब सुहवलि में छूट रहा है और गउरा चल रहा है।

पंचों, अब देवी का भजन कर लीजिए। हर घड़ी मेरा कंठ पर ही ध्यान लगा हुआ है। अब पंचों, गउरा का बयान सुन लीजिए। डोली गउरा गजन गढ़ पालि चली आई। गंगा नहाने से खोइलनि को पतोहू मिली। सुहवलि में छत्तीस वर्ण की कन्याओं को खुशी हुई। उनके पति सुहवलि में आ गये हैं। सुहवलि में खुशियां के बधावे बजे। स्त्रियों ने जो आभरण उतार दिये थे उनको फिर ग्रहण कर लिया, उन्हें पहन लिया। सती का लग्न रख दिया गया। सुहवलि में धीरे-धीरे शान्ति हुई, संतोष हुआ। नाऊ, बारी लेकर वह गउरा चला। बामरि निराश हुए। उसके पुत्र सुहवलि में जूझ चुके थे।

पृष्ठ 416-417-418-419

बामरि का आखिरी सहारा उसका दामाद अहीर था जो लड़की को गउरा में ले गया। गउरा में शादी का दिन पड़ा। कुशला के पास निमंत्रण पहुँचेगा (उसके अन्य भाई युद्ध में मर चुके थे) अन्य भाइयों का अब उसे कोई सहारा नहीं था।

अब केवल सुभर लोरिक का सहारा था। यदि कोई शत्रु सतायेगा तो वही साथ देगा। सुहवलि में अगर विपत्ति का हाल जान पायेंगे तो बहुत शत्रु खड़े हो जायेंगे। पंचों, बामरि को पहले यह ज्ञान नहीं था। समय बीतने पर सबको रास्ता दिखाई पड़ता है। जब धन और बल का घमण्ड होता है तो व्यक्ति अपनी शान के आगे दूसरे को कुछ भी नहीं समझता। वह गरीबों का भी हाल नहीं जानता। बामरि को अब केवल लोरिक का ही सहारा रह गया।

पंचों, अब गउरा का खेल सुनिये। यहाँ रचकर मांडो छाया गया। रचकर यहाँ हरिश गाड़ी गयी। दुर्गा ने फोटो खींचा। मुंड का यहाँ कलश रखा गया है। कोहबर रुधिर से पोता गया है। बीर (भीमली) की छाती का पीढ़ा गाड़ा गया है। उसकी जांघ की ही हरिश है। एक ओर सती है दूसरी ओर लोरिक है, वह सती का झोंटा खींच रहा है। [पृष्ठ 418 पर इस सूत्र की पुनरावृत्ति है।] मांडो का रूप देखकर नर-नारियों की छाती जल-बल गयी। उन्होंने कहा—जिस बीर के राज्य का ऐसा विध्वंस हुआ है उसका कोहबर पोता गया है। वह कैसे जी रहा होगा। उसकी पत्नी कैसे अपना वैधव्य काट रही होगी। संवरू और सती को अब हल्दी लगेगी। गाना गाया जाने लगा। लोरिक ने लिखकर पाती भेज दी है। विप्र लोगों ने शादी का मुहूर्त निकाल दिया है। एकमी, दूज, तीज, चौथ, पंचमी, सप्तमी के सभी लगन-मुहूर्त टल गये। दशमी को विवाह पड़ गया। लोरिक ने कहा निमंत्रण काका (बामरि) को भेज दिया जाय। अब तो सब नष्ट हो गया। अगर हमसे हित का सम्बन्ध चाहते हैं तो क्षमा कर दें। दशमी को सतिया की शादी का लग्न है। भलाई चाहते हैं तो कुसलहा को लेकर गजन गउर गढ़पाल आ जायं और कन्या दान दें। सतिया की शादी हो जाय। हमारा तुम्हारा हित का सम्बन्ध चले।

पृष्ठ 419-420-421

गउरा में इतनी पाती लिखी गयी। धावन उसको लेकर सुहवलि चला। धावन बामरि के बंगले में ठुमकने लगा। झुककर उसने मत्था टेका, बामरि ने आशीर्वाद दिया। लाख साल तक जीवित रहो। गंगा-यमुना के जल की भाँति तुम्हारी आयु बढ़े। गउरा में तुम्हारा धन युग-युग तक चले। तुम किस कारण से द्वार पर आये हो। नाऊ की जाति चतुर होती है उसने संभल-संभल कर जवाब देना शुरू किया। यदि मैं पाती का हाल कहूँगा तो कुछ भूल जायगा। इस पत्र में सारा हाल लिखा है।

नाऊ गांगी का वहाँ बड़ा स्वागत हुआ। उसका हाथ पैर धुलाया गया। बामरि ने उसको मोढ़े पर बैठाया फिर पत्र फाड़ कर पढ़ा। इसमें तो गउरा में मेरी लड़की सती के बिवाह का समाचार लिखा है। उसमें लिखा है लग्न निकट है।

बामरि ने कुशला से कहा—चलना तो पड़ेगा, गउरा । तुम सतिया के लिए बारह सो (बोसवा) मोहरें तथा बीस कलदार मुहरें ले लो, बीस सो अर्शाफयां भी ले लो और एक कंचन की थाली में भर कर रख लो । लड़की के लिए एक पीली धोती भी तैयार कर लो । मैं कन्यादान करने चलूंगा । सतिया का रचकर विवाह होगा । बामरि ने रचकर दान दिया । कुसला लावा परिछने चला । उसने गाड़ी पर दहेज का सामान लदवाया । लोटा, थाली, गिलास तथा तिलक का सारा सामान तैयार कराया । सुहवलि से दो-चार व्यक्तियों को लेकर बामरि गउरा चले वहां डोलकुढ़ई शादी होगी ।

पृष्ठ **421-422**

गायक कहता है—अभी भी विवाह होता है जिसके पास साधन है, सम्पन्नता है उसके यहाँ चढ़कर शादी होती है । वर के पिता बारात लेकर कन्या-पक्ष के यहाँ शादी करने जाते हैं । जिसके पास शक्ति साधन नहीं हैं उनके यहाँ डोलकुढ़ई शादी होती है । अब तो डोलकुढ़ई में भी काफी खर्च बढ़ गया है । पहले तो जो सम्पन्न होता था वह भी कहता था कि चढ़कर शादी हमारे यहाँ नहीं सहती । उसके यहाँ भी डोलकुढ़ई शादी ही होती थी । अब तो सभी लोग चढ़कर शादी करना चाहते हैं । लोग कहते हैं डोलकुढ़ई में बड़ी परेशानी है । पंचों, सती की शादी डोलकुढ़ई हुई । उसके पिता बामरि, भाई, सम्बन्धी आदि गउरा आये हुए हैं । दूल्हा की सारी सामग्री यहाँ आयी हुई है । दशमी का दिन है, आँगन में मंगल उठा है । रेशम के सूत की चारपाई है उसमें पैर की ओर चार-चार गेंद लगे हैं । सिर की ओर भी गेंद झूल रहे हैं । गद्दा (तोशक), गलीचा और बेल-बूटे कढ़े हुए (मुसधिर) चादर उस पर बिछा दी गयी ।

रात को सेवकों ने सब कुछ बिछा दिया । बीर बामरि सोचने लगा । द्वार का जलसा देखने लगा । कहने लगा हाय भगवान मेरी आंख पर पट्टी पड़ गयी । मैंने अपना सब कुछ नष्ट कर दिया । सिराजवा मुझसे बार-बार कहता था । आज मैं उसकी बात मान गया होता तो विध्वंस नही होता । राय से शादी होती । पर मैं कैसे करता मेरे भाग्य का लेख ही ऐसा था । पंचों, कन्यादान देने वालों को बहुत अच्छा जलपान कराया गया । लोरिक को बुलाया गया कि जल्दी विवाह का प्रबन्ध करें । बाबा बामरि उपवास हैं । तपन का महीना है, उनको प्यास लगी होगी । जल्दी भउजी की शादी होगी ।

पृष्ठ **422-423-424**

बाबा का ओठ सूख गया है । लोरिक की यह बात सुनकर पंडित मंडप में दौड़े, वे वेद पढ़ने चले । सुहवलि के पंडित भी वहाँ गये थे । चौके पर रानी सती

बैठी थी। दूल्हा भी मंडप में बैठे थे। पंडित अब वेद पढ़ रहे हैं। डाल पूजा शुरू हुआ। पहले डाल की पूजा हुई, फिर वेंदा खुला। आज्ञा हुई अब आप लोग हवेली में चलें, वहाँ शादी होगी। बामरि हँस कर उठे, कहा—बेटा कुसला उठो। रखकर लड़की का विवाह हो। बामरि उठे। साथ में नाऊ बारी थे। उन्होंने सोने का थाल उठा लिया। सभी माँडों में पहुँचे। बामरि ने कहा—अभी हमारा तिलक चढ़ाना शेष है। मैं पहले नहीं चढ़ा सका। आप लोग गिनवा लीजिये। सोने की परात में तिलक की सामग्री थी। तिलक चढ़ा, बामरि ने कहा यह लड़की के लिए दान है।

पंचों, हममें बहुत शक्ति नहीं है, लड़के का दान अब लीजिए। शेरनी खोइलनि का बेटा सबको तिलक की सामग्री दिखा रहा है। थाली में मुहरें और अशर्फियाँ थीं, डाल में मोती भरे हुए थे। वीर लोरिक ने दहेज स्वीकार किया और उसको हवेली में अन्दर ले गया। जब बीर ने हँस कर तिलक दे दिया तो मंडप में सब लोग बैठ गये। सती और संवरू चौके पर थे। ब्राह्मण वेद पढ़ रहे थे, जमकर मंगल गीत गाये जाने लगे। मंडप में बीर कुसला ने रुपये-पैसे लुटाये। उसने दान देना शुरू किया, मेरी बहन की शादी है। मंडप में खुशी फैल गयी।

पृष्ठ 424-425

अब वीर बमरी का बयान सुन लीजिए। बामरि ते सती को अपनी जाँघ पर बैठा लिया। कन्यादान होने लगा। जो भाग्य में लिखा हुआ था वह पूरा हुआ। बीर बामरि से हित का सम्बन्ध चलने लगा। पंचों, मन लगाकर सुनिये। पंडित लोग वेद पढ़ने लगे। धरमी दूल्हा बने हुए हैं। सिंदूर डालने को आज्ञा हुई। हाथ में कंकण बाँधा गया। दूल्हे का गमछा लाल था। उनको आँखों में जोरदार काजल लगा हुआ था। कमर में पीली धोती थी। सती ने भी पीला वस्त्र धारण किया था। बीर बामरि ने अद्‌भुत दान किया। रानी सती चौके पर बैठी थी लोरिक ? (धरमी मलसांवर) ने सिंदूर डाला। कुसुल्हा ने लावा परछन किया। पंचों, मेरा गाना जरा ऊँचे, नीचे हो गया है। गड़बड़ हो गया है। आप लोग सुधार लीजिए [स्पष्ट है यहाँ गायक अपनी गलती स्वीकार कर रहा है। सिंदूर दान वर धरमी को करना चाहिए। गायक भूल से लोरिक का नाम ले गया है।] धुर नान्हू ? अजयी सबने लावा फेंका। लावा में लावा मिलाया जाने लगा। स्त्रियों का झुंड गाली गाने लगा। आँगन में गाली के गीत गाये जाने लगे।

पंचों, अब यहाँ हमारा गान छूट जायगा। अब गाना शादी को ओर चलेगा। नगर गउरा में सती का विवाह हो रहा है। बामरि ने सती को अपनी जाँघ

पर बैठाया है। संवरू सिंदूर दान करने चले। सती का विवाह सम्पन्न हो गया। वहाँ आँगन में फोटो रखा गया है। वहाँ पीढ़ा बनाया गया है। शादी उसी पर हुई। बीर का सचमुच विवाह सम्पन्न हो गया। सुहवलि से नाता कायम हो गया। सोना मुहवलि पाल (तथा गउरा मे) हिताई (प्रेम का सम्बन्ध) स्थापित हो गयी।[1]



1. मुझे खेद है कि पुस्तक के आकार में वृद्धि के कारण शब्दार्थ और टिप्पणियों का मुद्रण पृष्ठ 476 के बाद संभव नहीं हो सका।

—लेखक

नामानुक्रमणिका

पुस्तक-सूची

नोट—हिन्दी और अंग्रेजी पुस्तक-सूची के लिए 'लोक महाकाव्य लोरिकायन' तथा 'The Hindi Oral Epic Lorikayan' देखिए।

□□